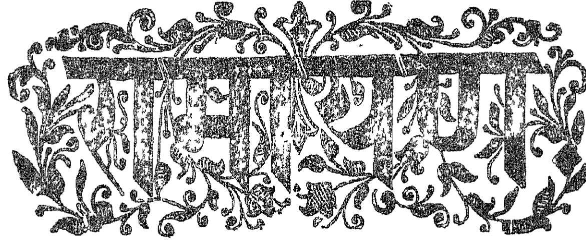
॥ श्रीः ॥

श्रीमद्वेङ्कटेशो विजयतेतराम् ।

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत –



जिसमें

सम्पूर्ण क्षेपक तथा तुलसीदासजीका जीवनचरित्र, माहात्म्य, बरवारामायण, श्लोकार्थ, छन्दार्थ, मर्मगार्थ, गूढार्थ, स्तुत्यर्थ, रामजीका चतुर्दश वर्ष वनवासादिका तिथिपत्र, पंचीकरण और अष्टम रामाश्वमेध लवकुश-काण्डादि सह अत्यन्त विस्तारपूर्वक ३८०० टिप्पणी हैं ।

यह ग्रन्थ

श्रीयुतपण्डितज्वालाप्रसादजीशर्मासे शुद्धकराकर,

(एकादशावृत्ति)

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

माघ संवत् १९६२, शके १८२७.

धन्यवाद ।

कोटिशः धन्यवाद उस परम [illegible] सच्चिदानन्द आनन्दकन्दको है जिसकी पूर्णानुकम्पासे बृहत्कादशावृत्ति रामायण मुद्रित हो [illegible] प्रकाशित है, और [illegible] धन्यवाद श्रीयुत सुप्रसिद्ध विद्वद्वर पंडित ज्वालाप्रसादमिश्रजीको है, जिन्होंने [illegible] अनेक [illegible] निष्कलिष्टपदावलियोंसे ऐसा सुशोभित किया मानो [illegible] चमत्कार है, पाठकगण ! अब तो ऐसा [illegible] हुई है कि, [illegible] जिन्होंने ऐसे अलभ्य पदार्थका संग्रह किया

[illegible]– खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-[illegible]–बंबई.

तुलसीदासकृत रामायण सटीक ।

विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत सञ्जीविनीटीका ।

इस श्रुति स्मृति पुराणोंके दृष्टान्त ओंके "सञ्जीविनी" टीका की सुपकंठसे [illegible] प्रशंसा हो रहा है. कईबार यह ग्रंथ छपके थोड़े अल्पकालहीमें बिकगया अब की बार और भी उत्तमता पूर्वक बहुतही शुद्ध छपा है इसमें इतनी ऐसी बढाई गई हैं जो अन्य किसी रामायणमें नहीं हैं, तुलसीदासजीका जीवन-चरित्र, रामायण माहात्म्य, रामवनवास तिथिपत्र, अष्टम लव-कुशकांड, गूढार्थ, हनुमानजीका मंत्रित श्लोकोंमें [illegible], सूर्य-वंशका वृक्षसहित चित्रमें (ग्लेज) कागजका मूल्य ८) रु० रफ कागजका मूल्य ७) रु० अत्यंत सुंदर विलायती चित्रित सुनहरी रुपहरी जिल्द बँधी है ।

तुलसीदासकृत रामायण सटीक ।

इसमें उपरोक्त कथित सभी विषय हैं किन्तु ग्राहकोंके सुभी तेके लिये अक्षर कुछ छोटे हैं टीका वही पं० ज्वालाप्रसादकृत सञ्जीविनी है मूल्य ग्लेज कागजका ५) रु० तथा रफ कागजका ४) रु० ॥

तुलसीदासकृत रामायण सटीक ।

गुटका ।

यह गुटका अत्यन्त सुंदर चित्ताकर्षक बनाया गया है दृष्टिसे हटानेको कदापि जी नहीं चाहता इसमें भाँति २ के मनोहर चित्र विराजमान हैं रामपञ्चायतनका चित्र पांच रंगोंसे ऐसा भाव पूर्ण बनायागया है कि, हजार बार दर्शनसे भी तृप्ति नहीं होती. इसमें संपूर्ण क्षेपक तुलसीदासजीका जीवनचरित रामायण माहात्म्य, रामायणके उपदेश, रामवनगमन तिथिपत्र अष्टम लवकुशकांड, गूढार्थ, रामशलाका प्रश्न, नव दिनमें रामायण पारायणका निबंध आदि अनेक प्रसंग हैं। टीका वही जगत्प्रसिद्ध पं० ज्वालाप्रसादजीकी सञ्जीविनी है यह सभी साधु गृहस्थ प्रवासियोंके उपयोगीहै मूल्य सबके सुलभार्थ केवल ३।) रु० अत्यंत सुंदर विलायती चित्रित सुनहरी रुपहरी आंखोंको चकाचौंध लगा देनेवाली जिल्द बँधी है जिल्दके देखते पुस्तक मुफ्त है ।

तुलसीदासकृत रामायण ।

मझले टाइपका ।

अति उत्तम नये श्लोकार्थ, गूढार्थ, छन्दार्थ, प्रसंगार्थ, अष्टम लवकुशकांड, इतिहास, दृष्टान्त, रामवनवास तिथिपत्र, तुलसीदासजीका जीवनचरित, अध्यात्मरामायण, रामायण माहात्म्य, हनुमानजीका [illegible] चित्र, सूर्यवंशका वृक्ष और सहित १६०० टिप्पणीके जिसमें संपूर्ण क्षेपक हैं मूल्य ग्लेज कागजका ३।) रु० तथा रफ कागजका ३॥) रु० ।

तुलसीदासकृत रामायण ।

बारीक गुटका ।

इसमें उपरोक्त सभी बातें हैं यह देशाटन और स्नान करने वालोंको अत्यंत उपयोगी है थोड़े दाममें गोखा काम ग्लेज कागजका चित्रित पुट्ठा मूल्य १) रु० तथा रफ कागजका मूल्य ॥।) आना

तुलसीदासकृत मानसरामायण ।

श्रीरामचरितमानस गोस्वामि तुलसीदासजीकी हस्तलिखित प्रतिसे चतुर्थावृत्ति मोटे टाइपमें छपी है इसमें गोस्वामि तु. दा. जी कृत चौपाइयोंके सिवाय अन्य कोई क्षेपक नहीं है इस पुस्तक का भगवद्भक्तोंमें बड़ा आदर है सुन्दर मजबूत विलायती जिल्द बँधी है मूल्य ३) रु ।

तुलसीदासकृत मानसरामायण ।

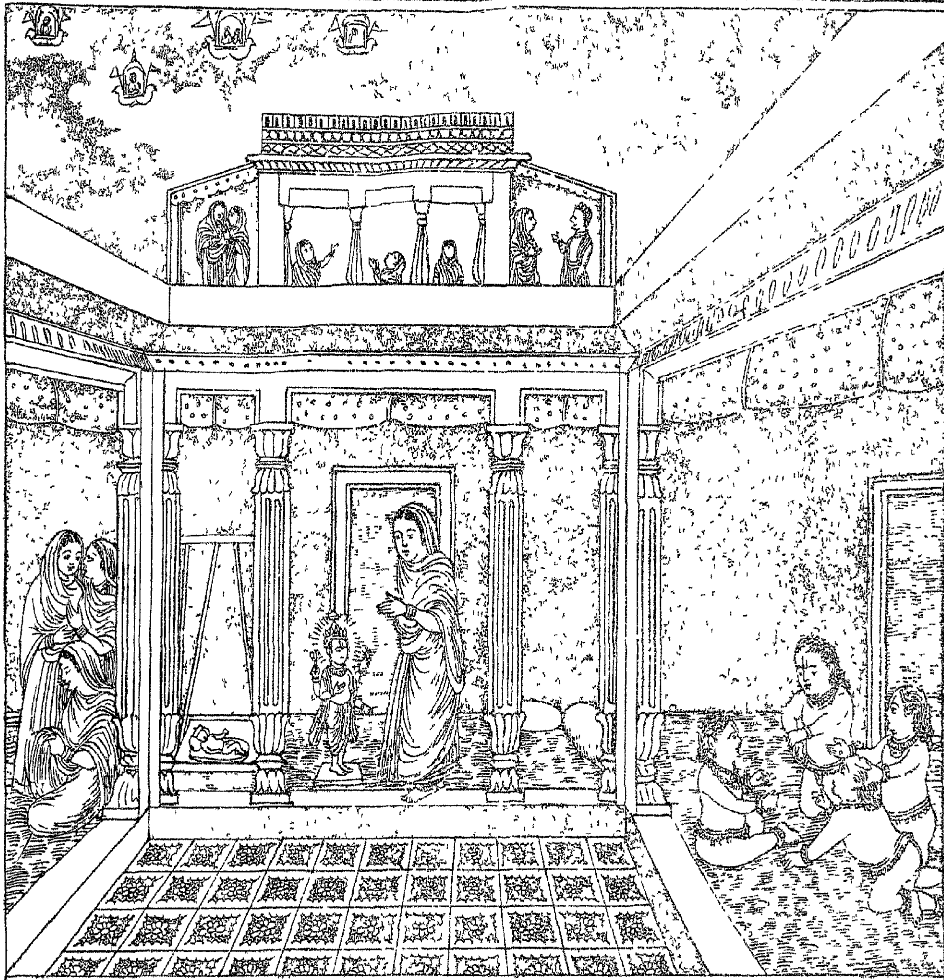
उपरोक्त श्रीरामचरितमानस उत्तम खूबसूरत छोटा गुटका लवकुशकाण्डसमेत पाकटबुक सुनहरी जिल्दका मूल्य ॥=) आना, तथा सादी जिल्दका मूल्य ॥) आना ।

तुलसीदासकृत (षोडश रामायण) ।

इसमें १ श्रीराम नहछू २ वैराग्यसंदीपिनी ३ पार्वती मंगल ४ बरवारामायण ५ जानकीमंगल ६ श्रीरामगीतावली ७ श्री कृष्णगीतावली ८ श्रीरामाज्ञा प्रश्न ९ दोहावली १० कवितावली रामायण ११ विनयपत्रिका मूल १२ कलिधर्माधर्मनिरूपण १३ छप्पयरामायण १४ हनुमानबाहुक १५ हनुमानचालीसा और १६ संकटमोचन हैं। इन १६ काव्योंकी एकत्र उत्तम विलायती जिल्द बँधी है मूल्य २) रु० रफ कागजका मूल्य १॥।) रु०

इन पुस्तकोंके सिवाय तुलसीदासकृत अन्य भी पुस्तकें छपी विक्रयार्थ प्रस्तुत हैं जैसे "दोहावलीरामायण" मूल्य ।) "कवित्तरामायण" मूल्य ।) आना। "कवित्तरामायण सटीक" मूल्य १) रु० "विनयपत्रिका" मूल्य ।=) आना । "विनयपत्रिका सटीक" मूल्य २) रु० "जानकीविजय" स्वर्गारोहण दृष्टान्त और टिप्पणी समेत मूल्य ।) आना।

श्रीरामजन्म.



हर्षित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप निहारी।



गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी.



पं० ज्वालाप्रसादजी टीकाकार.

शिवधनुर्भंग-जनकसभा.



प्रभु दोउखंड चाप महि डारे। देखि लोग सब भये सुखारे।

भरत भेट.



राजीवलोचन स्रवत जल तनु ललित पुलकावलि बनी। अति प्रेम हृदय लगाय अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुवन धनी।

रामराज्याभिषेक.



भरतादि अनुज बिभीषणांगद हनुमदादि समेत जे। गहे छत्र चामर व्यजन धनु असि चर्म शक्ति विराजते

❀ श्रीरामपञ्चायतन ❀



प्रस्तावना।

इस समय इस भारतवर्षमें श्रीमत् परमपूज्य श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृत रामायणके समान भाषामें और कोई ऐसी मनोहारिणी कविता नहीं है कि, जिसके पाठ करनेसे बालकों से लेकर वृद्ध पर्यन्त अपनी २ ज्ञानशक्तिके अनुसार आनंदप्राप्त करें और यह कैसे चमत्कारकी बातहै कि, जितना२अभ्यास इस पुस्तकमें करतेजाओ उतनाहीं नवीन अलौकिक आशय प्रतीत होताजाताहै. वास्तवमें इस पुस्तकमें चार वेद, छःशास्त्र, अठारह पुराणोंका आशय कहीं कहीं गोस्वामीजीने यथावत् झलकाया है, जिसको कि बुद्धिमान्लोग यथावत् जानसकतेहैं. और कहीं कहीं ऐसे गूढ आशय कहेहैं कि जिनका विचार अत्यन्त सूक्ष्मदृष्टिसे होसकताहै और बहुतसे महात्मा ओंने इसका टीकाभी कियाहै और क्षेपक कथाभी मिलाई हैं परंतु क्षेपक काथाओंके न्यूनाधिक होनेसे पढनेवालाकी बुद्धि संशययुक्त रहतीहै. मैंने भी इस ग्रन्थमें बाल्यावस्थासे परिश्रम कियाहै और बहुतसी प्राचीन लेखकी तथा यन्त्रोंकी छपी पुस्तकें संग्रह की हैं किन्तु बहुधा पाठ भेद तो सभीमें पायाजाताहै. इस समय श्रीयुत वैश्यकुल कमल दिवाकर सद्गुणाकर गुणिगणमं-

डलीमंडन श्रीकृष्णदासात्मज खेमराज जीने इस पुस्तकके शोधने तथा कठिन २ स्थलों-के टीका करने की आज्ञा दी मैंने उसे अंगीकारकर शोधकर इस मनोहारिणी कथाके श्लोकार्थ गूढार्थ स्तुत्यर्थ शंका समाधान और सम्पूर्ण इतिहास यथाक्रम मिश्रित करदियेहैं और क्षेपक कथायें वाल्मीकि, बृहद्रामायण, अग्निवेशकृत रामायण, अवधखण्ड, सत्योपाख्यान, हनुमन्नाटक आदि संस्कृत ग्रंथोंसे आशय लेकर लिखीहैं यह तो देखनेहीसे विदित होजायगा कि क्षेपक कथा इस्से अधिक किसी पुस्तकमें अद्यपर्यंत नहीं लिखीगई और कठिन कठिन स्थलोंका तिलकभी ऐसा स्पष्ट करदियाहै कि, जिसको सरलतासे पाठकगण समझ सकैंगे यदि इस ग्रंथके पढने से पाठकगणों को कुछ भी उपकार होगा तो मैं अपने परिश्रको सफल जानूंगा।

क्षेपक कथाओंके नाम।

गंगोत्पत्ति, हनूमानूजीका जन्मचरित्र, रावणका श्वेतद्वीपमें मानमर्दनहोना, विश्वावसुका गान, विराध वध, सुग्रीव और वालिकाजन्मचरित्र, तालवृक्षकी कथा, हनुमान्जीका चारों दिशाओंमें बंदरोंको बुलानेजाना, गव गवाक्ष का सीताकी खोजमें फिरना, बंदरोंका समुद्र उल्लंघन विषय अपनी अपनी उड़ान शक्तिका वर्णनकरना, कुंभकर्णका स्वरूप वर्णन, लंका दहन विषे पुरकी व्यवस्था, शुकशारनको रावण प्रति बंदरोंका कटक दिखलाना व बलवर्णन सुलोचनाका सती होना, अहिरावणका जन्मचरित्र तथा राम लक्ष्मणको हर लेजाना तथा हनुमान्जी करके उसका वध, नरांतककी उत्पत्ति, तथा संग्राम और दधिमुख करके उसका वध, बिंदुमतीका सती होना, सिवाय इसके संस्कृतके कठिन कठिन शब्दोंकी टिप्पणीभी पण्डित-कृष्णाविहारी शुक्ल बदकी निवासीने अत्यंत सरल प्राकृत भाषामें की है. संख्या टिप्पणी काण्ड २ की निम्न लिखितहैं॥ बालकाण्ड १२५६ अयोध्याकाण्ड ७२० आरण्यकाण्ड १८७ किष्किंधाकाण्ड १०७ सुन्दरकाण्ड १११ लंकाकाण्ड ७१९ उत्तरकाण्ड ६०० सम्पूर्ण ३८००।

जो जो विषय प्रसंग वशसे इसमें अधिक कियेगये हैं वे संक्षेपसे लिखेजाते हैं।

बालकाण्डमें—प्रथम श्लोकसे मानसरोवर पर्यंत तिलक, रावणका जन्म, विवाह, पिताके निकट कुबेरका अधिक सन्मान देखकर उस्से पुष्पक विमानका छीनना, इंद्रसे युद्ध, राजा बालि के यहाँ रावणका जाना और कनककशिपुके कवच न उठनेसे लज्जित होना और शिवकी तपस्या करना, अहिरावणका जन्म, पाताललोक में अहिरावणकाजाना, तपस्या कर कामदादेवीको प्रसन्नकर राज्य पाना, रावणका राजा दिलीपके पास बल देखनेको जाना और उनकाप्रताप देख घरको भागना, दिलीपका बाण छोड़ना मन्दोदरीकी स्तुति करने पर बाणका निवृत्त होना, फिर रघु अज दशरथसे हारकर तपस्या कर यह वरदान मांगना कि "दशरथके वीर्यसे कोई पुत्र न हो" फिर कौसल्याको पिताके यहांसे चुरालाना, समुद्रमें राववमच्छको सौंपना, ब्रह्माका रावणका रूप धर कौसल्याको राघव मच्छसे लाना, मार्गमें धर देना, सुमंत्रका देखना, उसके पिताके पास पहुँचाना, दशरथसे ब्याह करना, जानकीका जन्म, जनकको तपस्या करके धनुष पाना और जानकीका उसे उठाना, जनककी प्रतिज्ञा, ब्रह्मस्तुतिका अर्थ, गर्भस्तुतिका तिलक, रामचंद्रका वानरके अर्थ मचलना, महावीरका बुलाना, रामजीका पतंग उड़ाना, जयन्तकी स्त्रीका पकड़ना दर्शनोंकी प्रतिज्ञापर छोड़ना, महावीरका गमन और इतिहास जो चौपाइयोंमें है

उनका सविस्तर वर्णन किया गया है इतनी कथायें बालकाण्डमें और और रामायणोंसे संग्रह कीगई हैं गंगादिक कथा तो पहलेही से विद्यमानथीं।

अयोध्याकाण्डमें—प्रथम श्लोकार्थ, विश्वावसु गंधर्वका कैकेयीके पास आनकर गाना. कैकेयीका उसे अपने यहाँ रखनेको कहना, इन्द्रका इसपर बुरा मानना और सरस्वतीको भेज कैकेयीके शिर कलंक लगवाना, शरवनकी कथा और जो इतिहास इस काण्डमें अधिकतासे आये हैं उनको भारत, भागवतादि ग्रन्थोंसे निकाल कर स्पष्टरीतिसे दिखादिया है इतनी अयोध्याकाण्डमें अधिकता कीगई है।

आरण्यकाण्डमें—श्लोकार्थ, रामचंद्रके पास जयन्तकी स्त्रीकाआना मांके वरदान पाकर जाना और जयन्तका इस बातसे रिसाना, अत्रिकृत स्तुतिका अर्थ, सुतीक्ष्णकृत स्तुतिका अर्थ, जटायुकृत स्तुतिका अर्थ, कबन्धका वृत्तान्तादि सविस्तर वर्णन किये हैं।

किष्किन्धाकाण्डमें—श्लोकार्थ, बालि सुग्रीवका जन्म, बालि सुग्रीवका विरोध, बालिको मतंग ऋषिका शाप, ताडकी कथा, बालिका वध, रामका प्रवर्षणपर वास, रामका रोष, कपिका त्रास सुग्रीवका दूतोंको वानरोंके बुलानेको भेजना, सर्वदिशाओंसे वानरोंको आना; उन स्थानोंके नाम तथा सब वानरोंको पृथक् पृथक् जानकीके ढूँढनेको भेजना, महावीरादिका बिलमें प्रवेश, बिल स्थ स्त्रीका वृत्तान्त, सम्पातिका अपने पुत्र रावणको पकडनेका वृत्तान्त कहना, महावीरके जन्मकी कथा, सब वानरोंका अपना २ बल कथन करना. इत्यादि अधिक विषय वर्णन किये गये हैं यह काण्ड तो ऐसा आजतक अन्यत्र छपाही नहीं।

सुन्दरकाण्डमें—श्लोकार्थ, लंकापुरी जलानेका वृत्तान्त, रावणका यमराज तथा मेघोंको हनुमान्‌जीको मारने तथा लंका बुझानेको भेजना, हनुमान्‌जीका यमराजको गालमें धरना, देवताओंकी विनय पर यमराजको छोडना इत्यादि प्रसंग अधिक लिखेगये हैं॥

लंकाकाण्डमें—श्लोकार्थ, शुकका सैन्यदिखाना, महावीरका बल कथनकर औषधीको जाना; मकरीके पूर्व जन्मका वृत्तान्त, शापमोचन, हनुमानका भरतसे मिलना तथा कौशल्या सुमित्रासे लक्ष्मणका वृत्तान्त कहना और उनका दुःखित होना, सुलोचनाका सती होना, अहिरावण नरान्तकका माराजाना, रावणके युद्धके दिनोंकी संख्या, शिव ब्रह्मा इन्द्रकृत स्तुतियोंके अर्थ, इतने विषय इसकाण्डमें अधिक वर्णन किये गये हैं।

उत्तरकाण्डमें—श्लोकार्थ, महावीरको हारप्रदान, महावीरको उसमें रामनाम नहीं लिखित होनेसे मणियोंको तोडना, अपने शरीरकेभीतर रामनामांकित अस्थियोंका दिखाना, वेद स्तुति शिवकृत स्तुति तथा ब्राह्मणकृत शिव स्तुतियों के अर्थ इतने विषय इसमें प्राचीन ग्रन्थोंके अनुसार अधिक वर्णन कियेगये हैं॥

इसबार—रावण बाणासुरका संवाद, महासंकल्प, रामकलेवा, वसिष्ठजीका रानियों प्रति इतिहास कहना इत्यादि औरभी अनेक क्षेपक कथा बढाई गई हैं।

इसके उपरान्त लवकुशकाण्ड तथा तुलसीदासजीका जीवनचरित तथा रामवनवास तिथिपत्र विशेष बढाये गये हैं।

संशोधक—पं० ज्वालाप्रसादमिश्र, मुहल्ला दीनदारपुरा—मुरादाबाद.

॥ श्रीः ॥

तुलसीदासकृतरामायणस्य विषयानुक्रमणिकाप्रारंभः ।

अयोध्याकाण्डम् २.

आरण्यकाण्डम् ३.

उत्तरकाण्डम् ७.

इति।

अथ श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत रामायणके चित्रोंका सूचीपत्र।

इति.

॥ श्रीः ॥

श्रीजानकीवल्लभो जयति।

अथ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीका जीवनचरित्र।

दोहा—वेङ्कटेशपदपद्म नमि, उरधरि तुलसीदास।
जन्मचरित वर्णन करूं, सुनतहोत दुखनाश ॥ १ ॥

सोरठा ॥ वंदौंसीताराम, विमलचारुपदकमलयुग ॥ जेहिप्रभावतेधाम, पूरिततुलसीकेचरित ॥ १ ॥
जगतभयोनहिं कोय, गोस्वामी तुलसीसरिस ॥ दियोअधर्महिखोय, रामायणरचिसुरसरी ॥ २ ॥
आदिअंतलगितासु, तुलसीदासचरित्रको ॥ रसनाकरन विकासु, मेरेशक्तिकछुनहीं ॥ ३ ॥
पैविंशतिइतिहास, प्रियादासनाभाकथित ॥ सतमुखकछुकप्रकाश, तौनरीतिवर्णनकरौं ॥ ४ ॥

चौपाई ॥ राजापुरयमुनाकेतीरा। तुलसीतहाँबसैमतिधीरा ॥ पंडितसकलशास्त्रविज्ञाता। विद्यामें विश्वासअघाता॥ भा विवाहआईजबनारी। तासोंअतिशयनेहपसारी ॥ आयोतियहिलेवावनभाई। करीनतुलसीतियहिबिदाई ॥ नैहरहितितिरियाबिरझानी। तदपिनकह्योतासुकछुमानी ॥ आपगयेकछुकाजबजारा। तबभाईलैभगिनिसिधारा ॥ आयोपुनितुलसीजबगेहू। विकलभयेतियविनवशनेहू ॥ वर्षनलगोमेहअधराता। बाढ्योयमुनप्रवाहअघाता ॥ भैविभावरीभूरिअँधेरी। करहुपसारेपरतनहेरी ॥ अर्द्धरात्रितेहिकामसतायो। चल्योश्वशुरगृहतियमनलायो ॥ बढ्योयमुनकरवड़ोप्रवाहा। पैरिपन्योनहिंभैतुरमाहा ॥ अर्द्धनिशागोश्वशुरदुवारा ॥ लगेरहैंचहुँओरकिवाँरा ॥

दोहा ॥ गयोपछीतीचढ़नहित, झूलतरहैभुजंग ॥ ताहिपकरिऊपरगयो, रँग्योकामकेरंग ॥ २ ॥

चौपाई ॥ जायनारिढिगदियोजगाई। प्रथमैंरहीनारिचौआई ॥ चीन्हिबहुरिशंकाअतिकीन्ही। गिराबाणसमसोहनिदीन्ही ॥ धिगधिगधिगतोहिंप्राणपियारे ॥ चामहाड़अतिनिरतहमारे ॥ ऐसोमन जो लागतरामै। तौसुधरततिहरेसबकामै ॥ नारिबैनशरसमउरलागे। पूरवसकलपुण्यफलजागे ॥ तुलसिदासकहमानिगलानी। हैंसतिहैसतितियतुववानी॥ बहुरे तुरतमूककीनाई। गेकाशीतजिभवनगोसाई ॥ विनतीकियविश्वेश्वरपाही। रामभक्तिदीजैमोहिंकाहीं ॥ शूकरक्षेत्रगयो पुनिसोई। गुरूकियोतहँअतिमुदमोई ॥ गुरुकोअतिसेवनतहँठायो। रामायणअध्यात्महिपायो ॥ तुलसिदासआयेपुनिकासी ॥ भेअनन्यरघुनाथउपासी ॥ भजन करतबीत्योबहुकाला। भेप्रसन्नतापरशशिभाला ॥

दोहा ॥ रामायणजहँहोयतहँ, सुननहेतुनितजाय ॥ कथासमापतह्वैगये, तहाँनपुनिठहराय ॥ ३ ॥

चौपाई ॥ बहिर्भूमिहित दूरिहिजाहीं। लियेकमंडलुयककरमाहीं ॥ शौचक्रियाकरबचैजोनीरा। बदरीतरु डारैमतिधीरा ॥ रहैएकतेहिप्रेतपुरानै॥ अशुचिनीरलहिसोसुखमानै ॥ यहिविधिबीतिगयोकछुकाला। यकदिनबोल्योप्रेतकराला॥ तोपरअहौंप्रसन्नगोसाई। मांगौसबअपनीमनभाई ॥ तबसुनितुलसिदासकहवानी। अहौकौनतुमपरैनजानी ॥ सोभाष्योजानहु मोहिंप्रेता। यहिबदरीतरु मोर निकेता ॥ यहिपरजौनसलिलतुमडाऱ्यो। मैंनिजसेवताहिविचाऱ्यो ॥ तुलसीदासकहातुमप्रेता। प्रेतकहामनुजनकहँदेता ॥ जाननचहौजोममनकेरी। तौसुनियेमैंकहौंनिवेरी ॥ जोरघुवीरदरशमैं पाऊँ। जियतप्रयंततोरयशगाऊँ ॥ औरकछूमेरेनाहिंआसा। कह्योप्रेततबभरोहुलासा ॥

दोहा ॥ रामदरशकरवायबो, मोरजोरकछुनाहिं ॥ पैसहायहितकछुकहों, यहउपायतुमकाहिं ॥ ४ ॥

चौपाई ॥ जहँरामायणसुननसिधारो। सबकेपाछेजाहिंनिहारो॥ अतिनिरधनीदुखीअतिदीना। पूरितरोग नयनतेहीना॥ उठैसकलश्रोतनकेपाछे। मंदचलतचिरकुटकटिकाछे ॥ सोहैसांचोपवनकुमारा ॥ तेहिरामायणसुनबअहारा ॥ नेमपवनसुतअसनितधरहीं। श्रवणसदारामायणकरही ॥ मिलैंतुम्हैं कौनहूउपाई। रामदरशकीकैं सहाई ॥ प्रेतवचनसुनितुलसीदासा। उरमेंउँमग्योअमितहुलासा ॥ ताहिगुरूगुणिभवनसिधारे। कथासुननहितचुरत पधारे ॥ कथासुनततहँलख्योप्रवीना। अतिकुरूपतनुक्षाममलीना ॥ दूरीबैठोआँधरऐसो। नयनोलख्योप्रेतकहँजैसो ॥ ह्वैगैकथासमापतजबहीं। श्रोताचलेभवनकहँतबहीं ॥ रहेवारकछुबैठगोसाँई। चल्योपवनसुतजडकीनाई ॥

दोहा ॥ तुलसीदासइकांतलहि, दौरिगह्योपदजाय ॥ छाँड़छाँड़मोहिंमतिछुँवै, सोअसकह्योसुनाय॥ ५ ॥

चौपाई ॥ तुलसीकह्योछुटननापैहौ । लहौंप्राणदरशकोदेहौ ॥ कियोछोडावनविविधउपाई । नपरिगह्यो तुलसीबरियाई ॥ भेप्रसन्नतबपवनकुमारा । मांगुमांगुअसवचनउचारा ॥ तुलसिदासकहरूपदेखावहु । मेरेशीशपाणिनिजलावहु ॥ मेरेऔरकछूनहिंआशा । होनचहौंरघुपतिकरदासा ॥ रामदरशमोहिंदेहु कराई । तुमसमर्थसबविधिकपिराई ॥ तबमारुतनिजरूपदेखायो । तुलसिदासकहँवचनसुनायो ॥ चित्रकूटकहँचलहुप्रवीना । पैहौरामदरशसुखभीना ॥ असकहिकपिनिजरूपदुरायो । तुलसिदासनिजआश्रमआयो ॥ कछुदिनमेंमनमहँअसभयऊ । अबैनशिव दरशनह्वैगयऊ ॥ गयोविश्वेश्वरनाथमंदिरे । लखनरूपचहचूड चंदिरे ॥ पैनहिंदर्शनदियोपुरारी । तुलसिदासतजिआशसिधारी ॥

दोहा ॥ चित्रकूटकहँचढचल्यो, पुरकेबाहिरआइ ॥ मिल्योएकमहिसुरतहाँ, बोल्योवचनबोलाइ ॥ ६ ॥

चौपाई ॥ काशीछोडिअनतमतिजाहू । इततेगयेनतोरनिबाहू ॥ तुलसिदासकहकियसेवकाई । भेप्रसन्ननहिंशंभुगोसाँई ॥ सोकहसत्यशंभुमैंअहहूँ । काशीछोडिअनतनहिंरहहूँ ॥ असकहिहरनिजरूपदिखायो । तुलसिदासचरणनशिरनायो ॥ बहुरिवचनबोल्योकृतिबासा । चित्रकूटचलुतुलसीदासा ॥ कह्योपवनसुतहैसतसोई । रामदरशपैहैसुदमोई ॥ रचिहैरामायणसुखश्रेणी । अघमउधारणियथात्रिवेणी ॥ तुलसिदासतबभयोनिहाला । चल्योचित्रकूटहितेहिकाला ॥ शंकरअपनोरूप छिपायो । तुलसीचित्रकूटकहँआयो ॥ फटिकशिलापरबैठेजाई । रामलषणलालसाबढाई ॥ ताहीसमयतुरंगसवारे । कढेशिकारीद्वैधनुडारे ॥ रपटतमृगनशरनकहँमारे । हरितवसनसुंदरतनुधारे ॥

दोहा ॥ जानिशिकारीभूपसुत, रामरामकहिबैन ॥ तुलसिदासपछितायकै, मूँदिलियोदोउनैन ॥ ७ ॥

चौ० ॥ निकसिगयेजबयुगलसवारा । आयकह्योतबपवनकुमारा ॥ प्रभुदर्शनपायोकीनाहीं । दोऊरामलषणतेआहीं ॥ तुलसिदासकहजानिशिकारी । हायनयनमैंलियोनिहारी ॥ अबैनपूरभईअभिलाषा ॥ जैसोपवनतनयतुमभाषा ॥ तबहनुमानकह्योअसवानी । रामघाटचलुकाल्हिविज्ञानी ॥ भोरभयोतबतुलसीदासा । रामघाटगोभरोहुलासा ॥ गारनलग्योन्हायतहँचंदन । आयगयेदोउदशरथनंदन ॥ कह्योदेउचंदनमोहिंबावा । तुलसिदासतबसहजहिगावा ॥ चंदनदेहुँचरचिअँगमाहीं । रामलषणतुमहोकीनाहीं ॥ बालककहेसाधुजगजेते । रामलषणकीमूरतितेते ॥ देचंदनदोउबालसिधारे । पाछे पवनकुमारपधारे ॥ बोलेवचनदरशतुमपाये । तुलसिदासयहदोहागाये ॥

दोहा ॥ चित्रकूटकेघाटमें, भैसाधुनकीभीर ॥ तुलसिदासचंदनघिसैं, तिलककरैं रघुवीर ॥ ८ ॥

बहुरिकह्योकरजोरिकै, सुनियेपवनकुमार ॥ देखौंचारोंबंधुको, सहितराजसंभार ॥ ९ ॥

चौ० ॥ पवनतनयकहकलियुगमाहीं । असदरशनहोतेकहुँनाहीं ॥ तुलसिदासकहकृपातिहारी । मोहिंनअचरजपरत निहारी ॥ कहकपीशकामतासिधारी । बेठहुकाल्हिरामउरधारी ॥ असकहिकपिअंतर्हितभयऊ । भोरहोततुलसीतहँगयऊ ॥ बैठ्योयुगलपहरपरयंता । आयोदरशदेनसियकंता ॥ धनदिशारहिपूरसुपूरी । भोप्रकाशदशआशहुभूरी ॥ अगणितमत्तमतंगतुरंगा । सोहतविविधभाँतिरथसंगा ॥ बोलतबहुनकीबगणसोरा । याकोकोशलकंतकिशोरा ॥ रथसवार प्रभुचारिहुभाई । करतपवनसुतपदसेवकाई ॥ तुलसिदासतबआरतिसाजा । लख्योनयनभरिरघुकुलराजा ॥ देपरदक्षिण विहवलभयऊ । रघुपतिकरपंकजशिरदयऊ ॥ यहिविधिप्रगटदरशतबपायो । औरनकोनहिंभेदलखायो ॥

दोहा ॥ यहिविधितुलसीदासप्रभु, श्रीहनुमानसहाय ॥ रामदरशपायोप्रगट, रह्योसुयशजगछाय ॥ १० ॥

रामउपासकअतिअमल, नाशकजगजनत्रास ॥ हियेहुलासीवासकिय, काशीतुलसीदास ॥ ११ ॥

प्रगट्योमहामहत्वतहँ, जुरैरोजजनभीर ॥ पर्योरहैचरणननृपति, आवैंबुधमतिधीर ॥ १२ ॥

चौ० ॥ कछुदिनकियकाशीमहँवासा । गयेअवधपुरतुलसीदासा ॥ तहँअनेककीन्होसतसंगा । निशिदिनरँगेरामरतिरंगा ॥ सुखदरामनौमीजबआई । चैतमासअतिआनँदपाई ॥ संवतसोरहसोयकतीसा । सादरसुमिरिभानुकुलईशा ॥ वासरभौमसुखितचितधायन । कियअरंभतुलसीरामायन ॥ बालकांडतहँपूरणकरिकै । आयेपुनिकाशीसुखभरिकै ॥ विनयआदिगीतावलिग्रंथा । रचेरुचिरसूचकसुतपंथा ॥ वाराणशीबस्योसुखछायो । एकप्रबलपंडिततबआयो ॥ काशीजीतन कोमनकीन्हे । बजवावतदुंदुभीप्रवीने ॥ काशिराजतबसभाबोलायो । सबपण्डितनसमाजकरायो ॥ तबजोकाशीजीतन आयो । सोपंडितअसवचनसुनायो ॥ येकमुख्यसबमेंकरिदीजै । हारजीतताकेशिरकीजै ॥

दोहा ॥ पंडितकोअसबैनसुनि ॥ काशीवासीविप्र ॥ मानिमहाभ्रमचित्तमें, कहेवचनअतिक्षिप्र ॥ १३ ॥

चौपाई ॥ उत्तरदेवकाल्हियहिकेरो । असकहिगेद्विजनिजनिजडेरो ॥ कियोध्यानविश्वेश्वरअयना । मर्यादातुमहाथ त्रिनयना ॥ रातिस्वप्नशंकरअसभाषो । तुलसीशीशअजयजयराषो ॥ पंडितमुदितभूपगृहआये । सोपंडितसोवचनसुनाये ॥

तुलसिदाससबमाहिंप्रधानो। जयहुपराजयतेहिशिरआनो ॥ भूपकह्योकिमिसकैंबुलाई । तुलसिदासगृहचलोसिधाई ॥ यहसुनिलैपंडितनसमाजा। आयोतुलसिदासगृहराजा। सबनिकियोसत्कारगोसाँई । एकशिष्यकोकह्योबुलाई। येतांबूल पांचलैजाहू। देहुमुदितपंडितसबकाहू ॥ शिष्य तुरत तांबूलहि बांटा। बचे पांच कोहुपन्योनघाटा ॥ यहप्रभुतालखिपंडित सोई ॥ वादकरनकी आश्रयखोई ॥ तुलसिदास पंडितहिबोलाई। देरामायणकह्योबुझाई ॥

दोहा ॥ खंडन मंडन पक्ष जो, सो देखहु यहि माहिं ॥ जो न होय तौ आइहत, वादकरहुहमपाहिं ॥१४॥

चौपाई ॥ पंडितरामायणलैलीन्हों। डेराचलिअवलोकनकीन्हों ॥ सम्मतशास्त्रपुराणनकेरो। रामायणमहँपंडितहेरो ॥ जौनपक्षपंडितमनभयऊ। समाधानतेहिमहँमिलिगयऊ ॥ जौनश्लोकवंदनामाहीं। ताकीहानिभईकछुनाहीं ॥

श्लोक–नानापुराणनिगमागमसंमतंयद्रामायणेनिगदितंक्वचिदन्यतोऽपि ॥
स्वान्तःसुखायतुलसीरघुनाथगाथाभाषानिबद्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥ १ ॥

चौपाई॥पंडितगृहपरिकर्म्मादयऊ। तुलसिदासपदरजशिरधन्यऊ॥निजअपराधहिक्षमाकरायो। सभामध्यश्लोकसुनायो।

श्लोक–आनन्दकाननेकोपितुलसीजंगमस्तरुः ॥ यत्काव्यमञ्जरीभावाद्रामभ्रमरभूषिता ॥ २ ॥

चौपाई॥तुलसीशिष्यभयोपुनिसोई। अरप्योसकलवस्तुबहुतोई॥ रामभक्तिकोकरिउपदेशा। गयोगर्वतजिकौशलदेशा। पुनिचेटकीएकतहँआयो। इकयक्षिनीसिद्धिकरिल्यायो ॥ तेहिबलसबथलनगरपुजायो। महामहत्वजननसोंपायो ॥ यकवैष्णवकोउगयोसकामा। राख्योसिद्धताहिनिजधामा ॥ सिद्धनारिसोंभईमिताई। साधुगयोलैताहिपगाई ॥

दोहा ॥ उठ्योचेटकीभोरजब, लख्योनारिनहिंधाम ॥बोलियक्षिनीकोतुरत, कीन्होंकोपअछाम ॥ १५ ॥

चौपाई ॥ यहिक्षणनगरभूपगहिल्यावै। साधुनारिलैजाननपावै ॥ सुनियक्षिनीतुरंतहिधाई। युतपरयंकभूपगहिल्याई॥ कह्योयक्षिनीभूपहिंबैना। काशीमहँकोउसाधुरहैना ॥ तिलकछुवायमालसबटोरी। धरिदीजैमम कुंडबटोरी ॥ जोअसकरिहौ नरपतिनाहीं। तौजानौघरयमपुरमाहीं ॥ नरपतिकह्योभवनपहुँचावहु। कालिहहितेनिजहुकुमकरावहु ॥ तुरतभवनभूपहि पठवायो। भोरभूपशासनप्रगटायो॥साधुनगलकंठीसबटोरी। धोयतिलककरिकैबरजोरी ॥ सिद्धकुंडदीजैपहुँचाई। दूजीबात नबनैबनाई ॥ यह सुनिनृपदलकियोतयारी। धोवनलगेतिलककलैवारी ॥ टोरिटोरिकंठीबहुतेरी। भर्योसिद्धकेकुंडहिढेरी ॥ हाहाकारमच्योसबकाशी। भयेसंतसबजीवनिराशी ॥

दोहा ॥ कह्योधूर्तकोउजायकै, तुरतचेटकीकाहिं ॥ तुलसिदासमालातिलक, तुमटोरौकतनाहिं ॥ १६ ॥

चौपाई॥सुनिचेटकीसैनसबसाजे। चल्योकोपिबजवावतबाजे॥नगरलोगसबदेखनधाये। कोउवैष्णवतुलसीढिगआये॥ मालाकंठीटोरनहेतू। आवतकियेचेटकीनेतू॥ तुलसिदासतबगिराबखानी। जाकरमालतिलक सोजानी ॥ जबचेटकीकुटीनियरायो। तबयकबोरबडेररआयो ॥ परीफौजउडिसुरसरिमाहीं। रहीचेटकीतनुसुधिनाहीं॥ रुधिरवमतबूड़तमधिधारा। जसतसकैसोलग्योकिनारा ॥ त्राहिकहततुलसीपदगिरेऊ। मैंअजानसंतनसोंभिरेऊ ॥ क्षमाकरहुअपराधहमारा। तुलसी करुणापारा वारा ॥ वचनकह्योमुसकाइगोसाँई। संतसेउलघुजनकीनाई ॥ खाहुवर्षभरिसाधुनजूंठो। तबह्वैहौशुचि हैनहिं झूंठो ॥ कियोचेटकीतसहिआई। तरीयक्षिनीसंगतिपाई ॥

दोहा ॥ संतचरणजलपानकरि, साधुजूंठनितखाय ॥ भयोचेटकीरामको, दाससुवासविहाय ॥ १७ ॥

चौपाई ॥ भईरामनौमीयककाला। जुरीकुटीमहँसंतनमाला ॥ उत्सवकियोमहासुखछायो । सिगरी राज्यविभूति बुलायो ॥ भईभीरभारीतेहिठामा। छापरह्योयकरामहिनामा ॥ तहँयकडोमअवधपुर केरो । आयोतुरतउछाहघनेरो ॥ महाभीरवशदरशनपायो । जन्ममनोरथबोलिसुनायो ॥ तुलसिदास पहँकोउकहआई। तुरतगयोप्रभुकाजबिहाई ॥ पूछ्यो हैतुकहांकोवासी। सोकहकोशलनगरनिवासी ॥ अवधनिवासीसुनतकृपाला। भरिआएदोउनयनविशाला ॥ उरलगाय मिलिकुटीलैआई। बारबारतेहिकह्योबुझाई ॥ यहविभूतिकीप्रभुरबुराई । जनिभाषियोअवधपुरजाई ॥ मैंचेरोरघुपतिपद केरो। वाराणसीवसौंकरिडेरो ॥ ऐसोहैतुलसीपरभाऊ। कहेमोहिंनहिंहोतअघाऊ ॥

दोहा ॥ एकसमश्रीअवधको, लैसँगसंतसमाज ॥ नावहिनावहिचलतभे, नावभरायेसाज ॥ १८ ॥

चौपाई ॥ सरयूगंगासंगमजहँई। पहुँचेजबैगोसाईतहँई ॥ भूपघाटघाटीअतुग्रामा। पूछ्योतुलसीचारिहुँनामा ॥ कहे लोकचलिकैशिरनावत। रामसिंहइतनृपतिकहावत ॥ रामदासघाटीकरनाऊं । तथारामपुरबाजतगाऊं ॥ रामघाटयह

गुण्योंगोसाई । लगतजगातइतैवरिआई ॥ विनकरदैकोउजाननपावें । तुमहुँकोंदेव उचितइतभावें ॥ रामसँयगुणिनाम-सबनके । सजलकोरभंप्रभुनयननके ॥ तुलसिदासबोलेमुसकाई । देजगातहैमोरजवाई ॥ सुन्योंगोसाईआगमराजा आयोतुरताहिसहितसमाजा ॥ वंद्योतुलसिदासपदकंजन । लियउपदेशकुमतिहगअंजन ॥ विनयकियोभरिआनँदभारा होयनाथइतहीभंडारा ॥ मेरे कंठदेहुप्रभुकंठी । कीजैमोहिवासिदविकुंठी ॥

दोहा ॥ तुलसिदासकरिकैकृपा, भंडारातहँदीन ॥ भूपहुद्रव्यलगायकै, अतिउत्सवतहँकीन ॥ १९ ॥
तुलसिदासउपदेशते, भूपसहितसबदेश ॥ रघुपतिभक्तअनन्यभो, सयोसंतहमेश ॥ २० ॥
तुलसिदासकीपादुका, धरचोभूपगृहमाहिं ॥ इष्टदेवसमपूजिकै, पायोमोदसदाहिं ॥ २१ ॥

चौपाई ॥ एकदिनानिवसततेहिकाशी । एकचरित्रभयोसुखराशी ॥ भैरवनाथप्रभावअपारा । सोमनमेअसकियो-विचारा ॥ मोहिंगोसाईं पूजतनाहीं । दरशाऊंप्रभावयहिकाहीं ॥ असगुणितुलसिदासके बाहू । दुसहपीरप्रगट्योमददाहू॥ होतभईअतिपीरतहाँही । छूटतजान्योनिजतनुकाहीं ॥ जतनकोटिकीन्होमतिधीरा । तबहुँनमिटी बाहुकीपीरा ॥ तबबाहुककोरच्योगोसाईं । मिटिगैपीरस्वप्नकीनाई ॥ भैरवपरकोप्योहनुमाना । भैरवसोंशिवनचनबखाना ॥ देहिराम-दासनदुखनाहीं । तेमोहिंप्रियप्राणहुतेआहीं ॥ स्वप्नेतुलसीसोंशिवभाष्यो । भैभैरवहिमुख्यगणराख्यो ॥ इनहूंकोवंदनतुम-कीजै । मोरिप्रीति अतिशयगनिलीजै । तुलसिदासतबआनँदपाई । भैरवकीवंदनाबनाई ॥

दोहा ॥ रच्योकबित्तउदग्रअति, बाहुकचौआलीस । तासुप्रभावप्रत्यक्षअति, अबलौंआंखिनदीस ॥ २२ ॥
जोचौआलिसदिवसलगि, हनुमतमंदिरजाय ॥ पाठकरैबाहुकसुचिन, वेटिमनेंमनुहाय ॥ २३ ॥
तासुप्रेतबाधासकल, तनकीमनकीपीर ॥ मेटिदेतमारुतसुवन, यहभाषेंमतिधीर ॥ २४ ॥ २४ ॥

चौ० ॥ एकसमयतुलसीभंडारे । जुरीभेटजनदियेअपारे ॥ चोरचोरावनकेहितआये । अर्द्धनिशानिजघातलगाये ॥ जबहीं चोरचोरावनआवें ॥ द्वैबालकधनुशरलैधावें ॥ यहिविधिमिगरीरातिमिरानी । चोरनउरतेकुमतिपरानी ॥ दौरच्योरतु-लसीकेपाँयन । परेआयचितमेंअतिचायन ॥ पूछ्योकोबालकप्रभु दोऊ । इतनेंआवनपावतकोऊ ॥ तुलसिदासपूछ्यो-वृत्तांता । चोरकहेंसिगरेंह्वैशांता ॥ धन्यधन्यकहिपुलकिगोसाईं । गहेचोरपायनवरियाई ॥ ह्वैगेशिष्यतुरंतहिचोरा । तुलसिदासउरभोदुखभोरा ॥ संपतिधरब उचितइतनाहीं । रामलषणतांकधनकाहीं ॥ धिगतेजेहिप्रभुपरिश्रमभयऊ । अबलौंमोरकपटनहिंगयऊ ॥ असगुणिसंपतिदियोलुटाई । करकरवाकोपीनविहाई ॥

दोहा ॥ काशीमेंपुनिइकसमय, मरचोविप्रकोउएक ॥ सतीहोनहितनासुतिय, बांध्योजतनअनेक ॥२५॥
चौ० ॥ न्हायपहिरिपटनरियरलैकै । चलीदेवदरशनसुखछैकै ॥ तुलसिदासआश्रमहूंगवनी । वंद्योचरणविप्रकीरवनी॥ ध्यानकरततहँरहेगोसाईं । बोलेवचनसहजकीनाईं ॥ होसौभाग्यवतीतैंनारी । सुनिमहगामिनिगिराउचारी ॥

साखी–दोहा ॥ तुलसीआवतदेखकरि, सतीनवायोशीश । जबतुलसीऐसेकह्यो, अमरचूडआशीश ॥२६॥
पतीहमारेचलिगये, हमहूंचलतविहाल ॥ तुलसीतुम्हरे वचनको, होसीकवनहवाल ॥२७॥

चौ० ॥ सत्यकरोअपनीप्रभुवानी । सतीहोनहितअहौंपयानी ॥ लख्योगोसाँईनयनउघारी । कियेहतीतियसतीतयारी ॥ अपनेवचनसत्यकेहेतू । गयेजहांमृतदाहननेतू ॥ नयनमूंदिदोउभुजापसारहु । जयजयसीतारामउचारहु ॥ मृतकओर-चितई जोकोई । आंधरसोविशेषकैहोई ॥ जनसमाजतैसहिसबकीन्हे । सीतारामभुदितकहिदीन्हे ॥ जससबबोलेराम-दोहाई । मृतकहुबोल्योहाथउठाई ॥

दोहा ॥ तुलसीरामबोलाइकै, मस्तकधारचोहाथ ॥ हमतौकछुजानैंनहीं, तुमजानौरघुनाथ ॥ २८ ॥
दौरिगह्योतुलसीचरण, जैजैमाच्योसोर ॥ कोइकमूंद्योनयननहिं, भयोअंधतेहिठौर ॥ २९ ॥

चौ० ॥ गह्योआयपदताकीनारी । हरहुनाथयकआंखिहमारी ॥ एकआँखिपतिकीप्रभुदीजै । अपनो वचनसत्यक-रिलीजै ॥ एवमस्तुकहिदियोगोसाईं । तैसहिभयोतुरततेहिठाईं ॥ पुनिकाशीमहँकेहु काला । गोहत्याकहुँलगीकराला ॥ दियोकुटुंबतासुतबत्यागी । आयोसोतुलसीपदलागी ॥ कह्योजोरकरसुनहुउदारा । लखेंलोगनहिंवदनहमारा ॥ तुलसि-दासबोलेतबबैना । रामकहेतनुपापरहैना ॥ हम कुटुंसबदेयमिलाई ॥ रामरामतेंकहुरटलाई ॥ तेहिमुखरामरामरटलागी । ततुतेगोहत्याहुतभागी ॥ तुलसीतासुकुटुंबबुलायो । मंजुलवचनसबनसोंगायो ॥ रामकहतगोवधअघभाग्यो । याकोवृथा-स बैतुम त्याग्यो ॥ जेहिप्रतीतिअबहोयतिहारी । सोकरलेहुपरीक्षाभारी ॥

दोहा ॥ कह्योंकुटुंबीतासुतब, जोनंदीशिवभौन ॥ याकेकरकोखायकछु, तौसँदेहहैकौन ॥ ३० ॥

चौ० ॥ तबविश्वेश्वरमंदिरमाहीं । गयेगोसाईलैतेहिकाहीं ॥ नंदीश्वरसोंविनयसुनायो । नामप्रभाव तुम्हींसबगायो ॥ रामनामकोयथाप्रभाऊ । तुमसमानकोउजाननकाऊ ॥ रामकहतजोअघरहिजावै । तौयहिकरप्रभुकछूनपावै ॥ असकहि करद्विजकरकृतपेरा । धरिदीन्होंनंदीश्वरनेरा ॥ दै किवाँरबाहरप्रभुबैठे । कौतुकलखनजुरेजनतैठे ॥ लखैं किवाँरखोलि जबजाई । लीन्होंनंदीपेराखाई ॥ यकमुखमहँप्रतीतिहितराख्यो । काशीवासीजयजयभाष्यो॥ लियकुटुंबसबताहिमिलाई। तुलसिदासमहिमा मुखगाई ॥ एकसमयपुनितुलसीदासा । कछुदिनकियोअवधपुरवासा ॥ एकविप्रबालकतहँ मरेऊ । तुलसीचरणआयसोगिरेऊ ॥ लोकरीतितुलसीसमुझायो । ताकेमनमेंकछूनआयो ॥

दोहा ॥ लोथिडारिकेसोगयो, तुलसिदासकेद्वार ॥ खानपानसंध्यानकिय, तुलसीकियोखँभार ॥३१॥

चौ० ॥ सुमिरणकीन्होंपवनकुमारा । अहौनाथतुममोहिंअधारा ॥ हनूमानकहस्वप्नेआई । यहिपर यम कीन्हेजबराई ॥ पैयाकोहमअवशिजियैहैं । रामभक्तकोशोकमिटैहैं ॥ असकहियमपुरगयोकपीशा । यमबोल्योपदनावतशीशा ॥ यमपुरविप्रबालजियनाही । खोजिलेहुसिगरेपुरमाहीं ॥ खोज्योकपिपायोनहिं जीवा । तबयमपुरकरिकोपअतीवा ॥ सुमिरिरामपदमहिमासिगरी । लियोलपेटिलँगूरसोंनगरी ॥ बोल्योयमसूंपवनकुमारा । देहुजियायविप्रकाबारा ॥ नातोतेहिसँगयमपुरजै हैं । ममप्रभुतुमसम औरबनैहैं ॥ तबयमभभरिकह्योकरजोरी । भाग्यमिटावनशक्तिनमोरी ॥

श्लोक–लिखिताचित्रगुप्तेनललाटाक्षरमालिका ॥ तन्नचालयितुंशक्यमसुरैस्त्रिदशैरपि ॥३॥ (पुराणांतरे)

चौ० ॥ वायुसुवनतबकहमुसकाई । यहसतिरघुपतिभक्तिविहाई ॥ तामेंसुनयमराजप्रमाना । कियोसनातनवेदबखाना

श्लोक ॥ यद्धात्रालिखितंभालेतन्मृषानैवजायते ॥ ऋते श्री रामदासानांप्रेमनिर्भरचेतसाम्॥ ४ ॥

दोहा ॥ तबयमराजडरायकै, लेद्विजबालकप्रान ॥ अरप्योआइकपीशको, राख्योअपनेथान ॥३२ ॥

चौपाई ॥ दियकपीशद्विजपुत्रजियाई । सकलअवधपुरबजीबधाई ॥ तुलसिदासअतिआनँदपायो । तहांबसतकछुकाल बितायो ॥ आयोयेकवणिकपुनिकोऊ । रामदरशलालचअतिसोऊ ॥ तुलसिदाससोंविनयसुनायो । श्रीरघुवीरदरशचित-चायो ॥ तुलसिदासतबकहमुसकाई । यहतोबातमहाकठिनाई ॥ सहजाहिरामदरशनाहिंहोई । कोटिनजनमजातहैखोई ॥ वणिककह्योहैकौनउपाई । तुलसिदासतबकह्योबुझाई ॥ बरछीगाड़िभूमिमहँदेहू । तापरकूदहुतजितनुनेहू ॥ यहिविधि दरशहोइतोहोई । और जतनकछुपरैनजोई ॥ वणिककह्योयहतौनअसातिहै । तुलसिदासकहसातिसातिसातिहै ॥ वणिकगा-डिबरछीमहिमाहीं । चह्योजाइतरुकूदन काही ॥ मरनभीतिकूद्योनाहिंजाई । बनियाबारबारपछिताई ॥

दोहा ॥ कोउक्षत्रियतेहिपंथहो, लख्योतमाशोजाइ ॥ कह्योवणिकसोंकाहयह, वैश्यकह्योसबगाइ ॥३३॥

चौपाई ॥ क्षत्रियकह्योउतरितुमआवहु । कौनहेतुतनवृथागँवावहु ॥ मोसोंलेहुकछुकधनभाई । करहुजायरोजगार बनाई ॥ वणिकमानिक्षत्रियकेबैना । लैधनतुरतगयोनिजऐना ॥ क्षत्रियलियोमनहिं अनुमानी । मृषा न तुलसिदासकी वानी ॥ तरुपरचढिकूद्योबरछीपर । उपरहिरोकिलियोतेहिरघुवर ॥ बजेनगरदुंदुभीअपारा ॥ भयोसुयशसिगरे संसारा ॥ तामेंप्रमाणगोसांईजीकी । मैंलिखिदेहौंसोईनीकी ॥ "कौनिहुसिद्धिकिविनाविश्वासा । विनहरिभजननभवभयनासा" ॥ यकदिनगुरुजूगयेनहाने । मज्जनहितजबनीरसमाने ॥ तवयकतियविनवसननहाती । कह्योलाजभरिसोविलखाती ॥ करिममओरपीठियहिठांई । ठाढोरहुतोहिंरामदोहाई ॥ तियमज्जनकरिकैघरआई । तुलसिदाससुनिरामदोहाई ॥ रहेठाढतेहिदिनतेहिठाई । शपथबहोरवतियबिसराई ॥ भयोशोरसिगरेपुरमाहीं । आईसोतियबहुरितहाहीं ॥

दोहा ॥ तुलसिदाससोंवचनकहि, रामशपथतुमकाहिं ॥ जाहुआपनेभवनको, इतैकाजकछुनाहिं ॥ ३४ ॥
तुलसिदासजलतेनिकासि, तबआयोनिजभौन ॥ जलचरपगपलनोचिलिय, कियोनयकपदगौन॥३५॥
रामशपथयहिभांतिकी, ताहिमंदमतिलोग ॥ रामद्रोहीभासतरहैं, करिकैमृषाप्रयोग ॥ ३६ ॥

चौपाई ॥ तुलसिदासकरबढ्यो प्रभाऊ । भयोविदितपुहुमीसबठाऊ ॥ बादशाहदिल्लीकोवासी । सुनिकीरतिअतिआ-नंदरासी ॥ निजनायककोकह्यो बुलाई । तुलसीकोल्याइयोलिवाई ॥ नायकचल्योबनारसआयो । तुलसिदासकेपदशिर-नायो ॥ हजरततुम्हें बोलायोसाँई । चल्योदूतकहिकैतेहिठाँई ॥ तुलसिदासतबकियोविचारा । कौनशाहतेहेतुहमारा ॥ पैजोहमदिल्लीनहिंजैहैं । शाह अवशिदरशनहितऐहैं ॥ तौजीवनकोअतिदुखहोई । उचितपरैचलिबोमोहिंजोई ॥ तुलसि-दासलैसाधुसमाजा । दिल्लीगयेसुमिरिरघुराजा ॥ शाहकियोसादरसतकारा । पुनिबोल्योअपनेदरबारा ॥ तुमहिसुन्योसा-हबहिमिलापी । अजमतदेहुदेखायप्रतापी ॥ तुलसीकह्योरामहमजाने । दूसरसाहेबऔरनमाने ॥

दोहा ॥ अजमतदेखनहेतुतहँ, कीन्होंहठशठशाह ॥ तुलसिदासअजमतकरन, कियोनमनमेंचाह ॥३७॥

चौ० ॥ साहसकोपकह्योतबवानी । तूखिलाफअजमतअभिमानी ॥ कारागारकैदयहिकीजै । गमकरतकामोलखि लीजै ॥ सुनतशाहशासनमजबूता । कारागारगयेलैदूता ॥ तुलसिदासतबकियोविचारा । मांगसहायकपवनकुमारा ॥ सुमन्योपदरचिकैहनुमाना । सोपदश्रोतासुनहुसुजाना ॥

पद ॥ऐसोतोहिंनबूझिये,हनुमानहठीले । हांकसुनतदशकंधके, भयेबंधनढीले ॥

चौपाई ॥ तुलसिदासयहपदरचिगायो । तबहनुमतउरअमरषआयो ॥ होतभोरदिल्लीपुरमाहीं । कोटिनमर्कटविकट देखाहीं ॥ कोटकंगूरनऔरहवेली । कलशादियोअनेकनठेली ॥ शाखामृगयकयकघरमाहीं । प्रविशतलाखनतुरतदेखाही ॥ लालकिलामधिशाहमकाना । तहँबांदरप्रविशेसहसाना ॥ तोपनतुपकनयद्यपिमारा । तदपिकोशनहिंहटेहजारा ॥ घुसे कोशबहुशाहजनाने । पकरिबेगमनकोअनखाने ॥

दोहा ॥ फारिवसनपटहीनकिय, चीथिचीथिसबअंग ॥ हाहाकारमचायदिय, रँगेकोपकरंग ॥ ३८ ॥

चौपाई ॥ रहेजौनदिल्लीकेवासी । भयेसकलतेजीवनिरासी ॥ लखिपुरदशाशाहघबराना । सकलवजीरनकोहुतआना ॥ शासनकीन्होंकरहुविचारा । केहिहितमाच्योजुलुमअपारा ॥ हाफिजवृद्धरह्योतहँयका । सोकहकीन्होअतिअविवेका ॥ यकफकीरको कैदकरायो । सोअपनीअजमतदरशायो ॥ करतशाहकेयहीविनाशा । दिल्लीमाच्योहाहाकारा । यकयकपुरुष नारिपरकीशा । लाखनलपटियकरीशा ॥ भागीबेगमबिनसुथनीयां । कहतखोदायनपरपैजनियां ॥ नोचहिनारिनके-शनकीशा । भागतगिरीं फूटिगशीशा ॥ मातुसुतापितुसुततजिभागे । कोउकोउसंगनलियभयपागे ॥ दिल्लीप्रलयहो तिसोंदीसे । हल्लाकियोमहल्लाकीसे । कारागारजायतबशाहा । गिर्योतुरततुलसीपदमाहा ॥

दोहा ॥ विनयकियोकरजोरिकै, अजमतलीन्होंदेखि ॥ अबवानरनसमेटिये, प्रलयहोतिसोलखि ॥३९

चौ० ॥ तुलसिदासकहअजमतदेखा । रामचरित्रसकलजियलेखा ॥ जोचाहोआपनोभलाई । तौफरहुपुरगामदोहाई ॥ यहिदिल्लीभोहनुमतथाना । बसतुजायरचिढितियमकाना । शाहमानिशासनशिरनाई । दिल्लीफिरीगामदोहाई ॥ बंदरबंद-भयेजोहि काले । तुलसीकोल्यायोनिजआले ॥ कियोगोसाँईकोसतकारा । दिल्लीदूसररच्योभुवारा ॥ गमघाटगनियमुना-माही । दिल्लीअरापिसुतुलसीकाहीं ॥ बस्योसुचितचितबादशाहतहँ । तुलसीकोगम्योतहिपुरमहँ । सुन्योमृरकीरतितेहि-भांती । दरशनअभिलाषाअधिकाती ॥ पठैबुद्धिमानलबजकाही । आन्योमृरदासपुरमाही ॥ तुलसीसूरसमागमभयऊ । रामकृष्णमयपुरह्वैगयऊ ॥ दोऊगयेशाहदरबारा । बादशाहकियअतिसतकारा ॥

दोहा ॥ शाहकह्योतबसूरसों, दीजैचरितदेखाय ॥ सूरकह्योतुलसीचरित, लखिनहिंगयेअघाय ॥ ४० ॥

चौ० ॥ बेटीतुवजोबसैजनाने । तासुचरितसुनियेदोउकाने ॥ कृष्णगमकोमखामुहाई । कोनहुपापभवनतुवआई ॥ ताहि पठावहुब्रजैतुरंता । रासकरतजहँराधाकंता ॥ जोपरतीतिहियनहिंतेरे । तोमानियेवयनअममेरे ॥ तासुवामजंघाति-लहोई । मूरतिश्यामकपोलहिजोई ॥ शाहसुनतउठिगयोजनाने । बेटीकोसंबचनबखाने ॥ सुनतहिसुतामुरछिगिरआई । दैतलमुखतहुदियो बिहाई ॥ तासुजंघतिलल्ख्योअमोला । श्यामस्वरूपहुलख्योकपोला ॥ अचरजगुणिपूछ्योतबसूरे । हेतुवखानिहरहुभ्रमपूरे । सूरकह्योयहसखीरासकी । मानकियोपियमिलनआशकी ॥ मेहोंगयोमनावनयाको । मान्योनाहि मनायकैथाको ॥ तबमैंकह्योवियोगिनिह्वैहै । सोउकहतुहुंवियोगाहिपैहै ॥

दोहा ॥ आयगयेतहँमिलनहित, तुरतहिमदनगोपाल ॥ करगहिजंघाधारिछरी, चूमिकपोलविशाल ४१

चौ० ॥ लियोलवायमनायप्रियाको । जान्योसबवृत्तांततहांको ॥ मोहिंकह्योतैंप्रगटजगतमें । तारेंजननविराजिभगत-में ॥ सखीहोयगीशाहकुमारी ॥ तोहिमिलिहैतबतनुतजिडारी । सोअमरषवशमोहितलमान्यो । तनुतजियहपैनिधाम सिधान्यो ॥ छरीचिह्नजंघतिलसोई । चुंबनकीन्हकपोलहिजोई ॥ साहसत्यगुणिअचरजत्यागा । बारहिबारसूरपगलागा ॥ रहेबहुतदिनसूर गोसाँई । करिसतसंगतिमोदअघाई । इकदिनदोउबजारमहँबैठे । करिसतसंगमोदरसपैठे । शाहमत्तमातं-गमहाना । आवतचलोदुहुँनदरशाना ॥ लोगनकह्योपरावतुरंता । नातोकरनचहतगजअंता ॥ सूरकह्योमैंजाहुँगो-साई । मैंरहिसकौंनअबयहिठाँई । मेरोनंदलालअतिबालक । किमिह्वैहैदुरधरगजघालक ॥ तूबैठोबैठभलाई ॥ धनुध-रतेरोनाथगोसाँई ॥

दोहा ॥ भगेसूरअसकहितहां, लीन्हेंअंकगोपाल । तुलसिदाससुसकाइकै, बैठसुमिरिरघुलाल ॥ ४२ ॥

चौ० ॥ धायो तुलसी सन्मुखनागा । आकस्मातशीशशरलागा ॥ मर्योनागकरिघोरचिकारा । भोवृत्तांतविदितसं-

सारा ॥ तुलसीमूरसमागमकरिकै । काशीआवतभेमुदभरिकै ॥ एकसमयनभाजूज्ञानी । जिनयहभक्तमालनिरमानी ॥ तेसबसंतननेउतादीन्हो । सिगरेसंतपयानोकीन्हो । तुलसिदासकोन्योतोआयो । तबमनमेंविचारअसल्यायो ॥ पंगतिमें कच्चोपकवाना । द्विजको खैबोउचितनजाना ॥ यह विचारकरितहांनगयऊ । पवनसुवनतासोंकहिदयऊ ॥ भक्तराजना-भाकोजानो । तुरतहितहँका करोपयानो ॥ हनुमतशासनसुनतगोसाई । चलेतुरत भिक्षुककीनाई ॥ नगरओडछेठिगतब गयऊ । कौतुकतहां मांचियहरहेऊ ॥ तहँकोइंद्रजीतजोराजा । सोजोन्योवहुकविनसमाजा ॥

दोहा ॥ **कविसमाजशिरताजकिय, श्रीकविकेशवदास । रामचंद्रिकाजोविमल, कीन्होंजगतप्रकाश ४३**

चौ० ॥ कविमंडलीविलोकिनरेशा । दीन्होविप्रननवलनिदेशा ॥ यहसवककविमंडलीसदाही । रहै कौनविधिमम ढिगपाही ॥ मंत्रशास्त्रविधिकहअसवानी । प्रेतयज्ञकीजैविधिठानी ॥ यहिविधितेयहकविनसमाजा । रहैसहसवर्षहुल-गिराजा ॥ इंद्रजीततबअतिसुखपायो । प्रेतयज्ञविधिसहितकरायो ॥ सो कविमंडलयुतनरनाथा । भयेप्रेततनुतजियक-साथा ॥ रामचंद्रिकाकेशवकीन्हो । पूरणभईनततुतजिदीन्हो ॥ यहवृत्तांतसकलकोउपाई । तुलसिदासकोदियोसुनाई ॥ सोइकविकेशववटतरुमाही । अवलोकरतपुकारसदाही ॥ रामचंद्रिकाकोलेजाई । ल्यावैतुलसीसोंशोधवाई ॥ यहसुनितुल-सिदासतहँगयऊ । केशवकहतपुकारतभयऊ ॥ केशवतरुतेउतरितुरंता । तुलसीपदपकन्योहरषंता ॥

दोहा ॥ **नाथउधारोमोहिंअब, ग्रंथसुधारोसोय ॥ नाहिंबाँच्योममकोउकुमति, हान्योबहुविधिरोय ४४**

चौ० ॥ तुलसीकह्योविहँसिअसवानी । रामचंद्रिकापढुसुखखानी । केशवरामचंद्रिकापढ़ेऊ । तुलसी सुनिशोधतमुदब-ढेऊ ॥ रामचंद्रिकापूरीजबही । केशवतन्योजयतिकहितबही ॥ नाभानिकटगोसाँइगमने । पंगतिसमयपहुँचिसुखसमने ॥ लखिनाभा कछुकह्योनबानी । लखनरीतितिंहिसुमतिलोभानी ॥ तुलसीबैठेपंगतिछोरा । परीपातरीनीचेठोरा ॥ साधुउ-पानतपातरिनीचे । धरिकीन्होसमअतिसुखसींचे ॥ नाभानिरखिभावअसताको । मिल्योजायकरगहिसुखछाको ॥ ताहि मध्यपंगतिबैठायो । बारबारचरणनशिरनायो ॥ कछुदिनकीन्होतहँनिवासा । करिसतसंगहिलह्योहुलासा ॥ नाभातासु विमलमतिहेरा । भक्तमालमहँकियोसुमेरा ॥ पुनिब्रजमंडलयात्राकरने । तुलसिदासगमन्योसुखभरिने ॥

दोहा ॥ **नाभाजूछप्पयलिख्यो, भक्तमालमेंजौन । मैं सो इतलिखिदेतहौं, श्रोतासमुझौतौन ॥ ४५ ॥**

छप्पय ॥ **त्रेताकाव्यनिबंधकियोशतकोटिरमायन ॥ यकअक्षरउच्चरेब्रह्महत्यादिपरायन ॥**
अबभक्तनसुखदेनबहुरिलीलाविस्तारी ॥ रामचरणरसमत्तरहतअहनिशिव्रतधारी ॥
संसारअपारकेपारकोसुगमरूपनौकालयो ॥ कलिकुटिलजीवनिस्तारहितवालमीकितुलसीभयो ॥ १ ॥

दोहा ॥ **तुलसिदासयात्राकरी, ब्रजचौरासीकोश ॥ रामकृष्णवपुभेदविन, भरिआनँदउरकोश ॥४६॥**

चौ० ॥ बहुरिजबैवृंदावनआये । घाटघाटमज्जनकरिभाये ॥ सवमंदिरनदरशकरिलीन्हो । ज्ञानगूदरीडेराकीन्हो॥ परशुराम तहँरह्योमहंता । कृष्णउपासक भावकरंता ॥ लख्योगुसाईकीसबरीती । बढी करनसतसंगहिप्रीती ॥ तुलसिदासकोकरि सतसंगा । नवनवबढ़तप्रेमरसरंगा ॥ परशुरामकेमंदिरमाही । कृष्णरूपश्रीनाथसोहाही ॥ बंशीलकुटकाछनीकाछे । मुकुट माथमालाउरआछे ॥ सोहतिमूरतिललितत्रिभंगी । हरनहारहियराधासंगी ॥ यकदिनतहँसबदिनकीनाई । दरशहे तुचलिगएगोसाँई ॥ परशुरामतहँरह्योमहंता । तासुपरीक्षाचह्योकरंता ॥ तुलसीकरनदंडवतलागे । तबमहंतबोल्यो अनुरागे ॥ मेरेवचनकछुकसुनिलेहू । फेरिद्वारदंडवतकरेहू ॥

दोहा ॥ अपनेअपनेइष्टके, **नमनकरैसबकोय ॥ परशुराम विनइष्टके, नवैसोमूरखहोय ॥ ४७ ॥**
परशुरामकेवचनसुनि, मानतहियेहुलास ॥ सातारमनसँभारिकै, बोल्योतुलसीदास ॥ ४८ ॥
कहाकहौंछबिआजुकी, भलेबनेहौनाथ ॥ तुलसीमस्तकतबनवै, धरोधनुषशरहाथ ॥ ४९ ॥
मुरलीलकुटदुरायकै, धन्योधनुषशरहाथ ॥ तुलसीलखिरुचिदासकी, नाथभयेरघुनाथ ॥ ५० ॥

चौ० ॥ यहप्रत्यक्षदेख्योसंसारा । वृंदावनमाच्योजयकारा ॥ परशुरामतुलसीपदगहेऊ । धन्यधन्यकहिआनँदलहेऊ ॥ हादिनज्ञानगूदरीमाही । होतीहरिकीकथासदाही ॥ गयेगोसाँईश्रवणउमाहा । निरखेसंतमहंतनकाहा ॥ कोउगद्दीमहँबै-ठहंता ॥ कोउउच्चासनमहँविलसंता ॥ गद्दीमहँबैठावनलागे । भूमहँबैठिगयेअनुरागे ॥ कह्योगोसाँईसबनसुनाई । कथा-श्रवणके दोषगनाई ॥ कथासुनतबीराजेखाही । ते मलभक्षतनरकनमाही ॥ कथासुनतबैठेउच्चासन । ते अर्जुनतरुहोतपा-ईन ॥ कथासुनहिंजेविनाप्रणामा । तेविषवृक्षहोतअघधामा ॥ कथासुनतजेसोवतजानी । ते अजगरहोतेअभिमानी ॥ वाचकसमआसनबैठे । तेगुरुतल्पपापफलपैठे ॥

दोहा ॥ जेनिंदैंयदुपतिकथा, अघहरणीमनहारि ॥ तेशतजन्मप्रयंतलगि, श्वानहोतदुखकारि ॥ ५१ ॥

चौ० ॥ कथाहोतजेकरैंविवादा । तेखरसरटहोतमरयादा ॥ जेहरिकथासुनतशठनाहीं । होतनरकलहिकोलवनाहीं ॥ कथाविघ्नकरतेजेद्रोही । नरकभोगिपुरशूकरहोही ॥ यदशदापतुरंतविहाई ॥ श्रीहरिकथासुनहु सबभाई ॥ सुनिकेतुलसिदासकेबयना । भरिआयेजलप्रेमिननैना ॥ तुंगासनसबदियोविहाई । बैठभूमिकथाशिरनाई । हरिकथाममापतजनहीं । बोल्योसंतएकअसतबहीं ॥ षोडशकलाकृष्ण सुखमारा । द्वादशकलारागम अवतारा ॥ षोडशतजिद्वादशकमभजहू । समाधानकरुनाहिंघरव्रजहू ॥ यहसुनितुलसिदाससुखछाके । भयेमिलनहितहरिसुधाके ॥ रहीदंडद्वैलगिसुधिनाहीं । सींचेसंतसलिलतिन काहीं ॥ भईखबरितबउठेगोसांई । पूछेसंतभेदबरियाई ॥

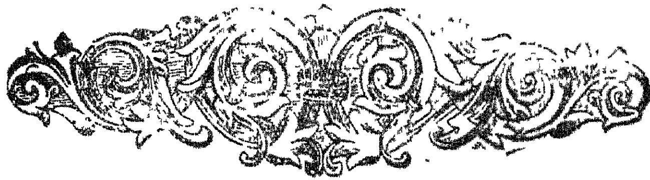
दोहा ॥ तुलसिदासबोल्योवचन, यदपिकहबनहिंयोग ॥ तदपिकहहुँप्रसंगवश, सुनहुभेदसबलोग ५२

चौ० ॥ रामहिजान्योंमैंलगिआजू । अतिकृपालुकोशलमहराजू ॥ तुमतेंनाग्हकलावतार्ये । ईश्वरकाअनिभावहटायें॥ महाराजपुनिईश्वररामा । अबकिमितजौंतासुमेंनामा ॥ यहसुनिजानिअनन्यउपामी । गहेचरणसबसंतहुलासी ॥ यहिविधिकरतविविधसतसंगा । तुलसीविपिनबसेरतिरंगा ॥ पुनि कलुकालमाहँचलिकाशी । तुलसिदासआयेसुखराशी ॥ विनयपत्रिकाजौनबनायो । ताकोमंदिरमध्य धरायो ॥ विनयकियोसम्मुखकरजोरी । मत्यहोयविनतीजोमोरी ॥ तौय-हिमाहिंसहीपरिजावै । मोरदुसहदुखद्रुतमिटिजावै ॥ असकहिकीन्हीबंदाकिवारा । गयोवहुरिजबभोभिनुमारा ॥ तुलसी पुस्तक जबहींहेरी । मिलीसहीप्रभुपतिकरकेरी ॥ विनयमाहँतबपदयहकीन्हो । सोमैंइतनेसुकर्लिखिदीन्हो ॥

पद ॥ तुलसीअनाथकीपरीरघुनाथहाथसहीहै ॥

दोहा ॥ पुनिअतिदुस्तरकालवखि, रामधामकोजान । तुलसीदासविचारकिय, बोल्योसबसुजान॥५३॥
सहिनजातरघुपतिविरह, जानचहौंहरिधाम । यहसुनिकेअतिव्यथितभे, सकलसंतमतिधाम॥५४॥
तिनहिंदियोउपदेशमम, ग्रंथवेदमरयादि । रामायणगीतावली, विनयपत्रिकाआदि ॥ ५५ ॥
तिनहिंसुनहुसमुझहुसुरुचि, चलहुग्रंथअनुसार ॥ अंतसमयहठिमिलहिंगे, दशरथराजकुमार ॥५६॥
असकहिसहजहिआगये, असीवरुनकेतीर । नयननमूंदिनतुअचलकिय, भईसंतकीभीर ॥ ५७ ॥
बजेनगारेगगनमें, देखोपरोविलास ॥ दामिनिसोंचहुँवोरमें, चमक्योचपलप्रकास ॥ ५८ ॥
संवतसोरहसैअसी, असीवरुनकेतीर ॥ श्रावणशुक्लासतमी, तुलसीतज्योशरीर ॥ ५९ ॥
भवसागरमेंनावसम, विरचिग्रंथमतिधीर । चढविमानगमनतभयो, जहँनिवसतरघुवीर ॥ ६० ॥

इति श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासजीका जीवनचरित सम्पूर्ण ॥

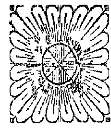
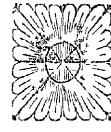


खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय, खेतबाड़ी—बंबई.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS,
Shri Venkateshwar (Steam) Press, Khetwadi--BOMBAY.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीरामचन्द्रके चतुर्दशवर्ष वनवासका-

 # तिथिपत्र 

दोहा-सुमिरि रामसिय चरणशुभ, सकल सुमंगल खानि ॥
अग्निवेश मत कहौं कछु, तिथि वनवास बखानि ॥ १ ॥

चैत्रशुक्ल नवमी जगजानी * तेहिदिनजन्मलियोसुखदानी ॥
वर्ष चतुर्दश चारिहु भाई * बालचरित्र किये सुखदाई ॥
वर्ष पंचदश माहिं सुहाये * विश्वामित्र बुलावन आये ॥
पंद्रहदिवस संग मुनिनाथा * काज सँवारे श्रीरघुनाथा ॥
पुनि प्रभु मिथिलापुर जब आये * जनकरायने दर्शन पाये ॥
धनुषभंगकर जय जिमि पाई * पन्द्रहदिवस रहे रघुराई ॥
हिमऋतु अगहनमास सुहावन * शुक्लपक्ष पाँचैं तिथि पावन ॥
मीनलग्न वृश्चिकके भानू * भयो व्याह आनंदनिधानू ॥
वर्ष पंचदशके भगवाना * सीय वर्षछःकी जगजाना ॥

दोहा-करि विवाह आये घरहिं, मंगल मोदअपार ॥
द्वादश वर्ष विलासयुत, रहे कृपा आगार ॥ २ ॥

वर्ष सताइसमें रघुनाथा * कीन गवन वन लक्ष्मण साथा ॥
तीन दिवस बीते जलपाना * कियो राम सीता जगजाना ॥
चौथे दिवस लषण रघुराई * शृंगवेरपुर फल कछु खाई ॥
पँचयें दिन श्रीकृपानिधाना * सुरसरि उतरि चले भगवाना ॥
भरद्वाज आश्रम सुखपाई * रहे तहाँ इक दिन रघुराई ॥
वाल्मीकिसे मिल सुखदाई * चित्रकूटसें कुटी बनाई ॥
तहँ जयन्त शिखदीन्ह रमेशा * वासकीन्हकछु दिनअवधेशा ॥

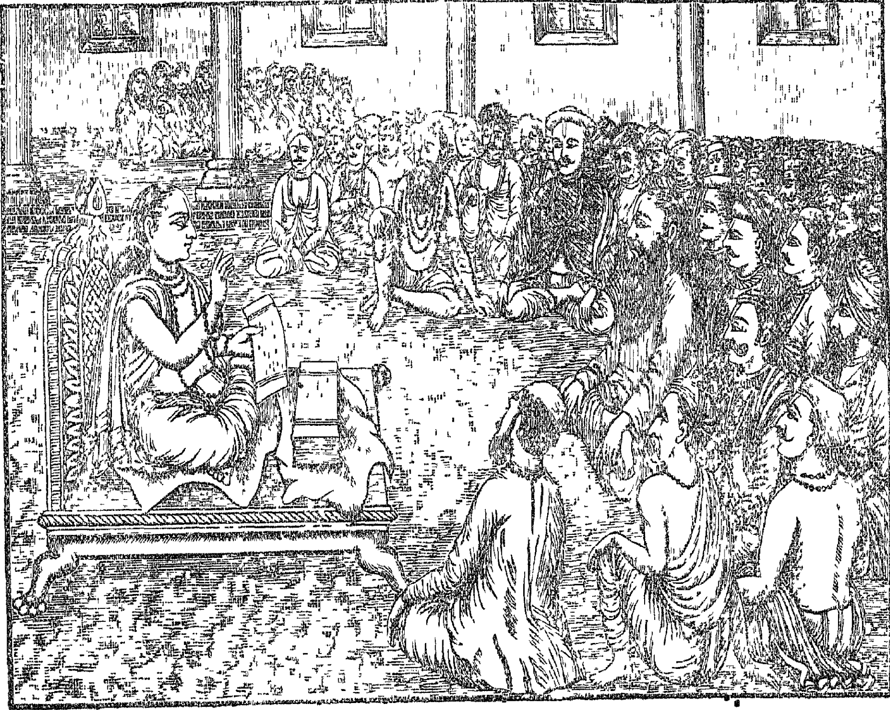
दोहा-चित्रकूटसे चल बहुरि, वधाविराध कर कीन्ह ॥
मिलसुतीक्षण शरभंगसे, ऋषि अगस्त्य सुख दीन्ह ॥ ३ ॥

इहिविधि द्वादशवर्ष विताये * पुनि प्रभु पंचवटीमें आये ॥
वर्ष त्रयोदश भयो प्रवेशा * खरदूषण वध कीन्ह रमेशा ॥

माघशुक्ल आठैं जब आई * दिन मध्याह्न दशानन जाई ॥
छलकरि हरी सीय महरानी * लेगयो निज लंका रजधानी ॥
पुनि जटायुको कर उद्धारा * दुष्ट कबन्ध निशाचर मारा ॥
शबरिहि गतिदे पंचममासा * मिलि अषाढ सुग्रीव हुलासा ॥
वालिहि मार मास तहँ चारी * रहे प्रवर्षण पर असुरारी ॥
पुनि सीतहि खोजन कहँ वानर * जेहिविधि चले बुद्धिबलआगर ॥
दोहा-मार्गशीर्ष कृष्णा सुभग, हरि वासर हनुमान ॥
सिंधुलाँघि लंकहि चले, महाधीर बलवान ॥ ४ ॥
त्रयोदशी ढूँढे हनुमाना * पुनि अशोकवन माहिं समाना ॥
जनकसुताके दर्शन पाई * मुद्री प्रभुकी दीन्हु गहाई ॥
पुनि अशोकवन सकल उजारा * चौदशको अक्षय कहँ मारा ॥
लंक दाहकर सियतट आई * चूडामणिले चले सुहाई ॥
वारिधि लाँघ सेननिज आये * समाचार सुन सब हर्षाये ॥
चले तहाँ ते सब सुखपाई * पाँच दिवस मग माहिं बिताई ॥
अगहन शुक्ला छठ सुखदाई * किष्किंधा सब पहुँचे आई ॥
शुक्रवार सतमी सुहाई * जनकसुताकी सुधि प्रभु पाई ॥
दोहा-अगहन शुक्ला अष्टमी, सेनसहित भगवान ॥
उत्तर फाल्गुनि नखतमें, लंकहि कीन पयान ॥ ५ ॥
सातदिवस मगमाहिं बिताये * पूनोंको वारिधि तट आये ॥
पौष तृतीयातक सुखरासा * तीनदिवस तहँ कीन निवासा ॥
पौष चतुर्थीकृष्ण सुहाई * आये शरण विभीषण धाई ॥
पौष अष्टमीतक रघुराई * विनय कीन सागर तट आई ॥
नवमी विप्ररूप धारि सागर * आये शरण राम नयनागर ॥
दशमीपौष सेतु दृढ भारी * दशयोजन कपि रच्यो विचारी ॥
एकादशि कहँ योजनवीसा * बारस तीस बँध्यो वारीसा ॥
चालिस योजन तेरस वासर * रच्यो सेतु नल नील उजागर ॥
दशयोजन आयत रच दीन्हा * शतयोजन विशालकपिकीन्हा ॥
दोहा-चौदशसे द्वितियातलक, उतरे सागर पार ॥

दशमीतक गढ़लंक कहँ, घेरचो सहित विचार ॥ ६ ॥
पौष शुक्ल हरिवासर आई * शुकसारण कपिसेन दिखाई ॥
द्वादशिमें प्रभु यह मत भावा * चारि भाग निजकटक बनावा ॥
छत्र मुकुट रावणके जोई * काटे प्रभु ताही दिन सोई ॥
सैन दशानन की दिन तीनी * भइ सन्नद्ध युद्ध रँगभीनी ॥
माघकृष्ण प्रतिपद जब आई * अंगद फिरि आये समुझाई ॥
द्वितियासे नवमी तक आई * दोउदल कीन्ह युद्ध हर्षाई ॥
नागफाँस घननाद चलाई * दशमी गरुड काटगये आई ॥
द्वादशितक कर युद्ध अपारा * मरचो धूम्रलोचन बलभारा ॥
दोहा-मावसतक कपिसैनने, मारे दैत्यसुधीर ॥
माघशुक्लकी चौथतक, लरचो दशाननवीर ॥ ७ ॥
पँचमीसे आठैं तक जाई * कुम्भकर्ण कहँ दियो जगाई ॥
नवमीसे चौदशतक आई * लरचो मृत्यु रघुपतिसे पाई ॥
माघशुक्ल पूनोदिन पावन * लरचोनशोकग्रसितरह्योरावन॥
फाल्गुन पाँचैतक भगवाना * कियो नरान्तक वध बलवाना ॥
पुनि आठैंतक दैत्य अपारा * मारे श्रीरघुनाथ उदारा ॥
कुंभ निकुंभ दैत्य बलवाना * तेरसतक मारे भगवाना ॥
पुनि शुक्ला द्वितिया जब आई * मारो जमुकदैत्य रघुराई ॥
फाल्गुन शिवतेरस घननादा * मरो भयो देवन अह्लादा ॥
चौदशमें शोकित दशभाला * युद्धकियो नाहिं दुःख विशाला ॥
दोहा-फाल्गुनशुक्ला पूर्णिमा, लरन चल्यो दशशीश ॥
मारे सब सेनापती, आठैं तक जगदीश ॥ ८ ॥
चैतकृष्ण नवमी जब आई * मारी शक्ति लषणके जाई ॥
पुनि हनुमान सजीवन लाये * मूर्च्छित लषण चेत तब पाये ॥
दशमी दिवसयुद्ध अतिभारी * कीनो रावणसे असुरारी ॥
मातलि हरिवासर कहँ आयो * सुरपति को रथप्रभुहितलायो ॥
द्वादशि रथारूढ भगवाना * आये सेनसहित मैदाना ॥
तेहि दिनसे अष्टादश वासना * रावणसे भयो युद्ध भयंकर ॥

चैत्रशुक्लचौदशि जब आई * मरो दशानन जगदुखदाई ॥
पूनोंके दिन देह दशानन * दाहविभीषणकियोदुखितमन ॥
दोहा—प्रतिपदकहँ वैशाखकी, इन्द्र अमिय बर्षाय ॥
भालु कीश जे रणमरे, तिनको दियो जिवाय ॥ ९ ॥
पुनि द्वितियाके दिन भगवाना * राज्य विभीषण दीन सुजाना ॥
तृतियाको श्रीजनकदुलारी * आय अनलमें प्रविशि सुखारी ॥
दिनदश और मास दशचारी * रही लंकमें सीय दुखारी ॥
निकसि अनलतेअवनिकुमारी * भयो कपिनमन अचरजभारी ॥
चौथ कपिनसँग बैठ विमाना * कीन्ह अवधकहँराम पयाना ॥
पाँचै तिथि प्रयाग अन्हाई * छठको मिले भरतसन आई ॥
इहिविधि वर्ष चतुर्दश बीते * आये रामभये मनचीते ॥
कृष्णसप्तमी माधवमासा * सबके मन अतिभयो हुलासा ॥
दोहा—इकतालिसवें वर्षमें, रामचन्द्र भगवान ॥
आयुः बतिस वर्षकी, जनकसुता गुणखान ॥ १० ॥
तेहि दिन सिंहासनभगवाना * बैठे राजतिलक जगजाना ॥
भादोंकी नवमी जब आई * गर्भवती भइ सीय सुहाई ॥
चैत्र द्वादशी शुक्लदुखारी * आज्ञा लषण राम उरधारी ॥
जनकसुताको त्यागा जाई * आश्रम वाल्मीकि मुनिराई ॥
वाल्मीकि तहँ रक्षा कीन्हीं * पुत्रीसम सीतहि तिन्हलीन्हीं ॥
नवमीमास अषाढ मनोहर * जन्मे लवकुश दोउ सुन्दरवर ॥
नौसै छचासठ वर्ष दुखारी * रहींविपिनमहँ जनकदुलारी ॥
ग्यारहसहस वर्ष भगवाना * कीन्हों राजधर्म विधिनाना ॥
पुनि लवकुश कहँ दीन्हेउ राजू * गये लोक साकेत समाजू ॥
दोहा—अग्निवेषको सारले, द्विज ज्वालाप्रसाद ॥
वर्ण्यो रामचरित्र कछु, जेहि सुनि मिटहिं बिषाद ॥ ११ ॥
श्रीगुरु ज्वालानाथ के, चरणकमल मनलाय ॥
वर्णो तिथि वनवासकी, सुनि संशय भ्रमजाय ॥ १२ ॥
दोहा—श्रीकृष्णदासात्मज, खेमराजसुखदान ॥ तिनकहँ दीन्ही भेट यह, याहि न छापैं आन ॥
॥ इति श्रीरामचरित्रवनवासतिथिपत्रं श्रीयुत मिश्रसुखानन्दात्मज पंडित ज्वालाप्रसादविरचितं सम्पूर्णम् ॥



श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृतरामायणस्य-

माहात्म्यप्रारंभः

दोहा–गुरुहरिहरगणईशधी, सुमिरौंतुलसीदास॥करतगोपालमाहात्म्य श्री,–रामायणसुखरास १ ॥
· चौपाई ॥ रामायणसुरतरुकीछाया । दुखभयेदूरिनिकटजोआया ॥ सप्तकाण्डस्तंभसुहाई । दोहालघुशाखाछबिछाई ॥ शुचिसोरठासीटकाकोई । पत्रीबहुचौपाईजोई ॥ छंदनकीशोभा अतिरूरी । जनुनवीनअंकुरछबिपूरी ॥ अक्षरसुमनरहेगहगाई । अतिअद्भुतसुगन्धकविताई ॥ विविधप्रकारअर्थसोईफल । श्रोतासुमतिस्वादुजानैभल ॥ भक्तिज्ञानवैराग्यसरसरस । बीजदोयनिर्गुणसगुणअस ॥ मुनिभुशुंडिशिवप्रथमहिगाई । सोइगाईजगहेतुगोसाँई॥ दोहा ॥ तुलसिदासरामायण नहिंकरतेपरचार ॥ कलिकेकुटिलजीवये, कोकरतोनिस्तार ॥ २ ॥ चौपाई ॥ रामायणसुरधेनुसमाना । दायकअभिमतफलकल्याना ॥ गुणसमूहकविसकैंकौनगनि । जासुप्रभावँसरिसचिंतामनि॥ रामअयनरामायणआही । वर्णिपारपावैकोताही ॥ रामायणअद्भुतफुलवारी । रामभ्रमरभूषितरुचि भारी ॥ श्रीरामायणजेहिंघरमाहीं । भूतप्रेततहँभूलिनजाहीं॥नहिंगतितहाँदरिद्रहुकेरी । तहँश्रीमहावीरकीफेरी ॥ यंत्रमंत्रसगुनोतीजेती । रामायणमहँजानियतेती॥प्रीतिकरैरामायणमाहीं ।तेहिसमभाग्यवंतकोउनाहीं ॥ दोहा ॥ रामायणसमनाहिंकोउ, सबउपमाउपमेय ॥ उपमाभाषाऔरकी, कैसे कोउकविदेय ॥ ३ चौपाई ॥ त्रेतामहँभयेवाल्मीकिमुनि । तेकलियुगभेतुलसिदासपुनि ॥ शतक-

रोरिरामायणभाषी । इनमथिसारसुसूक्षमराखी ॥ प्रथमकाण्डहैबालकलीला । जन्मविवाहरामकी लीला ॥ द्वितियअयोध्याकाण्डप्रकासा । पितुआज्ञारघुवरवनवासा ॥ मुनिअरण्यकिष्किंधाभाख्यो । तहँसुग्रीवशरणमहँराख्यो ॥ सुन्दरसुन्दरकांडसुहावन । युद्धकांडमहँमारेउरावन ॥ सतमउत्तरपरमअनूपा । उत्सवप्रभुकौशलपुरभूपा॥तुलसीकृतरामायणयेती॥विविधप्रकारकथाहैंकेती ॥ दोहा ॥ जगवारिधिकोपारनाहिं, ऐसा है फैलाव ॥ तुलसीदासकृपाकरी, रचिरामायणनाव ॥ ४ ॥ चौपाई॥ श्रीरामायणस्वर्गनिसेनी । भक्तजननकहँआनँददेनी ॥ श्रीरामायणमुक्तिप्रदाता । जनजाहिपढिहोहिंसुज्ञाता ॥ पापसमूहतूलकीरासी । रामायणधनंजयकनकाशी । मोहपुंजतमकिरणिनमारी । कामअग्निकहँशीतलवारी ॥ रामायणशशिकिरणिसुहाई । संतचकोरनकहँसुखदाई ॥ धन्यधन्यश्रीतुलसिदासधानि । जगहितरामायणराखीभानि ॥ नीचऊँचजेतेनरनारी । श्रीरामायणसवकहँप्यारी ॥ रामायणसोंनेहलगावें । अधनअपत्यसुवितसुतपावें ॥ दोहा॥रामायणसोंनेहकिय, सिद्धहोतसबकाम॥ हैसबकोकल्याणदा, पढुसुनलहुविश्राम ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ निगमादिकतेअक्षकमंडल । रामायणस्थितगंगाजल ॥ भागीरथसमतुलसिदासपुनि । भाषाप्रचुरकीनजमसुरधुनि ॥ होतिग्रहयकथलरामायण । तेहिमगआवतपापपरायण ॥ कछुककानमहँपरिगइवाता । चलतपंथकहुँभयोपपाता ॥ गिरतहितुरतछूटितनुगयऊ । तहँ अद्भुतइकअचरजभयऊ ॥ ताहिलेनआयेयमदूता । निजपाशनबाँध्योमजबूता ॥ अतिआतुरहरिजनतहँआये ! छीनलीनबहुत्रासदिखाये ॥ रामायणपसुनियहकाना लैजैहैं बैठारिविमाना॥दोहा॥ रामायणपरतापसों, गयोपार्षदनसाथ । दूतचले यमकंमदन, खींझतमींजतहाथ ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ निजदूतनदेखेउबिलखाता । पूँछीभानुतनयकुशलाता ॥ किनतुमकहँदीन्होंदुखभाई । चारचतुरतुमदेहुबताई ॥ कहाकहैंतुमसोंमहराजा । पूँछततुमहिंनआवतलाजा॥ कोउइकमृत्युलोकबडभागी । तुलसीदासभयोवैरागी ॥ रामकथारामायणभाषी । सोलोगनघरघरधरिराखी॥ जेजेविविधभाँतिकेपापी । मांसाहारीऔरसुरापी ॥ तेसबमिलिरामायणसुनिहैं । कहिहैं लिखिहैंपढिहैंगुनिहैं ॥ तेनहिंएहैंसदनतुम्हारे । सत्यसत्यनृपवचनहमारे ॥ दोहा ॥ लेहुपाशयेआपने राखहुअपनेपास ॥ अमलतुम्हारोउठोअब, सुनियमभयेउदास ॥७॥ चौपाई ॥ अपनीव्यथाकहैनहिंपाये । तबलगिदूतऔरतहँआये ॥ कहनलगेरविसुतसोंरोई । तवचाकरीनहमसोंहोई ॥ जगमेंकहूँनहुकुमतिहारो । यहसुनियमजकिरहेउविचारो ॥ अहोदूतमोहिंकहोबुझाई ॥ किनदीन्होंममहुकुमउठाई ॥ कहाकहैंकछुकहीनजाई । तुलसिदासइकभयोगोसाई ॥ तिनकीरामायणजगव्यापी । तेइँकीन्हेंपवित्रसबपापी ॥ गयेहमएकअधमगृहमाहीं । अतिदुखभयो जातकहिनाहीं ॥ तहँ देखेउँइककपिबलवाना । उग्ररूपसदृशहनुमाना ॥ दोहा ॥ प्राणनकोगाहकभयो, तबहमभएअतिदीन ॥ शरणशरणतवशरणहैं, अस्तुतिबहुविधिकीन ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ तवतौंहैप्रसन्नकपिराई । हमसनपुनिपरतीतिकराई ॥ धरीहोयरामायणजहँवा । कबहूँभूलिनजायहुतहँवा । जेश्रोतावक्तारामायण ॥ कबहूँमतिजायहुतेहिआयन ॥असहमसोंकपिशपथकराई । तबछूटनपायोसुनराई॥सुनियमराजबहुतघबराये । निकटबुलायदूतसमुझाये ॥ नामरूपगुणकथारामकी । कियउनफेरीतीनधामकी ॥ अजामीलकीसुरतिकरोजू । औरनकछुचितमाँझधरोजू ॥ थकिसोरहेदूतसुनिवानी । धनिश्रीरामायणमहरानी॥दोहा ॥रामायणतेजस्वरी, सतभाषाशिरमौर ॥ यमपुरजाकोशोरहै, समताकोनहिंऔर ॥ ॥९॥ चौपाई ॥ पातकमहालग्योकिनहोई । रामायणसुनिरह्योनकोई ॥ चाहैचारोंफलकोसाधन । करुरामायणकोआराधन ॥ रामायणसुनिपापपराने । जिमिहिमऋतुमहँमशकनशाने ॥ कलि

युगतरनउपायनकोई । रामभजनरामायनदोई ॥ कथारामायणकीजहँहोई । सोगृहवरमतिजानैकोई ॥ सोवरतीर्थरूपसमभासै । तहाँगयेसबपातकनासै ॥ पापवासदेहीमहँतबलग । श्रीरामायणसुनैनजबलग ॥ उदयपुरानीपुण्यहोयजब । रामायणमहँमनलागैतब ॥ दोहा ॥ रामायणकेसुनतही, छूटिजायप्रेतत्त्व ॥ जाकेपढेसुनेते, सूझतहै परतत्त्व ॥ १० ॥ चौपाई ॥ कोजानैरामायणकोरस । यहतोहैसंतनकोसरवस ॥ वनजसनेही अलिगणजैसे । भक्तनप्रियरामायणतैसे ॥ त्यागिभक्तजनग्रंथ अनेकू । धारणाकियरामायणएकू ॥ भक्तनकहँहैभक्तिअनूपा । रसिकजननकहँहैरसरूपा ॥ ज्ञानमयीतिनकहँजेज्ञानी । तुलसीतारनतरनबखानी ॥ कामक्रोधरुजवशसंसारा । औषधिरामायणअनुसारा ॥ रामायणमहँ नेहनजाको । जीवतशवसमजानियताको॥रामायणजाकहँप्रियनाहीं ॥ वृथा जन्मताकोजगमाहीं ॥ दोहा ॥ रामायणअमृतकथा, लेतनताकोस्वाद ॥ तिनकोनिश्चयजानिये, हैंपूरेमनुजाद ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ रामायणविधिकहौंविशारद । सनत्कुमारसोंभाषीनारद ॥ सहितविधानसुनैजोकोई । सहजमुक्तिपावैनरसोई॥कार्तिकमाघचैत्राचितलाई । नवदिनकहैकथासुखदाई ॥ ब्रह्ममुहूर्त्तसमयहोजबहीं । कर्मकरैशौचादिकतबहीं ॥करैदंतधावनलटजीरा । मज्जनकरैधरैमनधीरा॥ पुनिरामायणपुस्तकअरचै । प्रेमसहितगंधादिकचरचै ।ॐनमोनारायणमंत्रभनीजै॥तीनआहुतीहोम करीजै ॥ मनवचकर्मपापतनुकेरे । छूटिजातनहिंआवतनेरे ॥ दोहा ॥ याविधिरामायणविधिहि, जेकरिहहिंचितलाय ॥ रामधामतेजाइहैं, संसृतदुखहिमिटाय ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ जोकछुकारजकहँ कोइजाई । सुमिरिचलैसोयहचौपाई ॥ प्रविशनगरकीजैसबकाजा । हृदयराखिकोशलपुरराजा ॥ जो विदेशचाहैकुशलाई । तोयहसुमिरिचलैचौपाई॥रथचढिसियासहितदोउभाई । चलेवनहिंअवधहिंशिरनाई॥भूतपिशाचजाहिजबलागै॥यहसोरठापढेसोभागै॥ सोरठा—वंदौंपवनकुमार,खलवनपावकज्ञानघन॥जासुहृदयआगार, बसहिंरामशरचापधर ॥ १ चौपाई ॥ शत्रुनिवारणचहोजोभाई । भावसहितजपुयहचौपाई ॥ जाकेसुमिरणतेरिपुनाशा ॥ नामशत्रुहनवेदप्रकाशा ॥ यहचौपाईजपैजोकोई॥ अन्नआदिदुखताहिनहोई ॥ विश्वभरणपोषणकरजोई । ताकरनामभरतअसहोई ॥ जोउत्सवचह विविधप्रकारा । करुयहचौपाईअनुसारा ॥ जबतेरामव्याहिघरआये ॥ नितनवमंगलमोदवधाये ॥ जोचाहोजगमहँजयभाई । सुस्थिरह्वैजपुयहचौपाई ॥सखाधर्ममयअसरथजाके।जीतनकहँनकतहुँरिपुताके ॥ हैंबहुभाँतिकार्यजगमाहीं । रामायणसोंसबह्वैजाहीं ॥ दोहा॥ सकलभाँतिमनकामना, यह दोहा दातार ॥ रामायण महँ खोजि करि, करु याको अनुसार ॥ १३ ॥ वह शोभा जु समाज सुख, कहत न बनै खगेश ॥ वरणै शारद शेष पुनि, सो रस जान महेश ॥ ॥ चौपाई ॥ वर्णौंएकरुचिरइतिहासा । तुलसिदासजोकीनतमासा ॥ द्राविडअरुकाशीमहिपाला । कहुँ एकत्ररहेकछुकाला ॥ अतिशयप्रीतिबढीदुहुँमाहीं ॥ मनमेंकपटलेशकछुनाहीं ॥ गर्भवतीदोऊनृपनारी । चलीबातदुहुँहुनकहिडारी ॥ द्राविडकहीवातसुखरासी । सुनहुनृपतिकाशीकेवासी ॥ जन्मैतवसुतसुताहमारे । अथवाममसुतसुतातिहारे ॥ अससंयोगहोइजोनाहू ॥ हमतुमकरहिंविवाह उछाहू ॥ सोहैकरियहबातदृढाई ॥ संततप्रीतिरहीअबभाई॥सुखदसमयआयोजबकोऊ । निजनिज भवनगयेनृपदोऊ ॥ सोरठा॥कन्याभइदुहुँओर, जानीजातनदैवगति ॥कहिपठयोसुतमोर, द्राविड दूतकाशीगये ॥२॥ चौपाई ॥ यहछलहोतभयोजिहिलाई । सोवहहेतुकहौंमैंगाई ॥ द्राविडपतिनिजगृहआयोजब । रानीसों असकहतभयोतब ॥ जोहोईकन्यादुहुँओरा । तौमैंप्राणतजबबरजोरा ॥

सुनिरानीराजासुखवानी । मनमहँ बहुतभाँतिभयमानी ॥ उपरोहितकोलिहिसिबुलाई । नृपदुरायय-हबातबुझाई ॥ ममअहिवाततुम्हारेहाथा । नहिंतौप्रभुमैंहोवअनाथा ॥ गनीद्रव्यदीन्हनाहिंथोरी । भइमायावशद्विजमतिभोरी ॥ सेवकसेवकायनवशकीन्हेसि । आदरमानदानबहुदीन्हेसि ॥ दोहा ॥ सेवकएकदीनतेहि, वाराणसीवसाय ॥ तेहितेपाईशिखबहुरि, तवयहकिहिमिउपाय ॥ १४॥ चौपाई ॥ पुत्रनामधरिगुप्तरखाया । द्वादशवर्षनद्वारादिखाया॥विद्रुपनकहेनकोऊपोपे।व्याहसमयनवकोउदेखे॥ मित्रमिलनहितचितअनुराग्यो । नेगीपठैव्याहमुनिमाँग्यो । अतिआनंदचल्योमगनेगी।काशीनृपपहँ आयेनेगी॥नृपमनमुदितपत्रिकावाँची।लैआवोबरातरंगराची॥आयोव्याहनहितनिडराजा । खुलीबात उपजीअतिलाजा॥क्रोधातुरकाशीअवनीशा।कहकटिहौंद्राविडकरशीशा॥ यहमुनिद्राविडअधिकड रानेउ । निजछलसमुझिसमुझिपछितानेउ ॥ दोहा ॥ अतिसभीतअतिदीनह्वै, गयोजहँतुलसीदास ॥ पाहिपाहिकहिपाँयपरि, कहेउकरौदुखनाश ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ तबकाशीनृपकहँबुलवायो । तुल-सिदासहितकरसमुझायो ॥ सुतकहिसुताजोव्याहनआयो ॥ होयपुत्रतौहोयवधायो ॥ जोयहपुत्रहोय महाराजा । करहिंविवाहसाजिसबसाजा॥तुलसीदासवेदिविरचाई।नहँगणेशगवरीपधराई ॥ सिंहासन पैधरिरामायण । नवदिनभरकीन्हींपारायण ॥ जोकन्यावरवेपबनायो । ताहीकोसंमुखबैठायो ॥ वक्ता आपसोश्रोताभई ॥ दुनियातहँदेखनसबगई ॥ कथासकलजबबाँचिसुनाई । तासुशीशकरधरेउगो साई॥दोहा॥ अरु यह चौपाईपढी, रामहिंसुमिरिप्रसन्न ॥ तिहिअवसरवरह्वैगयो, श्रीरामायणधन्य ॥ ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ मंत्रमहामणिविपयव्यालके । मेटतकठिनकुअंकभालके ॥ रामायणजबकहीगु साँई । प्रगटनहितकाशीफिरआई । आदरकीन्हनपंडितकाऊ ॥ कहेजोहमसोकरउपाऊ ॥ जेहि स्थानकहैंतहँजाहू । पोथीअबनदेखावहुकाहू ॥ श्रीआनंदकान्हब्रह्मचारी । हमशिरमोरसुम-हिमाभारी ॥ जोयाकोवैआदरकरिहैं । तोहमसबलैशीशहिधरिहैं । गयेआनंदकान्हपहँतत्पर । करतप्रशंसप्रसन्नपरस्पर ॥ पोथीकीचर्चापुनिकीन्ही । देखनहेतुमोलधरिलीन्ही ॥ कछुदिनपढ़ी सहितअनुरागन । गयेगोसाईपोथीमाँगन ॥ दोहा ॥ पोथीदइअरुअसकहेउ, होईआदरलोक ॥ निजप्रमाणकरि लिखिदियो, यहअद्भुतश्लोक ॥ १७॥ श्लोक ॥ "आनंदकाननेह्यस्मिञ्जङ्ग-मस्तुलसीतरुः ॥ कवितामञ्जरीयस्यरामभ्रमरभूपिता" ॥ १ ॥ छंद ॥ धनिधन्यतुलसीदासजिनज गेहतुरामायणभनी । माहात्म्यअमितनकहिसकौंरसविषयमहँमोमतिसनी ॥ निजबुद्धिकेअनुसारक हीगोपालसद्गुरुकीदया । रघुवीरयशकीअधिकताश्रीसंतजनकरिहहिंमया ॥ १ ॥ दोहा ॥ श्रीमत् तुलसीदासजी, ह्वैप्रसन्नवरदेहु ॥ रामायणमाहात्म्यसों, हरिजनकरहिंसनेहु ॥ १८ ॥ संवतवसुन-भनंदकू १९०८ मार्गशुक्लगुरुवार ॥ एकादशिकहँकीन्हहै, अपनीमतिअनुसार ॥ १९ ॥ गमको-टश्रीअवधपुर, स्वामीरामप्रसाद ॥ तिनकीमहिमाकोकहै, विश्वविदितमरयाद ॥२०॥तिनतेगादीपां चई, सोस्वामीमैदास । लषणपुरीममजन्मक्षिति, रामनगरकेपास ॥ २१ ॥ भोजनगरपरसिद्धद्वि-ज, उत्तमपूरणदास॥ तस्यात्मजगोपालकृत, यहमहात्म्यइतिहास ॥ २२ ॥

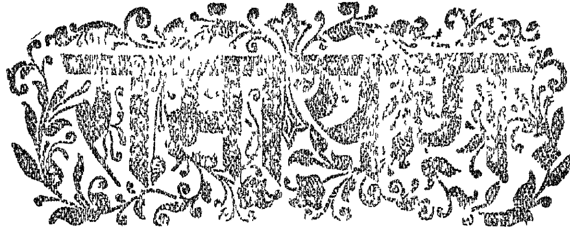
इति श्रीगोपालदासकृत रामायणमाहात्म्यं संपूर्णम् ।



श्रीमद्वङ्कटेशो विजयते।

अथ

श्रीयुतगोस्वामितुलसीदासजीकृत-



सटिप्पण

बालकाण्ड १

संपूर्ण क्षेपकों सहित.

जिसमें

रामजन्म, विवाह उछाह, शिव पार्वतीका पाणिग्रहण, रावणजन्म व्युत्पत्ति और परशुरामका मानमथन इत्यादि अनेक ललित कथा वर्णित हैं।

यह ग्रन्थ

पण्डित-ज्वालाप्रसादमिश्रजीकेद्वारा

शुद्धकराकर,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

(एकादशावृत्ति)

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९६२, शके १८२७.

॥ श्रीः ॥

❋ बालकाण्ड १. ❋

दोहा-रामचरणरति जो चहै, अथवा पद निर्वान ।
भाव सहित सो यहकथा, करै श्रवणपुटपान ॥



रामपञ्चायतन ।

चौपाई-मनकामना सिद्धि नरपावै । जो यह कथा कपट तजि गावै ॥
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं । ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय, खेतवाडी-बंबई.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS

Shree Venkateshwar (Steam) Press, Khetwadi—BOMBAY.

॥ श्रीः ॥

श्रीमद्वेङ्कटेश्वराय नमः ।

* अथ रामायणे बालकाण्डम्. *

दोहा–शिवको पाणिग्रहण अरु, दशमुखजन्म महान ।
रामजन्म अरु ब्याह यह, बालकाण्डमें जान ॥ १ ॥

श्लोकाः-वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि ॥ मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥ भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥ याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥२॥ वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ॥ यमाश्रितो हि वक्रोपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥ सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ॥ वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥ उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ॥ सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोहं रामवल्लभाम् ॥५॥ यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवाः सुरा यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ॥ यत्पादप्लवमेव भाति हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां वन्देऽहं तमशेषका-

---

श्लोकार्थाः–वर्णों और अर्थके समूहों और रसों छन्दों और मंगलोंकेभी करनेवाले गणेश सरस्वतीकी मैं वन्दना करताहूं ॥१॥ जो श्रद्धा और विश्वासके रूपहैं जिन दोनोंके विना सिद्धलोग अपने अन्तःकरणमें स्थित ईश्वरको नहीं देखसक्ते ऐसे भवानी–शंकरकी मैं वंदना करताहूं ॥ २ ॥ ज्ञानस्वरूप और नाशरहित शंकररूपी गुरुकी वन्दना करताहूं. जिनके आश्रितहोके टेढा चन्द्रमाभी सर्वत्र वंदनीयहै ॥ ३ ॥ सीता रामके गुणोंका समूह जो पुण्यका वनहै उसमें विहार करनेवाले वाल्मीकि और महावीरकी मैं वन्दना करताहूं ॥ ४ ॥ उत्पत्ति, पालन, प्रलयकी करनेवाली सब आनंदकी देनेहारी रामचन्द्रकी प्यारी श्रीजानकीजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ५ ॥ जिनकी मायाके वशमें सम्पूर्ण संसार ब्रह्मादिक देवता वर्तते हैं ॥ जिनकी सत्यतासे यह नाशवान् जगत् सत्यसा प्रतीत होताहै जैसे कि, रस्सीके भ्रममें सर्प और भवसागरसे पार होनेकी इच्छा करनेवालों को जिनके चरण नौकारूपी शोभायमान हैं वह सब कारणोंसे परे ईश्वर जिनका 'राम–नाम' है,

रणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥ ६ ॥ नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ॥ स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथाभाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति ॥ ७ ॥

सो०-जेहिसुमिरतसिधिहोइ, गणनायककरिवरवदन[१][२] ॥
करौअनुग्रह सोइ, बुद्धिराशि शुभगुणसदन ॥ १ ॥
मूक[५] होहिं वाचाल[६], पंगु चढै गिरिवरगहन[७] ॥
जासुकृपासुदयाल, द्रवौसकलकलिमल[८]दहन ॥२॥
नीलसरोरुह श्याम, तरुण अरुण वारिजनयन ॥
करौ सो मम उर धाम, सदाक्षीरसागरशयन ॥ ३॥
कुन्दइन्दु सम देह, उमारमण करुणाअयन ॥
जाहि दीनपर नेह, करहु कृपा मर्द्दनमयन[९] ॥ ४ ॥
वन्दौं गुरुपद कंज[१०], कृपासिंधु नररूप हरि ॥
महामोह तमपुंज[११], जासु वचन रविकर निकर ॥५॥

चौ०-वन्दौं गुरुपद पद्म परागा[१२] * सुरुचिसुवाससरस अनुरागा ॥
अमिय मूरिमय चूरण चारू[१३] * शमनसकलभवरुजपरिवारू ॥
सुकृतशम्भुतनुविमलविभूती * मंजुल[१४] मंगल मोद प्रसूती ॥
जन मनमंजु मुकुरमलहरणी * कियेतिलकगुणगणवशकरणी ॥
श्रीगुरुपदनखमणिगणज्योती * सुमिरत दिव्यदृष्टि हियहोती ॥
दलन मोह तम सासु प्रकासू * बड़भाग्य उर आवहिं जासू ॥
उघरहिंविमलविलोचनाहियके * मिटहिं दोष दुखभवरजनीके ॥
सूझहिंरामचरितमणिमानिक * गुप्तप्रकटजहँजोजेहिखानिक ॥

दोहा-यथा सुअंजन आँजि दृग[१५], साधक सिद्ध सुजान ॥
कौतुक[१६] देखहिं शैल वन, भूतल भूरिनिधान ॥ १ ॥

तिनको मैं प्रणाम करताहूं ॥ ६ ॥ अठारह पुराण, चार वेद, छः शास्त्रोंका जो सम्मतहै वह इस रामायणमें कहाहै. कहीं अन्यभी अपने अंतःकरणके सुखके निमित्त तुलसीदास रघुनाथकी कथाको भाषामें निबंधकर कोमल विस्तार करतेहैं ॥ ७ ॥

१ हाथीकी शुण्ड तद्वत् । २ मुख । ३ कृपा । ४ घर । ५ गूंगे । ६ वक्ता । ७ गम्भीर । ८ पाप । ९ काम । १० कमलवत् । ११ अंधकारसमूह । १२ रज । १३ पवित्र । १४ निर्मल । १५ आँख । १६ तमासा ।

गुरुपद रज मृदु मंजुल अंजन * नयनअमियदृगदोषविभंजन ॥
तेहिकरिविमलविवेकविलोचन * वर्णौं रामचरित भवमोचन ॥
वन्दौं प्रथम महीसुर चरणा * मोहजनित संशय सबहरणा ॥
सुजनसमाज सकल गुणखानी * करौं प्रणाम सप्रेम सुवानी ॥
साधुचरितशुभ सरिसकपासू * निरसविशदगुणमयफलजासू ॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा * वन्दनीय जेहि जगयशपावा ॥
मुद मंगल मय संत समाजू * जो जग जंगम तीरथराजू ॥
राममक्ति जहँ सुरसरि धारा * सरस्वति ब्रह्मविचार प्रचारा ॥
विधिनिषेधमयकलिमलहरणी * कर्मकथा रविनंदिनि वरणी ॥
हरि हर कथा विराजत बेनी * सुनत सकल मुदमंगल देनी ॥
बट विश्वास अचल निजधर्म्मा * तीरथराज समाज सुकर्म्मा ॥
सबहिंसुलभ सबदिन सबदेशा * सेवत सादर शमन कलेशा ॥
अकथ अलौकिक तीरथराऊ * देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ ॥

दोहा–सुनिसमुझिहिंजनमुदितमन, मज्जहिंअतिअनुराग ॥
लहहिं चारिफल अछततनु, साधुसमाजप्रयाग ॥ २ ॥

मज्जन फल देखिय ततकाला * काकहोहिं पिक बकउ मराला ॥
सुनि आश्चर्य करहि जनिकोई * सतसंगति महिमा नहिं गोई ॥
* वाल्मीकि×नारद+घटयोनी * निजनिजमुखनकहीनिजहोनी ॥

---

* वालमीकिजीने रामजीसे कहा कि,मैं पहिले व्याधेका काम करके अनेक जीवोंका घात किया करता और उनका द्रव्य हरण करके अपने कुटुंबका पालन करता था.एक दिन ऋषियोंसे अकस्मात् मार्गमें भेंट भई, सो उनका भी जीवघात करनेकेलिये मैं तत्पर हुआ. तब उन्होंने कहा कि, जिन्होंने तुझको इस घोर कर्ममें प्रवृत्त कर रक्खाहै वोह तेरे पापकेभी साझीहैं कि,नहीं? तब मैं यह वार्त्ता सुन कुटुंबके लोगोंसे पूँछने गया उन्होंने कहा हम पापमें साझी नहीं. तब मैं बडा दुःखीहो फिर ऋषियोंके पास गया उन्होंने मुझे अत्यन्त आतुर समझकर दीक्षा दी.उनके उपदेशसे आपका नाम विपरीत मरा२जपते २ मैं इस स्वधर्मगतिको प्राप्त हुआ कि, आप साक्षात् ईश्वर मेरे स्थानपर पधारे. जब वेदव्यास पुराणोंको बनाचुके और उन्हैं संतोष न आया तब×नारदजीसे कहा कि, महाराज ! इसका कारण क्या? नारदजी बोले सुनो मैं पूर्वमें दासीपुत्र रहा परन्तु मेरी माता जिसके यहां काम करतीथी वह साधुसेवीथे उनके स्थानमें साधु लोग आवें तब साधुओंका जूंठा भोजन जो

१ गंगाजी । २ यमुनाजी । ३ नाश । ४ प्रयागजी । ५ स्नान । ६ कौवा । ७ हंस । ८ छिपी । ९ अगस्त्यजी । १० अपने अपने ।

जलचर थलचर नभचर नाना * जे जड़ चेतन जीव जहाना ॥
मति कीरति गति भूति भलाई * जब जेहि यत्न जहाँ जेहि पाई॥
सो जानब सतसंग प्रभाऊ * लोकहुँ वेदन आन उपाऊ ॥
बिन सतसंग विवेक न होई * रामकृपा बिन सुलभ न सोई ॥
सतसंगति मुद मंगल मूला * सोइफलसिधसबसाधनफूला॥
शठ सुधरहिं सतसंगति पाई * पारस परशि कुधातु सुहाई ॥
विधिवश सुजन कुसंगति परहीं * फणिमणिसमनिजगुणअनुसरहीं
विधि हरि हर कविकोविदवानी * कहत साधु महिमा सकुचानी॥
सो मोहिंसन कहिजात न कैसे * शाकवणिकमणि गुणगण जैसे॥

दोहा–वन्दौं संत समान चित, हित अनहित नहिं कोउ ॥
अंजलिगत शुभ सुमनजिमि, समसुगंध करदोउ ॥ ३ ॥
संत सरलचित जगतहित, जानि स्वभाव सनेहु ॥
बालविनय सुनि करिकृपा, रामचरणरति देहु ॥ ४ ॥

बहुरि वंदि खलगण सतिभाये * जे बिनकाज दाहिनेहुँ बाये ॥
परहित हानि लाभ जिनकेरे * उजरे हर्ष विषाद बसेरे ॥
हरि हर यश राकेश राहुसे * पर अकाज भट सहसबाहुसे ॥
जे परदोष लखहिं सहसाखी * परहितघृत जिनके मनमाखी ॥
तेज कृशानु रोष महिषेशा * अघअवगुणधनधनिकधनेशा ॥
उदय केतु समहित सबहीके * कुम्भकर्ण सम सोवत नीके ॥
पर अकाजलगि तनु परिहरहीं * जिमिहिमउपलकृषीदलगरहीं ॥

शेषरहै उसे मैं खाऊं और उनकी सेवा किया करूं उससे मेरी बुद्धि ऐसी निर्मल हुई कि, माताके परलोक जानेके अनंतर मैं तपस्या करने चलागया अन्तमें शरीर त्यागकर इस गतिको पहुँचा कि, ब्रह्माका पुत्र हुआ यह सत्संगतिकी महिमाहै. इससे तुम अब कछु भगवद्यश कहो तो संतोष होगा तब व्यासजीने श्रीमद्भागवत बनाया और × अगस्त्यजीने महादेवजीसे कहा कि, मेरे पिता मित्रावरुण तप करतेथे कि, आकाशमार्गमें रंभा शृंगार किये जातीथी सो उनकी दृष्टि उसपर पड़ी काम उत्पन्नभया तब मित्रावरुणजीने वीर्यको घटमें रखदिया उससे मेरी उत्पत्ति हुई इससे मैं घटज हुआ तो ऐसा नीचबुद्धि और नीचस्थानसे उत्पन्नहुआ परन्तु सत्संगसे इस दशाको प्राप्तहुआ॥

१ मूर्ख–स्थावर । २ ज्ञान । ३ लोहा । ४ पुष्प । ५ पूर्णमासीका चन्द्र । ६ पाला । ७ खेती

वन्दौं खल जस शेष सरोषा * सहसवदन वर्णै परदोषा ॥
पुनि प्रणवौं पृथुराज समाना * पर अघ सुनैं सहसदश काना ॥
बहुरि शक्र[1] सम विनवौं तेही * संतत सुरानीक हित जेही ॥
वचन वज्र जेहि सदा पियारा * सहसनयन परदोष निहारा ॥

दोहा–उदासीन अरि मीत हित, सुनत जरहिं खलरीति ॥
जानु पाणि युग जोरिकरि, विनती करौं सप्रीति ॥ ५ ॥

मैं आपनि दिशि कीन्ह निहोरा * तिन निजओर न लाउब भोरा ॥
पायस[2] पालिय अति अनुरागा[3] * होहिंनिरामिष[4]कबहुँकिकागा ॥
वन्दौं संत असज्जन चरणा * दुखप्रदउभयबीचकछुवरणा ॥
बिछुरत एक प्राण हरिलेहीं * मिलत एक दारुण दुख देहीं ॥
उपजहिं एक संग जलमाहीं *जलजजोंकाजिमिगुणबिलगाहीं॥
सुधा[5] सुरा[6] सम साधु असाधू * जनक एकजंगजलधिअगाधू ॥
भल अनभलनिजानिजकरतूती * लहत सुयश अपलोकाविभूती ॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू *गरलअनलकलि[7]मलसरिव्याधू॥
गुण अवगुण जानत सब कोई * जो जेहिभाव नीक तेहि सोई ॥

दोहा–भले भलाईपै लहहिं, लहहिं निचाई नीच ॥
सुधा सराहिय अमरता, गरल सराहिय मीच ॥ ६ ॥

खलगह अगुण साधु गुणगाहा *उभय अपारउदधि अवगाहा[9] ॥
तेहिते कछु गुण दोष बखाने *संग्रह त्याग न बिन पहिंचाने ॥
भलेउ पोच सब विधि उपजाये * गनि गुण दोष वेद बिलगाये ॥
कहहिं वेद इतिहास पुराना * विधिप्रपंचगुणअवगुणसाना ॥
दुख सुख पाप पुण्य दिन राती * साधु असाधु सुजाति कुजाती ॥
दानव देव ऊंच अरु नीचू * अमिय सजीवन माहुर मीचू ॥
माया ब्रह्म जीव जगदीशा * लक्ष अलक्ष रंक अवनीशा ॥
काशी मग सुरसरि कर्मनाशा * मरु मालव महिदेव गवासा ॥

१ इन्द्र । २ खीर । ३ मीनि । ४ मांस । ५ अमृत । ६ मदिरा । ७ कर्मनाशा । ८ विष । ९ अथाह ।

स्वर्ग नरक अनुरागविरागा * निगमागम गुण दोष विभागा॥

दोहा—जड़ चेतन गुण दोषमय, विश्वकीन्ह करतार ॥
संत हंस गुण गहहिं पय, परिहरि वारि विकार ॥ ७ ॥

अस विवेक जब देहि विधाता *तब तजि दोष गुणहिं मनराता॥
काल स्वभाव कर्म बरिआई * भलेउ प्रकृति वश चूक भलाई॥
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं *दलिदुखदोष विमल यश देहीं॥
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू *मिटहि न मलिनस्वभावअभंगू॥
लखि सुवेष जगवंचक जेऊ * वेष प्रताप पूजियत तेऊ ॥
उघरहिं अन्त न होइ निबाहु * कालनेमि जिमि रावण राहू ॥
किये कुवेष साधु सनमानू * जिमि जग जाम्बवन्त हनुमानू॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू * लोकहु वेद विदित सब काहू ॥
गगनै चढ़ै रज पवन प्रसंगा * कीचहि मिलइ नीच जल संगा ॥
साधु असाधु सदनशुकसारी *सुमिरहिं राम देहिं गनि गारी ॥
धूम कुसंगति कारिख होई *लिखिय पुराण मंजु मसि सोई ॥
सोइ जलअनलअनिलसंघाता * होइ जलद जगजीवन दाता॥

दोहा—ग्रह भेषज जल पवन पट, पाइ कुयोग सुयोग॥
होइ कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलक्षण लोग ॥ ८ ॥
सम प्रकाश तम पाख दुहुँ, नाम भेद विधि कीन्ह ॥
शशि पोषक शोषक समुझि, जगयश अपयश दीन्ह ॥९॥
जड़ चेतन जग जीवजे, सकल राम मय जानि ॥
वन्दौं सबके पदकमल, सदा जोरि युगपानि ॥ १० ॥
देव दनुज नर नाग खग, प्रेत पितर गंधर्व ॥
वन्दौं किन्नर रजनिचर, कृपा करहु अब सर्व ॥ ११ ॥

आकर चारि लाख चौरासी *जातजीव नभ जल थल वासी॥
सियाराममय सब जनजानी * करौं प्रणाम जोरि युग पानी॥

१ संसार। २ नाश। ३ आकाश। ४ गृह। ५ औषध। ६ दोनोंहाथ। ७ निशाचर।

जानि कृपा करि किंकर मोहू * सब मिलिकरहु छाँड़िछलछोहू ॥
निजबुधिबलभरोसमोहिंनाहीं * ताते विनय करउँ सब पाहीं ॥
करन चहौं रघुपति गुणगाहा * लघुमति मोरि चरितअवगाहा ॥
सूझ न एकौ अंग उपाऊ * मन अतिरंक मनोरथ राऊ ॥
मतिअतिनीचऊँचरुचिआछी * चाहिय अमिय जगजुरैनछाछी ॥
क्षमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई * सुनिहहिं बालवचन मन लाई ॥
ज्यों बालक कह तोतरिबाता * सुनहिंमुदितमनपितुअरुमाता ॥
हँसिहहिं क्रूरकुटिलकुविचारी * जे परदूषण भूषण धारी ॥
निजकवित्त केहि लाग न नीका * सरस होय अथवा अति फीका ॥
जे परभणित सुनत हरषाहीं * ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं ॥
जग बहु नर सर सरिसमभाई * जे निज बाढ़ बढ़हिं जल पाई ॥
सज्जन सुकृतासिन्धु सम कोई * देखि पूर विधु बाढ़हि जोई ॥

दोहा-भाग्य छोट अभिलाष बड़, करउँ एक विश्वास ॥
पैहहिं सुख सुनि सुजन जन, खल करिहैं उपहास ॥१२॥

खल परिहास होत हित मोरा * काक कहहिं कल कंठ कठोरा ॥
हंसहिं बक दादुर चातकही * हँसहिंमलिनखलविमलबतकही ॥
कवित रसिक न रामपद नेहू * तिन्ह कहँ सुखदहासरसएहू ॥
भाषा भणित मोरि मति भोरी * हँसिबे योग हँसे नहिं खोरी ॥
प्रभुपद प्रीति न सामुझि नीकी * तिनहिंकथासुनिलागिहिफीकी ॥
हरिहरपदरति मति न कुतरकी * तिनकहँमधुरकथा रघुवरकी ॥
रामभक्ति भूषित जिय जानी * सुनिहहिंसुजनसराहिसुबानी ॥
कवि न होउँ नहिं चतुर प्रवीना * सकल कला सब विद्या हीना ॥
आखर अर्थ अलंकृत नाना * छन्द प्रबन्ध अनेक विधाना ॥
भाव भेद रस भेद अपारा * कवितदोषगुण विविधप्रकारा ॥
कवित विवेक एक नहिं मोरे * सत्य कहौं लिखि कागजकोरे ॥

१ कंगाल । २ राजा । ३ कविताई । ४ तालाब । ५ नदी । ६ समुद्र । ७ पूर्णमासीका चन्द्रमा

दोहा–भणित मोर सब गुणरहित, विश्व विदित गुण एक ॥
सो विचारि सुनिहहिं सुमति, जिनके विमल[१]विवेक ॥१३॥

यहि महँ रघुपति नाम उदारा * अतिपावन पुराण श्रुति सारा॥
मंगल भवन अमंगल हारी *उमासहित जेहि जपत पुरारी॥
भणितविचित्रसुकविकृतजोऊ * राम नाम विनु सोह न सोऊ॥
विधुवदनी सब भाँति सँवारी * सोह न वसन विना वर नारी ॥
सबगुणरहितकुकविकृतबानी * राम नाम यश अंकित जानी॥
सादर कहहिं सुनहिं बुधताही * मधुकर सरिससन्तगुणग्राही॥
यदपि कवित गुण एको नाहीं * रामप्रताप प्रगट इहि माहीं ॥
सोइ भरोस मोरे मन आवा * केहि न सुसंग बड़ापन पावा ॥
धूमउ तजै सहज करुआई * अगर प्रसंग सुगन्ध बसाई ॥
भणितभदे[२]श वस्तु. भलिवरणी * रामकथा जग मंगलकरणी ॥

छंद–मंगलकरनि कलिमलहरानि[३], तुलसी कथा रघुनाथकी ॥
गति कूर[४] कविता सरित[५] की, ज्यों परम पावन पाथ[६]की ॥
प्रभुसुयशसंगतिभणितभलि, होइहि सुजनमनभावनी ॥
भव[७] भूति अंग मशानकी, सुमिरत सुहावनि पावनी ॥ १ ॥

दोहा–प्रिय लागहिं अति सबहिं मम, भणितरामयशसंग ॥
दारु[८] विचार कि करइ कोउ, वन्दिय मलय प्रसंग ॥ १४ ॥
श्याम सुरभि[९] पय[१०]विशद अति, गुणद करहिं तेहि पान ॥
गिरा ग्राम सिय राम यश, गावहिं सुनहिं सुजान ॥ १५ ॥

मणि माणिक मुक्ताछविजैसी * अहिगिरिगजशिरसोहनतैसी ॥
नृप किरीट[११] तरुणी तनु पाई * लहहिं सकल शोभा अधिकाई ॥
तैसाहिसुकविकवितबुधकहहीं * उपजहिंअनतअनतछबिलहहीं॥
भक्तहेतु विधि भवन विहाई * सुमिरत शारद आवत धाई ॥
रामचरित सर विनुअन्हवाये * सो श्रम जाइ न कोटि उपाये ॥
कविकोविदअसहृदयविचारी * गावहिं हरिगुण कलिमलहारी ॥

१ निर्मल ज्ञान। २ फूहर। ३ कलियुगके पापहरनहारी। ४ टेढी। ५ नदी। ६ जलकेसंयोगते। ७ महादेव। ८ काष्ठ। ९ श्यामगाय। १० श्वेतदूध। ११ मुकुट।

कीन्हें प्राकृत जन गुणगाना * शिरधुनिगिरा लागिपछिताना॥
हृदय सिन्धु मति सीप समाना * स्वाती शारद कहहिं सुजाना ॥
जो बरषै वर वारि विचारू * होहिं कवित मुक्तामणिचारू ॥
दोहा-युक्ति वेधि पुनि पोहिये, रामचरित वर ताग ॥
पहिरहिं सज्जन विमलउर, शोभा अतिअनुराग ॥ १६ ॥
जे जनमें कलिकाल कराला * करतब वायस वेष मराला ॥
चलत कुपंथ वेदमग छाँडे * कपट कलेवर कलिमल भाँडे ॥
वञ्चक भक्त कहाइ रामके * किंकर कंचन कोह कामके ॥
तिनमहँ प्रथमरेख जग मोरी * धृक धर्मध्वज धन्धक धोरी ॥
जो अपने अवगुण सब कहऊँ * बाढै कथा पार नहिं लहऊँ ॥
ताते मैं अति अल्प बखाने * थोरेमहँ जानिहहिं सयाने ॥
समुझिविविधविधिविनतीमोरी * कोउ न कथा सुनि देइहिखोरी॥
एतेहुपर करिहहिं जे शंका * मोहिते अधिकते जडमतिरंका॥
कवि न होउँ नहिं चतुर कहाऊं * मति अनुरूप रामगुण गाऊं ॥
कहँ रघुपतिके चरित अपारा * कहँ मति मोरि निरत संसारा ॥
जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं * कहहु तूल केहि लेखे माहीं ॥
समुझत अमित राम प्रभुताई * करत कथा मन अति कदराई॥
दोहा-शारद शेष महेश विधि, आगम निगम पुरान ॥
नेति नेति कहि जासु गुण, करहिं निरंतरगान ॥ १७॥
सब जानत प्रभु प्रभुता सोई * तदपिकहे बिन रहा न कोई ॥
तहाँ वेद अस कारण राखा * भजन प्रभाव भाँति बहु भाखा॥
एक अनीह अरूप अनामा * अज सच्चिदानन्द. परधामा ॥
व्यापक विश्वरूप भगवाना * तेइँ धरिदेह चरितकृत नाना ॥
सो केवल भक्तनहित लागी * परम कृपालु प्रणत अनुरागी ॥
जेहि जनपर ममता अरु छोहू * तेहि करुणानिधिकीन्हनकोहू॥
गई बहोरि गरीबनिवाजू * सरल सबल साहब रघुराजू ॥

१ कौवा। २ हंस। ३ छली। ४ पाखण्डी। ५ सूक्ष्म। ६ लागि। ७ अल्पबुद्धि। ८ रुई।

बुधवर्णहिं हरियश अस जानी * करहिं पुनीत सफल निजबानी॥
तेहि वल मैं रघुपति गुणगाथा * कहिहौं नाइ रामपद माथा ॥
मुनिनप्रथम हरि कीरतिगाई * तेहिमगचलतसुगममोहिंभाई॥
दोहा–अति अपार जे सरितवर, जो नृप सेतु कराहिं ॥
चढि पिपीलिका[1] परमलघु, बिनु श्रम पारहिजाहिं ॥ १८॥
यहि प्रकार बल मनहिं दृढाई[2] * करिहौं रघुपति कथा सुहाई ॥
व्यासआदिकवि पुंगव नाना * जिन सादर हरिचरित बखाना॥
चरणकमल वन्दौं सब केरे * पुरवहु सकल मनोरथ मेरे ॥
कलिके कविन करौं परणामा * जिन्ह वरणे रघुपति गुणग्रामा॥
जे प्राकृतकवि परमसयाने * भाषा जिन हरिचरित बखाने॥
भये जे अहहिं जे होइहैं आगे * प्रणवौं सबहिं कपट छल त्यागे॥
होउ प्रसन्न देहु वरदानू * साधु समाज भणित[3] सनमानू॥
जो प्रबन्ध बुध नहिं आदरहीं *सोश्रम वादि बाल कवि करहीं॥
कीरतिभणित भूति[4] भलि सोई * सुरसरि[5] सम सबकहँ हितहोई॥
राम सुकीरति भणित भदेशा * असमंजस अस मोहिं अँदेशा॥
तुम्हरी कृपा[6] सुलभ सब मोरे * सियनि सुहावनि टाट पटोरे ॥
करहु अनुग्रह अस जियजानी * विमलयशहि अनुहरहु सुबानी॥
दोहा–सरल कवित कीरति विमल, सोइ आदरहि सुजान ॥
सहज वैर[7] बिसराइ रिपु, जो सुनि करहिं बखान ॥ १९ ॥
सोनहोइबिनु विमल मति, मोहिं मतिबल अतिथोरि ॥
करहुकृपा हरियश कहौं, पुनि पुनि सबहिं निहोरि ॥ २०॥
कवि कोविद रघुवर चरित, मानस मंजु मराल ॥
बालविनयसुनि सुरुचिलखि, मोपर होहु कृपाल ॥ २१ ॥
सो०–वन्दौं मुनिपदकंज, रामायण जिन निर्मयउ ॥
सखरसकोमल मंजु, दोष रहित दूषण सहित ॥ ६ ॥
वन्दौं चारों वेद, भववारिधि वोहित[8] सरिस ॥

१ चीटी । २ बडाई । ३ कविताई । ४ सम्पत्ति । ५ गंगाजी । ६ कृपा । ७ स्वाभाविकवैर
८ संसारसागरके तरनेको नौकासमान ।

जिनहिं न सपनेहु खेद, वर्णत रघुपति विशद यश ॥ ७ ॥
वंदौं विधि पद रेणु, भवसागर जिन कीन यह ॥
सन्त सुधा शशि धेनु, प्रगटे खल विष वारुणी ॥ ८ ॥
दोहा–विबुध विप्र बुध गुरुचरण, वंदि कहौं करजोर ॥
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल, मंजु मनोरथ मोर ॥ २२ ॥
पुनि वन्दौं शारद सुर सरिता * युगल पुनीत मनोहर चरिता ॥
मज्जन पान पाप हर एका * कहत सुनत यकहर अविवेका ॥
गुरु पितु मातु महेश भवानी * प्रणवौं दीनबन्धु दिन दानी ॥
सेवक स्वामि सखा सिय पीके * हित निरूप सबविधितुलसीके ॥
कलिविलोकिजगहितहरगिरिजा * साबरमंत्रजालजिनसिरिजा ॥
अनमिल आखर अर्थ न जापू * प्रगट प्रभाव महेश प्रतापू ॥
सो महेश मोपर अनुकूला * करौं कथा मुद मंगल मूला ॥
सुमिरि शिवा शिव पाइ पसाऊ * वरणौं रामचरित चितचाऊ ॥
भणित मोरिशिवकृपा विभाँती * शशिसमाजमिलिमनहुँसुराती ॥
जो यह कथा सनेह समेता * कहिहैंसुनिहहिंसमुझिसचेता ॥
ह्वैहहिं रामचरण अनुरागी * कलिमलरहित सुमंगलभागी ॥
दोहा–स्वप्नहु साँचहु मोहिंपर, जो हरि गौरि पसाउ ॥
तो फुर होउ जो कहहुँ सब, भाषा भणित प्रभाउ ॥ २३ ॥
वन्दौं अवधपुरी अतिपावनि * सरयूसरिकलिकलुपनशावनि ॥
प्रणऊं पुर नर नारि बहोरी * ममता जिनपर प्रभुहि न थोरी ॥
सियनिंदक अघ ओघ नशाये * लोक विशोक बनाइ बसाये ॥

* देखिये अयोध्यामें जब श्रीरामचन्द्र राजा रहे तब एक रजककी स्त्री विना पतिकी आज्ञा पिताके भवनको चलीगई. तीनदिनके उपरान्त जब वह पतिके गृह फिर आई तब उससे रजक बोला कि, तू मेरे घरसे जा मैं तुझे घरमें नहीं रक्खूंगा. मैं राम नहींहूं कि, जो सीता ११ ग्यारह महीना रावणके घर रहीं फिर उसे अपने घरमें रखके रानी बनालिया. ऐसा व्यंग्य वचन कहके स्त्रीको निकाल दिया. इसको सुन रामचन्द्रजीने सीताको तपोवनको भेज दिया और अयोध्या पुरीमें वसनेसे रजकको सीताकी निन्दाके पापसे क्षमा कर परमधाम दिया ॥

१ श्रम दुःख । २ अमृत । ३ चन्द्रमा । ४ गाय । ५ शोभित । ६ पूर्णमासी ।

वन्दौं कौसल्या दिशि प्राची * कीरतिजासुसकल जगमाची ॥
प्रगट्यो जहँ रघुपतिशशिचारू * विश्वसुखद खलकमल तुषारू ॥
दशरथराउ सहित सब रानी * सुकृत सुमंगल मूरति जानी ॥
करौं प्रणाम कर्म मन वानी * करहु कृपा सुत सेवक जानी ॥
जिनहिंविरचिबड़भयउविधाता * महिमाअवधिराम पितुमाता ॥

सो०–वन्दौं अवध भुआल, सत्य प्रेम जेहि रामपद ॥
विछुरत दीनदयाल, प्रिय तनु तृणइव परिहरेउ ॥ ९ ॥

प्रणवौं परिजन सहित विदेहू * जाहि रामपद गूढ़ सनेहू ॥
योग भोग महँ राखेउ गोई * राम विलोकत प्रगटेउ सोई ॥
प्रणवौं प्रथम भरतके चरणा * जासु नेम व्रत जाइ न वरणा ॥
रामचरण पंकज मन जासू * लुब्ध मधुप इव तजै न पासू ॥
वन्दौं लक्ष्मण पद जलजाता * शीतल सुभग भक्त सुखदाता ॥
रघुपति कीरति विमलपताका * दण्डसमान भयो यश जाका ॥
शेष सहस्र शीश जगकारन * जो अवतरेउ भूमिभय टारन ॥
सदा सो सानुकूल रह मोपर * कृपासिन्धु सौमित्रि गुणाकर ॥
रिपुसूदन पद कमल नमामी * शूर सुशील भरत अनुगामी ॥
महावीर विनवौं हनुमाना * राम जासु यश आपु बखाना ॥

सो०–वन्दौं पवनकुमार, खल वन पावक ज्ञान घन ॥
जासु हृदय आगार, बसहिं राम शरचापधर ॥ १० ॥

कपिपति ऋच्छ निशाचरराजा * अंगदादि जे कीश समाजा ॥
वन्दौं सबके चरण सुहाये * अधम शरीर राम जिनपाये ॥
रघुपतिचरण उपासक जेते * खग मृग सुर नर असुरसमेते ॥
वन्दौं पदसरोज सब केरे * जे बिनु काम रामके चेरे ॥
शुकसनकादि आदिमुनिनारद * जे मुनिवर विज्ञान विशारद ॥
प्रणऊं सबहि धरणिधरि शीशा * करहु कृपा जन जानि मुनीशा ॥
जनकसुता जगजननिजानकी * अतिशयप्रिय करुणानिधानकी ॥

१ पूर्वदिशा । २ पाला । ३ जनक । ४ लोभित । ५ भौंरा । ६ सुमित्रानंदन लक्ष्मणजी । ७ शत्रुघ्न । ८ प्रवीण ।

ताके युगपद कमल मनाऊं * जासु कृपा निर्मल मति पाऊं ॥
पुनि मन वचन कर्म रघुनायक * चरणकमल वन्दौं सब लायक ॥
राजिवनयन धरे धनु सायक * भक्तविपति भंजन सुखदायक ॥
दोहा-गिरा अर्थ जलवीचि सम, कहियत भिन्न न भिन्न ॥
वन्दौं सीतारामपद, जिनहिं परम प्रिय खिन्न॥ २४ ॥
वन्दौं रामनाम रघुवरके * हेतु कृशानु भानु हिमकरके ॥
विधि हरि हर मय वेद प्राणसे * अवगुण अनुपम गुणनिधानसे ॥
महामंत्र जो जपत महेशू * काशी मुक्तिहेतु उपदेशू ॥
*महिमा जासु जान गणराऊ * प्रथम पूजियत नामप्रभाऊ ॥
जानि आदिकवि नाम प्रतापू * भयउ शुद्धकरि उलटा जापू ॥
सहस×नामसमसुनिशिववानी * जपि जेई शिव संग भवानी ॥

* ब्रह्माने सब देवतोंसे कहा कि, प्रथम पूज्यपदके योग्य कौनहै सो यह सुन सब देवता आपसमें कलह करने लगे तब ब्रह्माजी बोले तुम सबसे पृथ्वीकी परिक्रमा करके जो मेरे पास पहले आवेगा उसीको हम प्रथम पूज्यपद देवेंगे यह सुन सब देवता अपने २ वाहनपर चढ़ दौडे पर गणेशजी मूषक वाहन होनेसे पीछे रहगये और बड़े व्याकुल हुए तब नारदजी उनको मिले और इनके परितापका कारण सुन कहा तुम पृथ्वीमें रामका नाम लिखकर प्रदक्षिणाकरो और ब्रह्माके पास चले जाओ तब गणेशजी वैसाही कर ब्रह्माके निकट गये जब और सब देवभी ब्रह्माके सन्मुख आये तब ब्रह्मा आदि सब देवतोंने मिलके श्रीरामनामकी महिमा समझ गणेशजीको प्रथम पूज्यपद दिया इससे रामनामकी बड़ी महिमा है ॥

महादेवजीने स्वामिकार्त्तिक और गणेशजी दोनों पुत्रोंसे कहा कि जो पृथ्वीकी परिक्रमा करके पहले मेरे पास आवै उसको हम प्रथम पूज्यपद देवेंगे. सो सुन कार्तिकेय मोरपर बैठ आगे गये और गणेशजी मूसेपर पीछे रहगये तहाँ अपनेको हारा मान नारदके उपदेशसे नामकी परिक्रमाकर महादेवजीके पास गये तब शिवजीने ध्यानपूर्वक विचारकर श्रीरामनामकी महिमा स्मरणकर गणेशजीको प्रथम पूज्यपद दिया ॥

× एक समय महादेवजी पाक बनाय थालमें परोस पार्वतीको पुकारा प्रिये ! आओ भोजन करो. तब पार्वती बोलीं कि, मैं विष्णुसहस्रनामका पाठकर तब प्रसाद पातीहूं सो अभी पाठ नहीं किया. तब महादेवजी बोले कि, हे पार्वती! श्रीरामका नाम विष्णुके सहस्रनामकी तुल्यहै सो एक बार रामनाम उच्चारणकर आयके भोजन करो. तब पार्वतीजीने वैसाही किया. महादेवजी इनके मनकी प्रीति निश्चयपूर्वक और अपने वचनका विश्वास देखके अति प्रसन्न होय पतिव्रता शिरोमणि किया और ऐसाभी है कि, गौरीशंकर अर्द्धांगी स्वरूप तभीसे हुए ॥

१ दीन । २ अग्नि । ३ सूर्य ।

हर्ष हेतु हरि हरहीको * किय भूषण तिय भूषण तीको ॥
नाम प्रभाव जान शिवनीके * कालकूट फल दीन्ह अमीके ॥
दोहा–वर्षाऋतु रघुपति भगति, तुलसी शालि सुदास ॥
रामनाम वर वर्ण युग, श्रावण भादौंमास ॥ २५ ॥
अक्षर मधुर मनोहर दोऊ * वर्ण विलोचन जनजिय जोऊ ॥
सुमिरत सुलभसुखदसबकाहू * लोकलाहु परलोक निबाहू ॥
कहतसुनत सुमिरतसुठिनीके * राम लषण सम प्रिय तुलसीके ॥
वर्णत वरण प्रीति बिलगाती * ब्रह्मजीव सम सहज सँघाती ॥
नरनारायण सरिस सुभ्राता * जगपालक विशेष जनत्राता ॥
भक्तिसुतियकलकरणविभूषण * जगहितहेतु विमलविधुपूषण ॥
स्वादु तोष सम सुगति सुधाके * कमठ शेष सम धर वसुधाके ॥
जनमन मंजु कंज मधुकरसे * जीह यशोमति हरि हलधरसे ॥
दोहा–एक छत्र इक मुकुटमणि, सब वर्णन पर जोउ ॥
तुलसी रघुवर नामके, वर्ण विराजत दोउ ॥ २६ ॥
समुझत सरस नाम अरु नामी * प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी ॥
नाम रूप द्वौ ईश उपाधी * अकथअनादिसुसामुझि साधी ॥
को बड छोट कहत अपराधू * सुनि गुण भेद समुझिहैं साधू ॥
देखिय रूप नाम आधीना * रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना ॥
रूप विशेष नाम विनजाने * करतलगत न परहिं पहिंचाने ॥
सुमिरिय नाम रूप विनु देखे * आवत हृदय सनेह विशेषे ॥
नामरूपगति अकथ कहानी * समुझत सुखद न जात बखानी ॥

*जब विष्णुने कच्छपावतार लेकर समुद्रको मथा तब उसमेंसे चौदह रत्न निकले सो सब देवता प्रसन्न होय अपनी २ इच्छाके अनुसार तेरह रत्नोंको बांटलिया और चौदहवाँ रत्न जो कालकूट अर्थात् हलाहल उसके निमित्त सब देवता महादेवजीका स्मरणकर उनसे कहने लगे कि, महाराज ! इससे बचाइये नहीं तौ यह विष अपनी ज्वालासे तीनों लोकको भस्म करदेगा तब महादेवजी "श्रीराम" यह शब्द मुंहसे उच्चारण कर उठायकै विष पीगये नामके प्रतापसे उस विषने अमृतका फल दिया कि अमर होगये ॥

१ धान । २ श्रावणमास । ३ भादवँमास । ४ पवित्र । ५ विग्रह परमदिव्यरूप रामस्वरूप

अगुण सगुणबिच नामसुसाखी * उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी॥
दोहा–राम नाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार ॥
तुलसी भीतर बाहिरो, जो चाहसि उजियार ॥ २७ ॥
नाम जीह जपि जागहिं योगी * विरति विरंचिप्रपंच वियोगी ॥
ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं अनूपा * अकथ अनामय नाम न रूपा॥
जाना चहहिं गूढगति जेऊ * नाम जीह जपि जानहिं तेऊ ॥
साधकनाम जपहिं लवलाये * होहिं सिद्ध अणिमादिक पाये ॥
जपहिं नाम जन आरत भारी * मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी॥
रामभक्त जग चारि प्रकारा * सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥
चहुँ चतुरन कहँ नाम अधारा * ज्ञानी प्रभुहि विशेष पियारा ॥
चहुँयुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ * कलि विशेष नहिं आन अपाऊ॥
दोहा–सकल कामनाहीन जे, रामभक्ति रसलीन ॥
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद, तिनहुँ किये मनमीन ॥ २८ ॥
अगुण सगुण दोउ ब्रह्मस्वरूपा*अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥
मोरे मत बड नाम दुहूते*कियज्यहि युगनिजवशनिजहूते॥
प्रौढ सुजनजन जानहिं जनकी * कहहुँ प्रतीतिप्रीतिरुचिमन की॥
एक दारुगत देखिय एकू* पावक युगसम ब्रह्म विवेकू ॥
उभय अगम युग सुगम नामतें * कहहुँ नाम बड ब्रह्म रामतें ॥
व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी *सत चेतन घन आनँदराशी ॥
असप्रभुहृदयअछतअविकारी * सकलजीव जग दीन दुखारी ॥
नामनिरूपण नाम यतनते *सोउ प्रगटत जिमिमोलरतनते॥
दोहा–निर्गुणते इहि भाँति बड, नाम प्रभाव अपार ॥
कहहुँ नाम बड रामते, निज विचार अनुसार ॥ २९ ॥
राम भक्तहित नरतनु धारी * सहि संकट किय साधु सुखारी॥
नाम सप्रेम जपत अनयासा * भक्तहोहिं मुद मंगल वासा ॥
राम एक तापस तिय तारी * नाम कोटि खल कुमतिसुधारी॥

१ वैराग्य । २ छूटजाताहै । ३ मथणि । ४ लकड़ी । ५ आग्नि । ६ षट्विकाररहित । ७ निर्गुणब्रह्म ।

ऋषिहित राम सुकेत सुताकी * सहितसेनसुत कीन्ह बेबाकी ॥
सहित दोष दुख दास दुराशा * दलैनाम जिमिरविनिशिनाशा ॥
भंज्यो राम आप भवचापू * भव भय भंजन नाम प्रतापू ॥
दंडकवन प्रभु कीन्ह सुहावन * जनमनअमितनामाकियपावन॥
निशिचर निकर दले रघुनंदन *नामसकलकलिकलुषनिकंदन ॥
दोहा--शबरी गीध सुसेवकनि, सुगति दीन्ह रघुनाथ ॥
नाम उधारे अमित खल, वेद विदित गुणगाथ ॥ ३० ॥
राम सुकण्ठ विभीषण दोऊ * राखे शरण जान सब कोऊ ॥
नाम अनेक गरीब निवाजे * लोक वेद वर विरद विराजे ॥
राम भालु[१] कपि[२] कटक बटोरा * सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा ॥
नाम लेत भवसिंधु सुखाहीं * करहु विचार सुजन मनमाहीं ॥
राम सकुल रणं रावण मारा * सीय सहित निजपुर पगुधारा॥
राजाराम अवध रजधानी * गावत गुण सुर[३]मुनि वर वानी ॥
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती * विन श्रम प्रबल मोहदल जीती॥
फिरत सनेह मगन सुख अपने * नाम प्रताप शोच नहिं सपने ॥
दोहा--ब्रह्मरामते नाम बड, वरदायक वरदानि ॥
रामचरित शतकोटि[५]महँ, लिय महेश[४] जिय जानि ॥ ३१ ॥
नामप्रताप शम्भु अविनाशी * साज अमंगल मंगलराशी ॥
शुकसनकादि सिद्धमुनियोगी * नामप्रसाद ब्रह्मसुख भोगी ॥
नारद जानेउ नाम प्रतापू * जगप्रियहरि हर हरि प्रिय आपू॥
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू * भक्त शिरोमणि भे प्रह्लादू ॥
ध्रुव* सगलानि जप्यो हरिनामू * पायउ अचल अनुपम ठामू ॥

*स्वायम्भुवमनु अरु शतरूपा इनके पुत्र राजा उत्तानपादकी दो स्त्रियांथीं. तिनमें बडीरानीके पुत्र ध्रुव भए. सो एक समय राजाकी छोटी रानी जिसपर राजाकी अत्यन्त प्रीति थी,उसके पास बैठे थे. उस समय ध्रुव जाके पिताकी गोदमें बैठगये तब छोटी रानीने ध्रुवको गोदीसे उतार यह कहा कि मेरे पेटसे जन्मलेते तब इस गोदीके अधिकारी होते इस बातको सुन ध्रुव ग्लानिसे अपनी मातासे जाय कहके तपकरनेको चले पीछे राजाने ध्रुवको आयकर बहुतसमझाया राज्यदेनेकहा

१ रीछ । २ बंदर । ३ देवता । ४ महादेवजी । ५ सौ लक्षका एककोटि, ऐसे एकसौ कोटि

सुमिर पवनसुत[1] पावन नामू * अपने वश करि राख्यो रामू ॥
अपरअजामिल गज गणिकाऊ * भये मुक्त हरिनाम प्रभाऊ ॥
कहउँ कहाँ लगि नाम बडाई * राम न सकहिं नामगुण गाई ॥
दोहा-राम नामको कल्पतरु, कलि कल्याण निवास ॥
जो सुमिरत भये भाग्यते, तुलसी तुलसीदास ॥ ३२ ॥
चहुँयुग तीन काल तिहुँ लोका * भये नाम जपि जीव विशोका ॥
वेद पुराण सन्त मत येहू * सकल सुकृत फल राम सनेहू ॥
ध्यान प्रथम युग मखविधि दूजे * द्वापर परितोषत प्रभु पूजे ॥
कलि केवल मलमूल[2] मलीना * पापपयोनिधि जनमन मीना[3] ॥
नाम कामतरु काल कराला * सुमिरतशमनसकलजगजाला ॥
रामनाम कलि अभिमतदाता[4] * हितपरलोक लोक पितु माता ॥
नहिं कलि कर्म न भक्ति विवेकू * रामनाम अवलम्बन[5] एकू ॥
कालनेमि कलिकपट निधानू * राम सुमति समरथ हनुमानू ॥
दोहा-रामनाम नरकेसरी, कनककशिपु कलिकाल ॥
जापक जन प्रह्लादजिमि, पालहिं दलि सुरसाल ॥ ३३ ॥
भाव कुभाव अनख आलसहू * नाम जपत मंगल दिशिदशहू ॥
सुमिरि सो रामनाम गुणगाथा * करौं नाइ रघुनाथहि माथा ॥
मोरि सुधारहि सो सबभाँती * जासुकृपा नहिं कृपा अघाती ॥
रामसुस्वामि कुसेवक मोसे * निजादिशि देखि दयानिधि पोसे ॥
लोकहुँ वेद सुसाहेब रीती * विनय सुनत पहिंचानत प्रीती ॥
गनी गरीब ग्राम नर नागर * पण्डित मूढ़ मलीन उजागर ॥
सुकविकुकविनिजमतिअनुसारी * नृपहि सराहत सब नर नारी ॥
साधु सुजान सुशील नृपाला * ईश अंश भव परम कृपाला ॥

परंतु ध्रुव नहीं फिरे-वहाँ नारदने ज्ञानउपदेश दिया सो जप करके ध्रुव अचललोकके अधिकारी हुए ।
* अजामिल मरते समय पुत्र नारायणको पुकार मुक्तिको प्राप्त हुआ, गजेन्द्रमोक्षकी कथा प्रसिद्धहै, गणिका पिंगलाके यहाँ आधीराततक कोई पुरुष न आया तब भगवान्में मनलगा पारहुई ।

१ हनुमान् । २ पापकी जड । ३ मछली । ४ वांछित आनंद व मोक्ष फल दाता है । ५ सहारा ।

सुनिसनमानहिं सबन सुवानी * भणितभक्तिमतिगतिपहिंचानी॥
यह प्राकृत महिपाल स्वभाऊ * जानि शिरोणि कोशलराऊ॥
रीझत राम सनेह निसोते * को जग मन्द मलिन मति मोते॥
दोहा-शठ सेवककी प्रीति रुचि, रखिहहिं रामकृपालु॥
उपल[1] किये जलयान[2] जेहि, सचिव सुमति कपि भालु॥३४॥
हमहुँ कहावत सब कहत, राम सहत उपहास॥
साहब सीतानाथसे, सेवक तुलसीदास॥ ३५॥
अति बडि मोरि ढिठाई खोरी[3] * सुनि अघनरकहुनाकसिकोरी॥
समुझिसहमिमोहिंअपडरअपने * सोसुधि राम कीन्ह नहिं सपने
सुनिअवलोकिसुचितचखु[4]चाही * भक्तिमोरि मति स्वामिसराही॥
कहत नशाइ होइ अतिनीकी * रीझत राम जानि जन जीकी॥
लहत न प्रभु चित चूक कियेकी * करत सुरत सौ बार हियेकी॥
जेहि अघवधेउव्याधजिमिबाली * फिरिसुकंठ[5]सोइकीन्ह कुचाली॥
सोइ करतूति विभीषण केरी * स्वप्नहु सो न राम हिय हेरी॥
ते भरतहिं भेटत सनमाने * राजसभा रघुवीर बखाने॥
दोहा-प्रभु तरु तर कपिडार पर, ते किये आप समान॥
तुलसी कहूं न रामसे, साहब शीलनिधान॥ ३६॥
रामनिकाई रावरी, है सबहीको नीक॥
जो यह साची है सदा, तौ नीको तुलसीक॥ ३७॥
यहिविधि निज गुण दोष कहि, सबहि बहुरि शिरनाय॥
वरणौ रघुवर विशद[6]यश, सुनि कलिकलुष[7] नशाय॥ ३८॥
याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई * भरद्वाज मुनिवरहि सुनाई॥
कहिहौं सोइ सम्वाद बखानी * सुनहुसकलसज्जन सुखमानी॥
शम्भुकीन्ह यह चरित सुहावा * बहुरिकृपा करि उमहि सुनावा॥
सो शिव काक भुशुण्डहि दीन्हा * राम भक्त अधिकारी चीन्हा॥
तेहिसन याज्ञवल्क्यमुनि पावा * तिन पुनि भरद्वाज प्रति गावा॥

१ पत्थर । २ नौका । ३ खामि । ४ हृदयके नेत्र । ५ सुग्रीव । ६ निर्म्मल । ७ पाप ।

ते श्रोता वक्ता समशीला * समदरशी जानहिं हरिलीला ॥
जानहिं तीनिकाल निजज्ञाना * करतलगत आमलक समाना॥
औरौ जे हरिभक्त सुजाना *कहहिंसुनहिं समुझहिंविधिनाना
दोहा-मैं पुनि निज गुरुसन सुनी, कथा सुशूकरखेत ॥
समुझ नहीं तसु बालपन, तब अति रहेहुँ अचेत ॥ ३९ ॥
श्रोता वक्ता ज्ञाननिधि, कथा रामकी गूढ ॥
किमि समझै यह जीवजड, कलिमल ग्रसित विमूढ़ ॥४०॥
यदपि कही गुरु बारहिंबारा *समुझिपरी कछुमति अनुसारा॥
भाषा बन्ध करब मैं सोई * मोरे मन प्रबोध जेहि होई ॥
जस कछु बुधि विवेक बलमोरे * तसकहिहौं हिय हरिके प्रेरे ॥
निज संदेह मोह भ्रम हरणी * करौं कथा भव सरिता तरणी॥
बुध विश्राम सकलजनरंजनि * रामकथाकलिकलुषविभंजनि॥
रामकथा कलि पन्नग भरणी * पुनिविवेकपावककहँ अरणी ॥
रामकथा कलि कामदगाई * सुजन सजीवन मूरि सुहाई ॥
सोइ वसुधातल सुधातरंगिनि * भवभंजनि भ्रमभेक भुवंगिनि॥
असुर सेनसमनरकनिकंदिनि *साधुविबुधकुलहितगिरिनन्दिनि
सन्त समाज पयोधि रमासी * विश्व भार धर अचल क्षमासी॥
यमगणमुँहमसिजगयमुनासी * जीवनमुक्ति हेतु जनु काशी ॥
रामहिं प्रिय पावनि तुलसीसी * तुलसिदासहितहियहुलसीसी॥
शिव प्रिय मेकल शैलसुतासी * सकल सिद्धिप्रद संपतिराशी ॥
सदगुणसुरगणअम्बअदितिसी * रघुवरभक्ति प्रेम परमितिसी ॥
दोहा-रामकथामंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु ॥
तुलसी सुभग सनेह वन, सिय रघुवीर विहारु ॥ ४१ ॥
रामचरित चिन्तामणि चारू * सन्तसुमतितियसुभगशृंगारू॥
जगमंगल गुणग्राम रामके * दानिमुक्ति धन धर्म्म धामके ॥
सदगुरुज्ञान विराग योगके * विबुध वैद्य भव भीम रोगके ॥

१ हथेली। २ औंरा। ३ वाराहक्षेत्र अयोध्याजीसे तीनयोजन सरयू तटपर है। ४ संसाररूपी नदीको नौकासदृश। ५ ज्ञानी। ६ आनन्ददाता। ७ नाशकर्त्ता। ८ लकडी। ९ पृथ्वी। १० मेढक। ११ सर्पिणी। १२ पार्वती। १३ लक्ष्मी। १४ धरती।

जननि जनक सिय राम प्रेमके * बीज सकलव्रत धर्म्म नेमके ॥
शमन पाप सन्तापशोकके * प्रियपालक परलोक लोकके ॥
सचिव सुभट भूपति विचारके * कुम्भज लोभ उदधि अपारके ॥
कामकोहकलिमलकरिगणके * केहरि शावक जन मन वनके ॥
अतिथिपूज्य प्रीतम पुरारिके * कामदघन दारिद दवारिके ॥
मंत्र महामणि विषयव्यालके * मेटत कठिन कुअंक भालके ॥
हरण मोहतम दिनकरकरसे * सेवक शालिपाल जलधरसे ॥
अभिमतदानि देवतरुवरसे * सेवतसुलभ सुखद हरि हरसे ॥
सुकवि शरदनभमनउडुगणसे * रामभक्त जनजीवनघनसे ॥
सकल सुकृत फल भूरिभोगसे * जगहित निरुपधिसाधुलोगसे ॥
सेवत मन मानस मरालसे * पावन गंग तरंग मालसे ॥

दोहा—कुपथ कुतर्क कुचालि कलि, कपट दम्भ पाखण्ड ॥
दहन राम गुण ग्राम इमि, ईंधन अनल प्रचण्ड ॥ ४२ ॥
रामचरित राकेशकर, सरिससुखद सब काहु ॥
सज्जन कुमुद चकोरचित, हित विशेष बड़ लाहु ॥ ४३ ॥

कीन्ह प्रश्न जेहि भाँति भवानी * जिहिविधि शंकर कहा बखानी ॥
सो सब हेतु कहब मैं गाई * कथा प्रबन्ध विचित्र बनाई ॥
जिन यह कथा सुनी नहिंहोई * जनि आश्चर्य करैं सुनि सोई ॥
कथा अलौकिकसुनहिंजेज्ञानी * नहिंआश्चर्य करहिंअसजानी ॥
रामकथाकी मिति जग नाहीं * अस प्रतीति जिनके मनमाहीं ॥
नाना भाँति राम अवतारा * रामायण शतकोटि अपारा ॥
कल्पभेद हरि चरित सुहाये * भाँति अनेक मुनीशन गाये ॥
करिय न संशय अस उर आनी * सुनियकथा सादररतिमानी ॥

दोहा—राम अनन्त अनन्त गुण, अमित कथा विस्तार ॥
सुनि आश्चर्य न मानिहहिं, जिनके विमल विचार ॥ ४४ ॥

यहिविधि सब संशय करि दूरी * शिरधरिं गुरु पद पंकज धूरी ॥

१ हाथी । २ सिंह । ३ सूर्य्यनारायण । ४ धान । ५ मेघ । ६ कल्पवृक्ष । ७ नक्षत्र । ८ दुर्लभ । ९ प्रीति ।

पुनि सबही विनवौं करजोरी * करत कथा जेहि लाग न खोरी॥
सादर शिवहिं नाइ पदमाथा * वरणौं विशद रामगुण गाथा ॥
संवत सोरहसै इकतीसा * करौं कथा हरिपद धरि शीशा॥
नौमी भौमवार मधुमासा * अवधपुरी यह चरित प्रकाशा॥
जेहिदिनरामजन्मश्रुतिगावहिं * तीरथसकल तहाँचलि आवहिं॥
असुर नाग खग नर मुनि देवा * आय करहिं रघुनायकसेवा ॥
जन्ममहोत्सव रचहिं सुजाना * करहिं राम कलकीरति गाना॥
दोहा--मज्जहिं सज्जन वृन्द बहु, पावन सरयू नीर ॥
जपहिं राम धरि ध्यान उर, सुन्दर श्याम शरीर ॥ ४५॥
दरश परश मंज्जन अरु पाना * हरै पाप कह वेद पुराना ॥
नदीपुनीतअमितमहिमाअति * कहिनसकैशारदा विमलमति॥
रामधामदा पुरी सुहावनि * लोकसमस्तविदितजगपावनि॥
चारिखान जगजीव अपारा * अवध तजे तनु नहिं संसारा ॥
सबविधि पुरी मनोहर जानी * सकल सिद्धप्रद मंगलखानी ॥
विमलकथाकर कीन्हअरम्भा * सुनत नशाहिं काममदम्भा ॥
रामचरित मानस यह नामा * सुनत श्रवण पाइय विश्रामा ॥
मनकर विषय अनल वन जरई * होइ सुखी जो इहि सर परई ॥
रामचरित मानस मुनिभावन * विरचेउ शम्भु सुहावनपावन ॥
त्रिविधदोष दुख दारिद दावन *कलिकुचालिकलिकलुषनशावन
रचि महेश निज मानसराखा *पाइ सुसमयशिवासन भाखा ॥
ताते रामचरित मानस वर * धरेउ नाम हिय हेरि हरषिहर ॥
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई * सादर सुनहु सुजन मनलाई ॥
दोहा--जसमानस जेहि विधि भयो, जग प्रचार जेहि हेतु ॥
अब सोइ कहौं प्रसंग सब, सुमिरि उमा वृषकेतु ॥ ४६ ॥
शम्भुप्रसादसुमतिहिय हुलसी *रामचरित मानस कवितुलसी॥
करउँ मनोहर मति अनुहारी *सुजन सुचित सुनि लेहुसुधारी॥

१ निर्मल । २ सुन्दर । ३ स्नान । ४ कान । ५ अग्नि । ६ काम क्रोध लोभ । ७ पार्वती । ८ महादेव ।

सुमति भूमि थल हृदय अगाधू * वेद पुराण उदधि घन साधू ॥
वर्षहिं राम सुयश बरवारी * मधुर मनोहर मंगलकारी ॥
लीला सगुण जो कहहिं बखानी * सो स्वच्छता करै मलहानी ॥
प्रेमभक्ति जो वरणि न जाई * सोइ माधुरता शीतलताई ॥
सोजल सुकृत शालि हित होई * रामभक्ति जग जीवन सोई ॥
मेघा महिगत सो जलपावन * सिमिटश्रवणमगचलेउसुहावन ॥
भरेउ सुमानसशिथिलथिराना * सुखद शीत रुचि चारुचिराना ॥

दोहा—सुठि सुन्दर सम्वाद वर, विरचेउ बुद्धि विचारि ॥
ते यहि पावन सुभगसर, घाट मनोहर चारि ॥ ४७ ॥

सत प्रबन्ध सुभग सोपाना * ज्ञान नयन निरखतमनमाना ॥
रघुपतिमहिमा अगुण अबाधा * वर्णब सोइ वर वारि अगाधा ॥
रामसीययश सलिलसुधासम * उपमा बीचि विलासमनोरम ॥
पुरइनि सघन चारु चौपाई * युक्ति मंजुमणि सीप सुहाई ॥
छन्द सोरठा सुन्दर दोहा * सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा ॥
अर्थ अनूप स्वभाव सुभासा * सोइ पराग मकरन्द सुवासा ॥
सुकृतपुंज मंजुल अलिमाला * ज्ञान विराग विचार मराला ॥
धुनि अवरेब कवित गुणजाती * मीन मनोहर ते बहुभाँती ॥
अर्थ धर्म्म कामादिक चारी * कहब ज्ञान विज्ञान विचारी ॥
नवरस जप तप योग विरागा * ते सब जलचर चारु तडागा ॥
सुकृती साधु नाम गुण गाना * ते विचित्र जल विहँग समाना ॥
संत सभा चहुँदिशि अंबराई * श्रद्धाऋतु वसंत सम्मगाई ॥
भक्तिनिरूपण विविध विधाना * क्षमा दमा द्रुम लता विताना ॥
संयम नियम फूल फल ज्ञाना * हरिपद रति रस वेद बखाना ॥
औरौ कथा अनेक प्रसंगा * तेइ शुकपिक बहुवरण विहंगा ॥

दोहा—पुहुप वाटिका बाग वन, सुख सुविहंग विहारु ॥
माली सुमन सनेह जल, सींचत लोचन चारु ॥ ४८ ॥

१ समुद्र। २ बादल। ३ श्रेष्ठपानी। ४ शिव-पार्वती, कागभुशुण्डि-गरुड, याज्ञवल्क्य-भरद्वाज, गोसाईंजीकेगुरु-अरु गोसाईंजीका सम्वाद।
५ अपनीउपासनाअनुकूलवेदसंतगुरुवाक्यको निजअनुभवकी एकता करकेमतीति करना। ६ वृक्ष। ७ पक्षी। ८ पुष्प।

जे गावहिं यह चरित सँभारे * ते यहि ताल चतुर रखवारे ॥
सदा सुनहिं सादर नर नारी * ते सुरवर मानस अधिकारी ॥
अतिखल जे विषयी बककागा * इहिसरनिकटनजाहिं अभागा ॥
शंबुक भेक शिवार समाना * यहाँ न विषय कथारसनाना ॥
तेहि कारण आवत हिय हारे * कामी काक बलाक विचारे ॥
आवत इहिसर अति कठिनाई * रामकृपा विनु आइ न जाई ॥
कठिन कुसंग कुपंथ कराला * तिनके वचन व्याघ्र हरि व्याला॥
गृहकारज नाना जंजाला * तेइ अति दुर्गम शैल विशाला ॥
वन बहुविषय मोह मद माना * नदी कुतर्क भयंकर नाना ॥
दोहा-जे श्रद्धा शम्बल रहित, नहिं संतन कर साथ ॥
तिनकहँमानसअगम अति, जिनहि न प्रिय रघुनाथ॥४९॥
जो करि कष्ट जाइ पुनि कोई * जातहि नींद जुडाई होई ॥
जडताजाड विषम उर लागा * गयहु न मज्जन पाप अभागा ॥
करि न जाइ सर मज्जन पाना * फिरि आवै समेत अभिमाना ॥
जो बहोरि कोउ पूछन आवा * सरनिंदा करि ताहि सुनावा ॥
सकल विघ्न व्यापहिं नहि तेही * राम कृपा करि चितवहिं जेही ॥
सोइ सादर सरमज्जन करहीं * महाघोर त्रयताप न जरहीं ॥
ते नर यह सर तजहि न काऊ * जिनके रामचरण भल भाऊ ॥
जो नहाइ चह इहि सर भाई * सो सतसंग करै मन लाई ॥
अस मानस मानसचखुचाहीं * भइकविबुद्धि विमलअवगाही ॥
बढ्यो हृदय आनन्द उछाहू * उमँगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू ॥
चली सुभग कविता सरितासों * राम विमल यश जलभरितासों॥
सरयूनाम सुमंगल मूला * लोक वेद मत मंजुल कूला ॥
नदी पुनीत सुमानसनंदिनि * कलिमलतटतरुमूलनिकंदिनि ॥
दोहा-श्रोता त्रिविध समाजपुर, ग्राम नगर दुहुँकूल ॥
संत सभा अनुप अवध, सकल सुमंगल मूल ॥ ५० ॥

१ घोंघा । २ मेंढक । ३ सम्पत्ति । ४ अध्यात्म, अधिदैव, अधिभूत । ५ हृदयके नेत्र ।

रामभक्ति सुरसरि तहँ जाई * मिली सुकीरति सरयु सुहाई ॥
सानुज रामसमर यशपावन * मिलेउ महानदशोण सुहावन ॥
युग बिच भक्ति देवधुनिधारा * सोहतिसहितसुविरतिविचारा ॥
त्रिविध ताप त्रासक त्रिमुहानी * रामस्वरूप सिंधु समुहानी ॥
मानसमूल मिली सुरसरिही * सुनत सुजन मन पावन करिही ॥
बिच बिचकथा विचित्रविभागा * जनु सरि तीर तीर वनबागा ॥
उमा महेश विवाह बराती * तेजलचर अगणित बहुभाँती ॥
रघुवर जन्म अनन्द बधाई * भँवर तरंग मनोहरताई ॥

दोहा--बालचरित चहुँ बंधुके, वनज विपुलबहुरंग ॥
नृपरानी परिजन सुकृत, मधुकर वारिविहंग ॥ ५१ ॥

सीय स्वयम्वर कथा सुहाई * सरित सुहावनि सो छविछाई ॥
नदी नाव वटु प्रश्न अनेका * केवट कुशल उतर सविवेका ॥
सुनि अनुकथन परस्पर होई * पथिक समाज सोह सरि सोई ॥
घोर धार भृगुनाथ रिसानी * घाट सुबन्ध राम वर वानी ॥
सानुज राम विवाह उछाहू * सोशुभ उमँग सुखदसबकाहू ॥
कहत सुनत हर्षहिं पुलकाहीं * ते सुकृती जन मुदित नहाहीं ॥
राम तिलक हित मंगल साजा * पर्वयोग जनु जुरेउ समाजा ॥
काई कुमति कैकयी केरी * परी जासु फल विपति घनेरी ॥

दोहा--शमन अमित उत्पात सब, भरत चरित जप याग ॥
कलि अघ खल अवगुण कथन, ते जल मल बककाग ॥ ५२ ॥

कीरति सरित छहूँ ऋतु रूरी * समय सुहावनि पावनि भूरी ॥
हिम हिम शैलसुता शिवव्याहू * शिशिरसुखदप्रभु जन्मउछाहू ॥
वर्णब राम विवाह समाजू * सो मुद मंगलमय ऋतुराजू ॥
ग्रीषम दुसह राम वन गवनू * पंथ कथा खर आतप पवनू ॥
वर्षा घोर निशाचर रारी * सुरकुल शालि सुमंगलकारी ॥
राम राज्य सुख विनय बड़ाई * विशद सुखदसोइशरदसुहाई ॥

१ संग्राम । २ गंगा यमुना सरस्वतीजीका संगम । ३ ब्रह्मचर्यसहविद्यार्थी-ज्ञानवान् पण्डित । ४ भाइयोंसहित । ५ शोभित । ६ पवित्र ।

सती शिरोमणि सिय गुणगाथा * सोइगुण अमल अनूपमपाथा ॥
भरत स्वभाव सुशीतल ताई * सदा एकरस वरणि न जाई ॥
दोहा-अवलोकनि बोलनि मिलनि, प्रीति परस्पर हास ॥
भायप भलि चहुँ बंधुकी, जल माधुरी सुवास ॥ ५३ ॥
आरति विनय दीनता मोरी * लघुता ललित सुवारि न थोरी॥
अद्भुत सलिल सुनत गुणकारी * आस पियास मनोमलहारी ॥
राम सुप्रेमहि पोषक पानी * हरतसकलकलिकलुषगलानी ॥
भव श्रम शोषक तोषक तोषा * शमन दुरित दुखदारिद दोषा ॥
काम क्रोध मद मोह नशावन * विमल विवेक विराग बढावन ॥
सादर मज्जन पान कियेते * मिटत पाप परिताप हियेते ॥
जिन यहि वारि न मानसधोये * तिनकायर कलिकालबिगोये ॥
तृषित निरखि रविकर भववारी* फिरहिंमृगाजिमि जीवदुखारी ॥
दोहा--मति अनुहारि सुवारि गुण, गणि गण मन अन्हवाय ॥
सुमिरि भवानी शंकरहि, कह कवि कथा सुहाय ॥ ५४ ॥
अब रघुपति पद पंकरुह, हिय धरि पाय प्रसाद ॥
कहौं युगल मुनिवर्य्य कर, मिलन सुभग सम्वाद ॥ ५५ ॥
भरद्वाज जिमि प्रश्नकिय, याज्ञवल्क्य मुनिपाय ॥
प्रथम मुख्य सम्वाद सोइ, कहिहौं हेतु बुझाय ॥ ५६ ॥
भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा * जिनहिं रामपद अति अनुरागा॥
तापस शम दम दयानिधाना * परमारथ पथ परम सुजाना ॥
माघ मकरगत रवि जब होई * तीरथपतिहिं आव सब कोई ॥
देव दनुज किन्नर नर श्रेणी * सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी॥
पूजहिं माधवपद जलजाता * परशि अक्षयवट हर्षित गाता ॥
भरद्वाज आश्रम अति पावन * परमरम्य मुनिवर मनभावन ॥
तहाँ होइ मुनि ऋषय समाजा* जाहिं जे मज्जन तीरथराजा ॥
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा * कहहिं परस्पर हरि गुणगाहा ॥

१ लीन। २ पियासे। ३ अनुसार।

दोहा-ब्रह्मनिरूपण धर्म विधि, वर्णहिं तत्त्व विभाग ॥
कहहिं भक्ति भगवन्तकी, संयुत ज्ञान विराग ॥ ५७ ॥
इहिप्रकार भरि मकर नहाहीं * पुनिसबनिजनिजआश्रमजाहीं॥
प्रतिसंवत अस होइ अनन्दा * मकरमज्जि गवनहिं मुनिवृन्दा॥
एकबार भरि मकर नहाये * सब मुनीश आश्रमनि सिधाये॥
याज्ञवल्क्यमुनि परम विवेकी * भरद्वाज राखेउ पद टेकी ॥
सादर चरण सरोज पखारे * अति पुनीत आसन बैठारे ॥
करि पूजा मुनि सुयश बखानी * बोले अति पुनीत मृदुबानी ॥
नाथ एक संशय बड मोरे * करतल वेद तत्त्व सब तोरे ॥
कहत मोहिं लागत भय लाजा * जो न कहौं बड होइ अकाजा ॥
दोहा-सन्त कहहि अस नीति प्रभु, श्रुति पुराण जो गाव ॥
होइ न विमल[1] विवेक[2] उर, गुरुसन किये दुराव ॥ ५८ ॥
अस विचारिप्रगटचो निजमोहू * हरहु नाथ करि जन पर छोहू॥
राम नाम कर अमित प्रभावा * सन्त पुराण उपनिषदगावा ॥
सन्तत[3]जपत शम्भु अविनाशी * शिव भगवान ज्ञान गुणराशी ॥
आकर[4]चारि जीव जग अहहीं * काशी मरत परमपद लहहीं ॥
सोकि राममहिमा मुनिराया * शिव उपदेश करत करिदाया॥
राम कवन प्रभु पूछौं तोहीं * कहहु बुझाय कृपानिधि मोहीं॥
एक राम अवधेश कुमारा * तिनकर चरित विदित[5]संसारा ॥
नारि[6] विरह दुख लहेउ अपारा * भये रोष रण रावण मारा ॥
दोहा-प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ, जाहि जपत त्रिपुरारि ॥
सत्यधाम सर्वज्ञ तुम, कहहु विवेक विचारि ॥ ५९ ॥
जैसे मिटै मोह भ्रम भारी * कहहु सो कथा नाथ विस्तारी॥
याज्ञवल्क्य बोले मुसुकाई * तुमहिं विदित रघुपति प्रभुताई[7]॥
रामभक्त तुम मन क्रम बानी * चतुराई तुम्हारि मैं जानी ॥
चाहहु सुना राम गुण गूढा * कीन्हेउ प्रश्न मनहु अति मूढा॥

१ निर्मल । २ ज्ञान । ३ निरंतर । ४ खानि । ५ प्रगट । ६ श्रीसीताजी । ७ महिमा ।

तात सुनहु सादर मन लाई * कहहुँ रामकी कथा सुहाई ॥
महामोह महिषेश विशाला * रामकथा कालिका कराला ॥
रामकथा शशिकिरण समाना * सन्त चकोर करहिं तेहि पाना॥
ऐसे संशय कीन्ह भवानी * महादेव तब कहा बखानी ॥
दोहा--कहौं स्वमति अनुहारि अब, उमा शम्भु संवाद ॥
भयउ समय जेहि हेतु यह, सुनि मुनि मिटहिंविषाद ॥६०॥
एक बार त्रेतायुग माहीं * शम्भु गये कुम्भजऋषि पाहीं ॥
संग सती जगजननि भवानी * पूजे ऋषि अखिलेश्वर जानी ॥
रामकथा मुनिवर्य्य बखानी * सुनी महेश परमसुखमानी ॥
ऋषि पूंछी हरि भक्ति सुहाई * कही शम्भु अधिकारी पाई ॥
कहत सुनत रघुपति गुणगाथा * कछुदिन तहाँ रहे गिरिनाथा ॥
मुनिसन विदा माँगि त्रिपुरारी * चले भवन सँग दक्षकुमारी ॥
तेहि अवसर भंजन महिभारा * हरि रघुवंश लीन्ह अवतारा ॥
पिता वचन तजि राज्य उदासी * दण्डकवन विचरत अविनासी॥
दोहा--हृदय विचारत जात हर, केहि विधि दरशन होइ ॥
गुप्तरूप अवतरेउ प्रभु, गये जान सब कोइ ॥ ६१ ॥
सो०--शंकर उर अति क्षोभ, सती न जानहिं मर्म सोइ ॥
तुलसी दरशन लोभ, मनडर लोचन लालची ॥ ११ ॥
रावण मरण मनुज कर याँचा * प्रभुविधिवचनकीन्हचहसाँचा॥
जो नहिं जाउँ रहै पछितावा * करत विचार न बनत बनावा ॥
यहि विधि भये शोचवश ईशा * ताही समय जाय दशशीशा ॥
लीन्ह नीच मारीचहि संगा * भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा॥
करि छल मूढ़ हरी वैदेही * प्रभु प्रताप उर विदित न तेही ॥
मृग वधि बन्धु सहित हरि आये * आश्रम देखि नयन जल छाये ॥
विरह विकल नरइव रघुराई * खोजत विपिनफिरत दोउभाई॥
कबहू योग वियोग न जाके * देखा प्रगट विरह दुख ताके ॥

१ भवानी । २ चन्द्र । ३ जगन्माता । ४ पृथ्वीका भार उतारनेको । ५ रावण । ६ सीताजी । ७ कपटमृगमारीच । ८ वनमें ।

दोहा–अति विचित्र रघुपति चरित, जानहिं परम सुजान ॥
जे मतिमन्द विमोह वश, हृदय धरहिं कछु आन ॥ ६२ ॥
शम्भु समय तेहि रामहिं देखा * उपजा हिय अति हर्ष विशेखा॥
भरि लोचन छबिसिन्धु निहारी*कुसमयजानिन कीन्हचिन्हारी॥
जय सच्चिदानन्द जगपावन * असकहिचलेउमनोजनशावन॥
चलेजात शिव सती समेता * पुनिपुनिपुलकितकृपानिकेता ॥
सती सो दशा शम्भुकी देखी * उर उपजा संदेह विशेखी ॥
शंकर जगतवन्द्य जगदीशा * सुर नर मुनि सब नावत शीशा॥
तिन नृपसुतहि कीन्ह परणामा * कहि सच्चिदानन्द परधामा ॥
भये मगन छबि तासु बिलोकी * अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी॥
दोहा–ब्रह्म जो व्यापक विरज अज, अकल अनीह अभेद ॥
सोकि देह धरि होइ नर, जाहि न जानत वेद ॥ ६३ ॥
विष्णु जो सुरहित नरतनु धारी * सोउ सर्वज्ञ यथा त्रिपुरारी ॥
खोजत सोकि अज्ञ इव नारी * ज्ञानधाम श्रीपति असुरारी ॥
शम्भु गिरा पुनि मृषा न होई * शिव सर्वज्ञ जान सब कोई ॥
अस संशय मन भयउ अपारा * होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा ॥
यद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी * हर अन्तर्य्यामी सब जानी ॥
सुनहु सती तव नारिस्वभाऊ * संशय अस न धरिय उर काऊ॥
जासु कथा कुंभज ऋषि गाई * भक्ति जासु मैं मुनिहिं सुनाई ॥
सोइ मम इष्ट देव रघुवीरा * सेवत जाहि सदा मुनि धीरा ॥
छंद–मुनि धीर योगी सिद्ध सन्तत विमल मन जेहि ध्यावहीं ।
कहि नेति निगम पुराण आगम जासु कीरति गावहीं ॥
सोइ राम व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय मायापति धनी ।
अवतरेउ अपने भक्तहित निजतंत्र नित रघुकुलमनी ॥२॥
सो०–लाग न उर उपदेश, यदपि कहेउ शिव बार बहु ॥
बोले विहँसि महेश, हरिमाया बल जानि जिय ॥ १२ ॥
जो तुम्हरे मन अति सन्देहू * तौ किन जाइ परीक्षा लेहू ॥

१ शोभा । २ देखकर । ३ व्याप्त । ४ कलारहित । ५ अज्ञान । ६ वाणी । ७ असत्य ।

तबलगि बैठि रहौं बटछाहीं * जबलगि तुम ऐहहु मोहिं पाहीं ॥
जैसे जाइ मोह भ्रम भारी * करहु सो यतन विवेक विचारी ॥
चली सती शिव आयसु पाई * करहि विचार करौं का भाई ॥
यहाँ शम्भु अस मन अनुमाना * दक्षसुता कर नहिं कल्याना ॥
मोरे कहे न संशय जाहीं * विधि विपरीत भलाई नाहीं ॥
होइहै सोइ जो रामरचि राखा * को करि तर्क बढावहि शाखा ॥
असकहि जपनलगे हरि नामा * गई सती जहँ प्रभु सुखधामा ॥
दोहा–पुनि पुनि हृदय विचार करि, धरि सीता कर रूप ॥
आगे ह्वै चलि पंथ तेहि, ज्यहि आवत सुर भूप ॥ ६४ ॥
लक्ष्मण दीख उमाकृत वेषा * चकितहृदय भ्रमभयउविशेषा ॥
कहिनसकतकछुअतिगंभीरा * प्रभुप्रभाव जानत मतिधीरा ॥
सतीकपट जानेउ सुरस्वामी * समदर्शी सब अन्तर्य्यामी ॥
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना * सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना ॥
सती कीन्ह चह तहाँ दुराऊ * देखहु नारि स्वभाव प्रभाऊ ॥
निजमाया बल हृदयबखानी * बोले विहँसि राम मृदुवानी ॥
जोरिपाणि प्रभु कीन्हप्रणामू * पिता समेत लीन्ह निज नामू ॥
कहेउ बहोरि कहाँ वृषकेतू * विपिन अकेलि फिरहु केहिहेतू ॥
दोहा–राम वचन मृदु गूढ सुनि, उपजा अति संकोच ॥
सती सभीत महेश पहँ, चली हृदय बड शोच ॥ ६५ ॥
मैं शंकरकर कहा न माना * निज अज्ञान राम पहँ आना ॥
जाइ उतर अब देहौं काहा * उर उपजा अति दारुण दाहा ॥
जाना राम सती दुख पावा * निज प्रभाव कछु प्रगट जनावा ॥
सती दीख कौतुक मग जाता * आगे राम सहित सिय भ्राता ॥
फिरि चितवा पाछे प्रभु देखा * सहित बंधु सिय सुंदर वेषा ॥
जहँ चितवहिंतहँप्रभुआसीना * सेवहिं सिद्ध मुनीश प्रवीना ॥
देखे शिव विधि विष्णुअनेका * अमित प्रभाउ एकते एका ॥

१ आज्ञा। २ मार्ग। ३ स्वाभाविक सामान्य एक गुण श्रीरामचन्द्रको। ४ हाथ।

वन्दत चरण करत प्रभु सेवा * विविध वेषदेखे सब देवा ॥
दोहा–सती विधात्री इन्दिरा, देखीं अमित अनूप ॥
जेहि जेहि वेष अजादि सुर, तेहि तेहि तनु अनुरूप ॥६६॥
देखे जहँ तहँ रघुपति जेते * शक्तिन सहित सकलसुर तेते॥
जीव चराचर जे संसारा * देखे सकल अनेक प्रकारा ॥
पूजहिं प्रभुहिं देव बहु वेषा * रामरूप दूसर नहिं देखा ॥
अवलोके रघुपति बहुतेरे * सीता सहित न वेष घनेरे ॥
सोइ रघुवर सोइलक्ष्मणसीता * देखि सती अति भई सभीता॥
हृदयकम्प तनु सुधि कछुनाहीं * नयन मूँदि बैठी मग माहीं ॥
बहुरि विलोकेउ नयन उघारी * कछु न दीख तहँ दक्षकुमारी ॥
पुनि पुनि नाइ रामपद शीशा * चली तहाँ जहँ रहे गिरीशा ॥
दोहा–गई समीप महेश तब, हँसि पूछी कुशलात ॥
लीन्ह परीक्षा कवन विधि, कहहु सत्य सब बात ॥ ६७॥
सती समुझि रघुवीर प्रभाऊ * भयवश शिवसन कीन्ह दुराऊ॥
कछु न परीक्षा लीन्ह गुसाईं * कीन्ह प्रणाम तुम्हारिहिनाईं ॥
जो तुम कहा सो मृषा न होई * मोरे मन प्रतीति अस सोई ॥
तब शंकर देखेउ धरि ध्याना * सतीजोकीन्हचरितसबजाना ॥
बहुरि राम मायहि शिरनावा * प्रेरि सतिहि जेहि झूठ कहावा॥
हरिइच्छा भावी बलवाना * हृदय विचारतशम्भुसुजाना ॥
सती कीन्ह सीता कृत वेषा * शिव उर भयउविषाद विशेषा॥
जो अब करौं सतीसन प्रीती * मिटै भक्तिपथ होइ अनीती ॥
दोहा–परमप्रेम नहिं जाइ तजि, किये प्रेम बड पाप ॥
प्रगट न कहत महेश कछु, हृदय अधिक संताप ॥ ६८ ॥
तबहिं शम्भु प्रभुपद शिर नावा * सुमिरत राम हृदयअसआवा॥
यहि तनु सतिहि भेंट मोहिंनाहीं * शिवसंकल्प कीन्ह मनमाहीं ॥
अस विचारि शंकर मतिधीरा * चले भवन सुमिरत रघुवीरा ॥

१ दुःख । २ भोग । ३ मण । ४ ग्रह–कैलास ।

चलत गगन भइ गिरा सुहाई * जयमहेश भलि भक्ति दृढ़ाई ॥
अस प्रण तुमबिन करैको आना * रामभक्त समरथ भगवाना ॥
सुनि नभगिरा सती उर शोचू * पूंछा शिवहि समेत सँकोचू ॥
कीन्ह कवन प्रण कहहु कृपाला * सत्यधाम प्रभु दीन दयाला ॥
यदपि सती पूँछा बहुभाँती * तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती ॥
दोहा–सती हृदय अनुमान किय, सब जाना सर्वज्ञ ॥
कीन्ह कपट मैं शंभुसन, नारि सहज जड अज्ञ ॥ ६९ ॥
सो०–जल पय सरिस बिकाय, देखहु प्रीति कि रीति भलि ॥
बिलग होत रसजाय, कपट खटाई परतही ॥ १३ ॥

(अथ क्षेपक)

श्लोक–क्षीरेणात्मगतोदकाय हि गुणा दत्ताः पुरा तेऽखिलाः
क्षीरे तापमवेक्ष्य तेन पयसा ह्यात्मा कृशानौ हुतः ।
गन्तुं पावकमुन्मानास्तदभवद्दृष्ट्वा तु मित्रापदं
युक्तं तेन जलेन शाम्यति सतां मैत्री पुनस्त्वीदृशी ॥ १ ॥

श्लोकार्थ–जिस समय दूधमें जल मिला तो उस दूधने अपना सबगुण और रूप जलरूपीमित्रको देदिया. फिर दूधमें ताप देखकर जलने पहले अपना शरीर अग्निमें होम दिया "दूधको आंचपर धरो तो पहले पानी जलता है" फिर दूधनेभी मित्रको इस आपत्तिमें देखकर अग्निमें गिरना चाहा फिर जलके छींटें पाकर अपने मित्रको आया जान ठंढाहो बैठगया. सो उचितही है कि, सत्पुरुषों की मैत्री ऐसीही होती है ॥ १ ॥

(इति क्षेपक)

हृदयशोच समुझत निजकरणी * चिन्ता अमितजाइ नहिं वरणी ॥
कृपासिन्धु शिव परम अगाधा * प्रगट न कहेउ मोर अपराधा ॥
शंकररुख अवलोकि भवानी * प्रभमोहिंतजेउहृदयअकुलानी ॥
निजअघसमुझिनकछुकहिजाई * तपै अँवा इव उर अधिकाई ॥
सतिहि सशोच जानि वृषकेतू * कहेउ कथा सुन्दर सुखहेतू ॥
वर्णत पंथ विविध इतिहासा * विश्वनाथ पहुँचे कैलासा ॥
तहँ पुनि शंभु समुझिप्रणआपन * बैठे वटतर करि कमलासन ॥

१ आकाश। २ वाणी। ३ लज्जा। ४ अन्तर्य्यामिन्। ५ दूध। ६ देखि। ७ पाप।

शंकर सहज स्वरूप सँभारा * लागि समाधि अखंड अपारा ॥

दोहा–सती बसहिं कैलास तब, अधिक शोच मन माहिं ॥
मर्म न कोऊ जान कछु, युगसम दिवस सिराहिं ॥ ७०॥

नित नव शोच सती उरभारा * कब जैहौं दुखसागर पारा ॥
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना * पुनिपतिवचनमृषाकरिजाना ॥
सोफल मोहिं विधाता दीन्हा * जो कछु उचित रहा सो कीन्हा ॥
अबविधि असबूझियनहिंतोहीं * शंकरविमुख जिआवहु मोहीं ॥
कहि नजाइकछु हृदयगलानी * मनमहँरामहिंसुमिरिसयानी ॥
जो प्रभु दीनदयालु कहावा * आरतहरण वेद यश गावा ॥
तो मैं विनय करौं कर जोरी * छूटै वेगि देह यह मोरी ॥

दोहा–तौ समदर्शी सुनिय प्रभु, करौ सो वेगि उपाइ ॥
होइ मरण जेहि विनहिं श्रम, दुस्सहविपतिविहाइ ॥ ७१॥

यहिविधि दुखित प्रजेशकुमारी * अकथनीय दारुण दुख भारी ॥
बीते संवत् सहससतासी * तजी समाधि शंभु अविनाशी ॥
रामनाम शिव सुमिरण लागे * जानेउ सती जगतपति जागे ॥
जाइ शम्भुपद वन्दन कीन्हा * सन्मुख शंकर आसन दीन्हा ॥
लगे कहन हरिकथा रसाला * दक्षप्रजेश भये तेहिकाला ॥
देखा विधि विचारि सबलायक * दक्षहि कीन्ह प्रजापति नायक ॥
बड़ अधिकार दक्ष जब पावा * अतिअभिमानहृदयतबआवा ॥
नहिं कोउ असजन्मेउ जग माहीं * प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥

दोहा–दक्षलिये मुनि बोलि तब, करन लगे बड़ याग ॥
नेवतें सादर सकलसुर, जे पावत मखभाग ॥ ७२ ॥

किन्नर नाग सिद्ध गन्धर्वा * वधुन समेत चले सुर सर्वा ॥
विष्णु विरंचि महेश विहाई * चले सकल सुर यान बनाई ॥
सती विलोकेउ गगनविमाना * जात चले सुन्दर विधि नाना ॥

१ एकएकदिन युगके समान एकएक युग कहिये सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग । २ बोझ । ३ असत्य
४ खियन । ५ छोडकर । ६ विमान । ७ आक

सुर सुन्दरी करहिं कलगाना * सुनतश्रवण छूटहिंमुनिध्याना॥
पूँछेउ तब शिव कहेउ बखानी * पितायज्ञ सुनिकै हरषानी ॥
जो महेश मोहिं आयसुदेहीं * कछु दिन जाइ रहौं मिसु एहीं ॥
पति परित्यागहृदयदुख भारी * कहै न निज अपराध विचारी ॥
बोली सती मनोहर बानी * भय संकोच प्रेमरस सानी ॥
दोहा-पिता भवन उत्सव परम, जो प्रभु आयसु होइ ॥
तौ मैं जाउँ कृपायतन, सादर देखन सोइ ॥ ७३ ॥
कहेउ नीक मोरे मनभावा *यह अनुचित नहिं नेवतपठावा॥
दक्ष सकल निजसुता बुलाई * हमरे वैर तुम्हैं बिसराई ॥
ब्रह्मसभा हमसन दुखमाना * तेहिते अजहुँ करहिं अपमाना॥
जो बिन बोले जाहु भवानी * रहै न शील सनेह न कानी ॥
यदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा * जाइय बिनु बोले न सँदेहा ॥
तदपि विरोधमान जहँ कोई * तहाँ गये कल्याण न होई ॥
भाँति अनेक शम्भु समुझावा * भावीवश न ज्ञान उर आवा ॥
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बुलाये * नहिं भलिबात हमारे भाये ॥
दोहा-कहि देखा हर यत्न बहु, रहैं न दक्षकुमारि ॥
दिये मुख्य गण संग तब, बिदा किये त्रिपुरारि ॥ ७४ ॥
पिताभवन जब गई भवानी * दक्षत्रास काहु न सनमानी ॥
सादर भलेहि मिली इक माता *भगिनी मिलीं बहुत मुसुकाता॥
दक्ष न कछु पूँछी कुशलाता *सतिहि बिलोकि जरे सब गाता॥
सती जाइ देखेहु तब यागा * कतहुँ न दीख शंभुकर भागा॥
तब चित चढेउ जो शंकरकहेऊ *प्रभुअपमानसमुझि उर दहेऊ॥

* महादेवजी कहतेहैं कि हे सती ! ब्रह्माकी सभामें विष्णु आदि सब देवताओंके साथ हम बैठे रहे सो उससमयमें दक्ष तुम्हारे पिता आये सो उन्हें देख सब देवता उठे परन्तु हम और हमारे संग ब्रह्मा विष्णु नहीं उठे सो दक्ष क्रुद्ध होय सभामें हमैं शापदिया और कहा यज्ञमें भाग तुमको आजसे न मिलैंगे और तभीसे द्वेषमान मेरी प्रतिष्ठा हीन करनेमें उद्यतरहे. इसीकारण अपने यज्ञमें हमैं न्योता नहीं दिया ।

१ देववधू । २ सुन्दरगान । ३ कान । ४ वियोग । ५ बेटी । ६ मर्य्यादा । ७

पाछिल दुख न हृदयअसव्यापा * जस यह भयउ महा परितापा ॥
यद्यपि जग दारुण दुख नाना * सबते कठिन जाति अपमाना ॥
समुझिशोचतिहिंभाअतिक्रोधा * बहु विधि जननी कीन्हप्रबोधा ॥
दोहा—शिव अपमान न जाइ सहि, हृदय न होत प्रबोध ॥
सकल सभहिं हठि हटकि तब, बोली वचन सक्रोध ॥ ७५ ॥
सुनहु सभासद सकल मुनिंदा * कही सुनी जिन शंकरनिंदा ॥
सो फल तुरत लहब सबकाहू * भली भाँति पछिताव पिताहू ॥
सन्त शम्भु श्रीपति अपवादा * सुनियजहाँतहँ अस मर्य्यादा ॥
काटिय तासु जीभ जु बसाई * श्रवणमूँदि नहिं चलिय पराई ॥
जगदात्मा महेश पुरारी * जगतजनक सबके हितकारी ॥
पिता मन्दमति निन्दत तेही * दक्षशुक्र सम्भव यह देही ॥
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू * उरधरि चन्द्रमौलि वृषकेतू ॥
असकहि योग अग्नि तनु जारा * भयउ सकल मख हाहाकारा ॥
दोहा—सती मरण सुनि शम्भु गण, लगे करन मख खीश ॥
यज्ञ विध्वंस विलोकि भृगु, रक्षा कीन्ह मुनीश ॥ ७६ ॥
समाचार जब शंकर पाये * वीरभद्र करि कोप पठाये ॥
यज्ञविध्वंस जाय तिन कीन्हा * सकलसुरनविधिवतफलदीन्हा ॥
भइ जग विदित दक्ष गति सोई * जसकछुशम्भुविमुखकीहोई ॥
यह इतिहास सकल जग जाना * ताते मैं संक्षेप बखाना ॥
सती मरत हरिसन वरमांगा * जन्म जन्म शिवपद अनुरागा ॥
तेहि कारण हिमगिरि गृहजाई * जन्मी पार्वती तनु पाई ॥
जबते उमा शैलगृह आई * सकलसिद्धि सम्पति तहँ छाई ॥
जहँ तहँ मुनिन सुआश्रमकीन्हे * उचित वास हिमभूधर दीन्हे ॥
दोहा—सदा सुमन फल सहित सब, द्रुम नव नाना जाति ॥
प्रकटीं सुन्दर शैलपर, मणि आकर बहुभाँति ॥ ७७ ॥
सरिता सब पुनीत जल बहईं * खग मृगमधुपसुखी सब रहईं ॥

१ अत्यंत दुःख । २ कठिन । ३ ज्ञान—ढाढस । ४ निंदा । ५ जगत्पिता । ६ पर्वत ।
७ नदियां । ८ पवित्र—निर्मल । ९ पक्षी । १० हरिण । ११ भ्रमर ।

सहज बैर सब जीवन त्यागा * गिरिपरसकलकरहिंअनुरागा ॥
सोह शैल गिरिजा गृहआये * जिमि नर राम भक्तिके पाये ॥
नित नूतन मंगल गृहतासू * ब्रह्मादिक गावहिं यश जासू ॥
नारद समाचार सब पाये * कौतुक हिमगिरि गेह सिधाये ॥
शैलराज बड आदर कीन्हा * पदपखारि वर आसन दीन्हा ॥
नारिसहित मुनिपद शिरनावा *चरणसलिल सबभवनसिंचावा॥
निज सौभाग्यबहुत गिरिवरणा * सुता बोलि मेली मुनिचरणा॥
दोहा—त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ तुम, गति सर्वत्र तुम्हारि ॥
कहहु सुताके दोष गुण, मुनिवर हृदय विचारि ॥ ७८ ॥
कह मुनि विहँसिगूढ़मृदुवानी * सुता तुम्हारिसकलगुणखानी॥
सुन्दरि सहज सुशील सयानी * नाम उमा अम्बिका भवानी ॥
सब लक्षण सम्पन्न कुमारि * होइहि सन्तत पियहि पियारी॥
सदा अचल इहिकर अहिवाता* इहिते यश पैहहिं पितु माता ॥
होइहि पूज्य सकल जगमाहीं * इहि सेवत कछु दुर्लभनाहीं ॥
इहिकर नाम सुमिरि संसारा *तियचढ़िहहिंपतिव्रतआसिधारा॥
शैल सुलक्षण सुता तुम्हारि * सुनहु जे अब अवगुण दुइचारी॥
अगुण अमान मातुपितु हीना * उदासीन सब संशय छीना ॥
दोहा—योगी जटिल अकाम तनु, नग्न अमंगल भेख ॥
अस स्वामी इहि कहँ मिलिहि, परी हस्त असरेख ॥ ७९॥
सुनि मुनि गिरासत्याजियजानी* दुख दम्पतिहि उमाहरषानी ॥
नारदहू यह भेद न जाना * दशा एक समुझत बिलगाना ॥
सकलसखीगिरिजागिरिमयना* पुलक शरीर भरे जलनयना ॥
होय न मृषा देवऋषि भाखा * उमा सो वचन हृदयधरिराखा॥
उपजेउ शिवपद कमल सनेहू * मिलन कठिन मनभा संदेहू ॥
जानि कुअवसर प्रीति दुराई * सखिउछङ्ग बैठी पुनि जाई ॥
झूठि न होइ देवऋषि वानी * शोचहिं दम्पति सखी सयानी॥

१ घर । २ कोमल । ३ सदैव । ४ जिनके न राग, न द्वेष, न संशय । ५ वाणी । ६ माता पिता । ७ दुचित्त । ८ गोद ।

उर धरि धीर कहै गिरिराऊ * कहहुनाथ का करिय उपाऊ ॥
दोहा–कह मुनीश हिमवंत सुनु, जो विधि लिखा लिलार ॥
देव दनुज नर नाग मुनि, कोउ न मेटन हार ॥ ८० ॥
तदपि एक मैं कहौं उपाई * होइ करै जो दैव सहाई ॥
जस वर मैं बरणेउँ तुमपाहीं * मिलिहिउमाहिंकछुसंशयनाहीं॥
जे जे वरके दोष बखाने * ते सब शिवपहँ मैं अनुमाने ॥
जो विवाह शंकर सन होई * दोषौगुणसम कह सब कोई ॥
जो अहिसेज शयन हरिकरहीं * बुधकछुतिनकहँदोषनधरहीं ॥
भानु कृशानु सर्व रस खाहीं * तिनकहमन्दकहतकोउनाहीं ॥
शुभअरुअशुभसलिलसबबहहीं * सुरसरिकोउनअपावनकहहीं ॥
समरथ कहँ नहिं दोष गुसाईं * रवि पावक सुरसरि की नाईं ॥
दोहा–जो अस ईर्षा करहिं नर, जड़ विवेक अभिमान ॥
परहिं कल्पभरि नरक महँ, जीव कि ईश समान ॥ ८१ ॥
सुरसरि जलकृत वारुणिजाना * कबहुँनसंत करहिंतिहि पाना॥
सुरसरि मिले सुपावन जैसे * ईश अनीशहिं अन्तर तैसे ॥
शंभु सहज समरथ भगवाना * इहिविवाहसबविधिकल्याना ॥
दुराराध्यपै अहहिं महेशू * आशुतोष पुनि किये कलेशू ॥
जो तप करै कुमारि तुम्हारी * भाविउ मेटि सकैं त्रिपुरारी ॥
यद्यपि वर अनेक जगमाहीं * इहिकहँ शिवतजि दूसरनाहीं॥
वरदायक प्रणतारक भंजन * कृपासिंधु सेवक मनरंजन ॥
इच्छितफल बिनु शिव आराधे * लहइ न कोटि योगजपसाधे ॥
दोहा–असकहिनारदसुमिरि हरि, गिरिजहिदीन्हअशीश ॥
होइहि सब कल्यान अब, संशय तजहु गिरीश ॥ ८२ ॥
असकहि ब्रह्मभवन मुनिगयऊ * आगिलचरितसुनहुजसभयऊ॥
पतिहि इकाँत पायकह मयना * नाथनमैं समुझेउँ मुनिबयना ॥
जो घर वर कुल होइ अनूपा * करिय विवाह सुता अनुरूपा ॥

१ माघ । २ सूर्य्यनारायण । ३ अग्नि । ४ दुस्तर जिनकी आराधना । ५ हिमवान्-पर्व्वत । ६ दूल्ह ।

नतु कन्यां बरु रहै कुमारी * कन्त उमा मम प्राणपियारी ॥
जौं नमिलिहिवरगिरिजहियोगू * गिरिजडसहजकहहिंसबलोगू॥
सो बिचारि पति करहु बिवाहू * जेहि न बहोरि होइ उरदाहू ॥
असकहि परी चरण धरिशीशा * बोले सहित सनेह गिरीशा ॥
बरु पावक प्रगटै शशि माहीं * नारद बचन अन्यथा नाहीं ॥
दोहा-प्रिया शोच परिहरहुसब, सुमिरहु श्रीभगवान ॥
पार्वती जिन निर्म्मयउ, सोइ करिहहिं कल्यान ॥ ८३ ॥
अब जो तुमहिं सुता पर नेहू * तौ अस जाय सिखावन देहू ॥
करै सो तप ज्यहि मिलहिं महेशू* आन उपाय न मिटहिं कलेशू ॥
नारद बचन समुझि सबहेतू * सुन्दर सब गुणनिधि वृषकेतू ॥
अस बिचारि तुम तजि सबशंका* सबहि भाँति शंकर अकलंका ॥
सुनि पति बचन हर्ष मनमाहीं * गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं ॥
उमहि बिलोकि नयन भरिवारी * सहित सनेह गोद बैठारी ॥
बारहिंबार लेति उरलाई * गद्गदकण्ठ न कछु कहि जाई ॥
जगतमातु सर्वज्ञ भवानी * मातु सुखद बोलीं मृदुबानी ॥
दोहा-सुनहु मातु मैं दीख अस, स्वप्न सुनाऊं तोहिं ॥
सुन्दर गौर सु विप्रवर, अस उपदेशउ मोहिं ॥ ८४ ॥
करहु जाय तप शैल कुमारी * नारद कहा सो सत्य बिचारी ॥
मातु पितहि पुनि यहमतभावा * तपसुखप्रद दुख दोष नशावा ॥
तपबल रचै प्रपंच विधाता * तपबल विष्णु सकलजगत्रांता॥
तपबल शम्भु करहिं संहारा * तपबल शेष धरहिं महिभारा ॥
तप अधार सब सृष्टि भवानी *करहु जाइ तप अस जियजानी॥
सुनत बचन विस्मित महतारी* स्वप्नसुनायउ गिरिहि हँकारी ॥
मातु पितहि बहुविधि समुझाई* चली उमा तपहित हरषाई ॥
प्रिय परिवार पिता अरु माता * भये विकल मुख आव न बाता ॥
दोहा-वेद शिरा मुनि आय तब, सबहिं कहा समुझाइ ॥
पार्वती महिमा सुनत, रहे प्रबोधहि पाइ ॥ ८५ ॥

१ अग्नि । २ चन्द्रमा । ३ असत्य । ४ उत्पन्नकिया । ५ शिव । ६ अश्रुजल । ७ अन्तर्यामी ।
८ ब्राह्मण । ९ सुखदायक । १० सृष्टि । ११ पालना ।

उरधारि उमा प्राणपति चरणा * जाइविपिन लागीं तपकरणा ॥
अतिसुकुमारि न तनु तप योगू * पतिपदसुमिरितजेउसबभोगू ॥
नित नव चरण उपज अनुरागा * बिसरी देह तपहि मन लागा ॥
संवत सहस मूल फल खाये * शाक खाय शत वर्ष गँवाये ॥
कछु दिन भोजन वारि बतासा * कियेकठिन कछुदिनउपवासा॥
बेलपात महि परे सुखाई * तीनि सहस संवत सो खाई ॥
पुनि परिहरेउ सुखानेउ पर्णा * उमा नाम तब भयउ अपर्णा ॥
देखि उमहिं तप क्षीण शरीरा * ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा ॥

दोहा-भयउ मनोरथ सफल तव, सुनु गिरिराज कुमारि ॥
परिहरि दुसह कलेश सब, अब मिलिहहिं त्रिपुरारि ॥८६॥

अस तप काहुन कीन्ह भवानी * भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी ॥
अब उर धरहु ब्रह्म वर वानी * सत्यसदा सन्तत शुचि जानी॥
आवैं पिता बुलावन जबहीं * हठ परिहरि घर जायहु तबहीं॥
मिलहिं तुमहिं जब सप्तऋषीशा* जानेहु तब प्रमाण वागीशा ॥
सुनत गिरा विधि गगन बखानी* पुलकिगात गिरिजाहरखानी॥
उमा चरित मैं सुन्दर गावा * सुनहु शंभुकर चरित सुहावा ॥
जबते सती जाय तनु त्यागा* तबते शिव मनभयउ विरागा॥
जपहिं सदा रघुनायक नामा * जहँ तहँ सुनहिं रामगुणग्रामा॥

दोहा-चिदानन्द सुखधाम शिव, विगत मोह मद काम ॥
विचरहिं महि धरिहृदय हरि,सकल लोक अभिराम॥८७॥

कतहुँ मुनिन उपदेशहिं ज्ञाना * कतहुँ रामगुण करहिं बखाना॥
यदपि अकाम तदपि भगवाना * भक्तविरहदुखदुखितसुजाना ॥
यहिविधि गयउकाल बहुबीती * नितनव होइ रामपद प्रीती ॥
नेम प्रेम शंकर कर देखा * अविचलहृदय भक्तिकी रेखा॥
प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला * रूप शीलनिधि तेज विशाला॥

१ वन। २ वपुष। ३ आकाशवाणी। ४ त्यागि। ५ वाणी-वचन। ६ आकाश। ७ रहित। ८ पृथ्वी।

बहुप्रकार शंकरहि सराहा * तुम विनु असव्रतकोनिरबाहा ॥
बहु विधि राम शिवहि समुझावा * पार्वती कर जन्म सुनावा ॥
अति पुनीत गिरिजाकी करणी * विस्तर सहितकृपानिधिवरणी ॥
दोहा-अब विनती मम सुनहु शिव, जो मोपर निज नेहु ॥
जाइ विवाहहु शैलजहि, यह मोहिं माँगे देहु ॥ ८८ ॥
कहशिवयदपिउचित असनाहीं * नाथ वचन पुनि मेटि नजाहीं ॥
शिरधरि आयसु करिय तुम्हारा * परमधर्म यह नाथ हमारा ॥
मातु पिता गुरु प्रभुकी वानी * बिनहिंविचारकरियशुभजानी ॥
तुम सब भाँति परम हितकारी * आज्ञा शिरपर नाथ तुम्हारी ॥
प्रभु तोषेउ सुनि शंकर वचना * भक्ति विवेक धर्मयुत रचना ॥
कह प्रभु हर तुम्हार प्रण रहेऊ * अब उर राखेउ जोहम कहेऊ ॥
अन्तर्द्धान भये अस भाषी * शंकर सोइ मूरति उर राखी ॥
तबहिं सप्तऋषि शिवपहँ आये * बोले प्रभु अस वचन सुहाये ॥
दोहा--पार्वती पहँ जाय तुम, प्रेम परीक्षा लेहु ॥
गिरिहि प्रेरि पठवहु भवन, दूर करहु संदेहु ॥ ८९ ॥
सुनि शिववचन परमसुख मानी * चले हर्षि जहँ रहीं भवानी ॥
ऋषिन गौरि देखी तहँ कैसी * मूरतिवन्त तपस्या जैसी ॥
बोले मुनि सुन शैलकुमारी * करहु कवन कारण तप भारी ॥
केहि आराधहु का तुम चहहू * हमसन सत्य मर्म सब कहहू ॥
सुनत ऋषिनके वचन भवानी * बोलीं गूढ मनोहर वानी ॥
कहत मर्म मन अति सकुचाई * हँसिहहु सुनि हमारि जडताई ॥
मनहठ परा न सुनै सिखावा * चहत वारिपर भीति उठावा ॥
नारद कहा सत्य सोइ जाना * विनु पंखनहमचहहिं उडाना ॥
देखिय मुनि अविवेक हमारा * चाहत पति शंकर अविकारा ॥
दोहा--सुनत वचन विहँसे ऋषय, गिरिसंभव तव देह ॥
नारद कर उपदेश सुनि, कहहु बसेहु केहिगेह ॥ ९० ॥

१ पवित्र । २ पार्वती । ३ हृदय । ४ गृह । ५ भेद । ६ पानी । ७ मूढता । ८ विकाररहित । ९ घर ।

दक्षसुतन उपदेशिन जाई * तिनफिरि भवन न देखा आई ॥
÷चित्रकेतुकर घर उनघाला * ×कनककशिपुकरपुनिअसहाला
नारद शिख जु सुनहिं नरनारी * अवशिभवनतजिहोहिंभिखारी॥
मनकपटी तनु सज्जन चीन्हा * आपसरिस सबहीं चह कीन्हा॥
तेहिके वचन मानि विश्वासा * तुम चाहहु पतिसहज उदासा ॥
निर्गुण निलज कुवेष कपाली * अकुल अगेह दिगम्बर व्याली॥
कहहु कवन सुख अस वर पाये * भल भूलिहु ठगके बौराये ॥
पंचकहैं शिव सती विवाही * पुनि अब डेरि मराइन ताही ॥

---

* जब दक्षप्रजापतिने प्रथम बहुतसे पुत्र उत्पन्न करके आज्ञादिया, कि सृष्टि करो तब वे सृष्टि के अर्थ तप करनेको गये. वहाँ नारदने उन सबोंको ऐसा ज्ञान दिया कि, वे सबके सब विरक्त होय वनमें तप करने लगे दक्षके गृहमें फिर नहीं आये तब दक्षने कन्या उत्पन्न करके सृष्टिको बढाया और नारदजीको शापदियां कि, तुम दो घड़ीसे अधिक कहीं न ठहर सकोगे सो हे पार्वती ! नारदकी शिक्षा सुन घर छोड़ वे भिखारी हुये ॥

÷ आगे फिर चित्रकेतु राजाका समाचार सुनो, चित्रकेतु राजाकी कोटि स्त्री थीं परन्तु लड़का एक नहीं तब किसी मुनिके आशीर्वादसे छोटी रानीके एक पुत्र उत्पन्न भया. जब वह लडका वर्ष-भरका भया तब शेष सब रानियोंने उस लड़केको विष देके मारडाला. तब उस मृतक लडकेको राजा गोदमें लिये विलाप करने लगा इतनेमें नारदजी आय राजाको ज्ञान उपदेश करने लगे परन्तु राजाको ज्ञान न हुआ. तब नारदजीने उस लडकेका आत्मा बुलाय उससे कहा, देखो राजा तुम्हारे शरीर छोड़नेसे अत्यन्त व्याकुल है तब वह बोला कौन किसका पुत्र यह असत्य है संसार कर्मानुसार है, सुनो पहले जन्ममें मैं भी राजा था राज्यसे विरक्त हो वनमें जाय भिक्षा मांग हरिभजन करता था एक दिन एक स्त्रीने मुझे गोलागोइठा दिया उसके भीतर चिउँटी थीं अग्निके संस्कारसे सब मरगईं सो वोह चिउँटी यह तुम्हारी स्त्री हैं और जिसने मुझे गोलागोइठा दिया सो यह मेरी माता है और मैंने उस पापसे इसके उदरमें जन्म लिया है सो ये कोटि स्त्रियोंने आनके पूर्व जन्मका बदला लिया यह कह लडका मरगया और राजा चित्रकेतु राज्य छोड़ वनमें तप करनेको चलागया ॥

+ आगे कनककशिपुकी स्त्री कयाधू जब गर्भवती थी तब नारदजीने उसको ज्ञान उपदेश किया सो गर्भहीमें प्रह्लादको ज्ञान उत्पन्न भया सोई ज्ञानसे विष्णु नृसिंहरूपधर हिरण्यकशिपुका वधकर प्रह्लादको राजतिलक दिया नारदके उपदेशसे दैत्यकुलका नाश भया ॥

१ मदह्लाका पिता । २ मनको वेग संकल्प विकल्प ताको कपटिलीन । ३ मुण्डमालजिनका भूषण । ४ श्मशानवासी ।

दोहा–अब सुख सोवत शोचनाहिं, भीख माँगि भवखाहिं ॥
सहज एकाकिनके भवन, कबहुँ कि नारि खटाहिं ॥ ९१ ॥
अजहुँ मानहु कहा हमारा * हम तुम कहँ वर नीक विचारा ॥
अति सुंदर शुचिसुखद सुशीला * गावहिं वेद जासु यश लीला ॥
दूषण रहित सकल गुणराशी * श्रीपति पुर वैकुण्ठनिवासी ॥
असवर तुमहिं मिलाउब आनी * सुनतवचनकहविहँसि भवानी ॥
सत्य कहहु गिरिभवतँ तनएहा * हठ न छूट छूटै वरु देहा ॥
कनँकौ पुनि पषाणतें होई * जारेउ सहज न परिहर सोई ॥
नारद वचन न मैं परिहरऊं * बसौ भवन उजरो नहिं डरऊं ॥
गुरुके वचन प्रतीति न जेही * स्वप्नेहु सुगम न सुखसिधितेही ॥
दोहा–महादेव अवगुण भवन, विष्णु सकल गुणधाम ॥
जेहिकर मन रम जाहि सन, ताहि ताहि सन काम ॥ ९२ ॥
जो तुम मिलते प्रथम मुनीशा * सुनतिउँशिखतुम्हारिधरिशीशा ॥
अब मैं जन्म शम्भुहित हारा * को गुण दोषहि करै विचारा ॥
जो तुम्हरे हठ हृदय विशेषी * रहि नजाइ बिनु किये बरेषी ॥
तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं * वर कन्या अनेक जगमाहीं ॥
जन्म कोटि लगि रगरि हमारी * वरौं शम्भु नतु रहौं कुमारी ॥
तजौं न नारद कर उपदेशू * आप कहहिं शतबार महेशू ॥
मैं पाँपरौं कहै जगदम्बा * तुमगृहगवनहु भयउविलम्बा ॥
देखि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी * जयजयजय जगदम्ब भवानी ॥
दोहा–तुम माया भगवान शिव, सकल जगत पितु मात ॥
नायचरण शिर मुनि चले, पुनि पुनि हर्षित गात ॥ ९३ ॥
जाइ मुनिन हिमवन्त पठाये * करिविनतीगिरिजहि गृहलाये ॥
बहुरि सप्तऋषि शिव पहँ जाई * कथा उमाकी सकल सुनाई ॥
भये मग्न शिव सुनत सनेहा * हर्षि सप्तऋषि गवने गेहा ॥
मन थिर करि तव शम्भुसुजाना * लगे करन रघुनायक ध्याना ॥

१ संसार । २ पवित्र । ३ शोभित ४ स्वर्ण । ५ पर्वत । ६ घर । ७ विश्वास । ८ तमासगीर ।

तारक असुर भयउ तेहिकाला * भुजप्रताप बल तेज विशाला ॥
ते सब लोक लोकपति जीते * भये देव सुख सम्पति रीते ॥
अजर अमर सो जीति नजाई * हारे सुर करि विविध लराई ॥
तब विरंचि सन जाइ पुकारे * देखे विधि सब देव दुखारे ॥
दोहा—सबसन कहा बुझाइ विधि, दनुज निधन तब होइ ॥
शम्भु शुक्र सम्भूतसुत, इहि जीतै रण सोइ ॥ ९४ ॥
मोरकहा सुनि करहु उपाई * होइहि ईश्वर करिहि सहाई ॥
सति जो तजी दक्ष मख देहा * जननी जाइ हिमाचल गेहा ॥
तेइँ तप कीन्ह शंभु पति लागी * शिव समाधि बैठे सब त्यागी ॥
यदपि अहै असमंजस[३] भारी * तदपि बात इक सुनहु हमारी ॥
पठवहु काम जाइ शिव पाहीं * करै क्षोभ शंकर मनमाहीं ॥
तब हम जाइ शिवहिं शिरनाई * करवाउब विवाह बरिआई ॥
यहिविधि भले देव हित होई * मति अति नीक कहा सब कोई ॥
प्रस्तुति सुरन कीन अतिहेतू * प्रकट्यो विषम बाण वृषकेतू ॥
दोहा—सुरन कही निज विपति सब, सुनि मन कीन्ह विचार ॥
शंभु विरोध न कुशल मोहिं, विहँसि कहेउ अस मार॥९५॥
तदपि करब मैं काज तुम्हारा * श्रुति कहउ परम धर्म उपकारा॥
परहित लागि तजै जो देही * सन्तत[६] संत प्रशंसहि तेही ॥
असकहि चलेउ सबहिं शिरनाई * सुमन धनुष कर सहित सहाई॥
चलत मार अस हृदय विचारा * शिवविरोध ध्रुव मरण हमारा ॥
तब आपन प्रभाव विस्तारा * निजवश कीन्ह सकल संसारा॥
कोपेउ जबहिं वारिचर केतू * क्षणमहँमिटेउ सकल श्रुतिसेतू॥
ब्रह्मचर्य व्रत संयम नाना * धीरज धर्म्म ज्ञान विज्ञाना ॥
सदाचार जप योग विरागा * सभय विवेक कटकसब भागा ॥
छंद—भागे विवेक सहाय सहित सो सुभट संयुग महिमुरे ।
सद्ग्रन्थ पर्वत कन्दरन महँ जाइ तेहि अवसर दुरे ॥

१ हीन-खाली । २ ब्रह्मा । ३ संदेह । ४ कामदेव । ५ वेद । ६ सदैव । ७ वर्णनकृत्य इत्यादि ।
८ कामदेव । ९ वेदमर्यादा ।

होनिहार का करतार को रखवार जग खरभर परा ।
दुइमाथ केहि रतिनाथ जेहि कहँ कोपि धनुशरकरधरा॥३॥
दोहा–जे सजीव जग अचर चर, नारि पुरुष अस नाम ॥
ते निज निज मर्याद तजि, भये सकल वश काम ॥ ९६ ॥
सबके हृदय मदन अभिलाषा * लता निहारिनवहिं तरु शाखा॥
नदी उमँगि अंबुधि कहँ धाई * संगम करैं तलाव तलाई ॥
जहँ अस दशा जडनकी वरणी * को कहिसकै सचेतन करणी ॥
पशु पक्षी नभ जल थलचारी * भये कामवश समय बिसारी ॥
मदन अन्ध व्याकुलसबलोका *निशिदिननहिंअवलोकहिंकोका
देव दनुज नर किन्नर व्याला * प्रेत पिशाच भूत वैताला ॥
इनकी दशा न कहेउँ बखानी * सदा कामके चेरे जानी ॥
सिद्ध विरक्त महामुनि योगी * तेपि कामवश भये वियोगी ॥
छंद–भये कामवश योगीश तापस पामरनकी को कहे ।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखतरहे ॥
अबला विलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अबलामयं ।
दुइ दण्ड भरि ब्रह्मांड भीतर कामकृत कौतुक अयं ॥४॥
सोरठा–धरा न काहू धीर, सबके मन मनसिज हरे ॥
जेहि राखे रघुवीर, ते उबरे तेहि काल महँ ॥ १४ ॥
उभय घरी अस कौतुक भयऊ* जबलगि काम शंभुपहँ गयऊ ॥
शिवहि विलोकि सशंकेउमारू * भयउ यथाथित सब संसारू ॥
भये तुरत जगजीव सुखारे * जिमि मद उतरिगये मतवारे ॥
रुद्रहि देखि मदन भयमाना * दुराधर्ष दुर्गम भगवाना ॥
फिरत लाज कछु कहिनहिंजाई* मरणठानि मन रचेसि उपाई ॥
प्रगटेसि तुरत रुचिर ऋतुराजा* कुसुमित नवतरु राजविराजा ॥
वन उपवन वाटिका तडागा * परमसुभग सबदिशाविभागा ॥
जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा*देखि मुयहु मनमनसिज जागा॥

१ डालें । २ वृक्ष । ३ समुद्र । ४ स्त्री । ५ कामदेव । ६ दोघरी ।

छंद-जागेउ मनोभव मुये मन वन सुभगता न परै कही ।
शीतल सुगंध सुमन्द मारुत मदन अनल सखासही ॥
विकसे सरनि बहुकंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा ॥
कलहंस पिक शुक सरस रव करि गाननाचहिंअप्सरा॥५॥
दोहा-सकल कला कर कोटि विधि, हारेउ सेन समेत ॥
चली न अचल समाधि शिव, कोपेउ हृदय निकेत ॥९७॥
देखि रसाल विटप वरशाखा * तेहिपर चढेउ मदन मनमाखा॥
सुमनचाप निज शर सन्धाने *अतिरिसताकिश्रवणलगिताने॥
छांड़े विषम विशिख उर लागे * छूटि समाधि शम्भु तब जागे॥
भयउ ईश मन क्षोभ विशेषी * नयन उघारिसकलादिशि देखी॥
सौरभ पल्लव मदन विलोका * भयउ कोप कम्पेउ त्रयलोका॥
तब शिव तीसर नयन उघारा * चितवतकाम भयउजरिछारा॥
हाहाकार भयउ जगभारी * डरपे सुर भये असुर सुखारी॥
समुझिकाम सुखशोचहिं भोगी* भये अकंटक साधक योगी॥
छंद-योगी अकंटक भये पतिगति सुनति रति मूर्च्छितभई ।
रोदति वदति बहुभाँति करुणा करति शंकर पहँ गई ॥
अति प्रेम करि विनती विविधविधि जोरिकर सन्मुखरही।
प्रभु आशुतोष कृपालु शिव अबला निरखि बोले सही॥६॥
दोहा-अबते रति तव नाथ कर, होइहि नाम अनंग ॥
बिनु वपु व्यापिहि सबहि पुनि, सुनु निज मिलन प्रसंग९८॥
जब यदुवंश कृष्ण अवतारा * होइहि हरण महा महिभारा॥
कृष्णतनय होइहि पति तोरा * वचन अन्यथा होइ न मोरा॥
रति गमनी सुनि शंकर वानी * कथा अपर अब कहौं बखानी॥
देवन समाचार जब पाये * ब्रह्मादिक वैकुण्ठ सिधाये॥
सब सुर विष्णु विरंचि समेता * गये जहाँ शिव कृपानिकेता॥
पृथकपृथक तिन कीन्ह प्रशंसा* भये प्रसन्न चन्द्र अवतंसा॥

१ पवन । २ फूले । ३ तालाब । ४ कमल । ५ भ्रमर । ६ फूल बाण । ७ संदेह-मोह ।
८ देखा । ९ नेत्र । १० प्रद्युम्न । ११ मिथ्या ।

बोले कृपासिंधु वृषकेतू * कहहु अमर आयहु केहि हेतू ॥
कह विधि तुम प्रभु अन्तर्यामी * तदपिभक्तिवशविनवउँस्वामी॥
दोहा-सकल सुरनके हृदय अस, शंकर परम उछाह ॥
निज नयनन देखा चहहिं, नाथ तुम्हार विवाह ॥ ९९ ॥
यह उत्सव देखिय भरि लोचन * सोकछुकरियमदनमदमोचन ॥
काम जारि रति कहँ वर दीन्हा * कृपासिन्धुयहअतिभलकीन्हा॥
सांसतिकरि पुनि करहिं पसाऊ * नाथप्रभुनकर सहज स्वभाऊ ॥
पार्वती तप कीन्ह अपारा * करहु तासु अब अंगीकारा ॥
सुनिविधिवचनसमुझिप्रभुवानी * ऐसोइ होउ कहा सुखमानी ॥
तब देवन दुन्दुभी बजाई * वर्षिसुमनजयजयसुरसाईं ॥
अवसर जानि सप्तऋषि आये * तुरतहिंविधिगिरिभवनपठाये ॥
प्रथम गये जहँ रहीं भवानी * बोले वचन मधुर छल सानी ॥
दोहा--कहा हमार न सुनेहु तब, नारद कर उपदेश ॥
अब भा झूंठ तुम्हार प्रण, जारेउ काम महेश ॥ १०० ॥
सुनि बोली मुसुकाय भवानी * उचित कहेउमुनिवरविज्ञानी ॥
तुम्हरे जान काम अब जारा * अबलगि शंभु रहे सविकारा ॥
हमरे जान सदा शिव योगी * अज अनवद्य अकाम अभोगी॥
जो मैं शिव सेयउँ अस जानी * प्रीति समेत कर्म्म मन बानी ॥
तौं हमार प्रण सुनहु मुनीशा * करिहहिं सत्यकृपानिधिईशा ॥
तुम जो कहा हर जारेउ मारा * सो अतिबड अविवेक तुम्हारा॥
तात अनलकर सहज स्वभाऊ * हिम तेहिनिकटजाइनहिंकाऊ॥
गये समीप सो अवशि नशाई * जस मन्मथ महेशकी नाईं ॥
दोहा-हिय हर्षे मुनि वचन सुनि, देखि प्रीति विश्वास ॥
चले भवानिहि नाइ शिर, गये हिमाचल पास ॥ १०१ ॥
सब प्रसंग गिरिपतिहि सुनावा * मदनदहनसुनिअतिदुखपावा ॥
बहुरि कहेउ रतिकर वरदाना * सुनिहिमवन्तबहुतसुखमाना ॥

१ कामदेवके मदके नाशकर्ता महादेव । २ अयोग्य ताको दण्डदेकर । ३ कृपा । ४ ब्रह्मज्ञानी । ५ कामासक्त ।
६ अजन्मा । ७ मर्मता । ८ अग्नि । ९ पाला । १० काम ।

हृदय विचारि शम्भु प्रभुताई * सादर मुनिवर लिये बुलाई ॥
सुदिन सुनखत सुघरी सुहाई * वेगि वेद विधि लग्न धराई ॥
पत्री सप्तऋषिन सोइ दीन्हीं * गहिपदविनयहिमाचलकीन्हीं॥
जायविधिहितिनदीन्हसोपाती * बांचत प्रीति न हृदय समाती॥
लग्नबाँचि अज सबहि सुनाई * हरषे सुनि सब सुर समुदाई ॥
सुमन वृष्टि नभ बाजन बाजे * मंगलकलशदशहुँदिशिसाजे ॥
दोहा–लगे सँवारन सकल सुर, वाहन विविध विमान ॥
होहिं शकुन मंगल शुभग, करहिं अप्सरा गान ॥ १०२ ॥
शिवहि शंभुगण करहिं शृँगारा* जटा मुकुट अहिमौर सँवारा ॥
कुंडल कंकण पहिरे व्याला * तनु विभूति पट केहरि छाला ॥
शशि लिलाट सुन्दर शिर गंगा* नयन तीनि उपवीत भुजंगा ॥
गरल कंठ उर नर शिरमाला * अशिवबेषशिवधामकृपाला ॥
करत्रिशूल अरु डमरु बिराजा * चले बसहँ चढ़ि बाजहिंबाजा ॥
देखिशिवहि सुरतिय मुसकाहीं* वरलायकदुलहिन जगनाहीं ॥
विष्णु विरंचि आदि सुरव्राता* चढ़ि चढ़ि वाहन चले बराता॥
सुरसमाज सब भाँति अनूपा * नहिं बरात दूलह अनुरूपा ॥
दोहा–विष्णुकहा अस विहँसि तब, बोलिसकल दिशिराज ॥
बिलगबिलगहोइचलहु सब,निजनिजसहितसमाज॥१०३॥
वर अनुहार बरात न भाई * हँसी करैहहु पर पुर जाई ॥
विष्णु वचन सुनि सुर मुसकाने* निजनिजसेनसहितबिलगाने ॥
मनहींमन महेश मुसकाहीं * हरिके व्यंग्य वचन नहिंजाहीं॥
अतिप्रियवचन सुनत हरिकेरे * भृंगी प्रेरि सकल गण टेरे ॥
शिव अनुशासन सुनि सबआये* प्रभुपदजलजशीशतिन नाये ॥
नाना वाहन नाना भेखा * विहँसे शिवसमाज जिन देखा॥
कोउमुखहीन विपुलमुखकाहू * बिनुपदकर कोउबहुपदबाहू ॥
विपुलनयनकोउ नयनविहीना *हृष्टपुष्ट कोउ अति तनुक्षीना ॥

१ पुष्प । २ आकाश । ३ देवता । ४ बाघम्बर । ५ जनेऊ । ६ विष । ७ वृषभ । ८ योग्य ।

छन्द–तनुक्षीणकोउ अतिपीनपावन कोउ अपावन गतिधरे ।
भूषणकराल कपाल कर सब सद्य शोणित तनुभरे ॥
खर श्वान सुवर शृगाल मूषक मेष अगणितकोगनै ।
बहुजिनिसप्रेतपिशाचयोगिनि भाँतिवर्णतनहिंबनै ॥ ७ ॥
सो०–नाचहिं गावहिं गीत, परम तरंगी भूत सब ॥
देखत अति विपरीत, बोलहिं वचन विचित्र विधि ॥ १५ ॥
जस दूलह तस बनी बराता * कौतुक विविधहोहिं मग जाता॥
यहाँ हिमाचल रचेउ विताना * अतिविचित्र नहिं जायबखाना॥
शैलसकल जहँलगि जगमाहीं *लघुविशाल नहिं वरणिसिराहीं॥
वन सागर सब नदी तलावा * हिमगिरिसबकहँनेवतपठावा ॥
कामरूप सुन्दर तनुधारी * सहितसमाज सहित नरनारी॥
गे सब तुरत हिमाचल गेहा * गावहिं मंगल सहित सनेहा ॥
प्रथमहिं गिरि बहु गृहसँवराये * यथायोग्य जहँ तहँ सब छाये॥
पुरशोभा अवलोकि सुहाई * लागै लघु विरंचि निपुणाई ॥
छन्द–लघुलागविधिकीनिपुणता अवलोकिपुरशोभासही ।
वन बाग कूप तडाग सरिता सुभगता सक को कही ॥
मंगल विपुल तोरण पताका केतु गृह गृह सोहहीं ।
वनिता पुरुष सुन्दर चतुर छबि देखि मुनिमन मोहहीं ॥८॥
दोहा–जगदम्बा जहँ अवतरी, सो पुर वरणि न जाइ ॥
ऋद्धि सिद्धि सम्पति सकल, नित नूतन अधिकाइ॥१०४॥
नगर निकट बरात जब आई * पुर शोभा खरभर अधिकाई ॥
करिबनाव सजि बाहननाना * चले लेन सादर अगवाना ॥
हिय हरषे सुरसेन निहारी * हरिहिदेखि अति भयेसुखारी ॥
शिव समाज जब देखनलागे * बिडरि चले वाहन सब भागे ॥
धरि धीरज तहँ रहे सयाने * बालक सब ले जीव पराने ॥
गये भवन पूँछहिं पितु माता *कहहिं वचन भयकंपित गाता ॥

१ रुधिर । २ गर्दभ । ३ विवाहमंडप । ४ करतूति । ५ तितिरबितिर । ६ गृह । ७ बदन ।

कहियकहा कहिजाइ न बाता * यमकैधार किधौं बरियाता ॥
वर बौराह वरद असवारा * व्याल कपाल विभूषण छारा ॥
छन्द—तनु छार व्याल कपाल भूषण नगन जटिल भयंकरा ।
सँग भूत प्रेत पिशाच योगिनि विकट मुख रजनीचरा॥
जो जियत रहहि बरात देखत पुण्यबड तिनकर सही ।
देखहि सो उमा विवाह घर घर बात अस लरिकनकही॥९॥
दोहा—समुझि महेश समाज सब, जननि जनक मुसकाहिं ॥
बाल बुझाये विविध विधि, निडर होउ डर नाहिं ॥ १०५ ॥
लै अगवान बरातहि आये * दिये सबहि जनवास सुहाये ॥
मयना शुभ आरती सँवारी * संग सुमंगल गावहिं नारी ॥
कंचनथार सोह वर पानी * परिछन चलीं हरहि हरषानी ॥
विकट भेष जब रुद्रहि देखा * अबलन उर भय भयउविशेषा॥
भागि भवन पैठीं अतित्रासा * गये महेश जहाँ जनवासा ॥
मयना हृदय भयो दुखभारी * लीन्ही बोलि गिरीशकुमारी ॥
अधिक सनेह गोद बैठारी * श्याम सरोज नयन भरिवारी॥
जेहिविधि तुमहिंरूपअसदीना * तेइँ जड़ वर बाउर कस कीन्हा॥
छन्द—कसकीन्ह वर बौराह विधि जेइँ तुमहिं सुन्दरतादई ।
जो फल चहिय सुरतरुहि सो वरवश बबूरहि लागई ॥
तुम सहित गिरितें गिरौं पावक जरौं जलनिधि महँ परौं ।
घरजाउ अपयशहोउ जग जीवत विवाह नहींकरौं ॥१०॥
दोहा—भईं विकल अबला सकल, दुखित देखि गिरिनारि ॥
करि विलाप रोदति वदति, सुता सनेह सँभारि ॥ १०६ ॥
नारदकर मैं कहा विगारा * भवन मोरजिनबसत उजारा ॥
अस उपदेश उमहिं जिन दीन्हा* बौरे बरहि लागि तपकीन्हा ॥
साँचेहु उनके मोह न माया * उदासीन धन धाम नजाया ॥
परघर घालक लाज न भीरा * बाँझकि जान प्रसवकी पीरा ॥

१ माता । २ पिता । ३ पार्वतीकीमाता । ४ कल्पवृक्ष । ५ समुद्र । ६ स्त्री । ७ मयना । ८ स्त्री ।

जननिहि विकल बिलोकि भवानी * बोलीं युतविवेक मृदुवानी ॥
असंविचारि शोचहु मतिमाता * सो नटरै जो रचेउ विधाता ॥
कर्म्म लिखा जो बावरनाहू * तो कत दोष लगाइय काहू ॥
तुमसननमिटहिं कि विधिके अंका * मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका॥

छंद–जनि लेहु मातु कलंक करुणा परिहरहु अवसर नहीं ।
दुख सुख जो लिखा लिलार हमरे जाब जहँ पाउब तहीं ॥
सुनि उमा वचन विनीत कोमल सकल अबला शोचहीं ।
बहु भाँति विधिहि लगाइ दूषण नयन वारि विमोचहीं॥ ११ ॥

दोहा–तेहि अवसर नारद ऋषय, औ ऋषि सप्त समेत ॥
समाचार सुनि तुहिनगिरि, गमने तुरत निकेत ॥ १०७ ॥

तब नारद सबही समुझावा * पूरबकथा प्रसंग सुनावा ॥
मयना सत्य सुनहु ममवानी * जगदम्बा तव सुता भवानी ॥
अजा अनादि शक्ति अविनाशिनि * सदाशंभुअर्द्धंग निवासिनि ॥
जगसंभव पालन लयकारिणि *निज इच्छा लीला वपु धारिणि॥
जनमी प्रथम दक्ष गृह जाई * नाम सती सुन्दर तनु पाई ॥
तहउँ सती शंकरहि विवाहीं *कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं॥
एकबार आवत शिव संगा * देखेउ रघुकुल कमल पतंगा॥
भयउ मोह शिव कहा न कीन्हा *भ्रम वश वेष सीयकर लीन्हा ॥

छंद–सिय वेष सती जो कीन्ह तेहि अपराध शंकर परिहरी ।
हर विरह जाइ बहोरि पितुके यज्ञ योगानल जरी ॥
अब जनमि तुम्हरे भवन निजपति लागि दारुण तप किया ।
असजानि संशय तजहु गिरिजा सर्वदा शंकरप्रिया ॥ १२ ॥

दोहा–सुनि नारदके वचन तब, सबकर मिटा विषाद ॥
क्षण मह व्यापेउ सकल पुर, घर घर यह संवाद ॥ १०८ ॥

तब मयना हिमवंत अनन्दे * पुनि पुनि पार्वती पद वन्दे ॥
नारि पुरुष शिशु युवा सयाने * नगर लोग सब अति हरषाने ॥

१ ज्ञानयुक्त कोमलवाणी । २ पर्वतकेभीतरनिवासमें । ३ अजन्मा । ४ संसारको उत्पन्न करती हैं, पालतीहैं, संहारकरतीहैं । ५ कठिन । ६ दुःख ।

लगे होन पुर मंगल गाना * सजे सबहिं हाटकघट नाना ॥
भाँति अनेक भई ज्यवनारा * सूपशास्त्र जस कछु व्यवहारा॥
सो जेवनार कि जाइ बखानी * बसहिंभवन जेहि मातुभवानी॥
सादर बोले सकल बराती * विष्णु विरंचि देव सब जाती ॥
विविध भाँति बैठी जेवनारा * लगे परोसन निपुण सुवारा ॥
नारि वृन्द सुर जेंवत जानी * लगीं देन गारी मृदुवानी ॥
छंद--गारी मधुर स्वर देहिं सुन्दरि व्यंग्य वचन सुनावहीं ।
भोजन करहिं सुर अतिविलंब विनोद सुनि सुख पावहीं ॥
जेंवत जो बढ्यो अनन्द सो मुख कोटिहू न परै कह्यो ।
अँचवाइ दीन्हें पान गमने वास जहँ जाको रह्यो ॥ १३ ॥
दोहा--बहुरि मुनिन हिमवन्त कहँ, लग्न जनाई आइ ॥
समय विलोकि विवाहकर, पठये देव बुलाइ ॥ १०९ ॥
बोलि सकल सुर सादर लीन्हें *सबहि यथोचित आसन दीन्हे॥
वेदी वेद विधान सँवारी * सुभग सुमंगल गावहिं नारी ॥
सिंहासन अति दिव्य सुहावा * जाइ न वरणि विरंचि बनावा ॥
बैठे शिव विप्रन शिरनाई *हृदय सुमिरिनिज प्रभुरघुराई॥
बहुरि मुनीशन उमा बुलाई * करि शृंगार सखी लै आई ॥
देखत रूप सकल सुर मोहैं * वरणै छवि अस जगकवि कोहैं॥
जगदम्बिका जानि भववामा *सुरन मनहिमन कीन्हप्रणामा॥
सुन्दरता मर्य्याद भवानी * जाइ न कोटिहु बदन बखानी॥
छंद--कोटिहु बदन नहिं बनै वर्णत जगजननिशोभामहा ।
सकुचहिंकहत श्रुति शेष शारद मंदमति तुलसीकहा ॥
छविखानि मातु भवानि गमनी मध्य मंडपशिवजहाँ ।
अवलोकिसकहिं न सकुचि पतिपदकमलमनमधुकरतहाँ१४
दोहा--मुनि अनुशासन गणपतिहिं, पूजे शंभु भवानि ॥
कोउसुनि संशय करै जनि,सुर अनादि जिय जानि ॥११०॥

१ व्यंग्य अर्थात् अपने पुरुष और देवताओंकी स्त्रियोंका सम्बन्ध । २ देवता । ३ ब्रह्मा । ४ पार्वती
५ मुर्ख । ६ जगन्माता श्रीपार्वती । ७ भ्रमर । ८ आज्ञा ।

जस विवाहंकी विधि श्रुति गाई * महा मुनिन सो सब करवाई ॥
गहिं गिरीश कुश कन्या पानी * शिवहि समर्पी जानि भवानी ॥
पाणिग्रहण जब कीन्ह महेशा * हिय हर्षे तब सकल सुरेशा ॥
वेदमंत्र मुनिवर उच्चरहीं * जय जय जय शंकर सुरकरहीं ॥
बाजहिं बाजन विविधविधाना * सुमनवृष्टि नभभै विधिनाना ॥
हर गिरिजा कर भयउ विवाहू * सकल भुवन[२] भरि रहा उछाहू[३] ॥
दासी दास तुरँग[४] रथ नागा[५] * धेनु[६] बसन मणि वस्तुविभागा ॥
अन्न कनक भाजन भरियाना * दाइज दीन्ह नजाइ बखाना ॥

छंद–दाइजदियोबहुभाँति पुनि करजोरि हिमभूधर कह्यो ।
कादेउँ पूरण काम शंकर चरण पंकज गहिरह्यो ॥
शिव कृपासागर श्वशुरकरपरितोषसबभाँतिनकियो ।
पुनि गहेउ पद पाथोज मयना प्रेम परि-पूरण हियो ॥१५॥

दोहा–नाथ उमा ममप्राण सम, गृह किंकरी करेहु ॥
क्षमहु सकल अपराध अब, होइ प्रसन्न बरदेहु ॥ १११ ॥

बहुविधि शंभु सासु समुझाई * गमनी भवन चरण शिरनाई ॥
जननी उमा बोलि तब लीन्ही * लै उँछंग[७] सुन्दर शिखदीन्ही ॥
करेहु सदा शंकर पद पूजा * नारि धर्म्म पतिदेव न दूजा ॥
वचन कहति भरिलोचनवारी * बहुरि लाइ उरलीन्ह कुमारी ॥
कत विधिसिरजिनारि जगमाहीं * पराधीन स्वप्नेहु सुख नाहीं ॥
भै अति प्रेम विकल महतारी[८] * धीरजकीन्हकुसमयाविचारी ॥
पुनिपुनिमिलतिपरातिगहिचरणा * परम प्रेम कछु जाइ न वरणा ॥
सब नारिन मिलि भेंटि भवानी * जाइ जननि उर पुनिलपटानी ॥

छन्द–जननिहिं बहुरि मिलि चलीं उचित अशीश सबकाहूदई ।
फिरि फिरि विलोकति मातुतन तब सखीलै शिवपहँ गई ॥
याचक[९] सकल सन्तोष शंकर उमा सह भवनहिं चले ।
सब अमर[१०] हर्षे सुमन वर्षे निशान[११] नभ बाजहिं भले ॥१६॥

१ वेद । २ चौदह लोक । ३ आनंद । ४ घोडे । ५ हाथी । ६ गौ । ७ गोद
८ माता । ९ भिक्षुक । १० देवता । ११ नगाड़ा ।

दोहा—चले संग हिमवन्त तब, पहुँचावन अति हेतु ॥
विविध भाँति परितोष करि, बिदा कीन्ह वृषकेतु ॥११२॥
तुरत भवन आयो गिरिराई * सकल शैल सर लिये बुलाई ॥
आदर दान विनय बहु माना * सबकहँबिदा कीन्ह हिमवाना ॥
जबहिं शम्भु कैलासहिआये * सुरसब निजनिजधामसिधाये॥
जगतमातु पितु शम्भुभवानी * तेहि शृंगार न कहा बखानी ॥
करहिंविविधविधिभोगविलासा * गणनसमेत वसहिं कैलासा ॥
हर गिरिजा विहार नितनयऊ *इहिविधिविपुलकालचलिगयऊ॥
तब जन्मे षट्वदनकुमारा * तारक असुर समरजिनमारा ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना * षण्मुख जन्म कर्म जगजाना ॥
छंद--जगजान षण्मुख जन्म कर्म प्रताप पुरुषारथ महा ।
तेहि हेतु मैं वृषकेतु सुतकर चरित संक्षेपहि कहा ॥
यह उमा शम्भु विवाह जे नर नारि सुनहिं जे गावहीं ।
कल्याण काज विवाह मंगल सर्वदा सुख पावहीं ॥ १७ ॥
दोहा--चरित सिन्धु गिरिजा रमण, वेद न पावहिं पार ॥
वरणै तुलसीदास किमि, अति मतिमन्द गँवार ॥ ११३ ॥
शम्भुचरित सुनि सरससुहावा * भरद्वाज मुनि अतिसुखपावा ॥
बहु लालसा कथा पर बाढी * नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी ॥
प्रेम विवश मुख आव न बानी * दशा देखि हरषे मुनिज्ञानी ॥
अहो धन्य तब जन्म मुनीशा * तुमहिं प्राणसम प्रिय गौरीशा ॥
शिवपदकमल जिनहिंरतिनाहीं * रामहिं ते स्वप्नेहु न सुहाहीं ॥
विनु छल विश्वनाथ पद नेहू * राम भक्त कर लक्षण येहू ॥
शिव सम को रघुपति व्रतधारी*बिनु अघ तजी सतीअसिनारी॥
प्रण करि रघुपति भक्ति दृढ़ाई * कोशिवसमरामहिंप्रियभाई ॥
दोहा—प्रथम कहेउँ मैं शिवचरित, बूझा मर्म्म तुम्हार ॥
शुचि सेवक तुम रामके, रहित समस्त विकार ॥ ११४ ॥

१ समाधान । २ गृह । कार्त्तिकेय । ४ प्रीति । ५ भेद

मैं जाना तुम्हार गुण शीला * कहौं सुनहु अब रघुपतिलीला॥
सुनु मुनि आजु समागमतोरे * कहि न जाइजससुख मनमोरे॥
रामचरित अतिअमित मुनीशा*कहिनसकहिंशतकोटिअहीशा॥
तदपि यथा श्रुति कहौं बखानी * सुमिरिगिरापतिप्रभुधनुपानी ॥
शारद दारु नारि सम स्वामी * रामसूत्र धर अन्तर्यामि ॥
जिहिपर कृपा करहिं जनजानी * कबिवर अजिर[1] नचावहिंवानी॥
प्रणवउँ सोइ कृपालु रघुनाथा * वरणौं विशद[2] जासु गुणगाथा ॥
परमरम्य[3] गिरिवर[4] कैलासू * सदा जहाँ शिव उमा निवासू ॥
दोहा–सिद्ध तपोधन योगिजन, सुर किन्नर मुनि वृन्द[5] ॥
वसहिं तहाँ सुकृती सकल, सेवहिं शिव सुखकन्द ॥११५॥
हरि हर विमुख धर्मरत नाहीं * ते नर तहाँ न स्वप्नेहुँ जाहीं ॥
तेहि गिरिपर बट[6] विटपविशाला* नित नूतन[7] सुन्दर सब काला॥
त्रिविध समीर सुशीतलछाया * शिव विश्राम विटप श्रुतिगाया॥
एक बार तेहितर प्रभु गयऊ *तरुविलोकिउरअतिसुखभयऊ॥
निज कर डासि नागरिपु छाला[8]* बैठे सहजहिं शम्भु कृपाला ॥
कुन्द इन्दु दर गौर शरीरा *भुज प्रलम्ब[9] परिधन[10] मुनिचीरा॥
तरुण अरुण अंबुज[11]सम चरणा* नखद्युति[12]भक्तहृदयतम[13]हरणा ॥
भुजंग[14] भूति भूषण त्रिपुरारी * आनन[15] शरद चन्द्र छबिहारी ॥
दोहा– जटा मुकुट सुरसरित शिर, लोचन नलिन विशाल ॥
नीलकंठलावण्य निधि, सोह बाल विधुभाल ॥ ११६ ॥
बैठे सोह काम रिपु कैसे * धरे शरीर शान्तरस जैसे ॥
पार्व्वती भल अवसर जानी * गईं शम्भु पहँ मातु भवानी ॥
जानि प्रिया आदरअतिकीन्हा * वाम भाग आसन हर दीन्हा ॥
बैठीं शिव समीप हरषाईं *पूरब जन्म कथा चित आईं ॥
पति हिय हेतु अधिक अनुमानी* विहँसि उमा बोलीं प्रिय बानी ॥
कथा जो सकल लोकहितकारी * सो पूंछन चह शैलकुमारी ॥

१ हृदयरूपीआँगन । २ उज्वल । ३ मनोहर । ४ पर्व्वत । ५ निकाय–झुंड । ६ बरगदका वृक्ष । ७ नितनया । ८ व्याघ्रांबर । ९ विशाल–लंबे । १० पहिरे । ११ कमल । १२ प्रकाश । १३ अंधकार । १४ सर्प । १५ मुख ।

विश्वनाथ ममनाथ पुरारी * त्रिभुवनमहिमाविदिततुम्हारी।
चर अरु अचर नाग नर देवा * सकल करहिं पदपंकज सेवा ॥
दोहा-प्रभु समर्थ सर्वज्ञ शिव, सकल कला गुणधाम ॥
योग ज्ञान वैराग्य निधि, प्रणत कल्पतरु नाम ॥ ११७ ॥
जो मोपर प्रसन्न सुखराशी * जानियसत्य मोहिं निजदासी॥
तौप्रभु हरहु मोर अज्ञाना * कहिरघुनाथ कथा विधिनाना ॥
जासु भवन सुरतरु तर होई * सहकि दरिद्रजनित दुख सोई॥
शशि भूषण अस हृदयविचारी * हरहुनाथममम्मति भ्रम भारी ॥
प्रभु जे मुनि परमारथवादी * कहहिं रामकहँ ब्रह्म अनादी ॥

---

* गाना, बजाना, नाचना, नाटककरना, चित्रादिलिखना, हीरेकोवेधना, चावल पुष्पादिका रंग निकालना, फूलबिछाना, दांत वस्त्र और अंगोंकारंगना, मणियोंकी पृथ्वी रचना, शयन रचना, जलतरंग बजाना, जंलताडनकरबजाना, चित्रउतारना, मालागूँथना, मुकुटआदिबनाना, नेपथ्यरचना, कानमेंभूषणधारण, पुष्पोंकीगन्धका तेलबनाना, भूषणयोजन, इन्द्रजाल, बहुरूपियापनरूपभरना, पटागदाका खेलना, रसोई बनाना, पीनेकेपदार्थ शर्बतआदि बनाना, सीना वा लक्ष्यभेद करना, सूत्रक्रीडा, वीणाडमरूबजाना, कहानीकहना, दूसरेकीबोलीबनाकर बोलना, छलकरना, पुस्तकबाँचना, नाटकआख्यायिकादेखना, काव्य चातुरी समस्यापूर्त्ति, निवारडोरी आदिसेबुनना, तर्ककर्म, बढईकाकार्य, थवईकाकार्य, रत्नपरीक्षा, स्वर्णकारक कार्यजानना, मणियोंकेरूपकाज्ञान, वृक्षोंकीचिकित्सा, मेषकुक्कुटादिककायुद्धकराना, तोतेमैनाकाप्रलाप, वैरीकातिरस्कार, केशधोना, मुट्ठीमेंकीवस्तुबतादेना, म्लेच्छोंकी भाषा और यंत्रका जानना, देषभाषाकाज्ञान, फूलोंके वाहनादिबनाना, कठपुतरी नचाना, धारण और वाणीमें प्रवीणता, दूसरेके चित्तकीबातजाननी वा मनमें काव्य निर्माण करना, अभिधानकोषजानना, छन्दकाज्ञान, अनेकउपायोंसेकार्यकीसिद्धि करना, छलकेयोग, वस्त्रछिपाना, द्यूतविधान, आकार्षणक्रीडा, बालकोंकेखेलजानना विनयसेराजादिकोंकोप्रसन्नकरना, विजयकाविचार वा देवताओंको वशकरना, पुराण इतिहासका ज्ञानहोना यह ६४ चौसठ कलाहैं ।

× गुण यहहैं-सत्यबोलना, शुद्धरहना, परायादुःखसहना, क्रोध जीतना, याचककोदानदेना, संतुष्ट रहना, कुटिलताकात्याग, मनमेंनिश्चलता, बाह्येन्द्रियोंको वशीभूतकरना, स्वधर्ममेंआरूढ, शत्रुमित्रपरसमानदृष्टि, अपराधसहना, लाभमें उदासीनता, सच्छास्त्रकाविचार, परमेश्वरकोमानना, तृष्णाकात्याग, आस्तिकता, संग्राममें उत्साह, प्रभावरखना चतुरता, कर्तव्यका स्मरण, स्वाधीनता, क्रियामें निपुणता, सुन्दरता, धैर्यता, कोमलचित्तरखना, बुद्धिका प्रकाश, विजयना, सुन्दर स्वभावहोना सहनशक्ति, पराक्रम, देहमेंबलहोना, सबभोगभोगना, गंभीररहना, चंचलताकात्याग, श्रद्धा यशका कार्यकरना, बड़ाईकेकार्य, अभिमानकात्याग यह ३९ गुणहैं ।

गिरिजा सुनहु रामकरि लीला * सुरहितदनुज विमोहन शीला॥
दोहा—रामकथा सुरधेनु सम, सेवत सब सुखदानि ॥
सन्तसभा सुरलोक सम, को न सुनै असजानि ॥ १२३ ॥
रामकथा सुन्दर करतारी * संशय विहँग उड़ावनहारी ॥
रामकथा कलिविटप कुठारी *सादर सुन गिरिराज कुमारी ॥
रामनाम गुण चरित सुहाये *जन्म कर्म अगणित श्रुतिगाये॥
यथा अनन्त राम भगवाना * तथा कथा कीरति गुणनाना ॥
तदपि यथाश्रुति जसमतिमोरी* कहिहौंदेखिप्रीति अति तोरी ॥
उमा प्रश्न तव सहज सुहाई * सुखदसन्त सम्मत मुहिं भाई॥
एक बात नहिं मोहिं सुहानी * यदपि मोहवश कहेउ भवानी॥
तुम जो कहा राम कोउ आना *जेहिश्रुतिगावधरहिंमुनिध्याना॥
दोहा—कहहिं सुनहिं अस अधम नर, ग्रसे जो मोह पिशाच ॥
पाखण्डी हरिपद विमुख, जानहिं झूंठ न साँच ॥ १२४ ॥
अज्ञ² अकोविद³ अन्ध अभागी * काई विषय मुकुर⁴ मनलागी ॥
लम्पट⁵ कपटी⁶ कुटिल⁷ विशेषी * स्वप्नेहु सन्तसभा नहिं देखी ॥
कहहिं ते वेद असम्मत वानी *जिनहिं न सूझ लाभ नहिं हानी॥
मुकुर मलिन अरु नयनविहीना * रामरूप देखहिं किमि दीना ॥
जिनके अगुण न सगुण विवेका * जल्पहिंकल्पितवचनअनेका ॥
हरि मायावश जगत भ्रमाहीं *तिनहिंकहतकछुअघटितनाहीं॥
वातुल भूत विवश मतवारे * ते नहिं बोलहिं वचन सँभारे ॥
जिनकृत महामोह मदपाना * तिनकरकहाकरिय नहिंकाना ॥
सो०—असनिज हृदय विचारि, तजि संशय भज रामपद ॥
सुन गिरिराज कुमारि, भ्रमतमरविकरवचनमम ॥ १६ ॥
सगुणहिंअगुणहिंनहिंकछुभेदा * गावहिं मुनि पुराण बुध वेदा ॥
अगुण अरूप अलख अज जोई * भक्त प्रेम वश सगुण सो होई ॥
जो गुण रहित सगुण सो कैसे *जल हिम उपल विलगनहिंजैसे॥

१. संशयरूपीपक्षी । २ अज्ञान । ३ मूर्ख । ४ दर्पण । ५ परधन परदारामें लीन । ६ कहतेहैं आन करतेहैं आन ।
७ विशेषकरके सबप्रकार टेढे हैं । ८ निर्गुणब्रह्मका विचार ।

जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा *तिहिंकिमिकहियविमोहप्रसंगा॥
राम सच्चिदानन्द दिनेशा *नहिं तहँ मोह निशा लवलेशा॥
सहजप्रकाश रूप भगवाना *नहिं तहँ पुनि विज्ञान विहाना ॥
हर्ष विषाद ज्ञान अज्ञाना *जीव धर्म अहमिति अभिमाना॥
रामब्रह्म व्यापक जगजाना * परमानन्दपरेश पुराना ॥
दोहा--पुरुष प्रसिद्ध प्रकाशनिधि, प्रगट परावर नाथ ॥
रघुकुल मणि मम स्वामि सोइ, कहि शिव नायउ माथ१२५
निजभ्रमनहिंसमुझहिं अज्ञानी * प्रभु पर मोह धरहिं जडप्रानी ॥
यथा गगन घन पटल निहारी *झंपेउ भानु कहैं कुविचारी ॥
चितवतलोचन अंगुलि लाये * प्रकट युगल शशि तेहिके भाये॥
उमा राम विषयक अस मोहा * नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा॥
विषय[1] करण[2] सुर जीव समेता * सकल एकते एक सचेता ॥
सबकर परम प्रकाशक जोई * राम अनादि अवधपति सोई ॥
जगतप्रकाश्य प्रकाशक रामू * मायाधीश ज्ञान गुण धामू ॥
जासु सत्यताते जड़ माया * भास सत्य इव मोह सहाया ॥
दोहा--रजत सीप महँ भास जिमि, यथा भानु कर वारि ॥
यदपि मृषा तिहुँकाल सोइ, भ्रम न सकै कोउ टारि॥१२६॥
इहिविधि जग हरि आश्रितरहई*यदपि असत्य देत दुख अहई ॥
ज्यों स्वप्ने शिर काटै कोई * विनुजागे दुख दूरि न होई॥
जासु कृपा असभ्रम मिटिजाई * गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई ॥
आदि अन्त कोउ जासु न पावा*मति अनुमाननिगमअसगावा॥
पदविनु चलै सुनै विनु काना *कर विनु कर्म करै विधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी* विनु वाणी वक्ता बड़ योगी ॥
तनु विनु परश नयन विनु देखा *ग्रहैघ्राण विनु वास अशेखा ॥
अससबभाँतिअलौकिककरणी * महिमाजासु जाय नहिं वरणी ॥

१ शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, ये पांच ज्ञानेंद्रियोंके विषयहैं। २ करणकही इंद्रिय श्रवण, त्वक् नयन, जीभ, नासिका ये ज्ञानेन्द्रिय। पग, गुदा, मुख, हाथ, लिंग ये कर्मेन्द्रिय।

दोहा-जेहि इमि गावहिं वेद बुध, जाहि धरहिं मुनि ध्यान ॥
सोइ दशरथ सुतभक्तहित, कोशलपति भगवान ॥ १२७ ॥
काशी मरत जन्तु अवलोकी * जासु नाम बल करौं विशोकी ॥
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी * रघुबर सब उर अन्तर्यामी ॥
विवशहु जासु नाम नर कहहीं * जन्मविपुलसंचितअघदहहीं ॥
सादर सुमिरण जो नर करहीं * भववारिधि गोपद इव तरहीं ॥
रामसो परमात्मा भवानी * तहँभ्रमअतिअविहिततववानी ॥
अस संशय आनत उर माहीं * ज्ञान विराग सकल गुण जाहीं ॥
सुनि शिवके भ्रमभंजनवचना * मिटिगइ सबकुतर्ककीरचना ॥
भइ रघुपति पद प्रीतिप्रतीती * दारुण असम्भावना बीती ॥
दोहा-पुनि पुनि प्रभुपद कमल गहि, जोरि पंकरुह पानि ॥
बोलीं गिरिजा वचन वर, मनहुँ प्रेमरस सांनि ॥ १२८ ॥
शशिकरसमसुनिगिरातुम्हारी * मिटा मोह शरदातप भारी ॥
तुम कृपालु सब संशय हरेऊ * रामस्वरूपजानि मोहिं परेऊ ॥
नाथ कृपा अब गयउ विषादा * सुखी भइउँ प्रभुचरणप्रसादा ॥
अब मोहिं आपनिकिंकरिजानी * यदपिसहजजड नारिअयानी ॥
प्रथम जो मैं पूछा सो कहहू * जो मोपर प्रसन्न प्रभु अहहू ॥
रामब्रह्म चिन्मय अविनाशी * सर्वरहित सब उर पुर वासी ॥
नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू * मोहिं समुझाइकहहु वृषकेतू ॥
उमा वचन सुनि परम विनीता * रामकथापर प्रीति पुनीता ॥
दोहा-हिय हर्षे कामारि तब, शंकर सहज सुजान ॥
बहुविधि उमहिं प्रशंसि पुनि, बोले कृपानिधान ॥१२९॥
सो०-सुनु शुभ कथा भवानि, रामचरित मानस विमल ॥
कहा भुशुण्डि बखानि, सुना विहँगनायक गरुड॥ १७॥
सोइ सम्बाद उदार, जेहि विधिभा आगे कहब ॥
सुनहु राम अवतार, चरित परम सुन्दर अनघ ॥१८॥

१ संसारसागरको। २ अशास्त्र। ३ जो अपरपदार्थकी भावना करना। ४ शोच। ५ सच्चिदानंद।

हरिगुण नाम अपार, कथा रूप अगणित अमित ॥
मैं निजमति असुसार, कहौं उमा सादर सुनहु ॥ १९ ॥
सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाये * विपुलविशदनिगमागममगाये ॥
हरि अवतार हेतु जेहि होई * इदमित्थं कहि जाइ नसोई ॥
राम अतर्क बुद्धि मन बानी * मतहमारअस सुनहुभवानी ॥
तदपि सन्त मुनि वेद पुराना * जसकछुकहहिंस्वमतिअनुमाना
तस मैं सुमुखि सुनावौं तोहीं * समुझि परै जस कारण मोहीं ॥
जब जब होइ धर्मकी हानी * बाढहिं असुरअधमअभिमानी ॥
करहिं अनीति जाइनहिं बरणी * सीदहिं विप्र धेनु सुर धरणी ॥
तब तब प्रभु धरि विविधशरीरा * हरहिं कृपानिधि सज्जनपीरा ॥
दोहा--असुर मारि थापहिं सुरन, राखहिं निज श्रुति सेतु ॥
जगविस्तारहिं विशद यश, रामजन्म कर हेतु ॥ १३० ॥
सोइ यश गाइ भक्त भवतरहीं * कृपासिन्धुजनहित तनुधरहीं ॥
राम जन्मके हेतु अनेका * परमविचित्र एकते एका ॥
जन्म एक दुइ कहौं बखानी * सावधान सुनु सुमति भवानी ॥
द्वारपाल हरिके प्रिय दोऊ * जयअरुविजयजानसब कोऊ ॥
विप्र शापते दोनों भाई * तामस असुर देह तिन पाई ॥
कनककशिपु अरुहाटकलोचन * जगतविदितसुरपतिमदमोचन ॥
विजयी समर वीर विख्याता * धरि वराह वपु एक निपाता ॥
होइ नरहरि वपु दूसर मारा * जन प्रह्लाद सुयश विस्तारा ॥
दोहा--भये निशाचर जाइते, महावीर बलवान ॥
कुम्भकर्ण रावण सुभट, सुर विजयी जगजान ॥ १३१ ॥
मुक्त न भयउ हते भगवाना * तीन जन्म द्विजवचन प्रमाना ॥
एकबार तिनके हित लागी * धरेउ शरीर भक्त अनुरागी ॥
कश्यप अदिति तहाँ पितु माता * दशरथ कौशल्या विख्याता ॥
एक कल्प यहि विधि अवतारा * चरित पवित्र किये संसारा ॥

१. निर्मल । २. वेद--पुराण । ३ इदमित्थं कही कि जो इतनेही कारण प्रभुके अवतारहैं सो नहीं कहाजाइहै क्योंकि अनेक कारण हैं । ४ पीडादेईं । ५ ब्राह्मण । ६ गौ । ७ देवता । ८ भूमि । ९ कारण । १० सुंदर । ११ इन्द्र । १२ युद्ध ।

एककल्प सुर देखि दुखारे * समरजलन्धर सन सब हारे ॥
शम्भु कीन्ह संग्राम अपारा * दनुज महाबल मरै न मारा ॥
परम सती असुराधिप नारी * तेहि बल ताहि न जीत पुरारी ॥
दोहा–छलकर टारेउ तासु व्रत, प्रभु सुर कारज कीन्ह ॥
जब तेइँ जानेउ मर्म सब, शाप कोपकर दीन्ह ॥१३२॥
तासु शाप हरि कीन्ह प्रमाना * कौतुकनिधि कृपालुभगवाना ॥
तहाँ जलंधर रावण भयऊ * रणहति राम परमपद दयऊ ॥
एकजन्म कर कारण एहा * जेहिलगि राम धरी नर देहा ॥
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी * सुनि मुनिवर्णीकविनघनेरी ॥
नारद शाप दीन्ह इकबारा * कल्प एक तेहि लगि अवतारा ॥
गिरिजा चकितभई सुनि बानी * नारद विष्णु भक्त मुनि ज्ञानी ॥
कारण कौन शाप मुनि दीन्हा * का अपराध रमापति कीन्हा ॥
यह प्रसंग मोहिं कहहु पुरारी * मुनिमन मोहसोअचरजभारी॥
दोहा–बोले विहँसि महेश तब, ज्ञानी मूढ़ न कोइ ॥
जेहि जस रघुपतिकरहिंजब,सो तस तिहि क्षण होय॥१३३॥
सो०–कहौं राम गुणगाथ, भरद्वाज सादर सुनहु ॥
भवभंजन रघुनाथ, भजु तुलसी तजि मोह मद ॥ २० ॥
हिमगिरिगुहा एक अतिपावनि * बहसमीप सुरसरित सुहावनि ॥
आश्रम परम पुनीत सुहावा * देखि देवऋषि मनअतिभावा॥
निरखिशैलसरिविपिनविभागा * भयउ रमापतिपद अनुरागा ॥
सुमिरत हरिहिंश्वासगति बांधी * सहजविमलमनलागिसमाधी॥
मुनि गति देखि सुरेश डराना * कामहि बोलि कीन्ह सन्माना ॥
सहित सहाय जाहु ममहेतू * चलेउहर्षि हिय जलचरकेतू ॥
सुनासीर मन महँ अतित्रासा * चहत देवऋषि ममपुर वासा ॥
जे कामी लोलुप जगमाहीं * कुटिलकाक इव सबहिं डराहीं॥
दोहा–सूख हाड़ ले भाग शठ, श्वान निरखि मृगराज ॥
छीनि लेइ जनि जान जड, तिमिसुरपतिहि न लाज॥१३४॥

१ इन्द्र २ कामदेव । ३ इन्द्र । ४ नारदमुनि । ५ झूठे–लालची । ६ कुत्ता । ७ सिंह ।

तेहि आश्रमहिं मदन जब गयऊ * निज माया बसन्त निर्मयऊ ॥
कुसुमित विविध विटप बहुरंगा * कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा ॥
चली सुहावन त्रिविध बयारी * कामकृशानु बढ़ावन हारी ॥
रम्भादिक सुरनारि नवीना * सकल असमशरकलाप्रवीना ॥
करहिं गान बहु तानतरंगा * बहुविधि क्रीड़हिं पाणि पतंगा॥
देखि सहाय मदन हरषाना * कीन्हेसि पुनिप्रपंचविधिनाना॥
कामकलाकछु मुनिहिनव्यापी * निजभय डरेउ मनोभव पापी॥
सीमकिचापि सकै कोउ तासू * बड़ रखवार रमापति जासू ॥
दोहा-सहित सहाय सभीत अति, मानि हारि मन मैन ॥
गहेसि जाइ मुनिवर चरण, कहिसुठिआरत वैन ॥ १३५ ॥
भयउ न नारदमन कछु रोषा * कहि प्रियवचनकामपरितोषा॥
नाइचरण शिर आयसु पाई * गयउ मदन तब सहितसहाई॥
मुनि सुशीलता आपनिकरणी * सुरपतिसभा जाइ सब वरणी॥
सुनि सबके मन अचरज आवा *मुनिहिप्रशंसिहरिहिशिरनावा ॥
तब नारद गमने शिवपाहीं * जीतिकामअहमितिमनमाहीं ॥
मारचरित शंकरहि सुनावा * अतिप्रियजानिमहेशशिखावा ॥
बार बार विनवउँ मुनितोहीं * जिमियह कथासुनायउमोहीं ॥
तिमिजनिहरिहिसुनावहुकबहूँ * चलेहु प्रसंग दुरायउ तबहूँ ॥
दोहा-शम्भु कीन्ह उपदेश हित, नहिं नारदहि सुहान ॥
भरद्वाज कौतुक सुनहु, हरिइच्छा बलवान ॥ १३६ ॥
राम कीन्ह चाहै सोइ होई * करै अन्यथा अस नहिं कोई ॥
शम्भुवचन,मुनिमनहिं नभाये * तब विरंचिके लोक सिधाये ॥
"तहँपुनिकछुकदिवसमुनिराया * रहेहृदयअहमितिअधिकाया"॥
एकबार करतल कर बीणा * गावत हरि गुण गान प्रवीणा॥
क्षीरसिन्धु गमने मुनिनाथा *जहँ बसिश्रीनिवासश्रुतिमाथा॥
हर्षि मिले उठि रमानिकेता * बैठे आसन ऋषिहि समेता ॥

१ प्रफुल्लित । २ वृक्ष । ३ भ्रमर । ४ शीतल-मन्द-सुगन्ध । ५ कामाग्नि । ६ काम । ७ दुःखित । ८ आज्ञा ।
९ गर्व । १० ब्रह्मलोक ।

बोले बिहँसि चराचर राया * बहुत दिनन कीन्हीं मुनि दाया॥
काम¹चरित नारद सब भाषे * यद्यपिप्रथम बरजि शिव राखे॥
अति प्रचण्ड¹ रघुपतिकी माया * जेहि नमोह असको जगजाया॥
दोहा-रूख वदन करि वचन मृदु, बोले श्रीभगवान॥
तुम्हरे सुमिरणते मिटहिं, मोह मार मद मान॥१३७॥
सुनु मुनि मोह होइ मन ताके * ज्ञान विरागहृदय नहिं जाके॥
ब्रह्मचर्य व्रत रति मतिधीरा * तुमहिं कि करै मनोभव पीरा॥
नारद कहेउ सहित अभिमाना * कृपा तुम्हारि सकल भगवाना॥
करुणानिधि²मन दीख बिचारी * उरअंकुरेउ गर्व³ तरु भारी॥
वेगि सो मैं डारिहौं उपारी * प्रण हमार सेवक हितकारी॥
मुनिकरहित मम कौतुक होई * अवशि उपाय करब मैं सोई॥
तब नारद हरिपद शिरनाई * चलेहृदय अहंमिति अधिकाई॥
श्रीपति निज माया तब प्रेरी * सुनहु कठिन करणी तेहि केरी॥
दोहा-विरचेउ मगमहँ नगर तेहि, शतयोजन विस्तार॥
श्रीनिवासपुरते अधिक, रचना विविधप्रकार॥१३८॥
बसहिं नगर सुन्दर नर नारी * जनु बहुमनसिज⁴रति⁵ तनुधारी॥
तेहि पुर बसै शीलनिधि राजा * अगणित हय⁶ गज सेन समाजा॥
शतसुरेश⁷सम विभव⁸ विलासा * रूप तेज बल नीति निवासा॥
विश्वमोहिनी तासु कुमारी * श्रीविमोह जेहि रूप निहारी॥
सो हरिमाया सब गुणखानी * शोभा तासु कि जाइ बखानी॥
करै स्वयम्वर सो नृपबाला * आये तहँ अगणित महिपाला॥
मुनि कौतुकी नगर तेहि गयऊ * पुरवासिन सन बूझत भयऊ॥
सुनि सब चरित भूप गृह आये * करि पूजा नृप मुनिं बैठाये॥
दोहा-आनि देखाई नारदहि, भूपति राजकुमारि॥
कहहु नाथ गुण दोष सब, इहिकर हृदय विचारि॥१३९॥
देखिरूप मुनि विरति बिसारी * बडी बार लगि रहे निहारी॥

१ तीक्ष्ण। २ दयासागर। ३ अभिमान। ४ कामदेव। ५ कामदेवकी स्त्री। ६ अश्व। ७ सौइंद्र। ८ ऐश्वर्य।

लक्षण तासु विलोकि भुलाने * हृदय हर्ष नहिं प्रगट बखाने ॥
जो इहि बरै अमर सो होई * समरभूमि तेहि जीत नकोई ॥
सेवहिं सकल चराचर ताही * बरै शीलनिधि कन्या जाही ॥
लक्षण सब विचारि उर राखे * कछुक बनाइ भूपसन भाखे ॥
सुता सुलक्षणि कहि नृपपाहीं * नारद चले शोच मन माहीं ॥
करौ जाइ सोइ यत्न विचारी * जेहिप्रकार मोहिं बरै कुमारी ॥
जप तप कछु नहोइ यहिकाला * हेविधिमिलै कवन विधि बाला ॥

दोहा-इहि अवसर चाहिय परम, शोभा रूप बिशाल ॥
जो बिलोकि रीझै कुँवरि, तौ मेलै जयमाल ॥ १४० ॥

हरिसन माँगौ सुन्दरताई * होइहि जात गहरु अति भाई ॥
मोरे हित हरि सम नहिं कोऊ * इहि अवसर सहाय सो होऊ ॥
बहुविधिविनयकीन्हतेहिकाला *प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला ॥
प्रभुविलोकि मुनिनयनजुड़ाने * होइहि काज हिये हरषाने ॥
अति आरत कहि कथा सुनाई * करहु कृपा प्रभु होउ सहाई ॥
आपन रूप देव प्रभु मोही * आनभाँति नहिं पावहुँ ओही ॥
जेहिविधि नाथ होइ हितमोरा * करौ सो वेगि दास मैं तोरा ॥
निज मायाबल देखि बिशाला * हिय हँसि बोले दीनदयाला ॥

दोहा-जेहि विधि होइहि परमहित, नारद सुनहु तुम्हार ॥
सोइ हम करब न आन कछु, वचन न मृषा हमार ॥१४१॥

कुपथ माँगु रुज व्याकुल रोगी * वैद्य न देइ सुनहु मुनि योगी ॥
यहिविधिहित तुम्हार मै ठयऊ * कहिअसअन्तरहितप्रभुभयऊ॥
माया विवश भये मुनि मूढा * समुझी नहिं हरिगिरानिगूढा ॥
गमने तुरत तहाँ ऋषिराई * जहाँ स्वयम्वर भूमि बनाई ॥
निज निज आसन बैठे राजा * बहुबनायकरि सहितसमाजा ॥
मुनि मन हर्ष रूप अति मोरे *मोहितजिआनबरिहिनहिंभोरे॥

१ मृत्युतेरहित। २ संग्राममें। ३ स्थावर, जंगम। ४ विलम्ब। ५ कृपाके स्थान।
६ आंखें। ७ असत्य। ८ रोग। ९ बाणी।

मुनिहित कारण कृपानिधाना * दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना ॥
सो चरित्र लखि काहु न पावा * नारद जानि सबन शिरनावा ॥
दोहा-रहे तहाँ दुइ रुद्रगण, ते जानहिं सब भेउ ॥
विप्र वेष देखत फिरहिं, परमकौतुकी तेउ ॥ १४२ ॥
जेहि समाज बैठे मुनि जाई * हृदय रूपअहमिति अधिकाई॥
तहँ बैठे महेश गण दोऊ * विप्रवेष गति लखै न कोऊ ॥
करहिं कूट नारदहि सुनाई * नीकि दीन्ह हरि सुन्दरताई ॥
रीझिहि राजकुँवरि छवि देखी * इनहि बरिहि हरिजानि विशेखी
मुनिहि मोह मन हाथ पराये * हँसहि शंभुगण अति सचुपाये॥
यदपिसुनहिं मुनि अटपटिवानी * समुझि न परै बुद्धि भ्रमसानी ॥
काहु न लखा सोचरित विशेखी * सो स्वरूप नृप कन्या देखी ॥
मर्कट[1] वदन भयंकर देही * देखत हृदय क्रोधभा तेही ॥
दोहा-सखी संग लै कुँवरि तब, चलि जनु राज मराल[2] ॥
देखत फिरै महीप[3] सब, कर सरोज[4] जयमाल ॥ १४३ ॥
जेहि दिशि बैठे नारद फूली * सोदिशि तेहि न विलोकेउभूली
पुनिपुनिमुनिउसकहिंअकुलाहीं * देखि दशा हरगण मुसुकाहीं ॥
धरि नृपतनु तहँ गयउ कृपाला * कुँवरि हर्षि मेली जयमाला ॥
दुलहिनि लेगये लक्ष्मिनिवासा * नृपसमाज सब भयउ निरासा॥
मुनि अतिविकल मोहमतिनाठी[5] * मणि गिरिगई छूटिजनु गाँठी ॥
तब हरगण बोले मुसुकाई * निजमुखमुकुर[6]विलोकहुजाई ॥
असकहि दोउ भागे भय भारी * वदन दीख मुनि वारि[7] निहारी॥
भेष विलोकि क्रोध अति बाढ़ा * तिनहिं शाप दीन्हा अति गाढ़ा॥
दोहा-होउ निशाचर जाय तुम, कपटी पापी दोउ ॥
हँसेउ हमहिं सो लेहु फल, बहुरि हँसेहु मुनि कोउ १४४॥
पुनि जल दीख रूप निज पावा * तदपि हृदय सन्तोष न आवा॥
फरकत अधर कोप मन माहीं * सपदि[8] चले कमलापतिपाहीं ॥

१ बन्दरके सरीखा मुख । २ हंस । ३ राजा जो स्वयंवरमें आयेथे । ४ करकमल । ५ मोहने मतिहरली । ६ दर्पण । ७ पानीमें । ८ शीघ्र ।

देहौं शाप कि मरिहौं जाई * जगत मोर उपहास कराई ॥
बीचहिं पन्थ मिले दनुजारी * संग रमा सोइ राजकुमारी ॥
बोले मधुर वचनसुरसाईं * मुनिकहँ चले विकलकी नाईं ॥
सुनतबचन उपजा अतिक्रोधा * मायावश न रहा मनबोधा ॥
परसम्पदा सकहु नहिं देखी * तुम्हरे ईर्षा कपट विशेषी ॥
मथत सिन्धु रुद्रहि बौरायहु * सुरन प्रेरि विष पान करायहु॥
दोहा–असुर सुरा विष शंकरहिं, आपु रमा मणि चारु ॥
स्वारथ साधक कुटिल तुम, सदा कपट व्यवहारु ॥ १४५॥
परम स्वतंत्र न शिरपर कोई * भावै मनहि करहु तुम सोई ॥
भलेहिं मन्द मन्दहिं भल करहू * विस्मय हर्ष नहियकछु धरहू॥
डहकि डहकि परके सब काहू * अति अशंक मन सदा उछाहू॥
कर्म्म शुभाशुभ तुमहिं न बाधा*अबलगि तुमहिं न काहू साधा॥
भले भवन अब बायन दीन्हा * पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥
वंचेहु मोहिं जवन धरि देहा* सोइ तनु धरहु शापमम येहा ॥
कपि आकृति तुम कीन्हहमारी* करिहहिं कीश सहाय तुम्हारी॥
मम अपकार कीन्ह तुम भारी * नारि विरह तुम होहु दुखारी॥
दोहा–शाप शीश धरि हर्षि हिय, प्रभु सुरकारज कीन्ह ॥
निज मायाकी प्रबलता, कर्षि कृपानिधि लीन्ह ॥ १४६ ॥
जब हरि माया दूरि निवारी * नहिं तहँ रमा न राजकुमारी ॥
तब मुनिअतिसभीतहरिचरणा * गहे पाहि प्रणतारति हरणा ॥
मृषा होहु मम शाप कृपाला * मम इच्छा कह दीनदयाला॥
मैं दुर्वचन कहेउं बहुतेरे * कह मुनि पापमिटहिं किमि मेरे
जपहु जाइ शंकर शतनामा * होइहि हृदय तुरत विश्रामा ॥
कोउ नहिं शिवसमानप्रियमोरे *असप्रतीति त्यागहु जनि भोरे॥
जेहिपर कृपा न करहिं पुरारी *सो न पाव मुनि भक्ति हमारी॥
अस उरधरि महि विचरहुजाई * अबन तुमहि माया नियराई॥

१ वारुणी– मदिरा । २ पवित्र । ३ छांट छांट । ४ आनन्द । ५ ठगेहु । ६ सकल । ७ बंदर ।
८ निरादर । ९ महादेव । १० पृथ्वी ।

दोहा-बहु विधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु, तब भये अंतर्द्धान ॥
सत्यलोक नारद चले, करत राम गुणगान ॥१४७॥
हरगण मुनिहि जात पथ देखी * विगत मोह मन हर्ष विशेषी॥
अति सभीत नारदपहँ आये * गहि पदआरत बचन सुनाये ॥
हरगण हम न विप्र मुनिराया * बड अपराध कीन्हफलपाया ॥
शाप अनुग्रह करहु कृपाला * बोले नारद दीनदयाला ॥
निशिचर जाइ होउ तुम दोऊ * वैभव विपल तेज बल होऊ ॥
भुजबलविश्वजितबतुमजाहिया * धरिहैं विष्णुमनुजतनुताहिया॥
समर मरण हरि हाथ तुम्हारा * होइहहु मुक्त न पुनिसंसारा ॥
चले युगल मुनि पद शिरनाई * भये निशाचर कालहि पाई ॥
दोहा-एककल्प इहिहेतु प्रभु, लीन्ह मनुज अवतार ॥
सुररंजन सज्जन सुखद, हरि भंजन भूभार ॥ १४८ ॥
इहि विधि जन्म कर्म हरिकेरे * सुन्दर सुखद विचित्र घनेरे ॥
कल्प कल्प प्रतिप्रभु अवतरहीं * चारु चरित नानाविधि करहीं॥
तब तब कथा मुनीशन गाई * परम विचित्र प्रबन्ध बनाई ॥
विविधप्रसंग अनूप बखाने * करहि न सुनि आश्चर्य सयाने॥
हरिअनंत हरिकथा अनंता *कहहिंसुनहिंबहुविधिश्रुतिसन्ता
रामचन्द्रके चरित सुहाये *कल्पकोटि लगि जाहिं न गाये॥
यह प्रसंग मैं कहा भवानी * हरिमाया मोहहिं मुनि ज्ञानी॥
प्रभु कौतुकी प्रणतहितकारी * सेवत सुलभ सकल दुखहारी॥
सो०-सुर नर मुनि कोउ नाहिं, जेहि न मोह माया प्रबल ॥
अस विचारि मन माहिं, भजिय महा मायापतिहि ॥२१॥
अपर हेतु सुनु शैलकुमारी * कहौं विचित्रकथा विस्तारी ॥
जेहि कारण अज अगुण अनूपा * ब्रह्म भये कोशलपुर भूपा ॥
जो प्रभुविपिन फिरत हम देखा * बन्धु समेत किये मुनिवेषा ॥
जासु चरित अवलोकि भवानी * सती शरीर रहिउ बौरानी ॥

१ राक्षस । २ संपदा-ऐश्वर्य । ३ बहुत । ४ दोनों । ५ देवतोंको आनंददाता । ६ पृथ्वीका । ७ इतिहास-कथा । ८ दीन । ९ अरण्य ।

अजहुँ न छाया मिटै तुम्हारी * तासुचरितसुनुभ्रमरुज हारी ॥
लीला कीन्ह जो तेहि अवतारा * सोसबकहिहौं मतिअनुसारा ॥
भरद्वाज सुनि शंकर बानी * सकुचि सप्रेम उमामुसकानी ॥
लगे बहुरि बरणै वृषकेतू * सो अवतार भयउ जेहिहेतू ॥
दोहा–सो मैं तुमसन कहौं सब, सुनु मुनीश मन लाइ ॥
रामकथा कलिमल हरणि, मंगल करणि सुहाइ ॥ १४९ ॥
स्वायम्भुव मनु अरु शतरूपा * जिनते भै नर सृष्टि अनूपा ॥
दम्पति धर्म्म आचरण नीका * अजहुँगावश्रुति जिनकीलीका ॥
नृप उत्तानपाद सुत जासू * ध्रुव हरिभक्त भये सुत तासू ॥
लघु सुत नाम प्रियव्रत जाही * वेद पुराण प्रशंसत ताही ॥
देवहुती पुनि तासु कुमारी * जो मुनिकर्दमकी प्रियनारी ॥
आदिदेव प्रभु दीनदयाला * जठरधरेउजेहिकपिलकृपाला ॥
सांख्यशास्त्र जिन प्रगट बखाना * तत्त्वविचारनिपुणभगवाना ॥
तेहि मनुराज कीनबहुकाला * प्रभुआयसु बहुविधिप्रतिपाला ॥
सो०–होइ न विषय विराग, भवन वसत भा चौथपन ॥
हृदय बहुत दुख लाग, जन्म गयउ हरिभक्ति बिन ॥ २२ ॥
बरबश राज्य सुतहिं तब दीन्हा * नारि समेत गमन वन कीन्हा ॥
तीरथवर नैमिष विख्याता * अति पुनीत साधक सिधिदाता
वसहिं तहाँ मुनि सिद्धसमाजा * तहँ हिय हर्षि चले मनुराजा ॥
पन्थजात सोहहिं मतिधीरा * ज्ञान भक्ति जनु धरे शरीरा ॥
पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा * हर्षि नहाने निर्म्मल नीरा ॥
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी * धर्म्मधुरन्धरऋषि मुनि जानी ॥
जहँ तहँ तीरथ रहे सुहाये * मुनिनसकल सादर करवाये ॥
कृशशरीर मुनिपट परिधाना * सन्तसभा नित सुनहिं पुराना ॥
दोहा–द्वादश अक्षर मन्त्रवर, जपहिं सहित अनुराग ॥
वासुदेवपदपंकरुह, दम्पति मन अतिलाग ॥ १५० ॥

* ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, यह मंत्रहै ।

१ महादेवजी । २ वेद । ३ पेट । ४ गोमतीनदी । ५ जल । ६ दूबर । ७ भोजपत्र । ८ चरणकमल । ९ स्त्री–पुरुष ।

करहिं अहार शाक फल कन्दा * सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानन्दा ॥
पुनि हरि हेतु करन तप लागे * बारि अहार मूल फल त्यागे ॥
उर अभिलाष निरंतर होई * देखिय नयन परम प्रिय सोई ॥
अगुण अखण्ड अनंत अनादी * जेहि चिंतहिं परमारथ वादी ॥
नेति नेति जेहि वेद निरूपा * चिदानन्द निरुपाधि अनूपा ॥
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना * उपजहिं जासु अंशते नाना ॥
ऐसे प्रभु सेवक वश अहहीं * भक्त हेतु लीला तनु गहहीं ॥
जो यह वचन सत्य श्रुतिभाषा * तौ हमार पूजहिं अभिलाषा ॥
दोहा—इहिविधि बीते वर्ष षट, सहस बारि आहार ॥
संवत सप्तसहस्र पुनि, रहे समीर अधार ॥१५१॥
वर्षसहसदश त्यागेउ सोऊ * ठाढे रहे एक पद दोऊ ॥
विधि हरि हर तप देखि अपारा * मनु समीप आये बहु बारा ॥
माँगहु वर बहुभाँति लुभाये * परमधीर नहिं चलहिं चलाये ॥
अस्थिमात्र होय रहे शरीरा * तदपि मनागपि नहिं मन पीरा ॥
प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी * गति अनन्य तापस नृप रानी ॥
मांगु मांगु वर भै नभ बानी * परम गँभीर कृपामृत सानी ॥
मृतक जिआवनि गिरा सुहाई * श्रवणरन्ध्र होइ उर जब आई ॥
हृष्ट पुष्ट तनु भयउ सुहाये * मानहुँ अबहि भवनते आये ॥
दोहा—श्रवण सुधा सम वचन सुनि, पुलकि प्रफुल्लित गात ॥
बोले मनु करि दण्डवत, प्रेम न हृदय समात ॥ १५२ ॥
सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू * विधि हरि हर वंदित पद रेनू ॥
सेवत सुलभ सकलसुखदायक * प्रणतपाल सचराचरनायक ॥
जो अनाथ हित हम पर नेहू * तौ प्रसन्न होय यह वर देहू ॥
जोस्वरूप बस शिव मनमाहीं * जेहि कारणमुनियतन कराहीं ॥
जो भुशुण्डि मनमानस हंसा * सगुणअगुणजेहिनिगमप्रशंसा ॥
देखहिं हम सो रूप भरिलोचन * कृपा करहु प्रणतारति मोचन ॥

१ जिमीकंद, सकरकंदइत्यादि । २ पानी । ३ गुणोंसेरहित । ४ जिसका खंडननहो । ५ जिसका अंतनहीं है ।
६ जिसकी उपमादूसरीनहो । ७ छःहजार । ८ वायु ।

दम्पति वचन परम प्रिय लागे * मृदुल विनीत प्रेमरस पागे ॥
भक्तवछल¹ प्रभु कृपानिधाना² * विश्ववास प्रगटे भगवाना ॥
दोहा–नील³सरोरुह नीलमणि, नील नीरधर श्याम ॥
लाजहिं तनु शोभा निरखि, कोटि कोटि शत काम १५३॥
शरदमयंक⁴ वदन छबि सींवा * चारुकपोल⁵ चिबुक⁶ दर⁷ ग्रीवा⁸ ॥
अधर अरुण रद सुन्दर नासा * विधुकरनिकरविनिन्दकहासा॥
नवअम्बुज अंबुक छबि नीकी * चितवन ललित भावतीजीकी॥
भ्रुकुटि मनोज चाप छबिहारी * तिलक ललाट पटलद्युतिकारी॥
कुण्डल मकर मुकुट शिरभ्राजा * कुटिलकेश जनु मधुपसमाजा॥
उरश्रीवत्स रुचिर वनमाला * पदिकहार भूषण मणिजाला ॥
केहरि कन्धर चारु जनेऊ * बाहु विभूषण सुन्दर तेऊ ॥
करिकरसरिससुभगभुजदण्डा⁹ *कटि निषंग कर शर कोदण्डा॥
दोहा–तडितविनिन्दक पीतपट, उदर रेख वर तीनि ॥
नाभि मनोहर लेति जनु, यमुनभँवरछबिछीनि ॥१५४॥
पदराजीव वरणि नहिं जाहीं *मुनिमनमधुपबसहिंजेहिमाहीं॥
वामभाग शोभित अनुकूला *आदिशक्तिछबिनिधिजगमूला॥
जासु अंश उपजहिं गुणखानी * अगणित उमा रमा ब्रह्मानी ॥
भ्रुकुटि विलास जासु जग होई * राम वामदिशि सीता सोई ॥
छबि समुद्र हरिरूप विलोकी * इकटक रहे नयनपट रोकी ॥
चितवहिं सादर रूप अनूपा * तृप्ति न मानहि मनु शतरूपा॥
हर्ष विवश तनु दशा भुलानी * परे दण्डइव गहि पदपानी ॥
शिरपरसे प्रभु निज कर कंजा * तुरत उठाये करुणापुंजा ॥
दोहा–बोले कृपानिधान पुनि, अति प्रसन्न मोहिंजानि ॥
माँगहु वर जोइ भाव मन, महादानि अनुमानि ॥ १५५ ॥
सुनि प्रभुवचन जोरि युगपानी * धरिधीरज बोले मृदुवानी ॥
नाथ देखि पदकमल तुम्हारे * अब पूरे सब काम हमारे ॥

१भक्तोंके रक्षक । २ कृपाके स्थान । ३ नीलकमल । ४ शरदपूनोंके चन्द्रमासमानमुख । ५ सुन्दरगाल । ६ ठोढी । ७ शंख । ८ कंठ । ९ दोनोंहाथ ।

एक लालसा बाड़ि मनमाहीं * सुगमअगमकहिजातसोनाहीं॥
तुमहि देत अतिसुगम गुसांईं * अगमलागिमोहिंनिजकृपणाई॥
यथा दरिद्र विबुधतरु जाई * बहुसम्पति माँगत सकुचाई ॥
तासु प्रभाव न जानै सोई * तथा हृदय मम संशय होई ॥
सो तुम जानहु अंतर्यामी * पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
सकुच विहाय माँगु नृप मोहीं * मोरे नाहिं अदेय कछु तोहीं ॥
दोहा–दानि शिरोमणि कृपानिधि, नाथ कहौं सतभाव ॥
चाहौं तुमहिं समान सुत, प्रभुसन कवन दुराव ॥ १५६॥
देखिप्रीति सुनि वचन अमोले * एवमस्तु करुणानिधि बोले ॥
आप सरिस खोजौं कहँ जाई * नृप तव तनय होब मैं आई ॥
शतरूपहिं विलोकि कर जोरे * देवि माँग वर जो रुचि तोरे ॥
जो वर नाथ चतुर नृपमाँगा * सोकृपालुम्वहिंअतिप्रियलागा॥
प्रभु परन्तु सुठि होत ढिठाई * यदपि भक्तहित तुमहिंसुहाई ॥
तुम ब्रह्मादि जनक जगस्वामी * ब्रह्म सकल उर अंतर्यामी ॥
अस समुझत मन संशय होई * कहा जो प्रभु प्रमाण पुनि सोई
जे निज भक्त नाथ तव अहहीं * जो सुख पावहिं सो गति लहहीं॥
दोहा–सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति, सोइ निजचरणसनेहु ॥
सोइ विवेक सोइ रहनि प्रभु, मोहिं कृपा करि देहु ॥१५७॥
सुनि मृदु गूढ रुचिर वर रचना * कृपासिन्धु बोले मृदु वचना ॥
जो कुछ रुचि तुम्हरे मन माहीं * मैं सो दीन्ह सब संशय नाहीं॥
मातु विवेक अलौकिक तोरे * कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरे॥
वन्दि चरण मनु कहेउ बहोरी * और एक विनती प्रभु मोरी ॥
सुत विषयक तव पद रति होऊ * मोहिं वरु मूढ कहै किन कोऊ॥
मणिविनुफणिजिमिजलविनमीना * ममजीवनतिमितुमहिंअधीना
अस वर माँगि चरण गहिरहेऊ * एवमस्तु करुणानिधि कहेऊ ॥
अब तुम मम अनुशासन मानी * बसहु जाइ सुरपतिरजधानी ॥

१ अभिलाष । २ दरिद्रता । ३ कल्पवृक्ष । ४ ऐश्वर्य । ५ त्याग ६ । पुत्र । ७ कोमल । ८ ज्ञान ।
९ जो लोकमें नही है । १० चरणोंमें प्रीति । ११ इन्द्रपुरी ।

सो०—तहँ करि भोग विशाल, तात गये कछु काल पुनि ॥
होइहहु अवध भुवाल, तब मैं होब तुम्हार सुत ॥ २३ ॥
इच्छामय नर वेष सँवारे * होइहौं प्रगट निकेत तुम्हारे ॥
अंशन सहित देह धरि ताता * करिहौं चरित भक्त सुखदाता ॥
जेहि सुनि सादर नर बड़भागी * भव तरिहहिं ममतामदत्यागी ॥
आदिशक्ति जेहि जगउपजाया * सोउअवतरहिमोरियहमाया ॥
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा * सत्य सत्य प्रणसत्य हमारा ॥
पुनि पुनिअसकहिकृपानिधाना * अन्तर्द्धान भये भगवाना ॥
दम्पति उरधरि भक्ति कृपाला * तेहि आश्रमनिवसेकछुकाला ॥
समय पाय तनुतजिअनयासा * जाइ कीन्ह अमरावति वासा ॥
दोहा—यह इतिहास पुनीत अति, उमहिं कहेउ वृषकेतु ॥
भरद्वाज सुन अपर पुनि, रामजन्म कर हेतु ॥ १५८ ॥
सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी * जोगिरिजाप्रति शम्भुबखानी ॥
विश्व विदित इक केकय देशू * सत्यकेतु तहँ बसै नरेशू ॥
धर्म धुरन्धर नीति निधाना * तेज प्रताप शील बलवाना ॥
तेहिके भये युगल सुत वीरा * सब गुण धाम महारणधीरा ॥
रजधानी जेठ सुत आही * नाम प्रतापभानु अस ताही ॥
अपर सुतहि अरिमर्द्दन नामा * भुजबल अतुल अचलसंग्रामा ॥
भाइहि भाइहि परम सुनीती * सकल दोष छल वर्जित प्रीती ॥
जेठे सुतहि राज्य नृप दीन्हा * हरि हित आपुगमन वन कीन्हा ॥
दोहा—जब प्रतापरवि भयउ नृप, फिरी दोहाई देश ॥
प्रजापाल अति वेद विधि, कतहुँ नहीं अघलेश ॥ १५९ ॥
नृप हितकारक सचिव सुजाना * नाम धर्मरुचि शुक्र समाना ॥
सचिवसयान बन्धु बलवीरा * आपु प्रतापपुंज रणधीरा ॥
सेन संग चतुरंग अपारा * अमित सुभट सबसमरजुझारा ॥
सेन विलोकि राउ हरषाना * अरु बाजे गहगहे निशाना ॥

१ गृह । २ संसार । ३ बेमयास—बेकष्ट ।

विजयहेतु कटकाइ बनाई * सुदिनशोधिनृप चल्योरजाई ॥
जहँ तहँ परीं अनेक लडाई * जीति सकल भूप बरिआई ॥
सप्तद्वीप भुजबल वश कीन्हा * लै लै दण्ड छाँड़ि नृप दीन्हा ॥
सकलअवनिमण्डलतेहिकाला * एक प्रतापभानु महिपाला ॥
दोहा—स्ववश विश्व करि बाहुबल, निज पुर कीन्ह प्रवेश ॥
अर्थ धर्म्म कामादि सुख, सेवहिं सबै नरेश ॥ १६० ॥
भूप प्रतापभानु बल पाई * कामधेनु भै भूमि सुहाई ॥
सब दुख वर्जित प्रजा सुखारी * धर्म्मशील सुन्दर नर नारी ॥
सचिव धर्मरुचि हरिपदप्रीती * नृपहित हेतु सिखावत नीती ॥
गुरु सुर संत पितर महिदेवा * करैं सदा नृप सबकी सेवा ॥
भूप धर्म जे वेद बखाने * सकल करैं सादर सुखमाने ॥
दिनप्रति देइँ विविधविधिदाना * सुनैं शास्त्र वर वेद पुराना ॥
नाना वापी कूप तडागा * सुमनवाटिका सुन्दर बागा॥
विप्र भवन सुर भवन सुहाये *सब तीरथन विचित्र बनाये ॥
दोहा—जहँलगि कहे पुराण श्रुति, एक एक सब याग ॥
बार सहस्र सहस्र नृप, किये सहित अनुराग ॥१६१॥
हृदय न कछुफल अनु संधाना * भूप विवेकी परम सुजाना ॥
करै जो धर्म कर्म मन वानी * वासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी ॥
चढ़ि वर वाजि बार इकराजा * मृगयाकर सब साज समाजा॥
विन्ध्याचल गँभीर वन गयऊ * मृगपुनीत बहु मारत भयऊ ॥
फिरत विपिन नृप दीख वराहू * जनु वन दुरेउ शशिहिं ग्रसिराहू
बड़विधु नहिं समात मुखमाहीं * मनहुँ क्रोधवश उगिलत नाहीं॥
कोल कराल दशन छवि गाई * तनु विशाल पीवर अधिकाई ॥
घुरघुरात हय आरव पाये * चकित विलोकत कानउठाये॥
दोहा—नील महीधर शिखर सम, देखि विशाल वराह ॥
चपरि चलेउ हय सुटिक नृप, हाँकि न होइ निवाह॥१६२॥

१ चाहा । २ श्रेष्ठ घोड़ेपर । ३ शिकारखेलनेका । ४ हरिण । ५ आहट–शब्द ।

आवत देखि अधिक रव बाजी * चला बराह मरुतगति भाजी ॥
तुरत कीन्ह नृप शर सन्धाना * महिमिलिगयउविलोकतबाना ॥
तकि तकि तीर महीश चलावा * करिछल सुअर शरीर बचावा ॥
प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा * रिशवश भूप चलेउ सँगलागा ॥
गयउ दूरि वन गहन[1] बराहू * जहाँ नाहिं गज बाजि निबाहू ॥
अति अकेल वनविपुलकलेशू * तदपि न मृगमग तजै नरेशू ॥
कोल[2] बिलोकि भूप बड़धीरा * भागि पैठु गिरि गुहा गँभीरा ॥
अगमदेखि नृप अति पछिताई * फिरेउ महावन परेउ भुलाई ॥
दोहा–खेद[3] खिन्न[4] तृषित[5] क्षुधित[6], राजा बाजि समेत ॥
खोजत व्याकुल सरित सर, जलबिनु भयउ अचेत ॥१६३॥
फिरतविपिन आश्रमइक देखा * तहँबसनृपति[7] कपटमुनि वेषा ॥
जासु देश नृप लीन्ह छुड़ाई * समर सेन तजि गयउ पराई[8] ॥
समय प्रतापभानुकर जानी * आपनअतिअसमयअनुमानी ॥
गयउ न गृह मन बहुतगलानी[9] * मिला नराजहिं नृपअभिमानी ॥
रिसि उर मारि रंक[10]जिमिराजा * विपिन बसै तापसके साजा ॥
तासु समीप[11] गमन नृप कीन्हा * यहप्रतापरवि तेइँ तब चीन्हा ॥
राउतृषित[12] नहिं सो पहिचाना * देखि सुवेष महामुनि जाना ॥
उतरि तुरँग[13]ते कीन्ह प्रणामा * परमचतुर न कहेउ निज[14]नामा ॥
दोहा–भूपति तृषित बिलोकि तेइँ, सरवर[15] दीन्ह दिखाइ ॥
मज्जन[16] पान समेत हय, कीन्ह नृपति हरषाइ ॥१६४॥
गैश्रम सकल सुखी नृप भयऊ * निज आश्रम तापस लै गयऊ ॥
आसन दीन्ह अस्तरवि[17]जानी * पुनि तापस बोला मृदुवानी ॥
को तुम कस वन फिरहु अकेले * सुन्दर युवा जीव पर हेले ॥
चक्रवर्त्तिके लक्षण तोरे * देखत दया लागि अति मोरे ॥
नाम प्रतापभानु अवनीशा * तासु सचिव[18] मैं सुनहु मुनीशा ॥
फिरत अहेरहि परेउँ भुलाई * बड़ भाग्य देखेउँ पद आई ॥

१ गम्भीर । २ सुअर । ३ दुःखित । ४ दुर्बल । ५ पियासा । ६ भूखा । ७ राजा । ८ भाग । ९ लज्जा । १० दारिद्री ।
११ निकट । १२ पियासा । १३ घोड़ा । १४ अपना । १५ तालाब । १६ स्नान । १७ श्रीसूर्यनारायण । १८ मन्त्री ।

हम कहँ दुर्लभ दरश तुम्हारा * जानतहौं कछु भल होनहारा॥
कह मुनि तात भयउ अँधियारा* योजन सत्तर नगर तुम्हारा ॥
दोहा--निशाघोर गम्भीर बन, पंथ न सूझ सुजान ॥
बसहु आजु अस जानि तुम, जायहु होत बिहान ॥१६५॥
तुलसी जस भवितव्यता, तैसिहि मिलै सहाय ॥
आपु न आवै ताहि पहँ, ताहि तहाँ लैजाय ॥ १६६ ॥
भलेहिनाथ आयसु धरिशीशा * बाँधि तुरँग तरु बैठ महीशा ॥
नृप सबभाँति प्रशंसेउ ताही * चरणवन्द्यनिजभाग्य सराही ॥
पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई * जानि पिता प्रभु करौं ढिठाई॥
मोहिं मुनीश सुत सेवक जानी*नाथ नाम निज कहहु बखानी॥
तेहि नजान नृप नृपहि सोजाना * भूपसुहृदय सो कपट सयाना
बैरी पुनि क्षत्रिय पुनि राजा *छलबल कीन्ह चहै निजकाजा॥
समुझिराज्यसुखदुखितअराती * आँवा अनलइव जरै सुछाती ॥
सरल वचन नृपके सुनि काना * बैर सँभारि हृदय हरषाना ॥
दोहा--कपट बोरि बाणी मृदुल, बोलेउ युक्ति समेत ॥
नाम हमार भिखारि अब, निर्धन रहित निकेत ॥ १६७ ॥
कह नृप जे विज्ञान निधाना *तुम सारिखे गलित अभिमाना॥
सदा अपनपौ रहहिं दुराये * सबविधि कुशल कुभेष बनाये॥
तेहिते कहहिं संत श्रुति टेरे * परम अकिंचन प्रिय हरि केरे॥
तुम सम अधन भिखारि अगेहा * होत विरंचि शिवहि सन्देहा ॥
योसिसोसि तवचरण नमामी * मोपर कृपा करिय अब स्वामी॥
सहज प्रीति भूपति की देखी * आप विषे विश्वास विशेषी ॥
सब प्रकार राजहिं अपनाई * बोलेउ अधिक सनेह जनाई ॥
सुन सतिभाव कहौं महिपाला * यहाँ बसत बीते बहुकाला ॥
दोहा--अबलगि मोहि न मिलेउ कोउ, मैं न जनायउँ काहु ॥
लोकमान्यता अनल सम, करि तप कानन दाहु ॥ १६८ ॥

१ रात्रि । २ मार्ग । ३ होनहार । ४ मधुरवचन । ५ सीधे । ६ स्थान--किन्तु गृह । ७ रहित ।

सो०—तुलसी देखिसुवेश, भूलैं मूढ़ न चतुर नर ॥
सुन्दर केकी पेख, वचन सुधा सम अशन अहि ॥ २४ ॥
ताते गुप्त रहौं जग माहीं * हरितजिकिमपि प्रयोजननाहीं ॥
प्रभुजानत सब बिनहिं जनाये * कहहु कवनसिधिलोकरिझाये ॥
तुम शुचि सुमतिपरमप्रियमोरे * प्रीति प्रतीति मोहिं पर तोरे ॥
अब जो तात दुरावौं तोहीं * दारुण दोष बढ़ै अति मोहीं ॥
जिमिजिमि तापस कथैउदासा * तिमितिमि नृपहि होइविश्वासा ॥
देखा स्ववश कर्म्म मन बानी * तब बोला तापस बक ध्यानी ॥
नाम हमार एक तनु भाई * सुनि नृपबोलेउ पद शिरनाई ॥
कहहु नामकर अर्थ बखानी * मोहिं सेवक अतिआपन जानी ॥
दोहा—आदि सृष्टि उपजी जबै, तब उत्पति भइ मोरि ॥
नाम एकं तनु हेतु त्यहि, देह न धरी बहोरि ॥१६९॥
जनि आश्चर्य करहु मन माहीं * सुत तपते दुर्लभ कछु नाहीं ॥
तप बलते जगं सृजे विधाता * तप बल विष्णुभये परित्राता ॥
तप बल शम्भु करहिं संहारा * तप बल शेष धरैं महिभारा ॥
तप अधार सब सृष्टि भुआरा * तपते अगम न कछु संसारा ॥
भयउ नृपहिंसुनिअतिअनुरागा * कथा पुरातन कहै सो लागा ॥
धर्म्म कर्म्म इतिहास अनेका * करै निरूपण विरतिविवेका ॥
उद्भव पालन प्रलय कहानी * कहेसिअमित आश्चर्य बखानी ॥
सुनि महीश तापस वश भयऊ * आपन नाम कहन तब लयऊ ॥
कह तापस नृप जानौं तोहीं * कीन्हेउ कपट लागु भल मोहीं ॥
सो०—सुनु महीश अस नीति, जहँ तह नाम न कहहिं नृप ॥
मोहिं तोहिंपर प्रीति, परम चतुरता निरखि तव ॥ २५ ॥
नाम तुम्हार प्रतापदिनेशा * सत्यकेतु तव पिता नरेशा ॥
गुरु प्रसाद सब जानौं राजा * कहौं न आपन जानि अकाजा ॥
देखि तात तव सहज सुधाई * प्रीति प्रतीति नीति निपुणाई ॥

१ मोर । २ अमृत । ३ भोजन । ४ सर्प । ५ दूसरे किसीसे । ६ पवित्र । ७ छिपावो । ८ दूसरी । ९ पुत्र । १० संसार ।
११ रचे । १२ ब्रह्मा । १३ रक्षक । १४ नाम । १५ दुर्लभ । १६ प्रीति । १७ उत्पन्नहोना ।

उपजिपरी ममता मन मोरे * कहेउँ कथा निज बूझे तोरे ॥
अब प्रसन्न मैं संशय नाहीं * माँगु जो भूप भाव मन माहीं ॥
सुनि सुवचन भूपति हरषाना * गहिपदविनय कीन्हविधिनाना॥
कृपासिन्धु मुनि दरशन तोरे * चारि पदारथ करतल मोरे ॥
प्रभुहितथापि प्रसन्न विलोकी * माँगि अगमवर होउँ विशोकी॥
दोहा--जरा मरण दुख रहित तनु, समर न जीतै कोउ ॥
एक छत्र रिपु हीन महि, राज्य कल्पशत होउ ॥ १७० ॥
कह तापस नृप ऐसहि होऊ * कारण एक कठिन सुन सोऊ॥
कालौ तव पद नाइहि शीशा * एक विप्र कुल छाँडि महीशा ॥
तप बल विप्र सदा वरियारा * तिनके कोप नकोउ रखवारा ॥
जो विप्रन वश करहु नरेशा *तौ तव वश विधि विष्णु महेशा॥
चल न ब्रह्मकुल से वरिआई * सत्य कहौं दोउं भुजा उठाई ॥
विप्र शाप बिनु सुनु महिपाला * तोर नाश नहिं कवनिहुँकाला॥
हरषेउ राउ वचन सुनि तासू * नाथ नहोइ मोर अब नासू ॥
तप प्रसाद प्रभु कृपानिधाना * मोकहँ सर्व्व काल कल्याना ॥
दोहा--एवमस्तु कहि कपट मुनि, बोला कुटिल बहोरि ॥
मिलब हमार भुवाल जानि, कहहु तौ मोरिनखोरि ॥१७१॥
ताते मैं तोहिं बरजौं राजा * कहे कथा तव परम अकाजा ॥
छठें श्रवण यह परत कहानी * नाश तुम्हार सत्य मम वानी॥
यह प्रकटे अथवा द्विज शापा * नाश तोर सुनु भानु प्रतापा॥
आन उपाय निधन तव नाहिं * जो हरि हर कोपहिं मन माहीं॥
सत्यनाथ पद गहि नृप भाषा * द्विज गुरु कोपकहहु कोराखा ॥
राखै गुरु जो कोपविधाता *गुरु विरोधनहिंकोउ जग त्राता॥
जो न चलब हम कहे तुम्हारे * होइ नाश नहिं शोच हमारे ॥
एकहि डर डरपत मन मोरा * प्रभु महिदेव शाप अति घोरा ॥
दोहा--होहिं विप्र वश कवन विधि, कहहु कृपा करि सोउ ॥

१ धर्म,अर्थ,काम,मोक्ष। २ हाथ। ३ बुढ़ापा। ४ युद्ध। ५ पृथ्वी। ६ कान। ७ ब्राह्मण। ८ रक्षक। ९ ब्राम्हण।

तुम तजि दीनदयालु निज, हितू न देखौं कोउ ॥ १७२ ॥
सुनु नृप विविध यतन जगमाहीं * कष्टसाध्य पुनि होहिं किनाहीं॥
अहै एक अति सुगम उपाई * तहां परन्तु एक कठिनाई ॥
मम आधीन युक्ति नृप सोई * मोर जाब तव नगर नहोई ॥
आजु लगे अरु जबतें भयऊँ * काहूके गृह ग्राम न गयऊँ ॥
जो न जाब तौ होइ अकाजू * बना आइ असमंजस आजू ॥
सुनि महीप बोले मृदुबानी * नाथनिगम असनीति बखानी॥
बड़े सनेह लघुनपर करहीं *गिरि¹निजशिरन सदा² तृणधरहीं
जलधि³ अगाध मौलि बह फेनू * सन्तत धरणि⁵ धरत शिररेनू⁶ ॥
दोहा–अस कहि गहे नरेश पद, स्वामी होउ कृपालु ॥
मोहिं लागि दुख सहिय प्रभु, सज्जन दीनदयाल ॥ १७३ ॥
जानि नृपहिं आपनआधीना * बोला तापस कपट प्रवीना ॥
सत्य कहौं भूपति सुनु तोहीं *जगमहँ नाहिं दुर्लभ कछु मोहीं॥
अवशि काज मैं करिहौं तोरा * मन क्रम⁷ वचन भक्त तैं मोरा॥
योग युक्ति तप मंत्र प्रभाऊ * फलै तबहिं जब करिय दुराऊ॥
जो नरेश मैं करउँ रसोई *तुम परसहु मोहि जान नकोई॥
अन्नसो जोइ जोइ भोजन करई * सोइसोइतवआयसुअनुसरई ॥
पुनि तिनके गृह जेवैं जोई * तव वश होय भूप सुनु सोई ॥
जाइ उपाय रचहु नृप येहू * सम्वत भरि संकल्प करेहू ॥
दोहा–नितनूतन द्विज सहसशत,बरेहु सहित परिवार ॥
मैं तुम्हरे संकल्पलगि, दिनहिं करब जेवनार ॥१७४॥
इहिविधि भूप कष्ट अति थोरे * होइहहिं सकल विप्र वशतोरे ॥
करिहहिं विप्र होम मख सेवा * तेहि प्रसंग सहजहिं वश देवा ॥
और एक तोहिं कहौं लखाऊ * मैं यहि भेष न आउब काऊ ॥
तुम्हरे उपरोहित कहँ राया * हरि आनबमैंकरि निजमाया ॥
तपबल तेहि करि आपुसमाना * रखिहौं इहाँ वर्ष परमाना ॥

१ पर्वत । २ गहेरसमुद्र । ३ ऊपर । ४ सदा । ५ भूमि ६ रेणुका । ७ मन । ८ चतुर । ९ एकवर्ष ।

मैं धरि तासु बेष सुनु राजा * सबबिधि तोर सँवारब काजा ॥
गैनिशिबहुत शयन अब कीजै * मोहिं तोहिं भूप भेंट दिन तीजै ॥
मैं तप बल तोहिं तुरंग समेता * पहुँचैहौं सोवतहिं निकेता ॥
दोहा—मैं आउब सोइ बेष धरि, पहिचानेहु तब मोहिं ॥
जब एकांत बुलाइ सब, कथा सुनाऊँ तोहिं ॥ १७५ ॥
शयन कीन्ह नृप आयसु मानी * आसन जाइ बैठ छल ज्ञानी ॥
श्रमित भूप निद्रा अति आई * सोकिमि सोव शोच अधिकाई ॥
कालकेतु निशिचर तहँ आवा * जेहि शूकर होइ नृपहिं भुलावा ॥
परम मित्र तापस नृप केरा * जानै सो अति कपट घनेरा ॥
तेहिके शत सुत अरु दश भाई * खल अति अजय देव दुखदाई ॥
प्रथमहिं भूप समर सब मारे * बिप्र सन्त सुर देखि दुखारे ॥
तेहि खल पाछिल बैर सँभारा * तापस नृप मिलि मंत्र बिचारा ॥
जेहिरिपुक्षय सोइरचेसि उपाऊ * भावीवश न जान कछु राऊ ॥
दोहा—रिपु तेजसी अकेल अति, लघु करि गनिय न ताहु ॥
अजहुँ देत दुख रबि शशिहिं, शिरअवशेषित राहु ॥ १७६ ॥
तापसनृप निज सखहिं निहारी * हर्षिमिलेउ उठिभयउ सुखारी ॥
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई * यातुधान बोला सुखपाई ॥
अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेशा * जो तुम कीन्ह मोर उपदेशा ॥
परिहरि शोच रहहु तुम सोई * बिनु औषधहिं ब्याधिबिधिखोई ॥
कुल समेत रिपु मूल बहाई * चौथे दिवस मिलब मैं आई ॥
तापस नृपहि बहुत परितोषी * चला महाकपटी अतिरोषी ॥
भानुप्रतापहि बाजि समेता * पहुँचायसि सोवतहिं निकेता ॥
नृपहिं नारि पहँ शयन कराई * हयगृहबाँधेसि बाजि बनाई ॥
दोहा—राजाके उपरोहितहिं, हरिलै गयउ बहोरि ॥
लैराखेसि गिरि खोह महँ, माया करि मतिभोरि ॥ १७७ ॥
आपु बिरचि उपरोहित रूपा * परा जाय तेहि सेज अनूपा ॥

१ सौ लड़के । २ संग्राममें । ३ शत्रुका नाश । ४ छोटा । ५ शिरराहित किन्तु रुण्डमात्र । ६ निशिचर । ७ शिक्षा । ८ दिन । ९ घोड़ा । १० घर । ११ रानी । १२ अश्वशाला ।

जागेउ नृप अनुभयउ बिहाना * देखि भवन अति अचरजमाना॥
मुनि महिमा मनमहँ अनुमानी * उठे गवँहि जेहि जान न रानी ॥
कानन गयउ बाजि चढ़ि तेहीं * पुर नर नारि न जानेउ केहीं ॥
गये याम जुग भूपति आवा * घर घर उत्सव बाजु बधावा ॥
उपरोहितहि देखि जब राजा * चकितबिलोकिसुमिरिसोइकाजा
जुग सम नृपहिं गये दिन तीनी * कपटी मुनि नृपमति हरि लीनी
समय जानि उपरोहित आवा * नृपहिमतोसबकहिसमुझावा ॥
दोहा—नृप हर्षे पहिंचानि गुरु, भ्रम बश रहा न चेत ॥
बरे तुरत शतसहस बर, बिप्र कुटुम्ब समेत ॥ १७८ ॥
उपरोहित जेवनार बनाई * छरस चारि बिधि जस श्रुतिगाई
मायामय तेइँ कीन्हि रसोई * ब्यंजन बहु गनि सकै न कोई॥
बिबिधि मृगनकर आमिषरांधा * तेहिमहँ बिप्रमांस खल सांधा ॥
भोजन कहँ सब बिप्र बुलाये * पदपखारि सादर बैठाये ॥
परसनलाग जबहिं महिपाला * भइ अकाशवाणी तेहिंकाला ॥
बिप्रवृन्द उठि उठि गृह जाहू * हैबडिहानि अन्न जनि खाहू ॥
भयउ रसोई भूसुर मांसू * सब द्विज उठे मानि बिश्वासू ॥
भूप बिकलमति मोह भुलानी * भावी बश न आव मुखबानी ॥
दोहा—बोले बिप्र सकोप तब, नहिं कछु कीन्ह बिचार॥
जाइ निशाचर होहु नृप, मूढ सहित परिवार ॥ १७९ ॥
क्षत्रि बन्धु तैं बिप्र बुलाई * घालै लिये सहित समुदाई ॥
ईश्वर राखा धर्म हमारा * जैहसि तैं समेत परिवारा ॥
संवत मध्य नाश तव होऊ * जलदाता न रहहि कुल कोऊ ॥
नृपसुनिशाप बिकल अति त्रासा * भैबहोरि बरगिरा अकाशा ॥
बिप्रहु शाप बिचारि न दीन्हा * नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा॥
चकित बिप्र सब सुनि नभवानी * भूप गये जहँ भोजनखानी ॥
तहँ न अशन नहिं बिप्रसुआरा * फिरेउ राउ मन शोच अपारा॥

१ निकेत । २ तडके । ३ वन । ४ दोपहर । ५ मांस । ६ द्विज । ७ श्रेष्ठवाणी । ८ रसोइयाँ । ९ भोजन ।

सब प्रसंग महिसुरन सुनाई * त्रसित परेउ अवनीं अकुलाई ॥
दोहा–भूपति भावी मिटै नहिं, यद्यपि न दूषण तोर ॥
किये अन्यथा होइ नहिं, विप्रशाप अतिघोर ॥१८०॥
जो करि कपट छलै जग काहू * देइहि ईश अधमगति ताहू ॥
विप्रवचन सुनि नृप अकुलाना * उठिपुनिविनयकीन्हिविधिनाना
पुनिपुनिपदगहिकहेउभुआला * शापअनुग्रह करहु कृपाला ॥
जब तुम होब निशाचर जाई * ब्रह्मवंश तामस तनु पाई ॥
अजर अमर अतुलित प्रभुताई * जगविख्यात वीर दोउ भाई ॥
होइहि जबहिं पराभव चारी * तब तुम सेउब देवपुरारी ॥
शिवप्रसाद वर पाइ बहोरी * होइहै सब जग प्रभुता तोरी ॥
मिलिहिंतोहिं जब सनतकुमारा * तब तुम समुझब शाप हमारा॥
"दोहा–तुम पूँछब निस्तारनिज, सादर सुनहु नरेश ॥
सब परिवार उधार तब, होइहै मुनि उपदेश" ॥१८१॥
असकहि सब महिदेव सिधाये * समाचार पुरलोगन पाये ॥
शोचहिं दूषण दैवहिं देहीं * विरचत हंस काक कियजेहीं ॥
उपरोहिर्ताहि भवन पहुँचाई * असुर तापसहि खबरिजनाई ॥
तेहिखल जहँ तहँ पत्र पठाये * सजिसजि सेन भूप सबआये ॥
घेरिन्ह नगर निशान बजाई * विविधभाँति नित होतिलराई ॥
जूझे सकल सुभट करि करणी * बन्धु समेत परे नृप धरणी ॥
सत्यकेतु कुल कोइ न बाँचा * विप्र शाप किमिहोइ असाँचा ॥
रिपुहि जीति नृप नगर बसाई * निज निज पुरगे जययश पाई ॥
दोहा–भरद्वाज सुनु जाहि जब, होत विधाता वाम ॥
धूरि मेरु सम जनक यम, ताहि व्यालसम दाम ॥ १८२ ॥
काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा * भयउ निशाचर सहित समाजा ॥
दशशिरताहि बीस भुज दण्डा * रावण नाम बीर बरिवण्डा ॥
भूप अनुज अरिमर्दन नामा * भयउ सो कुम्भकर्णबलधामा ॥

१ पृथ्वी । २ विदित । ३ पर्वतसम । ४ पिता । ५ सर्प । ६ रस्सी ७ अतिबली ।

सचिव जो रहा धरमरुचि जासू * भयउ बिमात्र बन्धु लघु तासू ॥
नाम बिभीषण जेहि जगजाना * बिष्णुभक्त बिज्ञाननिधाना ॥
रहे जे सुत सेवक नृपकेरे * भये निशाचर घोर घनेरे ॥
कामरूप खल जिनिस अनेका * कुटिल भयंकर बिगत बिबेका ॥
कृपारहित हिंसक सब पापी * बरणि न जाइ बिश्व परितापी ॥
दोहा—उपजे यदपि पुलस्त्यकुल, पावन अमल अनूप ॥
तदपि महीसुर शापबश, भये सकल अघरूप ॥१८३॥
कीन्ह बिबिध तप तीनों भाई * परमउग्र सो बरणि न जाई ॥
गयउ निकट तप देखि बिधाता * माँगहु वर प्रसन्न मैं ताता ॥
करि बिनती पदगहि दशशीशा * बोलेउ बचन सुनहु जगदीशा ॥
हम काहू कर मरहिं न मारे * बानर मनुज जाति दुइ बारे ॥
एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा * मैं ब्रह्मा मिलि तोहिं वर दीन्हा ॥
पुनि प्रभु कुम्भकर्ण पहँ गयऊ * तेहिबिलोकिमनबिस्मयभयऊ ॥
जो यह खल नित करब अहारा * होइहि सब उजारि संसारा ॥
शारद प्रेरि तासु मति फेरी * मांगेसि नींद मासषटकेरी ॥
दोहा—गयउ बिभीषण पास तब, कहा पुत्र वर मांग ॥
तेहि माँगेउ भगवन्तपद, कमल अमलअनुराग ॥ १८४ ॥
तिनहिं देइ वर ब्रह्म सिधाये * हर्षित ते अपने गृह आये ॥
मयतनुजा मन्दोदरि नामा * परमसुन्दरी नारि ललामा ॥
सोइ मय दीन्ह रावणहि आनी * भई सो यातुधानपति रानी ॥
हर्षित भयउ नारि भलि पाई * पुनि दोउ बन्धु बिवाहेसि जाई ॥
"दोहा—वैरोचनकी धेवती, वज्रज्वाल जेहि नाम ॥
कुंभकर्णका तासु सँग, कियो व्याह सुखधाम" ॥
गिरि त्रिकूट इक सिन्धु मँझारी * बिधिनिर्मित दुर्गम अतिभारी ॥
सोइ मयदानव बहुरि सँवारा * कनकरचितमणिभवनअपारा ॥
भोगवती जस अहिकुलवासा * अमरावति जस शक्रनिवासा ॥

१ कठिन । २ ब्रह्मा । ३ तुमपर किन्तु पुत्र । ४ सन्देह । ५ छःमास । ६ गीति । ७ रावण ।
८ कठिन । ९ सुवर्ण । १० इन्द्र ।

तिनते अधिकरम्य अतिबंका * जग विख्यात नाम तेहि लंका॥
दोहा-खाई सिन्धु गँभीर अति, चारिहु दिशि फिर आव॥
कनक कोट मणि खचित दृढ़, बरणि न जायबनाव ॥१८५॥
हरिप्रेरित तेहि कल्प जोइ, यातुधानपति होय॥
शूर प्रतापी अतुल बल, दल समेत बस सोय॥ १८६॥
रहे तहाँ निशिचर भटमारे * ते सब सुरन समर संहारे॥
अब तहँ रहहिं शक्रके प्रेरे * रक्षककोटि यक्षपति केरे॥
दशमुख कतहुँखबरि असिपाई * सेन साजि गढ घेरिसि जाई॥
देखि विकट भट बड़ि कटकाई * यक्ष जीव लै चले पराई॥
फिर सब नगर दशानन देखा *भयउ शोच सुख भयउ विशेषा॥
सुन्दर सहज अगम अनुमानी * कीन्ह तहाँ रावण रजधानी॥
ज्यहि जस योग बाँटि गृहदीन्हे *सुखी सकल रजनीचर कीन्हे॥
एक बार कुबेर पहँ धावा * पुष्पकयान जीति लै आवा॥
दोहा-कौतुकही कैलास तब, लीन्हेसि जाइ उठाइ॥
मनहुँ तौलि भट बाहुबल, चला अधिक सुखपाइ॥१८७॥
सुख सम्पति सुत सेन सुहाई * जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई॥
नित नूतन सब बाढ़त जाई *जिमि प्रतिलाभ लोभअधिकाई॥
अतिबल कुम्भकर्ण अस भ्राता * ज्यहिंकहँनहिंप्रतिभटजगजाता
करि मदपान सोव षटमासा * जागत होइ तिहूँपुर त्रासा॥
जो दिनप्रति अहार करु सोई * विश्व वेगि सब चौपट होई॥
समरधीर नहिं जाय बखाना*त्यहिसमअधिकनकोउबलवाना
वारिदनाद जेठ सुत तासू * भटमहँप्रथमलीक जगजासू॥
जेहि न होइ रणसन्मुख कोई* सुरपुर नितहिं परावन होई॥
दोहा-कुमुख अकम्पन कुलिशरद, धूम्रकेतु अतिकाय॥
एक एक जग जीति सक, ऐसे सुभट निकाय॥ १८८॥
कामरूप जानहिं सब माया * स्वप्नेहुँ जिनके धर्म न दाया॥

१ परमसुन्दररमनकरनेयोग्य। २ ज्यहि समान जगत्में दूसरा योद्धा न जन्मा। ३ डर। ४ संसार। ५ मेघनाद। ६ अनेक।

दशमुख बैठि सभा इकबारा * देखि असित आपन परिवारा॥
सुत समूह जन परिजन नाती * गनैको पार निशाचर जाती ॥
सेन विलोकि सहज अभिमानी * बोला वचन क्रोध मद सानी ॥
सुनहु सकल रजनीचर यूथा * हमरे बैरि विबुध वरूथा ॥
ते सन्मुख नहिं करहिं लराई * देखि सबल रिपु जाहिंपराई ॥
तिनकर मरण एकविधि होई * कहौंबुझाइ सुनहु अब सोई ॥
द्विज भोजन मख होम सराधा * सबकर जाय करहु तुम बाधा॥
दोहा-क्षुधा क्षीण बलहीन सुर, सहजहिं मिलिहहिं आइ ॥
तब मारिहौं कि छाँडिहौं, भलीभाँति अपनाइ ॥ १८९ ॥
मेघनाद कहँ पुनि हँकरावा * दीन्ह सीख बल बैर बढावा ॥
जे सुर समर धीर बलवाना * जिनके लरिबे कर अभिमाना॥
तिनहिं जीतिरणआनिसिबाँधी *उठिसुतपितुअनुशासन साधी॥
इहिविधि सबही आज्ञा दीन्हा * आपुनचलेउ गदा कर लीन्हा ॥
चलत दशानन डोलत अवनी *गर्जत गर्भ स्रवत सुररवनी ॥
रावण आवत सुनेहु सकोहा * देवन तकेउ मेरुगिरि खोहा ॥
दिगपालनके लोक सिधाये * सूने सकल दशानन पाये ॥
पुनि पुनि सिंहनाद करि भारी * देइ देवतन गारि प्रचारी ॥
रण मदमत्त फिरै जगधावा *प्रति भट खोजत कतहुँनपावा॥

अथ क्षेपक ।

दोहा-सप्तद्वीप नव खंड लगि, सप्त पताल अकास ॥
कंपमान धरणी धसत, सरितपतिन्ह मनत्रास ॥ १९० ॥
नारद मिले कहसि मुसुकाई * देव कहाँ मुनि देहु दिखाई ॥
सुनत अनख नारदहि नमावा * श्वेतद्वीप तेहि तुरत पठावा ॥
सागर उतरि पार सो गयऊ * नारिवृन्द तहँ देखत भयऊ ॥
तिन्हसन कहा पतिन पहँ जाहू *कहेउ कि आव निशाचर नाहू॥
तब मैं तिनहिं जीति संग्रामा * ले जैहौं तुमकहँ निज धामा ॥

१ देवता। २ विप्र । ३ देवतांकी स्त्रियां । ४ स्त्रियोंके झुंड ।

सुनत बचनयक जरठरिसानी * धाइ चरण गहि गगन उड़ानी ॥
गइ दूरि धरि धरि झकझोरा * डारेसि सिन्धु मध्य अतिजोरा॥
दोहा–गयो पताल अचेत है, मरै न विप्र प्रसाद ॥
सावधान उठिचलेउ पुनि, हिये न हर्ष विषाद ॥ १९१ ॥
जीतेसि नाग नगर सब झारी * गयो बहुरि बलिलोक सुरारी ॥
वैरोचन सुत आदर दयऊ * कुशल बूझि तब बोलतभयऊ॥
तुमहूँ निज शत्रुहि गहि लीजै * बलिमहिलोकराज्यनिजकीजै॥
कहबलि कनककशिपुकेमंडन * पहरि लेहु तुम सुखदुखखंडन॥
लाग उठावन उठा न कोई * याही पौरुषते जय होई ॥
जिन यह भूषण अंगन धारे * ते भटगे यक क्षणमें मारे ॥
तेहिते भवन जाहु ले प्राना * चला तुरत मन माहिं लजाना ॥
वामन रावण आवत जाना * किये देवऋषि सन अपमाना ॥
खेलत रहे नगर शिशुनाना * निजबलातिनाहिं दीन भगवाना॥
धाइ धरा तिन पुर लै आये * नगर नारि नर देखन धाये ॥
बीसबाहु दशकंधर भाई * विधि यह गढ़नि कहाँ की आई॥
राखेनिबाँधि खिजावहिं भारी * नाम न कहै सहै बरु मारी ॥
वामन दीख बहुत सकुचाना * तबछुड़ाइ दिय कृपानिधाना॥
चला तुरन्त निशाचर नाहा * लाज शंक कछु नाहिं मनमाहा॥
दोहा–अति निर्लज्ज दया रहित, हिंसापर अति प्रीति ॥
रामविमुख दशकन्ध शठ, तापर चाहत जीति ॥ १९२॥
भरद्वाज सुनु जाहि जब, होइ विधाता वाम ॥
मणिहुँ काँच होइ जाइ तब, लहै न कौड़ी दाम.॥ १९३ ॥
जहँ कहुँ फिरत देव द्विज पावै * दण्ड लेय बहु त्रास दिखावै ॥
इहि आचरण फिरै दिन राती * महामलिन मन खल उतपाती॥
बहुरि तुरत पम्पापुर आवा * बालिनामकपिपतिजिहिठावा ॥
अवलोकासि इक सरवर शोभा * जिहिमनमहामुनिन्हकरलोभा॥

१ बुढ़िया । २ आकाश । ३ समुद्र । ४ तालाब ।

तहाँ कपीशं करै निज ध्याना * दशकन्धरहि देखि मुसुकाना ॥
धाइ ठाढ़ तहँ भा रजनीशा * ठोंकि बाहु गर्जित भुजबीशा ॥
तब रावण बोला करि क्रोधा * बकध्यानीकपि शठ विनबोधा ॥
नाम तोर सुनि आयउँ धाई * केकपि युद्ध छाँडि कदराई ॥
दोहा-मोहिं जीते बिनु समर सुनु, वृथा ध्यान तव कीश ॥
कटकटाइ कह रजनिचर, रदनतीनसैबीस ॥ १९४ ॥
तब वाली बोला मुसुकाई * बल तुम्हार ऐसोही भाई ॥
रवि अंजलि मैं देउँ सप्रीती * ठाढ होउ जायहु मोहिं जीती ॥
तबहिंकीशपतिमनहिं विचारा * शिव वर दीन्ह मरै नहिं मारा ॥
दशकंधर घर जाहु विचारी * अजयतुम्हारिसुनीविधिचारी ॥
बहुत भाँति असुरहि समुझावा * कौनिहु भाँति बोध नहिं आवा ॥
तब सकोप होइ धरा कपीशा * हठगहि काँख चापि दशशीशा ॥
अंजलि दीन्हरविहि मनवानी * अँचइ सप्तउदधि कर पानी ॥
जपा आदि शंकर मन वानी * तेहि क्षण संध्या वंदि सिरानी ॥
दोहा-आवा घरहि कपीश तब, काँख रहा लंकेश ॥
याहि विधि बीते मास षट्, पावा बहुत कलेश॥१९५॥
तेइ कलेश वश करै उपाई * तहँ न चलै कछु आतुरताई ॥
बहु प्रस्वेद कखरी महँ जामा * अती कुवास तहाँ भइधामा ॥
कलमलाइ रिसि दशनन काटा * कचकरजीवमनहुँभ्रम चाटा ॥
एक दिवस रवि अंजलि साजा * कांखतेनिसारिमहाध्वनिगाजा ॥
तब पुनि धारि कपीश सोबांधा * लै आये अंगदके सांधा ॥
बीश भुजा. दशशीश सुधारा * चरण दोउ पुनि धरि उरपारा ॥
धरि समटि झूमरि सम कीन्हा * बाँधि सेज पर शोभा दीन्हा ॥
अंगद खेलि लात शिर मारा*किलकिलाइकिलकैकिलकारा॥
दोहा-तारा चीन्हेउ रावणहिं, तेहि क्षण दीन्ह छुड़ाइ ॥
जाहु तुरत लंकेश गृह, बहुरि धरहि कपिराइ ॥ १९६ ॥

*वाल्मीकि रामायणमें लिखाहै कि रावण चारवड़ी कांखमें रहा ।

१ बालि । २ रावण । ३ दांत । ४ श्रीसूर्यनारायण । ५ सातोंसागर । ६ मैल-पसीना । ७ घर ।

पुनि रावण आवा तेहि ठाईं * सहसबाहु जहँ रास बनाईं ॥
जलक्रीडा करहहिं सब नारी * विविध भाँति शोभाअति भारी॥
आस रासमंडल जहँ रेवा * सुर नर नाग करहिं सब सेवा ॥
जाइ दीख रावण सुखनाना * हर्ष समेत हृदय सुखमाना ॥
तहँ लंकेश जाइ शिव देखा * मनहुँ विरंचि रचे बहु रेखा ॥
तुलसी कमलपत्र सब आना * बिल्वपत्र अरु पुष्प प्रमाना ॥
जाकै जल क्षोभेउ दशशीशा * पढ़ै मंत्र सुमिरै गौरीशा ॥
निलज अशंक आव पुनि तहँवा * करभुजकोलिसहसभुजजहँवा॥
दोहा-क्षोभेउ जल भुज बीस बल, बूड़न लगी समाज ॥
सहसबाहु अतिक्रोध मन, माहिं सम्र आन को आज १९७॥
जाइ दीख तहँ रावण ठाढ़ा * जासु विपुल भुजबलजलबाढ़ा॥
धावा प्रबल महाबल भारी * लंकेश्वर कहँ धरिसि प्रचारी ॥
निरखितियन आचरजविशाला * बाँधिराखिकछुदिन हयशाला॥
लज्जित दुष्ट भ्रष्ट कारि रहई * रिसिउर मारि कष्ट बहु सहई ॥
सकल आइ देखहिं नर नारी * मारहिं लात हँसै दै गारी ॥
नाम न कहै रहै सकुचाना * बहुविधि पूछे नृपति सुजाना ॥
नृत्य करैं रम्भादिक नारी * दशहु माथ दश दीपक बारी ॥
मुनिपुलस्त्य तब जाइछुड़वा * पुनिनलशापआय तिहिपावा ॥
दोहा-मारग जात दीख अति, अनुपम सुन्दरि नारि ॥
चन्दन पुष्प पत्र कर, पूजन चलि त्रिपुरारि ॥ १९८ ॥
देखि उर्वशी मन सकुचानी * तब रावण बोला मृदुवानी ॥
को तुम नारि गमन कहँ कीन्हा * लज्जा वश तिहि उतर न दीन्हा॥
मन मदमत्त विचार न करेऊ * धनपति पुत्रवधू कर धरेऊ ॥
चीन्हि ताहि पुनि शंका आई * घाटि कर्म्म कीन्हीं पछिताई ॥
मन पछिताय शोच उर भयऊ * लंकेश्वर लंका कहँ गयऊ ॥
विकल उर्वशी अलकहिं आई * नल कूबर सन बात जनाई ॥

१ रोका । २ अत्यंत । ३ हांक देकर । ४ स्त्रियां । ५ घोड़शाला । ६ दिया । ७ कुबेरकी पतोहू । ८ स्थान ।

दीन्ह शाप तिन क्रोध अपारा * रावण वंश होहु क्षयकारा ॥
चली शाप लंका कहँ आई * दशकन्धर बैठा जिहिं ठाईं ॥
आगे आइ ठाढि भइ शापा * निरखिदशाननअतिभयकाँपा ॥
दोहा-शापहिं अंगीकार करि, मन महँ कीन्ह विचार ॥
दण्ड ऋषिन्हसे लीन्हनाहिं, रोषेउ लंक भुवार ॥ १९९ ॥
दूत चारि पठये ऋषि आश्रम * निरखेंबिसरिगेमुनिअधिआतम
तिनसन तब पूछहिं मुनि हाला * कहहु कुशल लंकेश भुवाला ॥
कुशल तासु यह सुनहु मुनीशा * कर तुम सन चाहतदशशीशा ॥
सुनि सो वचन महा भय पाईं * करहिं विचार विरति बिसराईं ॥
जेहि दरबार भीति नहिं भाई * खल मण्डली जुरी तहँ आई ॥
कछु विन दिये नहीं गति आछी * घटभरि रुधिर दिये तनुपाछी ॥
दूतन सौंपि कहा मुनिज्ञानी * भूपहिं कहेउ जाइ यह वानी ॥
दोहा-घट उघरत क्षय होइहहु, सहित सकल परिवार ॥
दूत तुरत घट लेगये, लंकापति दरबार ॥ २०० ॥
रावण छट लखि परम हुलासा * तब दूतन मुनि वचन प्रकाशा ॥
सुनि मुनि शाप उपज उरदाहू * बोला घट ले उत्तरजाहू ॥
यत्न समेत धरणि धरि एहू * जानि न पाव बात यह केहू ॥
लै घट जनकनगर ते गये * गाडत क्षेत्र मध्य तहँ भये ॥
शंभु सभा श्रुतिवाद मँझारा * प्रथमैं रहा जनकते हारा ॥
तेहि रिसते तहँ कुंभ पठावा * जनकराज कर देश सुहावा ॥
हरि इच्छा तहँ परयोदुकाला * विन जलभे सब जीव विहाला ॥
जनक यज्ञ रचना तहँ ठयऊ * चामीकर हल कर्षत भयऊ ॥
प्रगट अवनिते ऋषयकुमारी * कन्या कहि लीन्हीं उर धारी ॥
दोहा-चार सखी चहुँ तरफ, कर मुरछल सुखखान ॥
मध्य विराजत भूमिजा, निमिवंशिनसुखदान ॥ २०१ ॥

१ ज्ञान, ध्यान, उपासना, जप, तप, । २ लोहू । ३ नाश ।

पुनि विदेह की विनयसों, भई जानकी बाल ॥
अंतर्हित सिंहासन, सुख मानो भूपाल ॥ २०२ ॥
देखत ताहि सुनयना रानी * कन्या कह लीनी सुखमानी ॥
नाम जानकी परम पुनीता * नारद आइ कहा पुनि सीता॥
पुनि नारद कह सुनहु नृपाला * विष्णु वरहिं भगवान कृपाला ॥
सुनि नृप सीय पढन बैठाई * कछु दिनसें विद्या सब पाई ॥
दोहा—एक समय मिथिलेश अति, शंकर को तप कीन ॥
आय कह्यो शिव माँगु वर, बोले नृपति प्रवीन ॥ २०३ ॥
कह्यो नृपति जो देत वर, जोहि श्रुति नेति बखान ॥
तेहि देखौं भरि नयनमें, यह वर देहु न आन ॥ २०४ ॥
सुन शिव एक धनुष तब दयऊ *पूजन करहु मुदित नृप भयऊ ॥
याहीसे पूरै अभिलाषा * भये प्रसन्न भूप जय भाषा ॥
गृह आये प्रभुहित अनुरागे * नित्त नेम करि पूजनलागे ॥
इक दिन सिय सेवा ढिगजाई * लीलहि लीनों धनुष उठाई ॥
देख जनक अति अचरजमाना *तेहिक्षण तहाँ कठिनप्रण ठाना॥
जो लेई शिव चाप चढाई * सो नृप मम कन्या वर पाई ॥
बहुविधि शिल्पी लिये बुलाई * रंगभूमि सुन्दर बनवाई ॥
देश देश प्रति पत्र पठाये * सुनि सुनि भूप अनेकन आये॥
वन उपवन पुर पंथ निकेता * उतरे निज निज सेनसमेता ॥
कहि सु कथा ऋषिराउ सिधाये* बहुरि दूत लंकापुर आये ॥
चारि ठाँव हारा लंकेशा * देवनको बहु देत कलेशा” ॥
इति क्षेपक ।
रवि शशि पवन वरुण धनुधारी * अग्नि काल यम सब अधिकारी
किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा * हठि सबहींके पंथहि लागा ॥
ब्रह्मसृष्टि जहँलगि तनुधारी * दशमुख वशवर्त्ती नर नारी ॥
आयसु करहिं सकल भयभीता * नवहिं आई नित चरणविनीता॥

दोहा–भुजबल विश्व वश्य करि, राखेसि कोउ न स्वतंत्र ॥
मण्डलीक महि रावण, राज्य करै निजमंत्र ॥ २०५ ॥
देव यक्ष गंधर्व नर, किन्नर नागकुमारि ॥
जीति वरीं निज बाहुबल, बहु सुन्दरि वर नारि ॥२०६ ॥
इन्द्रजीत सन जो कछु कहेऊ * सो सब जनु पहिले करि रहेऊ ॥
प्रथमहिंजिनकहँ आयसु दीन्हा * तिनकेचरित सुनहु जोकीन्हा॥
देखत भीमरूप सब पापी * निशिचर निकर देवपरितापी ॥
करहिं उपद्रव असुर निकाया * नानारूप धरहिं करि माया ॥
ज्यहि विधि होइ धर्म्मनिर्मूला * सो सब करहिं वेद प्रतिकूला ॥
ज्यहिज्यहिदेश धेनुद्विज पावहिं * नगर ग्राम पुर आगि लगावहिं॥
शुभ आचरण कतहुँ नहिं होई * वेद विप्र गुरु मान न कोई ॥
नहिं हरिभक्ति यज्ञ जप दाना * स्वप्नेहुँ सुनिय न वेदपुराना ॥
छं०–जप योग विरागा तप मख भागा श्रवण सुनै दशशीशा ॥
आपुन उठि धावै रहै न पावै धरि सब घालै खीसा ॥
अति भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनै नहिं काना ॥
तेहि बहुविधि त्रासै देश निकासै जो कह वेद पुराना ॥१८॥
सो०–वरणि नजाय अनीति, घोर निशाचर जो करहिं ॥
हिंसापर अति प्रीति, तिनके पापहि कवन मिति ॥२६॥
बाढे बहु खल चोर जुआरी * जे लम्पट परधन परनारी ॥
मानहिं मातु पिता नहिं देवा * साधुनसों करवावहिं सेवा ॥
जिनके यह आचरण भवानी * ते जानहु निशिचर सम प्रानी॥
अतिशय देखि धर्मकी हानी * परम सभीत धरा अकुलानी ॥
गिरि सर सिंधु भार नहिं मोही * जस मोहिं गरुअ एक परद्रोही॥
सकल धर्म्म देखहिं विपरीता * कहि नसकै रावण भयभीता ॥
धेनु रूप धरि हृदय विचारी * गई तहाँ जहँ सुर मुनिझारी ॥
निज सन्ताप सुनायसि रोई * काहूते कछु काज नहोई ॥

१ सम्पूर्ण पृथ्वीमें । २ निज इच्छासे । ३ भयानक । ४ देवतोंके दुःख देनेवाले । ५ विपरीत । ६ गाय । ७ ब्राह्मण ।
८ कानोंसे । ९ बिगाड़दे । १० हत्या । ११ ठीक-अन्त । १२ दूसरेमें आसक्त । १३ पृथ्वी । १४ गोकास्वरूप । १५ दुःख ।

छंद–सुर मुनिगन्धर्वा मिलिकरि सर्वा गये विरंचिके लोका ।
सँग गोतनु धारी भूमि बिचारी परम विकल भय शोका ॥
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मेरो कछु न बसाई ।
जाकरि तैं दासी सो अविनाशी हमरो तोर सहाई ॥ १९ ॥

सो०–धरणि धरहु मन धीर, कह बिरंचि हरिपद सुमिरि ॥
जानत जनकी पीर, प्रभु भंजहिं दारुण विपति ॥ २७ ॥

बैठे सुर सब करहिं विचारा * कहँ पाइय प्रभु करिय पुकारा ॥
पुर बैकुंठ जान कह कोई * कोइकहपयोनिधि महँबससोई ॥
जाके हृदय भक्ति जस प्रीती * प्रभु तेहि प्रगट सदा यह रीती ॥
तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊं * अवसर पाय वचन इककहेऊँ ॥
हरि व्यापक सर्वत्र समाना * प्रेमते प्रगट होहिं मैं जाना ॥
देश काल दिशि विदिशिहुमाहीं * कहहुसोकहाँ जहाँ प्रभु नाहीं ॥
अगजगमय सब रहित विरागी * प्रेमते प्रभु प्रगटै जिमि आगी ॥
मोर वचन सबके मनमाना * साधु साधु करि ब्रह्म बखाना ॥

दोहा–सुनि विरंचि मन हर्ष तनु, पुलकि नयन बह नीर ॥
सुस्तुति करत सजोरि करं, सावधान मतिधीर ॥२०७॥

छंद०–जयजयसुरनायक जनसुखदायक प्रणतपाल भगवन्ता ।
गोद्विज हितकारी जयअसुरारी सिंधुसुता प्रियकन्ता ॥
पालन सुर धरणी अद्भुत करणी मर्म न जानै कोई ।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करौ अनुग्रह सोई ॥२०॥१
जय जय अविनाशी सब घटवासी व्यापक परमानन्दा ।
अविगत गोतीता चरित पुनीता माया रहित मुकुन्दा ॥

छन्दार्थ–देवताओंके स्वामीजनोंको सुखदाता, दीनोंके पालनेहारे भगवान् तुम्हारी जयहो.गो ब्राह्मणकेहितकरनेहारे असुरोंको मारनेवाले लक्ष्मीके प्यारे आपकी जयहो सुरधरणीके पालनेवाले अद्भुत जिनकी करणी और मर्म कोईभी जिनका नहीं जानताहै जो स्वभावसेहीदयालु तथा दीनों के ऊपर कृपाकरनेहारे सो हमारे ऊपर अनुग्रहकरो ॥१॥ हे अविनाशी ! सबके हृदयमें वास करनेहारे सबके व्यापक परमानन्दरूप अद्वितीय गति इन्द्रियोंसे परे पवित्र चरित्रवाले मायारहित और मुकुंद

१ ब्रह्मलोक । २ नागरहित । ३ क्षीरसमुद्र । ४ अचल । ५ जंगम । ६ व्यापक । ७ रागद्वेषते रहित ।
८ विधि । ९ जड । १० हाथ ।

जेहि लागि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनिवृन्दा ।
निशिवासरध्यावहिंहरिगुणगावहिंजयतिसच्चिदानन्दा २१॥२
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविधि बनाई संग सहाय न दूजा ।
सो करहु अघारी चिन्त हमारी जानिय भक्ति न पूजा ॥
जो भव भय भंजन जनमनरंजन गंजन विपति वरूथा ।
मनवचक्रमवानीछाँडिसयानीशरणसकलसुरयूथा ॥२२॥३
शारदश्रुति शेषा ऋषय अशेषा जाकहँ कोउ न जाना ।
जेहि दीनपियारे वेद पुकारे द्रवो सो श्रीभगवाना ॥
भववारिध मन्दर सब विधि सुन्दर गुणमंदिर सुखपुंजा ।
मुनि सिद्धसकलसुरपरमभयातुरनमतनाथपदकंजा॥२३॥४

दोहा--जानि सभय सुर भूमि मुनि, वचन समेत सनेह ॥
गगन[१] गिरा गम्भीर भइ, हरणि शोक सन्देह ॥२०८॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा *तुमहिं लागि धरिहौं नर वेशा ॥
अंशनि सहित मनुज अवतारा * लेहौं दिनकर वंश उदारा ॥
कश्यप अदिति महातपकीन्हा * तिनकहँ मैं पूरब वर दीन्हा ॥
ते दशरथ कौशल्या रूपा *कोशलपुरी प्रगट नर भूपा ॥
तिनके गृह अवतरिहौं आई * रघुकुलतिलकसोचारिउभाई ॥
नारद वचन सत्य सब करिहौं* परमशक्ति समेत अवतरिहौं ॥

अर्थात् मोक्षदाताहो जिसके वास्ते वैरागी अतिप्रेमसे मोहत्यागकर रात दिन ध्यान करते हैं और आपके गुण गातेहैं हे सच्चिदानन्द तुम्हारी जयहो ॥ २॥ जिसने दूसरेकी सहायता विना सृष्टि उपजाकर सत, रज, तम तीन प्रकारकी बनाई सो हे पापनाशक ! हमारी सुधलो हम तुम्हारी भक्ति और पूजा नहीं जान्ते हैं सो संसारके भय दूर करनेहारे जनोंके मनको आनंद देनेहारे विपत्तिदूर करनेहारे मन वचन कर्म वाणीसे चतुरता छोड़के देवता सब आपकी शरणहैं ॥ ३ ॥सरस्वती शेष सम्पूर्ण ऋषि जिसको कोई नहीं जान्ता जिसको दीन पियारे हैं ऐसा वेद पुकारताहै सो भगवान् हमारे ऊपर कृपाकरो संसारसमुद्रके मथनेको मंदराचल गुणोंके मंदिर सुखके ढेरहो मुनि सिद्ध देवता सब परमभयातुरहो आपके चरणकमलको नमस्कार करते हैं ॥ ४ ॥

* किसीसमय कश्यप अदितिने तपस्याकर विष्णुसे यह वर मांगा कि, जब जब आप अवतार लेवैं तब तब हमहीं आपके माता पिता होवैं इसलिये प्रत्येक अवतारमें यही माता पिता हुये यहाँभी दशरथ कौशल्यामें इनका अंश दिखलाकर पूर्व वरदानको सिद्ध किया ॥

[१] आकाशवाणी ।

हरिहौं सकल भूमि गरुआई * निर्भय होहु देव समुदाई ॥
गगन ब्रह्मवाणी सुनि काना * तुरत फिरे सुर हृदय जुडाना ॥
तब ब्रह्मा धरणिहि समुझावा * अभय भई भरोस जियआवा ॥
दोहा-निजलोकहि विरंचि गये, देवन इहै सिखाय ॥
वानर तनु धरि धरणि महँ, हरिपद सेवहु जाय ॥ २०९ ॥
गये देव सब निज निज धामा *भूमि सहित पाये विश्रामा ॥
जो कछु आयसु ब्रह्मै दीन्हा * हर्षे देव विलम्ब न कीन्हा ॥
बनचर देह धरी क्षिति माहीं * अतुलितबलप्रताप तिनपाहीं ॥
गिरि तरु नख आयुध सबबीरा * हरि मारग चितवहिं रणधीरा ॥
गिरि कानन जहँ तहँ भरिपूरी * रहेनिजनिजअनीकरचिरूरी ॥

अथ क्षेपक ।

"यह सब चरित सुना विबुधारी * अपने मन यों कही विचारी ॥
रहत सकल मम वश रविवंशी * ते का सकिहैं मोहिं विध्वंसी ॥
भये दिलीप भूप जब आई * खबर दूतसे रावण पाई ॥
तुरत चला बल देखन आवा * द्विज लख नृप रानिन बैठावा ॥
पूजत पग प्रगटेसि निज रूपा * भागी भवन भीरु मणिभूपा ॥
तब रावण सरयू तट आयो * अर्चत तंदुल नृपति चलायो ॥
पूछा लोगन ते तब कहेऊ *धेनुहिं हरि यक मारन चहेऊ॥
सुमिरत सोइ शालिके प्रेरे * शत शर है लागे हरि केरे ॥
सुनिदशमुखमनअचरजआवा * देखा जाय मृतक वन पावा ॥
समुझि प्रताप गयो निज धामा* नृपते बात कही नृपवामा ॥
दोहा-रावण कृत सुनि अवधपति, चंगुल भरि जललीन ॥

*शंका-सम्पूर्ण देवता तो ब्रह्मलोकको गयेथे और अब लिखा कि "निज लोकहि विरंचि गये"
उत्तर-ब्रह्माजीके दो लोक हैं एक निज लोक, दूसरा सुमेरु पर्वतपर सभास्थान सो देवता सभास्थानमें गये थे वहाँसे ब्रह्मा अपने लोकको गये अथवा ब्रह्माजीने देवतौंसे कहाकि तुम वानरका शरीर धारण करो और निजलोक अर्थात् अपनेको कहा कि, मैंभी अवतारलूंगा सो जाम्बवानका अवतार ब्रह्माजीके अंशसे हुआ ॥

१ गोरूपपृथ्वी । २ बंदरोंकी । ३ भूमि । ४ ऐश्वर्य । ५ पर्व्वत । ६ वृक्ष । ७ चावल । ८ सिंह ।

पवनमन्त्र पढ़ि क्रोधयुत दक्षिणदिशि तब दीन ॥ २१० ॥
भये विशिख दशलाख लखि, कह नृप लंकहि जाहु ॥
सहित त्रिकूट समुद्र महँ, बोरि फिरहु तेहि बाहु ॥ २११ ॥
सो०–चले पवनगति मोरि, करन लगे विध्वंस गढ़ ॥
मयतनया कर जोरि, दीन दुहाई नृपतिकी ॥ २८ ॥
राजा कोउ रहै ह्याँ नाहीं * लौट गये शर तब नृप पाहीं ॥
पुनि बहु दिन उपरान्त सुहावन * रघुराजा जन्मे जगपावन ॥
मारुतबाण लंक गृह ढाये * मयजा वचन सुनत फिर आये ॥
पुनि अज भये लरनको आवा * बाण प्रेरि गढ़लंक पठावा ॥
अनलअस्त्रते कटक समेता * दीन ताहि पहुँचाय निकेता ॥
तेजवान लखि रहा चुपाई * ता पाछे दशरथ भये आई ॥
दोहा–सुनि रावण निज दूत मुख, मॉंग पठायो दंड ॥
हरि शर प्रेर भूप कहँ, जड्यो कपाट प्रचंड ॥ २१२ ॥
रावण जो पट लेइ उघारी * तौ हम कर देवहिं त्रिपुरारी ॥
मंदिर द्वार गये सब मूंदी * रहा उघार असुरपति खूंदी ॥
टसको पट न भटन मुख मोरे * मिली मार्ग मयजा कर जोरे ॥
तब रावण तप हेत सिधायो * वरहित पितामहा तहँ आयो ॥
वरंब्रूहि ब्रह्मा कह बानी * सुन रावण बोला सुखमानी ॥
दशरथ नृपति वीर्यते सोई * जगमें पुत्र न प्रगटै कोई ॥
दोहा–सुनि ब्रह्मा दुख मानकर, एवमस्तु उच्चार ॥
गयो भवन दशकंठ तब, मनमहँ कीनविचार ॥ २१३ ॥
तब दशमुख कोशलपुर जाई * कौशल्या हरि ली बरिआई ॥
सहित मँजूषा सागर जाई * राघो मच्छ दिहसि सौंपाई ॥
चतुरानन धर रावण रूपा * लाये माँग सुता सोइ भूपा ॥
वनमेंधारि विधि गये विधि लोका * तहँ सुमंत्र पट खोल विलोका
तब कौसल्या गिरा उच्चारी * हममैं कोशलराजकुमारी ॥

१ बाण । २ मन्दोदरी । ३ राजा दिलीपकी । ४ पवनबाण । ५ अग्निबाण । ६ सेना । ७ घर ।
८ किंवार । ९ लड़ाई । १० ब्रह्मा । ११ देखा ।

नहिं जानों कहँ मछली काया * [illegible] उठ धावा ॥
लेआये कौशलपुर तामा * शोभित देश रहा नृपधामा ॥
जाय मंजूषा भूपहिं दीन्हा * [illegible]सोवर्णनकीन्हा ॥
बोले नृप तुम को हो ताता * कहै सुमंत्र सुनिय प्रभु बाता ॥
अवधपुरी दशरथ [illegible] * ताकर मैं मंत्री सज्ञानी ॥
तब राजा अतिशय सुख पाई * कन्या दशरथको दइ जाई ॥

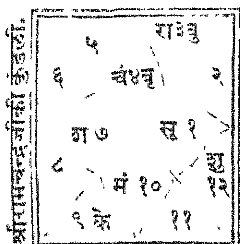
इति क्षेपक ।

यह सब रुचिर चरित मैं भाषा * अब सो सुनहु जो बीचहि राखा
अवधपुरी रघुकुल मणिराऊ[1] * वेदविदित तेहि दशरथनाऊ ॥
धर्मधुरंधर गुणनिधि ज्ञानी * हृदय भक्ति मति शारंगपानी ॥
दोहा-कौशल्यादिक नारि प्रिय, सब आचरण पुनीत[2] ॥
पति अनुकूल प्रेम दृढ़, हरिपद कमल विनीत ॥ २१४ ॥
एक बार भूपति मन माहीं * भै गलानि[3] मोरे सुत नाहीं ॥
गुरुगृह गये तुरत महिपाला * चरणलागिकरिविनयविशाला ॥
निजदुखसुखनृपगुरुहिसुनायो * कहिवशिष्ठबहुविधिसमुझायो ॥
धरहु धीर होइहैं सुत चारी * त्रिभुवन विदित भक्तभयहारी ॥
शृङ्गीऋषिहिं वसिष्ठ बुलावा * पुत्रलागि शुभ यज्ञ करावा ॥
भक्तिसहितमुनिआहुतिदीन्हे * प्रगट अग्नि चारु चरु[4] लीन्हे ॥
जो वसिष्ठ कछु हृदय विचारा * सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा ॥
यह हवि बाँटि देहु नृपजाई * यथायोग्य जेहि भाग बनाई ॥

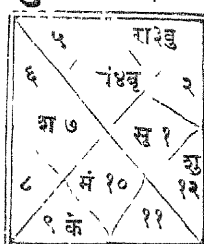
*राजा दशरथकी एक शान्ता कन्या थी, अंग देशके राजा रोमपादने शान्ताको राजा दशरथसे मांगलिया दोनोंकी मित्रताथी राजाने देदी. रोमपादने कन्याके समान पालनकी. एकसमय अंगदेशमें काल पड़ा तब महात्माओंने कहा यदि विभाण्ड ऋषिके पुत्र शृंगीऋषि आवैं तो वर्षा हो परन्तु उनके पिताके डरसे कोई उन्हें न लासका. तब वेश्याओंने वहां जानेकी इच्छाकी और जिस समय उनके पिता आश्रमपर नहींथे तब यह उनके पासगई और शृंगीऋषि उन्हें तपस्वीजान उनके डेरेपर गये तब यह नावपर चढ़ा छलसे अंगदेशमें लाई. वर्षाहुई, राजाने शान्ता कन्या व्याहदी पिताभी ज्ञानसे जान चुपरहे तबसे यह वहीं रहे राजा दशरथने अंगदेशसे बुलाया ॥

१ राजवर । २ पवित्र । ३ लज्जा-विह्वलता । ४ हविकापिंड ।

दोहा-तब अदृश्य पावक भये, सकल सभहि समुझाय ॥
परमानन्द मगन नृप, हर्ष न हृदय समाय ॥ २१५ ॥
गुरुपद वंदि भूप गृह आये * मंजुल मंगल मोद बधाये ॥
तबहिं राउ प्रियनारि बुलाई * कौसल्यादि तहाँ चलि आई ॥
अर्द्ध भाग कौशल्यहि दीन्हा * उभयभाग आधेकर कीन्हा ॥
कैकेयी कहँ नृप लै दयऊ * रहेउसोउभयभागपुनिभयऊ ॥
कौशल्या कैकई हाथ धारि * दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्नकारि ॥
इहिविधि गर्भसहित सब नारी * भयउ हृदय हर्षित सुख भारी ॥
जादिनते हरि गर्भहि आये * सकललोक सुख संपति छाये ॥
मन्दिर महँ सब राजहिं रानी * शोभा शील तेजकी खानी ॥
सुखयुतकछुककालचलिगयऊ * जेहिप्रभुप्रगटसोअवसरभयऊ ॥
दोहा-योग लग्न ग्रह वार तिथि, सकल भये अनुकूल ॥
चर अरु अचर हर्ष युत, रामजन्म सुखमूल ॥ २१६ ॥
नवमी तिथि मधुमास पुनीता * शुक्लपक्ष अभिजित हरिप्रीता ॥
मध्यदिवस अतिशीत न घामा * पावनकाल लोक विश्रामा ॥
शीतल मन्द सुरभि वह वाऊ * हर्षित सुर सन्तन मन चाऊ ॥
वनकुसुमितागिरिगणमणियारा * स्रवहिंसकलसरितामृतधारा ॥
सो अवसर विरंचि जब जाना * चलेसकलसुर साजिविमाना ॥
गगनविमल संकुल सुर यूथा * गावहिं गुण गंधर्व बरूथा ॥
वर्षहिं सुमन सु अंजलि साजी * गहगह गगन दुन्दुभी बाजी ॥
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा * बहुविधिलावहिंनिजनिजसेवा ॥
दोहा-सुरसमूह विनती करी, पहुँचे निज निज धाम ॥
जगनिवास प्रभु प्रगटे, अखिल लोक विश्राम ॥ २१७ ॥



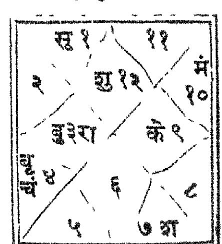
श्रीरामचन्द्रजीकी कुंडली.



श्रीलक्ष्मणजीकी कुंडली.



श्रीभरतजीकी कुंडली.



श्रीशत्रुघ्नजीकी कुंडली.

१ अन्तर्द्धान । २ आग्नि । ३ दोभाग । ४ चैत्रकामहीना । ५ पवित्रकाल । ६ सुगंधित । ७ हवा ।
८ वनफूलोंसे प्रफुल्लित । ९ मणियोंकी खानि ।

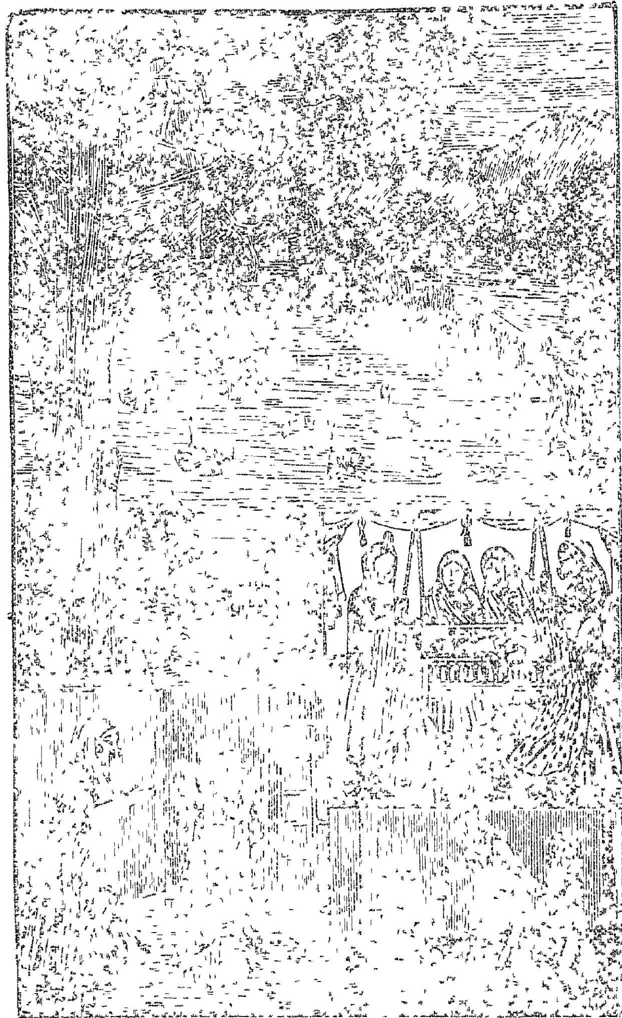
अथ क्षेपक ।

(कुंडलीवर्णन) घनाक्षरी-कवित्त ।

चैत सित नौमी सोम लखत पुनर्वसु है शूल योग कौलव करण शुभकारीहैं ॥ कर्कहै लगन तहां सोहैं गुरु चन्द्र दोऊ शनिहैं तुलाके धन केतु रिपुहारीहैं ॥ भौमहै मकर मीन शुक्र मेष भानु देख मिथुन परेहैं बुध साथ तम भारीहै ॥ रसिकबिहारी राम कुण्डली अनूप ऐसी विशद विचित्र या विधाता निरधारीहै॥ १ ॥

दोहा-भरत जन्म ग्रह रामते, ध्रुव न्यारे ध्रुव येक ॥
यह विभेद सो जानिहै, जिनके विमल विवेक ॥ २ ॥
चैत शुक्ल दशमी नखत, पुष्य भौम दिन जान ॥
गंड योग तैतिल करण, भरत सुजन्म प्रमान ॥ ३ ॥
राम धर्म सो भरत तन, खेचर एक समस्त ॥
भरत कुंडली कुल कलित, विधि इमि लिखी प्रशस्त ॥ ४ ॥
पुनि लक्ष्मण रिपुदमनको, जन्म एकही संग ॥
याते एकहि लग्न ग्रह, एक पांचहू अंग ॥ ५ ॥
चैत शुक्ल एकादशी, अश्लेषा बुधवार ॥
वृद्धियोग गर करणमें, दुहूँ जन्म निरधार ॥ ६ ॥
लषण शत्रुहन लग्न ग्रह, राम सरिस सब ठान ॥
चहूँ कुंडली याहि विधि, विधि विरचित शुभ दान ॥ ७ ॥
विधि विरचित वर पत्रिका, विशद विचित्र ललाम ॥
लखि वसिष्ठ सुरगुरु सहित, मुदित सुमिर उर राम ॥ ८ ॥

इति क्षेपक ।


राजा दशरथकरके सरवनवध तथा श्रीरामजन्म।

छंद-चौपय्या।

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्याहितकारी।
हर्षित महतारी मुनिमनहारी अद्भुतरूप निहारी ॥
लोचन अभिरामा तनुघनश्यामा निज आयुध भुजचारी।
भूषणवनमाला नयनविशाला शोभासिंधु खरारी ॥ २४ ॥ १

छन्दार्थ-सोइ दीनदयालु कृपालु कौशल्याके हितकारी प्रगटहुये तब महतारी मुनियोंकाभी मन हरनेहारा अद्भुतरूप देखकर प्रसन्नहुई. कैसेहैं प्रभु जिनके मनोहर नयन घनश्याम शरीर चार भुजा, शंख, चक्र. गदा. पद्म सहित भूषण वनमाला चरणतक लंबायमान बड़ेरनेत्र शोभाके

कहदुहुँकरजोरी अस्तुतितोरी केहिविधि करौं अनन्ता ।
माया गुण ज्ञानातीत अमाना वेद पुराण भनन्ता ॥
करुणासुखसागर सबगुणआगर ज्यहिगावहिं श्रुतिसंता ।
सो ममहितलागी जनअनुरागी प्रगटभये श्रीकन्ता ॥ २५॥२

ब्रह्माण्डनिकाया निर्मितमाया रोम रोम प्रति वेद कहैं ।
ममउर सो वासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहैं ॥
उपजाजबज्ञाना प्रभुमुसकाना चरितबहुतविधिकीन्हचहै ।
कहिकथासुनाई मातुबुझाई जेहिप्रकार सुतप्रेमलहै ॥२६॥ ३

माता पुनि बोली सोमति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजैशिशुलीला अतिप्रियशीला यह सुख परमअनूपा ॥
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यहचरितजेगावहिंहरिपदपावहिंतेनपरहिंभवकूपा ॥२७॥४

दोहा–विप्र धेनु सुर संतहित, लीन्ह मनुज अवतार ॥
निजइच्छा निर्मित तनु, माया गुण गोपार ॥२१८॥

सुनि शिशुरुदनपरमप्रियवानी * संभ्रम चलि आईं सब रानी ॥
हर्षित जहँ तहँ धाईं दासी * आनँद मगन सकल पुरवासी॥
दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना * मानहु ब्रह्मानंद समाना ॥

समुद्र राक्षसोंके मारनेहारे हैं ॥ १ ॥ हाथ जोड़ बोली कि–हे अनन्त ! तेरी स्तुति किस प्रकार करूं माया गुण ज्ञानसे परे हो मानरहितहो ऐसा वेद पुराण कहते हैं दया और गुणोंके समुद्र सब गुणोंमें श्रेष्ठ जिसको वेद और संत गातेहैं सो मेरे कारण प्रेमकर लक्ष्मीपति प्रगटहुये ॥ २॥ बहुतसे ब्रह्मांड मायासे निर्मित आपके रोम रोममें हैं ऐसा वेद कहता है सो मेरे हृदयमें वास करताहुआ यह बड़ी हँसीकी बात है इसे सुनकर धीरोंकी मति भी स्थिर नहीं रहती जब कौशल्याको ज्ञान उपजा तो रामचंद्र हँसे क्योंकि बहुत प्रकारके चरित्र करना चाहतेथे पूर्वजन्मकी कथा कह माताको समझाया जिससे पुत्रका प्रेम बढ़ै ॥ ३ ॥ फिर जब यह मति डोली तौ माता ने कहा पुत्र यह रूप तजो बाललीला जो परमसुखदायकहै सो करो. यह वार्त्ता सुन वे चतुर सुजान देवताओंके राजा बालकहो रोदन करने लगे इस चरित्रको जो गाते हैं वे संसाररूपी कूपमें नहीं पड़ते अन्तमें नारायणके लोकको जावैंगे ॥ ४॥

परम प्रेम मन पुलक शरीरा * चाहत उठन करत मतिधीरा ॥
जाकर नाम सुनत शुभ होई * मोरे गृह आवा प्रभु सोई ॥
परमानंद पूरि मन राजा * कहा बुलाइ बजावहु बाजा ॥
गुरु वसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा * आये द्विजन सहित नृपद्वारा ॥
अनुपम बालक देखि न जाई * रूपराशिगुण कहि न सिराई ॥

दोहा–तब नांदीमुख श्राद्धकरि, जातकर्म सब कीन्ह ॥
हाटक[1] धेनु वसन मणि, नृप विप्रन कहँ दीन्ह ॥ २१९ ॥

ध्वज पताक तोरण पुर छावा * कहिनजाय ज्यहिभाँतिबनावा॥
सुमनवृष्टि आकाश ते होई * ब्रह्मानंद मगन सब कोई ॥
वृंद[2] वृंद सबचलीं लुगाईं[3] * सहज[4] शृँगार किये उठि धाईं ॥
कनककलश मंगल भरि थारा * गावत पैठहिं भूप दुआरा ॥
करि आरती निछावरि करहीं * बार बार शिशु[5] चरणन परहीं ॥
मागध सूत बंदि गुणगायक * पावनगुण गावहिं रघुनायक ॥
सर्वस दान दीन्ह सब काहू * ज्यहि पावा राखा नहिं ताहू ॥
मृगमद[6] चन्दन कुंकुमसींचा * मचीसकल बीथिनविचकींचा॥

दोहा–गृह गृह बाज बधाव शुभ, प्रगट भये सुखकन्द ॥
हर्षवन्त सब जहँ तहँ, नगर नारि नरवृन्द ॥२२०॥

केकयसुता सुमित्रा दोऊ * सुंदरसुत जन्मत भइँ सोऊ ॥
वहसुखसम्पतिसमयसमाजा * कहिनसकै शारद अहिराजा ॥
अवधपुरी सोहै इहिभाँति * प्रभुहि मिलन आई जनु राति॥
देखि भानु जनु मनसकुचानी * तदपि बनी सन्ध्या अनुमानी ॥
अगर धूप जनु बहु अँधियारी * उड़ै अबीर मनहु अरुणारी ॥
मन्दिरमणि समूह जनु तारा * नृपगृहकलश सो इंदु[8] उदारा ॥
भवन वेदध्वनि अति मृदुवानी * जनुखगमुखरसमयसुखसानी॥
कौतुक देखि पतंग[9] भुलाना * एकमास[10] तेहि जात न जाना ॥

[1] सोना । [2] झुंडकेझुंड । [3] स्त्रियाँ । [4] जोजैसा शृंगार किये थी शीघ्रतासे वैसेही चली । [5] बालकरूप श्रीरामचंद्र परब्रह्मपरमेश्वर । [6] कस्तुरि [7] । हरणकगालिमें । [8] चन्द्रमा । [9] सूर्यनारायण । [10] एकमहीना ।

दोहा-मास[1] दिवसका दिवसभा, मर्म[2] न जाना कोइ ॥
रथ समेत रवि थाकेउ, निशा[3] कौन विधि होइ ॥ २२१ ॥

यह रहस्य काहू नहिं जाना * दिनमणिचले करतगुणगाना ॥
देखि महोत्सव सुरमुनि नागा * चले भवन वर्णत निज भागा ॥
औरौ एक कहौं निज चोरी * सुनुगिरिजा अति दृढ मति तोरी
काकभुशुण्डि संग हम दोऊ * मनुजरूप जानै नहिं कोऊ ॥
परमानन्द प्रेम सुख फूले * बीथिन फिरहिं मगनमन भूले॥
यह सब चरित[4] जानपै सोई * कृपा रामकी जापर होई ॥
त्यहिअवसरजोज्यहिविधिआवा * दीन्हभूपजोज्यहिमनभावा ॥
गज रथ तुरँग हेम[6] गो हीरा * दीन्हें नृप नानाविधि चीरा ॥

दोहा-मन सन्तोष सबनके, जहँ तहँ देहिं अशीश ॥
सकल तनय चिरजीवहु, तुलसिदासकेईश ॥ २२२ ॥

कछुक दिवस बीते यहि भाँती * जातनजानहिदिन अरु राती ॥
नामकरणकर अवसरजानी * भूप बोलि पठये मुनिज्ञानी ॥
करि पूजा भूपति असभाषा * धरियनामजोमुनिगुनिराखा ॥
इनके नाम अनेक अनूपा * मैं नृप कहब स्वमतिअनुरूपा ॥
जो आनन्दसिंधु सुखराशी * सीकरते[7] त्रैलोक्य प्रकाशी ॥
सो सुखधाम राम असनामा * अखिललोकदायक विश्रामा ॥
विश्वभरण पोषण करु जोई * ताकर नाम भरत अस होई ॥
जाके सुमिरण ते रिपुनाशा * नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा ॥

दोहा-लक्षण धाम रामप्रिय, सकल जगत आधार ॥
गुरु वसिष्ठ त्यहि राख्यऊ, लक्ष्मण नाम उदार ॥ २२३ ॥

धरचउ नाम गुरु हृदय विचारी * वेदतत्त्व नृप तव सुत चारी ॥
मुनिजन धन सर्वस शिवप्राना * बालकेलि रस तेहि सुखमाना॥

१ वह दिन बढकर एक महीनाके तुल्य होगया। २ भेद। ३ रात्रि। ४ चरित्र। ५ श्रीसूर्यनारायण। ६ स्वर्ण। ७ सीकर अर्थात् पानीके एक बूंदसे तीनों लोक अर्थात् संपूर्ण ब्रह्मांडको प्रकाश करनेहारा।

बारहिते निज हित पतिजानी * लछमण रामचरण रतिमानी ॥
भरत शत्रुहन दोनों भाई * प्रभु सेवक जस प्रीति बढाई ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी * निरखहिंछविजननी तृणतोरी॥
चारिउ शील रूप गुणधामा * तदपिअधिक सुखसागररामा॥
कबहुँ उछंग कबहुँ बरपलना * मातु दुलार करहिं प्रियललना ॥
हृदय अनुग्रह इन्दुप्रकाशा * सूचत किरण मनोहरहासा ॥
दोहा--व्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुण विगत विनोद ॥
सो अज प्रेम भक्तिवश, कौशल्याकी गोद ॥ २२४ ॥
काम कोटि छबि श्याम शरीरा * नीलकंज बारिद गंभीरा ॥
अरुण चरण पंकज नखजोती * कमल दलन बैठे जनु मोती ॥
रेख कुलिश ध्वज अंकुश सोहैं * नूपुरध्वनि सुनि मुनि मन मोहैं
कटि किंकिणी उदर त्रयरेखा * नाभिगंभीर जान जेहि देखा ॥
भुज विशाल भूषणयुतभूरी * हिय हरिनख शोभा अति रूरी
उरमणिहार पदिककी शोभा * विप्रचरण देखत मनलोभा ॥
कम्बुकण्ठ अति चिबुक सुहाई * आनन अमितमदन छबिछाई॥
दुइ दुइ दशन अधर अरुणारे * नासा तिलक को बरणै पारे ॥
सुन्दर श्रवण सुचारु कपोला *अतिप्रिय मधुरसुतोतरि बोला॥
नीलकमल दोउनयन विशाला *विकटभृकुटिलटकनवरमाला ॥
चिक्कन कच कुञ्चित गभुआरे * बहु प्रकार रचि मातु सँवारे ॥
पीतझिंगुलिया तनु पहिराये * जानुपाणि विचरत मोहिभाये ॥
रूपसकहिं नहिं कहि श्रुतिशेषा * सोजानै स्वप्नेहु जिन्ह देखा ॥
दोहा--सुख सन्दोह मोह पर, ज्ञान गिरा गोतीत ॥
दम्पति परम प्रेम वश, करि शिशु चरित पुनीत ॥ २२५ ॥
इहिविधि राम जगतपितुमाता * कोशलपुर बासिन सुखदाता ॥
जिन रघुनाथ चरणरति मानी * तिनकी यह गति प्रगटभवानी ॥
रघुपति विमुख यतनकरकोरी * कवनसकै भवबंधन छोरी ॥

१ प्रीति । २ माता [illegible] ५ वाणी । ६ इन्द्रियनसेपरे । ७ श्रीपार्वती । ८ भक्तिहीन ।

जीव चराचर वश करिराखे * सो माया प्रभु सों भय भाखे ॥
भृकुटि विलास नचावै ताही * असप्रभुछाँड़िभजियकहुकाही ॥
मन क्रम वचन छाँड़ि चतुराई * भजतहिं कृपा करैं रघुराई ॥
इहिविधि शिशुविनोदप्रभुकीन्हा * सकलनगरवासिनसुखदीन्हा ॥
लै उछंग कबहूँ हलरावैं * कबहुँ पालने घालि झुलावैं ॥
दोहा-प्रेममगन कौशल्या, निशि दिन जात न जान ॥
सुत सनेह वश मातु सब, बालचरित कर गान ॥ २२६ ॥
एक बार जननी अन्हवाये * करि शृँगार पलँग पौढ़ाये ॥
निज कुल इष्टदेव भगवाना * पूजा हेतु कीन्ह पकवाना ॥
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा * आपु गई जहँ पाक बनावा ॥
बहुरि मातु तहँवाँ चलि आई * भोजन करत दीख रघुराई ॥
गइ जननी शिशुपहँ भयभीता * देखा बाल तहाँ पुनि सूता ॥
बहुरि आइ देखा सुत सोई * हृदय कम्प मन धीर न होई ॥
यहाँ वहाँ दोइ बालक देखा * मतिभ्रममोरिकि आन विशेखा ॥
देखि राम जननी अकुलानी * प्रभु हँसि दीन मधुरमुसुकानी ॥
दोहा-दिखरावा मातहि निज, अद्भुत रूप अखण्ड ॥
रोम रोम प्रति राजहिं, कोटि कोटि ब्रह्मण्ड ॥ २२७ ॥
अगणितरविशशिशिवचतुरानन * बहुगिरिसरितसिंधुमहिकानन
काल कर्म गुण दोष स्वभाऊ * सो देखा जो सुना न काऊ ॥
देखी माया सबविधि गाढ़ी * अति सभीत जोरे कर ठाढ़ी ॥
देखा जीव नचावै जाही * देखी भक्ति जो छोरै ताही ॥
तनुपुलकितमुखवचन न आवा * नयनमूँदि चरणन शिरनावा ॥
विस्मयवंत देखि महतारी * भये बहुरि शिशुरूप खरारी ॥
अस्तुति करि न जाय भयमाना * जगतपिता मैं सुतकरिजाना ॥
हरिजननिहि बहुविधिसमुझाई * यहजानि कतहुँ कहसिसुनुमाई ॥
दोहा-बार बार कौशल्या, विनय करै कर जोरि ॥

१ विराटरूप । २ चन्द्र । ३ ब्रह्मा । ४ पर्वत । ५ नदियां । ६ समुद्र । ७ पृथ्वी । ८ बन । ९ आश्चर्ययुक्त ।

अवजानि कबहुँ ब्यापई, प्रभु मोहिं माया तोरि ॥ २२८ ॥
बालचरितहरिबहुविधि कीन्हा * अति आनँद दासनकहँदीन्हा ॥
कछुककाल बीते सब भाई * बड़े भये परिजनसुखदाई ॥
चूडाकरण कीन्ह गुरु आई * बिप्रन्ह बहुत दक्षिणा पाई ॥
परममनोहर चरित अपारा * करत फिरत चारिउ सुकुमारा ॥
मन क्रम वचन अगोचर जोई * दशरथ अजिर बिचर प्रभु सोई
भोजन करत बुलावत राजा * नहिं आवहिं तजि बाल समाजा ॥
कौशल्या जब बोलन जाई * ठुमकि ठुमकि प्रभु चलहिंपराई ॥
निगमनेति शिव अन्त नपावा * ताहि धरै जननी हठि धावा ॥
धूसर धूरि भरे तनु आये * भूपति बिहँसि गोद बैठाये ॥
दोहा–भोजन करत चपल चित, इत उत अवसर पाइ ॥
भाजि चलैं किलकात मुख, दधि ओदन लपटाइ ॥२२९॥
बालचरित अतिसरल सुहाये * शारद शेष शम्भु श्रुति गाये ॥
जिनकर मन इनसननहिंराता * तेजगवंचक किये बिधाता ॥
भयेकुमार जबहिं सब भ्राता * दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ॥
गुरु गृह गये पढ़न रघुराई * अल्पकाल विद्या सब पाई ॥
जाकीसहज श्वास श्रुति चारी * सोहरि पढ़ यह कौतुक भारी ॥
विद्या विनय निगुण गुणशीला * खेलहिंखेल सकल नृपलीला ॥
करतल बाण धनुष अति सोहा * देखत रूप चराचर मोहा ॥
जेहि बीथिन बिचरहिं सबभाई * थकितहोहिंलखि लोग लुगाई ॥
दोहा–कोशलपुरवासीनर, नारि बृन्द अरु बाल ॥
प्राणहुँते प्रिय लागहीं, सबकहँ राम कृपाल ॥ २३० ॥

अथ क्षेपक ।

इक दिन एक सलूका आवा * नृपके द्वारे कीश नचावा ॥
देखि राम ठानी मचिलाई * कहेउ मोहिं कपि देउ मँगाई ॥
भूप मँगाय देन बहु लागे * तदपि न लेत रुदत पुनि आगे ॥

१ मुंडन–कर्णवेध । २ आँगने । ३ नंगे–बिनावस्त्र । ४ भात । ५ ठग । ६ आठवर्षके उपरान्त कुमारअवस्था कहतेहैं ।

तब नृप भाष्यो गुरुते जाई * सुनि वसिष्ठ बोले हरषाई ॥
जोहिहित हठ ठानत सुखखानी * सोकोपि और सुनो भमवानी ॥
केशरिपुत्र नाम हनुमाना * पंपापुरमें जिनकर थाना ॥
सो सुग्रीव निकट नृपराई * दूत पठावहु लेहु बुलाई ॥
तुरत भूप भट भूरि पठाये * सकलसुकंठपास चलि आये ॥
दोहा–कह्यो नृपति संदेश जब, तुरत दिये कपिराय ॥
आये रघुपति ढिग जबै, लीनों हृदय लगाय ॥ २३१ ॥
जहँ जहँ खेलैं राम सुरंगा * तहँ तहँ कपिराखैं निज संगा ॥
यक दिन राम पतंग उड़ाई * देवलोकसो पहुँची जाई ॥
तहँ हरिसुत जयंतकी नारी * अति विचित्र सो चंग निहारी ॥
कियो विचार पतंग जासुकर * सो जन कैसो है सुंदरवर ॥
पकर लई तब प्रभुने जानी * बोले महावीरसों बानी ॥
किन पकरी यह चंग हमारी * देखहु जाय छुडाउ बिचारी ॥
तुरत पवनसुत जाय निहारी * देहु छाँडि पुनि गिरा उचारी ॥
बोली जासु चंग यह आही * दरशन तासु कीन हम चाही ॥
ताहीते याको हम गहेऊ * आय पवनसुत प्रभुते कहेऊ ॥
सुनि प्रभुकहा कहो तुम जाई * चित्रकूट महँ देब दिखाई ॥
दोहा–जाय कही हनुमान पुनि, छोड दीन सुखपाय ॥
खैंची राम पतंग तब, रहे मोद मन छाय ॥ २३२ ॥
इति क्षेपक ।
बन्धु सखा सब लेहिं बुलाई * वनमृगया नित खेलहिं जाई ॥
पावनमृग मारहिं जियजानी * दिनप्रतिनृपहिंदेखावहिंआनी ॥
जे मृग रामबाणके मारे * ते तनु ताज सुरलोक सिधारे ॥
अनुज सखासँग भोजन करहीं * मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं ॥
ज्यहिविधिसुखीहोहिंपुरलोगा * करहिं कृपानिधिसोइ संयोगा ॥
वेद पुराण सुनहि मनलाई * आपुकहहिं अनुजहिंसमुझाई ॥

१ बंदर । २ अनेक । ३ सुग्रीव । ४ अपने । ५पतंग । ६ वाणी । ७ पकरा । ८ आनंद ।
९ शिकार । १० हरिण । ११ शरीर । १२ भाई ।

प्रातकाल उठिकै रघुनाथा * मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥
आयसुमाँगि करहिं पुरकाजा * देखि चरित हर्षहि मन राजा ॥
दोहा–व्यापक अकल अनीह अज, निर्गुण नाम न रूप ॥
भक्त हेतु नाना विधिहि, करत चरित्र अनूप ॥ २३३ ॥
यह सब चरित कहा मैं गाई * आगिल कथा सुनहु मन लाई ॥
विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी *बसहिंविपिनशुभआश्रमजानी॥
जहँ जप यज्ञ योग मुनि करहीं * अति मारीच सुबाहुहि डरहीं ॥
देखत यज्ञ निशाचर धावहिं * करहिं उपद्रव मुनि दुखपावहिं॥
गाधितनय मन चिन्ता व्यापी * हरिबिनुमरहिंननिशिचरपापी॥
तब मुनिवर मन कीन्हविचारा *प्रभु अवतरेउ हरण महिभारा ॥
यहि मिसु देखौं प्रभुपद जाई * करि विनती आनौं दोउ भाई॥
ज्ञान विराग सकलगुणअयना * सो प्रभु मैं देखब भरिनयना ॥
दोहा–बहुविधि करत मनोरथ, जात न लागी बार ॥
करि मज्जन सरयू सलिल, गये भूप दरबार ॥ २३४ ॥
मुनि आगमन सुना जब राजा * मिलन गयउ लै विप्रसमाजा॥
करि दण्डवत मुनिहिसनमानी* निज आसन बैठारे आनी ॥
चरण पखारि कीन्ह अति पूजा * मोसम धन्य आज नहिं दूजा॥
विविध भाँति भोजन करवावा *मुनिवर हृदय हर्ष अति छावा॥
पुनि चरणन मेले सुतचारी * राम देखि मुनि देह बिसारी ॥
भये मगन देखत मुख शोभा *जनु चकोर पूरण शशि लोभा ॥
तब मन हर्ष वचन कह राऊ * मुनिअसकृपाकीन्हनाहिंकाऊ॥
केहिकारण आगमन तुम्हारा * कहहु सो करत नलाउबबारा ॥
असुर समूह सतावहिं मोहीं * मैं याचन आयउँ नृप तोहीं ॥
अनुज समेत देहु रघुनाथा * निशिचर वध मैं होब सनाथा ॥
दोहा–देहु भूप मन हर्षित, तजहु मोह अज्ञान ॥
धर्म्मसुयश नृप तुम कहँ, इनकहँ अति कल्यान ॥२३५ ॥

१ सम्पूर्ण कलांतरहित । २ चेष्टा रहित । ३ अजन्मा । ४ विश्वामित्र । ५ धाम । ६ जड । ७ ब्राह्मण ।
८ राजादशरथ । ९ निकाय । १० लक्ष्मणजी ।

सुनि राजा अति अप्रियबानी * हृदयकम्पमुखद्युतिकुँभिलानी
चौथेपन पायउँ सुतचारी * विप्र वचन नाहिं कहेउ विचारी
माँगहु भूमि धेनु धन कोषा * सर्बस देउँ आज सहरोषा ॥
देह प्राणते प्रिय कछु नाहीं * सोउमुनिदेउँनिमिषइकमाहीं ॥
सबसुतप्रिय मोहिं प्राणकिनाईं * राम देत नहिं बनै गुसाईं ॥
कहँ निशिचर अति घोरकठोरा * कहँ सुंदरसुत परम किशोरा ॥
सुनि नृप गिरा प्रेमरस सानी * हृदय हर्ष माना मुनि ज्ञानी ॥
तब वासिष्ठ बहुविधि समुझावा * नृप संदेह नाश कहँ पावा ॥
अति आदर दोउ तनय बुलाये * हृदय लाइ बहुभाँति सिखाये ॥
मेरे प्राणनाथ सुत दोऊ * तुममुनि पिता आननहिंकोऊ ॥
दोहा–सौंपे भूपति ऋषिहि सुत, बहुविधि देइ अशीश ॥
जननी भवन गये प्रभु, चले नाइ पदशीश ॥२३६॥
सो०–पुरुषसिंह दोउ वीर, हर्षि चले मुनि भयहरण ॥
कृपासिंधु मति धीर, अखिल विश्व कारण करण ॥ २९ ॥
चलत विदा कीने हनुमाना * मिलिहैं बनहिं कहींभगवाना ॥
अरुणनयन उर बाहु विशाला * नीलजलजतनु श्याम तमाला ॥
कटि पटपीत कसे बरभाथा * रुचिर चाप सायक दुहुँहाथा ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई * विश्वामित्र महानिधि पाई ॥
प्रभु ब्रह्मण्य देव मैं जाना * मोहिं हित पिता तजे भगवाना ॥
चलेजात मुनि दीन्ह दिखाई * सुनि ताड़का क्रोधकरि धाई ॥
एकहिं बाण प्राण हरिलीन्हा * दीनजानित्यहिनिजपददीन्हा ॥
तबऋषिनिजनाथहिंजियचीन्हा * विद्यानिधिकहँ विद्या दीन्हा ॥
जाते लागि न क्षुधा पियासा * अतुलितबल तनु तेज प्रकाशा ॥
दोहा–आयुध सकल समर्पिकै, प्रभु निज आश्रम आनि ॥
कन्द मूल फल भोजन, दियं भक्तहित जानि ॥ २३७ ॥
प्रातकहा मुनिसन रघुराई * निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई ॥

१ प्रकाश । २ वृद्धापा । ३ राम–लक्ष्मण–भरत–शत्रुघ्न । ४ खजाना । ५ पल । ६ सम्पूर्ण विश्व । ७ श्रेष्ठतरकस ।
५ बला अतिबला द्वौ विद्या जिनते सब शास्त्र उत्पन्न भयेहैं ।

होम करन लागे मुनिझारी * आपुरहे मखकी रखवारी ॥
सुनि मारीच निशाचर क्रोही * लै सहाय धावा मुनिद्रोही ॥
बिनुफर बाण राम तेहि मारा * शतयोजन गा सागर पारा ॥
पावकशर सुबाहु पुनि मारा * अनुजनिशाचरकटकसँहारा ॥
मारिअसुर द्विज निर्भयकारी * अस्तुतिकराहिं देव मुनि झारी ॥
तहँपुनि कछुकदिवस रघुराया * रहे कीन विप्रन पर दाया ॥
भक्तिहेतु बहु कथा पुराना * कहे विप्र यद्यपि प्रभु जाना ॥
तब मुनि सादर कहा बुझाई * चरित एक प्रभु देखिय जाई ॥
धनुषयज्ञ सुनि रघुकुल नाथा * हर्षि चले मुनिवरके साथा ॥
आश्रम एक दीख मगमाहीं * खग मृग जीवजन्तुतहँ नाहीं ॥
पूछा मुनिहिं शिला प्रभु देखी * सकलकथा ऋषिकही बिशेखी ॥
दोहा–गौतमनारी शापवश, उपल देह धरि धीर ॥
चरण कमल रज चाहती, कृपा करहु रघुवीर ॥२३८॥

छंद–मात्रात्रिभंगी ।

परशत पद पावन शोकनशावन प्रगट भई तपपुंजसही ।
देखतरघुनायकजनसुखदायकसन्मुखहोइकरजोरिरही ॥

*किसी समय ब्रह्माने एक कन्या उत्पन्नकर उसका नाम अहल्या धरा जिसको परम सुन्दरी देख सब सुर मुनि मोहितहो इच्छा करने लगे ब्रह्माजी वह कन्या गौतमजीको धरोहरकी नाईं सौंपकर चलेगये कुछकाल उपरांत जब फिर ब्रह्माजी आये मुनिसे पूंछा वह कन्या क्या की मुनिने कहा लीजिये ऐसा कह सन्मुख उपस्थित करदी तब पितामहने उनकी जितेन्द्रियतासे सन्तुष्ट होकर वह कन्या उन्हींको प्रदान करदी तब इन्द्रको बडा क्षोभ हुआ. एकदिन गौतमजी तो घरमें नहींथे तब इन्द्र गौतमजीका स्वरूप धर द्वारपर पुकार अहल्यासे कहा कि,हम कामातुर हैं तब अहल्याने कहा महाराज! इस वेलामें आपका ज्ञान कहांगया. उत्तरदिया कि,तू पतिव्रताहै पति के वचनको मान तब वह आज्ञाभंग न करसकी और कार्यकी सिद्धिमें तत्परहुई उसी समय गौतम ऋषिने द्वारपर पुकारा पातिका शब्द पुनः सुन चितासें होय कोपकर इंद्रसे पूंछा कि सत्य बोल तू कौन है तब इंद्रने डरकर नाम कह दिया अहल्या इंद्रको छिपाय किंवाड खोलनेगई तब ऋषिने पूंछा इतनी देर कैसे हुई तब अहल्याने झूंठ बोला ऋषिने ध्यानसे सब चरित्रजान इंद्रको शापदिया कि, तेरे शरीरमें सहस्र भग होजायँगी और अहल्याको शाप दिया कि, तू शिला हो जब रामचंद्र आवेंगे तब पुनः अपने शरीरको प्राप्त होगी।

१ यज्ञ । २ क्रोध करके । ३ अभिमान । ४ दिन ।

अतिप्रेमअधीरा पुलकशरीरा मुखनहिं आवैवचनकही ॥
अतिशयबडभागीचरणनलागीयुगलनयनजलधारबही ॥२८॥
धीरजमनकीन्हा प्रभुकहँचीन्हा रघुपतिकृपाभक्तिपाई ॥
अतिनिर्मलवाणी अस्तुतिठानी ज्ञानगम्यजयरघुराई ॥
मैंनारि अपावनि प्रभुजगपावन रावणरिपुजन सुखदाई ॥
राजीवविलोचन भवभयमोचन पाहि पाहि शरणहिं आई २९ ॥
मुनिशापजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्रहमैंमाना ॥
देखेउँभरिलोचन हरिभवमोचन यहै लाभ शंकर जाना ॥
विनती प्रभु मोरी मैं मतिभोरी नाथ न माँगों वर आना ॥
पदकमलपरागा रसअनुरागा ममनमधुपकरैपाना ॥ ३० ॥
जेहिंपदसुरसरिता परमपुनीता प्रगटभई शिव शीशधरी ॥
सोई पदपंकजज्यहिपूजतअजममशिरधरेउकृपालुहरी ॥
इहिभाँतिसिधारी गौतमनारी बार बार हरिचरणपरी ॥
जो अतिमनभावासोवरपावागइपतिलोकअनन्दभरी ॥ ३१ ॥
दोहा--अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारणरहित कृपाल ॥
तुलसिदास शठ ताहि भज, छाँडिकपट जंजाल ॥ २३९ ॥
चले राम लक्ष्मण मुनि संगा * गये जहाँ जगपावनि गंगा ॥
अनुजसहितप्रभुकीन्हप्रणामा * बहुप्रकार सुख पायउ रामा ॥
पुनिसुरसरि उत्पति रघुराई * कौशिकसन पूछा शिरनाई ॥

अथ कथा क्षेपक--गङ्गाजीकी उत्पत्ति ।

कह मुनि प्रभु तव कुलइकराजा * नामसगर तिहुँलोक विराजा ॥
तेहिके युग भामिनि सुकुमारी *प्रथम केशिनी सुमति पियारी॥
सब प्रकार सम्पति सुरभ्राजा * सुतविहीन मनविस्मय राजा॥
एकसमय भामिनि दोउ साथा * गये वन तनय हेतुरघुनाथा॥
सघन सफल तरुसुन्दर नाना * तहँ भृगुमुनि तपतेज निधाना॥
दोहा--सहित नारि नृप मुदित मन, रहे वर्ष शतएक ॥

१ गंगाजी । २ दोनों । ३ पुत्र । ४ चिंता ५ वृक्ष ।

कीन्हें तप बल देखि भृगु, प्रस्तुति कीन्ह अनेक॥ २४० ॥
कहि निजदुखप्रणाम नृपकीन्हा *देआशीश तब मुनि वर दीन्हा॥
नृपरानीसन सुनि असभाषा * लेहु स्ववर जो जेहिअभिलाषा॥
सुनिमुनिवचन शीशतिननावा * देहुनाथ जो अति मनभावा॥
एकहि कह्यो एकसुत होना * दूसरि साठिसहस गुणलोना॥
हर्षित भयो सुभग वर पाई * पाणिजोरि चरणन शिरनाई॥
सहित भामिनी अवधहिं आये * हर्ष सहित कछुदिवस गँवाये॥
जानि सुघरि सुन्दरि सुखदाई * नामकेशि असमंजस जाई॥
सुमति प्रसवे इक तुम्बरि सोई * भये सुत प्रगट कहे मुनि जोई॥
निरखे सुत हरषित सब होई * मंगलचार किये सब कोई॥
हर्ष सहित दिये दान नरेशू * पूजि विप्र गुरु गौरि गणेशू॥
घृतघट सुन्दर विविध मँगाये * ते सब सुत नृप तिनमहँ नाये॥
दोहा--यहि विधि भये सकल सुत, पूजे सब मन काम॥
जाइ दिवस निशि हर्ष वश, सुनहु राम घनश्याम॥ २४१॥
पुरजन सब घर घरनि नरेशू * अति आनँद तनु मिटा अँदेशू॥
बालकेलि कर भये कुमारा * लीलाकरैं अगम संसारा॥
होइँसोकाज सकल मनचीते * यहिसुख बसत बहुत दिनबीते॥
सरयू नदी अवध जो अहई * विमलसलिल उत्तरतटबहई॥
प्रजालोकके बालक नाना * नित उठि तहाँ करैं अस्नाना॥
असमंजस तहँ तरणी आनी * तिनहिं चढाइ बोरिनिजपानी॥
भये प्रजा सब परम दुखारी* बालक वर्ध सुनि सुनहु खरारी॥
सकल गये जहँ बैठ नृपाला * बोले वचन नाइ पद भाला॥
तुम नृप चहहु प्रजाप्रतिपाला * सुत तुम्हार भा सबकर काला॥
तजब देश सब सुनहु नरेशू * बिना तजे नाहिं मिटै कलेशू॥
दोहा--तवसुत कीन्हें पाप बहु, मारे बालक वृन्द॥
तुमकहँ प्राण समान गृह, सकल प्रजन कहँ मन्द॥२४२॥

१ हाथ। २ बिन। ३ उत्पन्न किया। ४ रानियाँ। ५ आठ वर्षके। ६ निर्मल। ७ जल। ८ नाव।
९ अपने हाथसे। १० नाश। ११ श्रीरामचन्द्र। १२ मस्तक।

प्रजा गिरा सुनि धीरज दीन्हा * सुतहि देशते बाहर कीन्हा ॥
तासुतनय जग विदित प्रभाऊ * गुणनिधि अंशुमान तेहि नाऊ ॥
बसत हृदय नृपके सो कैसे * मुनिमन मीन सलिलरह जैसे ॥
भये प्रजा सबनिजनिज धामा * भये विलोकिमनगुण विश्रामा ॥
बहुरिनृपति मनकीन्ह विचारा * आइ भयो पन चौथ हमारा ॥
हितमंत्री गुरुसुतहु बुलाये * हिमगिरि विन्ध्यमध्यतब आये ॥
रुचिर वेदिका एक बनाई * देखत बनइ बरणि नहिं जाई ॥
मख आरम्भ छाँड़ि तब तुरँगा * वेगवन्त जिमि देखिय उरगा ॥
दोहा–सुरपति सुन भय दारुणहिं, मनमहँ करि अनुमान ॥
आन तुरंग तब लीन्हेउ, मर्म्म नकाहू जान ॥२४३॥
राखे आनि कपिल मुनि पाहीं * कोउ न जान काहुहि गमनाहीं ॥
गुप्तगत रहे जे सुभट सयाने * ले तुरंग रहु किनहु न जाने ॥
तिनसब आय कही नृप पाहीं * महाराज हम कहत डराहीं ॥
लीन्ह तुरंग काइ जान न कोई * कहा करिय जो आयसुहोई ॥
सुनत वचन नृप विस्मय पाये * सकल सुतन कहँ तुरत बुलाये ॥
जाहु तुरँग तुम हेरहु जाई * सकल चले चरणन शिरनाई ॥
सुरपति सम देखिय सबवीरा * सकल धनुर्द्धर अतिरणधीरा ॥
तिनहिं चलत धरणी अकुलाई * वलि पशु जीव भये सब आई ॥
सुमनवाटिका उपवन बागा * सरित कूप वापिका तडागा ॥
नगर गाँव मुनीश थल नाना * गिरिकन्दर काननं अस्थाना ॥
दोहा–इहि विधि खोजहु तुरँग तिन, आये भूपति पाहिं ॥
चरणन माथहि नाइकहि, खोज अश्वकी नाहिं ॥२४४॥
खोदहु महिसुत करहि पठाये * चले सकल पूरवदिशि आये ॥
तिनकेकरजिमिकुलिशसमाना * योजन भारि खोदहिं बलवाना ॥
देखि अतुल बल देव डराने * नरनाहन विरंचि सनमाने ॥
शोधत महिपताल सब आये * दिग्गज देखि एक शिरनाये ॥

१ वज्र । २ घोड़ा । ३ सर्प । ४ इन्द्र । ५ फुलवारी । ६ नदी । ७ तालाब । ८ वन ।

तिन पूँछा सबकथा सुनाये * बहुरि सकल दक्षिण दिशिआये
इहिविधि पुनि दूसरगजदेखा * अतिउज्ज्वलगज विमल विशेषा॥
ताहू बहु प्रणाम तिन कीन्हे * चले सुनत पश्चिम चित दीन्हे॥
तीसर देखि प्रदक्षिण कीन्ही * पुनिउत्तरदिशिशोधहि लीन्ही ॥
दिग्गजश्वेत निरखि सुखपाये * सकलकपिलमुनिपहँपुनिआये॥
खोजत महीं पार नाहिं पावा * शोभा चहुँदिशि जलधिसुहावा॥
दोहा– देखिनि जाइ तुरंग तब, बाँधा मुनिवर पास ॥
बोले वचन सकोप करि, मारहु सबकर नाश ॥२४५॥
खोदा महि हम जारिउ कोधा * रे रे दुष्ट बहुत तोहि शोधा ॥
कोउ कह चोर दीख बहुसांई * इहिसम छली और नहिं कोई ॥
परधन लैपताल पुनि आये * तस्कर मुनिवर भेष बनाये ॥
कोउ कहै यह मुनिवर नाहीं * समुझि दोख लक्षण मन माहीं॥
कोउकह एक [illegible] * अहो दुष्ट लै तुरंग हमारा ॥
सुनतवचनमुनि चितवा जबहीं * भये भस्म सब क्षणमें तबहीं ॥
उमावचन जोहि समुझि नबोला * सुधा होइ विष तिक्तमओला ॥
पावकजानि धरहिं कर प्रानी * जरहिंकाहिनहिंअतिअभिमानी॥
जानि गरल जे संग्रह करहीं * सुनहु राम ते काहेन मरहीं ॥
क्रोधकियो बिन किये बिचारा * भयेसकल तेहिते जरिछारा ॥
इहाँ नृपति अंशुमान बुलाये * नाहिं आये सब तिनहिं पठाये ॥
दोहा–दीन्ही नृपति अशीश तब, अतिहित बारहिंबार ॥
वेगि फिरहुलै तुरँग सुत, मेरे प्राणअधार ॥ २४६ ॥
चले नाइपद शीश कुमारा * विष्णुभक्त हित कुलउजियारा ॥
जहँ तहँ देखि मुनिनके धामा * पूँछि खबरि करिदण्डप्रणामा ॥
पन्नगं अहिसन पाइ अशीशा * चहुँदिग्गज[11]कहँ नायउशीशा ॥
यहिविधि शोधत मगमहँजाता * मिलेगरुड़ सुमतीकरभ्राता ॥
चरणपरत तब आशिष दयऊ * जेरसकलजेहिविधि सो कहेऊ॥

१ कांता । २ उज्ज्वलहाथी । ३ समुद्र । ४ घोडा । ५ चोर । ६ पार्वती । ७ अमृत ।
८ अग्नि । ९ विष । १० शेषनाग । ११ दिक्पाल–हाथी ।

सुनतहि वचन सोचभयो भारी * दिय अँगेश लिखाय प्रचारी ॥
अंशुमान तहँ मज्जन कीन्हा * क्रमक्रम सबहि जलांजलि दीन्हा
बहुरि गरुड़ बोले सुनु भ्राता * मैं तोहिं कहौं करिय यक बाता ॥
सो०-करु सुत सोइ उपाय, गंगा आवहिं अवनि महँ ॥
दरशनते अघ जाय, मज्जन कीन्हे परमसुख ॥ २९ ॥
षष्टिसहस तरिहैं येही विधि * गंगा पाय परम पावननिधि ॥
सुनि अस वचन हृदयमनभाये * सहितगरुड़ मुनिवर पहँआये ॥
तबखगेश मुनि चरणन नायउ * पूरबकथा सकल मुनि गायउ ॥
आयसु देइ तुरँग मुनि दीन्हा * हर्षि हृदय निजआश्रमहिंचीन्हा ॥
नगर समीप गरुड़ पहुँचाई * गये भवन निज तब रघुराई ॥
यहाँ तुरँगलै नृप शिरनाई * षष्टिसहस मुनि कथा सुनाई ॥
विस्मयहर्षविवश नृप भयऊ * कीन्हा यज्ञ दान बहु दयऊ ॥
बहुविधिनृपति राजपुनिकीन्हा * प्रजालोगकहँ अतिसुखदीन्हा ॥
दोहा-अंशुमानहित राज्यदै, निज मन हरिपद लाग ॥
गयउ सगर तप काज वन, हृदय अधिक अनुराग ॥ २४७ ॥
ताकेसुत दिलीपनृप भयऊ * वनतप हेतु उत्तरदिशि गयऊ ॥
वहाँ अगम तप कीन्हनृपाला * भये कालवशगयेकछुकाला ॥
कहहु कवन दिलीप प्रभुताई * सेवैं सकल नृपतिजोहिआई ॥
जुगवतजिहिनितसुरपतिरहहीं * महिमातासुकविकेहिविधिकहहीं
भागीरथ अस सुत भयोजासू * पितुसमप्रीतिअधिकउरतासू ॥
तिनहिं बोलि नृप दीन्हेउराजू * आप चले उठि तपके काजू ॥
मनमहँ करत पंथ अनुमाना * सुरसरि आव तजउँनतुप्राना ॥
निज मन तनुदीन्हेउनिमिदोऊ * फिर निज नगरक नाम न लेऊ ॥
सो०-याहि विधि करत विचार, नृप कीन्हे तब प्रबल तप ॥
बीते कछु यक काल, देह तजी कोउ प्रगट नहिं ॥ ३० ॥
जेहि सुरसरिलगितजितनु भूपा * सोतजि मूढ पियहि जलकूपा ॥

१ स्नान । २ पृथ्वी । ३ श्रीगंगाजी । ४ कुँवा ।

इहाँ भगीरथ अस मन भयऊ * पितुनआवबहुदिनचलिगयऊ ॥
कौत्सुब्रह्मनामतनयहुँ इक रहेऊ * दीन्हा राजनीति पटु कहेऊ ॥
माँगि नर्म पूर्वकथा सुत पाहीं * दीन्ह अशीश चले भरनाहीं ॥
निकसत नगर शकुन भलपाये * अतिहिनिविडवनपाहुँनृपआये ॥
तेहि भगीरथ बन सुख पावा * सुरसरिहित तपकहँमनभावा ॥
एक चरण दोउ भुजा उठाये * रविसन्मुखचितवाहिंमनलाये ॥
वर्षसहस बीते अहि भाँती * जात न जाने दिन अरु राती ॥
दीख उग्रतप अज चलिआये * बोले वचन नृपहि मन भाये ॥
चहहि नृपति जो ले बरदाना * बोले नृप करि अजहिं प्रणामा ॥
जो माँगौं सो जानत अहहू * सो मन माँगनप्रभुकिमिकहहू ॥
दोहा-तदपि कहौं प्रभु देहु वर, सब सन्तान कहँ वृद्धि ॥
दूसर माँगौं जोरि कर, गंगा आवहिं निद्धि ॥ २४८ ॥
एवमस्तु कहि पुनिविधिभवही * सुरसरि देहुँ राखिको सकही ॥
छूट जाहि पुनि तुरत रसातल * फिरहिननृपतिबहुरिसुनुभूतल ॥
तोहिते कहौं एक तोहिं पाहीं * अति दयालु शंकर मनमाहीं ॥
सोइशिव राखहिं देवसरि आजू * उनहिंजपे तब होइहै काजू ॥
असकहि विधि अन्तरहितभये * बहुरि भगीरथ शिवपहँ गये ॥
किय धरवर्ष अंगुष्ठ अधारा * बार बार शिव नाम उचारा ॥
शिव दयालु प्रगटे तब आई * हाथ जोरि नृप विनय सुनाई ॥
मैं राखब सुरसरि कह ईशा * बहुरि रामपतिध्यान करीशा ॥
दोहा-यहाँदेवसरि शिववचन, सुनि मन कीन्ह विचार ॥
जाउँ रसातल शिव सहित, जात न लावौं बार ॥ २४९ ॥
अन्तर्यामी शिवहि उपाई * निजशिरजटासोअगमबनाई ॥
यहा भगीरथ अस्तुति कीन्हीं * सुनिमृदुगिराछाँडिविधिदीन्हीं ॥
छूटेशोर भयउ जग भारी * चकित देव अहि दिग्गजचारी ॥
सुरसरि पुनि हरजटा समानी * वर्ष एक तहँ रहीं भवानी ॥

१ सुत । २ सघन-वन । ३ दारुण । ४ ब्रह्माजी । ५ पातालळोक । ६ पृथ्वी-मृत्युलोक ।

कौतुक देखि सकल सुर हर्षे * कहिजयजयशिरसुमनबहुबर्षे ॥
बहुरि भगीरथ सुमिरण कीन्हा * आगेनाद शिव सुन्दर कीन्हा ॥
सोहिरे भई तीनि पुनि धारा * एक गई नभ एक पतारा ॥
गइनभसोह्वैकिअइअलकाशिनि * देखत जग पातक सकलाशिनि ॥
दोहा-दूसरि गई पतालमें, नाम भोगावति हरण दुख ॥
तीसरि भइ गंगा सोई, सब सन्तनकौ करण सुखा ॥२५०॥
जलप्रवाह निरखत नृपति, उर अति अयउ अनन्द ॥
जैसे उमड़त सिन्धु तव, पूर्ण कला लख चन्द ॥२५१॥
आय भगीरथ पुनि शिरनाये * बोली सुरसरि वचन सुहाये ॥
वेगवन्त नृप रथ ले आनू * तुरततुरँगशुभगतिजिमिभानू ॥
तेहि रथचढि नृप चलु ममआगे * चलिहौं मैं तव पाछे लागे ॥
सुनि नृप दिव्यतुरँगरथ आना * चले हृदय सुमिरत भगवाना ॥
चली अग्रकरि नृपहि सुरसरी * देखन मुदित सुधानझरि करी ॥
चलत तेज कछु बरणि न जाई * ढूरहि गिरि लखु शैलसुहाई ॥
करँ कुलाहल खिंचि बहु भाँती * कमठ नक्र झष पन्ना ली सो माती ॥
मज्जन करहिं देव तहँ आये * सुनि गति सिद्ध रहे सब छाये ॥
सो०-तर्पण कर मन लाय, हर्ष हृदय नाहिं जात कहि ॥
दरशनते अघ जाय, तरँ सकल मुनिजन कहैं ॥ ३१ ॥
मज्जन कर हरषाय, सुरअजादि सनकादि ऋषि ॥
पान करत अघ जाय, अस मत सब कोउ कहैं ॥ ३२ ॥
करै जो मज्जन जप मन लाई * तिनकी महिमा कहि न सिराई ॥
रथपर जात सोह नृप कैसे * तेजवन्त रवि देखिय जैसे ॥
लाँघत शैल सुहावन देशा * पाछे सुरसरि अग्र नरेशा ॥
हरिद्वार समीप जब आये * तीर्थ देखि सुरसरि मनलाये ॥
तीर्थ निरखिमनभो सुखभारी * आदिप्रयाग पहुँचि अघहारी ॥
तहँ मज्जन कीन्हे दुखजाई * बहुरि देवसरि काशी आई ॥

१ सर्प । २ पर्वत । ३ वृक्ष । ४ कछुआ । ५ मछली । ६ सर्प्प । ७ स्नान । ८ पाप । ९ पीनेसे । १० पर्व्वत ।

सो शिवपुरी सहज सुखदाई * बरणि नजाइ मनोहरताई ॥
अबसे तीर्थ खिविश्वोधि आनी * गई तहाँ किमि कहौं बखानी ॥
मगंलोगन कहँ करत सनाथा * जाइ चली इहिविधिरघुनाथा ॥
दोहा–मिली जाइ पुनि उदधिमहँ, उदधि हृदयसुखमान ॥
लगे कहन भागीरथहिं, तुम सम धन्य न आनं ॥ २५२ ॥
कीन्हो अस जो कराहि नकोई * तप महिमा बल कसनाहिंहोई ॥
सगर सुतनय तरे ततकाला * हर्षवन्त तब भयो नृपाला ॥
अबलौं रहो है कुलमाहिं कोऊ * तिनके संग तरे अब सोऊ ॥
तुम समान नृप और न भयऊ * जगविख्यातअचलयशलयऊ॥
सकल सुरन तहँ संग विधाता * नृपसन आय कही सब बाता॥
धन्य भगीरथ जग यश लयऊ * तुमसमान नृप अवर नभयऊ॥
आपनि सत्य प्रतिज्ञा कियऊ * सम्मत वेद जनन सुख दयऊ ॥
गंगासागर सब कोइ कहहीं * अघ उलूक देखत रवि डरहीं ॥
भागीरथी नाम अरु कहहीं * सुनि सुरसिद्धनागयशलहहीं ॥
असविधिकहिनिजलोकहिआये* जहाँ भगीरथ अतिसुखपाये ॥
छं०–पायोअमित सुख बहुरि पूजा सुरसरिहि मनलाइकै।
तब दीन्ह आशिष मुदित गंगा नृपभवन सुखपाइकै ॥
इहिभाँति सुनि गंगा कथा तब राम रुचि चरणन नये।
कह दास तुलसी राम लषणहिं महामुनिआशिष दये ॥३२
दोहा–कौशिक आशिष अमियसम, पाय हर्ष रघुराज ॥
प्रभु संशयसब इमि गई, लवा निरखि जिमि बाज ॥२५३॥
"आशिष सुधा समान सुनि, हरषे श्रीरघुनाथ ॥
प्रभु सुखपाइ कहेउ पुनि, वेगि चलिय मुनिनाथ ॥"
राम नामते संशय जाई * देह धरे कर यह फल भाई ॥
इति क्षेपक।
गाधितनय सब कथा सुनाई * ज्यहिप्रकार सुरसरिमाहिआई॥

१ [illegible]ना। २ समुद्र। ३ दसरं। ४ ब्रह्मा। ५ गजाकेपास। ६ बटेर।

तब प्रभु ऋषिन्ह समेत नहाये * विविधदान महिदेवन पाये ॥
हर्षि चले मुनिवृन्द सहाया * बेगि विदेहनगर नियराया ॥
पुररम्यता राम जब देखी * हर्षे अनुज समेत विशेषी ॥
वापी कूप सरित सर नाना * सलिलसुधासम मणि सोपाना ॥
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा * कूजतकल बहु वरण विहंगा ॥
वरण वरण विकसे जलजाता * त्रिविधसमीर सदा सुखदाता ॥
दोहा–सुमनवाटिका बाग वन, विपुल विहंग निवास ॥
फूलत फलत सुपल्लवित, सोहत पुर चहुँपास ॥ २५४ ॥
बनै न वर्णत नगर निकाई * जहाँ जाइ मन तहाँ लुभाई ॥
चारु बजार विचित्र अटारी * मणिमयविधिजनुस्वकरसँवारी
चौहट सुन्दर गली सुहाई * सन्तत रहहिं सुगंध सिंचाई ॥
धनिकवणिकवरधनदसमाना * बैठे सकल वस्तु ले नाना ॥
मंगलमय मन्दिर सब केरे * चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे ॥
पुर नर नारि सुभग शुचिसंता * धर्म्म शील ज्ञानी गुणवंता ॥
अति अनूप जहँ जनक निवासू * विथकहिंविबुधविलोकिविलासू ॥
होतचकित चित कोट विलोकी * सकल भुवन शोभा जनुरोकी ॥
दोहा–धवल धाम मणि पुरट पट्ट, सुघटित नाना भाँति ॥
सियनिवास सुन्दर सदन, शोभा किमि कहिजाति ॥ २५५ ॥
सुभगद्वार सबकुलिश कपाटा * भूप भीर नट मागध भाटा ॥
बनी विशाल वाजि गजशाला * हय गज रथ संकुल सबकाला ॥
शूर सचिव सेनप बहुतेरे * नृप गृह सरिस सदन सबकेरे ॥
पुरबाहर सर सरित समीपा * उतरे जहँ तहँ विपुल महीपा ॥
देखि अनूप एक अमराई * सब सुपाप सब भाँति सुहाई ॥
कौशिक कहेउ मोरमन माना * इहाँ रहिय रघुबीर सुजाना ॥
भलेहिनाथ कहि कृपानिकेता * उतरे तहँ मुनि वृन्द समेता ॥
विश्वामित्र महामुनि आये * समाचार मिथिलापति पाये ॥

१ जनकपुरी । २ सिढ़ी । ३ भ्रमर । ४ कमल । ५ शीतल, मंद, सुगंध, वायु । ६ कुबेर । ७ कामदेव । ८ वज्रकेकिवाँर । ९ घर । १० कृपाकेस्थान ।

दोहा—संग सचिव शुचि भूरि भट, भूसुर वर गुरु ज्ञाति ॥
चले मिलन मुनिनायकहि, मुदित राउ इहि भाँति ॥२५६॥

कीन्ह प्रणाम चरण धरि माथा * दीन्ह अशीश मुदित मुनिनाथा ॥
विप्रवृन्द सब सादर बंदे * जानि भाग्य बड़ि राउ अनन्दे ॥
कुशल प्रश्न कहि बारहिंबारा * विश्वामित्र नृपहिं बैठारा ॥
तेहि अवसर आये दोउ भाई * गये रहे देखन फुलवाई ॥
श्याम गौर मृदु वयस किशोरा * लोचन सुखद विश्वचितचोरा ॥
उठे सकल जब रघुपति आये * विश्वामित्र निकट बैठाये ॥
भे सब सुखी देखि दोउ भ्राता * वारिविलोचन पुलकित गाता ॥
मूरति मधुर मनोहर देखी * भयउ विदेह विदेह विशेषी ॥

दोहा—प्रेममग्न मन जानि नृप, करि विवेक धरि धीर ॥
बोलेउ मुनिपद नाइ शिर, गद्गदगिरा गँभीर ॥२५७॥

कहहु नाथ सुन्दर दोउ बालक * मुनिकुलतिलककि नृपकुलपालक ॥
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा * उभय वेषधरि की सोइ आवा ॥
सहज विराग रूप मन मोरा * थकित होत जिमि चन्द्र चकोरा ॥
ताते प्रभु पूछौं सदभाऊ * कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥
इनहिं विलोकत अति अनुरागा * बरबस ब्रह्मसुखहिं मन त्यागा ॥
कहमुनिविहँसिकहेउ नृपनीका * वचन तुम्हार न होइ अलीका ॥
येप्रिय सबहिं जहाँलगि प्राणी * मनमुसुकाहिं राम सुनि वाणी ॥
रघुकुलमणि दशरथके जाये * ममहित लागि नरेश पठाये ॥

दोहा—राम लषण दोउ बन्धु वर, रूप शील बलधाम ॥
मख राखेउ सब साखि जग, जीति असुर संग्राम ॥२५८॥

मुनि तवचरण देखि कह राऊ * कहि न सकौं निज पुण्य प्रभाऊ ॥
सुन्दर श्याम गौर दोउ भ्राता * आनँदहूके आनँददाता ॥
इनकी प्रीति परस्पर पावनि * कहि न जाइ मनभाव सुहावनि ॥
सुनहु नाथ कह मुदित विदेहू * ब्रह्मजीव इव सहज सनेहू ॥

१ पवित्रमंत्री । २ बहुतसेयोद्धा । ३ ब्राह्मण । ४ पास । ५ राजाजनक । ६ पुलकितवाणी । ७ प्रीति । ८ पवित्र ।

पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू * पुलकगात उर अधिक उछाहू ॥
मुनिहि प्रशंसि नाइ पद शीशा * चले लिवाइ नगर अवनीशा ॥
सुन्दर सदन सुखद सब काला * तहाँ वास लै दीन्ह भुआला ॥
करि पूजा सब विधि सेवकाई * गयउ राउ गृह बिदा कराई ॥
दोहा–ऋषय संग रघुवंशमणि, करि भोजन विश्राम ॥
बैठे प्रभु भ्राता सहित, दिवसरहा भरि याम ॥ २५९ ॥
लषण हृदय लालसा विशेषी * जाइ जनकपुर आइय देखी ॥
प्रभुभय बहुरि मुनिहिंसकुचाहीं * प्रगट न कहहिंमनहिं मुसुकाहीं
राम अनुज मनकी गति जानी * भक्तवत्सलता हिय हुलसानी ॥
परमविनीत सकुचि मुसुकाई * बोले गुरु अनुशासन पाई ॥
नाथ लषण पुर देखन चहहीं * प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं ॥
जो राउर अनुशासन पाऊँ * नगर देखाइ तुरत लै आऊँ ॥
सुनि मुनीश कह वचन सप्रीती * कस न राम राखहु तुम नीती ॥
धर्मसेतु पालक तुम ताता * प्रेम विवश सेवक सुखदाता ॥
दोहा–जाइ देखि आवहु नगर, सुखनिधान दोउ भाइ ॥
करहु सफल सबके नयन, सुन्दर वदन दिखाइ ॥ २६० ॥
मुनिपदकमलवन्दि दोउभ्राता * चले लोक लोचनसुखदाता ॥
बालक वृन्द देखि अति शोभा * लगे संग लोचन मनलोभा ॥
पीत वसन परिकर कटि भाथा * चारु चाप शर सोहत हाथा ॥
तनु अनुहरत सुचन्दन खोरी * श्यामल गौर मनोहर जोरी ॥
केहरि कन्धर बाहु विशाला * उरअतिरुचिर नागमणिमाला ॥
सुभग श्रवण सरसीरुहलोचन * वदनमयंक तापत्रय मोचन ॥
कानन कनकफूल छवि देहीं * चितवत चित्त चोर जनु लेहीं ॥
चितवनि चारु भ्रुकुटिवरबाँकी * तिलकरेख शोभा जनु चाँकी ॥
दोहा–रुचिर चौतनी सुभग शिर, मेचक कुंचित केश ॥
नख शिख सुन्दर बन्धु दोउ, शोभा सकल सुदेश २६१ ॥

१ राजा । २ आनंद । ३ पृथ्वीपति राजा जनक । ४ एकप्रहर । ५ सुखकेस्थान । ६ सिंहकिशोरके ऐसे कंध । ७ गजमुक्ता । ८ अतिसुन्दरकान । ९ छापिदी है । १० पगडी । ११ श्यामसचिक्कन । १२ टेढेघूंघरवारेकेश ।

देखन नगर भूपसुत आये * समाचार पुरवासिन पाये ॥
धाये धाम काम सब त्यागे * मनहुँ रंक निधि लूटन लागे ॥
निरखि सहज सुन्दर दोउभाई * होहिं सुखी लोचन फल पाई॥
युवती भवन झरोखनि लागीं * निरखहिं रामरूप अनुरागीं ॥
कहहिं परस्पर वचन सप्रीती * सखिइनकोटिकामछबिजीती॥
सुर नर असुर नाग मुनिमाहीं * शोभाअसि कहुँसुनियतनाहीं॥
विष्णुचारिभुजविधिमुखचारी * विकट वेष मुखपंचपुरारी ॥
अपरदेव अस को जग आही *इहिंविधिछबिपटतरिये जाही ॥
दोहा-वय किशोर सुखमासदन, श्याम गौर सुखधाम ॥
अंग अंग पर वारिये, कोटि कोटि शत काम ॥ २६२ ॥
कहहु सखी अस को तनुधारी * जो न मोह यह रूप निहारी ॥
कोउ सप्रेम बोली मृदुबानी * जो मैं सुना सो सुनहुसयानी ॥
ये दोउ नृप दशरथके ढोटा * बाल मरालनके कलजोटा ॥
मुनि कौशिक मखके रखवारे * जिन रण अजय निशाचरमारे॥
श्यामगात कलकंज विलोचन * जो मारीच सुभुजमदमोचन ॥
कौशल्यासुत सो सुखखानी * नाम राम धनु सायक पानी ॥
गौर किशोर वेष वर काछे * कर शर चाप रामके पाछे ॥
लक्ष्मण नाम राम लघु भ्राता * सुनु सखि तासु सुमित्रामाता॥
दोहा-विप्र काज करि बन्धु दोउ, मग मुनिवधू उधारि ॥
आये देखन चापमख, सुनि हरषीं सब नारि ॥ २६३ ॥
देखि रामछबि सखि इक कहई * योग्य जानकी यह वर अहई ॥
जो सखि इन्हहिं देखि नरनाहू * प्रणपरिहरिहठिकरहिविवाहू ॥
कोउ कह इन्हहिं भूप पहिचाने * मुनि समेत सादर सनमाने ॥
सखि परन्तु प्रण राउ न तजई * विधिवशहठिअविवेकहिभजई॥
कोउ कह जो भल अहैविधाता * सबकहँसुनियउचितफलदाता॥
तौ जानकिहि मिलिहि वर एहू * नाहिन आली यह सन्देहू ॥

१गृह। २ दौड़ी। ३ भंडार। ४ नेत्र। ५ स्त्रियां। ६ उपमा। ७ पुत्र। ८ बालहंस। ९ अहल्या।

जो विधिवंश अस बनै सँयोगू * तौ कृतकृत्य होहिं सब लोगू ॥
सखि हमरे अति आरति तातेँ * कबहुँक ए आवहिं यहि नातेँ ॥
दोहा—नाहित हम कहँ सुनहु सखि, इन्हकर दर्शन दूरि ॥
यह संघट तब होइ जब, पुण्य पुराकृत भूरि ॥ २६४ ॥
बोली अपर कहेउ सखि नीका * यह विवाह अतिहितसबहीका ॥
कोउ कह शंकरचाप कठोरा * ये श्यामल मृदुगातकिशोरा ॥
सब असमंजस अहै सयानी * यह सुनि अपर कहै मृदुवानी ॥
सखिइनकहँकोउकोउअसकहहीं * बड़प्रभाव देखत लघु अहहीं ॥
परसि जासु पदपंकज धूरी * तरी अहल्या कृत अघभूरी ॥
सोकि रहैं बिनु शिव धनु तोरे * यह प्रतीति परिहरिय न भोरे ॥
जेहि विरंचिरचि सीय सँवारी * तेहिश्यामलवर रचेउ विचारी ॥
तासु वचन सुनि सब हरषानी * ऐसेइ होउ कहहिं मृदुवानी ॥
दोहा—हिय हर्षहिं वर्षहिं सुमन, सुमुखि सुलोचनि वृन्द ॥
जाहिं जहाँ जहँ बन्धु दोउ, तहँ तहँ परमानन्द ॥ २६५ ॥
पुर पूरबदिशि गे दोउ भाई * जहँ धनुषमखभूमि बनाई ॥
अति विस्तार चारु गच ढारी * विमल वेदिका रुचिर सँवारी ॥
चहुँदिशि कंचनमंच विशाला * रचे जहाँ बैठहिं महिपाला ॥
त्यहि पाछे समीप चहुँपासा * अपर मंच मण्डली विलासा ॥
कछुक ऊँच सब भाँति सुहाई * बैठहिं नगर लोग जहँ आई ॥
तिनके निकट विशाल सुहाये * धवल धाम बहु वरण बनाये ॥
जहँ बैठी देखहिं पुर नारी * यथायोग्यनिजकुल अनुहारी ॥
पुरबालक कहि कहि मृदुवचना * सादरप्रभुहिं देखावहिं रचना ॥
दोहा—सब शिशु मिसु इहि प्रेम वश, परशि मनोहर गात ॥
तनु पुलकहिं अति हर्ष हिय, देखि देखि दोउ भ्रात ॥ २६६ ॥
शिशु सब राम प्रेम वश जाने * प्रीति समेत निकेत बखाने ॥
निजनिजरुचि सब लेहिं बुलाई * सहितसनेह जाहिं दोउ भाई ॥

१ सम्बन्ध । २ पूर्वजन्म । ३ बहुत । ४ धनुष । ५ कोमल । ६ पापोंसेभरी । ७ गुण । ८ गजा ।
९ बालक । १० मन्दिरकीशोभा ।

राम दिखावहिं अनुजहिं रचना * कहि मृदु मधुर मनोहर वचना ॥
लवनिमेष महँ भुवन निकाया * रचै जासु अनुशासन माया ॥
भक्तहेतु सोइ दीनदयाला * चितवतचकितधनुषमखशाला ॥
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं * जानि विलंब त्रास मन माहीं ॥
जासु त्रास डरकहँ डर होई * भजन प्रभाव देखावत सोई ॥
कहि बातैं मृदु मधुर सुहाई * किये विदा बालक बरिआई ॥
दोहा–सभय सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित दोउभाइ ॥
गुरु पदपंकज नाइशिर, बैठे आयसु पाइ ॥ २६७ ॥
निशिप्रवेश मुनि आयसुदीन्हा * सबहीं संध्यावंदन कीन्हा ॥
कहत कथा इतिहास पुरानी * रुचि रजनी युग याम सिरानी ॥
मुनिवर शयन कीन्ह तबजाई * लगे चरण चापन दोउ भाई ॥
जिनके चरण सरोरुह लागी * करत विविध जप योग विरागी ॥
ते दोउ बंधु प्रेम जनु जीते * गुरुपद कमल पलोटत प्रीते ॥
बार बार मुनि आज्ञा दीन्हा * रघुबर जाइ शयन तब कीन्हा ॥
चापत चरण लषण उर लाये * सभय सप्रेम परम सुखपाये ॥
पुनि पुनि प्रभुकह सोवहु ताता * पौढ़े धरि उर पद जलजाता ॥
दोहा–उठे लषण निशिविगतसुनि, अरुणशिखा ध्वनि कान ॥
गुरुते पहिले जगतपति, जागे राम सुजान ॥ २६८ ॥
सकल शौचकरि जाइ नहाये * नित्यनिबाहि गुरुहिं शिरनाये ॥
समय जानि गुरु आयसु पाई * लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥
भूप बाग वर देख्यउ जाई * जहँ बसन्तऋतु रहै लुभाई ॥
लागे विटप मनोहर नाना * वरण वरण वरबेलि विताना ॥
नवपल्लव फल सुमन सुहाये * निज सम्पति सुरतरुहिलजाये ॥
चातक कोकिल कीर चकोरा * कूजत विहँग नचत कलमोरा ॥
मध्यबाग सर सुभग सुहावा * मणि सोपान विचित्र बनावा ॥
विमलसलिल सरसिज बहुरंगा * जल खग कूजत गुंजत भृंगा ॥

१ भाईलक्ष्मणजीको। २ चरणकमल। ३ रात्रि। ४ मुर्गा। ५ पुष्प। ६ वृक्ष। ७ छत्र। ८ नवीनपात। ९ तालाब।

दोहा-बाग तड़ाग विलोकि प्रभु, हर्षे बन्धु समेत ॥
परमरम्य आराम यह, जो रामहिं सुखदेत ॥ २६९ ॥
चहुँ दिशि चितै पूँछि मालीगन * लगेलेन दल फूल मुदितमन ॥
त्यहि अवसर सीता तहँ आई * गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥
संग सखी सब सुभग सयानी * गावहिं गीत मनोहरबानी ॥
सर समीप गिरिजा गृह सोहा * वरणि न जाय देखि मन मोहा॥
मज्जनकरि सर सखी समेता * गई मुदित मन गौरिनिकेता ॥
पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा *निज अनुरूप सुभग वर माँगा॥
एक सखी सिय संग विहाई* गई रही देखन फुलवाई ॥
तेइँ दोउ बन्धु विलोकेउ जाई * प्रेम विवश सीता पहँ आई ॥
दोहा-तासु दशा देखी सखिन, पुलक गात जल नयन ॥
कहु कारण निज हर्षकर, पूँछहिं सब मृदुवयन ॥ २७० ॥
देखन बाग कुँवर द्वउ आये * वय किशोर सब भाँति सुहाये॥
श्याम गौर किमि कहौं बखानी*गिराअनयन नयन विनु बानी॥
सुनि हरषीं सब सखी सयानी *सियहिय अतिउतकण्ठा जानी॥
एक कहहिं नृप सुत ते आली *सुने जे मुनि सँग आये काली ॥
निज निज रूप मोहनी डारी * कीन्हें स्ववश नगर नर नारी ॥
वर्णत छबि जहँ तहँ सब लोगू * अवशि देखिये देखन योगू ॥
तासु वचन अतिसियहि सुहाने * दरशलागि लोचन अकुलाने ॥
चली अग्रकरि प्रिय सखि सोई * प्रीति पुरातन लखै न कोई ॥
दोहा-सुमिरि सीय नारद वचन, उपजी प्रीति पुनीत ॥
चकितविलोकतिसकलदिशि, जनुशिशुमृगीसभीत ॥ २७१ ॥

*एक समय जानकीजी गिरिजा पूजनके निमित्त जातीथीं तहाँ मार्गमें नारदजी मिले जानकीजीने दण्डवत् कर कहा कि, महाराज! देवीकी पूजाकरनेको जातीहूं तब नारदने प्रसन्न हो आशीर्वाददिया कि,हे जानकी! इसी गिरिजाबारीमें श्रीरामचंद्र तुम्हारे पति तुमको मिलैंगे तब जानकीजीने पूँछा कि, महाराज! हम कैसे चीन्हेंगी तब नारदजी बोले इस बगीचेमें जिसको देखनेसे तुम्हारा मन प्रसन्न होजाय और लुभाय जाय उसीको जानना कि, यह मेरे पतिहैं ॥

१ पार्वती। २ न्यहिको सुनिकै मिलिवेको अति आतुरता हुई।

कंकणकिंकिणि नूपुरध्वनिसुनि * कहतलषणसनरामहृदयगुनि ॥
मानहु मदन दुन्दुभी दीन्हीं * मनसा विश्वविजयकहँकीन्हीं ॥
असकहिफिरिचितयेत्यहिओरा * सियमुखशशिभयेनयनचकोरा
भये विलोचन चारु अचंचल *मनहुँसकुचिनिमितजेउदृगंचल
देखि सीय शोभा सुखपावा * हृदय सराहत वचन न आवा ॥
जनु विरंचिसब निज निपुणाई * विरचि विश्वकहँ प्रगट दिखाई॥
सुन्दरताकहँ सुन्दर करई * छविगृह दीप शिखा जनु बरई॥
सब उपमा कवि रहे जुठारी * केहि पटतारिय विदेहकुमारी ॥
दोहा–सिय शोभा हिय वर्णि प्रभु, आपनि दशा विचारि ॥
बोले शुचि मन अनुज सन,वचन समय अनुहारि ॥२७२॥
तात जनकतनया यह सोई * धनुषयज्ञ ज्यहि कारण होई ॥
पूजन गौरि सखी लै आई * करतिप्रकाशफिरति फुलवाई ॥
जासुविलोकि अलौकिकशोभा * सहजपुनीत मोर मन क्षोभा ॥
सो सब कारण जान विधाता *फरकहिं सुभगअंगसुनु भ्राता ॥
रघुवंशिनकर सहज स्वभाऊ * मनकुपंथ पग धरै न काऊ ॥
मोहिंअतिशयप्रतीतिजियकेरी * ज्यहि स्वप्नेहु परनारि न हेरी ॥
जिनके लहहिं न रिपुरण पीठी * नाहिंलावहिं परतिय मन डीठी ॥
मंगन लहहिं न जिनके नाहीं * ते नरवर थोरे जग माहीं ॥
दोहा–करत बतकही अनुज सन, मन सियरूप लुभान ॥
मुख सरोज मकरन्द छवि, करत मधुपइव पान ॥ २७३ ॥
चितवतिचकितचहूँदिशिसीता * कहँगयेनृपकिशोरमनचीता ॥
जहँविलोकि मृगशावकनयनी *जनु तहँवरषकमलसितश्रेनी॥
लता ओट तब सखिन लखाये * श्यामल गौर किशोर सुहाये॥
देखि रूप लोचन ललचाने * हर्षे जनु निजनिधि पहिंचाने ॥
थके नयन रघुपति छवि देखी * पलकनहूँ परिहरी निमेखी ॥
अधिकसनेह देह भइ भोरी * शरदशशिहिजनुचितवचकोरी

१ ब्रह्माके सृष्टिके लोकनविषे ऐसी शोभा नहीं है । २ चित्तविषे आतुर ।

लोचन मगु रामहिं उर आनी * दीन्हें पलक कपाट सयानी ॥
जबसियसखिनप्रेमवशजानी * कहिनसकहिंकछुमनसकुचानी
दोहा–लता भवनते प्रगटभे, त्यहि अवसर दोउभाइ ॥
निकसे जनु युग विमलविधु, जलद पटल बिलगाइ॥२७४
शोभासींव सुभग दोउ वीरा * नील पीत जलजात शरीरा ॥
काकपक्ष[1] शिर सोहत नीके * गुच्छा बिचबिच कुसुमकलीके
भालतिलक श्रमबिन्दु सुहाये * श्रवणसुभग भूषण छबिछाये॥
बिकट भ्रुकुटि कच घूँघरवारे * नवसरोज लोचन रतनारे ॥
चारु चिबुक नासिका कपोला * हास बिलास लेत जनु मोला ॥
मुखछबिकहिनजाहिमोहिंपाहीं * जोबिलोकि बहु काम लजाहीं ॥
उर मणिमाल कम्बु कलग्रीवा * कामकलभकर भुजबल सींवा॥
सुमनसमेत वामकर दोना * साँवर कुँवर सखीसुठिलोना ॥
दोहा–केहरि कटि पटपीत धर,सुखमा शीलनिधान ॥
देखि भानुकुल भूषणहिं, बिसरा सखिन अपान॥२७५॥
धरि धीरज इक सखी सयानी * सीता सन बोली गहि पानी ॥
बहुरि गौरिकर ध्यान करेहू * भूप किशोर देखिकिनलेहू ॥
सकुचि सीय तब नयन उघारे * सन्मुख दोउ रघुवंश निहारे ॥
नखशिख देखि रामकी शोभा *सुमिरिपिताप्रणमनअतिक्षोभा॥
परवश सखिन लखी जब सीता * भई गहरु सब कहहिं सभीता ॥
पुनि आउब इहि बिरियाँ काली * असकहिमनबिहँसीइकआली॥
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी *भयउ बिलम्ब मातु भयमानी॥
धरिबड़ धीर राम उर आनी * फिर आपनप्रण पितुवशजानी॥
दोहा–देखन मिसु मृग बिहँगतरु, फिरति बहोरि बहोरि ॥
निरखि निरखि रघुवीर छबि, बाढी प्रीति न थोरि॥ २७६ ॥
जानिकठिन शिवचाप बिसूरति * चलीराखि उर श्यामलमूरति ॥
प्रभु जब जात जानकी जानी * सुखसनेह शोभा गुण खानी ॥

[1] बारनकेपट्टा कौवनकेसे पक्ष श्याम सचिक्कन।

परमप्रेममय मृदु मसि कीन्हीं * चारुचित्र भीतरलिखिलीन्हीं ॥
गईं भवानी भवन बहोरी * बन्दि चरण बोली कर जोरी ॥
जयजयजयगिरिराजाकिशोरी * जयमहेश मुखचन्द्र चकोरी ॥
जय गजवदन षडानन माता *जगतजननिदामिनिद्युतिगाता॥
नहिं तव आदि मध्य अवसाना * अमित प्रभाव वेद नहिं जाना ॥
भवं भवं विभवं पराभवं कारिणि*विश्वविमोहनिस्ववशविहारणि॥
दोहा--पतिदेवता सुतीय महँ, मातु प्रथम तव रेख ॥
महिमा अमित न कहिसकहिं, सहसशारदाशेष ॥२७७॥
सेवत तोहिं सुलभ फलचारी * वरदायिनि त्रिपुरारि पियारी ॥
देवि पूजि पदकमल तुम्हारे *सुर नर मुनि सब होहिंसुखारे॥
मोर मनोरथ जानहु नीके * बसहु सदा उरपुर सबहीके ॥
कीन्हेंउ प्रगट न कारण तेही * असकहि चरण गहे वैदेही ॥
विनय प्रेमवश भई भवानी * खसी माल मूरति मुसुकानी ॥
सादर सिय प्रसाद उर धरेऊ * बोली गौरि हर्ष हिय भरेऊ ॥
सुनुसियसत्य अशीश हमारी *पूजहि मन कामना तुम्हारी ॥
नारदवचन सदा शुचि साँचा * सोवरमिलहि जाहि मन राँचा ॥

छंद–हरिगीतिका ।

मन जाहि राचो मिलिहि सो वर सहज सुन्दर साँवरो ॥
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥
यहिभाँति गौरि अशीश सुनि सियसहित हिय हर्षित अली ॥
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिरचली॥३३॥
सो०–जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हर्ष नजाय कहि ॥
मंजुल मंगल मूल, वामअंग फरकन लगे ॥ ३३ ॥
हृदय सराहत सीय लुनाई * गुरु समीप गमने दोउ भाई ॥
राम कहा सब कौशिक पाहीं * सरलस्वभाव छुआछल नाहीं ॥
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्हीं * पुनि अशीशदोउभाइनदीन्हीं ॥

१ संसार । २ उत्पन्नकरतीहो । ३ पालनकरतीहो । ४ नाशकरतीहो । ५ स्वतंत्र । ६ पतिव्रतास्त्रीनमें । ७ सुंदरता

सफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे * राम लक्ष्मण सुनि भये सुखारे ॥
करि भोजन मुनिवर विज्ञानी * लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥
विगत दिवस मुनि आयसुपाई * सन्ध्या करन चले दोउभाई ॥
प्राचीदिशि शशि उग्यउसुहावा * सियमुखसरिसदेखिसुखपावा ॥
बहुरि विचार कीन्ह मन माहीं * सीयवदन सम हिमकरनाहीं ॥
दोहा–जन्म सिन्धु पुनि बन्धु विष, दिन मलीन सकलंक ॥
सिय मुख समता पाव किमि, चन्द्र बापुरो रंक ॥ २७८ ॥
घटै बढ़ै विरहिनि दुखदाई * ग्रसै राहु निज सन्धिहि पाई ॥
कोक शोकप्रद पंकजद्रोही * अवगुण बहुत चन्द्रमा तोही ॥
वैदेही मुख पटतर दीन्हें * होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हें ॥
सियमुखछविविधुव्याजबखानी * गुरुपहँ चले निशा बड़ि जानी ॥
करि मुनिचरणसरोज प्रणामा * आयसुपाय कीन्ह विश्रामा ॥
विगतनिशा रघुनायक जागे * बन्धुविलोकि कहन अस लागे ॥
उगेउ अरुण अवलोकहु ताता * पंकज कोक लोक सुखदाता ॥
बोले लषण जोरि युग पाणी * प्रभु प्रभाव सूचक मृदुवाणी ॥
दोहा–अरुणोदय सकुचे कुमुद, उडुगण ज्योति मलीन ॥
तिमि तुम्हार आगमन सुनि, भये नृपति बलहीन ॥ २७९ ॥
नृप सब नखत करहिं उजियारी * टारि नसकहिं चाप तम भारी ॥
कमलकोक मधुकर खगनाना * हरषे सकल निशा अवसाना ॥
ऐसेहिं प्रभु सब भक्त तुम्हारे * होइहैं टूटे धनुष सुखारे ॥
उदय भानु विनुश्रमतमनाशा * दुरे नखत जग तेज प्रकाशा ॥
रविनिज उदय व्याज रघुराया * प्रभुप्रताप सब नृपनदिखाया ॥
तव भुजबल महिमा उदघाटी * प्रकटी धनु विघटन परिपाटी ॥
बन्धुवचनसुनि प्रभु मुसुकाने * होइ शुचि सहजपुनीतअन्हाने ॥
नित्यक्रिया करि गुरुपहँ आये * चरणसरोज सुभग शिरनाये ॥
शतानन्द तब जनक बुलाये * कौशिक मुनिपहँ तुरत पठाये ॥

१ पूर्वदिशा । २ चन्द्र । ३ कमल । ४ नक्षत्र । ५ राजा । ६ उद्योतकरनेको उदया/बलकीवाटी । ७ नाशहेतु । ८ विश्वामित्र ।

जनकविनय तिन आय सुनाई * हर्षे बोलि लिये दोउ भाई ॥
दोहा-शतानन्द पदवन्दि प्रभु, बैठे गुरु पहँ जाइ ॥
चलहु तात पुनि कहेउ तब, पठवा जनक बुलाइ ॥ २८० ॥
सीय स्वयम्वर देखिय जाई * ईश काहिधौं देहिं बड़ाई ॥
लषण कहा यशभाजन सोई * नाथ कृपा तव जापर होई ॥
हरषे मुनि सब सुनि बरबानी * दीन्ह अशीष सबहिं सुखमानी
पुनि मुनिवृन्द समेतकृपाला * देखन चले धनुष मखशाला ॥
रंगभूमि आये दोउ भाई * असमुधि सब पुरवासिन पाई ॥
चले सकल गृहकाज बिसारी * बालक युवा जरठ नरनारी ॥
देखी जनक भीर भइ भारी * शुचि सेवक सब लिये हँकारी ॥
तुरत सकल लोगनपहँ जाहू * आसन उचित देहु सबकाहू ॥
दोहा-कहि मृदु वचन विनीत तिन, बैठारे नर नारि ॥
उत्तम मध्यम नीच लघु, निज निज थल अनुहारि ॥ २८१ ॥
राजकुँवर त्यहि अवसर आये * मनहु मनोहरता छवि छाये ॥
गुणसागर नागर बरबीरा * सुन्दर श्यामल गौर शरीरा ॥
राजसमाज विराजत रूरे * उडुगण महँ जनु युग विधुपूरे ॥
जिनके रही भावना जैसी * प्रभु मूरति देखी तिन तैसी ॥
देखहिं भूप महा रणधीरा * मनहुँ वीररस धरे शरीरा ॥
डरे कुटिल नृप प्रभुहिनिहारी * मनहुँभयानक मूरति भारी ॥
रहे असुर छल जो नृप वेषा * तिन प्रभु प्रगट कालसम देखा ॥
पुरवासिन देखे दोउ भाई * नरभूषण लोचन सुखदाई ॥
दोहा-नारि बिलोकहिं हर्षि हिय, निजनिजरुचिअनुरूप ॥
जनु सोहत शृंगार धरि, मूरति परम अनूप ॥ २८२ ॥
विदुषन प्रभु विराटमय दीशा * बहु मुख कर पग लोचनशीशा ॥
जनक जाति अवलोकहिं कैसे * सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे ॥
सहित विदेह बिलोकहिं रानी * शिशु सम प्रीतिनजाइबखानी ॥

१ जहां राजा लोगोंके बैठनेके लिये विचित्र रचनाथी किन्तु स्वयम्वरभूमि । २ बूढे । ३ नक्षत्र । ४ चन्द्र । ५ पण्डितन ।

योगिन परमतत्त्व मय भासा * सन्त शुद्ध मन सहज प्रकाशा ॥
हरिभक्तन देखेउ दोउ भ्राता * इष्टदेव इव सब सुखदाता ॥
रामहिं चितव भाव ज्यहि सीया * सो सनेह सुख नहिं कथनीया ॥
उर अनुभवति न कहिसकसोऊ * कवन प्रकार कहैं कवि कोऊ ॥
ज्यहिविधिरहा जाहि जसभाऊ *त्यहितस देख्यहु कोशलराऊ ॥
दोहा-राजत राज समाज महँ, कोशलराज किशोर ॥
सुन्दर श्यामल गौर तनु, विश्वविलोचन चोर ॥ २८३ ॥
सहज मनोहर मूरति दोऊ * कोटिकाम उपमा लघु सोऊ ॥
शरदचन्द्र निन्दक मुखनीके * नीरज नयन भावते जीके ॥
चितवनि चारु मार मद हरणी * भावत हृदय जाइ नहिं वरणी ॥
कल[1] कपोल[4] श्रुति[5] कुंडल लोला * चिबुक अधर सुन्दर मृदुबोला ॥
कुमुद[6] बन्धुकरनिन्दक हासा * भृकुटी विकट मनोहर नासा ॥
भालविशाल तिलक झलकाहीं *कच[7] विलोकि अलि[8] अवलि[9] लजाहीं
पीत चौतनी शिरन सुहाईं * कुसुमकली बिच बीच बनाईं ॥
रेखा रुचिर कम्बु कल ग्रीवा * जनु त्रिभुवनसुखमाकीसीवा ॥
दोहा-कुंजरमणि कंठाकलित, उर तुलसीकी माल ॥
वृषभकन्ध केहरिठवनि, बलनिधि बाहुविशाल ॥२८४॥
कटि तूणीर पीतपट बाँधे * करशर धनुष वाम वर काँधे ॥
पीतयज्ञ उपवीत सुहाई * नख शिष मंजु महाछबिछाई ॥
देखि लोग सब भये सुखारे * इकटक लोचन टरहिं न टारे ॥
हरषे जनक देखि दोउ भाई * मुनिपदकमल गहे तब जाई ॥
करि विनती निजकथा सुनाई * रंग[10] अवनि सब मुनिहि दिखाई
जहँ जहँ जाहिं कुँवर वर[11] दोऊ *तहँ तहँचकितचितवसबकोऊ॥
निजनिजरुचिरामहिसब देखा * कोउ न जान कछु मर्म[12] विशेषा
भलिरचनानृपसन मुनिकहाऊ * राजा मुदित परमसुखलहाऊ॥
दोहा-सब मञ्चनते मंच यक, सुन्दर विशद विशाल

१. कमलनयन। २ पवित्र। ३ सुंदर। ४ गाल। ५ कान। ६ कमल। ७ बाल। ८ भ्रमर। ९ पंक्ति
१० रंगभूमि। ११ श्रेष्ठ। १२ भेद।

मुनि समेत पुनि बन्धु लहि, बैठारे महिपाल ॥ २८५ ॥
प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे * जिमिराकेश उदय भयेतारे ॥
अस प्रतीति सिबके मन माहीं * राम चाप तोरब शक नाहीं ॥
बिन भंजेहु भव धनुष बिशाला * मेलिहि सीय राम उर माला ॥
अस बिचारि गवनहु घर भाई * यश प्रताप बल तेज गँवाई ॥
बिहँसे अपर भूप सुनि बानी * जे अविवेक अधम अभिमानी ॥
तोरेउ धनुष ब्याह अवगाहा * बिन तोरे को कुँवरि बिवाहा ॥
एकबार कालहु किन होई * सियहित समरजितबहमसोई ॥
यह सुनि अपर भूप मुसुकाने * धर्मशील हरिभक्त सयाने ॥
सो०—सीय बिआहब राम, गर्ब दूरि करि नृपन्ह कर ॥
जीतिको सक संग्राम, दशरथके रण बाँकुरे ॥ ३४ ॥
वृथा मरहु जनि गाल बजाई * मनमोदक नाहिं भूख बुताई ॥
सिख हमार सुनु परमपुनीता * जगदम्बा जानहु जिय सीता ॥
जगतपिता रघुपतिहि बिचारी * भरिलोचन छबि लेहु निहारी ॥
सुन्दर सुखद सकल गुणराशी * ये दोउ बन्धु शम्भु उरवासी ॥
सुधा समुद्र समीप बिहाई * मृगजलनिरखि मरहुकतधाई ॥
करहु जाय जाकहँ जोइभावा * हमतो आजु जन्मफल पावा ॥
असकहि भले भूप अनुरागे * रूप अनूप बिलोकन लागे ॥
देखहिं सुर नभ चढे बिमाना * बरषहिंसुमनकरहिं कलगाना[6] ॥
दोहा—जानि सुअवसर सीय तब, पठवा जनक बुलाइ ॥
चतुर सखी सुन्दर सकल, सादर चलीं लिवाइ ॥ २८६ ॥
सिय शोभा नहिं जाइ बखानी * जगदम्बिका रूप गुण खानी ॥
उपमा सकल मोहिं लघुलागी * प्राकृतनारि अंग अनुरागी ॥
सीय बरणि त्यहि उपमा देई * को कवि कहै अयश को लेई ॥
जो पटतारिय तीय सम सीया * जगअस युवतिकहाँ कमनीया ॥
गिरामुखर तनुअर्द्ध भवानी * रतिअतिदुखितअतनुपतिजानी

१ पूर्णमासीका चन्द्रमा । २ धनुष । ३ दुर्लभ । ४ मिथ्याबककर । ५ मनमें लड्डूखानेसे । ६ मधुरगान ।
७ शारद—वाक्य चंचल । ८ बिनदेह ।

विष वारुणी बन्धु प्रिय जेही * कहिय रमा सम किमि वैदेही ॥
जो छविसुधा पयोनिधि होई * परमरूप मय कच्छप सोई ॥
शोभा रजु मंदर शृंगारू * मथै पाणि पंकज निज मारू ॥
दोहा–इहिविधि उपजै लक्षि जब, सुन्दरता सुखमूल ॥
तदपि सकोच समेत कवि, कहहिं सीय सम तूल ॥२८७॥
चलीं संग लै सखी सयानी * गावत गीत मनोहर बानी ॥
सोह नवलतनु सुन्दरिसारी * जगतजननिअतुलित छविभारी
भूषण सकल सुदेश सुहाये * अंग अंग रचि सखिन बनाये ॥
रंगभूमि जब सिय पगुधारी * देखि रूप मोहे नर नारी ॥
हर्षि सुरन दुंदुभी बजाई * बर्षि प्रसून अप्सरा गाई ॥
पाणि सरोज सोह जयमाला * औचक चितै सकलमहिपाला॥
सीय चकित चित रामहिंचाहा * भये मोहवश सब नरनाहा ॥
मुनि समीप बैठे दोउ भाई * लगे ललकि लोचन निधिपाई॥
दोहा–गुरुजन लाज समाज बड़ि, देखि सीय सकुचानि ॥
लगी विलोकन सखिनतन, रघुबीरहि उरआनि ॥ २८८ ॥
रामरूप अरु सिय छवि देखी * नर नारिन परिहरी निमेषी ॥
शोचहिं सकल कहत सकुचाहीं*विधिसनविनयकरहिंमनमाहीं॥
हरु विधि वेगि जनक जड़ताई * मति हमारि असि देहु सुहाई ॥
बिन विचार प्रणताजि नरनाहू * सीय रामकर करै विवाहू ॥
जगभल कहहि भाव सब काहू * हठकीन्हे उर अन्तर दाहू ॥
यह लालसा मगन सब लोगू * बरसाँवरो जानकी योगू ॥
कथा क्षेपक–रावण, बाणासुरकी ।
"रावण बाणासुर तब आये * देख लोग अतिशय भयपाये ॥
सकल परस्पर करहिं विचारा * अबधौं कहा करसि करतारा ॥
कवित्त ।
याकेदशशीश वीसबाहुडोलैशैलमनो याकेएकशीश बाहुदीरचहजारहैं ॥

दोनोंलालचन्दनकोदीन्हेंहैंत्रिपुण्ड्भाल पहरेरुद्राक्षमालछायेतनुछारहैं ॥
दोनोंअतिबलीभायोदोनोंजगजीतिपायो दोनोंभयदेतदेखेतनुविकरारहैं ॥
दोनोंधनुतोरैंताकोकौनहै उपायहाय शोकतेउधारको अधारकरतारहैं ॥

तब रावण बोल्यो हरषाई * कहा सिया सो देहु बताई ॥
धनुष तोर ले जावहुँ अबहीं * बोले बाणासुर अस तबहीं ॥
गुरु धनुधरयो विचारत नाहीं * मारत काहे गाल वृथाहीं ॥
तुम राखत अति गर्व सुरारी * तब रावण सुनि बात उचारी ॥

कवित्त ।

मेरेभुजदंडनतेदेखिखंडखंडदंड भाजिब्रह्माण्डहूतेकालकीन्होंगौनहै ॥
परमप्रचण्डनवखण्डमेंअखण्डफैलो पेखिकेप्रतापमार्तण्डडोलैमौनहै ॥
देतदेतदण्डधननाथभयेहंडहीन सुनतकोंदंडचण्डइन्द्रमानोजौनहै ॥
बाहुकण्डछत्रदंडसोसुमेरुतोलोजायखीनसुंडमालीकोकोदंडगर्वकौनहै॥

बाणासुर तब कह्यो रिसाई * हो तुम बडे असुर अन्याई ॥

कवित्त ।

जोईभगवानवरदानदातातीनोंलोक तीनपाँयपृथ्वीहेतुवेषबडलीन्होंहै ॥
आयेतातपासचीन्होंतापैनानिराशकीन्होंदीनोंदानलीन्होंउनोंमानिरोषभीनोहै ॥
भाष्योपितुलीजैमोहिंदानीदानद्रव्यतुल्य होहींपाणिदोइपालरेकैतोलिदीन्होंहै ॥
पर्वसर्वरीसजातेंखर्वज सर्वभाषें रेरेतेरोएसोगर्व होहुँनाहिं कीन्होंहै ॥ १ ॥

तब रावण बोला-सवैया ।

एकहिशीशकिकौनधरी सिगरोजगयोंसरसोंसमसोहै ॥
तौनहींशेषकेवेशशरीरमें सूक्षमकीन्हेंअभूषनजोहै ॥
सोशिववासकियोजेहिशैलसो कौलभयोकरएकहिकोहै ॥
हौंनाहिंगर्वकरौंकरैकौन प्रशंसतजाहि हरीरहतोहै ॥ १ ॥

तब बाणासुर बोला-कवित्त ।

पीनपिनाकपुरारिकोयों विरच्यो विधिलैकर वज्रकोसारहै ॥
याकीनजानततैंगुरुता नाहिंसीखगनै गुन्योपूरोगँवारहै ॥

आंपनोगर्वगँवावनको धनुतोरनकोशठकीन्होंविचारहै ॥
जोबढ़कैबलतेबलकैअवलोकतहैसीतानाऊकोबारहै ॥ १ ॥
धनुष तोर तोरहु मद तोरों * पुरी उठाय वारिनिधि बोरों ॥
अस कहि धनुष उठावन लागा *उठ्यो न तब कह बाणअभागा॥
सवैया ।
करजोकरमेंकैलासलियो कसकैअवनाकासिकोरतहै ॥
दइतालनवीसभुजाझहरायझकेधनुकोझकझोरतहै ॥
तिलएकहलैनहलै वसुधा रिसपीसकैदाँतनतोरतहै ॥
मनमेंयहठीकभयोहमरेमदकाकोमहेशनमोरतहै ॥
यह कह धनु परदक्षिण करकै * बाणासुर निकस्यो मुद भरकै॥
तब रावण बोला रिसियाई * जादू यामें परत दिखाई ॥
वैसेइ लेजाऊं सिय अबहीं * भइ अकाश वाणी यहतबहीं ॥
तब कुंभीनसि कन्या जोई * लिये जात मधु दानव सोई ॥
सुन रावण बोला दुख पाई * ताको लाऊं अबहिं छुडाई ॥
अस कहि तुरत गये असुरारी * भये सभाके नृपति सुखारी ॥"
इति क्षेपक ।
तब बंदीजन जनक बुलाये * बिरदावली कहत चलि आये॥
कह नृप जाइ कहहु प्रणमोरा * चले भाट हिय हर्ष न थोरा ॥
दोहा–बोले वन्दी वचन वर, सुनहु सकल महिपाल ॥
प्रण विदेह कर कहहिं हम, भुजा उठाइ विशाल ॥ २८९ ॥
नृपभुजबल विधु शिवधनु राहू * गरुअ कठोर विदित सबकाहू॥
रावण बाण महाभट भारे * देखि शरासन गँवहिं सिधारे ॥
सोइ पुरारिको दण्ड कठोरा * राजसमाज आजु जोइ तोरा ॥
त्रिभुवन जय समेत वैदेही * बिनहि विचार वरै हठि तेही ॥
सुनिप्रण सकल भूप अभिलाषे * भटमानी अतिशय मनमाखे ॥
परिकर बाँधि उठे अकुलाई * चले इष्टदेवन शिरनाई ॥

१ भाट । २ कुलकी कीर्त्ति गाते हुये । ३ बाणासुर । ४ धनुष । ५ महादेव । ६ पटका ।

तमकिताकितकिशिवधनुधरहीं * उठैनकोटिभाँतिबल करहीं ॥
जिनके कछु बिचार मनमाहीं * चाप समीप महीप न जाहीं ॥
दोहा-तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप, उठै न चलहिं लजाय ॥
मनहु पाय भट बाहुबल, अधिक अधिकगरुआय ॥२९०॥
भूपसहसदश¹ एकहि बारा * लगे उठावन टरै न टारा ॥
डगै न शम्भु शरासन कैसे * कामी वचन सती मन जैसे ॥
सब नृप भये योग उपहासी * जैसे बिनु विराग संन्यासी ॥
कीरति विजय वीरता भारी * चले चापकर सरवस हारी ॥
श्रीहत भये हारि हियराजा * बैठे निज निज जाइ समाजा ॥
नृपन विलोकि जनक अकुलाने * बोले वचन रोष जनु साने ॥
द्वीप द्वीपके भूपति नाना * आये सुनि हम जो प्रणठाना ॥
देव दनुज धरि मनुज शरीरा * विपुल वीर आये रणधीरा ॥
दोहा-कुँवरि मनोहरि² विजय बड़ि, कीरति अति कमनीय ॥
पावनहार विरंचि जनु, रच्यउ न धनु दमनीय ॥ २९१ ॥
कहहु काहि यह लाभ न भावा * काहु न शंकर चाप चढ़ावा ॥
रहेउ चढाउब तोरब भाई * तिलभरि भूमि न सक्यउ छुडाई
अब जनिकोउ माषै भटमानी * वीर विहीन मही मैं जानी ॥
तजहुआश निज निज गृहजाहू * लिखा न विधि वैदेहिविवाहू ॥
सुकृत जाय जो प्रण परिहरऊँ * कुँवरि कुँवारि रहै काकरऊँ ॥
जो जनत्यउँ बिनुभट महि भाई * तो प्रणकरि करत्यउँनहँसाई ॥
जनकवचन सुनि सब नरनारी * देखि जानकी भये दुखारी ॥
सुनतहिलषण कुटिल भईभौंहैं * रदपुट³ फरकत नयन रिसौंहैं ॥
दोहा-कहि न सकत रघुवीर डर, लगे वचन जनु बाण ॥
नाइ रामपद कमल शिर, बोले गिरा⁴ प्रमाण ॥२९२॥
रघुवंशिन महँ जहँ कोउ होई * तेहिसमाज असकहै न कोई ॥
कही जनक जस अनुचितवानी⁵ * विद्यमान रघुकुलमणिजानी⁶ ॥

१ दशहजारराजा । २ सुन्दरता । ३ ओष्ठ । ४ यथार्थवचन । ५ अयोग्यवचन । ६ श्रीरामचन्द्रकोमत्यक्षजानकर।

सुनहु भानुकुल पंकजभानू * कहौंस्वभाव न कछुअभिमानू ॥
जो राउर अनुशासन पाऊँ * कन्दुकइव ब्रह्माण्ड उठाऊँ ॥
काचेघट जिमि डारौं फोरी * सकौं मेरु मूलक इव तोरी ॥
तव प्रताप महिमा भगवाना * का बापुरो पिनाक पुराना ॥
नाथ जानि अस आयसु होऊ * कौतुककरौं विलोकिय सोऊ ॥
कमलनाल इमि चाप चढ़ावौं * शतयोजन प्रमाण लैधावौं ॥
दोहा-तोरौछत्रकदण्डजिमि, तव प्रताप बल नाथ ॥
जो न करौं प्रभुपदशपथ, पुनि न धरौं धनु हाथ ॥ २९३ ॥
लषण सकोप वचन जब बोले * डगमगानिमहिदिग्गजडोले ॥
सकल लोक सब भूप डराने * सिय हिय हर्ष जनकसकुचाने ॥
गुरुरघुपति सब मुनि मनमाहीं * मुदित भये पुनिपुनि पुलकाहीं ॥
सैनहिं रघुपति लषण निवारे * प्रेम समेत निकट बैठारे ॥
विश्वामित्र समय शुभ जानी * बोले अतिसनेह मृदुवानी ॥
उठहु राम भंजहु भव चापा * मेटहु तात जनक परितापा ॥
सुनि गुरु वचन चरणशिरनावा * हर्ष विषाद न कछु उर आवा ॥
ठाढ भये उठि सहज सुभाये * ठवनि युवामृगराज लजाये ॥
दोहा-उदित उदय गिरि मंच पर, रघुवर बालपतंग ॥
विकसे सन्त सरोज सब, हर्ष लोचन भृंग ॥ २९४ ॥
नृपन केरि आशा निशि नाशी * वचन नखतअवलीनप्रकाशी ॥
मानी महिप कुमुद सकुचाने * कपटी भूप उलूक लुकाने ॥
भये विशोक कोक मुनि देवा * वर्षहिं सुमन जनावहिं सेवा ॥
गुरुपद वंदि सहित अनुरागा * राममुनिनसन आयसुमाँगा ॥
सहजहि चले सकल जगस्वामी * मत्तमञ्जु कुञ्जर वरगामी ॥
चलत राम सब पुर नर नारी * पुलक पूरि तनु भये सुखारी ॥
वंदि पितर सुर सुकृत सँभारे * जो कछु पुण्य प्रभाव हमारे ॥
तो शिव धनुष मृणालकिनाईं * तोरहिं राम गणेश गुसाईं ॥

१ गेंदकी तुल्य । २ मूरी । ३ धनुष । ४ कमलकी डंडी । ५ दुःखं । ६ सिंह । ७ बालसूर्य । ८ पंक्ति । ९ हाथी ।

दोहा-रामहिं प्रेम समेत लखि, सखिन समीप बुलाइ ॥
सीता मातु सनेह वश, वचन कहै बिलखाइ ॥ २९५ ॥
सखि सब कौतुक देखन हारे * जेउ कहावत हितू हमारे ॥
कोउ न बुझाय कहइ नृप पाहीं * ये बालक अस हठ भल नाहीं ॥
रावण बाण छुआ नहिं चापा * हारे सकल भूप करि दापा ॥
सो धनु राजकुँवर कर देहीं * बाल मराल कि मन्दर लेहीं ॥
भूप सयानप सकल सिरानी * सखिविधिगतिकछुजायनजानी ॥
बोली चतुर सखी मृदु बानी * तेजवन्त लघु गणिय नरानी ॥
कहँकुम्भज कहँ सिन्धु अपारा * शोष्यउ सुयश सकल संसारा ॥
रविमंडल देखत लघुलागा * उदय तासु त्रिभुवन तम भागा ॥
दोहा-मंत्र परम लघु जासु वश, विधि हरि हर सुरसर्व्व ॥
महामत्त गजराज कहँ, वशकर अंकुश खर्व्व ॥ २९६ ॥
काम कुसुम धनु सायक लीन्हें * सकल भुवन अपने वश कीन्हें ॥
देवि तजिय संशय अस जानी * भंजब धनुष राम सुनु रानी ॥
सखी वचन सुनि भइ परतीती * मिटा विषाद बढ़ी अति प्रीती ॥
तब रामहिं विलोकि वैदेही * सभयहृदयाविनवतिज्यहितेही ॥
मनहीमन मनाय अकुलानी * होहु प्रसन्न महेश भवानी ॥
करहु सफल आपनि सेवकाई * करि हित हरहु चापगरुआई ॥
गणनायक वरदायक देवा * आज लगे कीन्हीं तव सेवा ॥
बार बार विनती सुनि मोरी * करहु चाप गरुता अति थोरी ॥

*एकसमय किसी चिडियेके तीनं बच्चे समुद्र वहा ले गया तब वह प्रतिदिन अपनी चोंचसे पानी भरभरकर बाहर फेंका करै यही इच्छा कि, समुद्रको उलीच डालूंगा. अगस्त्यऋषिने यह समाचार देख उससे पूंछा, तब पक्षीने कारण कहा यह सुन दयासंयुक्तहो ऋषिने कहा यह समुद्र जड निर्दयी है इसका दंड हम करैंगे यह कह चले गये एक दिन समुद्रके किनारे जप पूजा करते थे कि, समुद्र लहरसे पूजाकी सामग्री बहाय लेगया तब वह पक्षीकी बात स्मरण करके तीन अंजलिमें अर्थात् (राघवायनमः, केशवायनमः, वासुदेवायनमः) ऐसा उच्चारण कर पीगये तब वह बहुत कालतक सूखा पड़ा रहा फिर देवतोंने कुंभजऋषिसे बहुत निवेदन किया तब लघुशंका करके फेर भर दिया ॥

१ अगस्त्यमुनि । २ ओंकार । ३ अत्यन्तछोटा । ४ फूलोंका धनुषबाण । ५ चौदहों लोक ।

दोहा– देखि देखि रघुवीर तन, सुर मनाव धरि धीर ॥
भरे विलोचन प्रेमजल, पुलकावली शरीर ॥ २९७ ॥
नीके निरखि नयन भरि शोभा * पितुप्रणसुमिरिबहुरिमनक्षोभा॥
अहह तात दारुण प्रण ठानी * समझतनाहिंकछुलाभनहानी ॥
सचिव सभय सिखदेइ नकोई * बुध समाज बड़अनुचितहोई ॥
कहँधनुकुलिशहुँ चाहि कठोरा * कहँश्यामलमृदुगात किशोरा॥
विधि केहिभाँति धरौं उर धीरा * सिरससुमनकिमि बेधहिहीरा॥
सकलसभाकी मति भइ भोरी *अब मोहिं शंभु चाप गतितोरी॥
निज जड़ता लोगन पर डारी * होहुहरुअ रघुपतिहि निहारी ॥
अति परताप सीय मनमाहीं * लव निमेष युगसमचालिजाहीं॥
दोहा–प्रभुहिं चितै पुनि चितै महि, राजत लोचन लोल ॥
खेलत मनसिज मीन युग, जनु विधुमंडलडोल ॥ २९८ ॥
गिरा अलिनि मुखपंकज रोकी * प्रगट न लाज निशा अवलोकी
लोचन जल रह लोचन कोना * जैसे परमकृपणकर सोना ॥
सकुची व्याकुलता बड़ि जानी * धरिधीरज प्रतीति उर आनी ॥
तन मन वचन मोरप्रण साँचा * रघुपति पदसरोज मनराँचा ॥
तो भगवान सकल उरवासी * करहिंमोहिं रघुपतिकी दासी ॥
जेहिके जेहिपर सत्य सनेहू * सोतेहि मिलत न कछु संदेहू ॥
प्रभुतन चितै प्रेमप्रण ठाना * कृपानिधान राम सब जाना ॥
सियहिविलोकितक्यउधनुकैसे * चितवगरुड़ लघुव्यालहिजैसे ॥
दोहा–लषण लख्यउ रघुवंशमणि, ताक्यउ हरकोदण्ड ॥
पुलकिगात बोले वचन, चरण चापि ब्रह्मण्ड ॥ २९९ ॥
दिशिकुंजर[११]हु कमठ[१२] अहि[१३] कोला[१४] * धरहुधरणि धरि धीर न डोला॥
राम चहहिं शंकरधनु तोरा * होहु सजग सुनि आयसुमोरा॥
चाप समीप राम जब आये * नरनारिन सुर सुकृत मनाये ॥
सबकर संशय अरु अज्ञाना * मन्द महीपनकर अभिमाना ॥

१ नेत्र । २ संदेह । ३ पिता । ४ मंत्री । ५ पण्डित । ६ वज्र । ७ सिरसका फूल । ८ हलका । ९ दुःख ।
१० पलकल गना । ११ चारोंदिशाके हाथी । १२ कच्छप । १३ शेषजी । १४ बाराह ।

भृगुपति केरि गर्व गरुआई * सुर मुनि वरन केरि कदराई ॥
सियकर शोच्च जनक परितापा * रानिनकर दारुण दुख दापा ॥
शम्भुचाप बड़ बोहित पाई * चढे जाइ सब संग बनाई ॥
रामबाहुबल सिंधु अपारा * चहत पार नहिं कोउकनहारा ॥
दोहा-राम विलोके लोग सब, चित्र लिखेसे देखि ॥
चितई सीय कृपायतन, जानी विकल विशेषि ॥३००॥
देखीविपुल विकल वैदेही * निमिष बिहात कल्पसम तेही ॥
तृषितवारिविन जो तनु त्यागा * मुये करै का सुधातडागा ॥
का वर्षा[1] जब कृषी[2] सुखाने *समय चूक पुनि का पछिताने ॥
अस जिय जानि जानकी देखी *प्रभु पुलके लखि प्रीति विशेषी ॥
गुरुहिप्रणाम मनहिंमन कीन्हा *अति लाघव उठाइ धनु लीन्हा ॥
दमक्यउदामिनि[3]जिमिघनलयऊ* पुनिधनुनभमंडलसमभयऊ ॥
लेत चढावत खैंचत गाढ़े * काहु न लखा देख सब ठाढ़े ॥
त्यहि क्षण मध्य राम धनु तोरा * भरचउभुवनध्वनि[4]घोरकठोरा ॥


धनुषभंग, जानकी स्वयंवर।

छन्द-हरिगीतिका ।
भरि भुवन घोर कठोर रव रवि वाजि तजि मारग चले ।

१ खेती । २ शीघ्रही । ३ बिजली । ४ शब्द ।

चिक्करहिं दिग्गज[1] डोलमहि[2] अहि[3] कोल[4] कूरम कलमले ॥
सुर असुर सुनि कर कान दीन्हें सकलविकल विचारहीं ।
कोदंड भंजेउ राम तुलसी जयति वचन उचारहीं ॥ ३७॥
सो०-शंकर चाप जहाज, सागर रघुवर बाहुबल ॥
बूड़ेउ सकल समाज, चढे जे प्रथमहिं मोहवश ॥ ३५ ॥
प्रभु दोउ खंड चाप महि डारे * देखि लोग सब भये सुखारे ॥
कौशिकरूप पयोनिधिपावन * प्रेमवारि अवगाह सुहावन ॥
रामरूप राकेश निहारी * बढी बीचि[5] पुलकावलिभारी ॥
बाजे नभ[6] गहँगहे[7] निशाना * देववधू[8] नाचहिं करि गाना ॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीशा * प्रभुहिं प्रशंसहिं देहिं अशीशा॥
वर्षहिं सुमन रंग बहु माला * गावहिं किन्नर गीत रसाला ॥
रही भुवनभरि जय जय वानी * धनुषभंग ध्वनि जात न जानी॥
मुदित कहहिं जहँ तहँ नरनारी * भंजेहु राम शम्भुधनुभारी ॥
दोहा--बन्दी मागध सूतगण, विरद वदहिं मतिधीर ॥
करहिं निछावरि लोग सब, हय गय धन मणि चीर ॥३०१॥
झाँझ मृदंग शंख सहनाई * भेरि ढोल दुन्दुभी सुहाई ॥
बाजहिं बहु बाजने सुहाये * जहँ तहँ युवतिन मंगलगाये ॥
सखिनसहित हर्षित अतिरानी * सूखत धान परा जनु पानी ॥
जनक लहेउ सुख शोच विहाई * पैरत थके थाह जनु पाई ॥
श्रीहत भये भूप धनु टूटे * जैसे दिवस दीप छबि छूटे ॥
सियहियसुखवरणियकेहिभाँती * जनु चातक पाये जल स्वाती ॥
रामहिं लषण विलोकत कैसे * शशिहि चकोर किशोरक जैसे ॥
शतानन्द तब आयसु दीन्हा * सीता गमन रामपहँ कीन्हा ॥
दोहा-संग सखी सुन्दरि चतुरि, गावहिं मंगलचार ॥
गवनी बाल मराल[9]गति, सुखमा[10] अंग अपार ॥ ३०२ ॥

१ दिशाओंके हाथी । २ पृथ्वी । ३ शेषनाग । ४ वाराह । ५ तरंग । ६ आकाश । ७ जोरशोरसे ।
८ देवताओंकी स्त्रियां । ९ बालहंस । १० सुन्दरता ।

सखिनमध्यसिय सोहति कैसी * छविगण मध्य महाछविजैसी ॥
करसरोज जयमाल सुहाई * विश्व विजय शोभा जनुछाई ॥
तनुसकोच मन परम उछाहू * गूढ प्रेम लखि परै न काहू ॥
जाय समीप रामछवि देखी * रहि जनु कुँवरि चित्र अवरेखी॥
चतुरसखी लखि कहाबुझाई * पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥
सुनत युगल कर माल उठाई * प्रेम विवश पहिराइ न जाई ॥
सोहतजनु युग जलज सनाला * शशिहि सभीत देत जयमाला॥
गावहिं छवि अवलोकि सहेली * सिय जयमाल राम उरमेली ॥

सो०-रघुवर उर जयमाल, देखि देव वर्षहिं सुमन ॥
सकुचेसकल भुआल, जनु विलोकि रवि कुमुदगण ॥ ३६॥

पुर अरु व्योम बाजने बाजे * खलभये मलिनसाधुसबगाजे॥
सुर किन्नर नर नाग मुनीशा * जयजयसबकहिदेहिंअशीशा ॥
नाचहिं गावहिं विबुध वधूटी * बार बार कुसुमावलि छूटी ॥
जहँ तहँ विप्र वेदध्वनि करहीं * बन्दी विरुदावलि उच्चरहीं ॥
महि पाताल नाक यश व्यापा * राम वरी सिय भंज्यउ चापा॥
करहिं आरती पुर नर नारी * देहिं निछावरि वृत्ति बिसारी ॥
सोहत सीय रामकी जोरी * छवि शृंगार मनहुँ इकठोरी ॥
सखी कहहिं प्रभुपद गहु सीता * करातिनचरणपरशअतिभीता॥

दोहा-गौतमतियगति सुरति करि, नहिं परशति पदपानि ॥
मन विहँसे रघुवंश मणि, प्रीति अलौकिक जानि ॥ ३०३ ॥

तब सिय देखि भूप अभिलाषे * कूर कुपूत मूढ़ मन माषे ॥
उठि उठि पहिरि सनाँहअभागे * जहँ तहँ गाल बजावन लागे॥
लेहु छुड़ाय सीय कह कोऊ * धरि बाँधहुनृपबालक दोऊ ॥
तोरे धनुष काज नहिं सरई * जीवत हमहिं कुवँरिको बरई ॥

१ दोनोंहाथसे । २ कमलकी डंडी । ३ शोभा । ४ राजा । ५ अप्सरा । ६ सघनपुष्पोंकीवर्षा । ७ बख्तर ।

जो विदेह कछु करै सहाई * जीतहु समर सहित दोउभाई ॥
साधु भूप बोले सुनि वानी * राजसमाजहि लाजलजानी ॥
बल प्रताप वीरता बड़ाई * नाक पिनाकहिं संग सिधाई ॥
सोइ शूरता कि अब कहुँ पाई * अस बुधितौविधिमुँहमासिलाई॥
दोहा–देखहु रामहिं नयन भरि, तजि ईर्षा मद मोहु ॥
लषण रोष पावक प्रबल, जानि शलभ[1] जनि होहु ॥ ३०४ ॥
वैनतेय[2] बलि जिमि चह कागा*जिमिशश[3]चहहिनाग[4]अरिभागा॥
जिमि चहकुशलअकारणकोही * सुखसम्पदाचहहिं शिवद्रोही ॥
लोभी लोलुप कीरति चहई * अकलंकता कि कामी लहई ॥
हरिपद विमुख परमगति चाहा * तस तुम्हार लालच नरनाहा ॥
कोलाहल सुनि सीय सकानी * सखी लिवाइ गईं जहँ रानी ॥
रामस्वभाव चले गुरु पाहीं * सिय सनेह वर्णत मन माहीं ॥
रानिन सहित शोच वश सीया * अबधौं विधिहि कहा करणीया॥
भूप वचन सुनि इत उत तकहीं*लषण राम डर बोलि न सकहीं॥
दोहा--अरुण नयन भ्रुकुटी कुटिल, चितवत नृपन सकोप ॥
मनहुँ मत्तगजगण निरखि, सिंह किशोरहि चोप ॥३०५॥
खरभर देखि विकल नर नारी * सब मिलि देहिं महीपन गारी॥
तेहिअवसर सुनि शिवधनुभंगा * आये भृगुकुल[5] कमलपतंगा ॥
देखि महीप सकल सकुचाने * बाज झपट जिमि लवा[6]लुकाने॥
गौरशरीर भूति भलि भ्राजा * भाल[7]विशाल त्रिपुंड़ विराजा ॥
शीश जटा शशिवदन[8] सुहावा *रिसिवश कछुकअरुण[9]ह्वैआवा॥
भ्रुकुटी[10]कुटिल[11] नयन रिसिराते *सहजहुचितवत मनहुँ रिसाते॥
वृषभ[12] कन्ध उर बाहु विशाला * चारु[13]जनेउ माल मृगछाला ॥
कटि मुनिवसन[14] तूण[15] दुइ बाँधे * धनु शर कर कुठार कलकाँधे॥

१ पतंग । २ गरुड़ । ३ खरगोश । ४ सिंह । ५ परशुराम । ६ बटेर । ७ मस्तक । ८ चन्द्रमुख । ९ लाल ।१० भौंह ।
११ टेढ़ी । १२ बैल । १३ पवित्र–सुन्दर । १४ भोजपत्र । १५ तरकश ।

दोहा--सन्तवेष करणी कठिन, वरणि न जाइ स्वरूप ॥
धरि मुनि तनु जनु वीररस, आये जहँ सब भूप ॥ ३०६ ॥
देखत भृगुपति वेष कराला * उठेसकलभयविकलभुआला ॥
पितु समेतकहिकहिनिजनामा * लगे करन सब दण्डप्रणामा ॥
ज्यहिसुभायचितवहिंहितजानी * सोजानै जनु आयु खुटानी ॥
जनक बहोरि आय शिरनावा * सीय बुलाय प्रणाम करावा ॥
आशिष दीन्ह सखी हरषानी * निज समाज लै गईं सयानी ॥
विश्वामित्र मिले पुनि आई * पदसरोज मेले दोउ भाई ॥
राम लषण दशरथके ढोटा[1] * दीन्हअशीशजानिभल जोटा ॥
रामहिं चितय रहे थकिलोचन * रूप अपार मार मदमोचन ॥
दोहा--बहुरि विलोकि विदेहसन, कहहु कहा अति भीर ॥
पूछत जान अजान जिमि, व्यापेउ कोप शरीर ॥ ३०७ ॥
समाचार कहि जनक सुनाये * ज्यहि कारण महीपसबआये ॥
सुनतवचन फिर अनत निहारे * देखे चाप खण्ड महि डारे ॥
अति रिसि बोले वचनकठोरा * कहुजड जनकधनुषक्यहिंतोरा
वेगि दिखाउ मूढ नतु आजू * उलटौं महि जहँलगितवराजू ॥
अति डर उतर देत नृप नाहीं * कुटिल भूप हरषे मनमाहीं ॥
सुर मुनि नाग नगरनर नारी * शोचहिं सकल त्रासउरभारी ॥
मन पछताति सीय महतारी * विधि सँवारि सबबात बिगारी ॥
भृगुपतिकरस्वभावसुनि सीता * अर्द्धनिमेष कल्पसम बीता ॥
दोहा--सभय विलोके लोग सब, जानि जानकी भीर ॥
हृदय न हर्ष विषाद कछु, बोले श्रीरघुवीर ॥ ३०८ ॥
नाथ शम्भुधनु भंजनहारा * होइहि कोउ इक दास तुम्हारा ॥
आयसु कहा कहिय किन मोही * सुनि रिसाह बोले मुनिकोही ॥

१ पुत्र । २ आधापल

सेवक सो जो करै सेवकाई * अरिकरणी करिकरिय लराई॥
सुनहु राम ज्यहिं शिवधनु तोरा * सहसबाहुसम सो रिपु मोरा ॥
सो बिलगाइ विहाइ समाजा * नतु मारे जैहैं सब राजा ॥
सुनिमुनिवचन लषणमुसुकाने * बोले परशुधरहि अपमाने ॥
बहु धनुहीं तोरी लरिकाई * कबहुँ न असरिसिकीन्हगुसाईं॥
यहि धनुपर ममता केहि हेतू * सुनिरिसायकहभृगुकुलकेतू ॥

दोहा--रेनृप बालक कालवश, बोलत तोहिं न सँभार ॥
धनुही सम त्रिपुरारि धनु, विदित सकल संसार ॥ ३०९ ॥

लषण कहा हँसि हमरे जाना * सुनहु देव सब धनुष समाना ॥
का क्षति लाभ जीर्ण धनु तोरे * देखा राम नयेके भोरे ॥
छुवत टूट रघुपतिहिं न दोषू * मुनिविनकाज करियकतरोषू ॥
बोले चितय परशुकी ओरा * रेशठ सुनेसि प्रभाव न मोरा ॥
बालक जानि वधौं नहिं तोहीं * केवल मुनिजड जानेसि मोहीं॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही * विश्वविदित क्षत्रियकुलद्रोही ॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही * विपुलवार महिदेवन दीन्ही ॥
सहसबाहु भुज छेदन हारा * परशु बिलोकु महीपकुमारा ॥

दोहा--मातु पितहि जानि शोचवश, करसि महीप किशोर ॥
गर्भनके अर्भकदलन, परशु मोर अतिघोर ॥ ३१० ॥

विहँसिलषण बोले मृदुवानी * अहो मुनीश महा भटमानी ॥
पुनि पुनि मोहिं देखाव कुठारा * चहत उड़ावन फूँकि पहारा ॥
यहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं * जो तर्जनि देखत मरिजाहीं ॥
देखि कुठार शरासन बाना * मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥
भृगुकुलसमुझि जनेउ बिलोकी * जोकछु कहहु सहौं रिसिरोंकी॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई * हमरे कुल इनपर न शुराई ॥

१ शत्रुकी करणी । २ परशुरामजी । ३ श्रीशिवजी । ४ हानि । ५ पुराना । ६ कोपित । ७ संसार ।

वधे पाप अपकीरति हारे * मारतहूँ पाँ परिय तुम्हारे ॥
कोटिकुलिशसम वचन तुम्हारा* वृथा धरहु धनु बाण कुठारा ॥
दोहा-जो विलोकि अनुचित कह्यउँ, क्षमहु महा मुनिधीर ॥
सुनि सरोष भृगुवंशमणि, बोले गिरागँभीर ॥ ३११ ॥
कौशिक सुनहु मन्दयहबालक* कुटिलकालवशनिजकुलघातक
भानुवंश राकेश कलंकू * निपट निरंकुश अबुध अशंकू॥
कालकवर होइहि क्षण माहीं *कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं॥
तुम हटकहु जो चहहु उबारा * कहि प्रताप बल रोष हमारा ॥
लषणकहा मुनि सुयश तुम्हारा* तुमहिं अछत को वरणैपारा ॥
अपनेमुख तुम आपनि करणी * बार अनेक भाँति बहु वरणी ॥
नहिं सन्तोष तो पुनि कछु कहहू*जनिरिसिरोकिदुसहदुखसहहू॥
वीर वृत्ति तुम धरि अक्षोभा * गारी देत न पावहु शोभा ॥
दोहा-शूर समर करणी करहिं, कहि न जनावहिं आपु ॥
विद्यमान रण पाइ रिपु, कायर कथहिं प्रलापु ॥ ३१२॥
तुमतौ काल हाँकि जनु लावा * बार बार मोहिं लागि बुलावा ॥
सुनत लषणके वचन कठोरा *परशु सुधारि धरच्यउ कर घोरा॥
अब जनि देहु दोष मोहिं लोगू * कटुवादी बालक वध योगू ॥
बाल विलोकि बहुत मैं बाँचा * अब यह मरणहारभा साँचा ॥
कौशिक कहा क्षमिय अपराधू * बाल दोष गुण गणहिं न साधू॥
कर कुठार मैं अकरण कोही* आगे अपराधी गुरु द्रोही ॥
उतरदेत छाँडों विनु मारे * केवल कौशिक शील तुम्हारे ॥
नतु इहि काटि कुठार कठोरे * गुरुहिं उऋणहोतेउँ श्रम थोरे॥
दोहा-गाधिसुवन कह हृदय हँसि, मुनिहिं हरि अरे सूझ ॥
अजगव खण्डेउ ऊख जिमि, अजहुँ न बूझ अबूझ ॥३१३॥
कहेउ लषण मुनि शीलतुम्हारा * को नहिं जान विदित संसारा॥

मातहिं पितहिं उऋणभये नीके * गुरुऋण रहा शोच बड जीके ॥
सो जनु हमरे माथे काढा * दिन चलिगये व्याज बहुबाढा ॥
अब आनिय व्यवहरिया बोली * तुरत देव मैं थैली खोली ॥
सुनि कटु वचन कुठार सुधारा * हाहाकहि सब लोग पुकारा ॥
भृगुवर परशु देखावहु मोही * विप्र विचारि बचौं नृपद्रोही ॥
मिले न कबहुँ सुभट रणगाढे * द्विज देवता घरहिके बाढे ॥
अनुचितकहि सब लोगपुकारे * रघुपति सैनहि लषण निवारे ॥
दोहा–लषण उतर आहुति सरिस, भृगुवर कोप कृशानु[1] ॥
बढत देखि जलसम वचन, बोले रघुकुल भानु[2] ॥ २१४ ॥
नाथ करहु बालकपर छोहू[3] * शुद्ध दूध मुख करिय न कोहू ॥
जो पै प्रभु प्रभाव कछु जाना * तौकि बराबर करत अयाना ॥
जोलरिका कछु अनुचित करहीं * गुरु पितु मातुमोद मन भरहीं ॥
करिय कृपा शिशु सेवक जानी * तुम सम शील धीरमुनि ज्ञानी ॥
राम वचन सुनि कछुक जुडाने * कहिकछुलषण बहुरिमुसकाने ॥
हँसतदेखिनखशिखरिसिव्यापी * राम तोर भ्राता बड पापी ॥
गौर शरीर श्याम मन माहीं * कालकूट[4] मुख पयमुख[5] नाहीं ॥
सहज टेढ अनुहरै न तोहीं * नीच मीच सम लखै न मोहीं ॥
दोहा–लषण कहेउ हँसि सुनहु मुनि, क्रोध पापकरमूल ॥

* परशुरामकी माता रेणुका नहानेको गई वहाँ जलमें मछलियोंको क्रीडा करते देखके इच्छाभईकि, मैं भी घरजाय पतिके संग ऐसेही क्रीडाकरूं. सो कामातुर आयके जमदग्निसे कहा कि, हमें ऐसी इच्छाहै. यह सुन ऋषिको कोप उत्पन्नभया तब तीन बेटे जो और थे उनसे कहा कि, उसको मारडालो उन्होंने आज्ञा न मानी तब ऋषिने परशुरामसे कहा कि इन सबको मारडालो परशुरामने पिताकी आज्ञा सुनतेही उठकर फरसेसे माता और भाइयोंका शिर काटडाला तब ऋषि प्रसन्न होय बोले कि, पुत्र वर मांगो तब परशुरामने माँगा कि तीनो भाइन समेत माताको जिलाय दीजै. सो ऋषिने प्रसन्न होय चारोंको जिलाय दिया और जमदग्निका शिर एक राजा सहस्राबाहुने काटडाला इस निमित्त सारे पृथ्वीके क्षत्रियोंका शिर इन्होंने काटा ॥

१ अग्नि । २ श्रीरामचन्द्रजी । ३ दया । ४ विष । ५ दूधकामुख

जेहि वश जन अनुचित करहिं, चरहिं विश्वप्रतिकूल ॥ ३१५ ॥
मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया * परिहरि कोप करिय अबदाया ॥
टूट चाप नहिं जुरहि रिसाने * बैठिय होइहि पाँय पिराने ॥
जो अतिप्रिय तो करिय उपाई * जोरियकोउ बड़ गुणी बुलाई ॥
बोलत लषणहि जनकडराहीं * मष्टकरहु अनुचित भलनाहीं ॥
थरथर काँपहिं पुर नर नारी * छोट कुमार खोट अति भारी ॥
भृगुपति सुनि सुनि निर्भयवानी * रिसि तनु जरै होय बलहानी ॥
बोले रामहिं देइ निहोरा * बचौं विचारि बन्धु लघु तोरा ॥
मन मलीन तनु सुंदर कैसे * विषरस भरा कनकघटजैसे ॥
दोहा—सुनि लक्ष्मण विहँसे बहुरि, नयन तरेरे राम ॥
गुरु समीप गवने सकुचि, परिहरि वाणी वाम ॥ ३१६ ॥
अति विनीत मृदुशीतल वाणी * बोले राम जोरि युगपाणी ॥
सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना * बालकवचनकरियनहिंकाना ॥
बैरे बालक एक स्वभाऊ * इनहिं न सन्त विदूषहिं काऊ ॥
तिन नाहीं कछु काज विगारा * अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥
कृपा कोप वध बन्ध गुसाईं * मोपर करिय दासकी नाईं ॥
कहियवेगिज्यहिविधिरिसिजाई * मुनिनायकसोइकरियउपाई ॥
कह मुनि राम जाइ रिसि कैसे * अजहुँ बन्धुतव चितव अनैसे ॥
इहिके कण्ठ कुठार न दीन्हा * तौ मैं कहा कोपकरि कीन्हा ॥
दोहा—गर्भ स्रवहिं अवनीपरनि, सुनि कुठार गति घोर ॥
परशु अछत देखौं जियत, वैरी भूप किशोर ॥ ३१७ ॥
बहै न हाथ दहै रिसि छाती * भाकुठार कुंठित नृपघाती ॥
भयउवामविधिफिरयउस्वभाऊ * मोरहृदय कृपा कसकाऊ ॥
आजु दैव दुख दुसह सहावा * सुनिसौमित्रविहँसि शिरनावा ॥
वाउ कृपा मूरति अनुकूला * बोलत वचन झरत जनुफूला ॥

१ अयोग्य । २ टहलुआ । ३ चुपरहहु । ४ स्वर्णकलश । ५ ततैया । ६ बन्धन ७ । राजाओंकी रानियोंके ८ विद्यमान । ९ खुंटा—गोठिल । १० लक्ष्मण ।

जोपै कृपा जरैमुनिगाता * क्रोधभये तनु राखु विधाता ॥
देखु जनक हठि बालक एहू * कीन्ह चहत जड़ यमपुरगेहू ॥
बेगिकरहुकिन आँखिन ओटा * देखत छोट खोट नृप ढोटा ॥
बिहँसे लषण कहा मुनि पाहीं * मूँदियआँखितकहुँकोउनाहीं ॥
दोहा–परशुराम तब रामप्रति, बोले वचन सक्रोध ॥
शम्भु शरासन तोरि शठ, करसि हमार प्रबोध ॥ ३१८ ॥
बन्धु कहै कटु सम्मततोरे * तू छलविनय करसि करजोरे॥
करु परितोष मोर संग्रामा * नाहित छाँडु कहाउब रामा ॥
छलतजि करहु समर शिवद्रोही * बन्धु सहित नतु मारौं तोही ॥
भृगुपति तमकि कुठारउठाये * मन मुसुकाहिं रामशिरनाये ॥
गुणहु लषणकर हमपर रोषू * कतहुँ सुधाइहु ते बड़दोषू ॥
टेढ़ जानि शंका सब काहू * वक्र चन्द्रमहि ग्रसै नराहू ॥
राम कहा रिसि तजिय मुनीशा * कर कुठार आगे यह शीशा ॥
ज्यहिरिसिजाइकरियसोइस्वामी * मोहि जानि आपन अनुगामी॥
दोहा–प्रभुहिं सेवकहिं समर कस, तजहु विप्र वर रोष ॥
भेष विलोकि कहेसि कछु, बालकहू नहिं दोष ॥३१९॥
देखि कुठार बाण धनुधारी * भैलरिकहि रिस वीर विचारी ॥
नाम जान पै तुमहिं न चीन्हा * वंश स्वभावउत्तर तेहि दीन्हा ॥
जो तुम अवत्यउ मुनिकी नाईं * पदरजशिरशिशुधरतगुसाईं ॥
क्षमहु चूक अनजानत केरी * चहित विप्र उर कृपा घनेरी ॥
हमहिंतुमहिंसरिबरिकसनाथा * कहहु तो कहा चरण कहँमाथा॥
राम मात्र लघु नाम हमारा * परशुसहितबड़ नाम तुम्हारा ॥
देव एक गुण धनुष हमारे * नवगुण परम पुनीत तुम्हारे ॥
सब प्रकार हम तुमसन हारे * क्षमहु विप्र अपराध हमारे ॥
दोहा–बार बार मुनि विप्रवर, कहा राम सन राम ॥
बोलेभृगुपति सरुष ह्वइ, तुहूँ बन्धु सम वाम ॥३२०॥

१ वर । २ टेढ़ेचन्द्रमाको । ३ कोमल, तपस्वी, सन्तोष, क्षमा, अतृष्णा, जितेंद्रियता, दानकोदेना, तथा देना, सर्वदाता, दयालु, किन्तु जनेऊ ।

निपटहि द्विजकर जानहु मोहीं * मैं जस विप्र सुनाऊँतोहीं ॥
चाप स्रुवा शर आहुति जानू * कोप मोर अति घोर कृशानू॥
समिधसेन चतुरंग सुहाई * महामहीप भये पशु आई॥
मैं यहि परशु काटि बलि दीन्हे * समरयज्ञ जग कोटिन कीन्हे॥
मोर प्रभाव विदित नहिं तोरे * बोलसि निदरि विप्रकेभोरे ॥
भंज्यउ चाप दाप बड़ बाढ़ा *अहमितिमनहुँजीतिजगठाढा॥
रामकहा मुनि कहहु विचारी * रिसअतिबाडिलघुचूकहमारी॥
छुवतहि टूट पिनाक पुराना * मैं क्यहि हेतु करौं अभिमाना॥
दोहा--जौ हम निदरहिं विप्र वर, सत्य सुनहु भृगुनाथ ॥
तौ असको जगसुभटज्यहि, भयवशनावहिंमाथ॥ ३२१ ॥
देव दनुज भूपति भट नाना * समबल अधिक होउबलवाना॥
जो रण हमहिं प्रचारै कोऊ *लरहिं सुखेन काल किन कोऊ॥
क्षत्रिय तनुधरि समर सकाना * कुलकलंक त्यहि पामर जाना ॥
कहौं स्वभाव नकुलहिं प्रशंशी * कालहु डरहि न रण रघुवंशी॥
विप्रवंशकी असि प्रभुताई * अभय होइ जो तुमहिं डराई ॥
सुनि मृदु गूढ वचन रघुपतिके * उघरे पटल परशुधर मतिके ॥
राम रमापति कर धनु लेहू * खैंचहु चाप मिटै संदेहू ॥
देतचाप आपुहि चढि गयऊ * परशुराम मन विस्मय भयऊ॥
दोहा–जाना राम प्रभाव तब, पुलक प्रफुल्लित गात ॥
जोरि पाणि बोले वचन, प्रेम न हृदय समात ॥ ३२२ ॥
जय रघुवंश वनजवन भानू * गहन दनुजकुल दहन कृशानू॥
जय सुर विप्र धेनु हितकारी *जय मद मोह कोह भ्रमहारी ॥
विनय शील करुणागुणसागर * जयतिवचनरचना अतिनागर॥
सेवकसुखद सुभग सब अंगा * जय शरीर छबि कोटि अनंगा॥
करौं कहा मुख एक प्रशंसा * जय महेश मनमानसहंसा ॥

१ धनुष २ कारण । ३ योद्धा । ४ बराबर । ५ नीच । ६ पर । ७ सन्देह । ८ कमल । ९ कामदेव

अनुचित बहुत कहाउँ अज्ञ[1]

कहि जयजयजयरघुकुलकेतू * भृगुपति गये वनहि तपहेतू ॥
अपभय कुटिल महीप डराने * उठि उठि कायर गवहिं पराने॥

दोहा-देवन दीन्ही दुन्दुभी, प्रभु पर वर्षहिं फूल ॥
हरषे पुर नर नारि सब, मिटा मोह भय शूल॥३२३॥

अथ कथाक्षेपक ।

"दोहा-सुनि धनुभंग कथा रुचिर, परशुराम संवाद ॥
भरद्वाज गद्गदहृदय, बाढेउ प्रेम प्रमाद ॥३२४॥

विविध भाँतिमुनिवरहिनिहोरी * बूझत भये युगल कर जोरी ॥
शिवधनु जनककवनविधिपावा *केहि कारण पुनि ताहितोरावा॥
कथा सो रुचिर कहहु मुनिराई * याज्ञवल्क्य बोले मुसुकाई ॥
जानहु तुम सर्वज्ञ विरागी * बूझहु मोहिं जगत हित लागी॥
अमित अज्ञ इव बहु कृत हेतू * शोधहु मानस प्रेम समेतू ॥
धन्य तात तव प्रीति सुहाई * ईश कृपा सो कहहुँ बुझाई॥
शिवपद तप कारण अमरारी * गा शिवपुर सब भोग बिसारी॥
करि मज्जन शैलेश्वर जहँवाँ * बैठा दृढ आसन करितहँवाँ ॥

दोहा-संवत रवि शत चलिगये, करत कठिन तप जाहि ॥
दीनदयालु पिनाकपति, प्रकट भये लखि ताहि ॥३२५॥

रावण तप कीन्हों अति भारी * भे प्रसन्न तब देव पुरारी ॥
निकट जाय मृदु वचन सुनावा * माँगु माँगुवर निजमन भावा ॥
सुनत श्रवण मृदु मंजुल बयना * हिय हर्षेउखोलेउ निजनयना ॥
जोरि पाणि पद गहि दशशीशा* बोला वचन सुनहु जगदीशा ॥
बसौं लंक मैं अस्त्र विहीना * रहौं सदा वश शोच मलीना ॥
मैं तपकीन नाथ यहि हेतू * देहु अस्त्र मोहिं कृपानिकेतू ॥
विगत शोच सेवौं प्रभुचरणा *होइ दयालु निरखि दुखहरणा॥

१ अनजान । २ करुणाके धाम । ३ परशुराम । ४ रावण

दोहा-आगिल चरित विचार हर, बोले प्रभु गौरीश ॥
ले पिनाक गमनहु भवन, हर्ष सहित दशशीश ॥ ३२६ ॥
सुनि वाणी मृदुमय रसबोरी * दशमुख मोदसहित करजोरी ॥
कहेउ सुनेहुविनती ममस्वामी * प्रभु कृपालु सब अन्तर्यामी ॥
मोसनकेहिविधिउठहिपिनाका * कहिय युक्ति जेहि पहुँचैलंका ॥
हँसि कहकृपासिंधु भगवाना * सुनु मम वचन मूढ अज्ञाना ॥
जो पिनाक नहिं सकहिं उठाई * तो कत जितिहैं रिपुहिलराई ॥
तब तेइँ कहा सुनिय मम नाथा * ले धरिहौं गढ़ शृंगके माथा ॥
निरखतताहिंअरिहिअतिशंका * कोउ रिपुनाहिं ताकी गढ़लंका ॥
ताते प्रभु मैं करौं ढिठाई * क्षमिय नाथ बालक लरिकाई ॥
दोहा--तुम प्रभु लेहु पिनाककर, हों तुम कहँ धरि शीश ॥
ले जइहौं गढ लंकपर, धरि जपिहौं गौरीश ॥ ३२७ ॥
एवमस्तु प्रभु कह मुसुकाई * पुनि प्रभुकहेउवचन समुझाई॥
सुनु प्रमाण तमचर निजहेतू*भूतल कतहुँ धरसि जनिकेतू॥
नतु पुनि कोटि यतन करुधाई * नहि चलिहौं तजि सो ठौराई ॥
लीन पिनाक आप त्रिपुरारी * तेइँ लीन्हेउ उठाय भयहारी ॥
चलतभयेजब तिरहुति आये * तब लघुशंका तोहि लगाये ॥
विप्र वृद्ध धरि वेष कृपाला * श्रीनिवास प्रकटे तेहि काला ॥
दशमुखकहेउ सुनहुद्विजज्ञानी * मोतनु लघुशंका बडिजानी ॥
रंचक शिवहिलेहु निज शीशा * होई शौच लेहु जगदीशा ॥
दोहा-लीन विप्र निज शीश शिव, दशमुख शौच प्रवाह ॥
करत लगी अति देर तब, द्विज बोले करि धाह ॥३२८॥
निज शिवलेहु उठहु असुराया * होंपिसिमान भयो निजकाया॥
अस कहिसोमहितलधरिदयऊ* सो प्रभु द्विज अंतर्हित भयऊ॥
शौच क्रिया करि उठा सुरारी * भाँति अनेक विनय अनुसारी॥

नेकु न निरखेउ शंभु सुजाना * ध्रुव शिव वचनहोयनहिंआना॥
तब सुरारि लंका कहँ गयऊ * वैजनाथ अतिशोभितभयऊ ॥
तहँ सुस्थान किये त्रिपुरारी * अति शुचिठामपरमसुखकारी॥
प्रतिदिन जनक जाहिं कैलासा * पूजहिं शिवपद हृदय हुलासा॥
आवहिं भवन बहुरि जब राजा * करहिंअशनतबसहितसमाजा॥
दोहा-नाग सिद्धि सुधि राम लिखि, विधि सुत सुत यहि भाँति ॥
कीनी श्री जै देह सुत, हरसेवा दिन राति ॥ ३२९ ॥
मन क्रम वचन चहै नहिं आना * हृदय यहै इच्छा वरदाना ॥
शंभु भक्ति दिन दिन अधिकाई * होइ करहि सोइ ईश गुसाँई ॥
निज पद प्रीति विलोकि अपारा * प्रकटि पिनाक पाणि इकबारा॥
गिरिजा युत गिरीश भगवाना * कहा माँगुवर ईश सुजाना ॥
उग्र वचन सुनि तिरहुति नाथा* कर संपुट करि पद धरि माथा ॥
रहे सो ऊर्ध्व गये यक यामा * अधिक प्रसन्न भये तप धामा ॥
शशिशेखर निजकर नृप शीशा * परशि उठायो श्रीगौरीशा ॥
वरंब्रूहि हर कहेउ बहोरी * सुनत जनक बोले करजोरी ॥
दोहा-गिरिजेश्वर करुणाअयन, जो मोपर अनुकूल ॥
तो मोहिं निजपद भक्ति प्रभु, देहु हरण भवशूल ॥ ३३० ॥
सुनि निष्कपट प्रीति अति देखी * शिव सर्वज्ञ कृपालु विशेषी ॥
एवमस्तु नृप तव अभिलाषी * बहुरि कहेबसोजिय महँराखी ॥
भूधर मध्य सघन वन जहँवा * ममअस्थान परमशुचि तहँवा ॥
जानत कोउ कोउ महिमा तासू * मोहिंसेयहुतहँ त्यागि दुराशू ॥
यह कहि शंकर आयसु दयऊ *मुदितजनकतहँगमनतभयऊ ॥
आये गृह तेहि निशि करवासा * प्रातहिकहिजयउमा निवासा ॥
गमनि सपादिसुरसरितअन्हाई * निवसे सोइ सुस्थान सोहाई ॥
पूजी पार्थिव वेद विधाना * तिरहुतिपाति गृहकीन पयाना ॥
दोहा-एतु लोक सार्धं वरष, यहि विधि गयोसिराय ॥

अब्द तासु आधे वरष, भूपति भोग विहाय ॥ ३३१ ॥
रहि तेहि धाम कीन तप भारी * नेकु न मन मलीन तपधारी ॥
परम उग्र तप निजपद आशा * जानि कृपानिधि उमानिवासा॥
शक्ति समेत जनकके आगे * प्रगटे देखि भूप अनुरागे ॥
परे लटक सम गहि पदपानी * वृषभध्वज बहु भाँति बखानी ॥
कर गहि बैठारउ गौरीशा * वरंब्रूहि बोले सुर ईशा ॥
नृप मन मगन चरण अवलोकी * निरखत प्रभुपद भये विशोकी॥
माँगु माँगु पुनि शंकर बोले * समुझिजनक हर बैनअमोले ॥
महाधर्मध्वज धीरज हानी * बोले करि संपुट दोउ पानी ॥
दोहा–माँगन योग न मोरकृत, यद्यपि सुनहु पुरारि ॥
तद्यपि माँगौं सकुचतजि, प्रभु निज ओर निहारि ॥ ३३२ ॥
नितनूतन द्विज चरण सनेहू * देइ सुरनाथ बहुरि सुनलेहू ॥
जो प्रभु तव मन मानस हंसा * अमल स्वरूप इन्द्र अवतंसा ॥
प्रणत कल्पतरु सुखमा ऐना * प्रकट सो मैं देखौं निजनयना ॥
जनक लालसा जगहित लायक * हेतु समुझि शंकर सुखदायक ॥
एवमस्तु कहि हर संकट हर * अति प्रसन्नहोय बहुरिशूलधर ॥
कहेउ कि शशिकुलइन्द्रनिदेशा * पूर्ण सदा तवज्ञान निवेशा ॥
योग यज्ञ अरु ज्ञान निधाना * तेहिप्रकार तोहिं कहौं प्रमाना॥
मम कोदंड लेहि गृह जाहू * पूजेहु सदा समेत उछाहू ॥
छंद–पूजहु सदा प्रमुदित जनक यह धनुष हित नरनागरम् ॥
अइहैं तुम्हारे भवन प्रभु त्रिभुवन धनी सुखसागरम् ॥
युत शक्ति तोहिं सनाथ करिहहिं सहितपुरजन परिजनम् ॥
तुलसी सराहहिं भाग्य तव ब्रह्मादि कवि सब सुरगनम्॥ ३८॥
सोरठा–यहि विधि दे उपदेश, दीन पिनाक पिनाक धन ॥
उमा समेत महेश, गमने पुनि कैलास तब ॥ ३७ ॥
शिवउपदेश जनक सुनिपाये * करि बहु यतन धनुष ले आये ॥

जिमि विदेह शंकर धनुपावा * यथा सुमति तव पाहिं सुनावा ॥
सो धनुखंडि गयोजेहि काजा * सो कारण अब सुनु मुनिराजा ॥
जहँ भवधनुष रहै मुनिराई * जनकवधू प्रतिदिन तहँ जाई ॥
चहूँ पास शुचि चौक बनावहि * बीचरहै कछु दाँवन पावहि ॥
जगजननी सीता इकबारा * अपने करसौं ठौर सँवारा ॥
जो धनु सकेउ न कोउ भटटारी * विनुश्रमवाम पाणि सुकुमारी ॥
लीन देखि नृप अचरज माना * विधिवशकठिन प्रतिज्ञाठाना ॥
दोहा-अब जो तोरै यहधनुष, सुता विवाहौं ताहि ॥
खंडि गयो तेहि कारण, प्रभु कौतुक जग माहिं ॥ ३३३ ॥
हरि हर कृपा कहब सब, बहुरि सुनै चित लाय ॥
जब गमने जमदग्नि सुत, तेहि अवसर मुनिराय ॥३३४ ॥

इति क्षेपक ।

अति गहगहे बाजने बाजे * सबहिं मनोहर मंगलसाजे ॥
यूथ यूथ मिलि सुमुखिसुनयनी * करहिं गान कल कोकिलबयनी ॥
सुख विदेह कर वरणि न जाई * जन्म दरिद्र मनहु निधि पाई ॥
विगतत्रास भइ सीय सुखारी * जनु विधुंउदयचकोर कुमारी ॥
जनककीन्ह कौशिकहिप्रणामा * प्रभु प्रसाद धनु भंज्यउ रामा ॥
मोहिंकृतकृत्यकीन्हदोउ भाई * अबजोउचितसोकहियगुसाँई ॥
कह मुनि सुनु नरनाह प्रवीना * रहा विवाह चाप आधीना ॥
टूटतही धनु भयउ विवाहू * सुर नर नाग विदित सब काहू ॥
दोहा-तदपि जाइ तुम करहुअब, यथा वंशव्यवहार ॥
बूझि विप्र कुलवृद्ध गुरु, वेद विदित आचार ॥३३५॥
दूत अवधपुर पठवहु जाई * आनैं नृप दशरथहिं बुलाई ॥
मुदितराउ कहिभलेहिकृपाला * पठये दूत अवध त्यहिकाला ॥
बहुरि महाजन सकल बुलाये * आइ सबनि सादर शिरनाये ॥
हाट बाट मन्दिर पुर वासा * नगर सँवारहु चारचहु पासा ॥

१ चन्द्र । २ कृतार्थ ।

हर्षि चले निजनिज गृह आये * पुनि परिचारक बोलि पठाये ॥
रच्यहु विचित्र वितान बनाई * शिरधरि वचन चले सचुपाई ॥
पठये बोलि गुणी तिन्ह नाना * जो वितानविधिकुशलसुजाना ॥
विधिहिवन्दितिन्हकीन्हअरंभा * विरचे कनक कदलीखंभा ॥
दोहा–हरितमणिनके पत्र फल, पद्मरागके फूल ॥
रचना देखि विचित्र अति, मन विरंचिके भूल ॥ ३३६ ॥
वेणुहरित मणिमय सब कीन्हें * सरल सपर्ण पराहिं नहिंचीन्हें ॥
कनककलित अहिबेलि बनाई * लखि नहिं परै सुवर्ण सुहाई ॥
त्यहिके रचि पचि बंध बनाये * बिचबिच मुकता दाम सुहाये ॥
माणिकमरकतकुलिशपिरोजा * चीरकोर पचि रचे सरोजा ॥
किये भृंग बहु रंग विरंगा * गुंजहि कुंजहि पवन प्रसंगा ॥
सुरप्रतिमा खम्भनगहि काढी * मंगल द्रव्य लिये सब ठाढी ॥
चौके भाँति अनेक पुराये * सिन्दुर मणिमय सहज सुहाये ॥
दोहा–सौरभ पल्लव सुभग सुठि, किये नीलमणि कोर ॥
हेम बौर मरकत घवँरि, लसत पाटमय डोर ॥ ३३७ ॥
रचे रुचिर वर बन्धन वारे * मनहु मनोभव फंद सँवारे ॥
मंगल कलश अनेक बनाये * ध्वज पताक पट चँवर सुहाये ॥
दीप मनोहर मणिमय नाना * जाइनवरणिविचित्र विताना ॥
ज्यहि मण्डप दुलहिनि वैदेही * सो वरणै असिमति कवि केही ॥
दूलहराम रूप गुणसागर * सो वितान तिहुँलोक उजागर ॥
जनक भवनकी शोभा जैसी * गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी ॥
ज्यहितिरहुँतित्यहिसमयनिहारी * त्यहिलघुलगेभुवनदशचारी ॥
जो सम्पदा नीच गृह सोहा * सो विलोकिसुरनायकमोहा ॥
दोहा–बसै नगर ज्यहि लक्षि करी, कपट नारि बर वेष ॥
त्यहि पुरकी शोभा कहत, सकुच शारदा शेष ॥ ३३८ ॥
पहुँचे दूत रामपुर पावन * हरषे नगर विलोकि सुहावन ॥

१ सेवक । २ मंडप । ३ केला । ४ सुन्दर । ५ बाँस । ६ पानकीबेली । ७ आँबकेपत्ते । ८ सोनेकाबौर । ९ छोटी ९आँबियोंकागुच्छा । १० रेशम । ११ कामदेव । १२ मिथिलापुरी । १३ लक्ष्मीजी ।

भूपद्वार तिन खबरि जनाई * दशरथ नृप सुनि लिये बुलाई ॥
करि प्रणाम तिन्ह पाती दीन्हीं * मुदित महीपआपउठिलीन्हीं ॥
वारि विलोचन बाँचत पाती * पुलकगात आई भरि छाती ॥
राम लषण उर कर बरचीठी * रहि गये कहत न खाटीमीठी ॥
पुनि धरिधीर पत्रिका बाँची * हरषी सभा बात सुनि साँची ॥
खेलत रहे तहाँ सुधि पाई * आये भरत सहित दोउभाई ॥
पूँछत अति सनेह सकुचाई * तात कहाँते पाती आई ॥
दोहा–कुशल प्राणप्रिय बन्धुदोउ, अहहि कहहु क्यहि देश ॥
सुनि सनेह साने वचन, बाँची बहुरि नरेश ॥ ३३९ ॥

अथ कथा क्षेपक चिट्ठी ।

स्वस्ति श्रीभूपनके भूपा * धर्म्म महीधर ज्ञान स्वरूपा ॥
शीलसीव सुकृत गुणसागर * इन्द्रसभा सब भाँति उजागर ॥
हरि हर कृपापात्र सुखपुंजा * तवयश गिरिसम पटतर गुंजा॥
लिखौंकाहिसमअसजियजानी * प्रभुदशरथसुप्रीति पहिचानी ॥
पढ़तहि जनक विनयपरिमाना * सपदि समाज समेत पयाना ॥
करब जनकपुर पावन हेतू *व्याह हर्षयुत रघुकुलकेतू ॥
गमनब पुनि दोउ बंधु लिवाई * क्षमा करब मुनिदास ढिठाई॥
यद्यपि प्रभु गिरिजेश प्रतापू * श्रीरघुवीर मंगलमय आपू ॥
दोहा–तद्यपि शुभ दिन लगनकर, गुण वरना है आज ॥
सेवक मनवांछित सफल, वेगि करिय शिरताज ॥ ३४० ॥

इति क्षेपक ।

*अनंत श्रीमहाराज अपराजिताधिराज सकल महाराजानिशिरताज जगलाजको जहाज गरीब नेवाज महिमण्डल महेंद्र सुरेंद्रके उपेंद्र सम करन काज यश जगत जहान केतेमान समान प्रतापवान दानमान सन्मान सुजान ज्ञान प्रेम निधान दशरथ भूप भूपते शील केतु भूपकी जो-हार आप अनूप कुशल स्वरूप हैं यहाँ आपकी कृपाही कुशल है। भुवन हितकारी मुनिसंग अंग अंग आभा उमंग अनंग आभाभंग करनहार आपके युगल कुमार आये। हमने लोचन लाहु पाये रामचन्द्रने महिपन मदमोरि महेश धनुतोरि मही कीर्ति छाई। महिजा पाई। सजिव-रात आइये, व्याहि ले जाइये ॥
आपका–जनकराज.

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता * अधिक सनेह समात न गाता ॥
प्रीति पुनीत भरतकी देखी * सकलसभासुखलह्यउविशेषी॥
तब नृप दूत निकट बैठारे * मधुर मनोहर वचन उचारे ॥
भैया कुशल कहहु दोउबारे * तुम नीके निज नयन निहारे ॥
श्यामल गौर धरे धनु भाथा * वयकिशोरकौशिकमुनिसाथा॥
पहिचान्यउ तो कहहु स्वभाऊ * प्रेमविवश पुनि पुनि कहराऊ ॥
जादिनते मुनि गये लिवाई * तबते आजु साँचि सुधि पाई ॥
कहहु विदेह कवन विधि जाने * सुनि प्रिय वचनदूत मुसुकाने ॥
दोहा–सुनहु महीपति मुकुटमणि, तुम सम धन्य न कोउ ॥
राम लषण जिनके तनय, विश्व विभूषण दोउ ॥ ३४१ ॥
पूंछन योग न तनय तुम्हारे * पुरुष सिंह तिहुँ पुर उजियारे ॥
जिनके यश प्रतापके आगे * शशिमलीन रवि शीतललागे ॥
तिनकहँकहियनाथकिमिचीन्हे * देखियरविहिकि दीपकलीन्हे ॥
सीय स्वयम्वर भूप अनेका * सिमिटे सुभट एकते एका ॥
शम्भु शरासन काहु न टारा * हारे सकल भूप बरियारा ॥
तीन लोकमहँ जे भटमानी * सबकी शक्ति शम्भु धनुभानी ॥
सकै उठाइ सुरासुर मेरू * सोउहिय हारि गयउकरिफेरू॥
ज्यहि कौतुक शिव शैल उठावा * सो त्यहि सभा पराभव पावा॥
दोहा–तहाँ रामरघुवंश मणि, सुनिय महामहिपाल ॥
भंजेउ चाप प्रयासविनु, जिमि गज पंकज नाल ॥ ३४२ ॥
सुनि सरोष भृगुनायक आये *बहुतभाँति तिन आँखिदिखाये॥
देखिरामबल निज धनु दीन्हा * करिबहुविनयगमनवनकीन्हा॥
राजतराम अतुलबल जैसे * तेजनिधान लषण पुनि तैसे ॥
कम्पहिं भूपविलोकत जाके * जिमिगजहरिकिशोरके ताके ॥
देव देखि तव बालक दोऊ * अवनि आँखतर आव न कोऊ॥
दूत वचन रचना प्रियलागी * प्रेम प्रताप वीररस पागी ॥

१. परशुराम । २ शोभित । ३ सिंहकाबच्चा । ४ पृथ्वी

सभा संमेत राउ अनुरागे * दूतहिं देन निछावर लागे ॥
कहि अनीति तेहिं मूँदेउकाना * धर्म विचारिसबहिं सुखमाना ॥
दोहा–तब उठि भूप वसिष्ठ कहँ, दीन्ह पत्रिका जाइ ॥
कथा सुनाई गुरुहिं सब, सादर दूत बुलाइ ॥३४३॥
सुनि बोले मुनिअतिसुखपाई * पुण्यपुरुषकहँमहिसुखछाई ॥
जिमि सरितासागरमहँ जाहीं * यद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥
तिमिसुखसम्पतिविनहिंबुलाये * धर्मशीलपहँ जाहिं सुभाये ॥
तुम गुरु विप्र धेनु सर सेवी * तस पुनीत कौशल्या देवी ॥
सुकृती तुमसमान जग माहीं * भयउ नहै कोउ होन्यउ नाहीं॥
तुमतेअधिक पुण्य बड काके * राजन रामसरिस सुत जाके ॥
वीर विनीत धर्मव्रतधारी * गुणसागर बालक वरचारी ॥
तुम कहँ सर्वकाल कल्याना * सजहुँ बरात बजाइ निशाना ॥
दोहा–चल्यहु वेगि सनि गुरु वचन, भलेहि नाथ शिरनाइ ॥
भूपति गवने भवन तब, दूतहि वास दिवाइ ॥ ३४४ ॥
राजा सब रनिवास बुलाई * जनकपत्रिका बाँचि सुनाई ॥
सुनि सन्देश सकल हरषानी * अपर कथा सब भूप बखानी ॥
प्रेमप्रफुल्लित राजहिं रानी * मनहुँशिखिनसुनिवारिदवानी॥
मुदितअशीश देहिं गुरु नारी * बारहिंबार मगन महतारी ॥
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती * हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती ॥
राम लषणकी कीरति करणी * बारहिं बार भूप वर बरणी ॥
मुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाये * रानिन तब महिदेव बुलाये ॥
दिये दान आनन्द समेता * चले विप्रवर आशिष देता ॥
सो०–याचक लिये हँकारि, दीन्ह निछावरि कोटि विधि ॥
चिरंजीवहु सुत चारि, चक्रवर्ति दशरत्थके ॥ ३८ ॥
कहत चले पहिरि पट नाना * हरषि हने गहगहे निशाना ॥
समाचार सब लोगन पाये * लागे घर घर होन बधाये ॥

१ नदियाँ । २ इच्छा । ३ मोर । ४ बादल ।

भुवन चारिदश भयउ उछाहू * जनकसुता रघुवीर विवाहू ॥
सुनि शुभकथा लोग अनुरागे * मग गहगली सँवारन लागे ॥
यद्यपि अवध सदैव सुहावनि * रामपुरी मंगलमय पावनि ॥
तदपि प्रीतिकी रीति सुहाई * मंगल रचना रची बनाई ॥
ध्वज पताक पट चामर चारू * छाये परम विचित्र बजारू ॥
कनककलशतोरण मणिजाला * हरद दूब दधि अक्षत माला ॥
दोहा--मंगलमय निज निज भवन, लोगनरचे बनाइ ॥
बीथी सींची चतुर सब, चौकें चारु पुराइ ॥३४५॥
जहँतहँयूथयूथमिलिभामिनि * सजिनवसप्तकलशद्युतिदामिनि
विधुवदनी मृगशावकलोचनि * निजस्वरूपरतिमानविमोचनि॥
गावहिं मंगल मंजुल वानी *सुनि कलरव कलकंठ लजानी॥
भूपभवन किमि जाइ बखाना * विश्व विमोहन रचेउ विताना॥
मंगल द्रव्य मनोहर नाना * गाजतबाजत विपुल निशाना॥
कतहुँ विरुद वन्दी उच्चरहीं * कतहुँ वेदध्वनि भूसुर करहीं ॥
गावहिं सुन्दरि मंगल गीता * लैलै नाम राम अरु सीता ॥
बहुत उछाह भवन अति थोरा * मानहुँ उमँगिचला चहुँओरा॥
दोहा--शोभा दशरथ भवनकी, को कबिवरणै पार ॥
जहाँ सकल सुर शीशमणि, राम लीन्ह अवतार ॥ ४४६ ॥
भूप भरत पुनि लये बुलाई * हय गयस्यन्दन साजहु जाई ॥
चलहु वेगि रघुवीर बराता * सुनत पुलक पूरे दुउभ्राता ॥
भरत सकल साहनी बुलाये * आयसुदीन्ह मुदितउठिधाये ॥
रुचिरुचितुरँग साज तिनसाजे * वर्ण वर्ण बरवाजि विराजे ॥
सुभग सकलसुठिचंचलकरणी * असजिमिजरतधरतपगुधरणी॥
नानाभाँति न जाहिं बखाने * निदरि पवन जनु चहत उड़ाने॥
तिनपर छयल भये असवारा * भरत सरिससबराजकुमारा ॥
सब सुन्दर सब भूषण धारी * कर शर चाप तूण कटिभारी ॥

१ सोनेके तारोंसे रचेहुये वस्त्र किंतु चमर । २ सोलहौंशृंगार । ३ चन्द्रमुखी । ४ मृगके बच्चोंके ऐसे नेत्रवाली । ५ दरोगा

दोहा–छैरे छबीले छयल सब, शूर सुजान नवीन ॥
युग पदचर असवार प्रति, जे आसि कला प्रवीन ॥ ३४७ ॥
बाँधे विरद वीर रण गाढे * निकसि भये पुरबाहिर ठाढे ॥
फेरहिं चतुर तुरँग गति नाना * हर्षहिंध्वनिसुनिपणवनिशाना॥
रथ सारथिन विचित्र बनाये * ध्वज पताक मणिभूषण छाये ॥
चमरचारुकिंकिणिध्वनिकरहीं * भानु यान शोभा अपहरहीं ॥
श्यामकर्ण अगणित हय होते * तेतिन्ह रथन सारथिन जोते ॥
सुन्दर सकल अलंकृत सोहैं * जिनहिविलोकत मुनिमनमोहैं॥
जे जलचलहिं थलहिं की नाईं * टाप न बड़ वेग अधिकाई ॥
अस्त्र शस्त्र सब साज सजाई * रथी सारथिन लिये बुलाई ॥
दोहा–चढ़ि चढ़ि रथ बाहर नगर, लागी जुरन बरात ॥
होत शकुन सुन्दर सुखद, जो ज्यहि कारज जात ॥ ३४८ ॥
कलितकरिवरन परी अँबारी * कहिनजाइ ज्यहिभाँतिसँवारी॥
चले मत्तगज घण्ट विराजे * मनहु सुभग सावन घन गाजे॥
वाहन अपर अनेक विधाना * शिबिकासुभगसुखासनयाना ॥
तिन्हचढि चले विप्र वर वृन्दा * जनु तनुधरे सकल श्रुतिछन्दा॥
मागध सूत बन्दि गुणगायक * चले यानचढिजोज्यहिलायक॥
बेसर ऊंट वृषभ बहु जाती * चले वस्तु भरि अगणितभाँती ॥
कोटिन काँवरि चले कहारा * विविध वस्तु को वरणे पारा ॥
चले सकल सेवक समुदाई * निज निज साज समाज बनाई॥
दोहा–सबके उर निर्भय हरष, पूरित पुलक शरीर ॥
कबहि देखिहैं नयन भरि, राम लषण दोउबीर ॥ ३४९ ॥
गर्जहिं गजघण्टाध्वनिघोरा * रथ रव बाजि हींस चहुँ ओरा॥
निदरि घनहिं घुमरहिं निशाना * निजपराव कछु सुनियन काना
महाभीर भूपतिके द्वारे * रज हुइजाइ पषाण पँवारे ॥
चढीं अटारिन देखहिं नारी * लिये आरती मंगल थारी ॥

१ पतले । २ सुन्दर । ३ तरवारचलानेमें चतुर । ४ ढोल । ५ नगारा । ६ हाथी । ७ बादल । ८ पालकी । ९ रथ ।
१० खबर । ११ बैल । १२ पत्थर ।

गावहिं गीत मनोहर नाना * अति अनन्द नहिं जाइ बखाना ॥
तब सुमन्त दुइस्यन्दन साजी * जोते हय रवि निन्दक बाजी ॥
दोउरथ रुचिर भूपपहँ आने * नहिं शारद प्रति जाहिं बखाने ॥
राजसमाज एकरथ भ्राजा * दूसर तेज पुंज अति राजा ॥
दोहा–त्यहि रथ रुचिर वसिष्ठ कहँ, हरषि चढ़ाइ नरेश ॥
आपु चढेउ स्यन्दन सुमिरि, हर गुरु गौरि गणेश ॥ ३५० ॥
सहित वसिष्ठ सोह नृप कैसे * सुरगुरु संग पुरन्दर जैसे ॥
करि कुलरीति वेद विधि राऊ * देखि सबहिं सब भाँतिबनाऊ ॥
सुमिरि राम गुरु आयसु पाई * चले महीपति शंख बजाई ॥
हरषे विबुध विलोकि बराता * वर्षहिं सुमन सुमंगल दाता ॥
भयउ कोलाहल हय गज गाजे * व्योम बरात बाजने बाजे ॥
सुर नर नारि सुमंगल गाई * सरस राग बाजहिं सहनाई ॥
घंट घंटि ध्वनि वरणि न जाई * सरौ करैं पायक फहराई ॥
करहिं विदूषक कौतुक नाना * हास कुशल कलगान सुजाना ॥
दोहा–तुरँग नचावहिं कुँवर वर, अंकनि मृदँग निशान ॥
नागरनटचितवहिंचकित, डिगहि न ताल विधान ॥ ३५१ ॥
बनै न वर्णत बनी बराता * होइँ शकुन सुन्दर शुभदाता ॥
चारा चाखँ वाम दिशि लेई * मनहु सकल मंगल कहिदेई ॥
दाहिन काग सुखेत सुहावा * नकुल दरशसब काहुन पावा ॥
सानुकूल बह त्रिविध बयारी * सघट सबाल आव बरनारी ॥
लोवा फिरिफिरिदरशदिखावा * सुरभीसन्मुखशिशुहिपियावा ॥
मृगमालादाहिन दिशि आई * मंगलगण जनु दीन दिखाई ॥
क्षेमकरी कह क्षेम विशेषी * श्यामा वाम सुतरु पर देखी ॥
सन्मुखआयउ दधि अरु मीना * कर पुस्तक दुइ विप्र प्रवीना ॥
दोहा–मंगलमय कल्याणमय, अभिमत फल दातार ॥
जनु सब साँचे होन हित, भये शकुन इक बार ॥ ३५२ ॥

१ रथ । २ घोड़े । ३ सुन्दर । ४ बृहस्पति । ५ इन्द्र । ६ चतुरनट । ७ नीलकण्ठ । ८ लोखरी ।
९ गायें । १० हरिणोंकी पंक्ति । ११ मछली ।

मंगल शकुन सुगम सब ताके * सगुण ब्रह्म सुन्दर सुत जाके ॥
राम सरिस वर दुलहिनि सीता * समधी दशरथ जनक पुनीता॥
सुनि अस ब्याहशकुनसब नाँचे * अब कीन्हे विरंचि हम साँचे ॥
इहिविधि कीन बरात पयाना * हयगजगाजहिंहनहिंनिशाना ॥
आवत जानि भानुकुलकेतू * सरितन जनक बँधाये सेतू ॥
बीच बीच वर वास बनाये * सुरपुर सरिस सम्पदा छाये ॥
अशन शयन वरवसन सुहाये * पावहिंसब निजनिजमनभाये॥
नितनूतनलखि सुख अनुकूला * सकल बरातिन मन्दिर भूला॥
दोहा–आवत जानि बरात वर, सुनि गहगहे निशान ॥
साजि गज रथ पदचर तुरँग, लेन चले अगवान ॥ ३५३ ॥
कनककलश कल कोपर थारा * भोजनसलिल अनेक प्रकारा ॥
भरे सुधासम सब पकवाना * भाँति भाँतिनाहिंजाहिंबखाना ॥
फल अनेक वरवस्तु सुहाई * हरषि भेंट हित भूप पठाई ॥
भूषण वसन महामणि नाना * खगमृगहयगजबहुविधियाना ॥
मंगल शकुन सुगन्ध सुहाये * बहुत भाँति महिपालपठाये ॥
दधि चिउरा उपहार अपारा * भरि भरि काँवरि चले कहारा ॥
अगवानन जब दीख बराता * उर आनन्द पुलक भर गाता॥
देखि बनाव सहित अगवाना * मुदित बरातिन हने निशाना ॥
दोहा–हरषि परस्पर मिलन हित, कछुक चले बगमेल ॥
जनु आनन्द समुद्र दुइ, मिलत विहाय सुबेल ॥ ३५४॥
बरषि सुमनसुरसुन्दरिगावहिं * मुदित देव दुन्दुभी बजावहिं ॥
वस्तुसकल राखी नृप आगे * विनयकीन्हतिन्हअतिअनुरागे॥
प्रेम समेत राउ सब लीन्हा * भै बखशीश याचकन दीन्हा ॥
करि पूजा मान्यता बड़ाई * जनवासे कहँ चले लिवाई ॥
वसन विचित्र पाँवड़े परहीं * नृप दशरथ तापर पगधरहीं ॥
देखि धनद धनमद परिहरहीं * बरषिसुमनसुरजयजयकरहीं ॥

१पुल । २ भोजन । ३ नवीन । ४ झारि । ५ अमृत । ६ राजजनक । ७ फलाहारी वस्तु । ८ कुबेर

अतिसुन्दर दीन्हेउ जनवासा * जहँसबकहँसबभाँति सुपासा॥
जानी सिय बरात पुर आई * कछुनिजमहिमाप्रगटिजनाई ॥
हृदय सुमिर सब सिद्धि बुलाई * भूप पहुनई करन पठाई ॥
दोहा–सिय आयसु शिर सिद्धि धारि, गईं जहाँ जनवास ॥
लिये सम्पदा सकल सुख, सुरपुर भोग विलास ॥ ३५५ ॥
निजनिज वास विलोकि बराती * सुरसुखसकलसुलभसबभाँती॥
विभवभेद कछु काहु न जाना * सकलजनककरकरहिं बखाना॥
सिय महिमा रघुनायक जानी * हरषे हृदय हेतु पहिंचानी ॥
पितु आगमन सुनत दोउ भाई * हृदय न अति आनन्दसमाई ॥
सकुचत कहिनसकत गुरुपाहीं * पितु दर्शनलालचमनमाहीं ॥
विश्वामित्र विनय बडि देखी * उपजा उर सन्तोष विशेषी ॥
हरषि बन्धु दोउ हृदय लगाये * पुलक अंग लोचन जल छाये॥
चले जहाँ दशरथ जनवासे * मनहुँ सरोवर तकयउ पियासे॥
दोहा– भूपविलोके जबहिं मुनि, आवत सुतन समेत ॥
उठे हरषि सुखसिन्धु महँ, चले थाहसी लेत ॥३५६॥
मुनिहिं दण्डवतकीन्ह महीशा * बार बार पद रज धरिशीशा ॥
कौशिक राउ लिये उरलाई * दैं अशीश पूँछी कुशलाई ॥
पुनि दण्डवत करत दोउभाई * देखिनृपति उर सुख न समाई॥
सुत हिय लाइ दुसह दुख मेंटे * मृतक शरीर प्राण जनु भेंटे ॥
पुनि वसिष्ठपद शिर तिन नाये * प्रेम मुदित मुनिवर उरलाये ॥
विप्र वृन्द वन्दे दोउ भाई * मनभावति अशीश तिन्हपाई ॥
भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा * लिये उठाइ लाइ उर रामा ॥
हरषे लषण देखि दोउ भ्राता * मिले प्रेम परिपूरण गाता ॥
दोहा--पुरजन परिजन जाति जन, याचक मंत्री मीत ॥
मिले यथा विधि सबहिं प्रभु, परम कृपालु विनीत ॥३५७॥
रामहिं देखि बरात जुड़ानी * प्रीति कि रीति न जाइबखानी॥

१ सिद्धि आठ प्रकारकी–अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, प्रभुत्व । २ संपदाका भेद

नृप समीप सोहहिं सुत चारी * जनु धन धर्मादिक तनुधारी ॥
सुतन सहित दशरथ कहँ देखी * मुदित नगर नर नारि विशेषी ॥
सुमनवरषि सुर हनहिंनिशाना * नाकनटी नाचहिं करिगाना ॥
शतानन्द अरु विप्र सचिवगन * मागध सूत विदुष बन्दीजन ॥
सहित बरात राउ सनमाना * आयसु माँगि चले अगवाना ॥
प्रथम बरात लगनते आई * ताते पुर प्रमोद अधिकाई ॥
ब्रह्मानन्द लोग सब लहहीं * बढ़हुदिवसनिशिविधिसनकहहीं
दोहा—राम सीय शोभा अवधि, सुकृत अवधि दोउ राज ॥
जहँ तहँ पुरजन कहहिं अस, मिलि नर नारि समाज ३५८॥
जनक सुकृत मूरति वैदेही * दशरथ सुकृत रामधरि देही ॥
इनसम काहु न शिव आराधे * काहु न इन समान फल साधे॥
इनसमकोउनभयउजगमाहीं * है नहिं कतहूं होन्यहु नाहीं ॥
हमसब सकल सुकृतकी राशी * भए जगजन्मि जनकपुरवासी ॥
जिन जानकी रामछबि देखी * कोसुकृती हमसरिस विशेखी॥
पुनि देखब रघुवीर विवाहू * लेब भलीविधि लोचन लाहू ॥
कहहिं परस्पर कोकिलबयनी * यह विवाह बडलाहुसुनयनी ॥
बडे भाग्य विधि बात बनाई * नयन अतिथि होइहैं दोउभाई॥
दोहा—बारहिं बार सनेह वश, जनक बुलाउब सीय ॥
लेन आइहहिं बन्धु दोउ, कोटि काम कमनीय ॥ ३५९ ॥
विविध भाँति होइहि पहुनाई * प्रिय न काहि अस सासुरमाई॥
तब तब रामलषणहिंनिहारी * होइहहिं सब पुरलोगसुखारी ॥
सखिजसराम लषणकरजोटा * तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा ॥
श्याम गोर सब अंग सुहाये * ते सब कहहिं देखि जे आये ॥
कहा एक मैं आजु निहारे * जनु विरंचि निजहाथ सँवारे ॥
भरत राम एकहि अनुहारी * सहसा लखिनसकहिंनरनारी ॥
लषण शत्रुसूदन इक रूपा * नख शिख ते सब अंगअनूपा ॥

१ अप्सरा । २ आनन्द । ३ ब्रह्मा । ४ सेवा-पूजा । ५ शोभा । ६ नेत्राकालाभ । ७ शीघ्र । ८ शत्रुघ्न

मनभावहिं सुखवरणि न जाहीं * उपमाकहँत्रिभुवनकोउनाहीं ॥
छन्द-उपमानकोउ कह दासतुलसी कतहुँ कविकोविद कहैं ॥
बलविनय विद्या शील शोभा सिन्धु इन सम ये अहैं ॥
पुर नारि सकल पसारि अँचल विधिहि विनय सुनावहीं ॥
व्याहिय सु चारिउ भाइ इहिपुर हम सुमंगल गावहीं॥३९॥
सो०-कहहिं परस्पर नारि, वारि विलोचन पुलक तनु ॥
सखि सब करब पुरारि, पुण्य पयोनिधि भूपदोउ ॥ ३९ ॥
इहिविधि सकलमनोरथकरहीं * आनँदउमँगिउमँगिउर भरहीं॥
जे नृप सीय स्वयम्बर आये * देखि बन्धु सब तिन सुखपाये॥
कहत रामयश विशदविशाला * निज निज भवन गये महिपाला
गये बीति कछुदिन यहिभाँती * प्रमुदित पुरजन सकलबराती ॥
मंगलमूल लगनदिन आवा * हिमऋतु अगहनमास सुहावा॥
ग्रह तिथि नखत योगवरवारू *लगनशोधिविधिकीन्ह विचारू॥
पठैदीन नारद कर सोई * गुणीजनकके गणकन जोई ॥
सुनी सकल लोगन यह बाता * कहहिंज्योतिषीअहहिंविधाता॥
दोहा-धेनु धूलि बेला विमल, सकल सुमंगल मूल ॥
विप्रन कहाउ विदेहसन, जानि समय अनुकूल ॥ ३६० ॥
उपरोहितहि कहाउ नरनाहा * अब विलम्ब कर कारणकाहा॥
शतानन्द तब सचिव बुलाये * मंगलकलश साजि सब लाये॥
शंख निशान पणव बहु बाजे * मंगलकलश शकुन सब साजे॥
सुभगसुआँसिनि गावहिंगीता * करहिं वेदध्वनि विप्र पुनीता॥
लेन चले सादर इहिभाँती * गये जहाँ जनवास बराती ॥
कोशलपति कर देखि समाजू *अति लघु लगे तिनहिं सुरराजू॥
भयउ समय अब धारिय पाँऊ * यह सुनि परा निशानँन घाऊ॥
गुरुहिपूँछिकरि कुलविधिराजा * चले संग मुनि साधु समाजा॥
दोहा-भाग्य विभव अवधेश कर, देखि देव ब्रह्मादि ॥

१ पण्डित । २ समुद्र । ३ निर्म्मल । ४ ग्रह । ५ ज्योतिषी । ६ मंत्री । ७ पुरकीलड़कियाँ । ८ छोटे । ९ इन्द्र । १० बाजा।

लगे सराहन सहस मुख, जानि जन्म निज बादि ॥ ३६१ ॥
सुरन सुमंगल अवसर जाना * बर्षहिं सुमन बजाइ निशाना ॥
शिव ब्रह्मादिक विबुध बरूथा * चढ़े विमानन नाना यूथा ॥
प्रेम पुलक तनु हृदय उछाहू * चले विलोकन राम विवाहू ॥
देखि जनकपुर सुर अनुरागे * निजनिज लोक सबहिंलघुलागे॥
चितवहिंचाकितविलोकिविताना * रचनासकल अलौकिकनाना ॥
नगर नारि नर रूप निधाना * सुघर सुधर्म सुशील सुजाना ॥
तिनहिं देखि सब सुर नर नारी * भयेनखत जनु विधुउजियारी ॥
विधिहि भयउ आश्चर्य विशेषी * निजकरणी कछु कतहुँ नदेखी॥
दोहा-शिव समुझाये देव सब, जनि आश्चर्य भुलाहु ॥
हृदय विचारहु धीर धरि, सिय रघुवीर विवाहु ॥ ३६२ ॥
जिनकर नाम लेत जगमाहीं * सकल अमंगल मूल नशाहीं ॥
करतल होहिं पदारथ चारी * ते सिय राम कहाउ कामारी ॥
इहिविधि शंभु सुरन समुझावा * पुनि आगे वर वसहँ चलावा ॥
देवन देखेउ दशरथ जाता * महामोदमन पुलकित गाता ॥
साधु समाज संग महिदेवा * जनु तनु धरे करहिं सुरसेवा ॥
सोहत साथ सुभग सुत चारी * जनु अपवर्ग सकल तनुधारी ॥
मरकत कनक वरन वर जोरी * देखि सुरन भइ प्रीति न थोरी॥
पुनि रामहिंविलोकि हियहरषे * नृपहि सराहि सुमन तिन्हवरषे॥
दोहा-रामरूप नखशिख सुभग, बारहिं बार निहारि ॥
पुलक गात लोचन सजल. उमा समेत पुरारि ॥३६३॥
केकि कण्ठद्युति श्यामल अंगा * तडितविनिन्दक वसनसुरंगा ॥
व्याहविभूषण विविध बनाये * मंगलमय सब भाँति सुहाये ॥
शरदविमलविधुवदन सुहावन * नयन नवल राजीव लजावन ॥
सकल अलौकिक सुन्दरताई * कहिनजाय मनहींमन भाई ॥
बन्धु मनोहर सोहहिं संगा * जात नचावत चपल तुरंगा ॥

१ वृथा। २ ब्रह्मा। ३ श्रेष्ठबैल-नन्दी। ४ चारमकारकेमोक्ष। ५ नीलमणि। ६ मोर। ७ कांति-प्रकाश। ८ बिजली।

राजकुँवर बरबाजि नचावहिं * वंशप्रशंसक विरुद सुनावहिं ॥
जेहि तुरंग पर राम बिराजे * गति बिलोकि खगनायकलाजे॥
कहि न जाइ सब भाँति सुहावा * बाजि भेष जनु कामबनावा ॥
छंद--जनुबाजिवेषबनाइमनसिजरामहितअतिसोहहीं ॥
अपनवय वपु रूप गुण गति सकल भुवन विमोहहीं ॥
जगमगतिजीनजड़ावज्योतिसुमोतिमाणिकतेहिलगे ॥
किंकिणिललामलगामललितविलोकिसुरनरमुनिठगे ॥ ४० ॥
दोहा--प्रभु मनसहिं लयलीन मन, चलत बाजि छबिपाव ॥
भूषण उडुगणतडित घन, जनु वर वरहि नचाव॥ ६३४ ॥
ज्यहि वरबाजि राम असवारा * त्यहि शारदहु न वरणे पारा ॥
शंकर राम रूप अनुरागे * नयन पंचदश अति प्रियलागे॥
हरिहित सहित राम जब जोहे * रमा समेत रमापति मोहे ॥
निरखि राम छबि विधि हरषाने * आठहि नयन जानि पछिताने ॥
सुर सेनप उर बहुत उछाहू * विधिते डेवढ लोचन लाहू ॥
रामहि चितय सुरेश सुजाना * गौतमशाप परमहित माना ॥
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं* आजु पुरन्दर सम कोउ नाहीं॥
मुदित देवगण रामहि देखी * नृपसमाज दुहुँ हरष विशेषी ॥
छंद--हरिगीतिका ।
अति हर्ष राज समाज दुहुँ दिशि दुन्दुभी बाजहिं घनी ॥
बरषहिं सुमनसुरहरषि कहि जय जयति जयरघुकुलमनी ॥
इहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं ॥
रानी सुआसिनि बोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं ॥४१॥
दोहा--सजि आरती अनेक विधि, मंगल सकल सवाँरि ॥
चलीं मुदित परिछनकरन, गजगामिनिवरनारि ॥३६५॥
विधुवदनीमृगशावकलोचनि *सबनिजतनुछबिरतिमदमोचनि
पहिरे वरण वरण वर चीरा * सकल विभूषण सजे शरीरा ॥

१ कामदेव । २ अवस्था । ३ देह । ४ इन्द्र । ५ प्रसन्न । ६ नाशकर्त्ता

सकल सुमंगल अंग बनाये * करहिं गान कलकंठ लजाये ॥
कंकण किंकिणि नूपुर बाजहिं * चालविलोकिकामगजलाजहिं॥
बाजहिंबाजन विविध प्रकारा * नभ अरु नगर सुमंगल चारा॥
शची शारदा रमा भवानी * जे सुरतिय शुचिसहजसयानी॥
कपटनारि वरवेष बनाई * मिलींसकलरनिवासहि आई ॥
करहिं गान कलमंगलवानी * हरष विवश सबकाहु न जानी॥
छंद–कोजान केहि आनन्द वश सब ब्रह्म वर परिछन चलीं ॥
कलगान मधुर निशान वरषहिं सुमन सुर शोभा भलीं ॥
आनन्दकन्द विलोकिदूलह सकलहिय हर्षित भई ॥
अंम्भोज अम्बुक अम्बुउमँगिसुअंगपुलकावलिछई ॥ ४२ ॥
दोहा–जो सुख भा सिय मातु मन, देखि राम वर भेष ॥
सो न सकहि कहि कल्पशत, सहज शारदा शेष ॥ ३६६ ॥
नयन नीर हटि मंगल जानी * परिछन करहिंमुदितमनरानी॥
वेदविहित अरु कुलव्यवहारू * कीन्हभलीविधिसबपरिचारू ॥
पंचशब्द ध्वनि मंगल गाना * पट पाँवड़े परहिं विधि नाना ॥
करि आरती अर्घ्य तिन दीन्हा * राम गमन मंडप तब कीन्हा ॥
दशरथसहित समाज विराजे * विभवविलोकिलोकपतिलाजे ॥
समय समय सुर वर्षाहिंफूला * शांति पढहि महिसुरअनुकूला ॥
नभ अरु नगर कोलाहल होई * आपन पर कछु सुनै न कोई॥
इहिविधि राम मंडपहि आये * अर्घ्यदेइ आसन बैठाये ॥
छंद–बैठारि आसन आरतीकरि निरखिवर सुखपावहीं ॥
मणि वसन भूषण भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं ॥
ब्रह्मादि सुर वर विप्र भेष बनाइ कौतुक देखहीं ॥
अवलोकिरविकुलकमलरविछबिसफलजीवनलेखहीं ॥ ४३ ॥
दोहा–नाऊ बारी भाट नट, राम निछावरि पाइ ॥
मुदित अशीशहिं नाइशिर, हर्ष न हृदय समाइ ॥ ३६७ ॥

१ कोकिल । २ कमल । ३ नेत्र । ४ जल । ५ तत्, वितत, अनघ, घन, सुकिया । ६ ऐश्वर्य ।
७ इन्द्र–वसुआदि । ८ ब्राह्मण ।

मिले जनक दशरथ अतिप्रीती * करिवैदिक लौकिक सबरीती॥
मिलत यथा दोउ राज विराजे * उपमाखोजिखोजि कवि लाजे॥
लही न कतहुँ हारि हिय मानी * इन सम यह उपमा उर आनी॥
समधी देखि देव अनुरागे * सुमन वरषि यश गावन लागे ॥
जग विरंचि उपजावा जबते * देखे सुने व्याह बहु तबते ॥
सकलभाँति समसाज समाजू * सम समधी देखे हम आजू ॥
देव गिरा सुनि सुन्दर साँची *प्रीतिअलौकिक दुहुँदिशिमाची॥
देत पाँवडे अर्घ्य सुहाये * सादर जनक मण्डपहि ल्याये॥
छन्द–मण्डप विलोकि विचित्ररचना रुचिरता मुनि मनहरे ॥
निजपाणि जनक सुजान सबकहँ आनि सिंहासन धरे ॥
कुलइष्ट सरिस वसिष्ठ पूजे विनय करि आशिष लही ॥
कौशिकहिंपूजतपरमप्रीति कि रीति तौन परै कही॥ ४४ ॥
दोहा–वामदेव आदिक ऋषय, पूजे मुदित महीश ॥
दिये दिव्य आसन सबहिं, सबसन लही अशीश ॥ ३६८ ॥
बहुरि कीन्ह कोशलपति पूजा * जानि ईश सम भाव न दूजा ॥
कीन्ह जोरिकर विनय बड़ाई *कहि निज भाग्य विभवबहुताई॥
पूजे भूपति सकल बराती * समधी सम सादरसब भाँती ॥
आसन उचित दिये सबकाहू * कहौं कहा मुख एक उछाहू ॥
सकल बरात जनक सनमानी * दान मान विनती बरवानी ॥
विधि हरि हर दिशिपतिदिनराऊ* जे जानहिं रघुवीर प्रभाऊ ॥
कपट विप्रवर भेष बनाये * कौतुक देखहिं अति सचुपाये॥
पूजे जनक देवसम जाने * दिये सुआसन विन पहिंचाने ॥
छंद–पहिचानको क्यहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई ॥
आनन्दकन्द विलोकि दूलह उभय दिशि आनँद मई ॥
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दिये ॥
अवलोकिसरलस्वभावप्रभुकोविबुधमनप्रमुदितभये ॥ ४५ ॥

१ बाणी । २ विचित्र ।

दोहा-रामचन्द्र मुख चन्द्र छबि, लोचन चारु चकोर ॥
करत पान सादर सकल, प्रेम प्रमोद न थोर ॥ ३६९ ॥
समय विलोकि वसिष्ठ बुलाये * सादर शतानन्द मुनि आये ॥
वेगि कुँवारि अब आनहु जाई * चले मुदित मन आयसु पाई ॥
रानी सुनि उपरोहित वानी * प्रमुदितसखिनसमेत सयानी ॥
विप्रवधू कुलवृद्ध बुलाई * करि कुलरीति सुमंगल गाई ॥
नारि भेष जे सुरवर वामा * सकलस्वभाय सुंदरीश्यामा ॥
तिनहिं देखि सुख पावहिं नारी * विनपहिंचान प्राण ते प्यारी ॥
बार बार सन्मानहिं रानी * उमा रमा शारद सम जानी ॥
सीय सँवारि समाज बनाई * मुदित मण्डपहि चली लिवाई ॥
छन्द-चलि ल्याइ सीतहिं सखी सादर सजिसुमंगलभामिनी ॥
नव सप्त साजे सुन्दरी सवमत्त कुंजरगामिनी ॥
कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिललाजहीं ॥
मंजीर नूपुर कलित कंकण ताल गति वर बाजहीं ॥ ४६ ॥
दोहा-सोहत वनिता वृंदमहँ, सहज सुहावनि सीय ॥
छवि ललना गण मध्यजनु, सुखमा अति कमनीय ॥३७०
सिय सुन्दरता वरणि नजाई * लघुमति बहुत मनोहरताई ॥
आवत दीख बरातिन सीता * रूपराशि सब भाँति पुनीता ॥
सबहिमनहिमनकीन्हप्रणामा * देखि राम भये पूरण कामा ॥
हरषे दशरथ सुतन समेता * कहि न जाइ उर आनँद जेता ॥
सुर प्रणाम करि वर्षहिं फूला * मुनि अशीश ध्वनिमंगलमूला ॥
गान निशान कुलाहल भारी * प्रेम प्रमोद नगर नर नारी ॥
इहिविधि सीय मण्डपहि आई * प्रमुदितशान्तिपढहिंमुनिराई ॥
तेहिअवसरकरिविधिव्यवहारू * दुहुँ कुलगुरुसब कीन अचारू ॥
छंद-आचारकरि गुरु गौरि गणपति मुदितविप्र पुजावहीं ॥
सुर प्रकट पूजा लेहिं देहिं अशीश अति सुख पावहीं ॥

१ स्त्रियोंकेझुण्डमें । २ शोभा ।

मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मनमें चहैं ॥
भरे कनक कोपर कलश सब कर लिये परिचारक रहैं ॥ ४७ ॥
कुलरीति प्रीति समेत रवि कहि देत सब सादर किये ॥
यहिभाँति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंहासनदिये ॥
सिय राम अवलोकन परस्पर प्रेम काहु न लखि परै ॥
मन बुद्धि वरवाणी अगोचर प्रगट कवि कैसे करै ॥ ४८ ॥

दोहा—होम समय तनु धरि अनल, अति हित आहुति लेहिं ॥
विप्र भेषधरि वेद सब, कहि विवाह विधि देहिं ॥ ३७१ ॥

सीयमातु किमिजाइ बखानी * जनकपाटमहिषी जगजानी ॥
सुयश सुकृत सुखसुन्दरताई * सब समेटि विधि रची बनाई ॥
समय जानि मुनिवरनबुलाई * सुनत सुवासिनि सादरल्याई॥
जनक वामदिशि सोह सुनयना * हिमगिरिसंग बनी जनुमयना ॥
कनककलश मणि कोपररूरे * शुचि सुगन्ध मंगल जलपूरे ॥
निजकर मुदित राउ अरु रानी * धरे रामके आगे आनी ॥
पढहिं वेद मुनि मंगल वानी * गगनसुमनझरिअवसरजानी ॥
वर बिलोकि दम्पति अनुरागे * पाय पुनीत पखारन लागे ॥

छन्द—लागे पखारन पाँय पंकज प्रेमतनु पुलकावली ॥
नभ नगर गान निशानजयध्वनिउमँगिजनुचहुँदिशिचली ॥
जे पदसरोज मनोजअरिउर सरस दैव विराजहीं ॥
जे सुकृत मूरति विमलता मन सकल कलिमलभ्राजहीं॥४९॥
जे परसि मुनिवनिता लही गति रही जो पातकमई ॥
मकरन्द जिनको शम्भु शिर शुचिता अवधि सुरवर नई ॥
करि मधुप मन मुनि योगि जन जेहिसेइ अभिमतगतिलहैं ॥
ते पद पखारत भाग्य भाजन जनक जय जय सब कहैं ॥५०॥
वर कुँवर करतल जोरि शाखोच्चार दोउ कुलगुरुकरैं ॥

१. गोघृतमिश्रित मिश्री । २ पूगीफल, पान, अक्षत हरिद्रा, रत्नादि अनेकद्रव्य । ३ शुचिसेवक । ४ अग्नि । ५ आकाश ६ पुष्पवृष्टि । ७ राजा जनक और सुनयना । ८ महादेव । ९ वेदकीऋचायें । १० वासिष्ठ और शतानंद ।

भयो पाणिग्रहणविलोकिविधिसुरमनुजमुनिआनँदभरैं ॥
सुखमूल दूलह देखि दम्पति पुलक तनु हुलसैं हिये ॥
करि लोक वेद विधान कन्यादान नृप भूषण दिये ॥ ५१ ॥

अथ क्षेपक ।

(महासंकल्पः)

* ॐ विष्णुः ३ ॐ नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् श्री हंसस्य सच्चिदानन्दरूपिणो ब्रह्मणोनिर्वाच्यमायाशक्तिविजृम्भिताविद्यायोगात्कालकर्म्मस्वभावाविर्भूतमहत्तत्त्वोदिताहंकारतृतीयोद्भूतवियदादिपञ्चकेन्द्रियदेवता निर्म्मिताण्डकटाहे चतुर्दशलोकात्मके लोके लीलया तन्मध्यवर्तिभगवतः श्रीनारायणस्यांगनाभिकमलोद्भूतेन सकललोकपितामहेन ब्रह्मणा सृष्टिं कुर्व्वता तदुद्धरणाय प्रजापतिप्रार्थितेन महापुरुषरूपिणा सितवाराहावतारेण ध्रियमाणायामस्यां भूर्लोकसंज्ञितायां धरित्र्यां सप्तद्वीपमण्डितायां क्षीराद्याब्धिद्विगुणद्वीपवलयीकृत लक्षयोजनविस्तीर्णे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे स्वर्गस्थिताद्याशासितावतारे गंगादिसरिद्भिः पाविते निखिलजनपावने शौनकादिमुनिकृतनिवसातिनैमिषारण्ये आर्य्यावर्ते पुण्यक्षेत्रे अयोध्याख्ये मध्यदेशे श्रीभगवन्मार्त्तण्डकृपापात्रकाल त्रितयज्ञगर्भवराहाचार्य्यादिगणितायां पराध्यादिसंख्यायां श्रीब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धस्य द्वितीययामे तृतीयमुहूर्ते श्रीश्वेतवाराहनाम्नि प्रथमकल्पे स्वायंभुव स्वारोचिषोत्तमतामसरैवतचाक्षुषेतिषण्मनूनामतिक्रम्यमाणेसम्प्रतिसप्तमे मन्वन्तरे चतुर्णां युगानां मध्ये त्रेतायुगे षष्ट्यब्दानां मध्ये अमुकसंवत्सरे मार्गशीर्षमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ अमुकनक्षत्रे अत्रिगोत्रोत्पन्नः वृश्चिकराशिर्जनकवर्म्मा समहिषीकोहं काश्यपगोत्रस्य काश्यपवत्सनैध्रुवेति त्रिप्रवरस्य माध्यंदिनीयशाखिनो यजुर्वेदाध्यायिनः श्रीमद्राजराजेश्वरस्य नाभागवर्म्मणः प्रपौत्राय राज्ञोऽजवर्म्मणः पौत्राय राज्ञो दशरथवर्म्मणः पुत्राय आयुष्मते विष्णु स्वरूपिणे कन्यार्थिने श्रीरामचन्द्रनाम्ने वराय आत्रेयगोत्रस्य आत्रेयशाता तपसाख्येति त्रिप्रवरस्य माध्यंदिनीयशाखिनो यजुर्वेदाध्यायिनः श्रीमद्राजा निमिवर्म्मणः प्रपौत्रीम् मिथिलवर्म्मणः पौत्रीम् जनकवर्म्मणः पुत्रीम् आयुष्मतीं श्रीरूपिणीं वरार्थिनीं सीतानाम्नीं कन्यां शक्त्यलंकृतां बहुयौतुकान्वितां

समस्तफलप्राप्तिकामः पितॄन् पवित्रीकर्तुम् आत्मनश्च श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये देवाग्निगुरुब्राह्मणसन्निधौ अग्निसाक्षितया सहधर्माचरणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे प्रतिगृह्णातु भवान् ।

सीतां कन्यामिमां राजन् यथाशक्त्युपलंकृताम् ॥
तुभ्यं काश्यपगोत्राय दत्तां राम समाश्रय ॥ १ ॥

इति क्षेपक ।

छन्द–हिमवन्त जिमि गिरिजा महेशहि हरिहि श्री सागरदई ॥
तिमि जनक रामहिं सिय समर्पी विश्व कल कीरति नई ॥
किमि करैं विनय विदेह कीन्ह विदेह मूरति साँवरी ॥ ॥
करि होम विधिवत गाँठि जोरी होन लागीं भाँवरी ॥

दोहा–जयध्वनि बन्दी वेदध्वनि, मंगल गान निशान ॥
सुनि हर्षहिं वर्षहिं विबुध, सुरतरु सुमनसुजान ॥३७२॥

कुँवरि कुँवर कल भाँवरि देहीं * नयन लाभ सब सादर लेहीं ॥
जाइ न वरणि मनोहर जोरी *जोउपमा कछु कहिय सो थोरी॥
राम सीय सुन्दर परिछाहीं * जगमगाहिं मणि खंभन माहीं॥
मनहुमदनरति धरि बहु रूपा * देखहि राम विवाह अनूपा ॥
दरश लालसा सकुच न थोरी * प्रकटत दुरत बहोरि बहोरी ॥
भये मगन सब देखन हारे * जनक समान अपान बिसारे ॥
प्रमुदित मुनिन भाँवरी फेरी * नेग सहित सब रीति निबेरी ॥
राम सीय शिर सिन्दुर देहीं * शोभा कहि न जात विधिकेहीं॥
अरुणपराग जलजभरि नीके * शशिहिभूषिअहिलोभअमीके॥
बहुरि वसिष्ठ दीन अनुशासन * वर दुलहिन बैठे इक आसन ॥

छंद–बैठेवरासन रामजानकि मुदितमन दशरथ भये ॥
तनु पुलकि पुनि पुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु फलनये ॥
भरि भुवन रहा उछाह राम विवाह भा सबही कहा ॥
केहिभाँति वरणि सिरात रसना एकमुख मंगल महा॥ ५३ ॥

१ कल्पवृक्षके फूल । २ लालरज । ३ कमल । ४ सर्प । ५ अमृत ।

तब जनक पाइ वसिष्ठ आयसु व्याह साज सँवारिकै ॥
माण्डवी श्रुतिकीर्ति उर्म्मिला कुँवरि लईं हँकारिकै ॥
कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुण शील सुख शोभा मईं ॥
सब रीति प्रीति समेत करि सों व्याहि नृप भरतहि दईं ॥ ५४ ॥
जानकी लघु भगिनि जो सुन्दरि शिरोमणि जानिकै ॥
सो जनक दीन्ही व्याहि लषणहि सकल विधि सनमानिकै ॥
ज्यहिंनाम श्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सबगुणआगरी ॥
सो दईं रिपुसूदनहि भूपति रूप शील उजागरी ॥ ५५ ॥
अनुरूप वर दुलहिनि परस्पर लखि सकुचि हिय हर्षहीं ॥
सब मुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुरगण वर्षहीं ॥
सुन्दरी सुन्दर वरण वर सहएक मण्डप राजहीं ॥
जनु जीव अरु चारिउ अवस्था विभुन सहित विराजहीं॥५६॥
दोहा-मुदित अवधपति सकल सुत, वधुन समेत निहारि ॥
जनु पाये महिपाल मणि, क्रियनसहित फलचारि ॥३७३॥
जस रघुवीर व्याह विधि वरणी * सकलकुँवरव्याहेत्यहिकरणी॥
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी * रहा कनकमणि मण्डप पूरी ॥
कम्बल वसन विचित्र पटोरे * भाँति भाँति बहु मोल न थोरे॥
गज रथ तुरँग दास अरु दासी * धेनु अलंकृत कामदुहासी ॥
वस्तु अनेक करिय किमिलेखा *कहि न जाइ जानहिं जिनदेखा॥
लोकपाल अवलोकि सिहाने * लीन्हअवधपति सबसुखमाने॥
दीन याचकन जो ज्यहि भावा * उबरा सो जनवासहिआवा ॥
तब करजोरि जनक मृदुवानी * बोले सब बरात सनमानी ॥
छंद-सनमानिसकल बरातसादरदानविनयबड़ायकै ॥
प्रमुदित महामुनि वृन्द वन्दे पूजि प्रेम लड़ायकै ॥
शिरनाइ देव मनाइ सबसन कहत कर संपुट किये ॥
सुरसाधुचाहतभावसिन्धुकितोषजलअंजलि दिये ॥५७॥

१ जनकजीके छोटे भाईकी पुत्री मांडवी । २ भक्ति, तपस्या, सेवा, श्रद्धा, ३ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष । ४ ऊर्णवस्त्र । ५ रेशमी ।

क्षेपक ।

कन्यापक्षे शतानन्दजी ।

श्लोक ।

वासो यस्य समस्तजीवननिधौ रत्नाकरे भूषणं
यस्यास्ते हृदि कौस्तुभं सुविमलं यस्यास्ति लक्ष्मीर्वशे ॥
वाणी यस्य मुखारविन्दविदिता नन्दः सदा नन्दते
तस्मै लोकविभूषणाय भवते किं देयमस्मद्विधैः ॥ १ ॥

भाषार्थ--हेसम्बन्धीजी ! सम्पूर्ण जल वा प्राणियोंके जीवनकास्थान जो समुद्र तिसमें जिनका वास है और जिनके वक्षस्थलमें निर्मल कौस्तुभमणि है और जिनके लक्ष्मी वशमें हैं, वाणी जिनकी मुखकमलमेंही प्रकटहै, जिनका खड्ग निरंतर आनन्द करताहै, ऐसे लोकोंके आभूषण रूप आपको हमारे सदृश (मनुष्य) क्या देसक्ते हैं अर्थात् आपको हम कुछभी देनेलायक नहीं हैं॥१॥

वरपक्षे वसिष्ठजी ।

धन्यो मेरुगिरिर्यदेकशिखरे ब्रह्मेन्द्ररुद्रादयः
स्वच्छन्दं निवसन्ति स क्षितितले क्वास्तीति न ज्ञायते ॥
तां धत्ते भुजगाधिपः स च करे शम्भोरभूत्कंकणं
देवोऽसौ वसति त्वदीयहृदये त्वत्तो महान्नापरः ॥ २ ॥

हे सम्बन्धीजी ! पहले तो जिसके एकही शिखरमें ब्रह्मा इन्द्र आदि देवता सुखसे रहतेहैं ऐसा सुमेरु पर्वतही धन्य है । वह इतना बडा पर्वत इस पृथ्वीमें कहां है यह कोई नहीं जानता और इस पृथ्वीको (जिसमें इतना बडा पर्वत है) शेषजी भी धारण करते हैं वह शेषजी भी शिवजीके हाथका कंकण हैं और वेही शिवजी आपके हृदयमें वास करते हैं इसकारण आपसे बड़ा और कोईभी नहीं है ॥ २ ॥

इतिक्षेपक ।

छंद--करजोरि जनक बहोरि बन्धु समेत कोशल रायसों ॥
बोलेमनोहरवचन सानि सनेह लील सुभायसों ॥
सम्बन्धराजन रावरे हम बड़े अब सब विधि भये ॥
यहराज साज समेत सेवक जानिबी विनु गथ लये ॥५८॥
ये दारिका[1] परिचारिका[2] करिपालवी करुणामयी ॥
अपराध क्षमिबो बोलि पठये बहुतहौं ढीठी दयी ॥

१ लड़कियां । २ सेवकिन ।

पुनि भानुकुलभूषण सकल सन्मान विधि समधी किये॥
कहिजातनहिंविनतीपरस्परप्रेमपरिपूरणहिये ॥ ५९ ॥
वृन्दारका गण सुमन वर्षहिं राउ जनवासहि चले॥
दुन्दुभी ध्वनि वेदध्वनि नभ नगर कौतूहल भले ॥
तब सखिन मंगल गान करत मुनीश आयसु पाइकै ॥
दूलह दुलहिनिन सहित सुन्दरि चलीं कुहवरल्याइकै ॥६०॥
दोहा--पुनि पुनि रामहि चितव सिय, सकुचतिमनसकुचैन ॥
हरति मनोहर मीन छवि, प्रेमपियासे नैन ॥ ३७४ ॥
श्यामशरीर स्वभाव सुहावन * शोभा कोटि मनोजलजावन ॥
जावकयुत पदकमल सुहाये * मुनि मनमधुपरहतजहँछाये ॥
पीत पुनीत मनोहर धोती * हरत बालरवि दामिनि ज्योती॥
कलकिंकिणिकटिसूत्र मनोहर * बाहु विशाल विभूषण सोहर ॥
पीत जनेउ महाछबि देई * कर मुद्रिका चोरि चितलेई ॥
सोहत व्याहसाज सब साजे * उर आयत सब भूषण राजे ॥
पीत उपरना काँखा सोती * दुहु आँचरन्हलगे मणिमोती ॥
नयनकमल कलकुंडल काना * बदनसकल सौंदर्य निधाना ॥
सुन्दर भृकुटि मनोहरनासा * भालतिलकशुचिरुचिरानिवासा
सोहत मौर मनोहर माथे * मंगलमय मुक्तामणि गाथे ॥
छंद--गाथे महामणि मोर मंजुल अंग सब चित चोरहीं ॥
पुरनारि सुन्दर वर विलोकहिं निरखि छवि तृणतोरहीं ॥
मणिवसन भूषण वारि आरति करहिं मंगल गावहीं ॥
सुरसुमनवर्षहिंसूतमागधवन्दि सुयशसुनावहीं ॥ ६१ ॥
कुहवरहिं आने कुंवर कुँवारि सुआसिनिन्ह सुखपाइकै ॥
अति प्रीति लौकिक रीतिलागीं करन मंगल गाइकै ॥
लहकौरि गौरि शिखाव रामहिं सीय सन शारदकहैं ॥
रनिवास हास विलास रसवश जनमको फल सब लहैं॥६२॥

१ राजादशरथ । २ देवता । ३ थाप । ४ महाउरसहित । ५ भ्रमर । ६ छातीचौंडी । ७ छोर । ८ स्थान ।
९ रंग रगके अमोल चिन्तामणि ।

निजपाणिमणि महँ देखि प्रतिमूरति स्वरूपनिधानकी ॥
चालतिनभुजवल्ली विलोकति विरहबश भइ जानकी ॥
कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली ॥
वरकुँअरिसुन्दरसकलसखिनलिवाइजनवासहिचली ॥६३॥
त्यहिसमय सुनिय अशीश जहँ तहँ नगर नभ आनँदमहा॥
चिरजियहु जोरी चारु चारयउ मुदितमन सबही कहा ॥
योगीन्द्र सिद्ध मुनीश देव विलोकि प्रभु दुन्दुभि हनी ॥
चलेहरषिबरषिप्रसूननिजनिजलोकजयजयजयभनी ॥६४॥

दोहा-सहित बधूटिन कुँवर सब, तब आये पितु पास ॥
शोभा मंगल मोद भरि, उमँग्यउ जनु जनवास ॥ ३७५ ॥

पुनि जेवनार भयउ बहु भाँती * पठये जनक बुलाइ बराती ॥
परत पाँवडे वसन अनूपा *सुतन समेत गवन किय भूपा ॥
सादर सबके पाँव पखारे * यथायोग्य पीठन बैठारे ॥
धोये जनक अवधपति चरणा * शील सनेह जाहि नहिं वरणा॥
बहुरि रामपदपंकज धोये * जे हरहृदय कमलमहँ गोये ॥
तीनो भाइ राम सम जानी * धोये चरण जनक निज पानी॥
आसन उचित सबहि नृपदीन्हें* बोलि सूपकारी सब लीन्हें ॥
सादर लगे परन पनवारे * कनक कील मणिपरण सँवारे॥

दोहा-सूपोदन सुरभीसरपि, सुन्दर स्वादु पुनीत ॥
क्षणमहँ सबके परसिगे, चतुर सुआर विनीत ॥ ३७६ ॥

पंच कौर करि जेवन लागे * गारि गान सुनि अति अनुरागे॥
भाँति अनेक परे पकवाना * सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाना
परुसनलगे सुआर सुजाना * व्यंजन विविध नाम को जाना॥
चारि भाँति भोजन विधिगाई * एक एक विधि वरणि न जाई॥
छरस रुचिर व्यंजन बहु जाती * एकएक रस अगणित भाँती ॥
जेंवत देहिं मधुरध्वनि गारी * लैलै नाम पुरुष अरु नारी ॥

१ अंगुली । २ स्त्रियोंसमेत । ३ रसोंईदारोंको । ४ दालभात । ५ गोघृत । ६ भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य ।
७ खट्टा, मीठा, चरपरा, कषाय, कटु, क्षार ।

समयसुहावन गारि बिराजा * हँसतराउ सुनि सहितसमाजा ॥
यहि बिधिसबहीभोजन कीन्हा * आदरसहित आचमन लीन्हा ॥
दोहा-देइ पान पूजे जनक, दशरथ सहित समाज ॥
जनवासे गमने मुदित, सकल भूप शिरताज ॥ ३७७ ॥

अथ क्षेपक ।

(राम कलेवा.)

छंद--भोर भये अपने कुमारको जनक वेगि बुलवाये ॥
सुनिकै पितु सँदेश लक्ष्मीनिधि सखन सहित तहँ आये ॥
सादर किये प्रणाम चरण छुइ लखि बोले मिथिलेशू ॥
गमनहु तात तुरत जनवासे जहँ श्रीअवधनरेशू ॥
बिनय सुनाय राय दशरथसों पाय रजाय सचेतू ॥
आनहु चारिउ राजकुमारन करन कलेऊ हेतू ॥
यह सुनि शीशनाय लक्ष्मीनिधि भरि उर मोद उमंगा ॥
सखनसमेत मंद हँसि गमने चढि चढि चपल तुरंगा ॥
कलनि देखावत हय थिरकावत करत अनेक तमासे ॥
मृदु मुसकात बतात परस्पर पहुँचि गये जनवासे ॥
सखन सहित तहँ उतरि तुरँगते मिथिलापतिके बारे ॥
चारिहु सुत युत अवधराजको सादर जाय जुहारे ॥
अतिसुखनिधिलक्ष्मीनिधिकोलखिसखनसहितसतकारे॥
रघुकुल दीप महीप हाथ गहि निज समीप बैठारे ॥
तेहि छिनसानुजनिरखिरामछबिसखनसहितसुखमाने ॥
लक्ष्मीनिधि मुखदरश पायकै रामहु नैन जुड़ाने ॥
तब श्रीनिधि कर जोरि भूपसों कोमल बैन उचारे ॥
करन कलेऊ हेत पठावो चारिहु राजदुलारे ॥
सुनि मृदुवचन प्रेम रस साने दशरथ मृदु मुसकाने ॥
चारिहु कुँवर बुलाये बेगही बिदा किये सुखसाने ॥

जनक नगरकी साजु तयारी सेवक सब सुख पागे ॥
निज निज रघुवरहि सँवारन लागे लै भूषण वर बागे ॥
रघुनंदन सिर पाग जरकसी लसी त्रिभंगी बाँधी ॥
तिमि मौरसी कुची कलंगी रुचि रुचि पैंजनि साधी ॥

दोहा–वरण सकै को रामको, अनुपम दूलह वेष ॥
जेहि लखि शिव सनकादिको, रहत न तनुहि सरेष ॥

छंद–इमि साजि अनुज सहित रघुनंदन चारौं राजदुलारे ॥
बैठे उमंगन चढ़े तुरंगन अंगन वसन सँवारे ॥
जे रघुवंशी कुँवर लाड़िले प्रभु कहँ प्राणपियारे ॥
चढ़े तुरंग संग तेउ गमने राम रंग मतवारे ॥
रामबालसखि श्रीलक्ष्मीनिधि सखनसहित तेउ सोहैं ॥
चंचल बागे किये तुरंगको बातैं करत हँसोहैं ॥
जगवंदन जेहि नाम जाहिरो रघुनंदनको वाजी ॥
ताको गुण कवि कहँ लौं वरणौं जोहि होत मन राजी ॥
जित रुख पावै तित पहुँचावै छन आवै छन जावै ॥
जमिजमिथमिथमिथरकिभूमिपरगतिनततिनदरशावै ॥
फाँदत चंचल चारौं चौकड़ि चपलहुके चख झाँपै ॥
भरत कुँवरको तुरँग रँगीलो वरणि जाय कहु काँपै ॥
चंपा नाम चाल चटकीली जेहि पर रिपुहन भाये ॥
सब समाजके आगे निरतै मोर कुरंगलजाये ॥
जो कहुँनेकहुँ हाथ उठावत कई हाथ उठि जातो ॥
बार बार चुचुकारि दुलारत ताहू पै न जुड़ातो ॥
लक्खी घोडा लषण लालको बाँको निपट चलाको ॥
उडि उडि जात वायुमंडलको परतन पग महि ताको ॥
तरफराय उड़िजाय परतहै लक्ष्मीनिधि हय पाहीं ॥
उचित विचार हँसे रघुवंशी रामहु मृदु मुसकाहीं ॥

ताकि तुरंगकी चंचलताई लषणकि देखि चढ़ाई ॥
निमिवंशी रघुवंशी सिगरे ठगिसे रहे बिकाई ॥
राम आदि जे कुवरलाड़िले सेउ लखि भरे उछाहैं ॥
रीझि रीझि तहँ लषण लालको बारहिं बार सराहैं ॥
इमि मग होत बिलास विविधविधिविपुलबाजनेबाजे ॥
सुनत नकीब पुकार नगर तिय कढ़ि बैठीं दरवाजे ॥
कोउ तिय निरखिवदनकीसुखमाअतिसुखमहँसोपागी ॥
भरी सनेह देह सुधि नाहीं राम रूप अनुरागी ॥
कोउ तिय देखि अतूला दूल्हा अति सनेह तनुभूला ॥
फूला नैन मैन मन भूला लागि प्रीति को झूला ॥
कोउ घूँघट पट खोलि सुन्दरी माणि मुँदरी लै पानी ॥
देखत दूलह रूप रामको आनँद सिन्धु समानी ॥

दोहा-कोउ सूरति लखि साँवरी, तोरति तृण सुखपाग ॥
माधुरि मूरतिमें पगीं, निजमूरति सुख त्याग ॥

छंद-कोउ रघुनंदन छबि विलोकिकै बोली सुन सखि बैना ॥
राजकुँवर ये करन कलेऊ जात जनकके ऐना ॥
इनको श्रीनिधि गये लिवाई आये चारहु बेटा ॥
रँगभीने रघुवंशी छैला दशरथ राज दुलहेटा ॥
धनि यह भाग्य हमारो प्यारी जिन भरि नैन निहारे ॥
नतु दर्शन दुर्लभ दूलहके रविकुल प्राणपियारे ॥
भाग सोहाग आज भल पायो श्रीमिथिलेशकि बेटी ॥
सुन्दर श्याम माधुरी मूरति जिन जिन भुज भर भेटी ॥
बोली अपर सखी सुन सजनी भली बात बनि आई ॥
हमहुँ चलैं सब जनक महलको हँसिये इन्हैं हँसाई ॥
इमि मृदु बातैं करत परस्पर भई प्रेमवश वामा ॥
सुनत जात मुसकात अनुज युत कृपासिंधु श्रीरामा ॥

द्वार समीप देखि अति सुन्दर मणिमय चौक सँवारे ॥
राजकुँवर रघुवंशिनके तहँ ठाढ भये मतवारे ॥
उत रजाय लहि सियामातुकी नगर सुवासिन नारी ॥
कंचन कलश सजे शिर ऊपर पल्लव दीप सँवारी ॥
गावत मंगल गीत मनोहर करले कंचन थारी ॥
परछन चली हेतु रघुवरको बहु आरती सँवारी ॥
जाय समीप निहारि राम छवि दृग आनँद जल बाढ़ी ॥
छकितरहीं वर वदन विलोकत चकित रहीं तहँ ठाढ़ी ॥
राम रूप रँगि गई रँगीली लखि दूलह सुखसारा ॥
तन मन रह्यो सरेख न काहू को करै मंगलचारा ॥
प्रेम पयोधि मगन सब प्यारी धरि पुनि धीरज भारी ॥
परछन अली भली विध कीन्हीं रोकि विलोचन वारी ॥
लक्ष्मीनिधि तब उतरि तुरँगते चारिउ कुँवर उतारे ॥
पाणिपकरि रघुनंदनजीको भीतर महल सिधारे ॥
जहँ पिकवैनी सब सुखऐनी बैठि सुनैना रानी ॥
इन्द्रानीकी कौन चलावै लखि रति रूप लुभानी ॥
चन्द्रमुखी चहुँ ओर विराजैं कोउ कर चमर चलावै ॥
कोउ सखि देखि रामकी शोभा आरति मंगल गावै ॥
तेहि छन तहाँ गये रघुनंदन मन फंदन वर वेषा ॥
देखत उठीं सकल रनिवासैं रह्यो न तनुहि सरेषा ॥
करि आरती वारि मणि भूषण सादर पाँय पखारे ॥
चारि रंगके चारि सिंहासन चारिउ वर बैठारे ॥
लखि छवि ऐना सासु सुनैना एक न पलक तजैना ॥
भूली चैना बोलि सकैना कहत बनैना बैना ॥
ताकिजकिरहीं तनक नहिं डोलै मगन महा मुदमाहीं ॥
राम रूप रँगि गई रँगीली आँसु बहे दृग जाहीं ॥

इमि तहँ दशा विलोकि सासुकी राम गुणत मन माहीं ॥
काहभयो यह आजु रानिको पूँछत में सकुचाहीं ॥
चतुर सखी चित चरचि रामसों बोली मधुरी वानी ॥
यह तुम्हार गुण है सब लालन और न कछु उर आनी ॥
सुनत वचन यह तुरत धीर धरि जगी सुनैना रानी ॥
बार बार बहु लीन बलैया चूमि कपोलन पानी ॥
माधुरि मूरति साँवलि सूरति की तृण तोरति रानी ॥
रीझि रीझि तहँ राम रूपपै बिनही मोल बिकानी ॥
पनि कर जोरि रामसों रानी बोली अति मृदु भाई ॥
उठहु लाल अब करहु कलेऊ जो जो रुचि हिय होई ॥
यह सुनि सखन समेत उठे तहँ चारिहु राजदुलारे ॥
भरी भाग्य अनुराग सुनैना निजकर पायँ पखारे ॥
रचना अधिक पदकके पीठन बैठारे सब भाई ॥
कंचनथारी मृदुल सुहारी परसी विविध मिठाई ॥
रुचि अनुरूप भूप सुत जेवत पवन डुलावैं सासू ॥
बूझि बूझि रुचि व्यंजन परसैं वरणि न जाय हुलासू ॥
स्वाद सराहि पाय पुनि अँचये सखियन पान खवाये ॥
बैठे पहरि पोसाक सखन युत विविध सुगंध लगाये ॥

दोहा-राज ऐन सब चैन युत, राजै राजकुमार ॥
जिनको हास विलास लखि, लाजहिं लाखन मार ॥

छंद-तेहि औसर सुधिपाय सखीमुख लक्ष्मीनिधिकी नारी ॥
नाम सिद्धि परसिद्ध जासु गुण रूप शील उजियारी ॥
भाग सुहाग भरी सुठि सुंदरि नव यौवन मतवारी ॥
रसिकनरीति प्रीति परवीनी रतिहि लजावनहारी ॥
अतिगुणवान निधानरूपकी सब विधि सुभगसयानी ॥
लक्ष्मीनिधिकी प्राणपियारी निमिकुलकी महारानी ॥

अलबेली सरहज रघुबरकी बडी सनेह शृंगारी ॥
प्रीतम प्रीति निबाहन हारी रामरूप रिझवारी ॥
चंचल चषन चहूँ दिशि चितवति देखनको अतुराई ॥
भरी उमंग संग सखियनलै तुरत राम ढिग आई ॥
वदन चंद अरविंद लियेकर बिहँसत मंदर सोहै ॥
राजकुँवर कर पकडि लाडिली बोली तकि तिरछौं है ॥
यह चितचोर किशोर भूपके बडे चोर तुम प्यारे ॥
सुरति हमारि भुलाय साँवरे सासु समीप सिधारे ॥
उलटी बात कहौ जिन प्यारी आपन दोष दुराई ॥
तुमही रहिउ छिपाय छबीली सुनत हमार अवाई ॥
हम आये तुम महलन भीतर तुमहिन परचो जनाई ॥
भलौ सदन तुमरो है प्यारी जहँ सब जाहिं समाई ॥
सुनत रामके वचन लाडिली बोली मृदु मुसकाई ॥
तुमरे घरकी रीति लालजू यहाँ न चली चलाई ॥
सासु सुनैनाके समीप महँ देत जबाब बनैना ॥
पाणि पकर रघुनंदनजीको गइ लेवाय निज ऐना ॥
चारि सिंहासन दै तहँ आसन भरी हुलासन प्यारी ॥
बारहिं बार निहारि वदन छबि बहु आरती उतारी ॥
मेलि सुकंठ मालती माला वसननि अतर लगायो ॥
अंचरसों मुख पोंछि रामको निजकर पान खवायो ॥
ललित लवंग कपूर संगधारि कोउ सखि पान लगावै ॥
कोउकर पीकदानलिये ठाढी कोउसखि चमर डुलावै ॥
जे निमिराज नेवत सुनिआईं कोटिन राजकुमारी ॥
राम मिलनकी बडी लालसा कहि न सकैं सकुचारी ॥
तिन यह सुन्यौ कि सिद्धिसदन में आये चारहु भाई ॥
तुरतहँ पहुँची सबही प्यारी जानि सखै सुखदाई ॥

देखी राजकुँवारि सब आईं राम दरशकी प्यासी ॥
अति सन्मान कियो सबहीको सिद्धसदन सुखरासी ॥
मणिन मोरपर मोतिन कलँगी अलबेली अति सोहै ॥
राजतियनकी कौन चले है मुनियनको मन मोहै ॥

दोहा-मन लोभा शोभा निरखि, भईं विवश सुकुमारि ॥
चकित छकित सबरहगईं, तनमन दशा बिसारि ॥

छंद-जो तिय मान अनूप रूप निज रही स्वरूप गुमानी ॥
तेहि लखि रामवदनकी सुखमा विनही मोल बिकानी ॥
अतिसुकुमारी राजकुमारी सिद्धि सहित अनुरागी ॥
तहँ प्यारी गारी रघुवरको देन देवावन लागी ॥
एक सखी कह सुनहु लालजी यह स्वरूप कहँ पायो ॥
काननसुन्यो काम अति सुन्दर की तुमको सोइजायो ॥
बोली सिद्धि सुनहु रघुनंदन तुम हमार ननदोई ॥
एक बात तुमसों हम पूछैं लाल न राखहु गोई ॥
होत व्याह सम्बंध सबनको अपने जातिहिमाहीं ॥
निज बहिनी शृंगीऋषिको तुम कैसे दियो बिवाहीं ॥
की उनको मुनीश लैभाग्यो की वोई सँगलागी ॥
एती बात बतावहु लालन तुम रघुवंश अदागी ॥
लषणकह्योयहसुनहुलाड़िलीजोहिविधिजहाँलिखिदीना ॥
तहँ संयोग होतहै ताको व्याह तौ कर्म अधीना ॥
कहँ हम राजकुँवर रघुवंशी कहँ विदेह वैरागी ॥
भयो हमारा व्याह तुम्हारे विधिगति गनैको भागी ॥
औरउ एक हास उर आवै अचरज है सब काहू ॥
तुमतौहौ सिधि वै लक्ष्मीनिधि नारि नारिभो व्याहू ॥
एक सखीकह सुनहु लालजी तुमहि सकहि कोजीती ॥
जाहिर अहै सकल जग माहीं तुमरे घरकी रीती ॥

अति उदार करतूतिदार सब अवध पुरीकी बामा ॥
खीर खाय पैदा सुत करती पतिकर कछु नहिं कामा ॥
सखी वचन सुन तब रघुनंदन बोले मृदु मुसकातैं ॥
आपन चाल छिपावहु प्यारी कहहु आनकी बातैं ॥
कोउ नहिं जन्मे मात पिता बिन बँधी वेदकी नीती ॥
तुमरेतौ मांहिते सब उपजै अस हमरे नाहिं रीती ॥
बोली चन्द्रकला तेहि औसर परम चतुर सुकुमारी ॥
सिद्धि कुँवारिकी लहुरी भगिनी लक्ष्मीनिधि की सारी ॥
लरिकाईते रह्यो लालजी तुम तपसिन सँग माहीं ॥
ये छलछंद फंद कहँ पाये सत्य कहौ हम पाहीं ॥
की मुनि नारिनके सँग सीखे की निज भगिनी पासें ॥
मीठो सीठो स्वाद लालजी बिनचाखे नाहिं भासें ॥
बोले भरत भली कह सजनी तुमहु तौ अबै कुमारी ॥
वर्णहु पुरुष संग की बातें सो कहँ सीखेहु प्यारी ॥
रहे मुनिन सँग ज्ञान सिखनको सो सब सुने सुनाये ॥
कामिनि कामकला अब सीखन हमतुमरे ढिग आये ॥
सिद्धि कह्यो तब सुनहु भरतजी ऐसे तुम न बखानौ ॥
तुमरी तौ गनती साधुनमें लोक बातका जानौ ॥
भरत कह्यो तुम साँचि कहत हौ हम साधू परकाजी ॥
ऐसी सेवा करौं कामिनी जामें हो हम राजी ॥
आये अयन अपूरब योगी अस निज मग गुण लीजै ॥
अधर सुधारसको दै भोजन अतिथी पूजन कीजै ॥
एक सखीकह सुनहु सबै मिलि इनकी एक बड़ाई ॥
ऋषि मख राखन गये कुँवरये तहँ हम अस सुधिपाई ॥
इनको सुन्दर देख कामवश तिया ताड़का आई ॥
सों करतूति नभई लालसों मारेहु तेहि खिसिआई ॥

बोले रिपुहन सुनहु भामिनी नाहक दोष न दीजै ॥
जो करतूति बनी नाहिं उनते सो हमपै भारि लीजै ॥
बिन जाने करतूति सबनकी तुम्हरे घर भो व्याहू ॥
सोउ पछिताव न रही पियारी अब करियेहु समाहू ॥
जाके हित तुम रोष बढ़ावहु सो भाँति करहु उपाई ॥
बैसिन सेवामें तुम्हरे हम हाजिर चारिउ भाई ॥
सुनि वाणी रिपुदवन लालकी बोली कोउ सुकुमारी ॥
कहँ पाई एती चतुराई कहिये लाल बिचारी ॥
कीकहुँमिली नारिगुणआगर कीगणिकनसँग कीन्हो ॥
तीनों भाइन ते तुमरे महँ लखियतु चिह्न नवीनो ॥
रिपुहन कह भल कह्योभामिनी भेदिया भेदहिजाने ॥
गणिका नारिनहूते सौगुण तुम्हैं अधिक हम माने ॥
हमरो तुमरो चिह्न लाड़िली एकै भाँति लखाई ॥
ताते सखी हमारि तुमारी चाही अवशि सगाई ॥
सुनि नव उक्ति युक्तिकीबातैं बोलीसिधि सुकुमारी ॥
सुनिये रसिकराय रघुनंदन आनँदकन्द बिहारी ॥
अति अभिराम कामहू मोहत मूरति देखि तुम्हारी ॥
कैसे बची होंयगी तुमते अवधपुरीकी नारी ॥
योंकहि रही चुपाय सुन्दरी सिद्धि कुँवारि सुखऐना ॥
ताको हाथ पकरि रघुनंदन बोले अति मृदुबैना ॥

दोहा-जस मर्यादा जगतकी, बाँधिदियो करतार ॥
राजा रंक यती सती, करत सोइ व्योहार ॥

छंद-अनुचित उचित विचारि लोग सब तहँ तस राखतभाव॥
तुम तौ अपने कस जानतिहौ सबहीके रस चाव ॥
यह सुनि भरत लषण रिपुसूदन हँसे सकल दै तारी ॥
सिद्धि आदि सब राजकुमारी तेउ अतिभईं सुखारी ॥

ते तुम सबै प्रेमकी मूरति सूरति की बलिहारी ॥
सिद्धि आदि सब राजकुमारी मोहिंप्राणहुते प्यारी ॥
तुमरे हिय अभिलाषआजु जो सो सब भाँति पुजैहौं ॥
लौकिक लाजबचाय लाडिली तुम ते बिलगन ह्वै हौं ॥
हम सब भाँति तुम्हारे साँवलि तुम सब भाँतिहमारी ॥
सत्य सत्य ये सत्य वचन मम मानहु राजकुमारी ॥

दोहा–रघुनंदनके वचन सुनि, खुलगये कपट किंवार ॥
बढ़्यो प्रेम सब तियनके, तनिकहु नहिं संभार ॥

छंद–पुनि धरि धीरज जलीभलीविधि जोरि पंकरुहपानी ॥
सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोलीं अति मृदुवानी ॥
धन्य भाग्य हमरे रघुनंदन हमते बड़ कोउ नाहीं ॥
बूड़त रहीं जगतसागरमें राखिलीन्ह गहि बाहीं ॥
प्रति उपकार होत नहिं हमते जस तुम कीन्हेप्यारे ॥
चंद्रसमान होयँ नहिं कबहूँ जुरहिं हजारन तारे ॥
जेहि जेहि योनिकरमबशहमको जनमविधातादेही ॥
तहँ तहँ रसिकराय रघुनंदन तुमहीं मिलहु सनेही ॥
वरु विधि कोटिन करै यातना या तनु छनु छनु छूटै ॥
हमरी तुमरी लगन लाडिले कौनो जन्म न टूटै ॥
सुनि बानी करुणारस सानी रघुवर अंतरजानी ॥
सनमान्यो सबराजकुमारिन कहिकहि कोमलवानी ॥
सबसों बिदा माँगि रघुनंदन अनुज सहित पगधारे ॥
निकसे मानहु सिद्ध महलते चारिचंद्रछबिवारे ॥

दोहा–बिदा सासुसे होय पुनि, आये सब जनवास ॥
बढत छिनहिं छिन जनकपुर, आनँद परमहुलास ॥

इति क्षेपक ।

नितनूतन मंगल पुरमाहीं * निमिषसरिसदिनयामिनिजाहीं

बडे भोर भूपतिमणि जागे * याचक गुणगण गावन लागे ॥
देखि कुँवर वर वधुन समेता * किमिकहिजात मोदमन जेता॥
प्रातक्रियाकरि गे गुरु पाहीं * महाप्रमोद प्रेम मन माहीं ॥
करि प्रणाम पूजा करजोरी * बोले गिरा अमिय जनु बोरी ॥
तुम्हरी कृपा सुनिय मुनि राजा * भयउ आजु मम पूरणकाजा ॥
अब सब विप्र बुलाय गुसाईं * देहु धेनु सब भाँति बनाईं ॥
सुनि गुरु करि महिपाल बड़ाई * पुनि पठये मुनिवृन्द बुलाई ॥
दोहा–वामदेव अरु देवऋषि, वालमीकि जाबालि ॥
आये मुनिवर निकर तब, कौशिकादि तपशालि ॥ ३७८ ॥
दण्डप्रणाम सबहिं नृप कीन्हा * पूजि सप्रेम वरासन दीन्हा ॥
चारिलक्ष वरधेनु मँगाई * कामसुरभि सम शील सुहाई ॥
सबविधिसकलअलंकृतकीन्हीं * मुदित महीप ऋषिनकहँदीन्हीं॥
करतविनय बहु विधि नरनाहू * लहेउ आजु जग जीवनलाहू ॥
पाइ अशीश महीश अनन्दा * लिये बोलि पुनि याचकवृन्दा ॥
कनकवसनमणिहयगजस्यंदन * दियेबूझि रुचिरविकुलनंदन ॥
चले पढत गावत गुण गाथा * जयजयजय दिनकरकुलनाथा॥
इहि विधि राम विवाहउछाहू * सकै न वरणि सहसमुख जाहू ॥
दोहा–बार बार कौशिक चरण, शीशनाइ कह राउ ॥
यह सब सुख मुनिराज तव, कृपाकटाक्ष प्रभाउ ॥ ३७९ ॥
जनक सनेह शील करतूती * नृप सब भाँति सराह विभूती ॥
दिन उठि विदाअवधपतिमाँगा * राखहिं सहितजनकअनुरागा ॥
नितनूतन आदर अधिकाई * दिनप्रति सहस भाँतिपहुनाई ॥
नितनव नगर अनन्द उछाहू * दशरथ गवन सोहाइ न काहू ॥
बहुत दिवस बीते इहि भाँती * जनु सनेह रजु बँधे बराती ॥
कौशिक शतानन्द तब जाई * कही विदेह नृपहि समुझाई ॥
अब दशरथ कहँ आयसु देहू * यद्यपि छाँडि न सकहु सनेहू ॥

भलेहिनाथ कहि सचिव बुलाये * कहिजयजीव शीश तिननाये ॥
दोहा–अवधनाथ चाहत चलन, भीतर करहु जनाव ॥
भये प्रेमवश सचिव सुनि, विप्र सभासद राव ॥ ३८० ॥
पुरवासिन सुनि चली बराता * पूँछत विकल परस्पर बाता ॥
सत्यगवनसुनि सब बिलखाने * मनहुँ साँझसरसिजसकुचाने ॥
जहँ जहँ आवत बसे बराती * तहँ तहँ सीध चला बहुभाँती ॥
विविध भाँति मेवा पकवाना * भोजन साज न जाइ बखाना ॥
भरि भरि बसह अपार कहारा * पठये जनक अनेक सुआरा ॥
तुरँग लाख रथ सहस पचीसा * सकल सँवारे नख अरु शीसा ॥
मत्त सहसदश सिन्धुर साजे * जिनहिं देखि दिशिकुंजर लाजे ॥
कनकवसनमणिभरिभरियाना * महिषी धेनु वस्तु विधिनाना ॥
दोहा–दायज अमित न सकिय कहि, दीन्ह विदेह बहोरि ॥
जो अवलोकत लोकपति, लोकसम्पदा थोरि ॥ ३८१ ॥
सब समाज इहिभाँति बनाई * जनक अवध पुर दीन्ह पठाई ॥
चलिहि बरात सुनत सबरानी * विकलमीनगण जनुलघुपानी ॥
पुनि पुनि सीय गोदकरलेहीं * देइ अशीश शिखावन देहीं ॥
होइहहु संतत पियहि पियारी * चिर अहिवात अशीश हमारी ॥
सासु श्वशुर गुरु सेवा करहू * पतिरुखलखिआयसुअनुसरहू ॥
अतिसनेहवश सखी सयानी * नारिधर्म शिखवहिं मृदुबानी ॥
सादर सकल कुँवरि समुझाई * रानिन बार बार उर लाई ॥
बहुरि बहुरि भेटहिं महतारी * कहहिं विरंचि रची कत नारी ॥
दोहा–त्यहि अवसर भाइन सहित, राम भानुकुल केतु ॥
चले जनक मन्दिर मुदित, विदा करावन हेतु ॥ ३८२ ॥
चारिउ भाइ स्वभाय सुहाये * नगर नारि नर देखन धाये ॥
कोउकहचलनचहतहहिं आजू * कीन्ह विदेह बिदाकर साजू ॥
लेहु नयनभरि रूप निहारी * प्रिय पाहुने भूपसुत चारी ॥

१ बैल । २ हाथी । ३ भैंसी । ४ निरन्तर । ५ सुहाग । ६ आज्ञा । ७ कोमलवचन । ८ हृदय ।

को जानै केहि सुकृत सयानी * नयनअतिथिकीन्हेंविधिआनी ॥
मरण शील जिमि पाव पियूषा * सुरतरुलहै जन्मकर भूषा ॥
पाव नारकी हरिपद जैसे * इनकर दरशन हमकहँ तैसे ॥
निरखि राम शोभा उर धरहू * निजमनफणिमूरतिमणिकरहू॥
इहिविधि सबहिं नयन फल देता * गये कुँवर सब राजनिकेता ॥
दोहा—रूपसिंधु सब बन्धु लखि, हरषि उठीं रनिवासु ॥
करहिं निछावर आरती, महामुदित मन सासु ॥ ३८३ ॥
देखि रामछबि अति अनुरागीं * प्रेमविवश पुनि पुनि पदलागीं॥
रही न लाज प्रीति उर छाई * सहज सनेह वरणि किमिजाई॥
भाइनसहित उबटि अन्हवाये * छरस असन अतिहेतुजिवाँये॥
बोले राम सुअवसर जानी * शील सनेह सकुचमय बानी ॥
राउ अवधपुर चहत सिधाये * बिदा होन हित हमहिं पठाये ॥
मातु मुदित मन आयसु देहू * बालक जानि करबनित नेहू ॥
सुनतवचनविलख्यउरनिवासू * बोलि न सकहिं प्रेम वशसासू ॥
हृदय लगाइ कुँवरिसब लीन्हीं * पतिन सौंपिविनतीअतिकीन्हीं॥
छंद—करिविनय सिय रामहिंसमर्पी जोरि कर पुनि पुनि कहै ॥
बलिजाउँ तात सुजान तुम कहँ विदितगति सबकी अहै ॥
परिवार पुरजन मोहिं राजहिं प्राणप्रिय सिय जानवी ॥
तुलसीसुशीलसनेहलखि निजकिंकरी करिमानवी ॥ ६५ ॥
सो०—तुम परिपूरण काम, ज्ञानशिरोमणि भाव प्रिय ॥
जनगुणगाहक राम, दोषदलन करुणायतन ॥ ३९ ॥
असकहि रहीं चरणगहि रानी * प्रेमपंक जनु गिरा समानी ॥
सुनि सनेह सानी बरबानी * बहुविधि राम सासु सन मानी ॥
राम बिदा माँगत करजोरी * कीन्ह प्रणाम बहोरि बहोरी ॥
पाइ अशीश बहुरि शिरनाई * भाइन सहित चले रघुराई ॥
मंजु मधुर मूरति उर आनी * भई सनेह शिथिल सबरानी ॥

१ पुण्य । २ अमृत । ३ कल्पवृक्ष । ४ । राजाजनकजीके गृह । ५ षट्रसभोजन । ६ सेवकिन । ७ कृपाकेस्थान । ८ वाणी । ९ पुनि पुनि ।

पुनि धीरजधरि कुँवरि हँकारी * बार बार भेटहिं महतारी ॥
पहुँचावहिं फिरमिलहिंबहोरी * बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी ॥
पुनिपुनिमिलतिसखिनबिलगाई * बालवत्स जनु धेनु लवाई ॥
दोहा-प्रेमविवश नर नारि सब, सखिन सहित रनिवास ॥
मानहु कीन्ह विदेहपुर, करुणाविरहनिवास ॥ ३८४ ॥
शुकसारिक[1][2] जानकी जिआये * कनकपिंजरन[3] राखि पढाये ॥
व्याकुल कहहिं कहाँ वैदेही * सुनि धीरज परिहरै न केही ॥
भये विकलखगमृगइहिभाँती * मनुज दशा कैसे कहिजाती ॥
बन्धुसमेत जनक तब आये * प्रेम उमँगि लोचनजल छाये ॥
सीय विलोकि धीरता भागी * रहे कहावत परम विरागी ॥
लीन्ह राउ उर लाइ जानकी * मिटी महा मर्य्याद ज्ञानकी ॥
समुझावत सब सचिव सयाने * कीन्ह विचार अनवसर जाने ॥
बारहिं बार सुता उर लाई * साजि सुन्दर पालकी मँगाई ॥
दोहा-प्रेमविवश परिवार सब, जानि सुलग्न नरेश ॥
कुँवरि चढ़ाई पालकी, सुमिरे सिद्ध गणेश ॥ ३८५ ॥
बहुविधि भूपसुता समुझाई * नारिधर्म कुलरीति शिखाई ॥
दासी दास दिये बहुतेरे * शुचि सेवक जे प्रिय सियकेरे ॥
सीय चलत व्याकुल पुरवासी * होहिं शकुन शुभ मंगलरासी ॥
भूसुर सचिव समेत समाजा * संग चले पहुँचावन राजा ॥
रथ गज वाजि वरातिन साजे * सुनि गहगहे बाजने बाजे ॥
दशरथ विप्र बोलि सब लीन्हें * दान मान परिपूरण कीन्हें ॥
चरणसरोज धूरि धरि शीशा * मुदित महीपतिपाइअशीशा ॥
सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना * मंगलमूल शकुन भये नाना ॥
दोहा-सुर प्रसून वर्षहिं हरषि, करहिं अप्सरा गान ॥
चले अवधपति अवधपुर, मुदित बजाइ निशान ॥ ३८६ ॥
नृप करि विनय महाजन फेरे * सादर सकल माँगने[4] टेरे ॥

१ आपसमें । २ तोता और मैनां । ३ सोना । ४ पक्षी

भूषण वसन वाजि गज दीन्हें * प्रेम पोषि ठाढे सब कीन्हें ॥
बार बार विरुदावलि भाखी * फिरे सकल रामहि उर राखी॥
बहुरि बहुरि कौशलपति कहहीं * जनक प्रेमवश फिरा न चहहीं॥
पुनि कह भूपति वचन सुहाये * फिरिय महीप दूरि बडि आये॥
राउ बहोरि उतरि भये ठाढे * प्रेमप्रवाह विलोचन बाढे ॥
तब विदेह बोले कर जोरी * वचनसनेह सुधा जनु बोरी ॥
करौं कवनविधि विनयसुहाई * महाराज मोहिं दीन्ह बड़ाई ॥
दोहा–कोशलपति समधी सजन, सनमाने सब भाँति ॥
मिलन परस्पर विनय अति, प्रीति न हृदय समाति॥३८७॥
मुनिमण्डली जनक शिरनावा * आशिरवाद सबहिंसन पावा ॥
सादर पुनि भेंटे जामाता * रूपशील गुणनिधि सबभ्राता॥
जोरि पंकरुह पाणि सुहाये * बोले वचन प्रेम जनु जाये ॥
राम करौं क्यहि भाँति प्रशंसा * मुनि महेश मनमानस हंसा ॥
करहिं योग योगी जेहिलागी * कोह[1] मोह ममता मद[2] त्यागी ॥
व्यापकब्रह्म अलखअविनाशी * चिदानन्द निर्गुण गुणराशी ॥
मनसमेतज्यहि जान न वानी * तरकिनसकहिंसकलअनुमानी॥
महिमा निगम[3] नेति करिकहहीं * जो तिहुँकाल एकरस रहहीं ॥
दोहा–नयन विषय मोकहँ भयउ, सो समस्त सुखमूल ॥
सबहिं लाभ जगजीव कहँ, भये ईश अनुकूल[4] ॥ ३८८ ॥
सबहिं भाँति मोहिं दीन बड़ाई * निजजनजानि लीन्ह अपनाई॥
होइँ सहसदश शारद शेषा * करहिंकल्प कोटिक भरिलेखा ॥
मोर भाग्य राउर गुणगाथा * कहिनशिराहिंसुनियरघुनाथा॥
मैं कछु कहौं एक बल मोरे * तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे ॥
बार बार माँगौं कर जोरे * मन परिहरै चरण जनि मोरे ॥
सुनि वर[5] वचन प्रेमजनु पोषे * पूरण काम राम परितोषे ॥
करि वरविनय श्वसुरसनमाने * पितु कौशिक वसिष्ठ समजाने॥

१ क्रोध । २ गर्व । ३ वेद । ४ प्रसन्न । ५ श्रेष्ठवाणी

विनती बहुरि भरतसन कीन्हीं * मिलिसुप्रेमपुनिआशिषदीन्हीं ॥
दोहा-मिले लषण रिपुसूदनहिं, दीन अशीश महीश ॥
भये परस्पर प्रेमवश, फिरि फिरि नावहिं शीश ॥ २८९ ॥
बार बार करि विनय बड़ाई * रघुपति चले संग सब भाई ॥
जनक गहे कौशिकपद जाई * चरण रेणु शिर नयनन लाई ॥
सुनिय मुनीश दरशफल तोरे * अगमनकछु प्रतीति मनमोरे ॥
जोसुखसुयश लोकपतिचहहीं * करत मनोरथ सकुचत अहहीं ॥
सोसुखसुयशसुलभमोहिंस्वामी * सबविधि तव दर्शन अनुगामी ॥
कीन्हविनय पुनिपुनि शिरनाई * फिरे महीपति आशिष पाई ॥
चली बरात निशान बजाई * मुदित छोट बडसबसमुदाई ॥
रामहिं निरखि ग्राम नर नारी * पाइ नयनफल होहिं सुखारी ॥
दोहा-बीच बीच वरवास करि, मगलोगन सुख देत ॥
अवध समीप पुनीत दिन, पहुँची आय जनेत ॥ २९० ॥
हने निशान पणव बहु बाजे * भेरि शंखध्वनि हय गय गाजे ॥
झाँझ मृदंग डिमडिमी सुहाई * सरसराग बाजै सहनाई ॥
पुरजन आवत अकनि बराता * मुदितसकल पुलकावलिगाता ॥
निज निज सुन्दर सदन सँवारे * हाट बाट चौहट पुर द्वारे ॥
गली सकल अरगजासिंचाई * जहँ तहँ चौके चारु पुराई ॥
बना बजार न जात बखाना * तोरण केतु पताक विताना ॥
सुफलपूगिफल कदलि रसाला * रोपे बकुल कदम्ब तमाला ॥
लगे सुभग तरु परसत धरणी * मणिमय आलबाल कलकरणी ॥
दोहा-विविध भाँति मंगल कलश, गृह गृह रचे सँवारि ॥
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब, रघुवरपुरी निहारि ॥ २९१ ॥
भूपभवन त्यहि अवसर सोहा * रचना देखि मदन मन मोहा ॥
मंगल शकुन मनोहरताई * ऋधि सिधि सुखसंपदासुहाई ॥
जनु उछाह सब सहज सुहाये * तनु धरि धरि दशरथगृह आये ॥

१ दुर्लभ । २ ढोल । ३ घोडे । ४ हाथी । ५ सुनि । ६ केशरआदि सुगन्धित चीजैं । ७ थलहा ।

देखन हेतु राम वैदेही * कहहु लालसा होइ न केही ॥
यूथयूथमिलिचलींसुवासिनि * निजछविनिदरहिंमदनविलासिनि
सकल सुमंगल सजे आरती * गावहिं जनु बहु वेष भारती ॥
भूपति भवन कुलाहल होई * जाइ न वरणि समय सुख सोई॥
कौसल्यादि राम महतारी * प्रेम विवश तनुदशा बिसारी ॥
दोहा-दिये दान विप्रन विपुल, पूजि गणेश पुरारि ॥
प्रमुदित परम दरिद्र जनु, पाइ पदारथ चारि ॥ ३९२ ॥
प्रेमप्रमोद विवश सब माता * चलहिंनचरणशिथिलसबगाता
रामदरश हित अति अनुरागीं * परिछन साज सजन सबलागीं॥
विविध विधान बाजने बाजे * मंगल मुदित सुमित्रा साजे ॥
हरद दूब दधि पल्लव फूला * पान पूगिफल मंगलमूला ॥
अक्षत अंकुर रोचन लाजा * मंजुलमंजरि तुलसि विराजा ॥
छुहे पुरट घट सहज सुहाये * मदन शकुन जनु नीड बनाये ॥
शकुन सुगंध न जाहिं बखानीं * मंगल सकल सजहिं सब रानी
रचीं आरती विविध विधाना * मुदितकरहिं कलमंगल गाना॥
दोहा-कनकथार भरि मंगलहिं, कमलकरनलिये मात ॥
चलीं मुदित परिछन करन, पुलक पल्लवितगात ॥३९३॥
धूप धूम नभ मेचक भयऊ * सावन घन घमंड जनु छयऊ ॥
सुरतरु सुमन माल सुर वर्षहिं * मनहुँबलाकअवलिमनकर्षहिं॥
मंजुल मणिमय वन्दनवारा * मनहु पाकरिपुचाप सँवारा ॥
प्रकटहिंदुरहिंअटन्हपरभामिनि * चारुचपलजनुदमकहिंदामिनि
दुन्दुभिध्वनि घनगरजहिंघोरा * याचक चातक दादुर मोरा ॥
शुचि सुगन्ध बहु वर्षहिं वारी * सुखीसकललखिपुर नर नारी॥
समय जानि गुरु आयसु दीन्हा * पुरप्रवेश रघुकुलमणि कीन्हा॥
सुमिरिशंभु गिरिजा गण राजा * मुदितमहीपतिसहितसमाजा॥
दोहा-होहिंशकुन वर्षहिं सुमन, सुरदुन्दुभी बजाइ ॥

१ इच्छा । २ रति । ३ सरस्वती । ४ मूँग । ५ सारि । ६ घर । ७ श्याम । ८ बकुला । ९ इन्द्रधनुष । १० मेंढक । ११ पवित्र ।

विबुध वधू नाचहिं मुदित, मंजुल मंगल गाइ ॥ ३९४ ॥
मागध सूत बन्दि नट नागर * गावहिं यश तिहुँलोकउजागर॥
मथध्वनि बिमल वेदवर वानी * दशदिशिसुनियसुमंगलखानी॥
विपुल बाजने बाजन लागे * नभसुर नगर लोग अनुरागे ॥
बने बराती बरणि न जाहीं * महामुदित मन सुखनसमाहीं॥
पुरवासिन तब राउ जुहारे * देखत रामहि भये सुखारे ॥
करहिं निछावरि मणिगणचीरा * वारि विलोचन पुलक शरीरा ॥
आरति करहिं मुदितपुरनारी * हर्षहिं निरखि कुँवरवर चारी ॥
शिबिका सुभग उघारि उघारी * देखिदुलहिनिन्ह होहिंसुखारी॥
दोहा—इहिविधि सबहीं देत सुख, आये राजदुआर ॥
मुदितमातु परिछनि करहिं, वधुन समेत कुमार ॥ ३९५ ॥
करहिं आरती बारहिंबारा * प्रेम प्रमोद लहै को पारा ॥
भूषण मणि पट नानाजाती * करहिं निछावरि अगणित भाँती
वधुन समेत देखि सुत चारी * परमानन्द मगन महतारी ॥
पुनि पुनि सीय रामछबि देखी * मुदितसफल जगजीवनलेखी ॥
सखीसीयमुख पुनिपुनि चाही * गायनकर निज सुकृत सराही॥
वर्षहिंसुमन क्षणहिंक्षण देवा * नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा ॥
देखि मनोहर चारचउ जोरी * शारद उपमा सकल ढँढोरी ॥
देत न बनहि निपट लघु लागी * इकटक रहीं रूप अनुरागी ॥
दोहा—निमग नीति कुलरीति करि, अरघ पाँवडे देत ॥
वधुन सहित सुत परछि सब, चलींलिवाय निकेत ॥३९६॥
चारि सिंहासन सहज सुहाये * जनु मनोजनिजहाथ बनाये ॥
तिनपरकुँवरि कुँवर बैठारे * सादर पाँय पुनीत पखारे ॥
धूप दीप नैवेद्य वेद विधि * पूजे वरदुलहिनि मंगलनिधि ॥
बारहिंबार आरती करहीं * व्यंजन चारु चामर शिरढरहीं ॥
वस्तु अनेक निछावरिहोहीं * भरीप्रमोद मातु सब सोहीं ॥

१ प्रवीण । २ पालकी । ३ स्थानको । ४ काम । ५ पंखे । ६ मुरछल । ७ आनंदित

पावा परमतत्त्व जनु योगी * अमृत लहि जनु संतत रोगी ॥
जन्मरंक जनु पारस पावा * अन्धहि लोचन लाभ सुहावा ॥
मूकवदन जस शारद छाई * मानहुँ समरशूर जय पाई ॥
दोहा–यहि सुखते शतकोटि गुण, पावहिं मातु अनंद ॥
भाइन सहित विवाहि घर, आये रघुकुल चंद ॥ ३९७ ॥
लोकरीति जननी करहिं, वर दुलहिनि सकुचाहि ॥
मोद विनोद विलोकि बड़, राम मनहिं मुसुकाहिं ॥ ३९८ ॥
देव पितर पूजे विधिनीकी * पूजी सकल वासना जीकी ॥
सबहिवन्दि माँगहिं वरदाना * भाइन सहित राम कल्याना ॥
अन्तरहित सुर आशिष देहीं * मुदित मातु अंचल भरि लेहीं ॥
भूपतिबोलि वरातिन्ह लीन्हें * यान वसन मणि भूषणदीन्हें ॥
आयसुपाइ राखि उररामहिं * मुदितगयेसबनिजनिजधामहिं ॥
पुर नर नारि सकल पहिराये * घर घर बाजहिं अनँद बधाये ॥
याचकजन याचहिं ज्वइजोई * प्रमुदित राउ देइँ स्वइ सोई ॥
सेवक सकल बजनियां नाना * पूरण किये दान सनमाना ॥
दोहा–देहिं अशीश जुहारि सब, गावहिं गुणगण नाथ ॥
तब गुरु भूसुर सहित गृह, गमन कीन्ह नरनाथ ॥ ३९९ ॥
जो वसिष्ठ अनुशासन दीन्हा * लोक वेद विधि सादर कीन्हा ॥
भूसुर भीर देखि सब रानी * सादर उठीं भाग्य बड जानी ॥
पाँयपखारि सकल अन्हवाये * पूजिभलीविधि भूप ज्यँवाये ॥
आदर दान प्रेम परि तोषे * देत अशीश चले मन तोषे ॥
बहु विधिकीन्ह गाधिसुतपूजा * नाथ मोहिं सम धन्य न दूजा ॥
कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी * रानिन्ह सहित लीन्ह पगधूरी ॥
भीतर भवन दीन्ह वरवासू * मन जुगवत रह नृप रनिवासू ॥
पूजे गुरुपद कमल ब[illegible] * कीन्ह विनय मन प्रीतिनथोरी
दोहा–वधुन समेत कुमार स[illegible] रानिन सहित

१ सदाका रोगी । २ जन्मकादरिद्री । ३ आँखें । ४ गूँगा । ५ माता । ६ विमान । ७ मनमें संतुष्टहोकर । ८ विश्वामित्र । ९ बहुत ।

पुनि पुनि वन्दत गुरुचरण, देत अशीश मुनीश ॥ ४०० ॥
विनय कीन्ह उरअतिअनुरागे * सुत सम्पदा राखि सब आगे ॥
नेग माँगि मुनिनायक लीन्हा * आशिर्वाद बहुत विधिदीन्हा ॥
उरधरि रामहिं सीय समेता * हरषि कीन्ह गुरुगमनलिकेता॥
विप्र वधू कुल वृद्ध बुलाई * चीर चारु भूषण पहिराई ॥
बहुरि बुलाइ सुआसिनि लीन्ही * रुचिविचारि पहिरावन दीन्ही ॥
नेगी नेग योग सब लेहीं * रुचि अनुरूप भूपमणि देहीं ॥
प्रियपाहुने पूज्य जे जाने * भूपति भलीभाँति सनमाने ॥
देव देखि रघुवीर विवाहू * वरषि प्रसून प्रशंसि उछाहू ॥
दोहा—चले निशान बजाइ सुर * निजनिज पुर सुखपाइ ॥
कहत परस्पर रामयश, हर्ष नहृदय समाइ ॥ ४०१ ॥
सब विधि समंदि मुदितनरनाहू * रहा हृदय भरि पूरि उछाहू ॥
जहँ रनिवास तहाँ पगुधारे * सहित वधूटिन कुँवर निहारे ॥
लिये गोद करि मोद समेता * को कहिसकै भयउ सुखजेता ॥
वधू सप्रेम गोद बैठारी * बार बार हिय हर्षि दुलारी ॥
देखि समाज मुदित रनिवासू * सबके उर आनन्द विलासू ॥
कह्यहुभूप जिमि भयउ विवाहू * सुनि सुनि हरषहोतसबकाहू ॥
जनकराज गुण शील बड़ाई * प्रीति रीति सम्पदा सुहाई ॥
बहुविधिभूप भाट जिमि वरणी * रानीसब प्रमुदित सुनिकरणी ॥
दोहा—सुतन समेत नहाइ नृप, बोलि लिये गुरुज्ञाति ॥
भोजन किये अनेक विधि, घरी पाँच गइ राति ॥ ४०२ ॥
मंगल गान करहिं वरभामिनि * भइसुखमूलमनोहर यामिनि ॥
अँचै पान सब काहुन पाये * स्रग सुगन्ध भूषित छविछाये ॥
रामहिं देखि रजायसु पाई * निज निज भवनचले शिरनाई॥
प्रेम प्रमोद विनोद बड़ाई * समय समाज मनोहरताई ॥
कहिनसकहिं श्रुति शारद शेषू * वेद विरंचि महेश गणेशू ॥

१ उत्साह । २ सन्मान । ३ परमानन्द । ४ जातिकेलोगोंके । ५ स्नेह । ६ आनन्द । ७ छीला ।

सोमें कहौं कवन विधि वरणी * भूमि नाग शिर धरै कि धरणी॥
नृपसबभाँति सबहिं सनमानी * कहिमृदु वचन बुलाईं रानी ॥
वधूलरिकिनी परघर आईं * राख्यउनयन पलककी नाईं ॥
दोहा-लरिका श्रमित उनींद वश, शयन करावहु जाइ ॥
असकहिगे विश्राम गृह, रामचरण चितलाइ ॥ ४०३ ॥
भूप वचन सुनि सहजसुहाये * जडितकनकमणिपलँगडसाये॥
सुभग सुरभि पयफेनसमाना * कोमल ललित सुपेती नाना ॥
उपवरहन वर वरणि न जाहीं * स्रगसुगंध मणि मन्दिरमाहीं ॥
रत्नदीप सुठि चारु चँदोवा * कहत न बनै जान जेहिजोवा ॥
सेज रुचिर रचि राम उठाये * प्रेम समेत पलँग पौढ़ाये ॥
आज्ञा पुनि पुनि भाइन दीन्हा *निजनिजसेजशयनतिनकीन्हा॥
देखि श्याम मृदु मंजुल गाता * कहहिं सप्रेम वचन सबमाता ॥
मारग जात भयावनि भारी * क्यहि विधि तात ताड़कामारी॥
दोहा-घोर निशाचर विकटभट, समर गनैं नहिंकाहु ॥
मारे सहित सहाय किमि, खल मारीचसुबाहु ॥ ४०४ ॥
मुनिप्रसाद बलि तात तुम्हारे * ईश अनेक करवरे टारे ॥
मख रखवारी करि दोउ भाई * गुरुप्रसाद सब विद्यापाई ॥
मुनि तियतरी लगत पगधूरी * कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥
कमठपीठ पवि कूट कठोरा * नृपसमाज महँ शिवधनु तोरा॥
विश्वविजययश जानकिपाई * आयेभवन ब्याहि सब भाई ॥
सकल अमानुष कर्म तुम्हारे * केवल कौशिक कृपा सुधारे ॥
आजु सफल जग जन्महमारे * देखितात विधुवदन तुम्हारे ॥
जोदिनगये तुमहिं विनु देखे * तेविरंचि जनि पारहिं लेखे ॥
दोहा-राम प्रतोषी मातु सब, कहि विनीत वर बयन ॥
सुमिरि शंभु गुरु विप्रपद, किये नींदवशनयन ॥४०५॥
नींदहु वदन सोह सुठि लोना * मनहुँ साँझ सरसीरुह सोना ॥

१ तकिया। २ चन्दन केशर इत्यादि। ३ महादेव। ४ विघ्न। ५ सन्तुष्ट किया। ६ कमल।

घर घर करहिं जागरण नारी * देहिं परस्पर मंगल गारी ॥
पुरीविराजति राजति रजनी * रानी कहहिं विलोकहु सजनी ॥
सुन्दर वधुन सासु लै सोई * फणिपति जनुशिर मणि उरगोई ॥
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे * अरुणचूड वर बोलन लागे ॥
बन्दी मागध गुणगण गाये * पुरजन द्वार जुहारन आये ॥
बन्दि विप्र सुर गुरु पितु माता * पाइ अशीश मुदित सबभ्राता ॥
जननिन सादर वदन निहारे * भूपति संग द्वारपगुधारे ॥

दोहा–कीन्ह शौच सब सहज शुचि, सरित पुनीत नहाइ ॥
प्रातक्रिया करि तात पहँ, आये चारिउ भाइ ॥ ४०६ ॥

भूप विलोकि लिये उरलाई * बैठे हर्षि रजायसु पाई ॥
देखि राम सब सभा जुड़ानी * लोचन लाभ अवधि अनुमानी ॥
पुनि वसिष्ठ मुनिकौशिकआये * सुभग आसनन मुनि बैठाये ॥
सुतनसमेत पूजि पद लागे * निरखि राम दोउ उरअनुरागे ॥
कहहिं वसिष्ठ धर्म इतिहासा * सुनहिं महीप सहित रनिवासा ॥
मुनिमनअगमगाधिसुतकरणी * मुदितवसिष्ठविपुलविधिवरणी ॥
बोले वामदेव सब साँची * कीरतिकलितलोकतिहुँमाँची ॥
सुनि आनन्द भयउ सब काहू * राम लषण उर अधिक उछाहू ॥

दोहा–मंगलमोद उछाह नित, जाहिं दिवस इहि भाँति ॥
उमँगी अवध अनंदभरि, अधिकअधिकअधिकाति ॥ ४०७ ॥

सुदिन सादि करकंकण छोरे * मंगल मोद विनोद न थोरे ॥
[illegible] न्मयँाचहि विधि पाहीं ॥
वि [illegible] रहहीं
दिन दिन सद्गुणभूपा [illegible]
माँगत बिदा राउ अनुरागे * सुतन [illegible]
नाथ सकल सम्पदा [illegible]

१ शोभा । २ रात्रि । ३ मुर्गा । ४ पिताके समीप । ५ विश्वामित्र । ६ सुन्दर । ७ विख्यात । ८ दिन
९ आनन्द । १० क्रीडा । ११ नवीन । १२ माँगहिं ।

करव सदा लरिकन पर छोहू * दर्शन देत रहब मुनि मोहू ॥
असकहि राउ सहितसुतरानी * परेउचरणमुखआवनवानी ॥
दीन्ह अशीश विप्र बहु भाँती * चले न प्रीति रीति कहि जाती ॥
राम सप्रेम संग सब भाई * आयसु पाइ फिरे पहुँचाई ॥

दोहा–रामरूप भूपतिभगति, व्याह उछाह अनन्द ॥
जात सराहत मनहिंमन, मुदित गाधिकुलचन्द ॥ ४०८ ॥

वामदेव रघुकुल गुरुज्ञानी * बहुरि गाधिसुत कथा बखानी ॥
सुनिसुनिसुयश मनहिंमनराऊ * वर्णत आपन पुण्य प्रभाऊ ॥
बहुरे लोग रजायसु भयऊ * सुतन समेत नृपति गृहगयऊ ॥
जहँ तहँ राम व्याह सब गावा * सुयश पुनीत लोक तिहुँछावा ॥
आये व्याहि राम घर जबते * बसे अनन्द अवध सब तबते ॥
प्रभु विवाह जस भयउ उछाहा * सकहिंनवरणिगिराअहिनाहा ॥
कविकुल जीवन पावन जानी * राम सीययश मंगल खानी ॥
त्यहिते मैं कछु कहा बखानी * करण पुनीत हेतु निज वानी ॥

छंद–हरिगीतिका ।

निज गिरा पावन करण कारण रामयश तुलसी कह्यो ॥
रघुवीर चरित अपार वारिधि पार कवि कवनै लह्यो ॥
उपवीत व्याह उछाह मंगल सुनहिं सादर गावहीं ॥
वैदेहि राम प्रसादते जन सर्वदा सुख पावहीं ॥ ६६ ॥
सुनि गाय कहीं गिरीशकन्या धन्य अधिकारी सही ॥
नित प्रीति अनुपम सुनत हरिगुणभक्ति अनुपम ते लही ॥
रघुवीर पद अनुराग जल लोभाग्नि वेगि बुझावई ॥
यह जानि तुलसीदास मन क्रम वचन हरिगुण गावई ॥ ६७ ॥

दोहा–कठिनकाल मलग्रसित तनु, साधन कछुक न होइ ॥
यहविचारि विश्वास करि, हरि सुमिरै बुधि सोइ ॥ ४०९ ॥

१ दया । २ विश्वामित्र । ३ सरस्वती । ४ शेषनाग

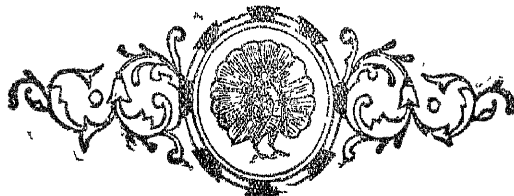
सो०-मन हरिपद अनुराग, करहु त्याग नानाकपट ॥
महामोह निशि जाग, सोवत बीते कालबहु ॥ ४० ॥
सिय रघुवीर विवाह, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं ॥
तिनकहँ सदा उछाह, मंगलायतन रामयश ॥ ४१ ॥

इति श्रीतुलसीदासविरचिते श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमलवैराग्य विज्ञानसंतोषसंपादनो नाम बालकाण्डः प्रथमः सोपानः ॥ १ ॥



KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS.
Shri Venkteshwar Steam Press,
BOMBAY.

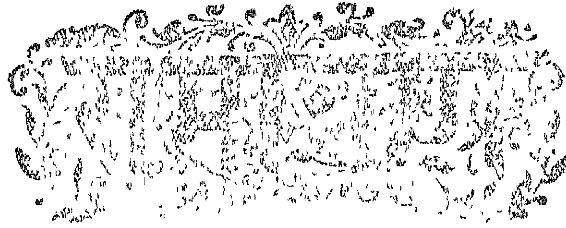
पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, खेतवाड़ी-बंबई.



श्रीमद्रामो विजयते ।

अथ

श्रीयुतगोस्वामितुलसीदासजीकृत-



सटिप्पण,

अयोध्याकाण्ड २.

संपूर्ण क्षेपकों सहित.

जिसमे

श्रीरामचन्द्रका वनोवास, दशरथ महाराजको रामविरहमे प्राण त्यागना, भरतको ममानेसे घर आना तथा चित्रकूटमें राममिलाप इत्यादि पुण्यप्रद कथा वर्णित हैं ।

यह ग्रन्थ

पण्डित-ज्वालाप्रसादमिश्रजीकेद्वारा

शुद्धकराकर,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

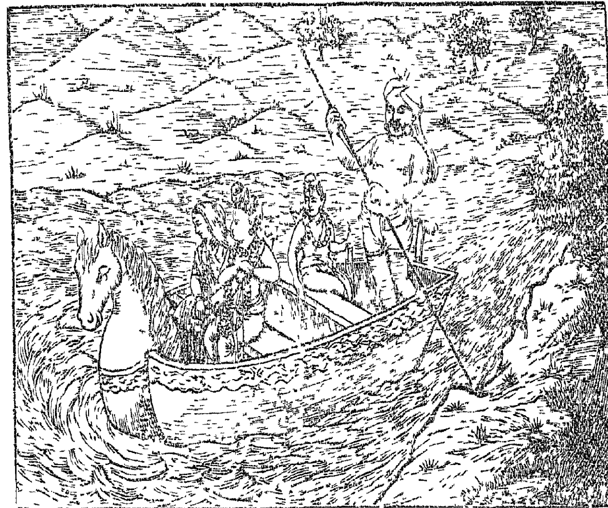
संवत् १९६२, शके १८२७.

✻ अयोध्याकाण्ड २. ✻

दोहा–मुनिदुर्लभ हरिभक्ति नर, पावहिं विनहिंप्रयास ॥
जे यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि विश्वास ॥

लक्ष्मण जानकी सहित श्रीरामचन्द्रजीका माता कौसल्यासे
बिदाहो श्रीगंगापार होना ।





चौ०–जे असि कथा पाय परिहरहीं । केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं ॥
ते जड़ कामधेनु गृहत्यागी । खोजत आक फिरहिं पयलागी ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय, खेतवाडी–बंबई.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS

Shree Venkateshwar (Steam) Press, Khetwadi—BOMBAY.

श्रीः ।

॥ श्रीमद्वेङ्कटेश्वराय नमः ॥

अथ

रामायणे अयोध्याकाण्डम् ।

श्लोक–वामांके च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ॥ सोय-म्भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु माम् ॥ १ ॥ प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्लौ वनवासदुःखतः॥ मुखाम्बुजं श्रीरघुनन्दनस्य मे सदास्तु तन्मञ्जुलमङ्गलप्रदम् ॥२॥ नी-लाम्बुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवामभागम् ॥ पाणौमहासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥३॥

श्लोकार्थ–जिनके बाईं ओर पार्वती, मस्तकमें गंगा, माथेपर बालचंद्रमा, गलेमें विष, हृदयमें सर्प-राज सो यह विभूतिसे भूषित देवताओंमें श्रेष्ठ सबके स्वामी सर्वरूपमय सर्वगत अर्थात् सबमें भिन्न और कल्याणरूप चंद्रमाके समान श्वेतवर्ण श्रीशंकर सर्वदा मेरी रक्षाकरैं ॥ १ ॥ जो राज्य प्राप्त होनेसे प्रसन्न और वनवासके दुःखसे मलीन नहीं हुई ऐसी रामचंद्रके मुखाम्बुजकी श्री मुझे सुंदर मंगल देनेवालीहो ॥ २ ॥ नील कमलके समान जिनके कोमल मंजुल अंगहैं जिनके वामभागमें श्रीजानकीजी विराजमान हैं हाथोंमें धनुषबाण धारण किये हैं ऐसे रघुवंशनाथ रामको मैं नम-स्कार करताहूं ॥ ३ ॥

दोहा–श्रीगुरुचरण सरोजरज, निज मन मुकुर सुधारि ॥
वर्णौं रघुवर विमल यश[1], जो दायक फल चारि[2] ॥ १ ॥

जबते राम व्याहि घर आये * नित नव मंगल मोद बधाये ॥
भुवन चारिदश भूधर[3] भारी * सुकृत मेघ वर्षहिं सुखवारी ॥
ऋधि सिधि सम्पति नदी सुहाई * उमँगि अवधअम्बुधि[4]कहँआई ॥
मणिगण पुर नर नारि सुजाती * शुचि अमोल सुंदर सबभाँती ॥
कहि न जाइ कछु नगर विभूती * जनु इतनी विरंचि करतूती ॥

१ निर्मलयश । २ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष । ३ पर्वत । ४ अयोध्यारूपीसमुद्र

सब बिधि सब पुरलोगसुखारी * रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारी ॥
मुदित मातु सब सखी सहेली * फलितबिलोकि मनोरथबेली ॥
रामरूप गुण शील स्वभाऊ * प्रमुदित होहिं देखि मुनिराऊ ॥
दोहा-सबकेउर अभिलाषअस, कहहिं मनाइ महेश ॥
आप अछत युवराज पद, रामहिं देहिं नरेश ॥ २ ॥

अथ क्षेपक ।

"यक दिन विश्वावसु तहाँ, कियो गान गंधर्व ॥
सुनि प्रसन्न ह्वै स्वपुरतेहि, कह्यो रहन हित सर्व ॥ १ ॥
तेहि कह इन्द्र निदेश बिन, मैं न सकत रहि अन्त ॥
कह्यो कैकयी बसत है, हमरे बल सुर कन्त ॥ २ ॥
हमरे आवत रिस करत, अस तुम गयो भुलाय ॥
पठइ पत्रिका बाँच कर, सुनि नृप रहे चुपाय ॥ ३ ॥
मनमें समुझी कैकयी, लिख पठये वच बंक ॥
हमरेउ लागी घात तब, हमहूँ देब कलंक ॥ ४ ॥
लिख पठयो विश्वावसुहि, करयो कहैं नृप जोय ॥
बिदा करैं तब आइयो, समझ बूझ तुम सोय ॥ ५ ॥
वर्ष अठारहकी सिया, सत्ताइसके राम ॥
कीनी मन्न अभिलाष तब, करनो है सुर काम" ॥ ६ ॥

अति आनन्द अवधपुरवासी * भ्रातन सहित देखि सुखरासी ॥
एकबार जानकी समेता * बैठे प्रभु निज रुचिरनिकेता ॥
भुजप्रलंब उर नयन बिशाला * पीत वसन तनु श्यामतमाला ॥
कोटि मनोज देखि छबिमोहा * सीताकर चामर बर सोहा ॥
त्यहि अवसर मुनिनारदआये * सुरहित लागि बिरंचि पठाये ॥
तेजपुंज करतल शुभ बीना * हरि गुणगण गावतलवलीना ॥
देखि राम सहसा उठि धाये * करत दंडवत मुनि उर लाये ॥
सादर निज आसन बैठारे * जनकसुता तब चरण पखारे ॥
त्यहिचरणोदक भवनसिँचावा * जगपावन हरि शीश चढ़ावा ॥

१ प्रसन्न । २ कोटिकामदेव । ३ ब्रह्मा । ४ निधान । ५ हाथ । ६ शीघ्र

सुनुमुनि विषयनिरत जे प्राणी * हम सारिखे देह अभिमानी ॥
तिन कहँ सतसंगति जब होई * करहिं कृपा जापर प्रभु सोई ॥
ता कहँ मुनि नाहिंन भवभागी * ज्यहि बिनुहेतु संत प्रियलागी ॥
तातें नारद मैं बड़भागी * यद्यपि गृह कुटुंब अनुरागी ॥
दोहा—सुनि प्रभु वचन मधुरप्रिय, करिविचार मुनिधीर ॥
परम कृपालु लोकहित, कस न कहो रघुबीर ॥ ३ ॥
कह मुनि तव महिमा रघुराया * मैं जानौं कछु तुम्हरी दाया ॥
वचन कह्यो प्राकृत की नाईं * यामें नाहिं कछु घट्यहु गुसाँई ॥
प्रभु यह तुमहिं सदा बनिआई * निज लघुता जन केरि बड़ाई ॥
सहजस्वभाव प्रणत अनुरागी * नरतनुधरयउ दासहितलागी ॥
माया गुण गो ज्ञान अतीता * अजित नाम सो दासन्हजीता ॥
ज्यहिप्रभुसमअतिशयकोउनाहीं * व्यापकअजसमानसबमाहीं ॥
उदर चराचर मेलि जो सोवा * स्तन पान लागि सोइरोवा ॥
नाम रूप वपु वर्ण न भेदा * अविगत अकल नेति कहवेदा ॥
निर्मम मुक्त निरामय जोई * दशरथ सुत कहि गाइय सोई ॥
जप तप योग यज्ञ व्रत दाना * विमल विराग ज्ञान विज्ञाना ॥
करहिं यत्न मुनि पावहिं कोई * देखा प्रगट भक्त वश सोई ॥
हठ वश शठ बहुसाधन करहीं * भक्तिहीन भवसिंधु न तरहीं ॥
दोहा—जानि सकहु ते जानहु, निर्गुण सगुण स्वरूप ॥
मम हिय पंकज भृंग इव, वसहु राम नर रूप ॥ ४ ॥
ब्रह्म भुवन मैं रह्यो कृपाला * गावत तव गुण दीनदयाला ॥
असि इच्छा उपजी मनमाहीं * देख्यो चरण बहुत दिन नाहीं ॥
यद्यपि प्रभु सर्वत्र समाना * सगुण रूप मोरे मन माना ॥
अवधचलतविरंचिमोहिंजाना * कीन्हीविनय लागि मम काना ॥
प्रभु जानत सब अंतर्यामी * भक्त वछल विनती यह स्वामी ॥
ज्यहिहितलीन मनुजअवतारा * नाथ ताहि अब करिय सँभारा ॥

१ लीन । २ प्रेम । ३ पेट । ४ शरीर

सुनत वचन रघुपति मुसुकाने * सुनि अजहूं विरंचि भय माने ॥
कहेहु तात ब्रह्महिं समुझाई * कछु दिन गये देखिहैं आई ॥
वार वार चरणन शिरनाई * ब्रह्मानंद न हृदय समाई ॥
रामरूप उर धरि मुनि नारद * चले करत गुणगान विशारद ॥
तवरघुपति सीतहि समुझावा * पूर्व कथा सब हेतु सुनावा ॥
सुरहित लागि सो करिय उपाई * जइये वन परिहरि ठकुराई ॥
दोहा--जगसंभव स्थिति प्रलय, जाकी भृकुटि विलास ॥
सो प्रभु यत्न विचारत, केहि विधि निशिचरनास ॥ ५ ॥

इतिक्षेपक ।

एकसमय सबसहित समाजा * राजसभा रघुराज विराजा ॥
सकल सुकृत मूरति नरनाहू * रामसुयशसुनि अतिहिउछाहू॥
नृपसबरहहिं कृपा अभिलाषे * लोकपरहहिं प्रीति रुख राखे ॥
त्रिभुवन तीनिकाल जगमाहीं * भूरिभाग्य दशरथ सम नाहीं ॥
मंगल मूल राम सुत जासू * जोकछु कहिय थोर सबतासू ॥
राउ स्वभाव मुकुर कर लीन्हा * वदनविलोकिमुकुटसमकीन्हा॥
श्रवण समीप भये सितकेशा * मनहुँ चौथपन अस उपदेशा ॥
नृप युवराज राम कहँ देहू * जीवन जन्म सफल करि लेहू ॥
दोहा--अस विचारि उर आनि नृप, सुदिन सुअवसरपाइ ॥
तनु पुलकित मन मुदित अति, गुरुहिं सुनायउ जाइ ॥६॥
कहेउभुवाल सुनियमुनिनायक * भयेराम सबविधि सबलायक॥
सेवक सचिव सकलपुरवासी * जे हमरे अरि मित्र उदासी ॥
सबहिंरामप्रियज्यहिविधिमोहीं * प्रभुअशीश जनुतनुधरिसोहीं ॥
विप्र सहित परिवार गुसाँई * करहिं छोह सब रौरेहि नाईं ॥
जे गुरुचरण रेणु शिर धरहीं * तेजनु सकल विभववशकरहीं॥
मोहि समान अरु भयउ न दूजे * सब पायउँ प्रभु पदरज पूजे॥
अब अभिलाष एकमन मोरे * पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ॥
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू * कहेउ नरेश रजायसु देहू ॥

१ महाराजदशरथ । २ लोक--१४ अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल, भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यलोकोंके अध्यक्ष । ३ स्वर्ग, मत्यु, पाताल । ४ भूत, भविष्य, वर्तमान ।

दोहा—राजन राउर नाम यश, सब अभिमत दातार ॥
फल अनुगामी महिप मणि, मन अभिलाष तुम्हार ॥ ७ ॥
सब विधि गुरुप्रसन्नजियजानी * बोल्यउ राउ विहँसि मृदुबानी ॥
नाथ राम करिये युगराजू * कहिय कृपाकरि करियसमाजू ॥
मोहिं अछत अस होइ उछाहू * लहहिं लोग सब लोचन लाहू ॥
प्रभु प्रसाद शिव सबै निबाहीं * इहै लालसा यक मनमाहीं ॥
पुनि न शोच तनु रहै कि जाऊ * ज्यहि न होइ पाछे पछिताऊ ॥
सुनि मुनि दशरथवचनसुहाये * मंगलमूल मोद अति पाये ॥
सुनुनृपजासु विमुख पछिताहीं * जासुभजनविन जरनिनजाहीं ॥
भये तुम्हार तनय सो स्वामी * राम पुनीत प्रेम अनुगामी ॥
दोहा—वेगि विलंब न करिय नृप, साजिय सबै समाज ॥
सुदिन सुमंगल तबहिं जब, राम होहिं युवराज ॥ ८ ॥
मुदित महीपति मन्दिर आये * सेवक सचिव सुमन्त बुलाये ॥
कहि जयजीव शीशतिननाये * भूप सुमंगल वचन सुनाये ॥
प्रमुदित मोहिं कहेउ गुरुआजू * रामहिं राज देहु युवराजू ॥
जो पाँचहिं मत लागै नीका * करहु हर्षि हिय रामहिं टीका ॥
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी * अभिमत बिरव परेउ जनुपानी ॥
विनती सचिव कराहिं करजोरी * जियहु जगतपति वरषकरोरी ॥
जगमंगल भल काज विचारा * वेगहिं नाथ न लाइय बारा ॥
नृपहिं मोदसुनिसचिव सुभाषा * बढ़त विटपजनुलही सुशाखा ॥
दोहा—कहेउ भूप मुनिराज कर, जो जो आयसु होइ ॥
राम राज्य अभिषेकहित, वेगि करहु सोइ सोइ ॥ ९ ॥
हरषि मुनीश कहेउ मृदुबानी * आनहु सकल सुतीरथपानी ॥
औषध मूल फूल फल नाना * कहे नाम गणि मंगल जाना ॥
चामर चर्म्म वसन बहुभाँती * रोम पाटपट अगणित जाती ॥
मणिगण मंगल वस्तु अनेका * जो जग योग भूप अभिषेका ॥

१ तीनिउँ ताप । २ सेवक । ३ प्रसन्नचित्त । ४ जयजीवकही [illegible] ५ वांछित । ६ चमर
७ मृगसिंहचर्म । ८ दुशाला, बनात इत्यादि

वेद विहित कहि सकलविधाना * कहेउ रचहुपुर विविध बिताना ॥
पनँस रसाल पूगीफल केरा * रोपहु बीथिन पुर चहुँ फेरा ॥
रचहु मंजु मणि चौकै चारू * कहेउ बनावन बेगि बजारू ॥
पूजहु गणपति गुरु कुलदेवा * सबविधि करहु भूमिसुरसेवा ॥
दोहा-ध्वज पताक तोरण कलश, सजहु तुरँग रथनाग ॥
शिरधरि मुनिवर वचन सब, निज निज काजहिं लाग ॥ १० ॥
जेहि मुनीश जो आयसु दीन्हा * सो जनु काज प्रथम तेइँ कीन्हा ॥
विप्र साधु सुर पूजत राजा * करत राम हित मंगल काजा ॥
सुनत राम अभिषेक सुहावा * बाजु गहागहँ अवध बधावा ॥
राम सीय तनु शकुन जनाये * फरकहिं मंगल अंग सुहाये ॥
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं * भरत आगमन सूचक अहहीं ॥
भये बहुत दिन अति अवसेरी * शकुन प्रतीत भेंट प्रिय केरी ॥
भरतसरिस प्रिय को जगमाहीं * यहै शकुन फल दूसर नाहीं ॥
रामहिं बन्धु शोच दिन राती * अंडन्हकमठहृदय ज्यहिभाँती ॥
दोहा-ज्यहि अवसर मंगल परम, सुनि हर्षेउ रनिवास ॥
शोभित लखि विधु बढत जनु, वारिधि बीच विलास ॥ ११ ॥
प्रथमजाइ ज्यहि वचन सुनावा * भूषण वसन भूरि तिन्ह पावा ॥
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागी * मंगलसाज सजनसब लागी ॥
चौकै चारु सुमित्रा पूरी * मणिमयविविधभाँतिअतिरूरी ॥
आनँद मगन राम महतारी * दिये दान बहु विप्र हँकारी ॥
पूजेउ ग्रामदेव सुर नागा * कहेउ बहोरि देन बलिभागा ॥
जेहि विधि होइ राम कल्याना * देहु दयाकरि सो वरदाना ॥
गावहिं मंगल कोकिल बयनी * विधुवदनी मृगशावकनयनी ॥
दोहा-रामराज अभिषेक सुनि, हिय हरषी वर नारि ॥
लगीं सुमंगल सजन सब, विधि अनुकूल विचारि ॥ १२ ॥
तब नर नाह वसिष्ठ बुलाये * राम धाम शिख देन पठाये ॥

१ कटहर । २ आँब । ३ सुपारी । ४ ब्राह्मण । ५ गंभीर । ६ चिन्ता । ७ चन्द्रवदनी ।

गुरु आगमन सुनत रघुनाथा * द्वार आइ नायउ पद माथा ॥
सादर अर्घ्य देइ गृह आने * षोडश भाँति पूजि सनमाने ॥
गहे चरण सिय सहित बहोरी * बोले राम कमल कर जोरी ॥
सेवक सदन स्वामि आगमनू * मंगल मूल अमंगल दमनू ॥
यदपिउचितअसबोलिसप्रीती * पठइयनाथ काज असनीती ॥
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू * भयउ पुनीत आज मम गेहू ॥
आयसु होय सो करिय गुसाँई * सेवक लहै स्वामि सेवकाई ॥
दोहा—सुनि सनेहसाने वचन, मुनि रघुवरहि प्रशंस ॥
राम कस न तुम कहहु अस, हंसवंश अवतंस ॥ १३ ॥
वर्णि राम गुण शील स्वभाऊ * बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ ॥
भूप सजेउ अभिषेक समाजू * चाहत देन तुमहिं युवराजू ॥
राम करहु सब संयम आजू * जो विधि कुशल निबाहै काजू॥
गुरु शिख देइ राउपहँ गयऊ * राम हृदयअसविस्मयभयऊ ॥
जनमे एक संग सब भाई * भोजन शयन केलि लरिकाई ॥
कर्णवेध उपवीत विवाहा * संग संग सब भयउ उछाहा ॥
विमल वंश यह अनुचित एका * अनुजविहाय बड़ेहि अभिषेका॥
प्रभु सप्रेम पछिताँनि सुहाई * हरहु भरत मनकी कुटिलाई ॥
दोहा—त्यहि अवसर आये लषण, मगन प्रेम आनंद ॥
सनमाने प्रिय वचन कहि, रविकुल कैरवचंद ॥ १४ ॥
बाजहिंबाजन विविध विधाना * पुर प्रमोद नहिं जाइ बखाना ॥
भरतआगमन सकल मनावहिं * आवहिं वेगि नयन फल पावहिं॥
हाट बाट घर गली अथाई * कहहिं परस्पर लोग लुगाई ॥
कालि लग्न भल केतिकबारा * पूजहि विधि अभिलाष हमारा ॥
कनक सिंहासन सीय समेता * बैठहिं राम होइ चित चेता ॥
सकल कहहिंकबहोइहिकाली * विघ्न मनावहिं देव कुचाली ॥
तिनहिंसोहात न अवध बधावा * चोरहि चाँदनि रातिन भावा ॥

१ नाशकर्ता । २ बर । ३ आज्ञा । ४ सूर्यवंश । ५ भूषण । ६ चिन्ता । ७ यज्ञोपवीत ।

शारद बोलि बिनय सुर करहीं * बारहिं बार पाँय लै परहीं ॥
दोहा–बिपति हमारि बिलोकि बडि, मातु करियसोइआज ॥
राम जाहिं बन राज तजि, होइ सकल सुरकाज ॥ १५ ॥
सुनिसुरविनय ठाढिपछिताती *भयउ सरोज बिपिन हिमराती॥
देखि देव पुनि कहहिं बहोरी * मातु तोहिं नहिं थोरिउ खोरी॥
विस्मय हर्ष रहित रघुराऊ * तुव जानहु रघुवीर स्वभाऊ ॥
जीवकर्मवश दुख सुख भागी * जाइय अवध देव हित लागी ॥
बार बार गहि चरण सकोची * चलीविचारिविबुधमतिपोची ॥
ऊंच निवास नीच करतूती * देखि न सकहिं पराइ विभूती॥
आगिल काज विचारि बहोरी * करिहैं चाह कुशल कवि मोरी॥
हर्षि हृदय दशरथ पुर आई * जनु ग्रह दशा दुसह दुखदाई ॥
दोहा–नाम मन्थरा मन्दमति , चेरि कैकयी केरि ॥
अयश पिटारी ताहि करि, गई गिरा मति फेरि ॥ १६ ॥
देखि मन्थरा नगर बनावा * मंगल मंजुल बाजु बधावा ॥
पूँछिसि लोगन्ह काह उछाहू * रामतिलक सुनि भा उरदाहू ॥
करै विचार कुबुद्धि कुजाती * होइ अकाज कवन विधि राती॥
देखिलागि मधु कुटिल किराती *जिमिगँवतकै लेउँ क्यहि भाँती॥
भरतमातु पहँ गइ बिलखानी *काअनमनिहँसिहँसिकहरानी॥
उतर न देइ सो लेइ उसाँसू * नारि चरित करि ढारति आँसू॥
हँसि कह रानि गाल बड तोरे * दीन्ह लषण शिख असमनमोरे॥
तबहुँ न बोलि चेरिबडिपापिनि * छाँडेश्वास कारि जनुसाँपिनि ॥
दोहा–सभय रानि कह कहसि किन, कुशल राम महिपाल ॥
भरत लषण रिपुदमनसुनि, भा कुबरी उरशाल ॥ १७ ॥
कत शिखदेहि हमहिं कोउमाई * गालकरब केहिकर बल पाई ॥
रामहिंछाँडि कुशल केहि आजू * जाहि नरेश देत युवराजू ॥
भाकौशल्याहि विधि अतिदाहिन* देखत गर्व रहत उर नाहिन ॥

१ सम्पदा ।

देखहु कस न जाइ सब शोभा * जो अवलोकि मोर मन क्षोभा॥
पूत विदेश न शोच तुम्हारे * जानतिहौ वश नाहिं हमारे॥
नींद बहुत प्रियसेज तुराई * लखहु न भूप कपट चतुराई॥
सुनिप्रियवचनकुटिलमनजानी * झुकीरानि तब मन अरगानी॥
पुनिअसकबहुँ कहसि घरफोरी * तौ धरि जीह कढ़ावौं तोरी॥
दोहा-काने खोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जानि॥
तिय विशेष पुनि चेरि कहि, भरत मातु मुसुकानि॥ १८॥
प्रियवादिनि शिष दीन्हउतोहीं * स्वप्नेहु तोपर कोप न मोहीं॥
सुदिन सुमङ्गलदायक सोई * तोरे कहा फुर जादिन होई॥
ज्येठ स्वामि सेवकलघु भाई * यह दिनकर कुलरीति सदाई॥
राम तिलक जो साँचेहु काली * माँगु देउँ मन भावत आली॥
कौशल्या सम सब महतारी * रामहिं सहज स्वभाव पियारी॥
मोपर करहिं सनेह विशेषा * मैं करि प्रीति परीक्षा देखा॥
जो विधि जन्म देइ करि छोहू * होहिं राम सिय पूत पतोहू॥
प्राणते अधिक राम सिय मोरे * तिनके तिलक क्षोभ कसतोरे॥
दोहा-भरत शपथ तोहिं सत्य कहु, परिहरि कपट दुराव॥
हर्ष समय विस्मय करसि, कारण मोहिं सुनाव॥ १९॥
एकहिबार आश सब पूजी * अब कछु कहब जीह करिदूजी॥
फोरै योग कपार अभागा * भलौ कहत दुख रौरेहु लागा॥
कहइ झूँठ फुर बात बनाई * सो प्रिय तुमहिं करुइ मैंमाई॥
हमहुँ कहब अब ठकुरसुहाती * नाहिंतो मौन रहब दिनराती॥
करिकुरूप विधि परवशकीन्हा * बाचा शाल हमैं तिन्ह दीन्हा॥
कोउ नृप होउ हमैं का हानी * चेरि छाँड़ि अब होब कि रानी॥
जारै योग स्वभाव हमारा * अनभल देखि न जाइ तुम्हारा॥
ताते कछुक बात अनुसारी * क्षमब देवि बड़ चूक हमारी॥
दोहा-गूढ़ कपट प्रियवचन सुनि, तीय अधर बुधि रानि॥

१ नृपति-दशरथ। २ रजाई। ३ सिमिटके चुपहै रही। ४ जिह्वा। ५ छोटा। ६ सन्देह-शोक। ७ अधीर।

सुर मायावश वैरिणिहि, सुहृद जानि पतिआनि ॥ २० ॥
सादर पुनि पुनि पूँछति ओही * शबरी नाद मृगी जनु मोही ॥
तस मतिफिरी अहैजसभावी * रहँसी चोरि घात भलि फावी ॥
तुम पूँछहु मैं कहत डराऊँ * धरेहु मोर घरफोरी नाऊँ ॥
साजि प्रतीतिगढ़िबहुविधिछोली * अवधसाढ़साती जनु बोली ॥
प्रिय सिय राम कहा तुमरानी * रामहिं तुम प्रिय सोफुरबानी ॥
रहेप्रथम अब सो दिन बीते * समय पाइ रिपु होहिं पिरीते ॥
भानु कमलकुल पोषनि हारा * बिनु जल जारि करै सो क्षारा ॥
जर तुम्हारि चह सवतिउपारी * रूँधहुकारि उपाइ बरवारी ॥
दोहा-तुमहिं न शोच सुहाग बल, निज वश जानहु राव ॥
मन मलीन मुँह मीठ नृप, राउर सरल स्वभाव ॥ २१ ॥
चतुर गँभीर राम महतारी * बीच पाइ निज काज सँवारी ॥
पठये भरत भूप ननिऔरे * राममातु मत जानबरौरे ॥
सेवहिंसकल सवति मोहिं नीके * गर्वित भरत मातु बल पीके ॥
शाल तुम्हार कौशिलहिमाई * चतुर कपट नहिं परतलखाई ॥
राजहिं तुम पर प्रीति विशेषी * सवति स्वभाव सकैनहिं देखी ॥
रचि प्रपंच भूपहि अपनाई * राम तिलक हित लग्नधराई ॥
इहिकुल उचित रामकहँ टीका * सबहिं सुहाइ मोहिंसुठिनीका ॥
आगिलबात समुझि डरमोहीं * दैव देव फल सो फिरि ओहीं ॥
दोहा-रचिपचि कोटिक कुटिलपन, कीन्हेसि कपट प्रबोध ॥
कहेसि कथा शतसौतिकर, जाते बढै विरोध ॥ २२ ॥
भावीवश प्रतीति उर आई * पूँछिरानि निज शपथ दिवाई ॥
का पूँछहु तुम अजहुँ न जाना *हितअनहितनिजपशुपहिचाना॥
भये पाखदिन सजतसमाजू * तुम सुधि पायहु मोसनआजू ॥
खाइय पहिरिय राज्य तुम्हारे * सत्य कहे नहिं दोष हमारे ॥
जो असत्य कछु कहब बनाई * तौविधि देइहि मोहिं सजाई ॥

१ मित्र । २ किरातनी । ३ हर्षितहोती भई । ४ शनैश्चरकी दशा ।

रामहिंतिलक कालिजो भयऊ * तुमकहँविपतिबीजाविधिबयऊ॥
रेखा खैंचि कहौं बल भाषी * भामिनि भइउ दूधकी माखी ॥
जोसुत सहित करहु सेवकाई * तोघर रहहु न आन उपाई ॥

दोहा–कद्रू विनतहि दीन दुख, तुमहि कौशला देव ॥
भरत बन्दिगृह सेइहैं, राम लषण कर नेव ॥२३॥

केकयसुता सुनत कटु बानी * कहिनसकैकछुसहमिसुखानी॥
तनु पसेव कदली जनु काँपी * कुबरी दशन जीह तब चापी ॥
कहिकहिकोटिक कपटकहानी * धीरज धरहु प्रबोधिसिरानी ॥
कीन्ह्यासिकठिन पढाय कुपाठू * जिमि न नवै फिर उकठाकाठू॥
फिरा कर्म प्रिय लागु कुचाली * बकिहि सराहत मनहुँ मराली॥
सुन मंथरा बात फुर तोरी * दहिनआँखनित फरकतमोरी॥
दिन प्रति देखौं राति कुसपना * कहौं न तोहिं मोह वश अपना ॥
काह कहौं सखि शुद्धस्वभाऊ * दहिन बाम नहिं जानौं काऊ ॥

दोहा–अपने चलत न आजुलगि, अनभल काहुक कीन्ह ॥
केहिअघ एकहि बार मोहिं, दैव दुसह दुख दीन्ह ॥ २४ ॥

नैहर जन्म भरब बरु जाई * जियत नकरबसवतिसेकाई ॥
अरिवश दैव जिआवै जाही * मरणनीकत्यहिजियबनचाही ॥
दीन वचन कह बहुविधिरानी * सुनिकुबरी तियमाया ठानी ॥
असकसकहहु मानि मन ऊना * सुख सुहाग तुम कहँदिनदूना ॥
जोराउर अस अनभलताका * सो पाइहि यह फल परिपाका ॥

*कश्यप मुनिकी दो स्त्री, तिसमें सर्पोंकी माता कद्रू और गरुड़ पक्षीकी माता विनता सो कद्रूने विनतासे पूँछा कि सूर्यके घोड़ेकी पूँछ कौन रंगकीहै विनताने उत्तर दिया कि, उज्ज्वल कद्रूबोली नहिं श्याम रंगकी है. इसमें दोनोंने प्रति उत्तर करके यह बात ठहराई कि, इसमें जो हारे सो दासी बनके रहै; यह निश्चय करनेके निमित्त दोनों चलीं तहां कद्रूकी आज्ञानुसार सर्प जायके घोड़ोंकी पूछमें लिपटगये तब कद्रूने छलसे विनताको दिखलादिया कि, देखो पूँछका रंग काला है विनता लज्जितहोय दासभाव अंगीकारकर सेवामें रहने लगी ॥

१ तनुमें पसीना चलाहै। २ केला। ३ दांत। ४ बकुली। ५ शत्रुकेवश। ६ दृढकरिके।

जबते कुमति सुनी मैंस्वामिनि * भूख न वासर नींद न यामिनि ॥
पूँछा गुणिह रेखतिन खाँची * भरत भुआल होव यह साँची ॥
भामिनि करहु तौ कहौं उपाऊ * हैं तुम्हरे सेवावश राऊ ॥
दोहा–परौं कूप तव वचन लगि, सकौं पूत पति त्यागि ॥
कहसि मोर दुख देखि बड़, कस न करब हितलागि ॥ २५ ॥
कुबरी करी कुबालि कैकेयी * कपट छुरी उर पाहन टेयी ॥
लखै न रानि निकट दुख कैसे * चरै हरित तृण बलिपशु जैसे ॥
सुनत बात मृदुअंत कठोरी * देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ॥
कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं *स्वामिनिकहहुकथामोहिंपाहीं॥
दुइ वरदान भूप सन थाती * माँगहु आजु जुडावहु छाती ॥
सुतहिं राज रामहिं वनवासू * देहु लेहु सब सवति हुलासू ॥
भूपति राम शपथ जब करई * तब माँगहु जेहि वचन नटरई ॥
होइ अकाज आज निशिबीते * वचन मोर प्रिय मानहु जीते ॥
दोहा–बड़ कुघात करि पातकिनि, कहेसि कोप गृह जाहु ॥
काज सँवारहु सजग सब, सहसा जनि पतियाहु ॥२६॥
कुबरिहि रानि प्राण सम जानी * बार बार बड़ि बुद्धि बखानी ॥
तुहि सम हित न मोर संसारा * बहे जात कर भयसि अधारा ॥
जो विधि पुरब मनोरथ काली * करौंतोहिं चखपूतरि आली ॥
बहु विधि चेरिहि आदर देयी * कोप भवन गवनी कैकेयी ॥
विपति बीज वर्षाऋतु चेरी * भुइँ भइ कुमति कैकयी केरी ॥

*एक समय दैत्योंने लड़ाई करके इन्द्रको पराजय किया तब इंद्र राजा दशरथके पास आ इन्हें दैत्योंपर चढ़ा लेगये तहां कैकेयीभीगईरही युद्धमें दशरथके रथका चक्रावलंब टूटगया कैकेयी यह देख रथपरसे उतर अपनी भुजापर चक्रका आधार करलिया जब दशरथ महाराजने दैत्यों को पराजयकर जयपाई तब कैकेयी बोली कि, महाराज! रथमेंसे उतरियो, ज्योंहीं महाराज उतरे और कैकेयीने हाथ खींचलिया कि रथ टूटपड़ा यह समाचार देख दशरथने प्रसन्न होकर कहा कि आज जय तेरी सहायतासे हुई दो वरदान जो तू मांगे सो हम देवैं तब कैकेयी बोली महाराज! यह दोनों वरदान मेरा थाती रख छाँड़िये जब मुझे कार्य होगा तब माँग लूंगी ॥

१ दिन । २ रात्रि । ३ भरत । ४ आनंद । ५ सौगंध-कसम । ६ शीघ्र । ७ आँखकी पुतली ।

पाइ कपट जल अंकुरजामा * वर दोउ दल फल दुख परिणामा ॥
कोप समाज साज सज सोई * राज्यकरतत्थहिकुमतिविगोई ॥
राउर नगर कोलाहल होई * यहकुचाल कछु जान न कोई ॥
दोहा–प्रमुदित पुर नर नारि सब, साजि सुमंगलचार ॥
इक प्रविशहिं इक निकसहीं, भीर भूप दरबार ॥ २७ ॥
बाल सखा सुनि हिय हरषाहीं * मिलि दश पांच राम पहँ जाहीं ॥
प्रभु आदरहिं प्रेम पहिचानी * बूझहिं कुशल क्षेम मृदुवानी ॥
फिरहिं भवन प्रभु आयसुपाई * करत परस्पर राम बड़ाई ॥
को रघुवीर सरिस संसारा * शील सनेह निबाहन हारा ॥
ज्यहिज्यहियोनिकर्मवशभ्रमहीं * तहँ तहँ ईश देहिं यशहमहीं ॥
सेवक हम स्वामी सियनाहू * देउ ईश यह ओर निबाहू ॥
अस अभिलाष नगर सबकाहू * कैकयसुता हृदय अतिदाहू ॥
को न कुसंगति पाइ नशाई * रहै न नीच मते चतुराई ॥
दोहा–साँझ समय सानन्द नृप, गये कैकयी गेह ॥
गमन निठुरता निकट किय, जनु धरि देह सनेह ॥ २८ ॥
कोप भवन सुनि सकुचे राऊ * भय वश आगे परे न पाऊ ॥
सुरपति बसै बाहुबल जाके * नरपतिरहहिं सकलरुखताके ॥
सो सुनि तिय रिसि गये सुखाई * देखहु काम प्रताप बड़ाई ॥
शूलि कुलिश असि अँगवनिहारे * ते रतिनाथ सुमनशर मारे ॥
सभय नरेश प्रियापहँ गयऊ * देखि दशा दुखदारुण भयऊ ॥
भूमि शयन पट मोट पुराना * दिये डारि तन भूषण नाना ॥
कुमतिहि कस कुरूपता फावी * अनअहिवात सूच जनुभावी ॥
जाइ निकट नृप कह मृदुवानी * प्राणप्रिया केहिहेतु रिसानी ॥
छंद–केहि हेतु रानि रिसानि परसतपाणिपतिहिनिवारई ॥
मानहु सरोष भुअंग भामिनि विषमभाँति निहारई ॥
दोउ वासना रसना दशन वर मर्म ठाहर देखई ॥

१ फल । २ प्रसन्नचित्त । ३ इन्द्र । ४ राजा । ५ कामदेव । ६ पुष्पबाण । ७ अशोभित । ८ विधवापन । ९ भवितव्यता

तुलसी नृपति भवितव्यता वश काम कौतुक लेखई ॥ १ ॥
सो०–बार बार कह राव, सुमुखि सुलोचनि पिकवचनि ॥
कारण मोहिं सुनाव, गजगामिनि निज कोपकर ॥ १ ॥
अनहिततोर प्रियाकेहि कीन्हा *केहिदुइशिरकेहियमचहलीन्हा॥
कहु क्यहि रंकहि करौं नरेशू * कहु क्यहि नृपहिनिकारौं देशू॥
सकौं तोर अरि अमरहु मारी * कहा कीट बपुरे नर नारी ॥
जानसि मोर स्वभाव बरोरू * तुममुखममदगचन्द्रचकोरू ॥
प्रिया प्राण सुत सर्वस मोरे * परिजनप्रजा सकल वश तोरे ॥
जो कछु कहौं कपटकरि तोहीं * भामिनि राम शपथशतमोहीं ॥
विहँसि माँगु मनभावति बाता * भूषण साजु मनोहर गाता ॥
घरी कुघरि समुझी जिय देखू * वेगि प्रिया परि हरहु कुवेखू ॥
दोहा–यह सुनिमनगुणिशपथबड़ि, विहँसिउठीमतिमन्द ॥
भूषण सजति बिलोकि मृग, मनहुँ किरातिनि फन्द॥२९॥
पुनि कह राउ सुहृदजियजानी * प्रेमपुलकि मृदु मंजुल वानी ॥
भामिनि भयउ तोरमनभावा * घर घर बजत अनन्द बधावा॥
रामहिं देउँ कालि युवराजू * सजहु सुलोचनि मंगलसाजू ॥
दलकिउठी सुनि वचन कठोरा * जनु छुइगयउ पाक बरतोरा ॥
ऐसी पीर विहँसि तेहि गोई * चोर नारि जिमि प्रगट न रोई॥
लखी न भूप कपट चतुराई * कोटि कुटिल मति गुरूपढाई ॥
यद्यपि नीति निपुण नरनाहू * नारिचरित जलनिधि अवगाहू॥
कपट सनेह बढाइ बहोरी *बोली विहँसि नयन मुखमोरी ॥
दोहा–माँगु माँगु पै कहहु पिय, कबहूँ देहु न लेहु ॥
देन कहउ वरदान दुइ, त्यउ पावत सन्देहु ॥ ३० ॥
जान्यउँ मर्म राउ हँसि कहई * तुमहिंकोहावपरमप्रियअहई ॥
थातीराखि न माँग्यउ काऊ * बिसरि गयोममभोरस्वभाऊ ॥
झूठहि दोष हमहिं जनि देहू * दुइके चारि माँगि किन लेहू ॥

१ दारिदीकी । २ देवता । ३ श्रेष्ठजंघावाली । ४ छिपाई । ५ अथाह । ६ भेद

रघुकुल रीति सदा चलि आई * प्राण जाहिँ बरु वचन न जाई ॥
नहिं असत्यसम पातकपुंजा * गिरिसम होहिंकिकोटिकगुंजा ॥
सत्य मूल सब सुकृत सुहाये * वेद पुराण विदित मुनि गाये ॥
त्यहिपर रामशपथ करिआई * सुकृतसनेह अवधि रघुराई ॥
बात दृढाइ कुमति हँसि बोली * कुमति विहंग कुलह जनु खोली ॥
दोहा—भूप मनोरथ सुभग वन, सुख सुविहंग समाज ॥
भिल्लनि जनु छाँड़न चहत, वचन भयंकर बाज ॥ ३१ ॥
सुनहु प्राणपति भावत जीका * देहु एक वर भरतहिं टीका ॥
दूसर वर माँगौं करजोरी * नाथ मनोरथ पुरवहु मोरी ॥
तापस वेष विशेष उदासी * चौदह वर्ष राम वनवासी ॥
सुनि तिय वचन भूप उर शोकू * शशिकरछुवतविकलजिमिकोकू ॥
गये सहमि कछु कहिनहिंआवा * जनुशचानवनझपटचउलावा ॥
विवरणभयउ निपट महिपालू * दामिनि हनेउमनहुतरुतालू ॥
माथे हाथ मूँदि दोउ लोचन * तनुधरि शोचलागुजनुशोचन ॥
मोर मनोरथ सुरतरु फूला * फरतकरिणिजनुहतेउसमूला ॥
अवध उजारि कीन्ह कैकेयी * दीन्हसिअचलविपतिकैनेयी ॥
दोहा—कवने अवसर का भयउ, गयउ नारि विश्वास ॥
योग सिद्ध फल समय जिमि, यतिहि अविद्या नाश ॥ ३२ ॥
इहि विधि राउ मनहिंमन दहई ॥ देखिकुभाँति कुमतिअसकहई ॥
भरत कि राउर पूत न होहीं * आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं ॥
जो सुनि शरसम लाग तुम्हारे * काहे न बोलहु वचन सँभारे ॥
देहु उतर अस कहहु कि नाहीं * सत्यासिन्धु तुम रघुकुलमाहीं ॥
देन कहेउ वर अब जनिदेहू * तजहु सत्य जग अपयश लेहू ॥
सत्य सराहिं कहेउ वर देना * जान्यहु लेइहि माँगि चबेना ॥
शिबिदधीचिबलिजोकछुभाषा * तनु धनतजेउवचनप्रणराखा ॥

× राजाशिवि जब ९९ यज्ञ करचुके और आगे फिर आरंभ किया तब इन्द्रको भय हुआ कि यह आठ यज्ञ कर मेरा पद लेलेंगे यह शोच अग्निको कपोत और आप बाज बन उनके मार-

१ रत्ती । २ मर्यादा । ३ किरण । ४ चकई—चकवा तथा कोकनद कमल । ५ बाज । ६ बटेर । ७ हथिनी ।

अति कटु वचन कहति कैकेयी * मानहुँ लोन जरे पर देयी ॥
दोहा–धर्म धुरन्धर धीर धरि, नयन उघारे राउ ॥
शिर धुनि लीन्ह उसाँस अति, मारेसि मोहिं कुदाउ ॥ ३३ ॥
आगे दीख जरत रिसि भारी * मनहुँ रोष तरवारि उघारी ॥
मूढ कुबुद्धि धार निठुराई * धरि कुबरी जनु सान बनाई ॥
लखेउ महीप कराल कठोरा * सत्य कि जीवन लेइहि मोरा ॥
बोले राउ कठिन करि छाती * वाणी विनय न ताहि सुहाती ॥
मोरे भरत राम दोउ आँखी * सत्य कहौं करि शंकर साखी ॥
प्रियावचन कस कहसि कुभाँती * रीति प्रतीति प्रीति करि घाती ॥
अवशि दूत मैं पठउब प्राता * ऐहैं बेगि सुनत दोउ भ्राता ॥

नेको चला तब वोह भागाहुआ राजाकी शरणमें गया राजाने उसका वचन सुन बाजको देख यज्ञ शालामें अपनी गोदमें छिपालिया और बाजको निवारण किया. बाज बोला महाराज ! आप यह क्या अनर्थ करते हैं कि, मेरा आहार छीनलिया मैं भूखमें शरीरको छोड आपको पापका भागी करूंगा तब राजाने कहा इसे तो नहीं देंगे इसके पलटेमें जो मांगो सो देंगे बहुत झगड़ेके उपरान्त यह बात ठहरी कि, राजा अपने शरीरका मांस कबूतरकी बराबर तौलदे तो मैं कबूतरको छोड़दूं इसबातसे राजा प्रसन्न होय तुलामें एक ओर कबूतरको बैठाय दूसरी ओर अपने शरीरका मांस काटके चढ़ाने लगे जब सब शरीरका मांस काटके चढाय दिया और वोह बराबर न हुआ तो जभी राजा गलेपर खड्ग चलानेको तैयार हुआ तौ त्योंही विष्णुने अपना दर्शन दे कृतार्थ कर मुक्तिदी

* जब वृत्रासुरके कष्टसे इंद्र देवोंके समेत अतिदुःखी होय विष्णुके पास गये तब उन्होंने उत्तर दिया कि, राजर्षि दधीचिजी नैमिषारण्यमें तपस्या करते हैं उनका हाड़ तुम लोग ले आओ तब उस हाड़से शस्त्र बने उससे यह दैत्य पराजय होगा तब इंद्रने सब देवोंके समेत दधीचि ऋषिके पास जाय निवेदन किया तब ऋषिने अपनी अस्थि देवताओंको दे प्रसन्नतासे शरीर छोडा इन्द्रने अस्थि ले वज्र बनाय दैत्योंका पराजय किया ।

× जब राजा बलि त्रिलोकीके अधीश्वर हुये तब इन्द्रव्याकुलहो विष्णुके पास गये तब भगवान्‌ने कहा धीरज धरो तुम्हारा राज्य हम दिलवादेंगे ऐसा कह अदितिसे जन्मले वामनरूप धारणकर राजाबलिके यज्ञमें गये और राजाको वचनबद्धकर तीनचरणपृथ्वी दान माँगी बलिने जल हाथमें ले संकल्प करदी तब वामनजीने विराटरूप धारणकर दोपगमे ब्रह्मलोकपर्यन्त नाप लिया पुनि राजासे कहा अब एक चरण जो शेष रहा सो लाइये राजाने कहा मेरे पीठ नाप लीजिये महाराज इनसे प्रसन्नहो बोले कि, वर मांगो राजा बलिने यही वर मांगा कि, आपका वामन रूप मेरे द्वारपर खडा रहै ।

सुदिनसाधि सब साज सजाई * देहौं भरतहि राज्य बजाई ॥
दोहा–लोभ न रामहिं राज्य कर, बहुत भरत पर प्रीति ॥
मैं बड़ छोट विचार करि, करत रहेउँ नृप नीति ॥ ३४ ॥
राम शपथ शत कहौं स्वभाऊ * राम मातु मोहिं कहा न काऊ ॥
मैं सब कीन्ह तोहिं बिनु पूँछे * तातें परयउ मनोरथ छूँछे ॥
रिसिपरिहरि अब मंगल साजू * कछु दिन गये भरत युवराजू ॥
एकहि बात मोहिं दुख लागा * वर दूसर असमंजस माँगा ॥
अजहूं हृदय दहत त्यहि आँचा * रिसिपरिहासकिसाँचहुसाँचा ॥
कहु तजि रोष राम अपराधू * सब कोउकहत रामसुठिसाधू ॥
तुमहुँ सराहसि करसि सनेहू * अब सुनि मोहिं परम सन्देहू ॥
जासुस्वभाव अरिहु अनुकूला * सोकिमिकरहि मातुप्रतिकूला ॥
दोहा–प्रिया हास्य रिस परिहरहु, माँगु विचारि विवेक ॥
ज्यहि देखौं अब नयन भरि, भरत राज्य अभिषेक ॥ ३५ ॥
जियै मीन वरु वारि विहीना * मणिविनफणिकजियैदुखदीना ॥
कहौं स्वभाव न छल मन माहीं * जीवन मोर राम विनु नाहीं ॥
समुझि देखु तैं प्रिया प्रवीना * जीवन दशरथ राम अधीना ॥
सुनिमृदुवचनकुमतिअतिजरई * मनहुँ अनल आहुतिघृतपरई ॥
कहहु करहु किन कोटि उपाया * इहाँ न लागिहि राउर माया ॥
देहु कि लेहु अयश करि नाहीं * मोहिं न बहु परपंच सोहाहीं ॥
राम साधु तुव साधु सुजाना * राम मातुतुम भलिपहिंचाना ॥
जस कौशला मोर भलताका * तस फल देउँ उन्हैं करिशाका ॥
दोहा–होत प्रात मुनिवेष धरि, जो न राम वन जाहिं ॥
मोर मरण राउर अयश, नृप समुझहु मनमाहिं ॥ ३६ ॥
असकहिकुटिल भई उठि ठाढ़ी * मानहु रोष तरंगिनि बाढ़ी ॥
पाप पहार प्रगट भइ सोई * भरी क्रोध जल जाइ न जोई ॥
दोउ वर कूल कठिन हठ धारा * भँवर कूबरी वचन प्रचारा ॥

१ हँसी। २ शत्रु। ३ सर्प। ४ अग्नि। ५ छलछन्द।

ढहति भूप रूप तरु मूला * चली विपति वारिधि अनुकूला॥
लखी नरेश बात सब साँची * तियमिसु मीचशीशपरनाँची॥
गहि कर विनय कीन्ह बैठारी *जनिदिनकर कुलहोसिकुठारी॥
माँगु माथ अबहीं देउँ तोहीं *राम विरह जनि मारसि मोहीं ॥
राखु रामकहँ ज्यहित्यहिभाँती * नाहितजारिहिजन्म भरिछाती॥
दोहा–देखी व्याधि असाध्यनृप * परयउ धरणि धुनि माथ ॥
कहत परम आरत वचन, राम राम रघुनाथ ॥ ३७ ॥
व्याकुल राउ शिथिलसबगाता *करिणि कल्पतरुमनहुँनिपाता॥
कण्ठ सूख मुख आव नवानी * जिमि पाठीन दीन विनुपानी ॥
पुनि कह कटु कठोर कैकेयी * मर्म पूछि जनु माहुरदेयी ॥
जो अन्तहु अस करतब रहेऊ * माँगुमाँगु केहिके बल कहेऊ ॥
देइ कि होइ इक संग भुआलू * हँसब ठठाइ फुलाउब गालू॥
दानि कहाउब अरु कृपणाई * चाहिय क्षेम कुशल रौताई ॥
छाँड़हु वचन कि धीरज धरहू * जनि अबलाइव करुणा करहू ॥
तनु तिय तनय धाम धन धरणी * सत्यसिंधु कहँ तृणसमबरणी॥
"दीन दान फिर माँगहु राजा * परिहरि लोक वेदकी लाजा" ॥
दोहा–मर्म बचन सुनि राउ कह, कछुक दोष नाहिं तोर ॥
लाग्यउ मोह पिशाच जनु, काल कहावत मोर ॥ ३८ ॥
चहत न भरत भूपपद भोरे * विधि वश कुमति बसी उर तोरे
सो सब मोर पाप परिणामू * कछु न बसाइ भयोविधिवामू ॥
सुबस बसिहिपुनिअवध सुहाई * सब गुण धाम राम प्रभुताई ॥
करिहैं भाइ सकल सेवकाई *होइहै तिहुँपुर राम बड़ाई ॥
तोर कलंक मोर पछिताऊ * मुयउमेटिनाहिं जाइहि काऊ ॥
अब तोहिं नीक लागु कर सोई * लोचनओट बैठु मुखगोई ॥
जौलौं जियौं कहौं कर जोरी * तौलौं जनि कछु कहसिबहोरी॥
फिरि पछितैहसि अन्त अभागी * मारसि गाय नाहरू लागी ॥

१ दुःखितवचन । २ हथिनी । ३ पाटिनामछली । ४ भूलिहुकर । ५ फल । ६ आँखोंकीआड । ७ छिपाके ।

दोहा—पच्छउराउ कहि कोटि विधि, काहे करसि निदान ॥
कपट चतुर नहिं कहति कछु, जागति मनहुँ मशान ॥३९॥
राम राम रटि विकलभुआलू * जनु विनु पंख विहंग विहालू ॥
हृदय मनाव भोर जनि होई * रामहिं जाइ कहै जनि कोई ॥
उदयकरहुजनिरविरविकुलगुरु * अवध विलोकि शूल होइहिउर॥
भूप प्रीति कैकयि निठुराई * उभय अवधि विधि रचीबनाई ॥
विलपत नृपहिभयउभिनुसारा * वीणा वेणु शंख ध्वनि द्वारा ॥
पढ़हिं भाट गुण गावहिं गायक * सुनत नृपहिलागतजनुसायक॥
मंगल कलश सोहाइ न कैसे * सहगामिनी विभूषण जैसे ॥
त्यहि निशि नींद परीनहिं काहू * राम दरश लालसा उछाहू ॥
"कबहिं उदय रविहोहिं विहाना * देखब नयनन कृपानिधाना ॥
गज आरूढ़ राम सिय संगा * शोभातनु शतकोटि अनंगा ॥
करत मनोरथ रैनि सिरानी * प्रात प्रगट जागे मुनिज्ञानी ॥
दोहा—द्वार भीर सेवक सचिव, कहहिं उदय रवि देखि ॥ त्रयोदश
जागे अजहुँ न अवधपति, कारण कवन विशेषि ॥ ४० ॥
पिछले पहर भूप नित जागा * आजुहमहिंबड़अचरजलागा ॥
जाहु सुमन्त जगावहु जाई * कीजिय काज रजायसु पाई ॥
गे सुमन्त नृप मन्दिर माहीं * देखि भयानक जात डराहीं ॥
धाइखाइ जनु जात न हेरा * मानहुँ विपति विषाद बसेरा ॥
पूछत कोउ न उतर कछु देई * गे ज्यहि भवन भूप कैकेयी ॥
कहि जयजीव बैठि शिरनाई * देखि भूप गति गयउ सुखाई ॥
शोक विकल विवरण महि परेऊ * मानहुँ कमल मूल परिहरेऊ ॥
सचिव सभीत सकहि नहिं पूँछी * बोली अशुभ भरी शुभछूँछी ॥
दोहा—परी न राजहिं नींद निशि, मर्म्म जान जगदीश ॥
राम राम रटि भोर किय, हेतु न कहेउ महीश ॥ ४१ ॥
आनहु रामहिं वेगि बुलाई * समाचार तब पूँछहु आई ॥

चल्यउसुमन्त राउरुख जानी * लखी कुचाल कीन्ह कछुरानी ॥
शोच विवश महि परै न पाऊ * रामहिं बोलि कहहिं का राऊ ॥
उर धरि धीरज गयउ दुआरे * पूँछहि सकल देखि मनमारे ॥
समाधान मन कर सबहीका * गये जहाँ दिनकर कुलटीका ॥
राम सुमंतहि आवत देखा * आदर कीन्ह पिता सम लेखा ॥
निरखि वदन कहि भूप रजाई * रघुकुल दीपहि चले लिवाई ॥
राम कुभाँति सचिव सँग जाहीं * देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं ॥
दोहा--जाइ दीख रघुवंशमणि, नरपति निपट कुसाज ॥
सहमि परचउ लखि सिंहनहिं, मनहुँ वृद्धगजराज ॥ ४२ ॥
सूखे अधर जरे सब अंगा * मनहुँ दीन मणिहीन भुजंगा ॥
सरुष समीप देखि कैकेयी * मानहुँ मृत्यु घरी गनि लेई ॥
करुणामय रघुनाथ स्वभाऊ * प्रथम दीख दुख सुना नकाऊ॥
तदपि धीर धरि समय बिचारी * पूँछा मधुर वचन महतारी ॥
मोहिकहमातु तात दुखकारण * करियतनज्यहिहोइ निवारण ॥
सुनहु राम सबकारण एहू * राजाहि तुम पर बहुतसनेहू ॥
देन कह्यउ मोहिं दुइ वरदाना * माँगेउ जो कछुमोहिंसुहाना ॥
सो सुनि भयउ भूप उर सोचू * छाँडि न सकहिंतुम्हारसँकोचू ॥
दोहा--सुत सनेह इत वचन उत, संकट पन्यउ नरेश ॥
सकहु तो आयसु शीश धरि, मेटहु कठिन कलेश ॥ ४३ ॥
निधरक बैठि कहत कटुवानी * सुनत कठिनताअतिअकुलानी॥
जीभकमान वचन शरजाना * मनमहीप मृदुलक्षसमाना ॥
जनु कठोरपन धरे शरीरा * सीख धनुष विद्या वरवीरा ॥
सब प्रसंग रघुपतिहि सुनाई * बैठी जनु तनु धरि निठुराई ॥
मनमुसुकाहिं भानुकुलभानू * राम सहज आनन्द निधानू ॥
बोले वचन विगत सब दूषण * मृदु मंजुल जनुवागविभूषण ॥
सुनुजननी सोइ सुत बड़भागी * जो पितु मातु वचनअनुरागी ॥

१ दुःखित होते हैं। २ बूढ़ाहाथी। ३ ओष्ठ। ४ पिता। ५ निशाना। ६ रहित। ७ निर्मल। ८ सरस्वती। ९ शृंगार

तनय मातु पितु पोषणहारा * दुर्लभ जननी यह संसारा ॥
दोहा–मुनिगण मिलन विशेषवन, सबहिं भाँति भलमोर ॥
तेहि महँ पितु आयसु बहुरि, सम्मत जननी तोर ॥४४॥
भरत प्राणप्रिय पावहिंराजू *विधिसबविधिमोहिंसन्मुखआजू
जो नजाहुँ वन ऐस्यहु काजा * प्रथमगणियमोहिंमूढसमाजा ॥
सेवहिं रंड कल्पतरु त्यागी * परिहरि अमियलेहिंविषमाँगी॥
तेउ न पाइ अससमयचुकाहीं * देखु विचारि मातु मन माहीं ॥
अम्ब एक दुख मोहिं विशेखी * निपट विकल नरनायक देखी॥
थोरी बात पितहिं दुखभारी * होतप्रतीति न मोहिं महतारी ॥
राउ धीर गुण उदधि अगाधू * भामोतें कछु बड अपराधू ॥
ताते मोहिं न कहत कछु राऊ * मोरशपथ तोहिंकहुसतिभाऊ॥
दोहा–सहज सरल रघुवर वचन, कुमति कुटिल करि जान ॥
चलै जोंक जिमि वक्र गति, यद्यपि सलिल समान ॥४५॥
रहसी रानि राम रुख पाई * बोली कपट सनेह जनाई ॥
शपथ तुम्हारि भरतके आना * हेतुन दूसर मैं कछु जाना ॥
तुम अपराध योग नहिं ताता * जननी जनक बन्धुसुखदाता ॥
राम सत्य तुम जो कछु कहहू * तुम पितु मातु वचन रत अहहू॥
पितहि बुझाय कहो बलि सोई * चौथे पन अघ अयश न होई ॥
तुमसम सुवन सुकृत जेहिदीन्हें*उचित न तासु निरादर कीन्हें ॥
लागहिं कुमुख वचन शुभ कैसे* मगह गयादिक तीरथ जैसे ॥
रामहिं मातु वचन सब भाये *जिमिसुरसरिगतसलिलसुहाये॥
दोहा–गै मूर्च्छा रामहिं सुमिरि, नृप फिर करवटलीन्ह ॥
सचिव राम आगमन कहि, विनय समयसमकीन्ह ॥४६॥
जब नृप अकनि राम पगुधारे * धरि धीरज तब नयन उघारे ॥
सचिव सँभारि राउ बैठारे * चरण परत नृप राम निहारे ॥
लिहे सनेह विकल उर लाई * गैमणि फणिकबहुरिजिमिपाई॥

१ अमृत । २ शील, शांति, शूरता, दया, उदारता, वैराग्य, ज्ञान इत्यादिगुणोंके समुद्रहैं । ३ पार्ना । ४ हृदयमें हर्षितभई ।

 ५ सुमंतके वचन

रामहिं फिरै रहैं अरनाहू * चला विलोचन नारि प्रवाहू ॥
शोक विकल कछु करै अपारा * हृदय लगावत बारहिं बारा ॥
विधिहिं मनाव राउ मन माहीं * ज्यहिं रघुनाथनकानन जाहीं ॥
सुमिरिमहेशहिं कहहिं निहोरी * विनती सुनहु सदाशिव मोरी॥
आशुतोष तुम औढर दानी * आरत हरहु दीन जन जानी ॥
दोहा-तुम प्रेरक सबके हृदय, सो मति रामहिं देहु ॥
वचन मोर तजि रहहिं घर, परिहरि शील सनेहु ॥ ४७॥
अयश होउ बरु सुयश नशाऊ * नरक परौं बरु सुरपुर जाऊ ॥
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं * लोचन ओट राम जनि होहीं॥
असमनगुणत राउ नहिं बोला * पीपर पात सरिस मन डोला॥
रघुपति पितहिं प्रेमवश जानी*पुनि कछुकहउमातुअनुमानी ॥
देश काल अवसर अनुसारी * बोले वचन विनीत विचारी ॥
तात कहौं कछु करौं ढिठाई * अनुचितक्षमबजानिलरिकाई॥
अतिलघुबात लागि दुखपावा* काहुन मोहिं कहि प्रथम जनावा
देखि गुसाँइहिं पुछेउँ माता * सुनि प्रसंग भा शीतल गाता ॥
दोहा-मंगल समय सनेह वश, शोच परिहरिय तात ॥
आयसु देइय हर्षि हिय, कहि पुलके प्रभु गात ॥ ४८ ॥
धन्य जन्म जगतीतल तासू * पितहि प्रमोद चरित सुनि जासू॥
चारि पदारथ करतल ताके* प्रिय पितु मातु प्राणसम जाके॥
आयसु पालि जन्म फल पाई * ऐहौं वेगहि होहु रजाई ॥
बिदा मातुसन आवौं माँगी * चलिहौं वनहिंबहुरि पग लागी॥
अस कहि राम गमन तब कीन्हा * भूपशोकवश उतर न दीन्हा ॥
नगर व्यापि गइ बात सुतीछी * छुवत चढ़ी जनु सब तनु बीछी॥
सुनि भये विकल सकल नरनारी*बेलि विटप जनु लागि दवारी ॥
जो जहँ सुनै धुनै शिर सोई * बड़ विषाद नहिं धीरज होई ॥
दोहा-मुख सूखहिं लोचन स्रवहिं, शोक न हृदयसमाय ॥

मानहुँ करुणारस कटक, उतरी अवध बजाय ॥४९॥

भलि बनाइ बिधि बात बिगारी * जहँ तहँ देहिं कैकयिहि गारी ॥
यहि पापिनिहि बूझि का होऊ * छार भवन पर पावक धरेऊ ॥
निजकर नयन काढ़ि चह दीखा * डारि सुधा विष चाहत चीखा ॥
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी * भइ रघुवंश वेणु वन आगी ॥
पल्लव बैठि पेड़ इन काटा * सुखमहँ शोक ठाट इन ठाटा ॥
सदा राम इहि प्राण समाना * कारण कवन कुटिलपन ठाना ॥
सत्य कहहिं कवि नारि स्वभाऊ * सब बिधि अगम अगाधदुराऊ ॥
निज प्रतिबिम्ब मुकुर गहिजाई * जानि न जाइ नारि गति भाई ॥

दोहा—का नहिं पावक जारि सकै, का न समुद्र समाइ ॥
का न करै अबला प्रबल, केहि जग काल न खाइ ॥५०॥

का सुनाइ बिधि काह सुनावा * का दिखाइ चह काह दिखावा ॥
एक कहैं भल भूप न कीन्हा * वरविचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा ॥
जो हठि भयउ सकल दुखभाजन * अबला बिबश ज्ञान गुण गाजनु ॥
एक धर्म परमिति पहिचाने * भूपति दोष नाहिं देहिं सयाने ॥
शिबि दधीचि हरिचन्द कहानी * एक एक सन कहहिं बखानी ॥
एक भरत कर सम्मत कहहीं * एक उदास मौन है रहहीं ॥
कान मूँद कर रद गहि जीहा * एक कहहिं यह बात अलीहा ॥
सुकृत जाइ अस कहत तुम्हारे * भरत राम कहँ प्राणपियारे ॥

* एक समय वसिष्ठजीने विश्वामित्रसे राजा हरिश्चन्द्रकी बड़ाई की कि, रघुवंशमें ऐसा राजा नहीं हुआ सो विश्वामित्रने राजाकी परीक्षाके अर्थ तपबलसे स्वप्नमें राजासे राज्य भंडार सब संकल्प करालिया और प्रातःकाल जायके कहा कि आपने रात्रिको राज्य हमें संकल्प करादिया परन्तु उसकी दक्षिणा दीजिये और राज्य छोड़िये यह सुन राजाने बिनती किया कि महाराज ! मेरेपास कुछ नहीं है इससे यह ऋण रहैगा हम उद्योग करके भरदेवेंगे ऐसा कह स्त्री पुत्रको ले राज्यछोड़ काशीको चले बाटमें विश्वामित्र ब्राह्मणका रूप धरके जो जो शरीरपोषणार्थ किसी उद्योगसे इनको मिले सो भोजनकी वेला अपनेको मांगलेवैं इसप्रकार कष्ट सहते २ राजा काशीमें आये तब विश्वामित्रने कहा महाराज ! मेरी दक्षिणा दीजिये तब राजाने स्त्री पुत्रको एक ब्राह्मणके हाथ बेच डाला

१ अग्नि । २ डार । ३ शीशा । ४ स्त्री । ५ दशन । ६ जिह्वा । ७ मिथ्या । ८ पुण्य ।

दोहा–चन्द्र स्रवै वरु अनल कण, सुधा होइ विष तूल ॥
स्वप्नेहुँ कबहुँ न करहिं कछु, भरत राम प्रतिकूल ॥ ५१ ॥

एक विधातहिं दूषण देहीं * सुधा दिखाइ दीन्ह विष जेहीं ॥
खरभर नगर सोच सबकाहू * दुसह दाह उर मिटा उछाहू ॥
विप्र वधू कुल मान जठेरी * जे प्रिय परम कैकयी केरी ॥
लगीं देन शिख शील सराही * वचन बाण सम लागहिं ताही ॥
भरत न प्रिय मोहिंरामसमाना * सदाकहहु यह सब जग जाना ॥
करहु राम पर सहज सनेहू * केहि अपराध आजु वन देहू ॥
कबहुँ न कीन्ह सवति अवरेऊ * प्रीति प्रतीति जान सब देशू ॥
कौशल्या अब काह बिगारा * तुम ज्यहिलागि वज्र उर मारा ॥

दोहा–सीय कि पिय सँग परिहरिहि, लषण कि रहिहहिं धाम ॥
भरत कि भूजब राजपुर, नृप कि जियहिं विनुराम ॥ ५२ ॥

असविचारि जिय छाँडहुकोहू * शोक कलंक कोठि जनिहोहू ॥
भरतहिं अवशि देहु युवराजू * कानन कौन रामकर काजू ॥
नाहिंन राम राज्यकरभूखे * धर्म धुरीण विषय रस रूखे ॥
गुरुगृह बसहिं रामतजिगेहू * नृपसन असवर दूसर लेहू ॥
रामसरिस सुत कानन योगू * कहाकहहिं सुनि तुमकहँ लोगू ॥
जो न मानिहौ कहे हमारे * नहिं लागिहि कछु हाथतुम्हारे ॥

वोह धनले विश्वामित्रको दिया शेष जो रहा उसके निमित्त आप श्मशानके अधिकारीके यहां अपनेको प्रतिनिधि किया तब उस मशानाधिकारीने राजाहरिश्चन्द्रको मशान घाटपर कर लेनेको नियत किया वहाँ रहके अपने स्वामीका काम धर्मपूर्वक किया करैं फिर विश्वामित्रने राजा हरिश्चन्द्रके पुत्रको सर्प बन डसा तब उस मुर्देको उसकी माता जलानेके लिये मशानघाटपर आई तब राजाने कहा यहाँ जो कर नियतहै सो दोगी तब फूंकने पाओगी तब स्त्री रोकै बोली कि, महाराज! मैं तुम्हारी भार्य्यां हूं और यह पुत्रहै दैवकी विपरीततासे इसदशाको प्राप्तहूईहूं अब मेरे पास एक कौड़ीभी नहीं हम कहां से देवैं इस बातको सुन राजा हरिश्चन्द्रने कहामैं धर्मका निरादर नहीं करूंगा इससे विना करदिये फूंकने नहीं पावोगी तब रानी दुःखितहो अपने तनुका वस्त्र उतारनेके लिये हाथ बढ़ाने लगी कि त्रिलोकी कांप गई इतनेमें देवताओं सहित विष्णुभगवान् आगये और कुँवर रोहिताश्वको जिवाय अयोध्याके राज्यपर पुनः स्थापित किया अन्तमें सबको मुक्तिदी ॥

१ पीडा। २ राज्यकरहिंगे अर्थात् न करहिंगे। ३ क्रोध। ४ मिटा। ५ उदमें। ६ धर्मकीध्वजाको धारण करनेवाले।

जो परिहास कीन्ह कछु होई * तौ कहि प्रगट जनावहु सोई ॥
उठहु वेगि सोइ करहु उपाई * जेहि विधि शोककलंकनशाई ॥
छंद–ज्यहिभाँति शोक कलंकजाइ उपायकरि कुल पालहू ॥
हठि फेरि रामहिं जातवन जनि बात दूसरि चालहू ॥
जिमिभानुबिनदिनप्राणबिनतनचंद्रबिनाजिमियामिनी ॥
तिमिअवधतुलसीदासप्रभुबिनसमुझुरी जियभामिनी ॥२॥
सो०–सखिनसिखावनदीन्ह, सुनत मधुर परिणाम हित ॥
तेइँकछुकानन कीन्ह, कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥ २ ॥
उतर न देइ दुसह रिसरूखी *मृगिहिंचितवजनुबाघिनिभूखी॥
व्याधिअसाधिजानितिनत्यागी * चलींकहतिमतिमन्दअभागी ॥
राज्य करत इहि दैव बिगोई * कीन्ह्यसि असजसकरैनकोई ॥
इहिविधिविलपहिं पुरनरनारी * देहिं कुचालिहि कोटिक गारी॥
जरहिं विषम ज्वर लेहिंउसाँसा* कवनराम बिनु जीवन आसा ॥
विपुल वियोग प्रजा अकुलानी * जिमिजलचरगण सूखतपानी॥
अति विषाद वश लोग लुगाई * गये मातु पहँ रामगुसाँई ॥
मुख प्रसन्न चित चौगुण चाऊ * हृदयशोच जनि राखहिं राऊ ॥
दोहा–नव गयन्द[2] रघुवंशमणि, राज अलान[3] समान ॥
छूटि जान वन गमन सुनि, उर आनँद अधिकान ॥ ५२ ॥
रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाथा * मुदित मातु पद नायउ माथा॥
दीन्ह अशीश लाइ उर लीन्हें * भूषण वसन निछावर कीन्हें ॥
बार बार मुख चुंबति माता * नयन नेह जल पुलकित गाता॥
गोद राखि पुनि हृदय लगाये * स्रवत प्रेम रस पयद सुहाये ॥
प्रेम प्रमोद न कछु कहिजाई * रंक धनद पदवी जनु पाई ॥
सादर सुन्दर बदन निहारी * बोली मधुर वचन महतारी ॥
कहहु तात जननी बलिहारी * कबहिं लग्न मुद मंगलकारी ॥
सुकृत[5] शील सुखसीव[6] सुहाई * जन्म लाभ लहिं अवध अघाई॥

१ हँसी। २ नवीनहाथीसम। ३ पैरकीबेड़ी। ४ रत्न। ५ पुण्य। ६ सुखकीमर्यादा।

दोहा–ज्याहि चाहत नर नारि सब, अति आरत इहिभाँति ॥
जिमि चातकि चातक तृषित, वृष्टिशरद्ऋतु स्वाति ॥५४॥

तात जाउँ बलि वेगि अन्हाहू * जो मन भाव मधुर कछुखाहू ॥
पितु समीप तब जायहु भैया * भइ बड़ि बार जाय बलिमैया ॥
मातु वचन सुनि अतिअनुकूला * जनु सनेह सुरतरुके फूला ॥
सुखमकरन्द भरे श्रीमूला * निरखि राममनभँवर न भूला ॥
धर्मधुरीण धर्म्मगति जानी * कहेउ मातुसनअतिमृदुवानी ॥
पिता दीन्ह मोहिं कानन राजू * जहँ सब भाँति मोर बडकाजू ॥
आयसु देहु मुदित मन माता * ज्याहि मुद मंगलकाननजाता ॥
जनि सनेह वश डरपसि भोरे * आनँद मातु अनुग्रहं तोरे ॥

दोहा–वर्ष चारिदश विपिन वासि, करि पितुवचनप्रमान ॥
आय पाँय पुनि देखिहौं, मन जनि करसिमलान ॥५५॥

वचन विनीत मधुर रघुवरके * शर समलाग मातु उरकरके ॥
सहमि सूखि सुनि शीतल वानी * जिमि जवास पर पावस पानी ॥
कहि न जाय कछु हृदय विषादू * जनु सहमे करि केहरि नादू ॥
नयन सलिल तनु थरथर काँपी * माँजा मनहुँ मीन कहँ व्यापी ॥
धरि धीरज सुतवदन निहारी * गद्गद वचन कहति महतारी ॥
तात पितहिं तुम प्राणपियारे * देखिमुदितनित चरिततुम्हारे ॥
राज्य देन कहँ शुभ दिन साधा * कह्यउ जाय वन केहिअपराधा ॥
तात सुनावहु मोहिं निदानू * को दिनकरकुल भयउ कृशानू ॥

दोहा–निरखि राम रुख सचिव सुत, कारण कहेउ बुझाइ ॥
सुनि प्रसंग रहि मूक गति, दशा वरणि नहिं जाइ ॥ ५६ ॥

राखि न सकहिं न कहिसकजाहू * दुहूँ भाँति उर दारुण दाहू ॥
लिखत सुधाकर लिखिगा राहू * विधि गतिवाम सदासबकाहू ॥
धर्म्म सनेह उभयमति घेरी * भइ गति साँप छछुंदरि केरी ॥
राखौं सुतहि होइ अनुरोधू * धर्म्म जाइ अरु बन्धु विरोधू ॥

१ सम्पदाकीमूल । २ कृपा । ३ वन । ४ हाथी । ५ सिंह । ६ कारण ।

कहौं जान वन तौ बड़ि हानी * संकट सोच विकल भइ रानी ॥
बहुरि समुझि तियधर्मसयानी * राम भरत दोउ सुत सम जानी ॥
सरल स्वभाव राम महतारी * बोली वचन धीर धरि भारी ॥
तात जाउँ बलि कीन्हेउ नीका * पितुआयसु सब धर्म्मकटीका ॥
दोहा–राज्य देन कह दीन्ह वन, मोहिं न दुख लवलेश ॥
तुम बिन भरतहि भूपतिहि, प्रजहिं प्रचण्ड कलेश ॥ ५७ ॥
जो केवल पितु आयसु ताता * तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ॥
जो पितु मातु कहेउ वन जाना * तौ कानन शत अवध समाना ॥
पितु वन देव मातु वनदेवी * खग मृग चरण सरोरुह सेवी ॥
अन्तहु उचित नृपहिं वनवासू * वय विलोकि हिय होत हरासू ॥
बड़भागी वन अवध अभागी * जो रघुवंश तिलक तुम त्यागी ॥
जो सुत कहौं संग मोहिं लेहू * तुम्हरे हृदय होइ संदेहू ॥
पुत्र परमप्रिय तुम सबहीके * प्राण प्राणके जीवन जीके ॥
ते तुम कहहु मातु वन जाऊं * मैं सुनि वचन बैठि पछिताऊं ॥
दोहा–यह विचारि नहिं करउँ हठ, झूठ सनेह बढ़ाइ ॥
मानि मातुके नात बलि, सुरति बिसरि जनि जाइ ॥ ५८ ॥

अथ क्षेपक ।

शुक्र सोम रवि धनद यमादिक * रक्षा करहिं तुम्हारि अनादिक ॥
राम दण्डकारण्य निवासी * तुमहिं देहिं ये सब सुखरासी ॥
अग्नि वायु अरु धूम पुनीता * ऋषिमुखच्युतसबमंत्रविनीता ॥
तुमहिं आचमन करत सदाहीं * रक्षा करहिं राम बलि जाहीं ॥
सर्व लोक प्रभु सब जगकारी * विधि ऋषिगणसबजेअसुरारी ॥
वनवासी रघुनंदन तोहीं * पालहिं कृपा करहिं यह मोहीं ॥
ऋतुसागर श्रुति द्विपरु लोका * दिशाआदितुमकाहिंविशोका ॥
करहिं राम अरु नानामंगल * देहिं बहुरि तव मिटहिंअमंगल ॥
यह कहि सुत शिर अक्षत शेषा * जननी कारि कीन्हों शुभ वेषा ॥

१ दुःश शोच ।

चंदनादि सब गंध लगाये * राम माथमहँअति मन भाये ॥
दोहा–बाँध ओषधी भुजनमें, देवी देव मनाय ॥
विदा किये रघुवंश मणि, दशा कही नहिं जाय ॥
इति क्षेपक।

देव पितर सब तुमहिं गुसाँई * राखहिं नयन पलककी नाई ॥
अवधि अम्बु प्रिय परिजनमीना * तुम करुणाकर धर्मधुरीना ॥
असविचारि सोइ करहु उपाई * सबहिं जियत जेहि भेटहुआई ॥
जाहु सुखेन वनहिं बलि जाऊं * करि अनाथ जन परिजनगाऊं॥
सबकर आजु सुकृत फल बीता * भये कराल काल विपरीता ॥
बहु विधिविलपिचरणलपटानी * परम अभागिनि आपुहिजानी॥
दारुण दुसह दाह उर व्यापा * बरणि नजाइ विलाप कलापा ॥
राम उठाइ मातु उर लावा * कहिमृदुवचनबहुतसमुझावा ॥
दोहा–समाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाय ॥
जाइ सासु पग कमल युग, वन्दि बैठि शिरनाय ॥ ५९ ॥
दीन्ह अशीश सासु मृदुवानी *अति सुकुमारि देखिअकुलानी॥
बैठि नमित मुख शोचति सीता * रूपराशि पति प्रेम पुनीता ॥
चलन चहत वन जीवननाथा * कवन सुकृतसन होइहिंसाथा ॥
की तनु प्राण कि केवल प्राणा * विधि करतबकछुजातनजाना ॥
चारु चरण नख लेखति धरणी * नूपुर मुखर मधुर कवि बरणी॥
मनहुँ प्रेम वश विनती करहीं * हमहिंसीयपदजनिपरिहरहीं॥
मंजु विलोचन मोचति वारी * बोली देखि राम महतारी ॥
तात सुनहु सियअतिसुकुमारी * सासुश्वशुर परिजनहिपियारी॥
दोहा–पिता जनक भूपाल मणि, श्वशुर भानुकुल भान ॥
पति रविकुलकैरवविपिन, विधु गुण रूप निधान ॥६०॥
मैं पुनि पुत्रवधू प्रिय पाई * रूपराशि गुण शील सुहाई ॥
नयनपुतरि इव प्रीति बढाई * राखहुँ प्राण जानकिहिं लाई ॥

१ अवधि जो चौदह बर्षकी सोई पानी। २ और प्रियबन्धु मछलीहैं। ३ कुटुंब। ४ पायल।

कल्पबेलि जिमि बहुविधि लाली * सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली ॥
फूलत फलत भयउ विधि वामा * जानि न जाइ काह परिनामा ॥
पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा * सिय न दीन पग अवनि कठोरा ॥
जिवनमूरि जिमि जुगवति रहेऊँ * दीप वाति नहिं टारन कहेऊँ ॥
सो सिय चहति चलन वन साथा * आयसु काह होय रघुनाथा ॥
चन्द्रकिरण रस रसिक चकोरी * रविरुख नयन सकै किमि जोरी ॥
दोहा—करि केहरि निशिचर चरहिं, दुष्ट जंतु वन भूरि ॥
विषवाटिका कि सोह सुत, सुभग सजीवन मूरि ॥ ६१ ॥
वन हित कोल किरातकिशोरी * रची विरंचि विषयरस भोरी ॥
पाहनकृमि जिमि कठिन स्वभाऊ * तिनहिं कलेश न कानन काऊ ॥
की तापस तिय कानन योगू * जिन तप हेतु तजा सब भोगू ॥
सिय वन वसिहि तात केहि भाँती * चित्र लिखित कपि देखि डराती ॥
सुरसरि सुभग वनज वनचारी * डाबर योग कि हंसकुमारी ॥
अस विचारि जस आयसु होई * मैं शिख देउँ जानकिहि सोई ॥
जो सिय भवन रहै कह अम्बा * मो कहँ होय प्राण अवलम्बा ॥
सुनि रघुवीर मातु प्रिय वानी * शील सनेह सुधा जनु सानी ॥
दोहा—कहि प्रियवचन विवेकमय, कीन्ह मातु परितोष ॥
लगे प्रबोधन जानकिहि, प्रगट विपिन गुणदोष ॥ ६२ ॥
मातु समीप कहत सकुचाहीं * बोले समय समुझि मनमाहीं ॥
राजकुमारि शिखावन सुनहू * आनभाँति जिय जनि कछु धरहू ॥
आपन मोर नीक जो चहहू * वचन हमार मानि घर रहहू ॥
आयसु मोर सासु सेवकाई * सब विधि भामिनि भवन भलाई ॥
यहि ते अधिक धर्म नहिं दूजा * सादर सासु श्वशुर पदपूजा ॥
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी * होइहि प्रेमविकल मति भोरी ॥
तब तब तुव कहि कथा पुरानी * सुन्दरि समुझायहु मृदुबानी ॥
कहौं स्वभाव शपथ शत मोहीं * सुमुखि मातुहित राखौं तोहीं ॥

१ पुत्री किन्तु षोडश वर्षकी आयु । २ अज्ञान । ३ पत्थरके कीडे ।

दोहा-गुरु श्रुति सम्मत धर्म्म फल, पाइय बिनहिं कलेश ॥
हठ वश सब संकट सहे, गालव नहुष नरेश ॥ ६३ ॥

मैं पुनि करि प्रमाण पितुवानी * वेगिफिरब सुनु सुमुखिसयानी॥
दिवस जात नहिं लागिहि बारा * सुन्दरि शिखवनसुनहुहमारा ॥
जो हठ करहु प्रेमवश बामा * तौ तुम दुख पाउब परिणामा ॥
कानन कठिन भयंकर भारी * घोर घाम हिम वारि बयारी ॥
कुशकंटक मग कंकर नाना * चलब पयादेहि विनुपदत्रांना ॥
चरण कमल मृदुमंजु तुम्हारे * मारग अगम भूमिधर भारे ॥
कन्दर खोह नदी नद नारे * अगम अगाध न जाहिं निहारे ॥
भालु बाघ वृक केहरि नागा * करहिंनाद सुनि धीरज भागा ॥

दोहा-भूमिशयन वल्कल बसन, अशन कंद फल मूल ॥
तेकिसदा सबदिन मिलहिं, समय समय अनुकूल ॥ ६४ ॥

नर अहार रजनीचर करहीं * कपट वेष वन कोटिन धरहीं ॥
लागै अति पहारकर पानी * विपिनविपतिनहिंजातबखानी॥
व्यालकराल विहँग वन घोरा * निशिचर निकरनारिनरचोरा॥
डरपहिं धीर गहन सुधि आये * मृगलोचनितुम भीरुस्वभाये ॥
हंसगमनि तुम नहिं वन योगू * सुनि अपयश देहहिं मोहिंलोगू॥
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली * जियकी लवनपयोधिमराली ॥

* गालवऋषिने जब विद्यापढ विश्वामित्रसे कहा कि दक्षिणामाँगो तब विश्वामित्र बोले कि,दक्षिणा न लेंगे इसपर गालवने प्रत्युत्तर कर हठ किया तब विश्वामित्रने इनको हठीजान सहस्र श्यामकर्ण घोडे मांगे। यह सुन गालवऋषि घोड़ेकी खोजमें चले ढूंढते २ तीन राजाओंके यहाँ दो दो सौ घोडे मिले परन्तु उन राजाओंने कहा कि हमारे पुत्र नहीं हैं इससे पुत्रके पलटेमें घोडा देंगे फिर गालवने ययाति राजाके पास जाय एक कन्यामांगी उस कन्याको वर था कि,चाहै जिस्से पुत्र उत्पन्न करले परन्तु वह काँरीही बनीरहै वह कन्या लेजाय तीनों राजाओंको पुत्र उत्पन्न कराय छः सौ घोडे लैके शेषके लिये निराशहो विश्वामित्रके पास जाय निवेदन किया. तब विश्वामित्रने दोसौ घोडेकी कीमत एक पुत्र जान उस कन्यामें दो पुत्र उत्पन्न किये और छः सौ घोडे ले गालवको आशीर्वाद दे बिदा किया ॥

१ अंत। २ जूती। ३ रीछ। ४ भेडिये। ५ सर्प-हाथी। ६ भोजपत्र। ७ भोजन। ८ राक्षस। ९ लवणसमुद्र।

नव रसाल बनविहरण शीला * सोहकिकोकिलबिपिनकरीला॥
रहहु भवनअस हृदय विचारी *चन्द्रवदनि दुख कानन भारी॥
दोहा–सहज सुहृद गुरु स्वामि शिख, जो न करै शिरमानि ॥
सो पछिताइ अघाइ उर, अवशि होइ हितहानि ॥ ६५ ॥
सुनि मृदुवचन मनोहर पियके *लोचननलिन भरे जल सियके॥
शीतल शिख दाहक भइ कैसे * चकइहि शरद चाँदनी जैसे ॥
उतर न आव विकल वैदेही * तजन चहत मोहिं परमसनेही॥
वर वश रोकि विलोचन वारी * धरि धीरज उर अवनिकुमारी ॥
लागि सासुपद कह कर जोरी * क्षमब मातु बड़ अविनयमोरी ॥
दीन प्राणपति मोहिंशिख सोई * जेहिविधि मोर परमहित होई॥
मैं पुनि समुझि दीख मनमाहीं * पियवियोग सम दुखजगनाहीं॥
यहिविधिसिय सासुहिसमुझाई * कहतिपतिहिवरविनयसुनाई ॥
दोहा–प्राणनाथ करुणायतन, सुन्दर सुखद सुजान ॥
तुमविनु रघुकुल कुमुदविधु, सुरपुर नरक समान ॥ ६६ ॥
मातु पिता भगिनी प्रिय भाई * प्रिय परिवार सुहृद समुदाई ॥
सासु श्वशुर गुरु सुजन सहाई * सुठि सुन्दर सुशील सुखदाई ॥
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते * प्रिय विनु तियहितरणिते ताते॥
तन धन धाम धरणि पुरराजू * पतिविहीन सब शोक समाजू ॥
भोग रोग सम भूषण भारू * यमयातना सरिस संसारू ॥
प्राणनाथ तुम विनु जग माहीं * मोकहँ सुखदकतहुँकोउनाहीं॥
जिय विन देह नदी विन वारी * तैसहिनाथ पुरुष बिन नारी ॥
नाथ सकल सुखसाथ तुम्हारे * शरद विमल विधु वदन निहारे॥
दोहा–खग मृग परिजन नगर बन, बल्कल वसन दुकूल ॥
नाथ साथ सुर सदन सम, पर्णशाल सुखमूल ॥ ६७॥
वनदेवी वनदेव उदारा * करिहैं सासु श्वशुर सम सारा॥

जब शरीरको त्याग जीव धर्मराजके पास जाताहै तो विनदेह दुःख सुख कौन भोगे इसलिये अंगुष्ठ प्रमाण शरीर धर्मराजके यहाँ तयार रहताहै उसीकों "यमयातना" कहते हैं।

कुश किसलय साथरी सुहाई * प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ॥
कन्द मूल फल अमिय अहारू * अवधसौधसतसरिस पहारू ॥
क्षणक्षणप्रभुपदकमल बिलोकी * रहिहौंमुदितदिवसजिमिकोकी ॥
बन दुख नाथ कहेउ बहुतेरे * भय बिषाद परिताप घनेरे ॥
प्रभु बियोग लवलेश समाना * सबमिलि होहिं न कृपानिधाना ॥
असजियजानिसुजानशिरोमणि * लेइय सँग मोहि छाँड़िय जनि ॥
बिनती बहुत करौं का स्वामी * करुणामय उर अन्तर्यामी ॥
दोहा—राखिय अवध जो अवधि लगि, रहत न जानिय प्रान ॥
दीनबन्धु सुन्दर सुखद, शील सनेह निधान ॥ ६८ ॥
मोहि मग चलत न होइहि हारी * क्षण क्षण चरणसरोज निहारी ॥
सबहिं भाँति पिय सेवा करिहौं * मारगजनितसकलश्रमहरिहौं ॥
पाँव पखारि बैठि तरु छाहीं * करिहौं बाउ मुदित मनमाहीं ॥
श्रमकण सहित श्याम तनु देखे * का दुख समय प्राणपति पेखे ॥
सम महि तृण तरु पल्लव डासी * पाँय पलोटिहि सब निशि दासी ॥
बार बार मृदु मूरति जोही * लागिहि ताप बयारि न मोही ॥
को प्रभु सँग मोहिं चितवनहारा * सिंहवधुहिं जिमि शशक सियारा ॥
मैं सुकुमारि नाथ बन योगू * तुमहिं उचित तप मोकहँ भोगू ॥
दोहा—ऐसहु वचन कठोर सुनि, जो न हृदय बिलगान ॥
तो प्रभु विषमवियोगदुख, सहिहैं पामर प्रान ॥६९॥
असकहिसीय विकलभइभारी * वचन वियोग न सकी सँभारी ॥
देखि दशा रघुपति जिय जाना * हठराखे राखिहि नहिं प्राना ॥
कहेउ कृपालु भानुकुल नाथा * परिहरिशोच चलहुवनसाथा ॥
नाहिं विषादकर अवसर आजू * वेगि करहु वन गमन समाजू ॥
कहिप्रियवचनप्रियहि समुझाई * लगे मातु पद आशिष पाई ॥
वेगि प्रजा दुख मेटहु आई * जननी निठुर बिसरिजनिजाई ॥
फिरिहिदशाविधिबहुरिकिमोरी * देखिहौं नयन मनोहर जोरी ॥

सुदिन सुघरी तात कब होई * जननी जियत बदन बिधु जोई ॥
दोहा—बहुरि बच्छ कहि लाल कहि, रघुपति रघुबर तात ॥
कबहिं बुलाय लगाय उर, हरषि निरखिहौं गात ॥ ७० ॥
लखि सनेह कातरि महतारी * बचन न आव बिकल भइ भारी ॥
राम प्रबोध कीन्ह बिधि नाना * समय सनेह न जाइ बखाना ॥
तब जानकी सासु पग लागी * सुनिय मातु मैं परम अभागी ॥
सेवा समय दैव बन दीन्हा * मोर मनोरथ सफल न कीन्हा ॥
तजब छोभ जनि छाँड़िय छोहू * कर्म्म कठिन कछु दोष न मोहू ॥
सुनि सिय बचन सासु अकुलानी * दशा कवन बिधि कहौं बखानी ॥
बारहिंबार लाइ उर लीन्ही * धरि धीरज शिष आशिष दीन्ही ॥
अचल होउ अहिवात तुम्हारा * जबलगि गंग यमुन जलधारा ॥
दोहा—सीतहिं सासु अशीष शिख, दीन्ह अनेक प्रकार ॥
चली नाइ पदपद्म शिर, अति हित बारहिंबार ॥ ७१ ॥
समाचार जब लक्ष्मण पाये * व्याकुल बिलखि बदन उठि धाये ॥
कम्प पुलक तनु नयन सनीरा * गहे चरण अति प्रेम अधीरा ॥
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े * मीन दीन जनु जलते काढ़े ॥
शोच हृदय बिधिका होनिहारा * सब सुख सुकृत सिरान हमारा ॥
मोकहँ काह कहब रघुनाथा * राखिहैं भवन कि लेहहिं साथा ॥
राम बिलोकि बन्धु कर जोरे * देह गेह सब तृण सम तोरे ॥
बोले बचन राम नयनागर * शील सनेह सरल सुखसागर ॥
तात प्रेमवश जनि कदराहू * समुझि हृदय परिणाम उछाहू ॥
दोहा—मातु पिता गुरु स्वामि शिख, शिरधरि करहिं सुभाय ॥
लहेउ लाभ तिन जन्मके, नतरु जन्म जग जाय ॥ ७२ ॥
अस जिय जानि सुनहु शिखभाई * करो मातु पितु पद सेवकाई ॥
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं * राउ वृद्ध मम दुख मन माहीं ॥
मैं बन जाउँ तुमहिं लै साथा * होइहि सबबिधि अवध अनाथा ॥

गुरु पितु मातु प्रजा परिवारा * सबकहँ परै दुसह दुख भारा ॥
रहहु करहु सब कर परितोषू * नतरु तात होइहि बड़ दोषू ॥
जासु राज्य प्रिय प्रजा दुखारी * सोनृप अवशिनरकअधिकारी ॥
रहहु तात असनीति विचारी * सुनतलषण भये व्याकुलभारी ॥
सियरे वचन सूखि गे कैसे * परसत तुहिन तामरस जैसे ॥
दोहा–उतर न आवत प्रेमवश, गहे चरण अकुलाइ ॥
नाथ दास मैं स्वामि तुम, तजहु तौ कहा बसाइ ॥ ७३ ॥
दीन्ह मोहिं शिख नीक गुसाँई * लागत अगम अपनि कदराई ॥
नरवर धीर धर्म्मधुर धारी * निगम नीतिके ते अधिकारी ॥
मैं शिशु प्रभु सनेह प्रतिपाला * मन्दर मेरु कि लेइँ मराला ॥
गुरु पितु मातु न जानों काहू * कहौं स्वभाव नाथ पतियाहू ॥
जहँ लगि जगत सनेह सगाई * प्रीति प्रतीति निगम निजगाई ॥
मोरे सबै एक तुम स्वामी * दीनबन्धु उर अन्तर्यामी ॥
धर्म नीति उपदेशिय ताही * कीरति भूति सुगति प्रियजाही ॥
मन क्रम वचन चरणरति होई * कृपासिन्धु परिहरिय किसोई ॥
दोहा–करुणासिन्धु सुबन्धुके, सुनि मृदुवचन विनीत ॥
समुझाये उर लाइ प्रभु, जानि सनेह सभीत ॥ ७४ ॥
माँगहु बिदा मातु सन जाई * आवहु वेगि चलहु वन भाई ॥
मुदित भये सुनि रघुवरवानी * भयउ लाभबड़ मिटी गलानी ॥
हर्षित हृदय मातु पहँ आये * मनहुँ अन्ध फिरि लोचनपाये ॥
जाइ जननिपद नायउ माथा * मन रघुनंदन जानकि साथा ॥
पूँछेउ मातु मलिन मन देखी * लषणकहेउ सब कथाविशेषी ॥
गई सहमि सुनि वचन कठोरा * मृगी देखि जनु दव चहुँओरा ॥
लषण लखेउ भा अनरथ आजू * ये सनेह वश करब अकाजू ॥
माँगत बिदा समय सकुचाहीं * जानसंग विधि कहहिं कि नाहीं ॥
दोहा–समुझि सुमित्रा रामसिय, रूप सुशील स्वभाव ॥

१ सेवा । २ ठंढे । ३ पाला । ४ कमल । ५ श्रेष्ठ । ६ मन्दराचल पर्वत इत्यादि । ७ हंस । ८ सम्पदा ।

नृपसनेह लखि धुनेउ शिर, पापिन दीन्ह ५ दाँव ॥ ७५ ॥
धीरज धरेउ कुअवसर जानी * सहज सुहृद बोली मृदुवानी ॥
तात तुम्हार मातु वैदेही * पिता राम सब भाँति सनेही ॥
अवध तहाँ जहँ रामनिवासू * तहाँ दिवस जहँ भानु प्रकाशू ॥
जोपै राम सीय वन जाहीं * अवध तुम्हार काज कछु नाहीं ॥
गुरु पितु मातु बन्धु सुरसाईं * सेइय सकल प्राणकी नाईं ॥
राम प्राण प्रिय जीवन जीके * स्वारथ रहित सखा सबहीके ॥
पूजनीय प्रिय परम जहाँते * मानिह सकल रामके नाते ॥
अस जिय जानि संग वन जाहू * लेहु तात जग जीवन लाहू ॥
दोहा–भूरिभाग्य भाजन भयउ, मोहिं समेत बलिजाउँ ॥
जो तुम्हरे मन छाँड़ि छल, कीन्ह राम पद ठाउँ ॥ ७६ ॥
पुत्रवती युवती जग सोई * रघुवर भक्त जासु सुत होई ॥
नतरु बाँझ भलि वादिबियानी * रामविमुख सुतते हितहानी ॥
तुम्हरेहि भाग्य राम वन जाहीं * दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥
सकल सुकृतकरफल सुत येहू * राम सीय पदसहज सनेहू ॥
राग रोष ईर्षा मद मोहू * जनि स्वप्नेहु इनके वश होहू ॥
सकल प्रकार विकार विहाई * मन क्रम वचन करेउ सेवकाई
तुम कहँ वन सब भाँति सुपासू * सँग पितु मातु राम सियजासू ॥
ज्यहि न राम वन लहहिं कलेशू * सुत सोइकरेउ मोर उपदेशू ॥
छंद–उपदेश यहि जेहि तात तुम ते राम सिय सुख पावहीं ॥
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति वन बिसरावहीं ॥
तुलसी सुतहि शिख देइ आयसु देइ पुनि आशिष दई ॥
रति होउ अविरलअमल सिय रघुवीर पद नित नित नई ३॥
सो०–मातुचरण शिरनाइ, चले तुरत शंकित हिये ॥
वागुरि विषम तुराइ, मनहुँ भागु मृग भाग वश॥ ३ ॥
गये लषण जहँ जानकिनाथा * भे मन मुदितपाइ प्रिय साथा॥

१ भीति । २ अचल । ३ निर्मल । ४ जाल । ५ हरिण ।

गुरु पितु मातु प्रजा परिवारा * सबकहँ परै दुसह दुख भारा ॥
रहहु करहु सब कर परितोषू * नतरु तात होइहि बड़ दोषू ॥
जासु राज्य प्रिय प्रजा दुखारी * सोनृप अवशिनरकअधिकारी ॥
रहहु तात असनीति विचारी * सुनतलषण भये व्याकुलभारी॥
सियरे वचन सूखि गे कैसे * परसत तुहिन तामरस जैसे ॥
दोहा—उतर न आवत प्रेमवश, गहे चरण अकुलाइ ॥
नाथ दास मैं स्वामि तुम, तजहु तौ कहा बसाइ ॥ ७३ ॥
दीन्ह मोहिं सिख नीकि गुसाँई * लागत अगम अपनि कदराई ॥
नरवर धीर धर्म्मधुर धारी * निगम नीतिके ते अधिकारी ॥
मैं शिशु प्रभु सनेह प्रतिपाला * मन्दर मेरु कि लेइँ मराला ॥
गुरु पितु मातु न जानों काहू * कहौं स्वभाव नाथ पतियाहू ॥
जहँ लगि जगत सनेह सगाई * प्रीति प्रतीति निगम निजगाई॥
मोरे सबै एक तुम स्वामी * दीनबन्धु उर अन्तर्यामी ॥
धर्म नीति उपदेशिय ताही * कीरति भूति सुगति प्रियजाही॥
मन क्रम वचन चरणरति होई * कृपासिन्धु परिहरिय किसोई ॥
दोहा—करुणासिन्धु सुबन्धुके, सुनि मृदुवचन विनीत ॥
समुझाये उर लाइ प्रभु, जानि सनेह सभीत ॥ ७४ ॥
माँगहु विदा मातु सन जाई * आवहु वेगि चलहु वन भाई ॥
मुदित भये सुनि रघुवरवानी * भयउ लाभवड़ मिटी गलानी ॥
हर्षित हृदय मातु पहँ आये * मनहुँ अन्ध फिरि लोचनपाये ॥
जाइ जननिपद नायउ माथा * मन रघुनंदन जानकि साथा ॥
पूँछेउ मातु मलिन मन देखी * लषणकहेउ सब कथाविशेषी ॥
गई सहमि सुनि वचन कठोरा * मृगी देखि जनु दव चहुँओरा ॥
लषण लखेउ भा अनरथ आजू * ये सनेह वश करब अकाजू ॥
माँगत विदा समय सकुचाहीं * जानसंग विधि कहहिं कि नाहीं॥
दोहा—समुझि सुमित्रा रामसिय, रूप सुशील स्वभाव ॥

१ सेवा । २ ठंडे । ३ पाला । ४ कमल । ५ श्रेष्ठ । ६ मन्दराचल पर्वत इत्यादि । ७ हंस । ८ सम्पदा ।

नृपसनेह लखि धुनेउ शिर, पापिन दीन्ह कुदाँव ॥ ७५ ॥
धीरज धरेउ कुअवसर जानी * सहज सुहृद बोली मृदुबानी ॥
तात तुम्हार मातु बैदेही * पिता राम सब भाँति सनेही ॥
अवध तहाँ जहँ रामनिवासू * तहाँ दिवस जहँ भानु प्रकाशू ॥
जोपै राम सीय बन जाहीं * अवध तुम्हार काज कछु नाहीं ॥
गुरु पितु मातु बन्धु सुरसाईं * सेइय सकल प्राणकी नाईं ॥
राम प्राण प्रिय जीवन जीके * स्वारथ रहित सखा सबहीके ॥
पूजनीय प्रिय परम जहाँते * मानिह सकल रामके नाते ॥
अस जिय जानि संग बन जाहू * लेहु तात जग जीवन लाहू ॥
दोहा–भूरिभाग्य भाजन भयउ, मोहिं समेत बलिजाउँ ॥
जो तुम्हरे मन छाँड़ि छल, कीन्ह राम पद ठाउँ ॥ ७६ ॥
पुत्रवती युवती जग सोई * रघुवर भक्त जासु सुत होई ॥
नतरु बाँझ भलि वादिबियानी * रामविमुख सुतते हितहानी ॥
तुम्हरेहि भाग्य राम बन जाहीं * दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥
सकल सुकृतकरफल सुत येहू * राम सीय पदसहज सनेहू ॥
राग रोष ईर्षा मद मोहू * जानि स्वप्नेहु इनके वश होहू ॥
सकल प्रकार विकार विहाई * मन क्रम वचन करेउसेवकाई
तुम कहँ बन सब भाँति सुपासू * सँग पितु मातु राम सियजासू ॥
ज्यहि न राम बन लहहिं कलेशू * सुत सोइकरेउ मोर उपदेशू ॥
छंद–उपदेश यहि जेहि तात तुम ते राम सिय सुख पावहीं ॥
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं ॥
तुलसी सुतहि शिख देइ आयसु देइ पुनि आशिष दई ॥
रति होउ अविरलअमल सिय रघुवीर पद नित नित नई ३ ॥
सो०–मातुचरण शिरनाइ, चले तुरत शंकित हिये ॥
वागुरि विषम तुराइ, मनहुँ भागु मृग भाग वश ॥ २ ॥
गये लषण जहँ जानकिनाथा * भे मन मुदितपाइ प्रिय साथा ॥

१ प्रीति । २ अचल । ३ निर्मल । ४ जाल । ५ हरिण ।

बन्दिरामसिय चरण सुहाये * चलेसंग नृप मन्दिर आये ॥
कहहिं परस्पर पुर नर नारी * भलि बनाइ विधि बात बिगारी ॥
तनु कृश मन दुख बदनमलीना * विकल मनहुँ माखी मधु छीना ॥
करमींजहिं शिरधुनि पछिताहीं * जनु बिनु पंख विहँग अकुलाहीं ॥
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा * बरणि न जाइ विषाद अपारा ॥
सचिव उठाइ राउ बैठारे * कहि प्रिय वचन राम पगु धारे ॥
सिय समेत दोउ तनय निहारी * व्याकुल भयउ भूमिपति भारी ॥
दोहा—सीय सहित सुत सुभग दोउ, लखि देखि अकुलाइ ॥
बारहिंबार सनेह बश, राउ लिये उरलाइ ॥ ७७ ॥
सकै न बोलि विकल नरनाहू * शोक विकल उर दारुण दाहू ॥
नाइ शीश पद अति अनुरागा * उठि रघुनाथ बिदा तब माँगा ॥
पितु आशीशआयसु मोहिं दीजै * हर्ष समय बिस्मय कत कीजै ॥
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू * यश जग जाइ होइ अपवादू ॥
सुनि सनेहबश उठि नरनाहू * बैठारे रघुपति गहि बाहू ॥
सुनहुतात तुमकहँ मुनिकहहीं * राम चराचर नायक अहहीं ॥
शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी * ईश देइ फल हृदय विचारी ॥
करै जो कर्म पाव फल सोई * निगम नीति असकह सबकोई ॥
दोहा—और करै अपराध कोई, और पाव फल भोग ॥
अति विचित्र भगवन्तगति, को जग जाने योग ॥ ७८ ॥
राउ राम राखन हित लागी * बहुत उपाय कीन्ह छलत्यागी ॥
लखेउ राम रुख रहत न जाने * धर्म धुरंधर धीर सयाने ॥
तब नृप सीय लाइ उर लीनी * अतिहितबहुतभाँतिशिखदीनी ॥
कहि बनके दुख दुसह सुनाये * सासु श्वशुरपितुसुखसमुझाये ॥
सियमन रामचरण अनुरागा * घर न सुगमवनअगमनलागा ॥
औरों सबहिं सीय समुझाई * कहिकहिविपिनविपतिअधिकाई
सचिव नारि गुरुनारि सयानी * सहित सनेह कहहिं मृदुवानी ॥

१ राजादशरथ । २ अनुचित । ३ निन्दा ।

तुमकहँ तौ न दीन्ह वनवासू * करहुजोकहहिंश्वशुरगुरुसासू॥
दोहा-शिष शीतल हित मधुर मृदु, सुनि सीतहि न सुहानि ॥
शरदचन्द्र चाँदनि लगत, जनु चकई अकुलानि ॥७९॥
सीय सकुच वश उतर न देई * सो सुनि तमकि उठी कैकेई ॥
मुनिपट भूषण भाजन आनी * आगे धारि बोली मृदुवानी ॥
नृपहि प्राणप्रिय तुम रघुवीरा * शील सनेह न छाँडहि भीरा ॥
सुकृत सुयश परलोक नशाऊ * तुमहिं जान वन कहहिनराऊ॥
अस विचारि सोइकरो जुभावा *रामजननिशिखसुनिसुखपावा॥
भूपहिं वचन बाण सम लागे * करहिं न प्राण पयान अभागे ॥
शोक विकल मूर्च्छित नरनाहू * काह करिय कछु सूझनकाहू ॥
राम तुरत मुनि वेष बनाई * चले जनक जननी शिरनाई ॥
दोहा-सजि वनसाज समाज सब, वनिता बन्धु समेत ॥
वन्दि विप्र गुरु चरण प्रभु, चले करि सबहिं अचेत ॥८०॥
निकसि वसिष्ठ द्वार भये ठाढे * देखे लोग विरह दव डाढे ॥
कहि प्रियवचन सबहिंसमुझाये * विप्रवृन्द रघुवीर बुलाये ॥
गुरुसन कहि वर्षासन दीन्हें * आदर दान विनय बहु कीन्हें॥
याचक दान मान सन्तोषे * मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
दासी दास बुलाइ बहोरी * गुरुहिं सौंपि बोले कर जोरी ॥
सब कर सार सँभार गुसाँई * करब जनक जननीकी नाईं ॥
बारहिं बार जोरि युगपानी * कहत राम सबसन मृदुवानी ॥
सोइ सब भाँति मोराहितकारी * जेहिते रहैं भुआल सुखारी ॥
दोहा-मातु सकल मोरे विरह, जेहि न होहिं दुख दीन ॥
सो उपाय तुम करब सब, पुरजन परम प्रवीन ॥ ८१ ॥
इहि विधि रामसबहिं समुझावा * गुरु पद पद्म हर्षि शिरनावा ॥
गणपति गौरि गिरीश मनाई * चले अशीश पाइ रघुराई ॥
राम चलत अति भयो विषादू * सुनि नजाइ पुर आरतनादू ॥

१श्री जानकीजी । २ भाई लक्ष्मणजी । ३ ब्राह्मणोंकेझुण्ड । ४ एकएक वर्षका भोजन । ५ दोनों हाथ ।

कुशकुनलैक अवध अति शोकू * हर्ष विषाद विवश सुरलोकू ॥
गे मूर्च्छा तब भूपति जागे * बोलि सुमन्त कहन असलागे॥
राम चले वन प्राण न जाहीं *केहि सुख लागि रहे तनुमाहीं॥
इहि ते कवन व्यथा बलवाना * जोदुखपाइ तजहिं तनु प्राना ॥
पुनि धरि धीर कहहिं नरनाहू * लै रथ संग सखा तुम जाहू ॥
दोहा-सुठि सुकुमार कुमार दोउ, जनकसुता सुकुमारि ॥
रथ चढाइ देखराइ वन, फिरहु गये दिन चारि ॥८२॥
जो नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई * सत्यासिन्धु दृढ व्रत रघुराई ॥
तौ तुम विनय करहु कर जोरी *फेरिय प्रभु मिथिलेशकिशोरी ॥
जब सिय कानन देखि डराई * कहेउ मोर शिख अवसरपाई ॥
सासु श्वशुर अस कहेउ सँदेशू * पुत्रि फिरिय वन बहुत कलेशू ॥
पितु गृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी * रहेउ जहाँ रुचि होइ तुम्हारी ॥
इहिविधि करेहु उपाय कदंबा * फिरइ तो होइ प्राण अवलंबा ॥
नाहिं तो मोर मरण परिणामा * कछु न बसाइ भयो विधिबामा॥
असकहि मूर्च्छि परेउ महिराऊ* रामलषणसिय आनिदिखाऊ ॥
दोहा-पाय रजायसु नाइशिर, रथ अति रुचिर बनाय ॥
गयउ जहाँ बाहर नगर, सीय सहित दोउ भाय ॥ ८३ ॥
तब सुमन्त नृप वचन सुनाये * करि विनती रथ राम चढाये ॥
चढ़ि रथ सीय सहित दोउभाई * चले हृदय अवधहि शिरनाई ॥
चलत राम लखि अवध अनाथा * विकल लोग लागे सबसाथा ॥
कृपासिंधु बहुविधि समुझावहिं * फिरहिंप्रेमवशपुनिफिरिआवहिं
लागत अवध भयानक भारी * मानहुँ कालराति अँधियारी ॥
घोर जन्तु सम पुरनरनारी * डरपहिं एकहि एक निहारी ॥
घर मशान परिजन जनु भूता * सुतहित मीत मनहुँ यमदूता ॥
बागन विटप बेलि कुम्हिलाहीं * सरित सरोवर देखि नजाहीं ॥
दोहा-हय गय कोटिक केलि मृग, पुर पशु चातक मोर ॥

१ सहारा। २ सुंदर। ३ घोडे। ४ हाथी।

पिक रथांग शुक शारिका, सारस हंस चकोर ॥ ८४ ॥

राम वियोग विकल सब ठाढ़े * जहँतहँमनहुँचित्रलिखिकाढ़े ॥
नगर सकल बन गहबर भारी * खगमृगविकलसकलनरनारी ॥
विधि कैकयी किरातिनि कीन्ही * जेहिंदवदुसहदशहुँदिशिदीन्ही ॥
सहि न सकै रघुवर बिरहागी * चले लोग सब व्याकुल भागी ॥
सबहिं विचार कीन्ह मन माहीं * राम लषण सिय बिनुसुखनाहीं ॥
जहाँ राम तहँ सकल समाजू * बिनु रघुवीर अवधकेहिकाजू ॥
चले साथ अस मंत्र दृढ़ाई * सुर दुर्लभ सुखसदन बिहाई ॥
रामचरण पंकज प्रिय जिनहीं * विषय भोगवश करें कितिनहीं ॥

दोहा—बालक वृद्ध बिहाइ गृह, लगे लोग सब साथ ॥
तमसा तीर निवास किय, प्रथमदिवस रघुनाथ ॥ ८५ ॥

रघुपति प्रजा प्रेमवश देखी * सदय हृदय दुखभयउविशेषी ॥
करुणामय रघुनाथ गुसाँई * वेगि पाइ यह पीर पराई ॥
कहि सप्रेम मृदुवचन सुहाये * बहु विधि राम लोग समुझाये ॥
किये धर्म उपदेश घनेरे * लोग प्रेमवश फिरहिं न फेरे ॥
शील सनेह छाँडि नहिं जाई * असमंजस वश भये रघुराई ॥
लोक शोक श्रमवश गये सोई * कछुक देव माया मति मोई ॥
जबहिं यामयुग यामिनि बीती * राम सचिव सन कहेउसप्रीती ॥
खोजमारि रथ हाँकहु ताता * आन उपाय बनहि नहिं बाता ॥

दोहा—राम लषण सिय यान चढ़ि, शंभुचरण शिरनाइ ॥
सचिव चलायउ तुरत रथ, इत उत खोज दुराइ ॥ ८६ ॥

जागे सकल लोग भये भोरू * गये रघुवीर भयो अति शोरू ॥
रथकरखोज कतहुँ नहिं पावहिं * रामरामकहिचहुँदिशिधावहिं ॥
मनहुँ वारिनिधि बूड़ जहाजू * भयउ विकलजनुवणिकसमाजू
एकहिं एक देहिं उपदेशू * तजेउ राम हम जानि कलेशू ॥
निन्दहिं आपु सराहहिं मीना * धृक जीवन रघुवीर विहीना ॥

१ कोयल। २ चकई-चकवा किन्तु सारसको कहते हैं। ३ वियोगकी अग्नि तेजमय। ४ पर। ५ दिन। ६ दयावान्।
७ द्विविधा। ८ दोपहररात्रि। ९ समुद्र।

जोपै प्रिय वियोग विधि कीन्हा * तौ कस मरण न माँगे दीन्हा ॥
इहिविधि करत प्रलाप कलापा * आये अवध भरे परितापा ॥
विषम वियोग न जाइ बखाना * अवधि आश राखहिं सबप्राना ॥
दोहा-रामदरश हित नेम व्रत, लगे करन नर नारि ॥
मनहुँ कोक कोकी कमल, दीन विहीनतमारि ॥ ८७ ॥
सीतासचिव सहित दोउभाई * शृंगबेर पुर पहुँचे जाई ॥
उतरे राम देवसरि देखी * कीन्ह दण्डवत हर्ष विशेषी ॥
लषणसचिवसियकीन्हप्रणामा * सबहिंसहितसुखपायउरामा ॥
गंग सकल मुद मंगल मूला * सबसुखकरानि हरनिसबशूला ॥
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा * राम विलोकत गंग तरंगा ॥
सचिवहिंअनुजहिप्रियहिंसुनाई * विबुधनदीमहिमा अधिकाई ॥
मज्जन कीन्ह पन्थश्रमगयऊ *शुचिजलपियतमुदितमनभयऊ
सुमिरत जाहि मिटहिं भवभारू *तहिश्रमयहलौकिकव्यवहारू॥
दोहा-शुद्ध सच्चिदानन्दमय, राम भानुकुलकेतु ॥
चरित करत नर अनुहरत, संसृतिसागर सेतु ॥ ८८ ॥
यह सुधि गुह निषाद जब पाई *मुदित लिये प्रिय बंधु बुलाई॥
लै फल मूल भेट भरि भारा *मिलन चल्यो हिय हर्ष अपारा॥
करि दण्डवत भेट धरि आगे *प्रभुहि विलोकत अति अनुरागे॥
सहज सनेह विवश रघुराई * पूछेउ कुशल निकट बैठाई ॥
नाथ कुशल पदपंकज देखे * भयउँ भाग्यभाजन जनलेखे ॥
देव धरणि धन धाम तुम्हारा * मैं जन नीच सहितपरिवारा ॥
कृपा करिय पुर धारिय पाऊ *थापिय जन सब लोग सिहाऊ ॥
कहेउ सत्य सब सखासुजाना * मोहिं दीन्ह पितु आयसु आना॥
दोहा-वर्ष चारिदश वास वन, मुनि व्रत वेष अहार ॥
ग्राम वास नहिं उचित सुनि, गुहहि भयो दुखभार ॥ ८९ ॥
राम लषण सियरूप निहारी * कहहिं सप्रेम नगर नर नारी ॥

१ दुःख । २ श्रीसूर्य्यनारायण । ३ संसारकागार । ४ शुद्ध और सत्य चैतन्य आनन्दकारूप । ५ देवत ।

ते पितु मातु कहहु सखि कैसे * जिन पठये वन बालक ऐसे ॥
एक कहहिं भूपति भल कीन्हा * लोचन लाहु हमहिंजिन्हदीन्हा
तब निषादपति उर अनुमाना * तरुशिंशुपा मनोहर जाना ॥
लै रघुनाथहिं ठौर बतावा * कहेउ राम सब भाँति सुहावा ॥
पुरजन करि जुहारि गृह आये * रघुबर सन्ध्या करन सिधाये ॥
गुह सँवारि साथरी बनाई *कुशकिसलय मृदुपरमसुहाई ॥
शुचि फल फूल मृदुलमधुजानी * दोना भरि भरि राखेसिआनी ॥
दोहा–सिय सुमंत भ्राता सहित, कन्द मूल फल खाइ ॥
शयन कीन्ह रघुवंशमणि, पाँय पलोटत भाइ ॥ ९० ॥
उठे लषण प्रभु सोवत जानी * कहि सचिवहिं सोवनमृदुवानी॥
कछुक दूरि सजि बाण शरासन * जागन लगे बैठि वीरासन ॥
गुह बुलाइ पाहरू प्रतीती * ठाँव ठाँव राखे अति प्रीती ॥
आप लषण पहँ बैठेउ जाई * कटि भाथी शर चाप चढ़ाई ॥
सोवति प्रभुहिं निहारि निषादा * भयउ प्रेमवश हृदय विषादा ॥
तनु पुलकित लोचनजलबहई * वचन सप्रेम लषण सन कहई ॥
भूपति भवन सुसहज सुहावा *सुरपति सदन न पटतर आवा॥
मणिमय रचित चारु चौबारे * जनु रतिपति निज हाथ सँवारे॥
दोहा–शुचि सुविचित्र सुभोगमय, सुमन सुगन्ध सुवास ॥
पलँग मंजु मणि दीप जहँ, सब विधि सकल सुपास ॥ ९१॥
विविध वसन उपधान तुराई * क्षीरफेन मृदु विशद सुहाई ॥
तहँ सियराम शयन नित करहीं * निजछबि रतिमनोजमदहरहीं॥
ते सिय राम साथरी सोये *श्रमितवसन विन जाहिं न जोये॥
मातु पिता परिजन पुरवासी * सखासुशील दास अरु दासी ॥
जुगवहिं जिनहिं प्राणकी नाईं * महि सोवत सो रामगुसाईं ॥
पिता जनक जगविदितप्रभाऊ * श्वशुर सुरेश सखा रघुराऊ ॥
रामचन्द्र पति सो वैदेही * महि सोवत विधि वाम न केही॥

१. शिशिपा वृक्ष । २. कोमल पत्ता । ३. तरकस । ४ उपमामें । ५. कामदेव । ६ पवित्र ।
७ सुन्दर । ८ तकिया । ९. रजाई ।

सिय रघुवीर कि कानन योगू * कर्म प्रधान सत्य कह लोगू ॥
दोहा--केकयिनन्दिनिमन्दमति, कठिन कुटिल प्रण कीन्ह ॥
जेहि रघुनन्दन जानकिहि, सुख अवसर दुखदीन्ह ॥ ९२ ॥
भइदिनकरकुल विटप कुठारी * कुमति कीन्ह सबविश्वदुखारी ॥
राम सीय महि शयन निहारी * भयउ विषाद निषादहिभारी ॥
बोले लषण मधुर मृदु बानी * ज्ञान विराग भक्ति रससानी ॥
कोउनकाहु दुख सुख करदाता * निज कृत कर्म भोगसबभ्राता ॥
योगवियोग भोग भल मन्दा * हित अनहित मध्यमभ्रमफंदा ॥
जन्म मरण जहँ लगिजगजालू * सम्पति विपति कर्म अरुकालू ॥
धरणि धाम धन पुर परिवारू * स्वर्ग नरक जहँलगिव्यवहारू ॥
देखिय सुनियगुनियमनमाहीं * मोह मूल परमारथ नाहीं ॥
दोहा--स्वप्न होइ भिखारिनृप, रंक नाकपति होइ ॥
जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जग जोइ ॥ ९३ ॥
अस विचारि नहिंकीजिय रोषू * वादिकाहु नहिं दीजिय दोषू ॥
मोह निशा सब सोवनिहारा * देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा ॥
इहि जगयामिनि जागहिंयोगी * परमारथी प्रपंच वियोगी ॥
जानिय तबहिं जीव जगजागा * जबसब विषय विलास विरागा ॥
होइ विवेक मोह भ्रम भागा * तब रघुवीर चरण अनुरागा ॥
सखा परम परमारथ एहू * मन क्रम वचन रामपद नेहू ॥
राम ब्रह्म परमारथ रूपा * अविगत अलख अनादि अनूपा ॥
सकल विकार रहित गत भेदा * कहिनितनेति निरूपहिंवेदा ॥
दोहा--भक्त भूमि भूसुर सुरभि, सुर हित लागि कृपाल ॥
करत चरित धरि मनुज तनु, सुनत मिटै जग जाल ॥ ९४ ॥
सखासमुझिअस परिहरि मोहू * सिय रघुवीर चरणरति होहू ॥
कहत रामगुण भा भिनुसारा * जागे जगमंगल दातारा ॥
सकल शौच करि राम अन्हाये * शुचि सुजान वट क्षीर मँगाये ॥

१ दरिद्री । २ स्वर्गपति । ३ जगतरूपीरात्रि । ४ मोक्षरूप । ५ जिनकी गति जाननेमें नहीं आने । ६ अर्थात् देखनेमें नहीं आने । ७ जिनका आदि अन्त मध्य नहीं ।

अनुज सहित शिर जटा बनाये * देखि सुमन्त नयन जल छाये॥
हृदय दाह अति वदन मलीना * कह कर जोरि वचन अतिदीना॥
नाथ कहेउ अस कोसलनाथा * लै रथ जाहु रामके साथा॥
बन दिखाइ सुरसरि अन्हवाई * आनेहु बेगि फेरि दोउ भाई॥
लषण राम सिय आन्यहु फेरी * संशय सकल सकोच निबेरी॥
दोहा—नृप अस कहेउ गुसाँइँ जस, कहियकरौंबलिसोइ॥
करि विनती पाँयन परेउ, दीन बाल जिमि रोइ॥ ९५॥
तात कृपा करि कीजिय सोई * जाते अवध अनाथ न होई॥
मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा * तात धर्म मगु तुम सब शोधा॥
शिवि दधीचि हरिचन्द्र नरेशा * सहे धर्महित कोटि कलेशा॥
रन्तिदेव बलि भूप सुजाना * धर्म धरेउ सहि संकटनाना॥
धर्म न दूसर सत्य समाना * आगम निगम पुराण बखाना॥
मैं सोइ धर्म सुलभ करि पावा * तजे सो तिहुँपुर अपयशछावा॥
सम्भावित कहँ अपयश लाहू * मरण कोटिसम दारुण दाहू॥
तुमसन तात बहुत का कहऊं * दिये उतर फिरि पातकलहऊं॥
दोहा—पितु पद गहि कहि कोटि विधि, विनय करब कर जोरि॥
चिन्ता कवनिहुँ बातकी, तात करिय जनि मोरि॥ ९६॥
तुम पुनि पितु समान हितमोरे * विनती करौं तात कर जोरे॥
सब विधि सोइ करतव्यतुम्हारे * दुख न पाव नृप शोचहमारे॥
सुनि रघुनाथ सचिव संवादू * भयउसपरिजनविकलनिषादू॥
पुनि कछु लषण कही कटुवानी * प्रभु बरजे बड़ अनुचित जानी॥
सकुचि राम निज शपथदिवाई * लषण सँदेश कहबजनि जाई॥
कह सुमन्त पुनि भूप सँदेशू * सहिनसकहिंसियविपिनकलेशू॥
जेहिविधिअवध आवफिरिसीया * सोइ रघुनाथ तुमहिं करणीया॥
नतरु निपट अबलंब विहीना * मैं न जियब जिमिजलबिनुमीना।
दोहा—मैके ससुरे सकल सुख, जबहिं जहाँ मन मान॥

१ गंगाजी। २ सभाके बैठनेवाले सुकर्मी पुरुष। ३ कुटुंबसहित। ४ वन। ५ सहारा।

तव तहँ रहब सुखेन सिय, जब लगि विपति विहान ॥९७॥
विनती कीन्ह भूप जेहि भाँती * आरतिप्रीति न सो कहिजाती॥
पितु सँदेश सुनि कृपानिधाना *सियहिंदीन्हशिषकोटिविधाना॥
सासु श्वशुर गुरु प्रिय परिवारू * फिरहुतोसवकर मिटै खँभारू॥
सुनि पतिवचन कहति वैदेही * सुनहु प्राणपति परमसनेही ॥
प्रभु करुणामय परमविवेकी * तनुतजिछाँहरहतकिमि छेकी॥
प्रभा जाइ कहँ भानु विहाई * कहँ चन्द्रिका चन्द्र तजि जाई॥
पतिहि प्रेममय विनय सुनाई * कहत सचिव सन गिरा सुहाई॥
तुम पितुश्वशुरसरिसहितकारी * उतर देउँ फिर अनुचित भारी॥
दोहा--आरतवशसन्मुख भयउँ, विलग न मानव तात ॥
आरजसुत पदकमल विनु, वादि जहाँ लग नात ॥ ९८ ॥
पितुहि विभव विलास मैं दीठा * नृपमणिमुकुटमिलत पदपीठा॥
सुखनिधान असु पितु गृहमोरे * पतिविहीन मन भाव न मोरे ॥
श्वशुर चक्रवै कोशलराऊ * भुवन चारिदश प्रगट प्रभाऊ ॥
आगे होइ ज्यहि सुरपति लेई * अर्द्ध सिंहासन आसन देई ॥
श्वशुर एतादृश अवधनिवासू * प्रिय परिवार मातु सम सासू ॥
विनु रघुपति पद पद्म परागा * मोहिंकोउसपनेहुँसुखदनलागा
अगमपन्थ वन भूमि पहारा * करि केहरि सरसरितअपारा ॥
कोल्ह किरात कुरंग विहंगा * मोहिं सबसुखद प्राणपतिसंगा॥
दोहा--सासु श्वशुर सन मोरि हुति, विनय करव परिपाँय ॥
मोर शोच जनि करिय कछु, मैं वन सुखी स्वभाय ॥ ९९ ॥
प्राणनाथ प्रिय देवर साथा * वीर धुरीण धरे धनु भाथा ॥
नहिं मगुश्रमभ्रमदुख मनमोरे *मोहिंलगिशोचकरियजनिभोरे॥
सुनि सुमन्त सियशीतल वानी *भये विकलजनुफणिमणिहानी॥
नयन न सूझ सुनै नहिं काना *कहि नसकै कछुअतिअकुलाना॥
राम प्रबोध कीन्ह बहु भाँती * तदपि होइ नहिं शीतलछाती ॥

१ दुःख । २ किरणें । ३ मिथ्या । ४ सम्पदा ।

यत्न अनेक साथ हित कीन्हा * उचित उतर रघुनन्दन दीन्हा ॥
मेटि जाय नहिं रामरजाई * कठिनकर्मगति कछु न बसाई ॥
राम लषण सिय पद शिरनाई * फिरे वणिक जिमि मूर गँवाई ॥
दोहा–रथ हाँके हय रामतन, हेरि हेरि हिहनाहिं ॥
देखि निषाद विषादवश, शिर धुनि २ पछिताहि ॥ १०० ॥
जासु वियोग विकल पशु ऐसे * प्रजा मातु पितु जीवहिं कैसे ॥
बरबस राम सुमन्त पठाये * सुरसरि तीर आपु चलि आये ॥
माँगी नाव न केवट आना * कहै तुम्हार मर्म मैं जाना ॥
चरणकमल रज कहँ सब कहई * मानुष करणि मूरि कछु अहई ॥
छुवत शिला भइ नारि सुहाई * पाहन तेन काठ कठिनाई ॥
तरणिउ मुनिघरनी होइ जाई * बाट परै मोरि नाव उड़ाई ॥
यहि प्रतिपालौं सब परिवारू * नहिं जानौं कछु और कबारू ॥
जो प्रभु अवशि पारगा चहहू * तौ पदपद्म पखारन कहहू ॥
छंद–पदपद्म धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ।
मोहिं राम राउरि आनि दशरथ शपथ सब साँची कहौं ॥
बरु तीर मारहिं लषण पै जबलगि न पाँव पखारिहौं ।
तबलगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पार उतारिहौं ॥ ४ ॥
सो०–सुनि केवटके बयन, प्रेम लपेटे अटपटे ॥
बिहँसे करुणाअयन, चितै जानकी लषण तन ॥ ४ ॥
कृपासिंधु बोले मुसुकाई * सोइ करहु जेहि नाव न जाई ॥
वेगि आनि जल पाँव पखारू * होतविलम्ब उतारहु पारू ॥
जासु नाम सुमिरत यक बारा * उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥
सो कृपालु केवटहि निहोरा * जे किय जग तिहुँ पगतें थोरा ॥
पदनख निरखि देवसरि हरषी * सुनिप्रभु वचन मोहमतिकरषी ॥
केवट राम रजायसु पावा * पाणि कठवता भरि लै आवा ॥
अति आनन्द उमँगि अनुरागा * चरण सरोज पखारन लागा ॥

१ सौदागर । २ जमा । ३ अश्व । ४ हठकरकै । ५ श्रीगंगाजीके तट । ६ मल्लाह । ७ भेद । ८ पत्थर अर्थात् अहल्या गौतमकी नारि । ९ नाव । १० अहल्या ।

बर्षि सुमन सुर सकलसिहाहीं * इहि सम पुण्य पुंज कोउ नाहीं॥
दोहा-पद पखारि जल पान करि, आपु सहित परिवार ॥
पितर पार करि प्रभुहि पुनि, मुदित गयो लै पार ॥ १०१ ॥
उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता * सीय राम गुह लषण समेता ॥
केवट उतरि दण्डवत कीन्हा *प्रभुसकुचे कछु यहि नहिं दीन्हा
पिय हियकी सिय जाननहारी *मणि मुंदरी मनमुदित उतारी॥
कहेउ कृपालु लेहु उतराई * केवट चरण गहेउ अकुलाई ॥
नाथ आजु हम काह न पावा * मिटे दोष दुख दारिद दावा ॥
अमित काल मैं कीन्ह मजूरी *आजु दीन्ह विधि सबभारिपूरी॥
अब कछु नाथ न चाहिय मोरे * दीन दयालु अनुग्रह तोरे ॥
फिरति बार जो कछु मुहिं देवा * सो प्रसाद मैं शिर धरि लेवा ॥
दोहा-बहुत कीन्ह हठ लषण प्रभु, नहिं कछु केवट लेय ॥
बिदा कीन्ह करुणायतन, भक्ति विमल वर देय ॥ १०२ ॥
तब मज्जन करि रघुकुलनाथा * पूजि पारथी नायउ माथा ॥
सिय सुरसरिहि कहा करजोरी * मातुमनोरथ पुरवहु मोरी ॥
पति देवर संग कुशल बहोरी * आइ करौं जेहि पूजा तोरी ॥
सुनि सिय विनय प्रेमरससानी *भइ तब विमल वारि वर वानी॥
सुनु रघुवीर प्रिया वैदेही * तव प्रभाव जगविदित नकेही॥
लोकप होहिं विलोकत तोरे *तोहिं सेवहिंसबसिधिकरजोरे ॥
तुमजोहमहिंबडि विनयसुनाई * कृपा कीन्ह मोहिं दीनबडाई ॥
तदपि देवि मैं देव अशीशा * सफल होनहितनिजवागीशा ॥
दोहा-प्राणनाथ देवर सहित, कुशल कोशला आइ ॥
पूजहि सब मन कामना, सुयश रहहि जगछाइ ॥ १०३ ॥
गंग वचन सुनि मंगल मूला * मुदितसीय सुरसरि अनुकूला॥
तब प्रभु गुहहि कहा घर जाहू * सुनत सूखमुख भा उर दाहू ॥
दीन वचन गुह कह करजोरी *विनयसुनियरघुकुलमणि मोरी॥

१ फूल । २ निर्मल । ३ स्नान । ४ ऐश्वर्य । ५ लोकपाल-राजा । ६ वाणी ।

नाथ साथ रहि पंथ दिखाई * करि दिन चारि चरणसेवकाई ॥
जेहि वन जाइ रहब रघुराई * पर्णकुटी मैं करब सुहाई ॥
तब मोकहँ जस देब रजाई * सो करिहौं रघुवीर दुहाई ॥
सहज सनेह राम लखि तासू * संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू ॥
पुनि गुहज्ञाति बोलि सबलीन्हें * करि परितोष बिदा सब कीन्हें ॥

दोहा–तब गणपति शिव सुमिरि प्रभु, नाइ सुरसरिहिं माथ ॥
सखा अनुज सिय सहित वन, गमन कीन्ह रघुनाथ॥१०४॥

त्यहि दिनभयउ बिटपतरवासू * लषण सखा सब कीन्हसुपासू ॥
प्रात प्रातकृत करि रघुराई * तीरथराज दीख प्रभुजाई ॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रियनारी * माधव सरिस मीत हितकारी॥
चारि पदारथ भरो भँडारू * पुण्य प्रदेश देश अति चारू ॥
क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा * स्वप्नेहुँ जिन्ह प्रतिपक्षनपावा ॥
सैन सकल तीरथ वर वीरा * कलष अनीक दलन रणधीरा॥
संगम सिंहासन सुठि सोहा * छत्र अक्षयवट मुनिमनसोहा ॥
चमर यमुन जल गंग तरंगा * देखि होहिं दुख दारिद भंगा ॥

दोहा–सेवहिं सुकृती साधु शुचि, पावहिं सब मन काम ॥
बन्दी वेद पुराण गण, कहहिं विमल गुण ग्राम ॥ १०५ ॥

को कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ * कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा * सुखसागर रघुवर सुख पावा ॥
कहिसियअनुजहिसखहिसुनाई * श्रीमुख तीरथराज बड़ाई ॥
करि प्रणाम देखत वन बागा * कहत महातम अतिअनुरागा ॥
इहिविधि आइ विलोकेउ वेनी * सुमिरतसकल सुमंगल देनी ॥
मुदित नहाइ कीन्ह शिव सेवा * पूजि यथाविधि तीरथ देवा ॥
तब प्रभु भरद्वाज पहँ आये * करत दण्डवत मुनि उर लाये ॥
मुनि मनमोद न कछु कहिजाई * ब्रह्मानंद राशि जनु पाई ॥

दोहा–दीन्ह अशीश मुनीश उर, अति आनँद अस जानि ॥

१ मार्ग । २ आज्ञा । ३ आदर-सन्मान । ४ प्रयागराज । ५ भाट । ६ सम्पूर्णपाप-मत्तहाथी सरीखेके नाश करनेको सिंह ।

लोचनगोचर सुकृत फल³, मनहुँ किये विधिआनि ॥ १०६ ॥

कुशल प्रश्न करि आसन दीन्हा * पूजि प्रेम परिपूरण कीन्हा ॥
कन्द मूल फल अंकुर नीके * दियेआनि मुनिमनहुँअमीके ॥
सीय लषण जनसहितसुहाये * अति रुचिराम मूलफलखाये ॥
भये विगत श्रम राम सुखारे * भरद्वाज मृदु वचन उचारे ॥
आजु सफल तप तीरथ त्यागू * आजु सफल जप योगविरागू ॥
सफल सकल शुभसाधन साजू * राम तुमहिं अवलोकत आजू ॥
लाभ अवधि सुखअवधिनदूजी * तुम्हरे दरश आश सब पूजी ॥
अब करिकृपा देहु वर येहू * निजपदसरसिज सहजसनेहू ॥

दोहा—कर्म वचन मन छाँडि छल, जबलगि जन न तुम्हार ॥
तबलगि सुख स्वप्नेहुँ नहीं, कियेकोटि उपचार ॥ १०७ ॥

सुनि मुनि वचन राम सकुचाने * भाव भक्ति आनन्द अघाने ॥
तब रघुबर मुनि सुयशसुहावा * कोटिभाँतिकहिसबहिंसुनावा ॥
सो बड़ सो सब गुणगण गेहू * ज्यहि मुनीश तुम आदरदेहू ॥
मुनि रघुवीर परस्पर नवहीं * वचन अगोचरसुखअनुभवहीं ॥
यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी * बटुँ तापस मुनिसिद्धिउदासी ॥
भरद्वाज आश्रम सब आये * देखन दशरथसुवन सुहाये ॥
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू * मुदित भये लहि लोचन लाहू ॥
देहिं अशीश परम सुख पाई * फिरे सराहत सुन्दरताई ॥

दोहा—राम कीन्ह विश्राम निशि, प्रात प्रयाग अन्हाइ ॥
चले सहित सिय लषण जन, मुदित मुनिहिं शिरनाइ॥ १०८॥

राम सप्रेम कह्यो मुनि पाहीं * नाथकहहु हमकेहिमगजाहीं ॥
सुनिमुनिविहँसिरामसनकहहीं *सुगमसकलमगतुमकहँअहहीं॥
साथ लागि मुनि शिष्य बुलाये * सुनिमन मुदितपचाशकआये॥
सबहिं राम पद प्रेम अपारा * सबहिं कहहिंमगदीखहमारा ॥
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हें * जिनबहुजन्मसुकृतफलकीन्हें॥

१ नेत्र । २ सन्मुख—पलक । ३ पुण्य । ४ ब्रह्मा । ५ अमृतगर्भित मीठे । ६ उपाय । ७ ब्रह्मचारी ।

करिप्रणाम मुनि आयसु पाई * प्रमुदित हृदय चले रघुराई ॥
ग्राम निकट जब निसरहिं जाई * देखहिं दरश नारि नर धाई ॥
होहिं सनाथ जन्मफल पाई * फिरहिं दुखित मनसंग पठाई॥

दोहा—बिदा कीन्ह बहु विनय करि, फिरे पाइ मन काम ॥
उतरि नहाये यमुन जल, जो शरीर समश्याम ॥१०९॥

सुनत तीर वासी नर नारी * धाये निज निज काज बिसारी॥
लषण राम सिय सुन्दरताई * देखि करहिं निजभाग्य बड़ाई॥
अति लालसा सबहिं मन माहीं * नाम ग्राम पूछत सकुचाहीं ॥
जे तिन्ह महँ वय वृद्ध सयाने * तिन्हकरि युक्ति रामपहिचाने॥
सकल कथाकहि तिनहिं सुनाई * वनहिं चले पितु आयसुपाई ॥
सुनि सविषादसकल पछिताहीं * रानी राउ कीन्ह भल नाहीं ॥
त्यहि अवसर तापस इक आवा * तेजपुंज लघु बयस सुहावा ॥
कवि अलखित गति वेष विरागी * मन क्रम वचन राम अनुरागी॥

दोहा—सजल नयन तनु पुलकि निज, इष्टदेव पहिचानि ॥
परेउ धरणि तल दंड जिमि, दशा न जाइ बखानि ॥११०॥

राम सप्रेम पुलकि उर लावा * परमरंक जनु पारस पावा ॥
मनहुँ प्रेम परमारथ दोऊ * मिलत धरे तनु कह सब कोऊ॥
बहुरि लषण पाँयन सो लागा * लीन्ह उठाय उमँगि अनुरागा॥
पुनि सियचरण धूरि धरि शीशा * जननि जानि सुत दीन अशीशा
कीन्ह निषाद दण्डवत तेहीं * मिले मुदित लखि राम सनेहीं॥
पियत नयन पुट रूप पियूषा[1] * मुदित सुअशन[2]पाइ जिमिभूखा
"पुनि प्रभुपद सरोज शिरनावा * देखि प्रीति रघुवर मन भावा ॥
उर धरि धीर रजायसु पाई * चले मुदित मन अति हरषाई॥"
राम लषण सिय रूप निहारी * शोच सनेह विकल नरनारी ॥
ते पितु मातु कहौ सखि कैसे * जिन पठये वन बालक ऐसे ॥

१ अमृत । २ भोजन ।

अथ क्षेपक ।

देखुरी किशोर दोय भूपति कुल तिलक कोय मंद इन्दु लाग ए मुखारविन्द हेरे ॥ मुनिपट श्यामल शरीर नाशति भव विषमपीर कीन्हें मृदु मंद हँसनि काम कोटि चेरे ॥ कीन्हे तनु सुरति त्याग निरखत मुख सानुराग एतो वह सुरनि भाग जस खग मृग केरे ॥ लोचनयुग पल बिसारि चितवत मग ग्राम नारि अतिहित जोइ जाहि ताहि कहत मंत्र टेरे ॥ प्रफुलित सोउ रहति जाय जीवन फल सहज पाय सोच सकुच भवन ढहेउ प्रेम सलिल प्रेरे ॥ भाषति भारि दृगनि वारि नीके इन धरूं सम्हारि सूरज तम सकल झारि कमल नयन फेरे ॥ इति क्षेपक ।

दोहा–तब रघुवीर अनेक विधि, सखहिं शिखावन दीन्ह ॥
राम रजायसु शीश धरि, गवन भवन तिन्ह कीन्ह॥ १११॥

पुनि सिय राम लषण कर जोरी * यमुनहि कीन्ह प्रणाम बहोरी ॥
गवने सीय सहित दोउ भाई * रवितनया कर करत बड़ाई ॥
पथिक अनेक मिलहिंमगुजाता* कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता॥
राज सुलक्षण अंग तुम्हारे * देखि शोच हिय होत हमारे ॥
मारग चलहु पयादेहि पाँये * ज्योतिष झूठ हमारेहि भाये ॥
अगमपन्थ गिरि कानन भारी * तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी॥
करि केहरि वन जाहिं न जोई *हमसँग चलहिं जो आयसु होई॥
जाव जहाँलगि तहँ पहुँचाई * फिरब बहोरि तुमहिं शिरनाई॥

दोहा–इहिविधि बूझहिं प्रेमवश, पुलक गात जल नैन ॥
कृपासिंधु फेरहिं तिनहिं, करि विनती मृदु बैन ॥ ११२ ॥

जेहि पुर ग्राम बसहिं मगु माहीं * तिनहिं नाग सुर नगर सिहाहीं॥
केहि सुकृती केहि घरी बसाये * धन्य पुण्यमय परम सुहाये ॥
जहँ जहँ राम चरण चलि जाहीं * तेहि समान अमरावति नाहीं ॥

१ गृह । २ श्रीयमुनाजी । ३ बटोही । ४ पर्वत । ५ वन । ६ हाथी ।

पुण्यपुंज मगु निकट निवासी * तिनहिं सराहत सुरपुर वासी ॥
जेभरिनयन विलोकहिं रामहिं * सीतालषणसहितघनश्यामहिं॥
जेहि सर सरित राम अवगाहहिं * तिनहिं देवसर सरितसराहहिं॥
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई * करहिं कल्पतरु तासु बड़ाई ॥
परशि रामपद पद्म परागा * मानति भूरि भूमि निज भागा ॥
दोहा–छाँह करहिं घन[१] विबुध गण, वर्षहिं सुमन सिहाहिं ॥
देखन गिरि वन विहँग मृग, राम चले मग जाहिं ॥ ११३ ॥
सीता लषण सहित रघुराई * गाँव निकट जब निसरहिंजाई ॥
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी * चलहिं तुरत गृहकाज बिसारी॥
राम लषण सिय रूप निहारी * पाइ नयन फल होहिं सुखारी ॥
सजलनयन अति पुलकशरीरा * सब भये मगन देखि दोउवीरा॥
वरणि नजाय दशा तिन्ह केरी * लही रंक जनु सुरमणि ढेरी ॥
एकहिं एक बोलि शिष देहीं * लोचन लाहु लेहु क्षण एहीं ॥
रामहिं देखि एक अनुरागे * चितवत चलजात सँगलागे ॥
एक नयन मग छवि उर आनी * होहिंशिथिल तनु मानसवानी॥
दोहा–एक देखि वट[३] छाँह भलि, डासि मृदुल[२] तृण पात ॥
कहहिं गँवाइय क्षणक श्रम, गमनब अबहिं कि प्रात॥११४॥
एक कलश भरि आनहिं पानी * अँचइय नाथ कहहिं मृदुवानी॥
सुनि प्रिय वचन प्रीति अस देखी * राम कृपालु सुशील विशेषी॥
जानी सीय श्रमित मन माहीं * घरिकविलम्बकीन्ह वट छाहीं ॥
मुदित नारि नर देखहिं शोभा * रूप अनूप देखि मन लोभा ॥
इकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा * रामचन्द्र मुखचन्द्र चकोरा ॥
तरुण तमाल बरण तनु सोहा * देखत काम कोटि मन मोहा ॥
दामिनि वरण लषण सुठिनीके * नख शिख सुभगभावते जीके ॥
मुनिपट[५] कटिन्ह कसे तूणीरा * सोहत कर कमलन्ह धनु तीरा॥
दोहा–जटा मुकुट शीशन सुभग, उर भुज नयन विशाल ॥

१ मेघ। २ कोमल। ३ बरगद। ४ जिसकी उपमा देने योग्य दूसरा न हो। ५ भोजपत्र।

शरदपर्व विधु वदन वर, लसत स्वेदकणजाल ॥ ११५ ॥
वरणि न जाइ मनोहर जोरी * शोभा अमित मोरि मति थोरी॥
राम लषण सिय सुन्दरताई *सब चितवहिं मन बुधिचितलाई
थके नारि नर प्रेम पियासे * मनहुँ मृगी मृग देखि दियासे ॥
सीय समीपग्रामतिय जाहीं * पूँछत अति सनेह सकुचाहीं ॥
बार बार सब लागहि पाये * कहहिं वचन मृदु सरलसुहाये ॥
राजकुमारि विनय हम करहीं * तियस्वभाव कछु पूंछतडरहीं॥
स्वामिनि अविनय क्षमबहमारी * विलग न मानवजानि गँवारी ॥
राजकुँवर दोउ सहज सलोने * इनते लहि द्युति मरकत सोने ॥
दोहा--श्यामल गौर किशोर वर, सुन्दर सुखमाऐन ॥
शरद शर्वरी नाथ मुख, शरद सरोरुह नैन ॥ ११६ ॥
कोटि मनोज लजावनिहारे * सुमुखि कहहु को अहहिंतुम्हारे
सुनि सनेहमय मंजुल बानी *सकुचिसीय मनमहँमुसुकानी॥
तिनहिंविलोकिविलोकेउधरणी * दुहुँसकोचसकुचितवरवरणी ॥
सकुचि सप्रेम बाल मृगनयनी * बोली मधुर वचन पिकबयनी ॥
सहज स्वभाव सुभग तनुगोरे * नाम लषण लघु देवर मोरे ॥
"श्याम वरण विशाल भुजनैना * अति सुन्दर बोलनि मृदुवैना ॥"
वहुरि वदन विधु अंचल ढाँकी * पिय तन चितै दृष्टि करि बाँकी॥
खंजनमंजु तिरीछे नयननि * निजपतिकह्योतिनहिंसियसयननि
भईं मुदित सब ग्रामँबधूटी * रंकन्ह रतन राशि जनु लूटी ॥
दोहा--अति सप्रेम सिय पाँय परि, बहु विधि देहिं अशीश ॥
सदा सुहागिनि रहहु तुम, जबलगि महिअहिशीश॥ ११७॥
पार्वती सम पति प्रिय होहू * देवि न हमपर छाँडब छोहू ॥
पुनि पुनि विनय करहिंकरजोरी * जो यहि मारग फिरियबहोरी॥
दरशन देव जानि निजदासी * लखी सीय सब प्रेमपियासी ॥
मधुर वचन कहि कहि परितोषी* जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी ॥

१ शरदऋतुकी पूर्णमासीकी रात्रिका चन्द्रमा ऐसा निर्मल मुख । २ शोभित । ३ पसीनेके कण । ४ बहुत ।
५ मधुर-पवित्र । ६ देखि । ७ ग्रामस्त्री ।

तबहिं लषण रघुवर रुख जानी * पूँछेउ मग लोगन मृदुवानी ॥
सुनत नारि नर भये दुखारी * पुलकित अंग विलोचन वारी ॥
मिटा मोद मन भयउ मलीने * विधि निधिदीन्ह लीन्हजनुछीने
समुझि कर्मगति धीरजकीन्हा * शोधिसुगममगुतिन्हकहिदीन्हा
दोहा–लषण जानकी सहित बन, गमन कीन्ह रघुनाथ ॥
फेरे सब प्रियवचन कहि, लिये लाइ मन साथ ॥११८॥

अथ क्षेपक–भैरवी ।

पथिक मोहिनियां डारे जात ॥ बिहँसत मंद विलोकतजेहि तनु प्राणन सहित बिकात ॥ तजत निमेष विशेष नयनयुग दरशत श्यामलगात ॥ अधरन स्रवत मधुर वचनामृत क्यों एश्रवण अघात ॥ धरणी रहतसकुच उर पगपग परशिचरण जलजात ॥ इनहिं रह्यो वनवास योग सखि विधितें कहा बसात ॥ मनसहु अगम कि मिलहिं बहुरि यह निमिष भेंटके नात ॥ एजड़ प्राण अपान विगत सँग अजहुँ नलागे जात ॥ करतल खोइ सहज चिन्तामणि अन्त रहहि पछितात॥बहुरि कहा करणी फल भोगत सूरज निज जलजात॥

इति क्षेपक ।

फिरत नारि नर अति पछिताहीं* दैवहि दोष देहिं मन माहीं ॥
सहित विषाद परस्पर कहहीं * विधि करतब सब उलटे अहहीं॥
निपट निरंकुश निठुर निशंकू *ज्यहिं शशि कीन्ह सरुजसकलंकू
रूख कल्पतरु सागर खारा * तेइ पठये वन राजकुमारा ॥
जो पै इनहिं दीन्ह वनवासू * कीन्हवादि विधि भोग विलासू॥
ये विचरहिं मगु विनु पदत्राना * रचेउ वादि विधि वाहन नाना ॥
ये महिपरहिं डासि कुश पाता * सुभग सेज कत कीन्ह विधाता॥
तरुतर वास इनहिं विधिदीन्हा * धवलधाम रचि कतश्रम कीन्हा
दोहा–जो ये मुनिपट धर जटिल, सुन्दर सुठि सुकुमार ॥

१ नेत्र । २ आनंद । ३ स्वतंत्र । ४ सरोग । ५ जूती ।

विविध भाँति भूषण वसन, वादि किये करतार ॥११९॥

जो ये कन्द मूल फल खाहीं * वादि सुधादि अशन जगमाहीं॥
एक कहहिं यह सहज सुहाये * आपु प्रकट भये विधिनबनाये॥
जहँ लगि वेद कहैं विधि करणी * श्रवण नयन मन गोचरवरणी॥
देखेउ खोजि भुवन दशचारी * कहँ असपुरुष कहाँआसिनारी॥
इनहिं देखि विधि मन अनुरागा * पटुतर योग बनावन लागा ॥
कीन्ह बहुत श्रम एक न आये * तेहि इरषा वन आनि दुराये ॥
एक कहहिं हम बहुतनजानाहिं * आपुहिपरमधन्यकरिमानाहिं॥
ते पुनि पुण्य पुंज हम लेखे * जे देखत देखिहिं जिन्ह देखे ॥

दोहा-इहि विधि कहि कहि वचनप्रिय, लेहिंनयनभरिनीर ॥
किमि चलिहैं मारग अगम, सुठि सुकुमार शरीर ॥१२०॥

नारि सनेह विकल सब होहीं * चकई साँझसमयाजिमिसोहीं ॥
मृदु पद कमलकठिनमगजानी * गहबरि हृदय कहहिंमृदुवानी॥
परसत मृदुल चरणअरुणारे *सकुचतिमहिजिमिहृदयहमारे॥
जो जगदीश इनहिं वनदीन्हा * कसनसुमनमयमारगकीन्हा ॥
जो माँगे पाइय विधि पाहीं * राखियसखिइन्ह आँखिन्हमाहीं
जे नर नारि न अवसर आये * ते सिय राम न देखन पाये ॥
सुनि स्वरूप पूँछहिं अकुलाई * अबलगि गये कहाँ दोउभाई ॥
समरथ धाइ विलोकहिं जाई * प्रमुदितफिरहिंनयनफलपाई ॥

दोहा-अबला बालक वृद्धजन, करमींजहिं पछिताहिं ॥
होहिं प्रेमवश लोग इमि, राम जहाँ जहँ जाहिं ॥ १२१ ॥

गाँव गाँव अस होहिं अनन्दा * देखि भानुकुल कैरव चन्दा ॥
जे कछु समाचार सुनि पावहिं * ते नृप रानिहिं दोष लगावहिं ॥
एककहहिं अति भलनरनाहू * दीन्हहमहिंजिन्हलोचनलाहू ॥
कहहिं परस्पर लोग लुगाई * बातैं सरल सनेह सुहाई ॥
ते पितु मातु धन्य जे जाये * धन्य सो नगर जहाँते आये ॥

१ भोजन । २ कान । ३ स्त्री । ४ कुमुदिनी । ५ सीधी ।

धन्य सो शैल देश वन गाऊं * जहँ जहँ जाहिं धन्य सो ठाऊं॥
सुखपाये विरंचि रचि तेही * ये जिन्हके सब भाँतिसनेही ॥
राम लषण सिय कथा सुहाई * रही सकल मग कानन छाई ॥
दोहा–इहिविधि रघुकुल कमल रवि, मगलोगन्ह सुखदेत ॥
जाहिं चले देखत विपिन, सिय सौमित्र समेत ॥ १२२ ॥
आगे राम लषण पुनि पाछे * तापस वेष विराजत काछे ॥
उभय मध्य सिय शोभति कैसी * ब्रह्मजीव बिच माया जैसी ॥
बहुरि कहौं छविजस मन वसई * जनु मधु मदनमध्यरतिलसई॥
उपमा बहुरि कहौं जिय जोही * जनुबुधविधुबिचरोहिणिसोही॥
प्रभुपद रेख बीच बिच सीता * धरहिं चरणमगचलहिंसभीता॥
सीय राम पद अंक बराये * लषण चलहिं मगदाहिनबाँये ॥
राम लषण सिय प्रीति सुहाई * वचनअगोचरकिमिकहिजाई ॥
खग मृग मगन देखि छविहोहीं * लिये चोर चित राम बटोहीं ॥
दोहा–जिन्ह जिन्ह देखे पथिकप्रिय, सीयसहित दोउ भाइ ॥
भव मग अगम अनन्द तेहि, विनु श्रम रहे सिराइ ॥१२३॥
अजहुँ जासु उर स्वप्नेहुँ काऊ * बसहिं रामसिय लषणबटाऊ ॥
राम धाम पथ जाइहि सोई * जो पदपाव कबहिं मुनि कोई ॥
तब रघुवीर श्रमित सिय जानी * देखि निकट वट शीतलपानी ॥
तहँवसि कन्द मूल फल खाई * प्रात अन्हाइ चले रघुराई ॥
देखत वन सर शैल सुहाये * वाल्मीकि आश्रम प्रभु आये ॥
राम देखि मुनिवास सुहावन * सुन्दरगिरि काननजलपावन ॥
सरन सरोज विटप वन फूले * गुंजत मंजु मधुपरस भूले ॥
खग मृगविपुल कुलाहल करहीं * रहित वैर प्रमुदित मनचरहीं ॥
दोहा–शुचि सुन्दर आश्रम निरखि, हर्षे राजिवनैन ॥
सुनि रघुवर आगमन मुनि, आगे आये लैन ॥ १२४ ॥
मुनि कहँ राम दण्डवत कीन्हा * आशिर्वाद विप्र वर दीन्हा ॥

१ पर्वत । २ ब्रह्मा । ३ लक्ष्मणजी । ४ वसन्त । ५ कामदेव । ६ वचनोंसे परे । ७ तालाबोंमेंकमल । ८ वनमें वृक्षफूलेहुयेहैं । ९ भ्रमर ।

देखि राम छबि नयन जुडाने * करि सन्मान आश्रमहिं आने ॥
तब मुनि आसन दिये सुहाये * मुनिवर अतिथिप्राणप्रियपाये ॥
कन्द मूल फल मधुर मँगाये * सिय सौमित्र राम फल खाये ॥
वाल्मीकि मन आनँद भारी * मंगल मूरति नयन निहारी ॥
तब कर कमल जोरि रघुराई * बोले वचन श्रवण सुखदाई ॥
तुम त्रिकालदरशी मुनिनाथा * विश्वबंदरजिमितुम्हरे हाथा ॥
असकहिसबप्रभुकथाबखानी * जेहि जेहिभाँतिदीन्ह बन रानी॥
दोहा–तात वचन पुनि मातु मत, भाइ भरत अस राउ ॥
मोकहँदरशतुम्हारप्रभु, सबममपुण्य प्रभाउ ॥ १२५ ॥
देखि पाँय मुनिराय तुम्हारे * भये सुकृत सब सफल हमारे॥
अब जहँ राउर आयसु होई * मुनि उद्वेग न पावहिं कोई ॥
मुनि तापस जिनते दुख लहहीं * ते नरेश बिनु पावक दहहीं ॥
मंगलमूल विप्र परितोषू * दहै कोटि कुल भूसुर रोषू ॥
अस जियजानि कहियसोठाऊं * सिय सौमित्र सहिततहँ जाऊं॥
तहँ रचि रुचिर पर्ण तृणशाला * वास करौं कछु काल कृपाला ॥
सहजसरल सुनि रघुबरबानी * साधु साधु बोले मुनिज्ञानी ॥
कसन कहहु अस रघुकुल केतू * तुम पालक सन्तत श्रुतिसेतू ॥
छंद–श्रुति सेतु पालक राम तुम जगदीश माया जानकी ॥
जो सृजति जगपालति हरति रुख पाइ कृपानिधानकी ॥
जो सहस शीश अहीश महिधर लषण सचराचर धनी ॥
सुरकाजहित नरराज तनुधरि चल्यहुमर्दन खल अनी ॥५॥
सो०–राम स्वरूप तुम्हार, वचन अगोचर बुद्धिवर ॥
अविगति अकथ अपार, नेति नेति नित निगमकह ॥ ५ ॥
जगपेखन तुम देखन हारे * विधि हरिशम्भु नचावन हारे ॥
तेउनहिं जानहिं मर्म्म तुम्हारा * और तुमहिं को जाननहारा ॥
सोजानै जेहि देहु जनाई * जानत तुमहिं तुमहिं हैजाई ॥

१ संसारबेर । २ क्रोध । ३ वेदकी मर्यादाके पालनकर्त्ता । ४ आदिशक्ति । ५ स्वामी किन्तु सैन्य ।
६ किसीके जाननेकी गति नहीं है ।

तुम्हरी कृपा तुमहि रघुनन्दन * जानत भक्त भक्त उर चन्दन ॥
चिदानन्द मय देह तुम्हारी * विगत विकार जान अधिकारी ॥
नरतनु धरेहु सन्त सुर काजा * कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे * जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥
तुम जो कहहु करहु सब साँचा * जसकाछिय तसचाहिय नाँचा ॥
दोहा-पुँछयउ मोहिं कि रहहुँ कहँ, मैं कहते सकुचाउँ ॥
जहँ न होउ तहँ देहुँ कहि, तुमहिं दिखावौं ठाउँ ॥ १२६ ॥
सुनि मुनि वचन प्रेम रस साने * सकुचि राम मनमहँ मुसुकाने
वाल्मीकि हँसि कहहिं बहोरी * वाणी मधुर अमिय रस बोरी ॥
सुनहु राम अब कहौं निकेता * बसहुजहाँ सिय लषण समेता ॥
जिनके श्रवण समुद्र समाना * कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे * तिनके हिये सदन तव रूरे ॥
लोचन चातक जिन करि राखे * रहहिं दरशजलधर अभिलाषे ॥
निदरहिंसिंधु सरित सरवारी * रूप बिन्दु लहि होहिं सुखारी ॥
तिनके हृदय सदन सुखदायक * वसहुलषणासियसहरघुनायक ॥
दोहा-यश तुम्हार मानस विमल, हंसनि जीहा जासु ॥
मुक्ताहल गुण गण चुगहिं, वसहु राम हिय तासु ॥ १२७ ॥
प्रभुप्रसादशुचि सुभग सुवासा * सादर जासु लहै नित नाशा ॥
तुमहिं निवेदित भोजन करहीं * प्रभु प्रसाद पट भूषण धरहीं ॥
शीशनवहिं सुर गुरु द्विज देखी * प्रीतिसहितकरिविनयविशेखी ॥
कर नित करहिं राम पद पूजा * राम भरोस हृदय नहिं दूजा ॥
चरण राम तीरथ चलि जाहीं * राम वसहु तिनके मन माहीं ॥
मंत्रराज नित जपहि तुम्हारा * पूजहिं तुमहिं सहित परिवारा ॥
तर्प्पण होम करहिं विधिनाना * विप्र जेवाइ देहिं बहुदाना ॥
तुमतेअधिक गुरुहिजिय जानी * सकल भाव सेवहिं सनमानी ॥
दोहा-सब कर माँगहिं एक फल, रामचरण रति होउ ॥

१ स्थान । २ अनेक नदियाँ । ३ सुन्दर । ४ मेघ । ५ देवता । ६ ब्राह्मण । ७ हाथ । ८ ओम् । ९ भीति ।

तिनके मन मन्दिर वसहु, सिय रघुनंदन दोउ ॥ १२८ ॥
कामक्रोध मद मान न मोहा * लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा॥
जिनके कपट दम्भनहिं माया * तिनके हृदय बसहु रघुराया ॥
सबके प्रिय सबके हितकारी * दुख सुख सरिस प्रशंसा गारी॥
कहहिं सत्य प्रियवचन विचारी * जागत सोवत शरण तुम्हारी॥
तुमहिं छाँडि गति दूसरि नाहीं * राम बसहु तिनके उर माहीं ॥
जननी सम जानहिं परनारी * धन पराय विषते विष भारी ॥
जे हर्षहिं पर सम्पति देखी * दुखित होहिं पर विपति विशेषी॥
जिनहिं राम तुम प्राणपियारे * तिनके उर शुभ सदन तुम्हारे॥
दोहा-स्वामि सखा पितु मातु गुरु, जिनके सब तुम तात ॥
तिनके मन मन्दिर वसहु, सीय सहित दोउ भ्रात ॥१२९॥
अवगुण तजि सबकेगुण गहहीं * विप्र धेनु हित संकट सहहीं ॥
नीति निपुण जिनकी जगलीका * घर तुम्हार तिनके मन नीका ॥
गुण तुम्हार समुझहिं निजदोसू * जेहिं सब भाँति तुम्हारभरोसू॥
राम भक्त प्रिय लागहिं जेही * तेहि उर बसहु सहित वैदेही ॥
जाति पाँति धन धर्म्म बड़ाई * प्रिय परिवार सदन समुदाई ॥
सब तजि तुमहिं रहै लवलाई * ताके हृदय वसहु रघुराई ॥
स्वर्ग्ग नरक अपवर्ग्ग समाना * जहँ तहँ दीख धरे धनु बाना ॥
मन क्रम वचन जो राउर चेरा * राम करहु ताके उर डेरा ॥
दोहा-जाहि न चाहिय कबहुँ कछु, तुम सन सहज सनेह ॥
वसहु निरन्तर तासु उर, सो राउर निज गेह ॥ १३० ॥
इहिविधि मुनिवर ठाम दिखाये * वचन सप्रेम राम मन भाये ॥
कह मुनिसुनहुभानुकुलनायक * आश्रमकहौंसमयसुखदायक॥
चित्रकूट गिरि करहु निवासू * तहँ तुम्हार सबभाँति सुपासू ॥
शैल सुहावन कानन चारू * करि केहरि मृग विहँगविहारू॥
नदी पुनीत पुराण बखानी * अत्रितीय निज तप बल आनी॥

१. माताके तुल्य । २. जानकीजी ।

सुरसरि धार नाम मन्दाकिनि * जोसब पातक पोतक डाकिनि॥
अत्रि आदि मुनिवर तहँ बसहीं*करहिं योग जप तप तनुकसहीं॥
चलहु सकल श्रम सब कर हरहू* राम देहु गौरव गिरिवरहू॥
दोहा–चित्रकूट महिमा अमित, कही महामुनि गाय॥
आइ अन्हाने सरित वर, सीय सहित दोउ भाय॥ १३१॥
रघुवर कहेउ लषण भल घाटू * करहुकतहुँ अब ठाहर ठाटू॥
लषण दीखपयं उतर करारा*चहुँदिशिफिरयोधनुषजिमिनारा
नदी पनच शर शम दम दाना * सकलकलुषकलिसाउजनाना॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी * चूक न घात मारु मुठभेरी॥
असकहि लषण ठाँव दिखरावा * थलविलोकिरघुपतिसुखपावा॥
रमेउ राम मन देवन जाना * चले सहित सुरपतिपरधाना॥
कोल्ह किरात वेष धरि आये * रच्यो पर्ण तृण सदन सुहाये॥
वरणि नजाइँ मंजु दुइ शाला * एक ललित लघु एक विशाला॥
दोहा–लषण जानकी सहित प्रभु, राजत पर्ण निकेत॥
सोह मदन मुनि वेष जनु, रति ऋतुराज समेत॥ १३२॥
अमर नाग किन्नर दिगपाला * चित्रकूट आये तेहि काला॥
राम प्रणाम कीन्ह सबकाहू * मुदित देवलहि लोचनलाहू॥
वरषि सुमन कह देव समाजू * नाथ सनाथ भये हम आजू॥
करि विनती दुख दुसह सुनाये * हर्षित निज निज गेह सिधाये॥
चित्रकूट रघुनन्दन छाये * समाचारसुनि सुनि मुनिआये॥
आवत देखि मुदित मुनि वृन्दा * कीन्ह दण्डवत रघुकुलचन्दा॥
मुनि रघुवरहिं लाइ उर लेहीं * सफल होनहित आशिषदेहीं॥
सिय सौमित्रि राम छवि देखहिं *साधनसकलसफलकरिलेखहिं॥
दोहा–यथायोग्य सन्मानि प्रभु, विदा किये मुनिवृन्द॥
करहिं योग जप यज्ञ तप, निज आश्रमस्वच्छन्द॥ १३३॥
यह सुधि कोल किरातन पाई * हरषे जनु नवनिधि घर आई॥

१ बर्छोको। २ मान्य। ३ सामान। ४ पयस्विनीनदी। ५ चिल्ला। ६ बाण। ७ पाप।

कन्द मूल फल भरि भरि दोना * चले रंक जनु लूटन सोना ॥
तिन्ह महँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता * और तिनहिं पूँछहिं मगु जाता ॥
कहत सुनत रघुबीर निकाई * आय सबन देखे रघुराई ॥
करहिं जो हारि भेंट धरि आगे * प्रभुहिं बिलोकत अति अनुरागे
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढे * पुलक शरीर नयन जल बाढे ॥
राम सनेह मगन सब जाने * कहि प्रियवचन सकल सनमाने
प्रभुहिं जोहारि बहोरि बहोरी * वचन बिनीत कहहिं कर जोरी॥

दोहा--अब हम नाथ सनाथ सब, भये देखि प्रभु पाँय ॥
भाग्य हमारे आगमन, राउर कोशलराय ॥ १३४ ॥

धन्यभूमि वन पन्थ पहारा * जहँ जहँ नाथ पाँव तुम धारा ॥
धन्य विहँगमृग कानन चारी * सफलजन्म भयेतुमहिं निहारी॥
हम सब धन्य सहित परिवारा * देखि नयनभरि दरश तुम्हारा॥
कीन्ह वास भल ठाँव विचारी * इहाँ सकल ऋतु रहब सुखारी॥
हम सब भाँति करब सेवकाई * करि[1] केहरि[2] अहि[3] बाघ बराई ॥
वनबेहड़ गिरि कन्दर खोहा * सब हमार प्रभु पग पग जोहा ॥
तहँ तहँ तुमहिं अहेर खेलाउब * सर निर्झर सब ठाँव दिखाउब॥
हम सेवक परिवार समेता * नाथ न सकुचब आयसु देता ॥

दोहा--वेद वचन मुनि मन अगम, ते प्रभु करुणाऐन ॥
वचन किरातनके सुनत, जिमि पितु बालक बैन ॥ १३५ ॥

रामहिं केवल प्रेम पियारा * जानि लेहु जो जाननिहारा ॥
राम सकल वनचर परितोषे * कहि मृदुवचन प्रेम परिपोषे ॥
बिदा किये शिरनाय सिधाये * प्रभु गुण कहत सुनतघरआये॥
यहिविधि सीय सहित दोउभाई * बसहिंविपिनसुरमुनिसुखदाई॥
जबते आइ रहे रघुनायक * तबते भो वन मंगलदायक ॥
फूलहिं फलहिं विटप विधिनाना * मंजु ललित वर बेलि विताना[4] ॥
सुरतरु सरिस स्वभाव सुहाये * मनहुँ विबुध वनपरिहरिआये ॥

१ हाथी। २ सिंह। ३ सर्प। ४ चँदोये।

गुंजत मंजुल मधुकर श्रेनी * त्रिविध बयारि बहै सुखदेनी ॥
दोहा—नीलकण्ठ कलकण्ठ शुक, चातक चक्र चकोर ॥
भाँति भाँति बोलहिं विहँग, श्रवण सुखद चितचोर॥१३६॥
करि केहरि कपि कोल कुरंगा * विगत वैर विहरहिं इक संगा ॥
फिरत अहेर राम छवि देखी * होहिं मुदित मृगवृन्द विशेखी॥
विबुध विपिनजहँलग जगमाहीं * देखि राम वन सकल सिहाहीं॥
सुरसरिसरस्वतिदिनकरकन्या* मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥
सब सरि सिन्धु नदी नद नाना * मन्दाकिनिकर करहिंबखाना॥
उदय अस्त गिरिवर कैलासू * मन्दर मेरु सकल सुर वासू ॥
शैल हिमाचल आदिक जेते * चित्रकूट यश गावहिं तेते ॥
विन्ध्य मुदित मन सुखनसमाई* बिनु श्रम विपुल बड़ाई पाई ॥
दोहा—चित्रकूटके विहँग मृग, बेलि विटप तृण जाति ॥
पुण्य पुंज सब धन्य अस, कहहिं देव दिनराति ॥ १३७ ॥
नयनवन्त रघुपतिहि विलोकी * पाइ जन्म फल होहिंविशोकी॥
परशि चरणरज अचर सुखारी * भये परमपदके अधिकारी ॥
सो वन शैल सुभाय सुहावन * मंगलमय अतिपावन पावन ॥
महिमा कहौं कवन विधितासू * सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू॥
पयपयोधि तजि अवध विहाई * जहँ सिय राम लषण रहे आई॥
कहिनसकहिंसुखभाजसकानन* जोशतसहसहोहिंसहसानन ॥
सो मैं वरणि सकौं विधि केहीं * डाबर कमठ कि मन्दरलेहीं ॥
सेवहिं लषण कर्म मन वानी * जाइ न शील सनेह बखानी ॥
दोहा—क्षणक्षण सिय लखि रामपद, जानि आपु पर नेह ॥
कहत लषण स्वप्ने न चित, बन्धु मातु पितु गेह ॥१३८॥
रामसंग सिय रहहिं सुखारी* पुर परिजन गृहसुरतिबिसारी॥
क्षण क्षणपियविधुवदननिहारी * प्रमुदितमनहुचकोरकुमारी ॥
नाह नेह नित बढत विलोकी * हर्षितरहतदिवसजिमिकोकी॥

१ कोकिल । २ सुअर । ३ हरिण । ४ नर्मदा । ५ एकलक्ष । ६ शेषनाग । ५ गड्ढा । ८ कछुआ । ९ मन्दराचल पर्वत। १० चंद्र

सिय मन रामचरण अनुरागा * अवधसहससम वनप्रियलागा॥
पर्णकुटी प्रिय प्रीतम संगा * प्रिय परिवार कुरंग[1] विहंगा[2] ॥
सासुश्वशुरसममुनितियमुनिवर * अशनअमियसमकन्दमूलफर
नाथ साथ साथरी सुहाई * मयनशयनशतसमसुखदाई ॥
लोकप[3] होहिं विलोकत जासू * तेहि किमिमोहै विषयविलासू॥
दोहा—सुमिरत रामहिं तजहिं जन, तृणसम विषय विलासु ॥
रामप्रिया जगजननि सिय, कछु न आचरज तासु॥१३९॥
सीयलषणजेहिविधिसुखलहहीं * सोइ रघुनाथ करैं जोइ कहहीं ॥
कहहिं पुरातन कथा कहानी *सुनहिंलषणसियअतिसुखमानी
जबजब रामअवध सुधिकरहीं * तब तब वारि विलोचन भरहीं॥
सुमिरि मातु पितु परिजनभाई* भरत सनेह शील सेवकाई ॥
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी * धीरज धरहिं कुसमय विचारी॥
लखिसियलषणविकलहैजाहीं *जिमिपुरुषहिंअनुसरपरिछाहीं॥
प्रियाबन्धु गति लखिरघुनन्दन * धीर कृपालु भक्तउर चन्दन ॥
लगे कहन कछु कथा पुनीता * सुनि सुखलहहिंलषणअरुसीता
दोहा—राम लषण सीता सहित, सोहत पर्ण निकेत ॥
जिमि वसि वासव[4] अमरपुर, शची जयन्त समेत ॥ १४० ॥
जुगवहिंप्रभुसियअनुजहिंकैसे * पलक विलोचन गोलक जैसे ॥
सेवहिं लषण सीय रघुवीरहिं * जिमि अविवेकीपुरुष शरीरहिं ॥
इहिविधि प्रभुवनवसहिंसुखारी * खगमृगसुरतापसहितकारी ॥
कहेउँ राम वन गवन सुहावा *सुनहुसुमन्तअवधजिमिआवा ॥
फिरेउ निषाद प्रभुहि पहुँचाई * सचिव सहित रथ देखेउ आई॥
मंत्री विकल विलोकि निषादू * कहिनसकहिंजसभयउविषादू ॥
राम राम सिय लषण पुकारी * परेउधरणितलव्याकुलभारी॥
देखिदखिनादिशिहय[5]हिहिनाहीं * जिमिबिनुपंखविहँग[6]अकुलाहीं ॥
दोहा—नहिं तृण चरहिं न पियहिं जल, मोचत लोचनवारि[7] ॥

१ मृग । २ पक्षी । ३ आठौं दिक्पाल—वरुण, वायु, कुबेर, महादेव, इन्द्र, अग्नि, धर्मराज, निर्ऋति । ४ इन्द्र । ५ अश्व । ६ पक्षी । ७ जल ।

व्याकुल भयउ निषादपति, रघुबर बाजि निहारि ॥ १४१ ॥
धरि धीरज तब कहहिं निषादू * अब सुमन्त्र परिहरहु विषादू ॥
तुम पण्डित परमारथ ज्ञाता * धरहु धीर लखि वाम विधाता ॥
विविधकथाकहिकहि मृदुबानी * रथ बैठारे बरबस आनी ॥
शोकशिथिलरथसकहिनहाँकी * रघुवर विरह पीर उर बाँकी ॥
तरफराहिं मग चलहिं नघोरे * वनमृग मनहु आनि रथ जोरे ॥
अटकिपरहिंफिरिचितवहिंपीछे * राम वियोग विकल दुख तीछे॥
जो कह राम लषण वैदेही * हिकरि २ हय हेरहिं तेही ॥
बाजिविरहगतिकिमिकहिजाती * बिनुमणिफणीविकलजोहिभाँती
दोहा—भये निषाद विषाद वश, देखत सचिव तुरंग ॥
बोलि सुसेवक चारितव, दिये सारथी संग ॥१४२॥
गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई * विरह विषाद वरणि नहिंजाई॥
चले अवध लै रथहि निषादा * होत क्षणहि क्षण मगन विषादा
शोच सुमन्त्र विकल दुखदीना * धिक जीवन रघुवीर विहीना ॥
रहहिं न अन्तहु अधम शरीरू * यश न लहेउ बिछुरत रघुवीरू॥
भये अयश अघभाजन प्राना * कौन हेतु नहिं करत पयाना ॥
अहह मन्दमति अवसर चूका * अजहुँ न हृदयहोत दुइ टूका ॥
मींजि हाथ शिर धुनि पछिताई * मनहु कृपण धनराशिगँवाई ॥
विरद बाँधि वर वीर कहाई * चले समर जनु सुभट पराई ॥
दोहा—विप्र विवेकी वेदविद, सम्मत साधु सुजाति ॥
जिमि धोखे मदपान करि, सचिव शोच त्यहि भाँति॥१४३॥
जिमिकुलीनतियसाधुसयानी * पतिदेवता कर्म्म मन बानी ॥
रहै कर्म्मवश परिहरि नाहू *सचिवहृदय तिमि दारुण दाहू॥
लोचन सजल दृष्टि भइ थोरी * सुनै न श्रवण विकलमति भोरी
सूखहिं अधर लागि मुहँ लाटी *जिय न जाइ उरअवध कपाटी॥
विवरण भयउ न जाइ निहारी * मारेसि मनहुँ पिता महतारी ॥

हानिगलानिविपुल मन व्यापी * यमपुरपन्थ शोच जिमि पापी॥
वचन न आव हृदय पछिताई * अवध काह मैं कहिहौं जाई ॥
रामरहित रथ देखिहि जोई * सकुचिहि मोहिं विलोकतसोई॥
दोहा--धाइ पूँछिहहिं मोहिं जब, विकल नगर नर नारि ॥
उतर देब मैं सबहिं तब, हृदय वज्र बैठारि ॥१४४॥
पुछिहहिं दीन दुखित सब माता*कहब काह मैं तिनहिं विधाता ॥
पुछिहहिं जबहिं लषण महतारी*कहिहौं कौन सँदेश सुखारी ॥
रामजननि जब आइहि धाई *सुमिरि वत्स जिमि धेनु लवाई॥
पूँछत उतर देब मैं तेही * गे वन राम लषण वैदेही ॥
जेइ पूँछिहि तेहि उत्तर देवा *जाइ अवध अब यह सुख लेवा॥
पूँछहिं जबहिं राउ दुखदीना * जीवन जासु राम आधीना ॥
देहौं उतर कवन मुँह लाई * आयउँ कुशल कुँवर पहुँचाई ॥
सुनत लषण सिय राम सँदेशू * तृण इव तनु परिहरब नरेशू ॥
दोहा-हृदय न विदरत पंक जिमि, बिछुरत प्रीतम नीर ॥
जानत हौं मोहिं दीन्ह विधि, यमयातना शरीर ॥ १४५ ॥
इहिविधि करत पन्थ पछितावा * तमसा तीर तुरत रथ आवा ॥
विदा किये करिबिनय निषादू * फिरे पाँय परि विकल विषादू॥
पैठत नगर सचिव सकुचाई * जनु मारेसि गुरु ब्राह्मण गाई ॥
बैठि विटप तर दिवस गँवावा * साँझसमय तेइँ अवसर पावा॥
अवध प्रवेश कीन्ह अँधिआरे * पैठभवन रथ राखि दुआरे ॥
जिन्हजिन्हसमाचार सुनिपाये * भूपद्वार रथ देखन आये ॥
रथपहिंचानि विकल लखिघोरे * गरहिं गात जिमि आतप बोरे॥
नगर नारि नर व्याकुल कैसे * निघटत नीरे मीन गण जैसे ॥
दोहा-सचिवआगमन सुनत सब, विकलभयो रनिवास ॥
भवन भयंकर लाग तेहिं, मानहुँ प्रेतनिवास॥ १४६ ॥
अति आरत सब पूँछहिं रानी * उतर न आव विकलभइ वानी॥

१ पाला। २ पानी। ३ घर। ४ दुःखित।

सुनै न श्रवण नयन नहिं सूझा * कहहु कहाँ नृप जेहि तेहि बूझा॥
दासिन्ह दीख सचिव विकलाई * कौशल्या गृह गई लिवाई॥
जाइ सुमंत्र दीख कस राजा * अमिय रहित जनु चन्द्रविराजा
अशन न शयन विभूषण हीना * परेउ भूमितल निपट मलीना॥
लेइ उसाँस शोच यहि भाँती * सुरपुरते जनु खस्यो ययाती॥
लेत शोच भरि क्षण क्षण छाती * जनु जरि पंख परेउ सम्पाती॥
"को कहि सकै भूप विकलाई * रघुवरविरह अधिक अधिकाई"॥
राम राम कहि राम सनेही * पुनि कह राम लषण वैदेही॥
दोहा-देखि सचिव जय जीव कहि, कीन्हेसि दण्ड प्रणाम॥
सुनत उठे व्याकुल नृपति, कहँ सुमंत्र कहँ राम॥१४७॥
भूप सुमंत्र लीन्ह उर लाई * बूझत कछु अधार जनु पाई॥
सहित सनेह निकट बैठारी * पूंछत राउ नयन भरि वारी॥
राम कुशल कहु सखा सनेही * कहँ रघुनाथ लषण वैदेही॥
आनेहु फेरि कि वनहिं सिधाये * सुनत सचिव लोचनजलछाये॥
शोक विकल पुनि पूंछ नरेशू * कहु सिय राम लषण संदेशू॥
राम रूप गुण शील स्वभाऊ * सुमिरिसुमिरि उर शोचतराऊ॥
राज्य सुनाइ दीन्ह वनवासू * सुनि मन भयउ न हर्ष हरासू॥
सो सुत विछुरत गये न प्राना * को पापी जग मोहिं समाना॥
दोहा-सखा राम सिय लषण जहँ, तहाँ मोहिं पहुँचाउ॥
नाहिंत चाहत चलन अब, प्राण कहौं सतभाउ॥ १४८॥
पुनि पुनि पूंछत मंत्रिहि राऊ * प्रीतम सुवन सदेश सुनाऊ॥

*ययातिराजा यज्ञादि कर्मका आचरण करके सदेह इन्द्रपदकी प्रार्थना कर इन्द्रलोकको गये तब इंद्र आगेसे आय इनका सत्कारकर लेजाय सिंहासनपर बैठाय छलसहित बहुत बड़ाईकर इनसे पूँछा कि राजा कहो तुमने कैसे २ धर्म किये हैं कि जिनके प्रतापसे मेरे पदको प्राप्त हुए. तब राजाने अपने पुण्यको बहुत बड़ाईके साथ इंद्रको सुनाया और ज्यों ज्यों सुनातेथे त्यों त्यों पुण्य क्षीण होता था जब कहते २ समस्त पुण्य क्षीण होगया तब इंद्रकी आज्ञासे देवताओंने ययातिको स्वर्ग से ढकेलदिया॥

१ सुधा। २ भोजन। ३ नींद। ४ जानकीजी। ५ शोच। ६ बार बार। ७ श्रीरामचन्द्र-लक्ष्मण।

सुनहु सखा सोइ करिय उपाऊ * राम लषण सिय बेगि दिखाऊ॥
सचिव धीर धरि कहि मृदुबानी * महाराज तुम पण्डित ज्ञानी ॥
वीर सुधीर धुरन्धर देवा * साधु समाज सदा तुम सेवा ॥
जन्म मरण सब दुख सुखभोगा * हानिलाभ प्रियमिलनवियोगा ॥
काल कर्म्मवश होहिं गुसाईं * बरबस राति दिवसकी नाईं ॥
सुख हर्षहिं जड़ दुख बिलखाहीं * दोउ सम धीर धरहिं मनमाहीं॥
धीरज धरहु विवेक विचारी * छाँड़िय शोच सकल हितकारी॥
दोहा–प्रथम वास तमसा भयउ, दूसर सुरसरि तीर ॥
अन्हाय रहे जलपान करि, सिय समेत दोउ वीर ॥ १४९ ॥
केवट कीन बहुत सेवकाई * सो यामिनि शृंगवेर गँवाई ॥
होत प्रात बटक्षीर मँगावा * जटा मुकुट निज शीशबनावा ॥
रामसखाँ तब नाव मँगाई * प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई ॥
लषण धरे धनु बाण बनाई * आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई ॥
विकल विलोकि मोहिं रघुवीरा * बोले मधुर वचन धरि धीरा ॥
तात प्रणाम तात सन कहेऊ * बार बार पदपंकज गहेऊ ॥
करब पाँय परि विनय बहोरी * तात करिय जनि चिन्तामोरी ॥
वन मग मंगल कुशल हमारे * कृपा अनुग्रह पुण्य तुम्हारे ॥

हरिगीतिका–छंद ।

तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं ।
प्रतिपालि आयसु कुशल देखन पाँय पुनि फिरि आइहौं ॥
जननी सकल परितोष परि परि पाँय करि बिनती घनी ।
तुलसी करेहु सोइ यत्न जेहि विधि कुशल रह कोशलधनी॥६॥

सोरठा–गुरुसन कहब सँदेश, बार बार पद पद्म गहि ॥
करब सोइ उपदेश, जेहि न शोच मोहिं अवधपति ॥ ६ ॥
पुरजन परिजन सकल निहोरी * तात सुनायहु विनती मोरी ॥
सोइ सब भाँति मोर हितकारी * जाते रह नरनाह सुखारी ॥

१ बरगदकादूध । २. निषादपति गुह । ३ आज्ञा । ४ चरणकमल ।

कहब सँदेश भरतके आये * नीति न तजब राज्य पद पाये॥
पालहु प्रजहिं कर्म मन बानी * सेवहु मातु सकल समजानी ॥
और निबाहब भायप भाई * करि पितु मातुसुजन सेवकाई॥
तात भाँति तेहि राखब राऊ * सोच मोर जेहि करहिं नकाऊ॥
लषण कहेउ कछु बचन कठोरा * बरजि राम पुनि मोहिंनिहोरा॥
बारबार निज शपथ दिवाई * कहब न तात लषण लरिकाई॥
दोहा–कहि प्रणाम कछु कहन लिय, सिय भइ शिथिल सनेह ॥
थकित वचन लोचन सजल, पुलक पल्लवित देह ॥१५०॥
तेहि अवसर रघुवर रुख पाई * केवट पारहि नाव चलाई ॥
रघुकुल तिलक चले इहि भाँती * देखेउँ ठाढ कुलिश धरि छाती॥
मैं आपन किमि कहब कलेशू * जियत फिरेउँ लै राम सँदेशू ॥
असकहिसचिववचनरहिगयऊ *हानि गलानि शोच वश भयऊ॥
सुनत सुमंत्र वचन नरनाहू * परेउ धरणि उर दारुणदाहू ॥
तलफत विषम मोह मन मापा * माजा मनहुँ मीनं कहँ व्यापा॥
करि विलाप सब रोवहिं रानी * महाविपतिकिमिजाइबखानी ॥
सुनि विलाप दुखहूँ दुख लागा * धीरजहू कर धीरज भागा ॥
दोहा–भयहु कुलाहल अवधअति, सुनि नृप राउर शोर ॥
विपुल विहँग[3] वन परयउनिशि, मानहुकुलिशकठोर ॥१५१॥
प्राण कण्ठ गत भयउ भुआलू * मणिविहीनजिमिव्याकुलव्यालू
इन्द्रियसकल विकल भइंभारी * जनुंसर सरसिज वनविनुवारी ॥
कौशल्या नृप दीख मलाना * रविकुलरवि अथये जियजाना॥
उर धरि धीर राम महतारी * बोली वचन समय अनुहारी ॥
नाथ समुझिमनकरियविचारू * राम वियोग पयोधि अपारू ॥
कर्णधार तुम अवधि जहाजू * चढेउ सकलप्रियवणिकसमाजू
धीरज धरिय तो पाइय पारू * नाहिंतबूडहि सब परिवारू ॥
जोंजियधरिय विनयपियमोरी * राम लषण सियामिलव बहोरी॥

१ वर्षाके पानीका फेना । २ मछली । ३ पक्षी । ४ बज्र । ५ सर्प । ६ ताल । ७ कमल । ८ मर्य्यादा चौदह वर्षकी ।

दोहा-प्रिया वचन मृदु सुनत नृप, चितयउ आँखि उघारि ॥
तलफत मीन मलीन जनु, सींचत शीतल वारि ॥ १५२ ॥
धरि धीरज उठि बैठु भुआलू * कहु सुमंत्र कहँ राम कृपालू ॥
कहाँ लषण कहँ राम सनेही * कहँ प्रिय पुत्र वधू वैदेही ॥
विलपत राउ विकल बहु भाँती * भइयुग सरिस सिराति न राती
तापस अन्ध शाप सुधि आई * कौशल्यहि सब कथा सुनाई ॥

अथ क्षेपक ।

एक समय सुन प्रिया सयानी * मृगयाकी मेरे मन आनी ॥
सब मृगया कर साज सजाई * गयउ वनहि सँग सेन सुहाई ॥
रैनि समय बेतस वन तीरा * बैठे सरवर तट मतिधीरा ॥
ताही समय लिये घट करमें * सरवन आयो जल हित सरमें ॥
तूँबा जलमें जबहिं डुबायो * भयो शब्द मेरे मन आयो ॥
जान्यो मृग तव धनुष सँभारा * लक्ष्य वेध कर तेहि उर मारा ॥
लागेउ हिये शब्द हा कीन्हो * यह मानुष मैंने तब चीन्हो ॥
गयउ निकट तबलख दुख पायो * शरवन मोसे वचन सुनायो ॥
शोच करहु मति नृपतिहमारी * जो मैं कहहुँ करहु यहि वारी ॥
मैं शरवन सेवहिं पितु माता * नयनाविहीन दोउ सुखदाता ॥
तिन्हैं तृषाने आन सतायो * लेन हेत जलको हौं आयो ॥
दोहा-सो तुमने अज्ञानसे, नृप मोहिं मारेहु बान ॥
सो खैंचहु अब देहसे, निकसन चाहत प्रान ॥ १५३ ॥
अरु तुम मन शंका मत मानो * ब्राह्मण वंश नहीं मैं जानो ॥
पर यक बात हिये तुम लावहु * मातापिता निकटचलि जावहु ॥
तिनको हितसों नीर पियाई * पाछे कहियो सब समझाई ॥
करहिं न शोच करहु उपदेशा * सत्यसन्ध रघुवंश नरेशा ॥
अब तुम दीजै बाण निकारी * सुन दशरथ दुःखित भयेभारी ॥
हियसे जबहिं निकारो बाना * ओं ओं कह छाँड़िहु प्राना ॥

नृप दशरथ घट लियो उठाई * तिनके मात पिता ढिग जाई ॥
प्यावन लगे नीर विनु बानी * तब बोले दम्पति दुख मानी ॥
दोहा-पुत्र न बोलत आज तुम, हमसे सुन्दर बैन ॥
कारण कौन सो कहहु तुम, जासों हो जिय चैन ॥ १५४ ॥
बिन बोले हम पियहिं न नीरा * सुन भये दशरथ अधिकअधीरा
सुनि वृत्तान्त पुनि दियो सुनाई * परे धरणि दोऊ अकुलाई ॥
पुत्र पुत्र कहि रोवन लागे * मोसे कहने लगे अभागे ॥
जहाँ पुत्र तहँ देउ दिखाई * तब मैं तिनको गयउँ लिवाई ॥
पुत्र उठाय गोद महतारी * रोवन लगी शब्द कर भारी ॥
पुनि दोउन यह बात सुनाई * दीजै नृपति चिता बनवाई ॥
सुन मैंने रच दीन्ह बनाई * बैठे पुत्र गोद दोउ जाई ॥
योगअग्निसे निज तनु जारा * मरण समय असवचनउचारा॥
दोहा-जिमि हम पुत्र वियोग में, दशरथ त्यागैं प्रान ॥
तैसेही तनु तजहु तुम, मानहु वचन प्रमान ॥ १५५ ॥
अस कह तापस गये सुरलोका * मेरे मन छायो अति शोका ॥
पुनि मैं निजमन कीन्ह विचारा * विनु समझे ऋषि वचनउचारा॥
पुत्र नहीं कोउ गेह हमारे *किमित्यागहिंतनुवचनतुम्हारे॥
शोच विहाय गेह में आयो * अब तक तुमको नहीं सुनायो ॥
साँच भई वह अब सब बाता * गये वन सीय राम सँग भ्राता ॥
प्राणपियारे वनहिं सिधारे * अब तक प्राण न गये हमारे ॥
अब सुख कौन मिलै जग माहीं * जेहिते प्राण न तनुते जाहीं ॥
राम लषण सिय कानन जाहीं * अब तक प्राण रहे तनु माहीं ॥
दोहा-प्रिय शरवन की कथासे, अब मोहिं रह्यो न धीर ॥
पुत्र विना जे नाहिं जिये, धन धन ते नरवीर ॥ १५६ ॥
इति क्षेपक ।

१ शरीर । २ विरह दुःख । ३ घर । ४ वन

मयउ विकल वर्णत इतिहासा * रामरहित धिक जीवन श्वासा ॥
सो तनु राखि करब मैं काहा * जेइ न प्रेम पन मोर निवाहा ॥
हा रघुनन्दन प्राण पिरीते * तुमबिनु जियतबहुतादिनबीते॥
हा जानकी लषण हा रघुवर *हापितुहितचितचातकजलधर ॥
दोहा-राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ॥
तनु परिहरि रघुवर विरह, राउ गये सुरधाम ॥१५७॥
जियन मरण फल दशरथ पावा * अण्ड अनेक अमलयशछावा॥
जियतराम विधुवदन निहारी * रामविरह मरि मरण सँवारी ॥
शोक विकल सब रोवहिं रानी * रूप शील बल तेज बखानी ॥
करहिं विलाप अनेक प्रकारा * परहिं भूमितल बारहिं बारा ॥
बिलपहिं विकलदासअरुदासी *घर घर रुदन करहिं पुरवासी ॥
अथयउ आजु भानुकुल भानू * धर्म अवधि गुण रूप निधानू ॥
गारी सकल कैकयिहि देहीं * नयनविहीन कीन्ह जग जेहीं ॥
इहिविधि बिलपत रैनि विहानी * आये सकल महामुनि ज्ञानी ॥
दोहा-तब वासिष्ठ मुनि समय सम, कहि अनेक इतिहास ॥
शोक निवारेउ सकलकर, निज विज्ञान प्रकाश ॥१५८॥

अथ क्षेपक।

* वासिष्ठजी बोले-हे कौशल्ये! क्या तौ हम और क्या तुम, यह सुख तथा दुःखकाभोग सबहीके अर्थ अवश्यहै, अन्तमें सबहीको मृत्यु है तौ फिर तुम क्यों शोक करती हो? हम प्राचीन राजाओंका इतिहास कहते हैं; सो तुम सुनो जिस्से तुम्हारा शोक दूर होगा, जो राजाओंके चरित्रोंको सुनतेहैं-उनकी आयुकी वृद्धि होतीहै और शुभग्रहोंका संचार होताहै। अविक्षितिके पुत्र राजा मरुत बड़े भाग्यवान्थे इन्द्रादिक सम्पूर्ण देवता बृहस्पतिको साथ ले उनके यज्ञमें आये थे राजाने कीर्त्तिमें इंद्रकोभी जीताथा, बृहस्पति और इन्द्रकी प्रीतिके अर्थ इस राजाकी यज्ञक्रियाके सम्पादन करनेको स्वीकारकर उस कार्यको सम्वर्तने निर्वाह किया था। उनके राज्यमें पृथ्वी विनाही कर्षण (जोतना) के धान्य को उत्पन्न करतीथी, उनके यज्ञमें विश्वेदेवा सभासद थे, साध्य और मरुद्गण

१ पपीहा। २ बादल। ३ अनेकब्रह्माण्ड। ४ निर्मल। ५ चन्द्रवदन। ६ महाराज दशरथ।

चारों ओरसे रक्षा करनेवाले थे; देवता उस यज्ञमें सोमरसका पानकर अत्यन्त तृप्तहुए थे और उस राजाने देवता, मनुष्य, गंधर्वोंको इतनी दक्षिणा दी थी कि जिसको वे उठा नहींसकेथे ! हे कौशल्ये ! वह राजा तुमसे बहुत धार्मिक और ज्ञानी तथा वैराग्ययुक्त थे जब वहभी मृत्युको प्राप्तहुए तो तुम इन राजाका शोक क्यों करतीहो । उतथिके पुत्र सुहोत्रभी मृत्युको प्राप्तहुए जिनके राज्यमें इन्द्रने एक वर्षतक सुवर्णकी वर्षा करीथी, वसुमति यथार्थ नामसे उनके राज्यमें थी, सारी नदियें सुवर्णवाहिनी थीं और नदियोंमें इन्द्रने सुवर्णहीके नक्र कच्छपादि उत्पन्न कर दिये थे, राजासुहोत्र यह देख विस्मयको प्राप्त हो उन सब नक्रादिकोंको ग्रहणकर कुरु जांगल देशमें रखकै यज्ञमें सब ब्राह्मणोंको दान कर दिया था वेभी तो मरे ॥ अङ्गदेशके राजाने यज्ञ करकै दशलाख श्वेतवर्णवाले घोड़े, दशलाख सुवर्णसे शोभित कन्या, दिग्गजोंके समान दशलक्ष हाथी, सुवर्णकी मालाओंसे भूषित एककोटि (करोड़) वृषभ और हजार गौ दक्षिणामें दीथीं इस बृहद्रथराजाके विष्णुपद नाम वाले पर्वमें यज्ञ करनेसे इन्द्र और ब्राह्मण सोमपान करनेसे उन्मत्त होगये थे, इसी प्रकार इस अंगदेशाधिपति राजा बृहद्रथने सौ यज्ञकरे इस राजाने जो यज्ञ में धनदियाथा उतने धनको दान देनेवाला आजतक कोई राजा नहीं हुआ जब वहभी कालके वश हुये तो तुम राजा दशरथका वृथा शोक क्यों करतीहो ॥ और राजा शिबि जिन्होंने रथमें इकलेही बैठकर सारे भूमंडलको जीताथा और फिर यज्ञमें अपना सर्वस्व दान कर दियाथा जब ऐसे २ राजाभी मृत्युके अधीन हुए तो तुम राजा दशरथका शोक क्यों करती हो । बड़े ऐश्वर्यवाले शकुन्तलाके पुत्र भरतने यमुनाके किनारे तीनसौ और सरस्वतीके तटपर बीस तथा गंगाके किनारेमें चौदह, इस प्रकार हजार अश्वमेध यज्ञ और सौ राजसूय यज्ञ किये थे उस समय उनके समान और कोई दूसरा राजा न था, राजाभरतने यज्ञवेदीका विस्तार और असंख्यों घोड़ोंको बाँधकर महर्षि कण्वको हजारपद्म द्रव्य सहित घोड़े दान कर दिये थे, हे कौशल्ये ! वेभी तो कालका ग्रास हुए तो तुम दशरथका वृथा शोक क्यों करती हो ॥ एक समय राजा भगीरथ एकान्त स्थानमें बैठेथे और उन राजाकी गोदमें गंगा विराजमानथीं इसीकारण गंगाका नाम 'उर्वशी' हुआ गंगाने राजा भगीरथको पिताके सदृश मानाथा इसी कारण आजतक गंगाका नाम ' भागीरथी ' प्रसिद्ध है, उन्हीं राजा भगीरथने यज्ञमें सुवर्णसे शोभायमान दशलक्ष कन्या दक्षिणामें दीथीं· वह कन्याओंका

समूह चार चार घोडेवाले रथों में स्थितथा, एक २ रथके पीछे सुवर्णकी माला ओंसे भूषित सौ २ हाथी, एक २ हाथीके पीछे सौ २ गौ, प्रत्येक गौके पीछे हजार२ मेष (मेंढ़े) और बकरी दानमें दीथी जब वेभी कालके मुखमें गये तौ दशरथके प्रति तुम्हारा शोक करना वृथा है ॥ राजादिलीपने भी यज्ञ करके धन तथा रत्नोंसे परिपूर्ण पृथ्वी दान करदीथी, उनके पुरोहितने प्रत्येक यज्ञमें हजार २ हाथियोंकी दक्षिणाली थी और यज्ञमें सुवर्णके यूप (खम्भ) गाड़े गयेथे. इन्द्रादिक सम्पूर्ण देवता यज्ञकी सुवर्णभूमिमें स्थितथे, गन्धर्व नृत्य करतेथे और गन्धर्वोंके राजा विश्वावसु गान कर रहेथे, जिन्होंने राजा दिलीप को आँखोंसे देखाभी था वेभी तौ स्वर्गगामी हुए जब ऐसे २ पुण्यात्माराजाभी कालका कलेवा हुए तौ तुम दशरथका शोक वृथा क्यों करोहो ॥ राजा युवनाश्वके पुत्र मान्धाताने एक दिनमें सारी पृथ्वीको जीताथा, अङ्गार, मरुत, असित, गय, अङ्ग और बृहद्रथको भी जीताथा, अंगारके साथ युद्धमें इनके धनुष की टंकारसे मानो आकाशमण्डल विदीर्ण होताथा और सूर्यके उदयसे अस्त पर्यंत पृथ्वीको जीताथा इन राजाने सौ अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञ किये थे; ब्राह्मणोंको दश योजन लम्बा और एक योजन चौड़ा सुवर्णका मत्स्य दक्षिणामें दियाथा जब वेभी मृत्युकेही अधीन हुए तो तुम वृथा शोक मतकरो ॥ नहुषके पुत्र राजाययाति एकही स्थानमें बैठकर बलसे युगकीलकको फेंकते थे, वह कीलक जितनी दूर जाकर गिरताथा अपने स्थानसे उतनीही दूरतक यज्ञकी वेदी बनातेथे, उस कीलकका नाम शम्यापात है राजा ययातिने शत प्रधान यज्ञ और सौ वाजपेय यज्ञ कर सुवर्ण के तीन पर्वत दान करके ब्राह्मणोंको, तृप्त कराथा और दैत्यों के समूहको युद्धमें मारकर यदु द्रुह्यु आदि अपने पुत्रोंको पृथ्वीको देकर पुरूको राज्यतिलक कर स्त्री सहित वनको गये, जब वेभी मरे तौ तुम राजाका शोक क्यों करती हो ॥ राजा नाभागके पुत्र अम्बरीष अपनी प्रजामें बहुत प्रीति रखतेथे, उन्हों ने यज्ञमें स्थित दशलक्ष राजाओंको ब्राह्मणोंकी सेवामें नियुक्त करदियाथा वे सब राजा ब्राह्मणोंको दक्षिणामें दियेथे जब वोह भी मृत्युवश हुए तो तुम अपने पति दशरथका शोक क्यों करती हो ॥ कौशल्ये! राजाशशिबिन्दुके दशलाख पुत्र थे, एक २ पुत्रको सौ २ कन्या विवाहीथीं प्रत्येक कन्याके पीछे सौ २ हाथीथे, एक हस्तीके पीछे शत २ रथ, एक २ रथके पीछे सुवर्णके आभूषण युक्त सौ २ घोड़े प्रत्येक घोड़ेके पीछे सौ २ गौ एक २ गौ

के पीछे सौ २ मेंढे और बकरी दायजमें आई थीं, राजाशशिबिन्दुने वह सब यज्ञमें दान करदियाथा जब वेभी कालके गालमें गये तौ तुम्हारा शोक वृथाहै॥ हे कौशल्ये ! अमूर्त्तरयाके पुत्र राजागयने सौ वर्ष पर्यन्त होमसे बचीहुई वस्तु का भोजन कराथा, अग्नि आहुतिओंसे प्रसन्न हो वर देनेको तय्यार हुए-तबराजा ने यही वर माँगा कि आपकी कृपासे मेरी धर्ममें श्रद्धा, सत्यमें प्रेम और निरन्तर दान करनेसेभी धनका नाश नहींहो अग्निने प्रसन्न होकर कहा ऐसाही होगा. इन राजाने हजार वर्ष पर्यन्त-दर्श, पौर्णमास, चातुर्मास तथा अश्वमेधयज्ञ करेथे, इन्होंने स्वाहासे देवगण, स्वधासे पितृगण, इच्छानुसार साधनोंसे सभी गणोंको तृप्त किया था, अश्वमेधयज्ञमें बीस व्याम चौडी और दशव्याम लंबी सुवर्णमय पृथ्वी ब्राह्मणोंको दक्षिणामें दीथी, गंगाकी वालुकाके जितने कणहोते हैं उतनीही गौदान कर ब्राह्मणोंको दीथीं. ऐसे २ राजाभी तौ एक दिन मरही गये तौ तुम्हारा शोक करना सब वृथा है ॥ और हे कौशल्ये ! जब इसी इक्ष्वाकुवंशमें उत्पन्न हुए राजा सगर जिनकी कीर्त्ति आकाशतक छारही है वेभी मरही गये तौ तुम वृथा शोक क्यों करती हो ॥ और भी सुनो, राजावेणु के पुत्र राजा पृथुको सब महर्षियोंने इकट्ठे होकर दण्डकवनमें राज्यतिलक कियाथा वह राजा सब जगह अत्यन्त विख्यात राजा हुए इसी कारण उनका 'पृथु' नाम हुआ, वह राजा क्षत (नाश) से त्राण (रक्षा) करतेथे इस कारण 'क्षत्रि' नाम उनमेंही चारितार्थ हो रहाथा, वह प्रजाको आनन्द देते थे इस कारण राजा शब्द उन्हींमें घटताथा, उनके राज्यमें पृथ्वी बिनाही कर्षणके धान्योंको उत्पन्न करनेवाली और बहुतसे फूल फलोंको उत्पन्न करनेवालीथी प्रत्येक पत्रमें मधु उत्पन्न होताथा, संपूर्ण प्रजा रोगरहित और निर्भयथी, जबराजा जलमें चलते थे तब नदी, समुद्र स्थिर हो जातेथे. उन राजाने अश्वमेध यज्ञमें इकीस सुवर्णके पर्वत दान कियेथे, वेभी मृत्युहीके अधीनहुए तौ तुम्हारा राजा दशरथके प्रति शोक करना वृथा है ॥

इति क्षेपक ।

तेल नाव भरि नृप तनु राखा * दूत बुलाइ बहुरि अस भाषा ॥
धावहु वेगि भरत पहँ जाहू * नृपसुधिकतहुँकहहुजनिकाहू ॥
इतनै कहेउ भरत सन जाई * गुरु बुलाइ पठये दोउ भाई ॥
सुनि मुनि आयसु धावन धाये * चले वेगि वर वाजि लजाये ॥

अनरथ अवध अरंभेउ जबते * कुशकुन होहिंभरतकहँतबते ॥
देखहिं राति भयानक सपना *जागि करहिं बहु कोटिकलपना॥
विप्र जेवाइँ देहिं बहु दाना *शिवअभिषेककरहिंविधिनाना॥
माँगहिं हृदय महेश मनाई * कुशलमातुपितु परिजनभाई ॥
दोहा–इहि विधि शोचत भरत मन, धावन पहुँचे जाइ ॥
गुरु अनुशासन श्रवण सुनि, चले गणेश मनाइ ॥१५९॥
चले समीर वेग हय हाँके * लाँघत सरित शैल वन बाँके ॥
हृदय शोच बड़ कछु न सुहाई * अस जानहिं जिय जाउँ उड़ाई॥
एक निमेष वर्ष सम जाई *इहिविधिभरत अवधनियराई ॥
अशकुन होहिं नगर पैठारा * रटहिं कुभाँति कुखेत करारा ॥
खर शृगाल बोलहिं प्रतिकूला * सुनि सुनि होहिं भरतउर शूला॥
श्रीहत सर सरिता वन बागा * नगर विशेष भयावन लागा ॥
खग मृग हय गय जाहिन जोये * राम वियोग कुरोग विगोये ॥
नगर नारि नर निपट दुखारी * मनहुँ सबनि सब सम्पतिहारी॥
दोहा–पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु, गवहिंजुहारहिंजाहिं ॥
भरत कुशल नहिं पूछि सक, भाविषादमनमाहिं ॥१६०॥
हाटबाट नहिं जाइ निहारी * जनुपुरदशदिशि लागिदवारी ॥
आवतसुत सुनिकैकयनन्दिनि * हरषीरविकुल जलरुहचंदिनि॥
सजि आरती मुदित उठिधाई * द्वारहिं भेटि भवन लै आई ॥
भरत दुखित परिवार निहारा * मानहुँ तुहिन वनज वन मारा॥
कैकेयी हर्षित इहि भाँती * मनहुँ मुदित दवलाइ किराती॥
सुतहि सशोच देखि मन मारे * पूछति नैहर कुशल हमारे ॥
सकल कुशलकहभरत सुनाई * पूछी निजकुलकुशलभलाई ॥
कहु कहँ तात कहाँ सब माता * कहँसियरामलषणप्रियभ्राता ॥
दोहा–सुनि सुत वचन सनेह मय, कपट नीर भरिनैन ॥
भरत श्रवण मन शूल सम, पापिनि बोली बैन ॥१६१॥

[1] विचार । [2] गुजन । [3] पवनकेवेगसम । [4] कालकौवे । [5] गदहा । [6] सियार–जम्बुक । [7] तालाब
[8] नदियों । [9] अग्नि । [10] भीलनी ।

तात बात मैं सकल सँवारी * भइ मंथरा सहाय विचारी ॥
कछुक काज विधि बीच बिगारेउ * भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ ॥
सुनत भरत भयो विवश विषादा * जनु सहमेउ करि केहरिनादा ॥
तात तात हा तात पुकारी * परेउ भूमितल व्याकुल भारी ॥
चलत न देखन पायउँ तोहीं * तात न रामहिं सौंपेउ मोहीं ॥
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी * कहु पितु मरण हेतु महतारी ॥
सुनि सुतवचन कहति कैकेई * मर्म पाछि जनु माहुर देई ॥
आदिहि ते सब आपनि करणी * कुटिल कठोर मुदित मन वरणी ॥
दोहा—भरतहि बिसरेउ पितुमरण, सुनत राम बनगौन ॥
हेतु अपन पुनि जान जिय, थकित रहे धरि मौन ॥१६२॥
विकल विलोकि सुतहि समुझावति * मनहुँ जरे पर लोन लगावति ॥
तात राउ नहिं शोचन योगू * बड़इ सुकृत यश कीन्हेउ भोगू ॥
जीवत सकल जन्म फल पाये * अन्त अमरपति सदन सिधाये ॥
अस अनुमानि शोच परिहरहू * सहित समाज राज पुर करहू ॥
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारा * पाके क्षत जनु लाग अँगारा ॥
धीरज धरि भरि लेहिं उसाँसा * पापिनि सबहि भाँति कुलनाशा ॥
जो पै कुरुचि रही असि तोहीं * जनमत काहे न मारेसि मोहीं ॥
पेड़ काटि तैं पल्लव सींचा * मीन जियन हित वारि उलीचा ॥
दोहा—हंस वंश दशरथ जनक, राम लषण से भाय ॥
जननी तू जननी भई, विधि सन कछु न बसाय ॥ १६३ ॥
जबतैं कुमति कुमत मन ठयऊ * खंड खंड होइ हृदय न गयऊ ॥
वर माँगत मन भइ नहिं पीरा * जरि न जीह मुँह परे न कीरा ॥
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही * मरणकाल विधि मति हर लीन्ही ॥
विधिहु न नारि हृदय गति जानी * सकल कपट अघ अवगुण खानी ॥
सरल सुशील धर्मरत राऊ * सो किमि जानहि तीय स्वभाऊ ॥
अस को जीव जन्तु जग माहीं * जेहि रघुनाथ प्राण प्रिय नाहीं ॥

१ पावकछीलकर । २ कारण । ३ पुण्यकार्य । ४ डरपत । ५ घाव । ६ पिता । ७ ब्रह्मा

मे अति राम अहित तेउ तोहीं *कोतू अहसि सत्य कहु मोहीं ॥
जोहसि सोहसि मुँह मसि लाई * आँखि ओट उठि बैठहुजाई ॥
दोहा-रामविरोधी हृदय ते, प्रगट कीन्ह विधि मोहिं ॥
मो समान को पातकी, बादि कहौं कछुतोहिं ॥१६४॥
सुनि शत्रुघ्न मातु कुटिलाई * जरहिं गातरिसिकछु नबसाई॥
त्यहिअवसर कुबरी तहँ आई * वसन विभूषण विविध बनाई ॥
लखि रिसभरेउलषणलघुभाई * बरत अनल घृत आहुति पाई ॥
हुमुकि लात तकि कूबर मारा * परिमुँहभरिमहिकरतपुकारा ॥
कूबर टूटेउ फूट कपारू * दलितदशनमुखरुधिरप्रचारू ॥
अहह दैव मैं काह नशावा * करत नीक फल अनइस पावा॥
सुनिरिपुहनलखिनखशिखखोटी *लगेघसीटन धरि धरि झोटी ॥
भरत दयानिधि दीन्ह छुडाई * कौशल्या पहँगे दोउ भाई ॥
दोहा-मलिन वसन विवरण विकल, कृश शरीर दुख भार ॥
कनक कमल वर वेलि वन, मानहुँ हनी तुषार ॥१६५॥
भरतहिं देखि मातु उठि धाई * मूर्च्छित अवनि परीअकुलाई ॥
देखतभरत विकल भये भारी * परे चरण तनु दशा बिसारी ॥
मातु तात कहँ देहु दिखाई * कहँ सिय रामलषणदोउ भाई॥
कैकयि कत जनमी जग माँझा * जो जनमी तो भइ किनबाँझा ॥
कुलकलंकजोहि जनमेउ मोहीं * अपयश भाजन प्रियजनद्रोही॥
कोत्रिभुवनमोहिंसारिसअभागी * गतिअसितोरिमातुजेहिलागी ॥
पितु सुरपुर वन रघुकुलकेतू * मैं केवल सब अनरथ हेतू ॥
धिक मोहिंभयउवेणु वनआगी * दुसह दाह दुख दूषण भागी ॥
दोहा-मातु भरतके वचन मृदु, सुनि पुनि उठी सँभारि ॥
लिये उठाइ लगाइउर, लोचन मोचति वारि ॥१६६॥
सरल स्वभाय मातु उर लाये * अतिहितमनहुरामफिरिआये॥
भेटेउ बहुरि लषण लघु भाई * शोक सनेह न हृदय समाई ॥

१ अग्नि। २ शत्रुघ्न। ३ पाला। ४ पृथ्वी। ५ बेंशवन। ६ नयनोंसे अश्रुपातकरते।

देखि स्वभाव कहत सब कोई * राम मातु अस काहे न होई ॥
माता भरत गोद बैठारे * आँसु पोंछि मृदु वचन उचारे ॥
अजहुँ वत्स बलि धीरज धरहू *कुसमय समुझि शोक परिहरहू॥
जनि मानहु जिय हानि गलानी*कालकर्म्मगति अघटितजानी ॥
काहुहि दोष देहु जनि ताता *भामोहिंसबविधिवामविधाता ॥
जो ऐसेहु दुख मोहिं जियावा * अजहुँ को जानै का तेहि भावा॥
दोहा-पितु आयसु भूषण वसन, तात तजे रघुवीर॥
विस्मय हर्ष न हृदय कछु, पहिरे वल्कल चीर ॥ १६७ ॥
मुखप्रसन्न मन राग न रोषू * सबकर सबविधि करि परितोषू॥
चलेविपिन सुनि सिय सँगलागी* रही न रामचरण अनुरागी ॥
सुनतहिं लषण चले लगिसाथा * रहे न यतन किये रघुनाथा ॥
तब रघुपति सबही शिरनाई * चले संग सिय अरु लघु भाई॥
राम लषण सिय बनहिं सिधाये * गई न संग न प्राणपठाये ॥
यह सब भा इन आँखिन आगे * तउ न तजत तनु जीव अभागे॥
मोहिं न लाज निजनेह निहारी * राम सरिस सुत मैं महतारी ॥
जिये मरे भल भूपति जाना * मोर हृदय शतकुलिशसमाना॥
दोहा-कौशल्याके वचन सुनि, भरत सहित रनिवास ॥
व्याकुल विलपत राजगृह, मानहुँ शोकनिवास ॥ १६८॥
विलपहिंविकलभरतदोउभाई * कौशल्या लिय हृदय लगाई ॥
भाँति अनेक भरत समुझाये * कहि विवेक वर वचन सुनाये॥
भरतहु मातु सकल समुझाई * कहि पुराण श्रुति कथा सुनाई॥
छलविहीन शुचि सरल सुवानी * बोले भरत जोरि युग पानी ॥
जे अघ मातु पिता गुरु मारे * गाइ गोठ महि सुरपुर जारे ॥
जे अघ तिय बालकवधकीन्हें * मीत महीपति माहुर दीन्हें ॥
जे पातक उपपातक अहहीं *कर्म्म वचन मन भव कविकहहीं॥
ते पातक मोहिं होउ विधाता * जो यह होइ मोर मत माता ॥

१ उलटा । २ भोजपत्र । ३ मीति । ४ कोध । ५ समाधान । ६ वन । ७ सीधी ।

दोहा-जे परिहरि हरि हर चरण, भजहिं भूतगण घोर ॥
तिनकी गति मोहिं देउ विधि, जो जननी मत मोर ॥ १६९ ॥
बेचहिं वेद धर्म्म दुहि लेहीं * पिशुन[1] पराव पाप कहि देहीं ॥
कपटी कुटिल कलह प्रिय क्रोधी * वेदविदूषक[2] विश्व विरोधी ॥
लोभी लम्पट[3] लोल लबारा * जे ताकहिं परधन परदारा ॥
पावउँ मैं तिनकी गति घोरा * जो जननी यह सम्मत मोरा ॥
जे नहिं साधु संग अनुरागे * परमारथ पथ विमुख अभागे ॥
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई * जिनहिं न हरि हर सुयशसुहाई
ताजि श्रुतिपन्थ वाम[4]पथ चलहीं * वंचक[5] विरंचि वेशजगछलहीं ॥
तिन्हकी गति शंकरमोहिं देऊ * जननी जो यह जानौं भेऊ ॥
"छन्द-मन वचन कर्म्म कृपायतनकर दास मैं सुनु मातुरी ॥
उर बसत राम सुजान जानत प्रीति अरु छल चातुरी ॥
अस कहत लोचन बहत जल तनु पुलक नख लेखत मही ॥
हिय लाय लिये बहोरि जननी जानि प्रभुपद रत सही" ॥
दोहा-मातु भरतके वचन सुनि, साँचे सरल स्वभाय ॥
कहत राम प्रिय तात तुम, सदा वचन मन काय ॥१७०॥
राम प्राण ते प्राण तुम्हारे * तुम रघुपतिहि प्राण ते प्यारे ॥
विधु[6] विष चुवै स्रवै हिम आगी * होइ वारिचर[8] वारि विरागी ॥
भये ज्ञान वरु मिटै न मोहू * तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू ॥
मत तुम्हार अस जो जग कहहीं * सो स्वप्नेहु सुख सुगति न लहहीं
अस कहि मातु भरत हिय लाये * थनपय स्रवहिं नयनजल छाये
करत विलाप विपुल यहिभाँती * बैठे बीति गई सब राती ॥
वामदेव वसिष्ठ मुनि आये * सचिव महाजन सकल बुलाये ॥
मुनि बहु भाँति भरत उपदेशे * कहि परमारथ वचन सुदेशे ॥
दोहा-तात हृदय धीरज धरहु, करहु जो अवसर आज ॥
उठे भरत गुरु वचन सुनि, करन लग्यउ सबकाज ॥ १७१ ॥

१ चुगलखोर। २ वेदोंमें दोष निकालने वाले। ३ कामी। ४ टेढा, कल्पित मार्ग। ५ ठग। ६ चन्द्र। ७ पाला। ८ मछली।

नृप तनु वेदविहित अन्हवावा * परम विचित्र विमान बनावा ॥
गहि पद भरत मातु सब राखीं * रहीं राम दर्शन अभिलाषीं ॥
चन्दन अगर भार बहु ल्याये * अमित अनेक सुगन्ध सुहाये॥
सरयु तीर रचि चिता बनाई * जनु सुरपुर सोपान सुहाई ॥
यहिविधि दाहक्रिया सबकीन्हीं *विधिवतन्हायतिलांजलिदीन्हीं॥
शोधि स्मृति सब वेद पुराना * कीन्ह भरत दशगात्र विधाना॥
जहँ जस मुनिवरआयसुदीन्हा * तहँतससहसभाँति सबकीन्हा॥
भये विशुद्ध दिये सब दाना * धेनु बाजि गज वाहन नाना ॥
दोहा–सिंहासन भूषण वसन, अन्न धरणि धन धाम ॥
दिये भरत लहि भूमिसुर, भे परीपूरण काम ॥ १७२ ॥
पितुहितभरतकीन्हजसकरणी * सो मुख लाख जाइनहिंवरणी॥
सुदिन शोधि मुनिवर तहँ आये * सकल महाजन सचिवबुलाये॥
बैठे राजसभा सब जाई * पठये बोलि भरत दोउ भाई ॥
भरत वसिष्ठ निकट बैठारे * नीति धर्म्ममय वचन उचारे ॥
प्रथम कथा सब मुनिवर वरणी * कैकेयि कठिन कीन्हजसकरणी
भूप धर्म्म व्रत सत्य सराहा *ज्यहि तनुपरिहरि प्रेमनिबाहा ॥
कहत रामगुण शीलस्वभाऊ * सजल नयन पुलके मुनिराऊ॥
बहुरि लषण सिय प्रीति बखानी * शोक सनेह मगन मुनिज्ञानी॥
दोहा– सुनहु भरत भावी प्रबल, विलखि कहेउ मुनिनाथ ॥
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधिहाथ ॥ १७३॥
अस विचारि केहि दीजिय दोषू * व्यर्थ काहि पर कीजिय रोषू ॥
तात विचार करहु मन माहीं * शोच योग दशरथ नृप नाहीं ॥
शोचिय विप्र जो वेद विहीना * तजिनिजधर्मविषयलवलीना ॥
शोचिय नृपति जो नीतिनजाना* जेहिं न प्रजाप्रियप्राणसमाना॥
शोचिय वैश्य कृपण धनवानू *जोनअतिथिशिवभक्तिसुजानू ॥
शोचिय शूद्र विप्र अपमानी * मुखर मानप्रिय ज्ञान गुमानी ॥

१ वेदानुकूल । २ अत्यन्तसुंदर । ३ सिढ़ी । ४ विशेषकरके शुद्ध । ५ ब्राह्मण । ६ मंत्री । ७ वाचाल ।

शोचिय पुनि पतिवंचक नारी * कुटिल कलह प्रियइच्छाचारी॥
शोचिय बटु निज व्रत परिहरई *जो नहिं गुरु आयसु अनुसरई॥
दोहा–शोचिय गृही जो मोहवश, करै धर्म्मपथ त्याग ॥
शोचिय यती प्रपंचरत, विगत विवेक विराग ॥ १७४ ॥
वैखानस सोइ शोचन योगू * तप विहाय जेहि भावै भोगू ॥
शोचिय पिशुन अकारण क्रोधी * जननि जनक गुरुबन्धुविरोधी॥
सब विधि शोचिय पर अपकारी * निज तनु पोषक निर्दय भारी ॥
शोचनीय सबही विधि सोई * जो न छाँडि छल हरिजनहोई॥
शोचनीय नहिं कोशलराऊ * भुवन चारिदश प्रगट प्रभाऊ ॥
भयउ न अहै न अब होनिहारा * भूप भरत जस पिता तुम्हारा॥
विधिहरिहरसुरपतिदिशिनाथा * वर्णहिं सब दशरथ गुणगाथा ॥
तीनिकाल त्रिभुवन जग माहीं * भूरिभाग्य दशरथ समनाहीं ॥
दोहा–कहहु तात केहि भाँति कोउ, करहिं बड़ाई तासु ॥
राम लषण तुम शत्रुहन, सरिस सुवनसुतजासु ॥ १७५ ॥
सब प्रकार भूपति बड़भागी*बादि विषाद करिय तेहिलागी ॥
यह सुनि समुझिशोचपरिहरहू * शिर धरि राज रजायसु करहू ॥
राव राजपद तुम कहँ दीन्हा * पितावचन फुर चाहिय कीन्हा॥
तजे राम जेहि वचनहिं लागी * तनु परिहरेउ राम विरहागी ॥
नृपहि वचन प्रियनहिंप्रियप्राना* करहु तात पितु वचन प्रमाना॥
करहु शीश धरि भूप रजाई * है तुम कहँ सब भाँतिभलाई ॥
परशुराम पितु आज्ञा राखी * मारी मातु लोक सब साखी ॥
तनय ययातिहि यौवन दयऊ*पितु आज्ञा अघ अयश न भयऊ

* शुक्राचार्यकी पुत्री देवयानी और वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठा एकसमय स्नान करनेको गई तब शर्मिष्ठाने भूलसे देवयानीका वस्त्र पहरलिया तब देवयानी क्रोधितहो शर्मिष्ठासे लड़पड़ी और शुक्राचार्यसे आयके कहा तब शुक्राचार्यने वृषपर्वासे उराहनादिया कि तेरीपुत्रीने वादविवाद किया तब वृषपर्वाने निवेदन किया जिसमें देवयानी प्रसन्नहोय सो किया चाहिये शुक्राचार्यने कहा कि,वह चाहती है कि शर्मिष्ठा मेरी दासी होय तब वृषपर्वाने हजार दासी समेत शर्मिष्ठाको देवयानीके भृत्यपनमें भेजदिया जब देवयानी ययाति राजाको शापवश ब्याहीगई शर्मिष्ठाभी देव-

१ पतिसे कपट करनेवाली स्त्री । २ संसारमें प्रीति करनेवाला ।

दोहा–अनुचित उचित विचार तजि, जे पालहिं पितुबैन ॥
ते भाजन सुख सुयशके, बसहिं अमरपतिऐन ॥ १७६ ॥
अवशि नरेश वचन फुर करहू * पालहु प्रजा शोक परिहरहू ॥
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू * तुमकहँसुकृतसुयश नहिंदोषू ॥
वेदविहित सम्मत सबहीका * जेहिं पितु देइ सो पावै टीका ॥
करहु राज्य परिहरहु गलानी * मानहु मोर वचन हित जानी॥
सुनि सुख लहब राम वैदेही * अनुचित कहब न पंडित केही॥
कौशल्यादि सकल महतारी * तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारी ॥
मर्म तुम्हार राम सब जानहिं *सोसबविधितुमसनभलमानहिं॥
सौंपेहु राज्य रामके आये * सेवा करेहु सनेह सुहाये ॥
दोहा–कीजियगुरुआयसुअवशि, कहहिंसचिवकरजोरि ॥
रघुपति आये उचित जस, तब तस करब बहोरि ॥१७७॥
कौशल्या धरि धीरज कहई * पुत्र पिता गुरु आयसु अहई ॥
सो आदरिय करिय हितमानी * तजिय विषाद कालगतिजानी॥
वन रघुपति सुरपुर नरनाहू * तुम इहि भाँति तात कदराहू ॥
परिजन प्रजा सचिव कह अंबा * तुमही सुत सबकर अवलंबा ॥
लखि विधिवाम काल कठिनाई * धीरज धरहु मातु बलिजाई ॥
शिर धरि गुरु आयसु अनुसरहू * प्रजापालि पुरजन दुखहरहू ॥
गुरुके वचन सचिवअभिनन्दन*सुनत भरतहियहितजनुचन्दन॥

यानीके संग गई सो कहीं एकदिन राजाको शर्मिष्ठाके संग विहार करते जान देवयानीने क्रोधकर पितासे जाय कहा· तब शुक्राचार्यने ययातिको शाप दिया कि, तू अभी वृद्ध हो जायगा यह सुन राजाने शुक्रजीकी बडी विनय करी कि, महाराज ! अभी विषय वासनासे मेरी तृप्ति नहीं हुई फिर दयाकर शुक्रजी बोले कि तुम अपने पुत्रोंसे युवा माँगलो और अपनी बुढाई उन्हें दे दो तब राजाने देवयानीके पुत्र यदु आदि तीनोंसे युवावस्था मांगी परन्तु उन्होंने नदी इससे उन्हें शाप दिया कि तुम्हारे वंशमें राज्यका अधिकारी कोई नहोगा फिर शर्मिष्ठाके दोनों पुत्रोंसे याचनाकरी तिनमें छोटे पुत्रने पिताकी आज्ञा मान अपनी युवावस्था देदी और आशीर्वाद पाया तभीसे राज्याधिकारीहो उनके वंशके लोग पुरुवंशी कहलाये ॥

१ आज्ञा । २ मंत्रीके आनंद देनेवाले ।

सुनी बहोरि मातु मृदुवानी * शील सनेह सरल रस सानी ॥
छंद–सानी सरल रस मातु वानी सुनि भरत व्याकुलभये ।
लोचन सरोरुहं स्रवत सींचत विरह उर अंकुरनये ॥
सोदशा देखत समय तेहि बिसरी सबहिं सुधिदेहकी ।
तुलसी सराहत सकल सादर सीम सहज सनेहकी ॥
सो०–भरत कमल करजोरि, धर्म्म धुरंधर धीरधरि ॥
वचन अमिय जनु बोरि, देत उचित उत्तर सबहिं ॥ ७ ॥
मोहिं उपदेश दीन्ह गुरु नीका * प्रजा सचिव सम्मत सबहीका॥
मातु उचित पुनि आयसुदीन्हा*अवशिशीशधरिचाहियकीन्हा ॥
गुरु पितुमातुस्वामि हितवानी *सुनिमनमुदितकरियभलजानी ॥
उचितकिअनुचितकियेविचारू* धर्म्मजाइ शिर पातकभारू ॥
तुम तौ देहु सरल शिख सोई * जो आचरत मोरहित होई ॥
यद्यपि यह समुझत हौं नीके * तदपि होत परितोष न जीके ॥
अब तुम विनय मोरि सुनिलेहू *मोहिं अनुहरत शिखावन देहू ॥
उत्तर देउँ क्षमब अपराधू * दुखित दोषगुणगणहिं न साधू॥
दोहा–पितु सुरपुरवनरामसिय, करन कहहु मोहिं राज ॥
यहिते मानहु मोर हित, कै आपन बड़ काज ॥ १७८ ॥
हित हमार सियपति सेवकाई * सो हरि लीन मातु कुटिलाई ॥
मैं अनुमानि दीख मन माहीं * आन उपाय मोरहित नाहीं ॥
शोकसमाज राज क्यहि लेखे * लषण राम सिय पद विनु देखे॥
वादि वसन विनु भूषण भारू * वादिविरति विनु ब्रह्म विचारू॥
सरुज शरीर वादि सब भोगा * विनु हरिभक्ति जाय जप योगा॥
जाय देह विनु जीव सुखाई* वादि मोर सब विनु रघुराई ॥
जाउँ रामपहँ आयसु देहू * एकहिं आँक मोर हित येहू ॥
मोहिं नृपकरि आपनभलचहहू* सो सनेह जड़तावश कहहू ॥
दोहा–कैकेयी सुत कुटिलमति, राम विमुख गतलाज ॥

१ पुनि । २ मीठे वचन । ३ सीधी । ४ कमल । ५ मर्यादा । ६ सीधी शिक्षा । ७ संतोष ।
८ अनुसार । ९ वैराग्य । १० रोगवशशरीर ।

तुम चाहत सुख मोहवश, मोहिंसे अधमके राज ॥१७९॥
कहौं साँच सब सुनि पतियाहू * चाहिय धर्म्म शील नरनाहू ॥
मोहिं राज्य हठि देहहु जबहीं * रसा[1] रसातल[2] जाइहि तबहीं ॥
मोहिं समानको पापनिवासी * जेहि लगि सीय राम वनवासी॥
राव राम कहँ कानन[3] दीन्हा * विछुरत गहन अमरपुरकीन्हा ॥
मैं शठ सब अनरथ कर हेतू * बैठि बात सब सुनउँ सचेतू ॥
बिनु रघुवीर विलोकिय वासू * रहे प्राण सहि जग उपहासू ॥
राम पुनीत विषय रस रूखे * लोलुप भूमि भोगके भूखे ॥
कहँ लगि कहउँ हृदय कठिनाई * निदरि कुलिश जेहि लहीबड़ाई॥
दोहा-कारण ते कारज कठिन, होय दोष नहिं मोर ॥
कुलिश अस्थिते उपलते, लोह कराल कठोर ॥१८०॥
कैकयी भव तनु अनुरागे * पामर प्राण न जाहिं अभागे ॥
जोप्रिय विरह प्राण प्रिय लागे * देखब सुनब बहुत अब आगे ॥
लषण राम सिय कहँ वन दीन्हा * पठय अमरपुरपतिहितकीन्हा॥
लीन्ह विधवपन अपयश आपू * दीन्हेउ प्रजहिं शोक सन्तापू ॥
मोहिं दीन्ह सुख सुयश सुराजू * कीन्ह कैकयी सब कर काजू ॥
इहिते मोर कहा अब नीका * तेहि पर देन कहहु तुमटीका ॥
कैकयि जठर जन्मि जग माहीं * यहिमोहिंकहकछुअनुचितनाहीं
मोरि बात सब विधिहि बनाई * प्रजा पंच कत करहु सहाई ॥
दोहा-ग्रह गृहीत पुनि वात[8] वश, तेहि पुनि बीछी मार ॥
ताहि पियाई वारुणी[9], कहहु कवन उपचार[10] ॥ १८१ ॥
कैकयि सुवन योग जग जोई * चतुर विरंचि रचेउ मोहिं सोई॥
दशरथतनय रामलघु भाई * दीन्ह मोहिं विधि वादि[4] बडाई॥
तुम सब कहहु कढ़ावन टीका * राय राज्य सबही कहँ नीका ॥
उतर देउँ केहि विधि केहिकेही * कहहु सुखेन यथा रुचि जेही॥
मोहिं कुमातु समेत विहाई * कहहु कहिहिको कीन्ह भलाई॥

१ पृथ्वी । २ पाताल । ३ बन । ४ मिथ्यावादं । ५ वज्र । ६ हड्डी । ७ पत्थर । ८ सन्निपात । ९ मदिरा । १० उपाय ।

मोहिं बिनु को सचराचर माहीं * जेहि सिय राम प्राणप्रियनाहीं॥
परमहानि सब कहँ बड़ लाहू * अदिन मोर नहिं दूषण काहू ॥
संशय शील प्रेमवश अहहू * सबै उचित अब जो कछु कहहू॥
दोहा-राममातु सुठि सरल चित, मोपर प्रेम विशेषि ॥
कहहिं स्वभाव सनेहवश, मोरि दीनता देखि ॥ १८२॥
गुरु विवेक सागर जग जाना * जिनहिं विश्वकर बदर समाना॥
मोकहँतिलकसाज साजि सोऊ *भाविधिविमुखविमुखसबकोऊ॥
परिहरि राम सीय जग माहीं * को नहिं कहहि मोर मत नाहीं॥
सो मैं सुनब सहब सुखमानी * अन्तहु कीच तहाँ जहँ पानी ॥
डर नमोहिंजगकहिहिंकि पोचू * परलोकहु कर नाहिंन सोचू ॥
एकै वड़ उर दुसह दवारी *मोहिलगिभे सिय राम दुखारी॥
जीवनलाहु लषण भलपावा * सब तजि रामचरण मनलावा॥
मोर जन्म रघुवर वन लागी * झूठ कहौं पछिताउँ अभागी ॥
दोहा--आपनि दारुण दीनता, सबहिं कहेउँ समुझाय ॥
देखे विन रघुवीर पद, जियकी जरनि न जाय ॥ १८३ ॥
आन उपाय मोहिं नहिं सूझा * को जियकी रघुवरविनबूझा ॥
एकहि आँक इहै मन माहीं * प्रातकाल चलिहौं प्रभु पाहीं ॥
यद्यपि मैं अनभल अपराधी * भइ मोहिं कारण सकलउपाधी॥
तदपिशरण सन्मुखमोहिंदेखी * क्षमि सब करिहहिं कृपाविशेषी॥
शील सकुच सुठिसरलस्वभाऊ * कृपासनेह सदन रघुराऊ ॥
अरिहुक अनभल कीन्ह नरामा * मैं शिशु सेवक यद्यपि वामा ॥
तुम पै पाँच मोर भल मानी * आयसु आशिष देहु सुवानी ॥
ज्यहि सुनिविनयमोहिंजनजानी* आवहिंबहुरिराम रजधानी ॥
दोहा-यद्यपि जन्म कुमातुते, मैं शठ सदा सदोष ॥
आपन जानि न त्यागि हैं, मोहिं रघुवीर भरोस ॥१८४
भरत वचन सबकहँ प्रियलागे * रामसनेह सुधा जनु पागे ॥

१ चल अचल । २ लाभ । ३ ज्ञान । ४ बेर । ५ छोटा । ६ । ७ । शत्रु । ८ टेढ़ा । ९ अमृत ।

लोग वियोग विषम दुखदागे * मंत्र सजीव सुनत जनु जागे ॥
मातु सचिव गुरु पुर नर नारी * सकल सनेह विकल भेमारी ॥
भरतहिं कहहिं सराहि सराही * राम प्रेम मूरति तनु आही ॥
तात भरत अस काहेनकहहू * प्राण समान रामप्रिय अहहू ॥
जो पामर आपनि जड़ताई * तुमहिं सुगाइ मातु कुटिलाई ॥
सो शठ कोटिन पुरुष समेता * वसहि कल्पशत नरकनिकेता ॥
अहि अघ अवगुणमाणिनहिंगहई * हरै गरल दुख दारिद दहई ॥
दोहा--अवशि चलिय वन राम जहँ, भरतमंत्र भल कीन्ह ॥
शोकसिन्धु बूड़त सबहिं, तुम अवलम्बनदीन्ह ॥१८५॥
भासबके मनमोद न थोरा * जनुघनध्वनिसुनिचातकमोरा ॥
चलब प्रात लखि निर्णय नीके * भरत प्राणप्रिय भे सबहीके ॥
मुनिहिं वन्दि भरतहि शिरनाई * चले सकल घर विदाकराई ॥
धन्य भरत जीवन जगमाहीं * शील सनेह सराहत जाहीं ॥
कहहिं परस्पर भा बड काजू * सकल चलै कर साजहिंसाजू ॥
जेहि राखहिं घर रहु रखवारी * सो जानै जनु गरदन मारी ॥
कोउकहरहनकहिय नहिं काहू * को न चहै जगजीवन लाहू ॥
दोहा--जरै सुसम्पति सदनसुख, सुहृद मातु पितु भाइ ॥
सन्मुख होत जो रामपद, करै नसहजसहाइ ॥ १८६ ॥
घर घर वाहन साजहिं नाना * हर्षहिं हृदय प्रभात पयाना ॥
भरत जाइ घर कीन्ह विचारू * नगर वाजि गज भवन भँडारू ॥
सम्पति सब रघुपति कै आही * जो विनु यत्न चलौं तजिताही ॥
तौ परिणाम न मोरि भलाई * आप शिरोमणि साइँ दुहाई ॥
करहिं स्वामिहित सेवक सोई * दूषण कोटि देइ किन कोई ॥
अस विचारि शुचि सेवक बोले * जे स्वपन्यहु निजधर्म नडोले ॥
कहि सब मर्म धर्म सब भाषा * जो जेहि लायक सो तहँ राखा ॥
करि सब यत्न राखि रखवारे * राम मातु पहँ भरत सिधारे ॥

दोहा—आरत जननी जानि सब, भरत सनेह सुजान ॥
कहेउ सजावन पालकी, सुखद सुखासन यान ॥ १८७ ॥
चकचकाई इव पुर नरनारी * चलव प्रात उर आनँद भारी ॥
जागत सब निशि भयउ विहाना * भरत बुलाये सचिव सुजाना ॥
कहेउ लेहु सब तिलक समाजू * वनहिं देव मुनि रामहिं राजू ॥
वेगि चलहु मुनि सचिव जोहारे * तुरत तुरँग रथ नाग सँवारे ॥
अरुन्धती अरु अग्निसमाजू * रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराजू ॥
विप्रवृन्द चढ़ि वाहन नाना * चले सकल तप तेजनिधाना ॥
नगर लोग सब साजि साजि याना * चित्रकूट कहँ कीन्हपयाना ॥
शिविका सुभग न जाइँ बखानी * चढ़ि चढ़ि चलत भईंसबरानी ॥
दोहा—सौंपि नगर शुचि सेवकन्ह, सादर सबहिं चलाइ ॥
सुमिरि राम सिय चरण तब, चले भरत दोउ भाइ ॥ १८८ ॥
राम दरश हित सब नरनारी * जनु करि करिणिं चले तकिवारी
वन सिय राम समुझि मनमाहीं * सानुज भरत पयादेहि जाहीं ॥
देखि सनेह लोग अनुरागे * उतरि चले हय गजरथत्यागे ॥
जाइ समीप राखि निज डोली * राम मातु मृदुवाणी बोली ॥
तातचढ़हु रथ बलि महतारी * होइहि प्रिय परिवार दुखारी ॥
तुम्हरे चलत चलिहि सब लोगू * सकल शोककृश नहिंमगयोगू ॥
शिर धरि वचन चरणशिरनाई * रथ चढ़ि चलत भये दोउभाई ॥
तमसा प्रथम दिवस करिवासू * दूसर गोमति तीर निवासू ॥
दोहा—पय अहार फल अशन इक, निशि भोजन सबलोग ॥
करत राम हित नेम व्रत, परिहरि भूषण भोग ॥ १८९ ॥
सई तीर बसि चले बिहाने * शृंगवेर पुर सब नियराने ॥
समाचार सब सुने निषादा * हृदय विचार करै सविषादा ॥
कारण कवन भरत वन जाहीं * है कछु कपट भाव मन माहीं ॥
जो पै जिय न होति कुटिलाई * तौ कत लीन्ह संग कटकाई ॥

१ वसिष्ठजीकी स्त्री । २ विशेषरथ । ३ पालकी । ४ हाथी । ५ हथिनी । ६ जल । ७ सहितभाई शत्रुघ्नके

जानहिं सानुज रामहिं मारी * करौं अकण्टक राज्य सुखारी ॥
भरत न राज्यनीति उर आनी * तब कलंक अब जीवनहानी ॥
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा * रामहिं समर न जीतनिहारा ॥
का आश्चर्य भरत असकरहीं * नाहिं विषबेलि अमियफल फरहीं

दोहा—अस विचारि गुह ज्ञातिसन, कहेउ सजग सब होहु ॥
हथवासहु बोरहुतरणि, कीजिय घाटारोहु ॥ १९० ॥

होइ सजग सब रोकहु घाटा * ठाटहु सकल मरण के ठाटा ॥
सन्मुख लोह भरतसन लेहू * जियत न सुरसरि उतरनदेहू ॥
समर मरण पुनि सुरसरि तीरा * रामकाज क्षणभंगु शरीरा ॥
भरत भाइ नृप मैं जन नीचू * बड़े भाग्य अस पाइय मीचू ॥
स्वामिकाज करिहौं रण रारी * लेइहौं सुयश भुवन दशचारी ॥
तजहुँ प्राण रघुनाथ निहोरे * दुहूँ हाथ मुद मोदक मोरे ॥
साधु समाज न जाकर लेखा * रामभक्त महँ जासु न रेखा ॥
जाय जियतजग सो महिभारू * जननी यौवन विटप कुठारू ॥

दोहा—विगतविषादनिषादपति, सबहिं बढ़ाय उछाह ॥
सुमिरि राम माँगेउ तुरत, तरकस धनुष सनाह ॥ १९१ ॥

वेगहि भाइहु सजहु सँजोऊ * सुनि रजाय कदराय न कोऊ ॥
भले नाथ सब कहहिं सहर्षा * एकहिं एक बढ़ावहिं कर्षा ॥
चले निषाद जुहारि जुहारी * शूर सकल रण रुचै सुरारी ॥
सुमिरि रामपदपंकज पनहीं * माथा बाँधि चढ़ावहिं धनुहीं ॥
अँगिरि पहिरि कुंडि शिर धरहीं * फरसाबाँस शेल सम करहीं ॥
एक कुशल अति ओड़[11] न खाँड़े[12] * कूदहिंगगन मनहुँ क्षिति[13]छाँड़े ॥
निजनिज साज समाज बनाई * गुहरावतहिं जुहारहिं जाई ॥
देखि सुभट सब लायक जाने * लैलैनाम सकल सनमाने ॥

दोहा—भाइहु लावहु धोख जनि, आजु काज बड़ मोहु ॥
सुनि सरोष बोले सुभट, वीर अधीर न होहु ॥ १९२ ॥

१ अपनेजातिवाले । २ पतवार । ३ गंगाजी । ४ आनन्दके लड्डू । ५ बोझ । ६ वृक्ष । ७ युद्धकासाज
८ तरकस । ९ बक्तर । १० दुधारा खांडा—सांग । ११ ढाल । १२ तरवार । १३ पृथ्वी ।

रामप्रताप नाथ बल तोरे * करहिंकटक विनुभट विनुघोरे॥
जियत पाँव नहिं पीछे धरहीं * रुण्ड मुण्डमय मेदिनिकरहीं ॥
दीख निषादनाथ भल टोलू * कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू ॥
इतना कहत छींक भइ बाँये * कहेउशकुनियन्ह खेत सुहाये ॥
बूढ एक कह शकुन विचारी * भरतहि मिलिय नहोइहिरारी॥
रामहिं भरत मनावन जाहीं * शकुन कहै अस विग्रह नाहीं ॥
सुनि गुह कहै नीक कह बूढा * सहसा करि पछिताहिं विमूढा॥
भरत स्वभाव शील विनु बूझे * बडिहित हानिजानिविनु जूझे॥
दोहा–गहहु घाट भट सिमिटिसब, लेउँ मर्म्म मिलि जाइ ॥
बूझि मित्र अरि मध्यगति, तब तस करब उपाइ ॥१९३॥
लखब सनेह सुभाय सुहाये * वैर प्रीति नहिं दुरत दुराये ॥
अस कहि भेट सँजोवन लागे * कन्द मूल फल खग[2] मृग[3] माँगे॥
मीन[4] पीन पाठीन पुराने * भरि भरि भार कहारन आने ॥
सकलसाजसजिमिलनसिधाये * मंगलमूल शकुन शुभ पाये ॥
देखि दूरि ते कहि निज नामू * कीन्ह मुनीशहि दण्ड प्रणामू ॥
जानि राम प्रिय दीन्ह अशीशा * भरतहिं कहेउ बुझाय मुनीशा॥
रामसखा सुनि स्यन्दन[5] त्यागा * चले उतरि उमँगत अनुरागा ॥
गाँव जाति गुह नाँव सुनाई * कीन्ह जुहारि माथ महिलाई ॥
दोहा–करत दण्डवत देखि तेहि, भरत लीन्ह उर लाइ ॥
मनहु लषण सन भेट भइ, प्रेम न हृदय समाइ ॥ १९४ ॥
भेंटउ भरत ताहि अति प्रीती * लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती ॥
धन्य धन्य[1] ध्वनि मंगलमूला * सुरसराहि तेहि वर्षहिं फूला ॥
लोग वेद सब भाँतिहि नीचा * जासु छाँह छुइ लेइय सींचा ॥
तेहिं भरि अंक राम लघुभ्राता * मिलत पुलक परिपूरित गाता ॥
राम राम कहि जे जमुहाहीं * तिनहिं न पाप पुंज समुहाहीं ॥
इहि तौ राम लाय उर लीन्हा * कुल समेत जग पावनकीन्हा ॥

१ एकत्र । २ पक्षी । ३ हरिण । ४ मछली । ५ रथ । ६ भीति ।

कर्मनाश जल सुरसरि परई * तेहि को कहहु शीश नहिं धरई॥
उलटा नाम जपत जग जाना * वाल्मीकि भे ब्रह्म समाना ॥
दोहा-श्वपच शबर खल यवन जड़, पामर कोल्ह किरात ॥
राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात ॥१९५॥
नहिं अचरज युगयुग चलिआई * केहि न दीन रघुवीर बड़ाई ॥
रामनाम महिमा सुर कहहीं *सुनिसुनिअवधलोकसुखलहहीं॥
रामसखहिं मिलि भरत सप्रेमा* पूँछहि कुशल सुमंगल क्षेमा ॥
देखि भरत कर शील सनेहू * भानिषाद तेहि समय विदेहूं ॥
सकुचि सनेह मोदमन बाढ़ा * भरतहिंचितवत इकटकठाढा॥
धरिधीरज पदवन्दि बहोरी * विनय सप्रेम करतकरजोरी ॥
कुशल मूल पद पंकज पेखी * मैं तिहँकालकुशलनिजदेखी ॥
अब प्रभु परमअनुग्रह तोरे * सहित कोटिकुल मंगलमोरे ॥
दोहा-समुझि मोरि करतूति कुल, प्रभु महिमा जिय जोइ ॥
जो न भजै रघुवीरपद, जग विधि वंचक सोइ ॥ १९६ ॥
कपटीकायँर कुमति कुजाती * लोक वेद बाहर सब भाँती ॥
राम कीन्ह आपन जबहीं ते * भयउँ भुवन भूषण तबहीं ते ॥
देखि प्रीति सुनि विनय सुहाई * मिले बहोरि लषण लघुभाई ॥
कहि निषाद निज नाम सुवानी * सादर सकल जुहारी रानी ॥
जानि लषणसम देहिं अशीशा * जियहु सुखी सौलाख बरीशा ॥
निरखि निषाद नगर नर नारी * भये सुखी जनु लषणनिहारी ॥
कहहिं लहेउ यह जीवन लाहू * भेंटेउ राम भाइ भरि बाहू ॥
सुनि निषाद निज भाग्य बड़ाई *प्रमुदित मन लै चले डालिवाई॥
दोहा-सनकारे सेवक सकल, चले स्वामि रुखपाइ ॥
घर तरुतर सर बाग वन, वास बनायउ जाइ ॥ १९७ ॥
शृंगवेर पुर भरत दीख जब * भे सनेहवशअंग शिथिलतब ॥
सोहित दिये निषादहिं लागू * जनु तनुधरे विनय अनुरागू ॥

१ पवित्र । २ आनन्दमें देहकी सुधि न रही । ३ डरपोक । ४ मन्दमति ।

इहिविधि भरत सेन सब संगा * दीख जाइ जगपावनि गंगा ॥
रामघाट कहँ कीन्ह प्रणामा * भा मन मग्न मिले जनु रामा ॥
करहिं प्रणाम नगर नर नारी * मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी ॥
करि मज्जन माँगहिं करजोरी * रामचन्द्र पदप्रीति न थोरी ॥
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू * सकल सुखद सेवक सुरधेनू ॥
जोरि पाणि वर माँगौं एहू * सीय रामपद सहज सनेहू ॥

दोहा—इहि विधि मज्जन भरत करि, गुरु अनुशासन पाइ ॥
मातु नहानी जानि सब, डेरा चले लिवाइ ॥ १९८ ॥

जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा * भरत शोध सबहींकरलीन्हा ॥
गुरु सेवा करि आयसु पाई * राम मातु पहँ गे दोउ भाई ॥
चरण चापि कहि कहि मृदुबानी * जननी सकल भरत सनमानी ॥
भाइहि सौंपि मातु सेवकाई * आप निषादहि लीन्ह बुलाई ॥
चले सखा करसों कर जोरे * शिथिल शरीर सनेह न थोरे ॥
पूँछत सखहिं सो ठाँव देखाऊ * नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ ॥
जहँ सियराम लषणनिशिसोये * कहत भरे जल लोचन कोये ॥
भरत वचन सुनि भयउ विषादू * तुरत तहाँ लै गयउ निषादू ॥

दोहा—जहँ शिंशुपा पुनीत तरु, रघुवर किय विश्राम ॥
अति सनेह सादर भरत, कीन्हेउ दण्ड प्रणाम ॥ १९९ ॥

कुश साथरी निहारि सुहाई * कीन्ह प्रणाम प्रदक्षिण लाई ॥
चरण रेख रज आँखिन लाई * बनै न कहत प्रीति अधिकाई ॥
कनकबिन्दु दुइ चारिक देखे * राखे शीश सीय सम लेखे ॥
सजल विलोचन हृदय गलानी * कहत सखासनवचनसुबानी ॥
श्रीहत सीय विरह द्युति हीना * यथा अवध नरनारि मलीना ॥
पिताजनक देउँ पटतर केही * करतल भोग योग जग जेही ॥
श्वशुर भानुकुल भानु भुआलू * जेहि सिहातअमरावतिपालू ॥
प्राणनाथ रघुनाथ गुसाँई * जो बडहोत सो राम बडाई ॥

१ कामधेनु—गाय। २ हाथ। ३ स्नान। ४ आज्ञा। ५ शिंशपाका वृक्ष। ६ परिक्रमा। ७ कांति। ८ इन्द्र।

दोहा–पति देवता सुतीय मणि, सीय साथरी देखि ॥
बिहरत हृदय न हहरि हर, पबितें कठिन बिशेषि ॥२००॥
लालन योग लखन लघु लोने * भे न भाइ अस अहहिं न होने ॥
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे * सिय रघुबीरहि प्राणपियारे ॥
मृदुमूरति सुकुमार स्वभाऊ * तात बायु तनु लाग न काऊ ॥
ते बन सहहिं बिपति सब भाँती * निदरे कोटि कुलिश यह छाती ॥
राम जनमि जग कीन्ह उजागर * रूप शील सुख सब गुणसागर ॥
पुरजन परिजन गुरु पितु माता * राम स्वभाव सबहिं सुखदाता ॥
बैरिउ राम बड़ाई करहीं * बोलनि मिलनि बिनय मन हरहीं ॥
शारद कोटि कोटि शत शेषा * करि न सकहिं प्रभु गुणगण लेखा ॥
दोहा–सुखस्वरूप रघुबंश मणि, मंगल मोद निधान ॥
ते सोवत कुश डासि महि, विधिगति अतिबलवान ॥२०१॥
राम सुना दुख कान न काऊ * जीवनतरु जिमि जुगवहिं राऊ ॥
पलक नयन फणि मणि जेहि भाँती * जुगवहिं जननि सकल दिन राती ॥
ते अब फिरत बिपिन पदचारी * कन्द मूल फल फूल अहारी ॥
धिक कैकयी अमंगल मूला * भइसि प्राण प्रीतम प्रतिकूला ॥
मैं धिक धिक अघ उदधि अभागी * सब उत्पात भयउ जेहि लागी ॥
कुल कलंक करि सृजेउ विधाता * साइँद्रोह मोहिं कीन्ह कुमाता ॥
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू * नाथ करिय कत बादि विषादू ॥
राम तुमहिं प्रिय तुम प्रिय रामहिं * यह निर्दोष दोष विधि वामहिं ॥
छंद–विधि वामकी करणी कठिन जेहि मातु कीन्ही बावरी ।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सराहन रावरी ॥
तुलसी न तुम सों राम प्रीतम कहत हौं सौंहैं किये ।
परिणाम मंगल जानि अपने आनिये धीरज हिये ॥ ९ ॥
सोरठा–अन्तर्यामी राम, सकुच सप्रेम कृपायतन ॥
चलिय करिय विश्राम, यह विचार दृढ़ आनि मन ॥ ९ ॥

१ वज्र । २ सुन्दर । ३ कुटुम्ब । ४ सजीवनवृक्ष । ५ पापोंकासमुद्र

सखा वचन सुनि उरधरि धीरा * बास चले सुमिरत रघुवीरा ॥
यह सुधि पाइ नगर नर नारी * चले विलोकन आरत भारी ॥
प्रदक्षिणहिं करि करहिं प्रणामा * देहिं कैकयिहि खोरि निकामा॥
भरिभरि वारि विलोचन लेहीं * वाम विधातहि दूषण देहीं ॥
एक सराहहिं भरत सनेहू * कोउ कह नृपति निबाहेउनेहू॥
निन्दहिं आपु सराहि निषादहि * कोकहिसकै विमोह विषादहि॥
इहि विधि राति लोग सब जागा * भा भिनुसार उतारा लागा ॥
गुरुहि सुनाव चढाइ सुहाई * नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥
दण्ड चारि महँ भे सब पारा *उतरि भरत तब सबहिं सँभारा॥

दोहा-प्रातक्रिया करि मातुपद, वन्दि गुरुहिं शिरनाइ ॥
आगे किये निषाद गण, दीन्हेउ कटक चलाइ ॥ २०२ ॥

किये निषाद नाथ अगुआई * मातु पालकी सकल चलाई ॥
साथ बुलाइ भाइ लघु दीन्हा * विप्रन सहित गमन गुरु कीन्हा
आप सुरसरिहिं कीन्ह प्रणामू *सुमिरे लषण सहित सिय रामू॥
गमने भरत पयादेहि पाये * कोतल संग जाहिं डोरि आये ॥
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा * होइय नाथ अश्व असवारा ॥
राम पयादेहि पाँव सिधाये * हम कहँ रथ गज वाजि बनाये ॥
शिर भर जाउँ उचितअसमोरा * सबते सेवक धर्म कठोरा ॥
देखि भरत गति सुनि मृदुवानी * सब सेवकगण करहिं गलानी ॥

दोहा-भरत तीसरे पहर कहँ, कीन्ह प्रवेश प्रयाग ॥
कहत राम सिय राम सिय, उमँगि उमँगि अनुराग ॥२०३॥

झलका झलकत पाँयन कैसे * पंकज कोश ओस कण जैसे ॥
भरत पयादेहि आये आजू * भयेदुखितसुनिसकलसमाजू ॥
खबरि लीन्ह सब लोग अन्हाये * कीन्ह प्रणाम त्रिवेणी आये ॥
सविधि सितासित नीर अन्हाने * दिये दान महिसुर सन्माने ॥
देखत श्यामल धवल हिलोरे * पुलकि शरीर भरत करजोरे ॥

१ नेत्र । २ घोड़े । ३ कमलकेपत्ते । ४ सितकही उज्ज्वलजल गंगाजीका और असित कही श्याम जल यमुनाजीका ।

सकल कामप्रद तीरथराऊ * वेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ ॥
माँगौ भीख त्यागि निजधरमू * आरत काह न करहिं कुकरमू ॥
अस जिय जानि सुजानि सुदानी * सफल करो जग याचकबानी ॥
दोहा--अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान ॥
जन्म जन्म रति रामपद, यह वरदान न आन ॥ २०४ ॥
जानहिं राम कुटिल करि मोही * लोग कहैं गुरु साहब द्रोही ॥
सीता राम चरण रति मोरे * अनुदिन बढ़ै अनुग्रह तोरे ॥
जलद जन्म भरि सुरति बिसारे * याचत जल पवि पाहन डारे ॥
चातक रटनि घटे घटिजाई * बढ़े प्रेम सब भाँति भलाई ॥
कनकहि बान चढ़ै जिमिदाहे * तिमि प्रीतम पद नेम निबाहे ॥
भरत वचन सुनि माँझ त्रिवेनी * भइ मृदुवाणि सुमंगल देनी ॥
तात भरत तुम सब विधि साधू * रामचरन अनुराग अगाधू ॥
वादिगलानि करहु मन माहीं * तुमसमरामहिं प्रियकोउनाहीं ॥
दोहा--तनु पुलके हिय हर्ष सुनि, वेणि वचन अनुकूल ॥
भरतधन्य कहि धन्य कहि, नभ सुर वर्षहिं फूल ॥२०५॥
प्रमुदित तीरथराज निवासी * वैखानस बटु गृही उदासी ॥
कहहिं परस्पर मिलि दश पाँचा * भरत सनेह शील शुचि साँचा ॥
सुनत राम गुण ग्राम सुहाये * भरद्वाज मुनिवर पहँ आये ॥
दण्ड प्रणाम करत मुनिदेखे * मूरतिवन्त भाग्य निज लेखे ॥
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हें * दीन्ह अशीश कृतारथ कीन्हें ॥
आसन दीन्ह नाइशिर बैठे * चहत सकुचिगृहजनुभजिपैठे ॥
मुनि पूँछहिं कछु यह बडशोचू * बोले ऋषि लखि शीलसँकोचू ॥
सुनहु भरत हम सब सुधिपाई * विधि करतब पर कछुनबसाई ॥
दोहा-- तुम गलानि जिय जनि करहु, समुझि मातुकरतूति ॥
तात कैकयिहि दोष नहिं, गई गिरा मति धूति ॥२०६॥
यहउ कहत भल कहहिन कोऊ * लोक वेद बुध सम्मत दोऊ ॥

१ मोक्षपद । २ प्रीति । ३ नितमति । ४ मेघ । ५ सोना । ६ शोभा । ७ वानप्रस्थ ।

तात तुम्हार विमलयश गाई * पाइहि लोकहु वेद बड़ाई ॥
लोक वेद सम्मत सब कहई * ज्यहि पितु राज्यदेइ सोलहई ॥
राउ सत्यव्रत तुमहिं बुलाई * देत राज्य सुख धर्म्म बड़ाई ॥
राम गवन वन अनरथ मूला * जो सुनि सकल विश्व भइशूला॥
सो भावीवश रानि अयानी * करिकुचालि अन्तहुपछितानी॥
तहँउँ तुम्हार अल्प अपराधू * कहै सो अधम अयान असाधू॥
करतेहु राज्य तुमहिं नहिं दोषू * रामहि होत सुनत सन्तोषू ॥
दोहा—अब अति कीन्हेउ भरत भल, तुमहिं उचितमतएहु ॥
सकल सुमंगल मूल जग, रघुवर चरण सनेहु ॥ २०७ ॥
सो तुम्हार धन जीवन प्राना * भूरिभाग्य को तुमहिं समाना ॥
यह तुम्हार आचरज न ताता * दशरथ सुवन राम लघु भ्राता॥
सुनहु भरत रघुपति मन माहीं * प्रेमपात्र तुम सम कोउ नाहीं ॥
लषण राम सीतहिं अति प्रीती * निशि सब तुमहिं सराहतबीती॥
जाना मर्म्म अन्हात प्रयागा * मगन होहिं तुम्हरे अनुरागा ॥
तुम पर अस सनेह रघुवरके * सुख जीवनजगजसजड़नरके ॥
यह न अधिक रघुवीर बड़ाई * प्रणत कुटुंबपाल रघुराई ॥
तुम तौ करत मोर मत एहू * धरेउ देह जनु राम सनेहू ॥
दोहा—तुम कहँ भरत कलंक यह, हम सबकहँ उपदेश ॥
रामभक्ति रस सिद्धि हित, भा यहि समय गणेश ॥२०८॥
नवविधु विमल तात यश तोरा * रघुवर किंकर कुमुद चकोरा ॥
उदय सदा अथइय कबहूँना * घटिहिनजगनभदिनदिनदूना॥
कोकविलोक प्रीति अतिकरहीं * प्रभुप्रतापरविछबिहिनहरहीं ॥
निशिदिन सुखद सदासबकाहू * ग्रसिहि न कैकेयि करतबराहू॥
पूरण राम सुप्रेम पियूषा * गुरु अपमान दोष नहिं दूषा ॥
रामभक्ति अब अमिय अघाहू * कीन्हेउ सुलभ सुधा वसुधाहू॥
भूप भगीरथ सुरसरि आनी * सुमिरे सकल सुमंगल खानी ॥

दशरथ गुणगण वरणि न जाहीं * अधिक काह जेहि सम जगमाहीं
दोहा–जासु सनेह सकोचवश, राम प्रगट भे आय ॥
जे हर हिय नयनन कबहुँ, निरखे नाहिं अघाय ॥ २०९ ॥
कीरति विधु तुम कीन्ह अनूपा * जहँ बस राम प्रेम मृग रूपा ॥
तात गलानि करहु जिय जाये * डरहु दरिद्रहिं पारस पाये ॥
सुनहु भरत हम झूंठ न कहहीं * उदासीन तापस बन रहहीं ॥
सब साधनकर सफलसुहावा * लषण राम सिय दरशन पावा ॥
तेहि फलकरफल दरश तुम्हारा * सहित प्रयाग सुभाग्य हमारा ॥
भरत धन्य तुम जगयश लयऊ *कहिअस प्रेममगन मुनिभयऊ ॥
सुनि मुनि वचन सभासद हरषे * साधु सराहि सुमन सुर वरषे ॥
धन्य धन्य ध्वनि गगन प्रयागा *सुनि सुनिभरतमगनअनुरागा ॥
दोहा–पुलक गात हिय राम सिय, सजल सरोरुह नैन ॥
करि प्रणाम मुनि मंडलिहि, बोले गद्गद बैन ॥ २१० ॥
मुनि समाज अरु तीरथराजू *साँचेहु शपथ अघाइ अकाजू ॥
यहि थल जो कछुकहिय बनाई *तेहि समनहिंकछुअघअधमाई ॥
तुम सर्वज्ञ कहौं सतिभाऊ * उर अन्तर्यामी रघुराऊ ॥
मोहिं न मातु करतबकर शोचू *नहिं दुख जिय जगजानहिंपोचू ॥
नाहिंन डर बिगरहि परलोकू * पितहु मरे कर नाहिंन शोकू ॥
सुकृत सुयश भरि भुवन सुहाये * लक्ष्मण रामसरिस सुतपाये ॥
राम विरह तजि तनु क्षणभंगू * भूपशोच कर कवन प्रसंगू ॥
रामलषण सिय बिनु पगपनहीं * करिमुनिवेष फिरहिं वनवनहीं ॥
दोहा–अजिन[1] वसन फल अशन महि, शयन डासिकुशपात ॥
बसि तरुतर नित सहत दुख, हिम तप[2] वरषा बात[3] ॥ २११ ॥
यह दुख दाह दहै नित छाती * भूख न वासर नींद न राती ॥
यहि कुरोग कर ओषधि नाहीं * शोधेउ सकल विश्व मनमाहीं ॥
मातु कुमति बढई अघ मूला * तेहि हमार हित कीन्ह वसूला ॥

१ मृगचर्म भोजपत्र इत्यादि । २ घाम । ३ पवन ।

कलि कुकाठ गढ कीन्ह कुयंत्रू * गाड़ि अवध पढि कठिन कुमंत्रू॥
मुहिंलागि यह कुठाट जोहिं ठाटा * घालिसि सब जग बारहबाटा ॥
मिटै कुयोग राम फिरि आये * बसहिअवध नहिं आन उपाये ॥
भरतवचन सुनि मुनि सुखपाई * सबहिं कीन्ह बहु भाँति बड़ाई ॥
तात करहु जनि शोच विशेषी * सब दुख मिटिहि रामपद देखी॥
दोहा--करिप्रबोध मुनिवर कहेउ, अतिथि प्राण प्रियहोहु ॥
कन्द मूल फल फूल हम, देहिं लेहु करि छोहु ॥२१२॥
सुनि मुनि वचनभरतहियशोचू, भगउकुअवसर कठिनसकोचू ॥
जानि गरुअ गुरु गिरा बहोरी * चरणवन्दिबोले करजोरी ॥
शिरधरि आयसुकरियतुम्हारा * परमधर्म्म यह नाथ हमारा ॥
भरत वचन मुनिबर मनभाये *शुचिसेवक शिष निकट बुलाये ॥
चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई * कन्द मूल फल आनहु जाई ॥
भले नाथ कहि तिन्ह शिरनाये *प्रमुदित निजनिजकाज सिधाये॥
मुनिहिं शोच पाहुन बड़नेवता * तस पूजा चाहिय जस देवता ॥
सुनि ऋधिसिधि अणिमादिकआई *आयसु होय सो करैं गुसाईं ॥
दोहा--रामविरह व्याकुल भरत, सानुज सकल समाज ॥
पहुनाई करि हरहु श्रम, कहेउ मुदित मुनिराज ॥ २१३ ॥
ऋधि सिधि शिरधरि मुनिवरबानी * बडभागिनि आपुहिअनुमानी
कहहिं परस्पर सिधि समुदाई * अतुलितअतिथिरामलघुभाई॥
मुनिपदवन्दिकरिय सोइ आजू * होइसुखी सब राज समाजू ॥
असकहि रुचिर रचे गृहनाना * जोविलोकिबिलखाहिंविमाना॥
भोग विभूति भूरि भरि राखे * देखत जिनहिं अमर अभिलाषे
दासी दास साज सब लीन्हें * जुगवत रहहिंमनहिंमनदीन्हें ॥
सबसमाज सजि सिधिपलमाहीं *जोसुखस्वपन्यहुँ सुरपुरनाहीं ॥
प्रथमहिं वास दिये सब केहीं * सुन्दर सुखद यथारुचि जेहीं ॥
दोहा--बहुरि सपरिजन भरतकहँ, ऋषि आयसु अस दीन्ह ॥

१ कल्पितबातें । २ कृपाकरके । ३ देवता । ४ साथियोंसमेत ।

विधि विस्मयदायक विभव, मुनिवर तपबल कीन्ह ॥२१४॥
मुनि प्रभाव जब भरत बिलोका * सब लघु लगे लोकपति लोका॥
सुख समाज नहिं जाइ बखानी * देखत बिरति बिसारहिं ज्ञानी ॥
आसन शयन सुवसन बिताना * वन वाटिका विहँग मृग नाना ॥
सुरभि फूलफल अमिय समाना * बिमलजलाशयविविधविधाना॥
अशन पान शुचि अमितअमीसे * देख लोक सकुचात जमीसे ॥
सुर सुरभी सुरतरु सबहीके * लखि अभिलाष सुरेश शचीके॥
ऋतु वसन्त बह त्रिविध बयारी * सब कहँ सुलभ पदारथ चारी॥
स्रक चन्दन वनितादिक भोगा * देखि हर्ष विस्मय सब लोगा ॥
दोहा–सम्पति चकई भरत चक, मुनि आयसु खेलवार ॥
त्यहि निशि आश्रम पींजरा, राखे भा भिनुसार॥ २१५ ॥
कीन्ह निमज्जन तीरथराजा * नाइ मुनिहि शिरसहितसमाजा
ऋषि आयसु अशीष शिरराखी * करि दण्डवत विनय बहु भाखी॥
पथ गति कुशल साथ सब लीन्हें * चले चित्रकूटहि चित दीन्हें ॥
रामसखा कर दीन्हें लागू * चलत देह धरि जनु अनुरागू॥
नहिं पदत्राण शीश नहिं छाया * प्रेम नेम व्रत धर्म्म अमाया ॥
लषण राम सिय पन्थ कहानी * पूँछत सखहि कहत मृदुबानी॥
राम वास थल विटप बिलोके * उरअनुराग रहत नहिं रोके ॥
देखि दशा सुरवर्षहिं फूला * भइमृदु महि मगु मंगल मूला॥
दोहा–किये जाहिं छाया जलद, सुखद बहत वर वात ॥
तस मग भयउ न रामकहँ, जसभा भरतहिजात ॥२१६ ॥
जड चेतन मग जीव घनेरे * जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे॥
ते सब भये परमपद योगू * भरत दरश भेषज भव रोगू ॥
यह बडि बात भरत की नाहीं * सुमिरत जिनहिं राम मनमाहीं ॥
वारेक राम कहत जग जेऊ * होत तरण तारण नर तेऊ ॥
भरत रामप्रिय पुनि लघुभ्राता * कस न होइ मगु मंगलदाता ॥
सिद्धिसाधुमुनिवर असकहहीं * भरतहिं निरखिहर्षहिय लहहीं॥

१ ऐश्वर्य । २ वैराग्य । ३ सुगन्ध मधु । ४ भोजन । ५ इन्द्र-इन्द्राणी । ६ रत्नफूलोंकी माला । ७ बहे लिया
८ निषाद । ९ कोमल । १० पृथ्वी । ११ ओषधि ।

देखि प्रभाव सुरेशहि शोचू * जगभल भलहिं पोचकहँ पोचू ॥
गुरु सन कहेउ करहु प्रभु सोई * रामहि भरतहि भेंट न होई ॥
दोहा–राम सकोची प्रेमवश, भरत सप्रेम पयोधि ॥
बनी बात बिगरन चहत, करिय यतन छल शोधि ॥२१७॥

वचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने * सहसनयन विनु लोचन जाने ॥
कह गुरु वादि क्षोभ छल छाँडू * इहाँ कपट करि होइय भाँडू ॥
मायापति सेवक सन माया * करियत उलटि परै सुरराया ॥
तबकछु कीन्ह रामरुख जानी * अब कुचाल करि होइहि हानी ॥
सुनु सुरेश रघुनाथ स्वभाऊ * निज अपराध रिसाहिं न काऊ ॥
जो अपराध भक्त कर करई * राम रोष पावक सो जरई ॥
लोकहुँ वेद विदित इतिहासा * यह महिमा जानहिं दुर्वासा ॥
भरत सरिस को रामसनेही * जग जपु राम राम जपु जेही ॥
दोहा–मनहुँ न आनिय अमरपति, रघुपति भक्त अकाज ॥
अयशलोक परलोकदुख, दिनदिन शोक समाज ॥२१८॥
सुनु सुरेश उपदेश हमारा * रामहिं सेवक परमपियारा ॥
मानत सुख सेवक सेवकाई * सेवक वैर वैर अधिकाई ॥

---

* राजा अम्बरीषका यह नियम था कि एकादशीको व्रत करके द्वादशीमें ब्राह्मण जिवाय पारण करते थे एकसमय दुर्वासाऋषि न्योता मान स्नान करने गये और द्वादशी थोड़ी रहगई व्यतीत कालजान राजाने ब्राह्मणोंसे कहकर चरणामृत ले पारण किया तिसके उपरान्त दुर्वासाऋषि आये राजाको चरणामृत लिये जान कोपकर एक जटा पटकी उससे कृत्या नाम राक्षसी प्रगट हो राजाको मारनेचली इधर राजा कंपायमान हो पृथ्वीपर गिरा उधर ऋषि दुर्वासाके ऊपर सुदर्शन चक्र भगवान्‌का चला तब उसके भयसे ऋषि भागे अब आगे ऋषि पीछे चक्र घूमते २ सब देवतोंकी शरणमें गये परन्तु किसीने शरण नहीं दिया तब विष्णुने आर्त्त वचन सुन इनसे कहा कि तुम राजाहीकी शरणमें जाओ वही तुम्हारी रक्षा करैगा तब दुर्वासा ऋषि निराश होय अंबरीषके शरणमें आये और राजा उसी प्रकार व्याकुलहो पृथ्वीमें पड़ा रहा राजा इनको आते देख आगे जाय इनको आदरपूर्वक ले आये और सुदर्शनचक्रको निवारण किया तब विष्णुभगवान्‌ने अम्ब-रीषको निर्दोषी जान दुर्वासाके शापको आप अंगीकार किया और राजाने दुर्वासाऋषिको भोजन खवाय अत्यन्त प्रीतिसे आदरपूर्वक बिदा किया ॥

१ इन्द्र । २ बृहस्पति । ३ विडम्बना ।

यद्यपि सम नहिं राग न रोषू * गहहिं न पाप पुण्य गुण दोषू ॥
कर्म्मप्रधान विश्व करि राखा * जो जस करै सो तसफलचाखा ॥
तदपि करहिं समविषम विहारा * भक्त अभक्त हृदय अनुसारा ॥
अगुण अलेख अमान एकरस * राम सगुण भये भक्त प्रेमवश ॥
रामसदा सेवक रुचि राखी * वेद पुराण साधु सुर साखी ॥
अस जिय जानि तजहु कुटिलाई * करहु भरत पद प्रीति सुहाई ॥
दोहा—रामभक्त परहित निरत, परदुख दुखी दयाल ॥
भक्तशिरोमणि भरतसे, जनि डरपहु सुरपाल ॥ २१९ ॥
सत्यासिन्धु प्रभु सुर हितकारी * भरत राम आयसु अनुसारी ॥
स्वारथ विवश विकल तुमहोहू * भरत दोष नहिं राउर मोहू ॥
सुनि सुरवर सुरगुरु वर बानी * भा प्रबोध मन मिटी गलानी ॥
वर्षि प्रसून हर्षि सुरराऊ * लगे सराहन भरत स्वभाऊ ॥
इहि विधि भरत चले मगुजाहीं * दशा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं ॥
जबहिं राम कहि लेहिं उसाँसा * उमँगत प्रेम मनहु चहुँ पासा ॥
द्रवहिं वचन सुनि कुलिश पषाना * पुरजन प्रेम न जाइ बखाना ॥
बीच वास करि यमुनहिं आये * निरखि नीर लोचन जलछाये ॥
दोहा—रघुवर वर्ण विलोकि वर, वारि समेत समाज ॥
होत विरह वारिधि मगन, चढ़े विवेक जहाज ॥ २२० ॥
यमुन तीर तेहि दिनकर वासू * भयउ समयसम सबहिं सुपासू ॥
रातिहि घाट घाटकीतरणी * आईं अगणित जाइँ न वरणी ॥
प्रात पार भे एकहि खेवा * तोषे राम सखाकरि सेवा ॥
चले अन्हाइ नदिहि शिरनाई * साथ निषाद नाथ लघु भाई ॥
आगे मुनिवर वाहन आछे * राज समाज जाइ सब पाछे ॥
तेहि पाछे दोउ बन्धु पयादे * भूषण वसन वेष सुठि सादे ॥
सेवक सुहृद सचिव सुतसाथा * सुमिरत लषण सीय रघुनाथा ॥
जहँ तहँ राम वास विश्रामा * तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रणामा ॥

१ पिघलतेहैं । २ वज्र । ३ पत्थर । ४ नौका ।

दोहा-मगु वासी नर नारि सुनि, धाम काम तजि धाइ ॥
देखि स्वरूप सनेह वश, मुदित जन्म फल पाइ ॥ २२१ ॥
कहहिं सप्रेम एक इक पाहीं * रामलषण सखि होहिंकिनाहीं॥
वयं वपु वर्ण रूप स्वइ आली * शील सनेह सरिस समचाली ॥
वेष न सो सखि सीय न संगा * आगे अनीं चली चतुरंगा ॥
नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा * सखि सन्देह होत इहि भेदा ॥
तासु तर्क तियगण मनमानी *कहहिंसकलतोहिंसमनसयानी॥
तेहि सराहि वाणी फुर पूजी * बोली मधुर वचन तिय दूजी ॥
कहि सप्रेम सब कथा प्रसंगू * जेहि विधि राम राजरस भंगू॥
भरतहि बहुरि सराहन लागी * शील सनेह स्वभाव सुभागी ॥
दोहा-चलत पयादे खात फल, पिता दीन्ह तजि राज ॥
जात मनावन रघुवरहिं, भरत सरिस को आज ॥ २२२ ॥
भायप भक्ति भरत आचरणू * कहत सुनत दुख दूषण हरणू ॥
जो कछु कहिय थोर सखि सोई * रामबंधु अस काहेन होई ॥
हम सब सानुज भरतहि देखे * भये धन्य युवती जन लेखे ॥
सुनि गुणि देखि दशा पछिताहीं* कैकयि जननियोग सुत नाहीं॥
कोउ कह दूषण रानिहु नाहिन * विधि सबभाँतिहमाहिंजोदाहिन
कहँ हम लोग वेद विधि हीनी * लघु कुल तिय करतूतिमलीनी
बसहिं कुदेश कुगाँव कुठामा *कहँ यह दरश पुण्य परिणामा॥
अस अनन्द अचरज प्रतिग्रामा* जनु मरुभूमि कल्पतरुजामा ॥
दोहा-भरत दरश देखत खुलेहु, मगु लोगन्ह कर भाग ॥
जनु सिंहलवासिन्ह भयउ, विधि वश सुलभ प्रयाग॥२२३॥
निज गुण सहित राम गुण गाथा*सुनत जाहिं सुमिरतरघुनाथा॥
तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा *निरखिनिमज्जहिंकरहिंप्रणामा॥
मनहीं मन माँगहिं वरयेहू * सीय राम पद पद्म सनेहू ॥
मिलहिं किरात कोल्ह वनवासी* वैखानस बटु यती उदासी ॥

१ अवस्था। २ देह। ३ सेना। ४ रथारूढ, गजारूढ, अश्वारूढ, पदाति।

करि प्रणाम पूँछहिं जेहि तेही * केहि बन राम लषण वैदेही ॥
ते प्रभु समाचार सब कहहीं * भरतहिं देखि जन्म फल लहहीं ॥
जे जन कहहिं कुशल हम देखे * ते प्रिय राम लषण सम पेखे ॥
इहि विधि बूझत सबहिं सुबानी * सुनत राम बन बास कहानी ॥
दोहा—तेहि बासर बसि प्रातही, चले सुमिरि रघुनाथ ॥
राम दरशकी लालसा, भरत सरिस सबसाथ ॥ २२४ ॥

मंगल शकुन होहिं सब काहू * फरकहिं सुखद विलोचन[1] बाहू ॥
भरतहिं सहित समाज उछाहू * मिलिहहिं राम मिटहिं दुखदाहू ॥
करत मनोरथ जस जियजाके * जाहिं सनेह सुरा सब छाके[2] ॥
शिथिल अंगपगडगमग डोलहिं * विह्वल वचन प्रेमवश बोलहिं ॥
रामसखा तेहि समय देखावा * शैल शिरोमणि सहज सुहावा ॥
जासु समीप सरित पय[3] तीरा * सीय समेत बसहिं दोउ वीरा ॥
देखि करहिं सब दण्डप्रणामा * कहिं जय जानकिजीवनरामा ॥
प्रेममगन अस राजसमाजू * जनु फिरि अवध चले रघुराजू ॥
दोहा—भरत प्रेम त्यहि समय जस, तस कहि सकै न शेषु ॥
कविहि अगम जिमि ब्रह्म सुख, अहमम मलिन जनेषु ॥ २२५ ॥
सकल सनेह शिथिल रघुवरके * गये कोश दुइ दिनकर ढरके ॥
जल थल देखि बसे निशि बीते[4] * कीन्ह गमन रघुनाथ पिरीते ॥
वहाँ राम रजनी अवशेषा * जागी सीय स्वप्न अस देखा ॥
सहित समाज भरत जनु आये * नाथ वियोग ताप तनु ताये ॥
सकल मलिन मन दीन दुखारी * देखी सासु आन अनुहारी ॥
सुनि सिय स्वप्न भरे जल लोचन * भये शोच वश शोचविमोचन ॥
लषण स्वप्न यह नीक न होई * कठिन कुचाह सुनाइहि कोई ॥
अस कहि बन्धु समेत अन्हाने * पूजि पुरारि साधु सनमाने ॥
छंद—सन्मानि सुर मुनि वन्दि बैठे उतर दिशि देखत भये ॥
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे विकल प्रभु आश्रमगये ॥

१ नेत्र । २ स्नेहरूपी मदिरासे छके । ३ पयस्विनीनदी । ४ रात्रिव्यतीतहोनेपर ।

तुलसी उठि अवलोकि कारण काह चित चकित रहे ॥
सब समाचार किरात कोल्हन आइ तेहि अवसर कहे ॥ १० ॥
सो०—सुनत सुमंगल बैन, मन प्रमोद तनु पुलक भर ॥
शरद सरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल ॥ ९ ॥
बहुरि शोचवश भे सियरमन * कारण कवन भरत आगमन ॥
एक आइ अस कहा बहोरी * सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
सो सुनि रामहिं भा अतिशोचू * इत पितु वच उत बन्धु सँकोचू ॥
भरत स्वभाव समुझि मनमाहीं * प्रभु चित हितथितिपावतनाहीं ॥
समाधान तब भा यह जाने * भरत कहे महँ साधु सयाने ॥
लषणलख्यउ प्रभु हृदयखँभारू * कहतसमयसम नीतिविचारू ॥
बिनु पूँछे कछु कहउँ गुसाँईं * सेवक समय न ढीठ ढिठाईं ॥
तुम सर्वज्ञ शिरोमणि स्वामी * आपनि समुझि कहौं अनुगामी ॥
दोहा—नाथ सुहृद सुठि सरल चित, शील सनेह निधान ॥
सब पर प्रीति प्रतीति जिय, जानिय आपु समान ॥२२६॥
विषयी जीव पाइ प्रभुताई * मूढ़ मोहवश होहिं जनाई ॥
भरत नीतिरत साधु सुजाना * प्रभु पद प्रेम सकल जगजाना ॥
तेऊ आज राज्यपद पाई * चले धर्म्म मर्य्याद मिटाई ॥
कुटिल कुबन्धु कुअवसरताकी * जानि राम वनवास एकाकी ॥
करि कुमंत्र मन साजि समाजू * आये करन अकण्टक राजू ॥
कोटि प्रकार कल्पि कुटिलाई * आये दल बटोरि दोउ भाई ॥
जो जिय होति न कपट कुचाली * केहि सुहात रथ वाजि गजाली ॥
भरतहिं दोष देइ को जाये * जग बौराइ राज्यपद पाये ॥
दोहा—शशि गुरु तियगामी नहुष, चढ़े भूमिसुर यान ॥

* चंद्रमाके गुरु बृहस्पति तिनकी स्त्री तारा उसने कामके वश मोहित होय चंद्रमासे कहा कि मेरे संग भोग करो तब चंद्र गुरुपत्नीका विचार कछु मनमें न लाये और उसके साथ भोग किया जब वह गर्भवती हुई और पुत्र भया जिसका बुध नाम है तब बृहस्पति बुधका नामकरण करनेको

१ आनन्द । २ घबराहट । ३ सर्वकेमनोकीगतिजाननहार । ४ सेवक ।

लोक बेद तें बिमुख भा, अधम न बेणु समान ॥ २२९ ॥
सहसबाहु सुरनाथ त्रिसंकू * केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ॥

उठे उससमय चन्द्रमाने जायके कहा कि, महाराज ! यह पुत्र मेरा है मुझको दीजिये यह जब सब समाचार गुरुको सुनाया तब बृहस्पति बोले कि नहीं मुझसे है और यह हमारा है इससे पुत्रका अधिकारी मैं हूं इससे दोनों प्रत्युत्तर करने लगे फिर देवतोंने इसकी पंचायतकर पुत्रको चन्द्रमा-को दिलादिया ।

४ राजानहुष चंद्रवंशी और राजधानी प्रतिष्ठानपुरमें बड़े धर्मात्मा प्रतापी राजा भये एक समय जब इंद्र वृत्रासुरकी हत्याके भयसे भागकर मानस सरोवरमें जाय छिपे तब इन्द्रपद खाली देख बृहस्पति महाराज राज्यप्रबन्धके निमित्त राजानहुषको बुलाय इंद्रपदपै स्थापन किया । तब राजा बड़े यश प्रतापके साथ इंद्रपदका राज्यभोग करने लगे. किसीसमय इनको राज्यमदसे यह नीच कांक्षा उत्पन्न भई कि मैंने इन्द्रपद पायके क्या किया जो इंद्राणीके साथ भोग न किया ऐसा विचार कर इंद्राणीसे यह संदेश कहला भेजा तब इंद्राणी अतिव्याकुलहुई पीछे यह बात ठहरी कि राजा ब्राह्मणोंको कहार बनाय यानपर बैठके आवे तो हम उनके संग भोग करें यह बात सुन कामके वश उठकरके सप्तऋषियोंसे राजाने कहा कि महाराज ! आप थोड़ा परिश्रम करें तो हमें इन्द्राणी प्राप्त हो ऐसा कह यानपर बैठा पंथमें यह ऋषि सत्यमार्गी धीरे धीरे नीचे देख पैरधरें और राजा कामके वश ऊपरसे सर्प सर्प अर्थात् जलदी २ चलो कहै तब तो सप्तऋषियोंने क्रोधित होय विमान पटक शापदिया कि अयराजा ! कामवश तेरीबुद्धि भ्रष्ट होगई इससे तू मृत्युलोकमें जाकर सर्पहो तब राजा मृत्युलोकमें आय सर्प भया जिसे युधिष्ठिरने उद्धार किया ।

१ राजावेणु अपनी लड़काईसे बड़ा क्रूरथा और अनेक तरहके उपद्रव प्रतिदिन किया करे इससे प्रजाको दुःखी देख वेणुके पिता अंगराजाको बड़ा क्लेशहुआ पश्चात् अंगराजाके मरनेपर जब यह राज्यका अधिकारी हुआ तब तो इसने यह आज्ञादी कि कोई शास्त्र पुराण वेदको नमाने उसके बदलेमें सब कोई मेरा गुणगान करे और परमेश्वर मुझको माने और जो कोई मेरी आज्ञामानेगा सो दण्डके योग्य होगा इसबातके प्रचलित होनेसे सुर मुनि प्रजाअधिक दुःखी हुई फिर एकस-मय ऋषिलोग आपसमें विचार करने लगे कि राजाके पास इस विषयमें कुछ बात चीत करनी चाहिये ऐसा शोचके ऋषियोंने आयके राजाको बहुत ज्ञानउपदेश किया परन्तुउसके चित्तमें कुछभी न आया और यही उत्तर दिया कि, तुम अज्ञानीहो तब ऋषियोंने क्रोधसे शापदेके मारडाला पुनि ऋषियोंने राजगद्दी भ्रष्ट जानके उसके शरीरको मथा प्रथम जांघमेंसे एक काला पुरुष निकला उसको पापरूप ठहराया फिर भुजामेंसे पृथु निकले तब उन्हें धर्मका अवतार जानके राजगद्दी दिया सो राजा पृथु बड़े धर्मात्मा नामी राजा भये और काला मनुष्य जो प्रथम निकला उसे दक्षिणका राज्य-दिया उसीकी सन्तान निषाद कहलाई ।

२ सहस्रबाहु क्षत्रियराजा महादेवके प्रसादसे बड़ा बली हुआ एकसमय सेना संग लेकर अहेर खेलने गया वहाँ प्यासा हो दूतको भेजा कि,यहाँ किसीका स्थान होय तो जल लाओ दूत सो जाता

भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ * रिपु रण रंच न राखब काऊ ॥
एक कीन्ह नहिं भरत भलाई * निदरे राम जानि असहाई ॥
समुझि परिहि सो आज बिशेषी * समर सरोष रामरुख देखी ॥
इतना कहत नीति रस भूला * रणरस बिटपफूल जिमिफूला ॥
प्रभुपदवन्दि शीश रजराखी * बोले सत्य सहज बल भाखी ॥
अनुचित नाथ न मानब मोरा * भरत हमहिं उपचार नथोरा ॥
कहँ लगि सहियरहियमनमारे * नाथ साथ धनु हाथ हमारे ॥

हुआ जमदग्निके पास जाय उनसे कहा कि राजा प्यासे हैं तब ऋषि बोले राजाको बुला लाओ यहां भोजनकर श्रम दूरकर चले जायँगे तब दूत राजासे जाय ऋषिके वचन कहने लगा राजा राज्यमदसे बोले कि इतना भोजन ऋषि कहाँसे पावैगा कि सेनासमेत मेरी तृप्ति होगी इस बातको दूतद्वारा ऋषि सुनके बोले कि इसका शोच तुम्हारे राजा कुछ न करैं आज मेरे अतिथि होयँ. तब राजा सेनासहित ऋषिके स्थानमें गये और ऋषिने कामधेनुके प्रसादसे राजाकी पहुनाईकरी तब सहस्रबाहुने ऋषिसे पूंछा इतना सामान क्षणमात्रमें आपने कैसे करलिया तब ऋषिने कहा महाराज ! मेरे यहां कामधेनु है तब राजाने कहा वह कामधेनु मुझको दीजिये इस बातको सुनके ऋषिने बहुत उदास होय निवेदन किया परंतु राजाने नहीं माना और आज्ञा दिया कि कामधेनुको खोललेचलो और ऋषिका वचन मतसुनो तब कामधेनुसे म्लेच्छ पैदा हुये उनसे और राजासे लड़ाई होने लगी फिर क्रोधमें आकर सहस्रबाहुने जमदग्निका शिरकाटडाला और रेणुकाको भी घायल किया गऊ भाग इंद्रलोकको गई यह समाचार सुन परशुराम आये पिताको मरा देख माताके संतोषके निमित्त प्रण किया कि पृथ्वीपर क्षत्रीका बीज न रक्खेंगे ऐसा कह सहस्रबाहुको जायमारा इक्कीसबार पृथ्वी क्षत्रियोंसे रहित करी इंद्रकी कथा लिखचुके हैं।

१ राजा त्रिशंकुको राज्यमदसे यह इच्छा हुई कि हम ऐसा यज्ञकरैं कि, सदेह स्वर्गको जाँय ऐसा विचार वसिष्ठजीसे जाय कहा तब वसिष्ठजीने अभिमानी जान कहा कि, ऐसी शास्त्रकी मर्यादा नहीं फिर वसिष्ठजी के पुत्रोंसे राजाने कहा उन्होंने गुरुके वचनोंमें अविश्वासी देख शाप दिया कि, तू चांडाल हो पिता पुत्रोंमें द्वेष किया चाहता है। तब यह राजा शापवश चांडालहो विश्वामित्रकी शरणमें गया उन्होंने इस्से यज्ञ प्रारंभ करवाया यह समाचार देख वसिष्ठादि सब ऋषि-देवता मिलके यज्ञविध्वंस करने लगे तब विश्वामित्रने तपबलसे ऋषि और देवता नये उत्पन्न किये और यज्ञको पूराकर त्रिशंकुको आज्ञादिया कि सदेह स्वर्गको चला जा. त्रिशंकु स्वर्गमें चल गया तब वहाँसे देवतोंने नीचे ढकेला और वह उलटा होय नीचेको गिरने लगा विश्वामित्रने तपबलसे अधरमें स्थिर कर दिया सो त्रिशंकु तारा विदित है और उसके मुँहसे जो लार टपकी सो कर्म नाशा नदी हुई जो बनारस बिहारके बीच बहतीहै और शास्त्रमें उसका पानी छूना वर्जित है कोई ऐसाभी कहते हैं कि, गुरु और गुरुपुत्रोंकी आज्ञा न माननेसे और एक समय वसिष्ठजीकी गऊको ताडनकरनेसे इन तीनों पापसे इसराजाके माथेमें तीन सींग होगये इससे त्रिशंकु नाम पड़ा

दोहा-क्षत्रियजाति रघुकुल जनम, राम अनुज जग जान ॥
लातहु मारे चढ़त शिर, नीचको धूरि समान ॥ २२८ ॥
उठि करजोरि रजायसु माँगा * मनहुँ वीररस सोवत जागा ॥
बाँधिजटाशिरकसिकटि भाथा * साजि शरासन सायक हाथा ॥
आजु रामसेवक यश लेऊँ * भरतहि समर शिखावन देऊँ ॥
राम निरादर कर फल पाई * सोवहु समरसेज दोउ भाई ॥
आइ बना भल सकल समाजू * प्रगट करौं रिस पाछिल आजू ॥
जिमि करि निकर दलै मृगराजू * लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ॥
तैसहि भरतहिं सेन समेता * सानुज निदरि निपातौं खेता ॥
जो सहाय कर शंकर आई * तदपि हतौं रण राम दुहाई ॥
दोहा-अति सरोष माखे लषण, लखि सुनि शपथ प्रमाण ॥
सभय विलोकत लोकपति, चाहत भभरि भगान ॥ २२९ ॥
जग भै मगन गगन भै बानी * लषण बाहुबल विपुल बखानी ॥
तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा * को कहि सकै कोजाननिहारा ॥
अनुचित उचित काजकछुहोई * समुझि करियभलकहसबकोई ॥
सहसाकरि पाछे पछिताहीं * कहहिं वेद बुध ते बुध नाहीं ॥
सुनि सुरवचन लषण सकुचाने * राम सीय सादर सनमाने ॥
कही तात तुम नीति सुहाई * सबते कठिन राजमद भाई ॥
जो अँचवत मातहि नृप तेई * नाहिंन साधु सभा जिनसेयी ॥
सुनहु लषण भल भरतसरीखा * विधि प्रपंच महँ सुना नदीखा ॥
दोहा-भरतहिं होइ न राजमद, विधि हरि हर पद पाइ ॥
कबहुँ कि काँजी सीकरन्हि, क्षीरसिंधु विनशाइ ॥ २३० ॥
तिमिर[10] तरुण[11]तरणिहिसकगिलई * गगन मगनमगु मेघहि मिलई ॥
गो पद जल बूड़हिं घटयोनी[12] * सहज क्षमा बरु छाँडिहिक्षोनी ॥
मशक फूंक बरु मेरु उड़ाई * होइ न नृपमद भरतहि भाई ॥
लषण तुम्हार शपथ[13] पितुआना * शुचि सुबंधु नहिं भरतसमाना ॥

१ तरकस । २ धनुप । ३ हाथियोंके झुंड । ४ सिंह । ५ बटेर । ६ बावला । ७ सुशील । ८ ब्रह्माकीसृष्टि । ९. मत्राके वर्तनके धोवनके बूँद । १० अंधकार । ११ दोपहरके सूर्य । १२ अगस्त्यमुनि । १३ गोंगधा।

सगुण क्षीर अवगुण जलताता * मिलै रचै परपंच विधाता ॥
भरत हंस रविवंश तड़ागा * जनमिकीन्ह गुणदोष विभागा॥
गहिगुण पय तजि अवगुणबारी * निजयशजगत कीन्हउजियारी
कहत भरत गुण शील स्वभाऊ * प्रेम पयोधि मगन रघुराऊ ॥
दोहा—सुनि रघुवर वाणी विबुध, देखि भरत पर हेतु ॥
लगे सराहन सहसमुख, प्रभुको कृपानिकेतु ॥ २३१ ॥
जो न होत जग जन्म भरतको * सकलधर्मधुर धरणिधरतको॥
कविकुलअगमभरत गुणगाथा * कोजानै तुम बिन रघुनाथा ॥
लषण राम सिय सुनि सुरबानी * अतिसुखलहेउ नजाइबखानी॥
इहाँ भरत सब सहित सुहाये * मंदाकिनी पुनीत अन्हाये ॥
सरित समीप राखि सब लोगा * माँगि मातु गुरुसचिव नियोगा॥
चले भरत जहँ सिय रघुराई * साथ निषाद नाथ लघुभाई ॥
समुझि मातु करतब सकुचाहीं * करत कतर्क कोटि मनमाहीं ॥
राम लषण सिय सुनि ममनाऊं *उठिजनि अनतजाहिंतजिठाऊं॥
दोहा—मातुमते महँ जानि मोहिं, जो कछु कहहिं सो थोर ॥
अघ अवगुण तजि आदरहिं, समुझि आपनी ओर ॥२३२॥
जो परिहरहिं मलिनमन जानी * जो सन्मानहिं सेवक मानी ॥
मोरे शरण रामकी पनही * राम सुस्वामि दोष सबजनही॥
जग यश भाजन चातक मीना * नेम प्रेम निज निपुण नवीना ॥
अस मन गुणत चले मगजाता * सकुचिसनेहशिथिलसबगाता॥
फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी * चलत भक्तिबल धीरज धोरी ॥
जबसमुझहिं रघुनाथ स्वभाऊ * तब पथ परत उतानलपाऊ ॥
भरत दशा तेहि अवसर कैसी *जल प्रवाह जलअलिगतिजैसी॥
देखि भरत कर शोच सनेहू * भा निषाद त्यहि समयविदेहू ॥
दोहा—लगे होन मंगल शकुन, सुनि गुणि कहत निषाद ॥
मिटिहि शोच होइहि हरष, पुनि परिणाम विषाद ॥२३३॥

१ दीप। २ भ्रमर।

सेवक वचन सत्य सब जाने * आश्रम निकट जाय नियराने ॥
भरत दीख बन सैल समाजू * मुदित क्षुधित जनु पाइ सुनाजू ॥
ईतिभीति जनु प्रजा दुखारी * त्रिविध ताप पीड़ित ग्रह मारी ॥
जाइ सुराज सुदेश सुखारी * भइ भरत गति तेहि अनुहारी ॥
राम वास वन सम्पति भ्राजा * सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ॥
सचिव विराग विवेक नरेशा * विपिन सुहावन पावन देशू ॥
भट यमनियम शैल रजधानी * शान्ति सुमतिशुचिसुन्दररानी ॥
सकल अंग सम्पन्न सुराऊ * रामचरण आश्रितचितचाऊ ॥
दोहा—जीति मोह महिपालदल, सहित विवेक भुआल ॥
करत अकण्टक राज्यपुर, सुख सम्पदा सुकाल ॥ २३४ ॥
वन प्रदेश मुनि वास घनेरे * जनु पुर नगर गाँव गण खेरे ॥
विपुल विचित्र विहँग मृगनाना * प्रजा समाज न जाइ बखाना ॥
खरहा करि हरि बाघ बराहा * देखि महिष वृष साज सराहा ॥
वैर विहाइ चरहिं इक संगा * जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा ॥
झरना झरहिं मत्तगजगाजहिं * मनहुँनिसानविविधविधिबाजहिं
चकचकोरचातकशुकपिकगन * कूजत मंजु मराल मुदित मन ॥
अलिगण गावत नाचतमोरा * जनु सुराज मंगल चहुँ ओरा ॥
वेलि विटप तृण सफल सफूला * सब समाज मुद मंगल मूला ॥
दोहा—राम शैल शोभा निरखि, भरत हृदय अतिप्रेम
तापस नृप फल पाइ जिमि, सुखी सिराने नेम ॥ २३५ ॥
तब केवट ऊँचे चढ़ि जाई * कहा भरत सन भुजा उठाई ॥
नाथ देखु यह विटप विशाला * पाकर जम्बु[१०] रसाल[११] तमाला[१२] ॥
तिन तरुवरन्ह मध्य बट सोहा * मंजु विशाल देखि मनमोहा ॥
नील सघन पल्लव फल लाला * अविचलछाँहसुखदसबकाला ॥
मानहुँ तिमिर अरुणमयराशी * विरचीविधिसकेलिसुखमासी ॥
तेहि तरु सरितसमीप गुसाँई * रघुवर पर्णकुटी तहँ छाई ॥

१ अतिवृष्टि अनावृष्टि इत्यादि भय । २ चौगड़ा । ३ हाथी । ४ सिंह । ५ सूकर । ६ भैंसा । ७ भेड़ । ८ भ्रमरगण ।
९ पिलखन । १० जामुन । ११ आँब । १२ आबनूस ।

तुलसी तरुवर विविध सुहाये * कहुँसियपियकहुँलषणलगाये ॥
वटछाया वेदिका बनाई * सिय निज पाणि सरोज सुहाई॥
दोहा-जहँ बैठे मुनिगण सहित, नित सिय राम सुजान ॥
सुनहिं कथा इतिहास सब, आगम निगम पुरान ॥ २३६ ॥
सखा वचन सुनिविटप निहारी *उमँग्यउ भरत विलोचन वारी॥
करत प्रणाम चले दोउ भाई * कहत प्रीति शारद सकुचाई ॥
हर्षहिं निरखि राम पद अंका * मानहुँ पारस पायहु रंका ॥
रजशिरधरिहियनयनलगावहिं *रघुवरमिलनसरिससुखपावहिं।
देखि भरतगति अकथ अतीवा * प्रेम मगन मृग खग जड़जीवा ॥
सबहिं सनेह विवश मग भूला * कहि सुपंथ सुर वर्षहिं फूला ॥
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे * सहज सनेह सराहन लागे ॥
होत न भूतल भाव भरतको * अचरसचरचरअचरकरतको ॥
दोहा-प्रेम अमिय मन्दिर विरह, भरत पयोधि गँभीर ॥
माथि प्रगटे सुर साधु हित, कृपासिन्धु रघुवीर ॥ २३७ ॥
सखा समेत मनोहर जोटा * लखेउ न लषणसघनवनओटा॥
भरत दीख प्रभु आश्रम पावन * सकल सुमंगल सदन सुहावन
करत प्रवेश मिटा दुख दावा * जनु योगी परमारथ पावा ॥
देखे लषण भरत प्रभु आगे * पूँछत वचन कहत अनुरागे ॥
शीश जटा कहि मुनि पट बाँधे *तूण कसे कर शर धनु काँधे ॥
वेदी पर मुनि साधु समाजू * सीय सहित राजत रघुराजू ॥
वल्कल वसन जटिल तनु श्यामा* जनुमुनिवेषकीन्हरतिकामा ॥
करकमलन धनु सायक फेरत * जी की जरनि हरत हँसि हेरत
दोहा-लसत मंजु मुनिमण्डली, मध्य सीय रघुनंद ॥
ज्ञानसभा जनु तनु धरे, भक्ति सच्चिदानंद ॥ २३८॥
सानुज सखा समेत मगन मन * बिसरे हर्ष शोक सुख दुखगन॥
पाहि नाथ कहि पाहि गुसाँई * भूतल परे लकुटकी नाँई ॥

वचन सप्रेम लषण पहिंचाने * करत प्रणाम भरत जियजानी ॥
बंधु सनेह सरस यहि ओरा * उत साहिब सेवा बरजोरा ॥
मिलि नजाइ नहिं गुदरत बनई * सुकवि लषण मनकीगति भनई ॥
रहे राखि सेवा पर भारू * चढीचंग जनु खैंच खिलारू ॥
कहत सप्रेम नाइ महिमाथा * भरत प्रणाम करत रघुनाथा ॥
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा * कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा ॥
दोहा–बरबश लिये उठाइ उर, लाये कृपानिधान ॥
भरत रामकी मिलन लखि, बिसरे सबहिं अपान ॥ २३९ ॥
मिलन प्रीति किमि जाइ बखानी * कविकुल अगम कर्ममनबानी ॥
परम प्रेम पूरण दोउ भाई * मनबुधि चित अहमिति बिसराई
कहहु सुप्रेम प्रगट को करई * केहिछाया कविमति अनुसरई ॥
कविहिं अर्थ आखर बल साँचा * अनुहर ताल गतिहि नटनाचा ॥
अगम सनेह भरत रघुवरको * जहँनजाइमन विधिहरि हरको ॥
सो मैं बरणि कहौं केहि भाँती * बाजु सुराग कि गाँडरिताँती ॥
मिलनिविलोकिभरतरघुवरकी * सुरगण सभय धुकधुकीधरकी ॥
समुझाये सुरगुरु जड जागे * बरषि प्रसून प्रशंसन लागे ॥
दोहा–मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं, केवट भेंटे राम ॥
भूरिभाग्य भेंटे भरत, लक्ष्मण करत प्रणाम ॥२४०॥
भेंटेउ लषण ललकि लघुभाई * बहुरि निषाद लीन्ह उरलाई ॥
पुनि मुनिगण दोउ भाइन वन्दे * अभिमत आशिष पाइ अनन्दे ॥
सानुज भरत उमँगि अनुरागा * धरिशिर सियपद पद्म परागा ॥
पुनि पुनि करत प्रणाम उठाये * सियकर कमल परशि बैठाये ॥
सीय अशीश दीन्ह मनमाहीं * मगन सनेह देह सुधि नाहीं ॥
सबविधि सानुकूल लखिसीता * मे अशोच उर अपडर बीता ॥
कोउ कछु कहै न कोउ कछुपूछा * प्रेम भरामन निजगति छूछा ॥
तेहि अवसर केवट धीरज धरि * जोरि पाणि बिनवत प्रणामकरि ॥

१ सेवामें।चित्तास्थिररहो। २ पतंग। ३ तरकस। ४ अनुसार। ५ रुईधुनकनेकी तांति। ६ बृहस्पति। ७ पुष्प। ८ मनभावनी।

दोहा-नाथ साथ मुनिनाथके, मातु सकल पुरलोग ॥
सेवक सेनप सचिव सब, आये विकल वियोग ॥ २४१ ॥

शील सिन्धु सुनि गुरु आगमनू * सीय समीप राखि रिपुदमनू ॥
चले सवेग राम तेहि काला * धीर धर्म्म धुर दीनदयाला ॥
गुरुहिं देखि सानुज अनुरागे * दण्ड प्रणाम करन प्रभु लागे ॥
मुनिवर धाइ लिये उर लाई * प्रेम उमँगि भेंटे दोउ भाई ॥
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू * कीन्ह दूरिते दण्ड प्रणामू ॥
रामसखा ऋषि बरबश भेंटे * जनु महिलुटत सनेह समेटे ॥
रघुपति भक्ति सुमंगल मूला * नभ सराहि सुर वर्षहिं फूला ॥
इहिसम निपट नीचकोउनाहीं * बड़ बसिष्ठ सम को जगमाहीं ॥

दोहा-जेहि लखि लषणहुँते अधिक, मिलेउ मुदित मुनिराउ ॥
सो सीतापति भजनको, प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥ २४२ ॥

आरत लोग राम सब जाना * करुणाकर सुजान भगवाना ॥
जो जेहि भाँति रहा अभिलाषी * तेहि तेहिकी तैसी रुचि राखी ॥
सानुज मिलि पलमहँ सबकाहू * कीन्ह दूरि दुख दारुण दाहू ॥
यह बडि बात रामकै नाहीं * जिमि घट कोटि एक रविछाहीं ॥
मिलि केवटहिं उमँगि अनुरागा * पुरजन सकल सराहहिं भागा ॥
देखी राम दुखित महतारी * जनु सुबेलि अवली हिम मारी ॥
प्रथम राम भेंटे कैकेयी * सरल स्वभाव भक्तिमति भेई ॥
पग परि कीन्ह प्रबोध बहोरी * कालकर्म्मविधि शिरधरिखोरी ॥

दोहा-भेंटी रघुपति मातु सब, करि प्रबोध परितोष ॥
अम्ब ईश आधीन जग, काहुन देइय दोष ॥ २४३ ॥

गुरुतिय पद बन्दे दोउ भाई * सहित विप्र तिय जे सँग आई ॥
गंग गौरि सम सब सन्मानी * देहिं अशीश मुदित मृदुबानी ॥
गहि पद लगे सुमित्रा अंका * जनु भेंटी सम्पति अतिरंका ॥
पुनि जननी चरणन दोउ भ्राता * परे प्रेम व्याकुल सब गाता ॥

१ वासिष्ठके।

अति अनुराग अम्ब उरलाये * नयन सनेह सलिल अन्हवाये॥
तेहि अवसर कर हर्ष विषादू *किमिकवि कहै मूक जिमिस्वादू
मिलि जननिहिं सानुजरघुराऊ * गुरुसन कहेउ कि धारिय पाऊ
पुरजन पाइ मुनीश नियोगू * जल थल तकि तकि उतरे लोगू॥
दोहा—महिसुर मंत्री मातु गुरु, गने लोग लिये साथ ॥
पावन आश्रम गमन किय, भरत लषण रघुनाथ ॥ २४४॥
सीय आइ मुनिवर पग लागी * उचित अशीश लही मन माँगी
गुरुपत्निहिंमुनितियन्ह समेता * मिलि सप्रेम कहि जाइ न जेता॥
वन्दि वन्दि पद सियसब हीके * आशिष वचन लहे प्रिय जीके॥
सासु सकल जब सीय निहारी * मूँदेउ नयन सहमि सुकुमारी॥
परी वधिक वश मनहुँ मराली * काह कीन्ह करतार कुचाली ॥
तिन्ह सिय निरखिनिपटदुखपावा*सो सब सहिय जो दैवसहावा॥
जनकसुता तब उर धरि धीरा * नील नलिन लोचन भरिनीरा ॥
मिली सकल सासुन्ह शिरनाई *त्यहि अवसर करुणा महिछाई॥
दोहा—लागि लागि पग सबनि सिय, भेटति अति अनुराग ॥
हृदय अशीशहिं प्रेमवश, रहिहौ भरी सुहाग ॥ २४५ ॥
विकल सनेह सीय सब रानी * बैठन सबहिं कहेउ गुरुज्ञानी ॥
प्रथम कही जगगति मुनिनाथा * कहे कछुक परमारथ गाथा ॥
नृपकर सुरपुर गमन सुनावा * सुनि रघुनाथ दुसह दुख पावा॥
मरण हेतु निजनेह विचारी*भे अतिविकल धीरधुरधारी ॥
कुलिश कठोर सुनत कटुवानी * विलपत लषण सीयसबरानी ॥
शोक विकलअतिसकलसमाजू* मानहुँ राज अकाजेउ आजू ॥
मुनिवर बहुरि राम समुझाये * सह समाज सुरसरित अन्हाये॥
व्रत निरम्बु त्यहि दिन प्रभुकीन्हा*मुनिहुँ कहे जल काहु न लीन्हा
दोहा—भोर भये रघुनंदनहिं, जो मुनि अयासु दीन्ह ॥
श्रद्धा भक्ति समेत प्रभु, सो सब सादर कीन्ह ॥२४६॥

१. निर्मल।

करि पितुक्रिया बेद जस बरणी * भे पुनीत पातक तम तरणी ॥
जासु नाम पावक अघतूला * सुमिरत सकल सुमंगल मूला ॥
शुद्ध सो भये साधु सम्मत अस * तीरथ आवाहन सुरसरि जस ॥
शुद्ध भये दुइ बासर बीते * बोले गुरुसन राम पिरीते ॥
नाथ लोग सब निपट दुखारी * कन्द मूल फल अम्बु अहारी ॥
सानुज भरत सचिव सब माता * देखि मोहिं पल जिमियुगजाता॥
सब समेत पुरधारिय पाऊ * आपु इहाँ अमरावति राऊ ॥
बहुत कहेउँ सब कियउँ ढिठाई * उचितहोइ तस करिय गुसाँई॥
दोहा—धर्म सेतु करुणायतन, कस न कहहु अस राम ॥
लोग दुखित दिन दुइ दरश, देखि लहहिं विश्राम ॥२४७॥
रामवचन सुनि सभय समाजू *जनुजलनिधिमहँ विकलजहाजू॥
सुनि मुनि गिरा सुमंगल मूला * भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला ॥
पावन पय तिहुँ काल अन्हाहीं *ज्यहिविलोकिअघओघनशाहीं॥
मंगलमूरति लोचन भरि भरि * निरखहिंहर्षि दण्डवतकरिकरि
रामशैल बन देखन जाहीं * जहँसुखसकलकतहुँदुखनाहीं॥
झरना झरहिं सुधा सम बारी * त्रिविध ताप हर त्रिविधबयारी॥
विटपबेलि तृण अगणित जाती * फल प्रसून पल्लव बहु भाँती ॥
सुन्दरशिला सुखद तरुछाहीं *जाइबरणि छवि बन केहिपाहीं ॥
दोहा—सरित सरोरुह जल विहँग, कूजत गुंजत भृंग ॥
बैर विगत विहरत विपिन, मृग विहंग बहुरंग ॥ २४८ ॥
कोल किरात भिल्ल बनवासी *मधु शुचि सुंदरस्वादु सुधासी॥
भरि भरि पर्णपुटी रचि रूरी * कन्द मूल फल अंकुर जूरी ॥
सबहिं देहिं करि विनयप्रणामा * कहिकहि स्वादभेदगुणनामा॥
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं * फेरत राम दोहाई देहीं ॥
कहहिं सनेह मगन मृदुबानी * मानत साधु प्रेम पहिचानी ॥
तुम सुकृती हम नीच निषादा * पावा दर्शन राम प्रसादा ॥

१ आग्नि । २ पापरूपीरुई । ३ पानी । ४ समुद्र । ५ पाप । ६ फूल । ७ पत्ते । ८ पत्तोंकादोना । ९ पुण्यात्मा ।

हमहिं अगमअतिदरशतुम्हारा * जस मरुधरणि देवसरि धारा ॥
राम कृपालु निषाद नेवाजा * परिजन प्रजा चहियजसराजा॥
दोहा–यह जिय जानि सकोच्च तजि, करिय छोह लखि नेहु ॥
हमहिं कृतारथ करन लगि, फल तृण अंकुर लेहु ॥ २४९ ॥
तुम प्रिय पाहुन बन पगु धारे * सेवा योग्य न भाग्य हमारे ॥
देव कहा हम तुमहिं गुसाँई * ईंधन पात किरात मिताई ॥
यह हमार अति बड़ि सेवकाई * लेहिं न बासन बसन चुराई ॥
हम जड़जीव जीवगणघाती * कुटिल कुचालीकुमतिकुजाती॥
पाप करत निशिवासर जाहीं * नहिं कटिपट नहिं पेटअघाहीं॥
स्वपनेहुँधर्म्म बुद्धि कस काऊ * यह रघुनन्दन दरश प्रभाऊ ॥
जब ते प्रभुपद पद्म निहारे * मिटे दुसह दुख दोष हमारे ॥
वचन सुनत पुरजन अनुरागे * तिन्हके भाग्य सराहन लागे ॥
छंद–लागे सराहन भाग्य सब अनुराग वचन सुनावहीं ॥
बोलनि मिलनि सिय राम चरण सनेह लखि सुख पावहीं॥
नर नारि निदरहिं नेह निज सुनि कोल भिल्लनकी गिरा ॥
तुलसी कृपा रघुवंशमणिकी लोह लै नौका तरा ॥ ११ ॥
सो०–विहरहिं वन चहुँ ओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब ॥
जल जिमि दादुर मोर, भये पीन पावस प्रथम ॥ १० ॥
पुरनर नारि मगन अति प्रीती * वासर जाहिं पलक समबीती ॥
सीय सासु प्रति वेष बनाई * सादर करहिं सरिस सेवकाई ॥
लखा न मर्म राम विनु काहू * माया सब सिय मायानाहू ॥
सीयसासु सेवा वश कीन्हीं * तिन्हलहि सुखजियआशिषदीन्हीं॥
लखिसियसहितसरलदोउभाई * कुटिल रानि पछिताइ अघाई ॥
अब जिय माहि याचति कैकेई * महिं न बीच विधिमीचनदेई ॥
लोकहु वेद विदित कवि कहहीं * राम विमुखथलनरकनलहहीं॥
यह संशय सबके मन माहीं * राम गमनविधिअवधकिनाहीं॥

१ दुर्लभ । २ मारवाडकीपृथ्वी । ३ गंगाजीकीधारा ।

दोहा–निशि न नींद नहिं भूख दिन, भरत विकल शुचिशोच ॥
नीच कीच बिच मगन जस, मीनहिं सलिलसकोच ॥२५०॥
कीन्ह मातु मिस काल कुचाली * ईतिभीति जस पाकत शाली ॥
केहि विधि होइ राम अभिषेकू *मोहिं अब फुरत उपाय न एकू ॥
अवशिफिरहिं गुरुआयसुमानी* पुनिपुनि कहबराम रुचिजानी॥
मातु कहे बहुरहिं रघुराऊ * राम जननि हठ करबकिकाऊ॥
मो अनुचर कर केतिक बाता *त्यहिमहँकुसमयवामविधाता॥
जो हठ करौं तो निपट कुकर्म्मू * हरगिरि ते गुरु सेवक धर्म्मू ॥
एकौ युक्ति न मन ठहरानी * शोचत भरतहिं रैनि बिहानी ॥
प्रात अन्हाइ प्रभुहि शिरनाई * बैठत पठये ऋषय बुलाई ॥
दोहा–गुरुपद कमल प्रणाम करि, बैठे आयसु पाइ ॥
विप्र महाजन सचिव सब, जुरे सभासद आइ ॥ २५१ ॥
बोले मुनिवर समय समाना * सुनहु सभासद भरतसुजाना॥
धर्म्म धुरीण भानुकुल भानू * राजा राम स्ववश भगवानू ॥
सत्यसिंधु पालक श्रुतिसेतू * राम जन्म जग मंगल हेतू ॥
गुरु पितु मातु वचन अनुसारी * खल दल दलन देव हितकारी ॥
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ * कोउ न रामसमजानयथारथ॥
विधिहरिहरशशिरविदिशिपाला*माया जीव कर्म कलिकाला ॥
अहिप महिप जहँलगि प्रभुताई* योगसिद्धि निगमागम गाई ॥
करि विचार जिय देखहु नीके * रामरजाय शीश सबहीके ॥
दोहा–राखे रामरजाय रुख, हम सब कर हित होइ ॥
समुझि सयाने करहु अब, सब मिलि सम्मत सोइ ॥२५२॥
सब कहँ सुखद राम अभिषेकू * मंगल मूल मोद मग येकू ॥
जेहि विधि अवध चलहिंरघुराई * कहहु समुझि सोइ करै उपाई॥
सब सादर सुनि मुनिवर वानी * नय परमारथ स्वारथ सानी ॥
उतर न आव लोग रे भोरे * तब शिरनाय भरत कर जोरे ॥

१ शेष । २ राजा–ब्राह्मण–शेषनाग । ३ वेद-शास्त्र ।

भानुवंश भे भूप घनेरे * अधिक एक ते एक बडेरे ॥
जन्महेतु सब कहँ पितु माता * कर्म्म शुभाशुभ देइ विधाता ॥
दलिदुख सजै सकल कल्याना * अस आशीश राउर जगजाना ॥
सो गुसाइँ विधिगति जेइ छेकी * सकै को टारि टेक जो टेकी ॥
दोहा–बूझिय मोहिं उपाय अब, सो सब मोर अभाग ॥
सुनि सनेहमय वचन गुरु, उर उपजा अनुराग ॥२५३॥
तात बात फुर राम कृपाहीं * राम विमुख सुखस्वपन्यहुनाहीं
सकुचौं तात कहत इकबाता * अर्ध तजहिं बुधसरवसजाता ॥
तुम कानन गमनहु द्वउ भाई * फेरिय लषण सीयरघुराई ॥
सुनि शुभ वचन हर्षदोउ भ्राता * भे प्रमोद परिपूरण गाता ॥
मन प्रसन्न तनु तेज विराजा * जनुजिय राउ राम भे राजा ॥
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी * समदुखसुख सब रोवहिं रानी ॥
कहहिं भरतमुनि कहासोकीन्हें * फलजगजीवनअभिमतदीन्हें ॥
कानन करउँ जन्मभरि बासू * इहिते अधिक न मोर सुपासू ॥
दोहा–अन्तर्यामी राम सिय, तुम सर्वज्ञ सुजान ॥
जो फुर कहहुँ तो नाथनिज, कीजियवचनप्रमाण ॥२५४॥
भरत वचन सुनि देखि सनेहू * सभासहित मुनिभयउ विदेहू ॥
भरत महा महिमा जलरासी * मुनिमतितीरठाढिअबलासी ॥
गा चह पार यत्न बहुहेरा * पावति नाव न वोहित बेरा ॥
और करहि को भरत बड़ाई * सरसिसीपकिमिसिन्धुसमाई ॥
भरत मुनिहिं मन भीतर पाये * सहित समाज रामपहँ आये ॥
प्रभु प्रणाम करि दीन्हसुआसन * बैठे सब मुनि सुनि अनुशासन ॥
बोले मुनिवर वचन विचारी * देश काल अवसर अनुहारी ॥
सुनहु राम सर्वज्ञ सुजाना * धर्म्मनीति गुण ज्ञान निधाना ॥
दोहा–सबके उर अन्तर बसहु, जानहु भाव कुभाव ॥
पुरजन जननी भरतहित, होइ सो करिय उपाव ॥२५५॥

१ वांछितफल । २ वनमें । ३ समुद्र । ४ स्त्री । ५ जहाज ।

आरत कहहिं विचारि न काऊ * सूझ जुआरिहि आपन दाऊ ॥
सुनि मुनि वचन कहत रघुराऊ * नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥
सब कर हित रुख राउर राखे * आयसु किये मुदित फुर भाषे॥
प्रथम जो आयसु मोकहँ होई * माथे मानि करौं शिर सोई ॥
पुनि जेहि कहँ जस होब रजाई * सोसब भाँति करिहि सेवकाई॥
कह मुनि राम सत्य तुम भाषा * भरत सनेह विचार न राखा ॥
त्यहिते कहौं बहोरि बहोरी * भरतभक्तिभइममभतिभोरी ॥
मोरे जान भरत रुचि राखी * जोकीजियसो शुभ शिवसाखी॥
दोहा-भरत विनय सादर सुनिय, करियविचार बहोरि ॥
करब साधुमत लोकमत, नृप नय निगम निचोरि ॥२५६॥
गुरु अनुराग भरत पर देखी * राम हृदय आनन्द विशेषी ॥
भरतहिं धर्मधुरन्धर जानी * निज सेवक तनु मानस बानी॥
बोले गुरु आयसु अनुकूला * वचन मंजु मृदु मंगल मूला ॥
नाथ शपथ पितुचरण दोहाई * भयउ न भुवन भरत समभाई॥
जे गुरुपद अम्बुज अनुरागी * ते लोकहु वेदहु बडभागी ॥
राउर जापर अस अनुरागू * को कहिसकै भरत सम भागू॥
लखि लघु बन्धु बुद्धि सकुचाई * करत बदन पर भरत बड़ाई ॥
भरत कहहिं सो किये भलाई * असकहि राम रहे अरगाई ॥
दोहा-तब मुनि बोले भरत सन, सब सँकोच तजि तात ॥
कृपासिन्धु प्रियबन्धु सन, कहहु हृदयकी बात ॥२५७॥
सुनि मुनि वचन रामरुख पाई * गुरु साहब अनुकूल अघाई ॥
लखि अपने शिर सबछरभारू * कहि न सकैं कछु करैं विचारू॥
पुलक शरीर सभामें ठाढे * नीरज नयन नेह जल बाढे ॥
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा * यहिते अधिक कहौं मैं काहा ॥
मैं जानौं निजनाथ स्वभाऊ * अपराधिहु पर कोह न काऊ ॥
मोपर कृपा सनेह विशेषी * खेलत खुनस कबहुँ नहिं देखी॥

१ वेद । २ प्रीति । ३ पवित्रवचन । ४ चुप । ५ कमलनेत्र । ६ क्रोध ।

शिशुपनते परिहरेउ न संगू * कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू ॥
मैं प्रभु कृपा रीति जिय जोही * हारेहु खेल जितायउ मोही ॥
दोहा—महूं सनेह सकोचवश, सन्मुख कहेउँ न बयन ॥
दर्शन तृप्ति न आजुलगि, प्रेम पियासे नयन ॥ २५८ ॥
विधि नसकेउ सहि मोर दुलारा * नीच बीच जननी मिस पारा ॥
इहौ कहत मोहिं आजु नशोभा *आपुन समुझिसाधु शुचिकोभा॥
मातु मन्द मैं साधु सुचाली *उर अस आनत कोटि कुचाली॥
फरै कि कोदव बालि सुशाली * मुक्ता खवैं कि शंबुक ताली ॥
स्वप्नेहु दोष कलेश न काहू * मोर अभाग उदधि अवगाहू ॥
विनु समुझे निज अघ परिपाकू * जारेउँ जाइजननिकहकाकू ॥
हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा * एकहिभाँतिभलहिभलमोरा ॥
गुरु गुसाइँ साहब सिय रामू * लागत मोहिं नीक परिणामू ॥
दोहा—साधु सभा प्रभु गुरु निकट, कहौं सुथल सति भाउ ॥
प्रेमप्रपंच कि झूठ फुर, जानहिं मुनि रघुराउ ॥ २५९॥
भूपति मरण प्रेम प्रण राखी * जननीकुमतिजगतसबसाखी ॥
देखि न जाहिं विकल महतारी * जरहिं दुसहज्वर पुरनरनारी॥
मोंहि सकल अनरथ कर मूला * सो सुनिसमुझिसहौंसबशूला ॥
सुनि वन गमन कीन्ह रघुनाथा* करिमुनिवेष लषणसियसाथा ॥
विनु पनही अरु प्यादेहि पाये * शंकर साखि रह्यौं इहिघाये ॥
बहुरि निहारि निषाद सनेहू * कुलिश कठिन उरभयउनवेहू ॥
अबसब आँखि न देखेउँ आई * जियत जीव जड़ सबै सहाई ॥
जिनहिंनिरखि मगसाँपिनिबीछी* तजहिंविषमविषतामतितीछी॥
दोहा—ते रघुनन्दन लषण सिय, अनहित लागे जाहि ॥
तासु तनय तजि दुसह दुख, दैव सहावै काहि ॥ २६० ॥
सुनि अति विकल भरत वरवानी*आरति प्रीति विनयनयसानी ॥
शोक मगनसब सभाखँभारू * मनहुँकमल वन परेउ तुषारू ॥

१ चावल—धान। २ मोती। ३ सीपी। ४ गहरासमुद्र। ५ कठोरवचन

कहि अनेक विधि कथा पुरानी * भरत प्रबोध कीन्ह मुनि ज्ञानी ॥
बोले उचित वचन रघुनन्दू * दिनकर कुल कैरववनचन्दू ॥
तात जाय जनि करहु गलानी * ईश अधीन जीवगति जानी ॥
तीनकाल त्रिभुवन मत मोरे * पुण्यश्लोक[1] तात कर तोरे ॥
उर आनत तुम पर कुटिलाई * जाइ लोक परलोक नशाई ॥
दोष देहिं जननिहिं जड तेई * जिन्ह गुरु साधु सभा नहिं सेई ॥
दोहा–मिटिहहिं पाप प्रपंच[2] सब, अखिल अमंगल भार ॥
लोक सुयश परलोक सुख, सुमिरत नाम तुम्हार ॥ २६१ ॥
कहौं स्वभाव सत्य शिव साखी * भरत भूमि रह राउरि राखी ॥
तात कुतर्क करहु जिय जाये * वैर प्रेम नहिं दुरै दुराये ॥
मुनिगण निकट विहंगम जाहीं * बाधक वधिक विलोकि पराहीं ॥
हित अनहित पशु पक्षिउ जाना * मानुष तनु गुण ज्ञान विधाना ॥
तात तुमहिं मैं जानौं नीके * करौं कहा असमंजस[4] जीके ॥
राख्यउ राउ सत्य मोहिं त्यागी * तनु परिहरेउ प्रेम प्रणलागी ॥
तासुवचन मेटत मनशोचू * तेहि ते अधिकतुम्हारसकोचू ॥
तापर गुरु मोहिं आयसु दीन्हा * अवशिजोकहहुचहौंसोकीन्हा ॥
दोहा–मन प्रसन्न करि सकुच तजि, कहहु करौं सो आज ॥
सत्यसिन्धु रघुवर वचन, सुनि भा सुखी समाज ॥ २६२ ॥
सुरगण सहित सभय सुरराजू * शोचहिं चाहत होन अकाजू ॥
करत विचार बनत कछु नाहीं * रामशरण सबगे मनमाहीं ॥
बहुरि विचार परस्पर कहहीं * रघुवर भक्त भक्ति वश अहहीं ॥
सुधि करि अम्बरीष दुर्वासा * भैसुर सुरपति निपट निरासा ॥
सहे सुरन्ह बहुकाल विषादा * नरहरि किये प्रगट प्रहलादा ॥
लगि लगिकानकहहिं धुनिमाथा * अबसुरकाज भरतके हाथा ॥
आन उपाय न देखिय देवा * मानत राम सुसेवक सेवा ॥
हिय सप्रेम सेवहिं सब भरतहिं * निजगुणशीलरामवशकरतहिं ॥

१ पुण्यात्मा भगवान् । २ नानाप्रकारके पाप--माया । ३ सम्पूर्ण विश्व । ४ दुविधा

दोहा–सुनि सुरमत सुरगुरु कहेउ, भल तुम्हार बड़ भाग ॥
सकल सुमंगल मूल जग, भरत चरण अनुराग ॥ २६३ ॥
सीतापतिसेवक सेवकाई * कामधेनु शत सरित सुहाई ॥
भरत भक्ति तुम्हरे मन आई * तजहु शोच विधि बातबनाई॥
देखु देवपति भरत प्रभाऊ * सहज स्वभाव विवशरघुराऊ ॥
मन थिर करहु देव डर नाहीं * भरतहि जानि राम परिछाहीं ॥
सुनिसुरगुरु सुर सम्मत शोचू * अन्तर्यामी प्रभुहि सँकोचू ॥
निज शिर भार भरत जियजानी*करतकोटिविधि उरअनुमानी ॥
करि विचार मन दीन्हेउ टीका * राम रजायसु आपन नीका ॥
निज प्रण तजि राखेउ प्रणमोरा * छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा ॥
दोहा–कीन्ह अनुग्रह अमित अति, सब विधि सीतानाथ ॥
करि प्रणाम बोले भरत, जोरि जलज युगहाथ॥ २६४ ॥
कहउँ कहावउँ का अब स्वामी * कृपा अम्बुनिधि अन्तर्यामी ॥
गुरु प्रसन्न साहब अनुकूला * मिटीमलिनमनकल्पितशूला ॥
अपडरडरउँ न शोच समूले * रविहि न दोष देव दिशि भूले ॥
मोर अभाग मातु कुटिलाई * विधिगतिविषमकालकठिनाई॥
पाँवरोपि सबमिलि मोहिंघाला * प्रणतपाल प्रण आपन पाला ॥
यह नइ रीति न राउरि होई * लोकहु वेद विदित नहिं गोई ॥
जग अनभल भल एक गुसाँई * कहियहोइ भलकासु भलाई ॥
देव देवतरु सरिस स्वभाऊ * सम्मुखविमुखनकाहुहि काऊ ॥
दोहा–जाइनिकट पहिंचानि तरु, छाँह शमन सब शोच ॥
माँगत अभिमत पाव फल, राउ रंक भल पोच ॥ २६५ ॥
लखि सब विधिगुरुस्वामिसनेहू * मिटेउ क्षोभ नहिं मन संदेहू ॥
अब करुणाकर कीजियसोई * जनहितप्रभुचित क्षोभ नहोई ॥
जो सेवक साहब संकोची * निजहित चहैतासुमतिपोची ॥
सेवक हित साहब सेवकाई * करै सकल सुख लोभ बिहाई ॥

१ देवतोंका मत । २ बृहस्पति । ३ कृपा । ४ कमलरूप दोनों हाथ । ५ संपूर्ण । ६ कल्पवृक्ष । ७ नीच

स्वारथ नाथ फिरे सबहीका * किये रजाइ कोटिविधि नीका ॥
यह स्वारथ परमारथ सारू *सकलसुकृतफलसुगतिशृँगारू॥
देव एक विनती सुनि मोरी * उचित होइ तस करब बहोरी ॥
तिलक समाजसाजिसबआना *करिय सफल प्रभु जोमनमाना॥
दोहा—सानुज पठइय मोहिं बन, कीजिय सबहिं सनाथ ॥
नातरु फेरिय बन्धु दोउ, नाथ चलौं मैं साथ ॥ २६६ ॥
नतरु जाहिंबन तीनिउ भाई * बहुरिय सीय सहित रघुराई ॥
जेहिविधि प्रभु प्रसन्न मन होई * करुणासागर कीजिय सोई ॥
देवदीन्ह सब मोपर भारू * मोरे नीति न धर्म विचारू ॥
कहौं वचन सब स्वारथ हेतू * रहत न आरतके चित चेतू॥
उतरदेइ सुनि स्वामि रजाई * सो सेवक लखि लाज लजाई ॥
अस मैं अवगुण उदधि अगाधू * स्वामि सनेह सराहत साधू ॥
अब कृपालु मोहिं सोमत भावा *सकुच स्वामि मन जाइनपावा॥
प्रभु पद शपथ कहौं सति भाऊ * जग मंगल हित एक उपाऊ ॥
दोहा—प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि, जो जेहि आयसु देव ॥
सो शिर धरि धरि करहिं सब, मिटहिं अनट अवरेब॥२६७॥
भरतवचन शुचि सुनि हियहर्षे * साधु सराहि सुमन सुर वर्षे ॥
असमंजस वश अवधनिवासी * प्रमुदित मन तापसवनवासी ॥
चुपरहिगे रघुनाथ सकोची * प्रभुगति देखि सभासबशोची॥
जनक दूत तेहि अवसर आवा * मुनि वसिष्ठ सुनि वेगिबुलावा ॥
करि प्रणाम तिन राम निहारे *भेष देखि भे निपट दुखारे ॥
दूतहिं मुनिवर पूँछी बाता * कहहु विदेह भूप कुशलाता ॥
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा * बोले चरबर जोरे हाथा ॥
बूझब राउर सादर साईं * कुशल हेतु सो भयउ गुसाईं ॥
दोहा—नाहित कोशलनाथके, साथ कुशल गै नाथ ॥
मिथिला अवध विशेषते, जग सब भयउ अनाथ ॥२६८॥

१ पुष्प । २ रामजनकजी । ३ पावन । ४ दशरथ । ५ जनकपुरी । ६ स्वामीहीन ।

कोशलपतिगतिसुनिजनकौरा * भेसब लोग शोचवश बौरा ॥
जेहि देखा तेहि समय विदेहू * नाम सत्य अस लाग नकेहू ॥
नारि कुचालि सुनत महिपाले * सूझ न कछुजसमणिबिनुब्याले
भरत राज्य रघुवर वनवासू * भामिथिलेशहि हृदय हरासू ॥
नृप बूझे बुध सचिव समाजू * कहहुविचारि उचितकाआजू ॥
समुझि अवध असमंजस दोऊ*चलियकिरहियनकहकछुकोऊ॥
नृपति धीर धरि हृदय विचारी * पठये अवध चतुर चरचारी ॥
बूझि भरत गति भाउ कुभाऊ * आयहु वेगि न होइलखाऊ ॥
दोहा—गये अवधचर भरतगति, बूझि देखि करतूति ॥
चले चित्रकूटहि भरत, चार चले तिरहूति ॥२६९॥
दूतन आइ भरतकी करणी *जनकसमाज यथामतिवरणी ॥
सुनिगुरुपुरजनसचिवमहीपति * भेसबशोच सनेह विकलमति॥
धरि धीरज करि भरत बड़ाई * लिये सुभट साहनी बुलाई ॥
घर पुर देश राखि रखवारे * हय गज रथ बहु यान सँवारे ॥
दुघड़ी साधि चले ततकाला *कियविश्राम न मगु महिपाला॥
भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा * चले यमुनउतरन सब लागा ॥
खबरि लेन हम पठये नाथा *तिन्हकहिअसमहिनायउमाथा॥
साथ किरात छसातक दीन्हें * मुनिवर तुरत बिदा चरकीन्हें ॥
दोहा—सुनत जनक आगमन सब, हर्षेउ अवध समाज ॥
रघुनन्दनहिं सकोच सब, शोच विवश सुरराज ॥२७०॥
गरइ गलानि कुटिल कैकेयी * काहि कहै क्यहि दूषण देई ॥
अस मन आनि मुदित नरनारी * भयउ बहोरि रहब दिनचारी॥
इहि प्रकार गत वासर सोऊ * प्रात अन्हान लगे सब कोऊ ॥
करि मज्जन पूजहिं नरनारी * गणपति गौरि पुरारि तमारी ॥
रमा रमणपद वन्दि बहोरी * विनवहिं अंचल अंजलि जोरी॥
राजा राम जानकी रानी * आनँद अवधि अवध रजधानी॥

१ मिथिलापुर । २ सेनापति । ३ महादेव । ४ सूर्यनारायण

सुबसबसौंफिरि सहित समाजा * भरतहि राम करैं युवराजा ॥
इहि सुख सुधा सींचि सब काहू * देव देहु जगजीवन लाहू ॥
दोहा–गुरु समाज भाइन सहित, राम राज पुरहोउ ॥
अछत राम राजा अवध, मरिय माँगु सब काउ ॥ २७१ ॥
सुनि सनेहमय पुरजन बानी * निंदहिं योग विरति मुनि ज्ञानी॥
इहिविधिनित्यकर्मकरिपुरजन * रामहिं कराहिं प्रणाम पुलकितन
ऊंच नीच मध्यम नर नारी * लहैं दरश निज निज अनुहारी॥
सावधान सबहीं सन्मानहिं * सकल सराहत कृपानिधानहिं॥
लरिकाहींते रघुवर बानी * पालत प्रीति रीति पहिंचानी ॥
शील सकोच सिन्धु रघुराऊ * सुमुखसुलोचनसरलस्वभाऊ ॥
कहत राम गुण गण अनुरागे * सब निज भाग्य सराहन लागे॥
हम सब पुण्यपुंज जग थोरे * जिनहिं राम जानत करिमोरे॥
दोहा–प्रेम मगन तेहिं समय सब, सुनि आवत मिथिलेश ॥
सहित सभा संभ्रम उठे, रविकुल कमल दिनेश ॥ २७२॥
आगे गमन कीन्ह रघुनाथा * भाइ सचिव गुरु पुरजनसाथा॥
गिरिवरदीख जनक नृप जबहीं * करि प्रणाम त्यागा रथ तबहीं॥
रामदरश लालसा उछाहू * पथ श्रम लेश कलेश न काहू ॥
मन तहँ जहँ रघुवर वैदेही * विनुमनतनदुख सुख सुधिकेही
आवत जनक चले इहिभाँती * सहित सनेह प्रेम मदमाती ॥
आये निकट देखि अनुरागे * सादर मिलन परस्पर लागे ॥
लगे जनक मुनिगणपदवन्दन * ऋषिनप्रणामकीन्ह रघुनन्दन॥
भाइनसहितरामामिलिराजहिं * चले लवाय समेत समाजहिं॥
दोहा–आश्रम सागर शान्तरस, पूरण पावन पाथ ॥
सैन मनहुँ करुणा सरित, लिये जात रघुनाथ ॥ २७३ ॥
बोरति ज्ञान विराग करारे * वचन सशोक मिलत नदिनारे॥
शोच उसाँस समीर तरंगा * धीरज तट तरुवर कर भंगा ॥

विषम विषाद तुरावति धारा * भय भ्रम भँवरावर्त अपारा ॥
केवट बुध विद्या बड़िनावा * सकहि न खेइ ऐक नहिं आवा
वनचर कोल किरात बिचारे * थके बिलोकि पथिकहियहारे ॥
आश्रम उदधि मिली जब जाई * मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई ॥
शोक विकल दोउ राज समाजा * रहा न ज्ञान न धीरज लाजा ॥
भूप रूप गुण शील सराहीं * शोचहिं शोक सिन्धु अवगाहीं॥
छंद–अवगाहि शोक समुद्र शोचहिं नारि नर व्याकुल महा ॥
दै दोष सकल सरोष बोलहिं वामविधि कीन्हौं कहा ॥
सुर सिद्ध तापस योगिजन मुनि दशा देखी विदेहकी ॥
तुलसी न समरथ कोउ जो तरिसकै सरित सनेहकी ॥
सो०–किये अमित उपदेश, जहँ तहँ लोगन मुनिवरन ॥
धीरज धरिय नरेश, कह्यउ वसिष्ठ विदेहसन ॥ ११ ॥
जासु ज्ञान रविभवनिशि नाशा * वचनकिरणमुनिकमलविकाशा
तहिकि मोह महिमा नियराई * यह सिय राम सनेह बड़ाई ॥
विषयी साधक सिद्ध सयाने * त्रिविधजीव जग वेद बखाने ॥
राम सनेह सरस मन जासू * साधु सभा बड़ आदर तासू ॥
सोह न राम प्रेम विनु ज्ञाना *कर्णधार विनु जिमि जलयाना ॥
मुनि बहु विधि विदेह समुझाये * रामघाट सब लोग अन्हाये ॥
सकल शोक संकुल नर नारी * सो वासर बीत्यउ विनु वारी ॥
पशु खगमृगनि कीन्ह अहारा* प्रिय परिजन करकवनविचारा॥
दोहा–दोउ समाज निमिराज रघु, राज नहाने प्रात ॥
बैठे सब वट विटप तर, मन मलीन कृश गात ॥ २७४ ॥
जे महिसुर दशरथ पुरवासी * जे मिथिलापति नगर निवासी॥
हंसवंशगुरु जनकपुरोधा *जिन्ह जगमग परमारथ शोधा॥
लगे कहन उपदेश अनेका * सहित धर्म नय विरतिविवेका॥
कौशिक कहिकहि कथा पुरानी * समुझाई सब सभासुवानी ॥

१ माझ--केवट । २ सूर्यवंशगुरुवसिष्ठमुनि । ३ शतानन्द । ४ विश्वामित्र

तब रघुनाथ कौशिकहि कह्यऊ * नाथकालि जल बिनु सबरह्यऊ ॥
मुनिकह उचित कहत रघुराई * गयउ बीति दिन पहर अढाई ॥
ऋषिरुखलखिकहतिरहुतिराजू[1] * इहाँउचित नहिंअशन[2]अनाजू ॥
कहा भूप भल सबहिं सोहाना * पाय रजायसु चले नहाना ॥
दोहा—त्यहिअवसर फल फूलदल, मूल अनेक प्रकार ॥
लै आये वनचर विपुल, भरि भरि काँवरि भार ॥ २७५ ॥
कामद भो गिरि राम प्रसादा * अवलोकत अपहरत विषादा ॥
सर सरिता वन भूमि विभागा * जनु उमँगत आनँद अनुरागा ॥
बेलि विटप सब सफल सफूला * बोलत खग मृग अलिअनुकूला ॥
त्यहिअवसरवनअधिकउछाहू * त्रिविध समीर सुखदसबकाहू ॥
जाइ न वरणि मनोहरताई * जनुमहि करति जनक पहुनाई ॥
तब सब लोग नहाइ नहाई * राम जनक मुनि आयसु पाई ॥
देखि देखि तरुवर अनुरागे * जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे ॥
दलफल फूल कन्दविधिनाना * पावन सुन्दर सुधा समाना ॥
दोहा—सादर सब कहँ राम गुरु, पठये भरि भरिभार ॥
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु, लगे करन फलहार ॥ २७६ ॥
इहिविधि वासर बीते चारी * राम निरखि नर नारि सुखारी ॥
दुहुँ समाजअसरुचिमनमाहीं * बिनुसिय राम फिरबभलनाहीं ॥
सीता राम संग वनवासू * कोटि अमरपुर सरिस सुपासू ॥
परिहरि[3]लषण राम वैदेही * ज्यहि घर भाव वाम विधि तेही ॥
दाहिन दैव होइ जब सबहीं * राम समीप बसिय वन तबहीं ॥
मन्दाकिनि मज्जन तिहुँकाला * राम दरश मुद[4] मंगल माला ॥
अटन रामगिरिवनतापसथल * अशन[5]अमियसमकन्दमूलफल ॥
सुखसमेत संवत दुइ साता * पल सम होहिं न जानिय जाता ॥
दोहा—इहि सुखयोग न लोग सब, कहहिं कहाँ अस भाग ॥
सहज स्वभाव समाज दुहुँ, रामचरण अनुराग ॥ २७७ ॥

१ राजाजनक । २ भोजन । ३ त्यागकर । ४ प्रसन्नताका समूह । ५ भोजन अमृततुल्य । ६ भीति ।

इहिविधि सकल मनोरथकरहीं * वचन सप्रेमसुनत मन हरहीं ॥
सीय मातु तिहि समय पठाईं * दासी देखि सुअवसर आईं ॥
सावकाश सुनि सब सिय सासू * आई जनक राज रनिवासू ॥
कौशल्या सादर सन्मानीं * आसनदीन्हसमयसमआनीं ॥
शील सनेह सरस दुहुँ ओरा * द्रवहिं देखसुनि कुलिशकठोरा॥
पुलकाशिथिल तनुवारिविलोचन* महिनखलिखनलगींसबशोचन
सब सिय राम प्रेमकी मूरति * जनु करुणाबहु रूप बिसूरति ॥
सीय मातु कह विधि बुधिबाँकी * जो पयफेनु फोरि पविटाँकी॥

दोहा–सुनिय सुधा देखिय गरल, सब करतूति कराल ॥
जहँ तहँ काक उलूक बक, मानस सुकृत मराल ॥ २७८ ॥

सुनि सशोच कह देवि सुमित्रा* विधिगतिअति विपरीतविचित्रा
जो सृजि पालै हरै बहोरी * बालकेलिसम विधिमतिभोरी ॥
कौशल्या कह दोष न काहू *कर्म्मविवशदुखसुख क्षति लाहू॥
कठिन कर्म गति जानविधाता * सोशुभ अशुभकर्म्मफलदाता॥
ईश रजाइ शीश सबहीके *उतपतिथितिलयविषअमीके ॥
देवि मोहवश शोचियवादी * विधि प्रपंच अस अचल अनादी
भूपति जियब मरब उर आनी *शोचियसखिलखिनिजहितहानी
सीय मातु कह सत्य सुवानी * सुकृती अवधि अवधपतिरानी॥

दोहा–लषण राम सिय जाहिं बन, भलपरिणाम नपोच ॥
गहबरि हिय कह कौशला, मोहिं भरतकर शोच ॥२७९॥

ईश प्रसाद अशीश तुम्हारी * सुत सुतवधू देवसरि वारी ॥
राम शपथ मैं कीन्ह न काऊ * सोकरि सखी कहौं सतिभाऊ॥
भरत शील गुण विनय बड़ाई * भायप भक्ति भरोस भलाई ॥
कहत शारदहु कै मति हीचे * सागर सीप कि जाहिं उलीचे ॥
जानौं सदा भरत कुलदीपा * बार बार म्वहिं कहेउ महीपा ॥
कसे कनक मणि पारस पाये * पुरुष परखिये समय स्वभाये ॥

१ पिघलतेहैं। २ वज्र पत्थर। ३ सुनयना। ४ टेढी। ५ वज्रकीटाँकी। ६ उलटी। ७ हानि। ८ लाभ।

अनुचितआजु कहव अस मोरा* शोक सनेह सयानप थोरा ॥
सुनि सुरसरि सम पावनिवानी * भई सनेह विकल सबरानी ॥
दोहा–कौशल्या कह धीरधारि, सुनहु देवि मिथिलेशि ॥
को विवेकनिधि वल्लभहि, तुमहिं सकै उपदेशि ॥ २८० ॥
रानि रायसन अवसर पाई * आपनि भाँति कहबसमुझाई ॥
राखियलषण भरत गवनेहिंवन * जो यह मत मानै महीपमन ॥
तौ भल यतन करब सुविचारी * मोरे शोच भरत कर भारी ॥
गूढ सनेह भरत मन माहीं * रहे नीक मोहिं लागत नाहीं ॥
लखिस्वभाव सुनिसरलसुवानी * सबभईं मगनकरुणरससानी ॥
नभप्रसून झरि धन्य धन्यधुनि * शिथिल सनेह सिद्धयोगीमुनि॥
सबरनिवास थकितलखिरहाऊ * तब धरि धीर सुमित्राकहाऊ ॥
देवि दण्डयुग यामिनि बीती * राम मातु सुनि उठी सप्रीती ॥
दोहा–वेगि पाँय धारिय थलहि, कह सनेह सतिभाय ॥
हमरे तौ अब ईशगति, कै मिथिलेश सहाय ॥ २८१ ॥
लखि सनेह सुनिवचन विनीता* जनकप्रिया गहि पाँव पुनीता ॥
देवि उचित असविनयतुम्हारी * दशरथ घरनि राम महतारी ॥
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं * अग्नि धूम गिरि शिर तृण धरहीं
सेवक राउ कर्म मन वानी * सदा सहाय महेश भवानी ॥
रौरे अंग योग जग कोहै * दीप सहाय कि दिनकर सोहै ॥
राम जायवन करि सुरकाजू * अचलअवधपुर करिहहिं राजू॥
अमर नाग नर राम बाहुबल * सुख बसिहहिंअपनेअपने थल॥
यह सबयाज्ञबल्क्य कहि राखा * देवि नहोइ मृषा मुनि भाषा ॥
दोहा–असकहि पगु परि प्रेम अति, सियहित विनय सुनाइ ॥
सिय समेत सिय मातु तब, चली सुआयसु पाइ ॥२८२॥
प्रिय परिजनहिं मिली वैदेही * जो ज्यहि योग भाँति तसतेही॥
तापस वेष जानकिहि देखी * भेसब विकल विषाद विशेषी ॥

१ ज्ञानके समुद्र। २ प्रिया। ३ आकाशसे पुष्पोंकी वर्षा। ४ दोपहर रात्रि।

जनक राम गुरु आयसु पाई * चले थलहि सिय देखीआई ॥
लीन्ह लाइ उर जनक जानकी * पाहुनि पावनि प्रेम प्रानकी ॥
उर उमँग्यउ अम्बुधि अनुरागू * भयहु भूप मन मनहुँ प्रयागू ॥
सिय सनेह वट बाढ़त जोहा * तापर राम प्रेम शिशु सोहा ॥
चिरंजीविमुनिज्ञानविकलजनु * बूडत लह्यउ बाल अवलम्बनु ॥
मोह मगन मति नहिं विदेहकी * महिमा सिय रघुवर सनेहकी ॥
दोहा-सिय पितु मातु सनेह वश, विकल न सके सँभारि ॥
धरणिसुता धीरज धरयउ, समय सुधर्म विचारि ॥२८३॥
तापस वेष जनक सिय देखी * भयउ प्रेम परितोष विशेषी ॥
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ * सुयशधवलजग कह सब कोऊ ॥
जिमि सुरसरिकीरतिसरितोरी * गवन कीन्हविधि अण्डकरोरी ॥
गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे * इहिकिय साधु समाज घनेरे ॥
पितुकहसत्य सनेह सुवानी * सीयसकुचिमन मनहुँसमानी ॥
पुनि पितु मातु लीन्ह उरलाई *शिख आशिष हित दीन्ह सुहाई
कहति नसीय सकुच मन माहीं *इहां बसब रजनी भलनाहीं ॥
लखि रुख रानि जनायउ राऊ * हृदय सराहत शील स्वभाऊ ॥
दोहा-बार बार मिलि भेंटि सिय, बिदा कीन्ह सनमानि ॥
कही समय सम भरत गति, रानि सुअवसर जानि ॥२८४॥
सुनि भूपाल भरत व्यवहारू *सो न सुगन्ध सुधा शशि सारू ॥
मूँदे सजल नयन पुलके तन * सुयशसराहन लगे मुदितमन ॥
सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि*भरतकथा भवबन्धविमोचनि ॥
धर्मराज नय ब्रह्म विचारू * यहां यथामति मोर प्रचारू ॥
सोमति मोरि भरत महिमाहीं * कहौं काह छलि छुअति नछाहीं
विधिगणपतिअहिपतिशिवशारद*कविकोविदबुधबुद्धिविशारद ॥
भरत चरित कीरति करतूती* धर्मशीलगुण विमल विभूती ॥
समुझत सुनत सुखद सबकाहू*शुचिसुरसरिरुचिनिदरिसुधाहू ॥

१ मार्कण्डेय । २ जानकीजी । ३ उज्ज्वल । ४ संसारको नाशकरनहोरी । ५ वेदान्तशास्त्र । ६ विचार । ७ शेष । ८ प्रवीण ।

दोहा-निरवधि गुण निरुपम पुरुष, भरत भरत सम जानि ॥
कहिय सुमेरु सुमेरुसम, कविकुल मति सकुचानि ॥२८५॥
अगम सबहि बर्णत बर बरणी * जिमिजलहीनमीनगण धरणी॥
भरत अमित महिमा सुनुरानी * जानहिं राम न सकहिं बखानी॥
बरणि सप्रेम भरत सतभाऊ * तियाजियकीरुचिलखिकहराऊ
बहुरहिं लषण भरत बन जाहीं * सबकर भल सबके मनमाहीं ॥
देवि परन्तु भरत रघुबरकी * प्रीति प्रतीति जाइनहिं तरकी॥
भरत सनेह अवधि ममताके * यद्यपि राम सींव समताके ॥
परमारथ स्वारथ सुखसारे * भरत न स्वप्नेहुँ मनहुँ निहारे ॥
साधन सिद्ध रामपद नेहू * मोहिं लखि परतभरतमतयेहू॥
दोहा-भोरेहु भरत न पेलिहहिं, मनमहँ राम रजाय ॥
करिय न शोच सनेह वश, कहेउ भूपबिलखाय ॥२८६॥
राम भरत गुण कहत सप्रीती *निशिदम्पतिहिपलकसमबीती॥
राज समाज प्रात युग जागे * न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे ॥
गे नहाइ गुरुपहँ रघुराई * वन्दि चरण बोले रुखपाई ॥
नाथ भरत पुरजन महतारी * शोच विकल वनवास दुखारी ॥
सहित समाज राउ मिथिलेशू * बहुत दिवस भे सहत कलेशू ॥
उचित होय सो कीजिय नाथा * हित सबहीकर रौरे हाथा ॥
असकहि अति सकुचे रघुराऊ *मुनि पुलके लखिशीलस्वभाऊ॥
तुमबिनु राम सकलसुखसाजा * नरक सरिस दुहुँराजसमाजा ॥
दोहा-प्राण प्राणके जीवके, जिय सुखके सुख राम ॥
तुम तजि तात सोहात गृह, जिनहिंतिनहिंविधिबाम ॥२८७॥
सो सुख कर्म धर्म जरि जाऊ * जहँ न राम पदपंकज भाऊ ॥
योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू * जहँ न राम प्रेम परधानू ॥
तुम बिन दुखी सुखी तुमतेहीं *तुमजानहु जिय जो जेहि केहीं॥
राउर आयसु शिर सबहीके * विदित कृपालुहिं गति सबनीके

१ मर्यादारहित । २ उपमारहित । ३ प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान ।

आपु आश्रमहिं धारिय पाऊ * भये सनेह शिथिल मुनिराऊ ॥
करि प्रणाम तब रामसिधाये * ऋषि धरिधीर जनकपहँआये ॥
रामवचन गुरु नृपहि सुनाये * शील सनेह स्वभाव सुहाये ॥
महाराज अब कीजिय सोई * सबकर धर्म सहित हित होई ॥
दोहा-ज्ञान निधान सुजान शुचि, धर्म धीर नरपाल ॥
तुमविनु असमंजस शमन, को समर्थ इहिकाल ॥ २८८ ॥
सुनि मुनिवचनजनक अनुरागे * लखि गति ज्ञान विराग विरागे॥
शिथिल सनेह गुणतमनमाहीं * आये इहाँ कीन्ह भलनाहीं ॥
रामहिं राय कहेउ वनजाना * कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रमाना ॥
हम अब वनते वनहिं पठाई * प्रमुदित फिरब विवेक बढ़ाई ॥
तापस मुनि महि सुरगति देखी * भये प्रेमवश विकल विशेषी ॥
समय समुझि धरिधीरज राजा * चले भरत पहँ सहित समाजा ॥
भरत आय आगे है लीन्हा * अवसरसरिससुआसनदीन्हा ॥
तात भरत कह तिरहुति राऊ * तुमहिं विदित रघुवीर स्वभाऊ॥
दोहा-राम सत्यव्रत धर्मरत, सबकर शील सनेहु ॥
संकट सहत सकोच वश, करिय जो आयसु देहु ॥२८९ ॥
सुनि तनुपुलकि नयनभरिवारी * बोले भरत धीर धरि भारी ॥
प्रभु प्रिय पूज्य पितासम आपू *कुलगुरु समहित माय न बापू॥
कौशिकादिमुनिसचिवसमाजू * ज्ञान अंबुनिधि आपुन आजू ॥
शिशु सेवक आयसु अनुगामी * जानि मोहिं शिखदेइयस्वामी॥
इहि समाज थल बूझब राउर * मन मलीन मैं बोलब बाउर ॥
छोटे वदन कहौं बड़िबाता * क्षमब तात लखिवामविधाता॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना * सेवा धर्म कठिन जग जाना ॥
स्वामि धर्म स्वारथहि विरोधू * बधिर अन्ध प्रेमहि न प्रबोधू ॥
दोहा-राखिरामरुख धर्म्म व्रत, पराधीनम्वहिं जान ॥
सबके सम्मत सर्वहित, करिय प्रेम पहिचान ॥२९०॥

१ त्रिकालज्ञ। २ ज्ञानके समुद्र।

भरतवचन सुनि देखि स्वभाऊ * सहित समाज सराहत राऊ ॥
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे * अर्थ अमित अति आखर थोरे ॥
ज्यों मुख मुकुर मुकुर निज पाणी * गहि न जाय अस अद्भुत वाणी ॥
भूप भरत मुनि साधु समाजू * गे जहँ विबुध कुमुद द्विजराजू ॥
सुनि सुधि शोच विकल सब लोगा * मनहुँ मीनगण नवजल योगा ॥
देव प्रथम कुलगुरु मति देखी * निरखि विदेह सनेह विशेषी ॥
रामभक्ति मय भरत निहारे * सुर स्वारथी हहरि हियहारे ॥
सब कह राम प्रेम मय पेखा * भये अलेख शोच वश लेखा ॥
दोहा–राम सनेह सकोच वश, कह सशोच सुरराज ॥
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि, नाहिंत भयउ अकाज ॥ २९१ ॥
सुरन सुमिरि शारदा सराही * देवि देव शरणागत पाही ॥
फेरि भरत मति करि निज माया * पाल विबुध कुल करि छल छाया ॥
विबुध विनय सुनि देवि सयानी * बोली सुर स्वारथ जड़ जानी ॥
मोसन कहहु भरत मति फेरू * लोचन सहस न सूझ सुमेरू ॥
विधि हरि हर माया बडि भारी * सो न भरत मति सकै निहारी ॥
सो मति मोहिं कहत करभोरी * चाँदिनि कराकि चन्द्रकर चोरी ॥
भरत हृदय सिय राम निवासू * तहँ कि तिमिर जहँ तरणि प्रकासू
असकहि शारद गइ विधि लोका * विबुध विकल निशि मानहुँ कोका ॥
दोहा–सुर स्वारथी मलीन मन, कीन्ह कुमंत्र कुठाट ॥
रचि प्रपंच माया प्रबल, भय भ्रम आर्त्त उचाट ॥ २९२ ॥
करि कुचाल शोचत सुरराज * भरत हाथ सब काज अकाजू ॥
गये जनक रघुनाथ समीपा * सनमाने सब रघुकुल दीपा ॥
समयसमाज धर्म अविरोधा * बोले तब रघुवंश पुरोधा ॥
जनक भरत सम्बाद सुनाई * भरत कहावति कही सुहाई ॥
तात राम जस आयसु देहू * सो सब करै मोर मत येहू ॥
सुनि रघुनाथ जोरि युगपाणी * बोले सत्य सरस मृदुवानी ॥

१ श्रीरामचन्द्र चन्द्र । २ अन्धकार । ३ सूर्यनारायण । ४ चकई-चकवा । ५ वासिष्ठजी

विद्यमान आपुन मिथिलेशू * मोर कहा सब भाँति भदेशू ॥
राउरराय रजायसु होई * राउरि शपथ सही शिर सोई ॥
दोहा-रामशपथ सुनि मुनि जनक, सकुचे सभा समेत ॥
सकल विलोकहिं भरत मुख, बनै न उत्तर देत ॥ २९३ ॥
सभा सकुच वश भरत निहारी * रामबन्धु धारि धीरज भारी ॥
कुसमय देखि सनेह सँभारा * बढ़तविन्ध्य जिमि घटज निवारा
शोक कनक लोचन मति क्षोनी * हरी विमल गुण गण जग योनी
भरत विवेक वराह विशाला * अनायास उघरे तेहिं काला ॥
करि प्रणाम सब कहँ करजोरी * राम राउ गुरु साधु निहोरी ॥
क्षमब आजुअति अनुचितमोरा * कहउँ वदन मृदुवचनकठोरा ॥
हिय सुमिरि[1] शारदा सुहाई * मानसते मुख पंकज आई ॥
विमल विवेक धर्मनयसाली * भरत भारती मंजु मराली ॥
दोहा-निरखि विवेक विलोचनहिं, शिथिल सनेह समाज ॥
करि प्रणाम बोले भरत, सुमिरि सीय रघुराज ॥ २९४ ॥
प्रभुपितु मातु सुहृद गुरुस्वामी * पूज्य परमहित अन्तर्यामी ॥
सरल सुसाहब शील निधानू * प्रणतपाल सर्वज्ञ सुजानू ॥
समरथ शरणागत हितकारी * गुणग्राहक अवगुण अघहारी ॥
स्वामि गुसाँइहिं सदृश गुसाँई * मोहिं समान मैं स्वामिदुहाई ॥
प्रभु पितु वचन मोहवश पेली * आयउँ इहाँ समाज सकेली ॥
जगभल पोच ऊंच अरु नीचू * अमी अमरपद माहुर मीचू ॥
रामरजाइ मेटि मन माहीं * देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं ॥
सो मैं सब विधि कीन्ह ढिठाई * प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥
दोहा-कृपा भलाई आपनी, नाथ कीन्ह भल मोर ॥
दूषण भे भूषण सरिस, सुयश चारु चहुँ ओर ॥ २९५ ॥
राउरि नीति सुवाणि बड़ाई * जगत विदित निगमागमगाई ॥
क्रूरकुटिलखल कुमति कलंकी * नीच निशील निरीश निशंकी ॥

[1] वाणी-सरस्वती ।

तेउ सुनि शरण सामुहे आये * सुकृत प्रणाम किये अपनाये ॥
देखि दोष कबहुँन उर आने *सुनि गुण साधु समाज बखाने॥
को साहेब सेवकहि नेवाजी * आपुसमान साज सब साजी॥
निजकरतूतिन समुझिय सपने * सेवक सकुच शोच उर अपने॥
सो गुसाँइ नहिं दूसर कोपी * भुजा उठाय कहौं प्रणरोपी ॥
पशु नाचत शुक पाठ प्रवीना * गुण गति नट पाठक आधीना ॥
दोहा—सो सुधारि सन्मानि जन, किये साधु शिर मोर ॥
को कृपालु बिनु पालिहै, विरुदावलि बरजोर ॥ २९६ ॥
शोक सनेह कि बाल स्वभाये * आयसु लाइ रजायसु पाये ॥
तबहुँ कृपालु हेरि निज ओरा *सबहिं भाँति भल मानेहु मोरा॥
देखेउँ पाँइ सुमंगल मूला * जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला
बड़े समाज विलोकेउँ भागू * बडी चूक साहब अनुरागू ॥
कृपाअनुग्रह अंग अघाई *कीन्ह कृपानिधि सब अधिकाई
राखा मोर दुलार गुसाँई * अपने शील स्वभाव भलाई ॥
नाथ निपट मैं कीन्ह ढिठाई * स्वामि समाज सकोच विहाई ॥
अविनय विनय यथारुचिवानी * क्षमिय देवि अति आरतिजानी॥
दोहा—सुहृद सुजान सुसाहिबहि, बहुत कहब बड़ि खोरि ॥
आयसु देइय देव अब, सबै सुधारिय मोरि ॥ २९७ ॥
प्रभुपद पद्म पराग दुहाई * सत्य सुकृत सुखसीम सुहाई ॥
सो करि कहौं हिये अपनेकी * रुचि जागत सोवत सपनेकी ॥
सहज सनेह स्वामि सेवकाई * स्वारथ छल फलचारि विहाई ॥
आज्ञा सम न सुसाहिब सेवा * सो प्रसाद जन पावै देवा ॥
असकहि प्रेम विवश भेभारी * पुलक शरीर विलोचन वारी ॥
प्रभुपद कमल गहे अकुलाई * समय सनेह न सो कहिजाई ॥
कृपासिन्धु सनमानि सुवाणी * बैठाये समीप गहि पाणी ॥
भरत विनय सुनि देखिस्वभाऊ * शिथिल सनेह सभा रघुराऊ ॥

१ नेत्र । २ जल ।

छंद-रघुराउशिथिलसनेहसाधु समाजमुनिमिथिलाधनी ॥
मनमहँ सराहत भरत भायप भक्तिकी महिमा घनी ॥
भरतहिं प्रशंसत विबुध वर्षतसुमन मानसमालिनसे ॥
तुलसीविकलसबलोग सुनि सकुचे निशागम नलिनसे ॥१३
सो०-देखि दुखारी दीन, दुहुँ समाज नर नारि सब ॥
मघवा महामलीन, मुये मारि मंगल चहत ॥१२॥
कपट कुचालि सीम सुरराजू * पर अकाज प्रिय आपनकाजू ॥
काक समान पाकरिपु रीती * छली मलीन न कतहुँ प्रतीती ॥
प्रथम कुमतिकरिकपटसकेला * सो उच्चाट सबके शिरमेला ॥
सुरमाया सब लोग विमोहे * राम प्रेम अतिशय न बिछोहे॥
भे उच्चाट सब मनथिरनाहीं * क्षणवनरुचिक्षणसदनसुहाहीं॥
दुविध मनोगति प्रजा दुखारी * सरित सिंधु संगम जिमिवारी॥
उचित कतहुँ परितोष नलहहीं * एकएकसन मर्म न कहहीं ॥
लखिहियहँसिकहकृपानिधानू * सरित श्वान मघवा करवानू ॥
दोहा-भरत जनक मुनिगण सचिव, साधु सचेत विहाय ॥
लगी देवमाया सबहिं, यथायोग्य जन पाइ ॥ २९८ ॥
कृपासिन्धु लखि लोग दुखारे * निज सनेह सुरपति छल भारे॥
सभा राउ गुरु महिसुर मंत्री * भरत भक्ति सबकी मति यंत्री॥
रामहिं चितवत चित्र लिखेसे * सकुचत बोलत वचन शिखेसे॥
भरत प्रीति नित विनय बड़ाई * सुनत सुखद वर्णत कठिनाई ॥
जासु विलोकि भक्तिलवलेशू * प्रेम मगन मुनिगण मिथिलेशू॥
महिमा तासुकहै किमितुलसी *भक्तिप्रभावसुमति हियहुलसी॥
आपु छोट महिमा बड़िजानी * कविकुलकानि मानि सकुचानी॥
कहिनसकतिगुणरुचिअधिकाई* मतिगति बाल वचनकी नाई ॥
दोहा-भरत विमलयश विमलविधु, सुमति चकोरकुमारि ॥
उदित विमल जन हृदय नभ, इकटक रही निहारि ॥२९९॥

१ रात्रि । २ कमल । ३ इन्द्र । ४ वासव । ५ संतोष । ६ भेद । ७ निर्मल चन्द्र ।

भरतसनेहसुभाव न सुगम निगमहू * लघुमति चापलता कविक्षमहू ॥
कहत सुनतसतिभावभरतको * सीय राम पद होइ न रतको ॥
सुमिरतभरतहिं प्रेमरामको *ज्यहिनसुलभत्यहिसमनवामको
देखि दयालु दशा सबहीकी *राम सुजान जानि जनजीकी ॥
धर्मधुरीण धीर नयनागर * सत्य सनेह शील सुखसागर ॥
देशकाल लखि समय समाजू * नीति प्रीति पालक रघुराजू ॥
बोले वचन बाणि सरबससे * हितपरिणामसुनतशशिरससे॥
तात भरत तुम धर्मधुरीणा * लोक वेद विधि परम प्रवीणा ॥
दोहा-कर्म्म वचन मानस विमल, तुम समान तुम तात ॥
गुरु समाज लघुबन्धु गुण,कुसमयकिमिकहिजात॥२००॥
जानहु तात तरणि कुलरीती * सत्यसिंधु पितु कीरति प्रीती ॥
समय समाजलाजगुरुजनकी * उदासीन हितअनहितमनकी॥
तुमहिं विदितसबहीकर मरमू * आपन मोर परमहित धरमू ॥
मोहिं सब भाँति भरोस तुम्हारा* तदपि कहौं अवसर अनुसारा॥
तात तात विनु बात हमारी * केवल कुलगुरु कृपा तुम्हारी ॥
नतरु प्रजा पुरजन परिवारू *हमहिं सहित सब होत दुखारू॥
जो विनु अवसर अथवदिनेशू * जगकेहि कहौ न होइ कलेशू ॥
तस उत्पात तात विधि कीन्हा*मुनि मिथिलेश राखि सब लीन्हा
दोहा-राज काज सब लाजपति, धर्म धरणि धन धाम ॥
गुरु प्रभाव पालिहिं सबहिं, भल होइहिं परिणाम ॥३०१॥
सहित समाज तुम्हार हमारा * घर वन गुरु प्रमाद रखवारा ॥
मातु पिता गुरु स्वामि निदेशू* सकल धर्म धरणीधर शेशू ॥
सो तुम करहु करावहु मोहू * तात तरणि कुलपालक होहू ॥
साधक एक सकल सिधिदेनी * कीरति सुगति भूतिमय वेनी ॥
सो विचारि सहि संकट भारी * करहु प्रजा परिवार सुखारी ॥
बाँटि विपति सबही मिलिभाई *तुमहिं अवधिभारि अतिकठिनाई

१ देश कही श्रीचित्रकूट वन अरु इहां काल कही जिसमें सर्व जीवकर हितकार होइ अरु समय कही जो भरतजू आयसु माँगैं हैं त्यहिके अनुकूल अरु समाज कही सबके दुःख निवृति हेतु।

जानि तुमहिं मृदु कहौं कठोरा *कुसमय तात न अनुचित मोरा
होहिं कुठाँव कुबन्धु सुहाये * ओढिय हाथ अशनिके घाये ॥
दोहा-सेवक कर पद नयनसे, मुखसों साहब होइ ॥
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि, सुकवि सराहहिं सोइ॥२०२॥
सभा सकल सुनि रघुवर वानी * प्रेमपयोधिअमिय जनु सानी॥
शिथिलसमाज सनेह समाधी * देखि दशा चुप शारद साधी ॥
भरतहि भयउ परम संतोषू *सन्मुख स्वामिविमुख दुखदोषू॥
मुखप्रसन्न मन मिटा विषादू * भा जनु गूँगहि गिरा प्रसादू ॥
कीन्ह सप्रेम प्रणाम बहोरी * बोले पाणि पंकरुह जोरी ॥
नाथ भयो सुख साथ गयेको *लह्यउँ लाभ जगजन्म भयेको॥
अब कृपालु जस आयसु होई * करौं शीश धरि सादर सोई ॥
सो अवलंब देव म्वहिं देई *अवधि पार पावउँ जेहि सोई ॥
दोहा-देव देव अभिषेक हित, गुरु अनुशासन पाइ ॥
आन्यउँ सब तीरथ सलिल, त्यहिकहँ काह रजाइ॥२०३॥
एक मनोरथ बड मन माहीं *समय सकोच जात कहि नाहीं
कहहु तात प्रभु आयसु पाई * बोले बाणि सनेह सुहाई ॥
चित्रकूटमुनि थल तीरथ वन * खगमृगसरसरिनिर्झरगिरिगन
प्रभु पद अंकित अवनि विशेषी * आयसु होय तौ आवौं देखी ॥
अवशि अत्रि आयसु शिरधरहू * तात विगत भय कानन चरहू॥
मुनिप्रसाद वन मंगलदाता * पावन परम सोहावन भ्राता ॥
ऋषिनायक जहँ आयसु देहीं * राखेहु तीरथ जल थल तेहीं ॥
सुनि प्रभुवचन भरतसुखपावा *मुनिपदकमल मुदितशिरनावा॥
दोहा-भरत राम सम्वादसुनि, सकल सुमंगलमूल ॥
सुरस्वारथी सराहिकुल, हर्षित वर्षहिं फूल ॥ २०४ ॥
धन्य भरत जय राम गुसाँई *कहत देव हर्षत बरिआई ॥
मुनि मिथिलेश सभा सब काहू * भरत वचन सुनि भयउ उछाहू

१ नौदहवर्ष । २ आज्ञा । ३ पृथ्वी । ४ आज्ञा ।

भरत राम गुणग्राम सनेहू * पुलकि प्रशंसत राउ विदेहू ॥
सेवक स्वामि स्वभाव सुहावन * नेम प्रेम अति पावन पावन ॥
मति अनुसार सराहन लागे * सचिव सभासद सब अनुरागे ॥
सुनि सुनि राम भरत सम्वादू * दुहुँ समाज हिय हर्ष विषादू ॥
राममातु दुख सुख सम जानी * कहि गुण दोष प्रबोधीरानी ॥
एक करहिं रघुवीर बडाई * एक सराहत भरत भलाई ॥
दोहा–अत्रि कहेउ तब भरत सन, शैल समीप सुकूप ॥
राखिय तीरथ तोय तहँ, पावन अमल अनूप ॥ २०५ ॥
भरत अत्रि अनुशासन पाई * जलभाजन सब दिये चलाई ॥
सानुज आपु अत्रिमुनि साधू * सहित गये जहँ कूप अगाधू ॥
पावन पाथ पुण्य थल राखा * प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाषा ॥
तात अनादि सिद्ध थल येहू * लोप्यउकाल विदित नहिं केहू ॥
तब सेवकन्ह सरल थल देखा * कीन्ह सुजल हित कूप विशेषा ॥
विधिवशभयउ विश्व उपकारू * सुगम अगम अति धर्म विचारू
भरतकूप अब कहिहहिं लोगा * अति पावन तीरथ जल योगा ॥
प्रेम समेत निमज्जहिं पाणी * होइहहिं विमल कर्म्म मन वाणी
दोहा–कहत कूप महिमा सकल, गये जहाँ रघुराउ ॥
अत्रि सुनायहु रघुवरहिं, तीरथ पुण्य प्रभाउ ॥ २०६ ॥
कहत धर्म इतिहास सप्रीती * भयउ भोर निशि सो सुखबीती
नित्य निबाहि भरत दोउ भाई * राम अत्रि गुरु आयसु पाई ॥
सहित समाज साजसब सादे * चले राम वन अटन पयादे ॥
कोमलचरणचलत विनु पनहीं * भैमृदु भूमि सकुचि मन मनहीं
कुश कंटक काँकरी कुराई * कटुक कठोर कुवस्तु दुराई ॥
महि मंजुलमृदु मारग कीन्हें * बहत समीर त्रिविध सुखलीन्हें
सुमन वर्षि सुर घन करि छाहीं * विटप फूलि फल दल मृदुताहीं
मृग विलोकि खग बोलि सुवानी * सेवहिं सकल राम प्रिय जानी ॥

१ उपमारहित । २ आज्ञा । ३ बर्नन । ४ बडाई । ५ कोमल । ६ वायु, शीतल, मंद सुगंध सहित । ७ पुष्प । ८ पेड । ९ हरिण । १० पक्षी ।

दोहा-सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु, राम कहत जमुहात ॥
राम प्राणप्रिय भरत कहँ, यह न होइ बड़िबात ॥ ३०७ ॥
इहि विधि भरत फिरत वनमाहीं * नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं ॥
पुण्य जलाशय भूमि विभागा * खग मृग तरु तृणगिरि वनबागा ॥
चारु विचित्र पवित्र विशेखी * बूझत भरत दिव्य थल देखी ॥
सुनिमनमुदित कहतऋषिराऊ * हेतु नाम गुण पुण्य प्रभाऊ ॥
कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रणामा * कतहुँविलोकतमनअभिरामा ॥
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई * सुमिरत सीयसहितदोउभाई ॥
देखि स्वभाव सनेह सुसेवा * देहिं अशीश मुदित वनदेवा ॥
फिरहिं गये दिन पहर अढ़ाई * प्रभुपदकमल विलोकहिं आई ॥
दोहा-देखे थल तीरथ सकल, भरत पाँच दिन माँझ ॥
कहत सुनत हरि हर सुयश, गयउ दिवस भइसाँझ ॥ ३०८ ॥
भोर न्हाइ सब जुरा समाज * भरत भूमिसुर तिरहुति राजू ॥
भलदिन आजु जानि मनमाहीं * रामकृपालु कहत सकुचाहीं ॥
गुरु नृपभरत सभा अवलोकी * सकुचिराम फिरअवनि[1]विलोकी ॥
शील सराहि सभा सब शोची * कहुँनरामसमस्वामिसकोची ॥
भरत सुजान राम रुख देखी * उठि सप्रेम धरि धीर विशेषी ॥
करि दण्डवत कहत कर जोरी * राखीनाथ सकल रुचि मोरी ॥
मोहिंलगि सबहि सहेउसंतापू[2] * बहुत भाँति दुख पावा आपू ॥
अब गुसाँइ मोहिं देहु रजाई * सेवौंअवध अवधि लगि जाई ॥
दोहा-जेहि उपाय पुनि पाँय जन, देखै दीनदयालु ॥
सो शिख देइय अवधि लगि, कोशलपाल कृपालु ॥ ३०९ ॥
पुरजन परिजन प्रजा गुसाँई * सबशुचि सरस सनेह सगाई ॥
राउरवदि[3] भल भव दुखदाहू * प्रभु विनु वादि[4] परमपदलाहू ॥
स्वामि सुजान जानि सबहीकी * रुचि लालसा रहनिजनजीकी ॥
प्रणतपाल पालहिं सब काहू * देव दुहूँ दिशि ओर निबाहू ॥

१ पृथ्वी । २ दुःख । ३ आपके हैके । ४ वृथा ।

असम्बहिं सब विधि भूरि भरोसो * किये विचार न शोचखरोसो ॥
आरति मोरि नाथ कर छोहू * दुहुँमिलि कीन्ह ढीठ हठिमोहू ॥
यह बड़ दोष दूरि करि स्वामी * तजिसकोचशिखइयअनुगामी ॥
भरत विनय सुनि सबहिंप्रशंसा * क्षीर नीर विवरण गति हंसा ॥
दोहा–दीनबन्धु सुनि बन्धुके, वचन दीन छलहीन ॥
देश काल अवसर सरिस, बोले राम प्रवीन ॥ ३१० ॥
तात तुम्हारि मोरि परिजनकी * चिन्तागुरुहिं नृपहिघरवनकी ॥
माथे पर गुरु मुनि मिथिलेशू * हमहिं तुमहिं स्वप्नेहुँ न कलेशू ॥
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ * स्वारथ सुयश धर्म परमारथ ॥
पितु आयसु पालिय दोउभाई * लोक वेद भल भूप भलाई ॥
गुरु पितु मातु स्वामि शिखपालै * चलत सुगमपगपरत नखालै ॥
अस विचारि सब शोच विहाई * पालहुअवधअवधि भरिजाई ॥
देश कोश पुरजन परिवारू * गुरुपदरजहिंलागि छरभारू ॥
तुमपुनि मातु सचिव सुखमानी * पालहु पुहुमि प्रजा रजधानी ॥
दोहा–मुखिया मुखसों चाहिये, खान पानको एक ॥
पालै पोषै सकल अँग, तुलसी सहित विवेक ॥ ३११ ॥
राजधर्म्म सरवस इतनोई * जिमि मन माहिं मनोरथगोई ॥
बन्धु प्रबोध कीन्ह बहु भाँती * बिनुअधार मन तोष नशाँती ॥
भरत शील गुरु सचिव समाजू * सकुच सनेह विवशरघुराजू ॥
प्रभुकरि कृपा पाँवरी दीन्हीं * सादर भरत शीश धरिलीन्हीं ॥
चरण पीठ करुणानिधानके * जनुयुग यामिक प्रजाप्राणके ॥
सम्पुट भरत सनेह रतनके * आखर युग जनु जीवजतनके ॥
कुल कपाट कर कुशल कर्मके * विमल नयन सेवा सुधर्मके ॥
भरत मुदित अवलम्ब कहेते * अस सुख जस सिय रामरहेते ॥
दोहा–माँग्यउ बिदा प्रणाम करि, राम लिये उरलाय ॥
लोग उचाटे अमरपति, कुटिल कुअवसर पाय ॥ ३१२ ॥

१ सेवक । २ कार्य । ३ पृथ्वी । ४ खडाऊं । ५ पहरुवा-चौकीदार । ६ डब्बा ।

सो कुचालि सब कहँ भइनीकी * अवधि आश सबजीवनजीकी॥
नतरु लषण सिय राम वियोगा * हहारि मरत सब लोग कुरोगा ॥
रामकृपा अवरेव सुधारी * विबुधधार भइ गुणद गुहारी ॥
भेंटत भुजभरि भाइ भरतसो * राम प्रेम रस कहि न परतसो ॥
तन मन वचन उमँगि अनुरागा * धीर धुरंधर धीरज त्यागा ॥
वारिज लोचन मोचत वारी * देखि दशा सुरसभा दुखारी ॥
मुनिगण गुरुजन धीर जनकसे * ज्ञान अनल मन कसेकनकसे॥
जे विरंचि निर्लेप उपाये * पद्मपत्र जिमि जग जलजाये ॥
दोहा–तेउ विलोकि रघुवर भरत, प्रीति अनूप अपार ॥
भये मगन तन मन वचन, सहित विराग विचार ॥ ३१३ ॥
जहाँ जनक गुरुगति मति भोरी * प्राकृत प्रीति कहत बडखोरी ॥
वर्णत रघुवर भरत वियोगू * सुनि कठोरकवि जानाहिंलोगू ॥
सो सकोचवश अकथ सुवानी * समय सनेह सुमिरिसकुचानी॥
भेंटि भरत रघुवर समुझाये * पुनि रिपुदमन हर्षि हियलाये ॥
सेवक सचिव भरत रुखपाई * निज निज काज लगे सबजाई॥
सुनि दारुणदुख दुहूं समाजा * लगे चलनके साजन साजा ॥
प्रभुपद पद्म वन्दि दोउ भाई * चले शीश धरि राम रजाई ॥
मुनि तापस वन देव निहोरी * सब सनमान बहोरि बहोरी ॥
दोहा–लषणहिं भेंटि प्रणाम करि, शिरधरि सियपद धूरि ॥
चले सप्रेम अशीश सुनि, सकल सुमंगल मूरि ॥३१४॥
सानुज राम नृपहिं शिरनाई * कीन्हीं बहुविधि विनय बड़ाई॥
देव दया वश बड दुख पायउ * सहितसमाजकाननहिंआयउ॥
पुर पगु धारिय देइ अशीशा * कीन्ह धीर धरि गमन महीशा॥
मुनि महिदेव साधु सनमाने * विदा किये हरि हर समजाने ॥
सासु समीप गये दोउ भाई * फिरे वन्दि पद आशिष पाई ॥
कौशिक वामदेव जावाली * परिजनपुरजनसचिवसुचाली॥

१ विक्षेप । २ माया । ३ शत्रुघ्न । ४ राजाजनक । ५ निकट ।

यथायोग्य करि विनयप्रणामा * बिदाकिये सब सानुज रामा ॥
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे * सब सनमानि कृपानिधि फेरे ॥
दोहा-भरत मातुपद वन्दि प्रभु, शुचि सनेह मिलि भेंट ॥
बिदाकीन्ह सजिपालकी, सकुचि शोच सबमेट ॥ ३१५ ॥
परिजनमातुपितहि मिलिसीता * फिरी प्राणप्रिय प्रेमपुनीता ॥
करि प्रणाम भेंटी सब सासू * प्रीतिकहत कविहियन हुलासू॥
सुनिशिख अभिमत आशिषपाई * रही सीय दुहुँप्रीति समाई ॥
रघुपति पटु पालकी मँगाई * करि प्रबोध सब मातु चढ़ाई ॥
बारबार हिलि मिलि दोउ भाई * सम सनेह जननी पहुँचाई ॥
साजि वाजि गज वाहन नाना * भूप भरत दल कीन्ह पयाना ॥
हृदय राम सिय लषण समेता * चले जाहिं सब लोग अचेता ॥
बसह वाजि गज पशु हियहारे * चले जाहिं परवश मनमारे ॥
दोहा-गुरु गुरुतिय पद वन्दि प्रभु, सीता लषण समेत ॥
फिरे हर्ष विस्मय सहित, आये पर्ण निकेत ॥ ३१६ ॥
बिदा कीन्ह सनमानि निषादू * चलेउ हृदय बड विरह विषादू॥
कोल किरात भिल्ल वनचारी * फेरे फिरे जुहारि जुहारी ॥
प्रभु सिय लषण बैठि वट छाहीं * प्रियपरिजनवियोगबिलखाहीं॥
भरत सनेह स्वभाव सुवानी * प्रिया अनुजसनकहतबखानी॥
प्रीति प्रतीति वचन मन करणी * श्रीमुख राम प्रेम वश वरणी ॥
तेहि अवसर खगमृगजलमीना * चित्रकूट चर अचर मलीना ॥
विबुध विलोकि दशा रघुवरकी * वरषिसुमनकहिगतिघरघरकी॥
प्रभुप्रणाम करि दीन्ह भरोसो * चले मुदित मन डर न खरोसो॥
दोहा-सानुज सीय समेत प्रभु, राजत पर्ण कुटीर ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य जनु, सोहत धरे शरीर ॥३१७॥
मुनि महिसुर गुरुभरतभुआलू * राम विरह सब साज विहालू ॥
प्रभुगुण ग्राम गणत मनमाहीं * सब चुपचाप चले मगु जाहीं ॥
यमुना उतरि पार सब भयऊ * सोवासर विनुभोजन गयऊ ॥

१ पट्टाम्बरजड़ावनते जड़ित २ । बैल ।

उतरि देवसरि दूसर बासू * रामसखा सब कीन्ह सुपासू ॥
सई उतरि गोमती नहाये * चौथे दिवस अवधपुर आये ॥
जनकरहेपुर बासर चारी * राजकाज सबसाज सँभारी ॥
सौंपि सचिव गुरु भरतहि राजू * तिरहुति चले साजि सब साजू ॥
नगरनारिनर गुरु शिख मानी * बसे सुखेन राम रजधानी ॥
दोहा-राम दरश हित लोग सब, करत नेम उपवास ॥
तजि तजि भूषण भोग सुख, जियत अवधिकीआश ॥३१८॥
सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे * निज निज काज पाइशिख शोधे
पुनिशिख दीन बोलि लघुभाई * सौंपी सकल मातु सेवकाई ॥
भूसुर बोलि भरत करजोरे * करि प्रणाम बर विनय निहोरे ॥
ऊँच नीच कारज भल पोचू * आयसुदेव न करब सकोचू ॥
परिजन पुरजन प्रजा बुलाये * समाधान करि सुवश बसाये ॥
सानुजगे गुरुगेह बहोरी * करि दण्डवत कहत करजोरी ॥
आयसु होइ तो रहौं सनेमा * बोले मुनि तब पुलकि सप्रेमा ॥
समुझब कहब करब तुम सोई * धर्मसार जग होइहि जोई ॥
दोहा-मुनिशिख पाइ अशीश बड़ि, गणक बोलि दिन साधि ॥
सिंहासन प्रभु पादुका, बैठारी निरुपाधि ॥३१९॥
राममातु गुरुपद शिरनाई * प्रभुपद पीठि रजायसु पाई ॥
नंदिग्राम करि पर्णकुटीरा * कीन्ह निवास धर्मधुर धीरा ॥
जटाजूट शिर मुनि पटधारी * महिखनि कुश साथरीसँवारी ॥
अशन वसन आसन व्रत नेमा * करतकठिन ऋषि धर्म सप्रेमा ॥
भूषण वसन भोग सुख भूरी * तन मन वचन तजे तृण तूरी ॥
अवधराज सुरराज सिहाहीं * दशरथधनलखिधनदलजाहीं ॥
तेहि पुर वसत भरत विनुरागा * चंचरीक जिमिचम्पक बागा ॥
रामविलास राम अनुरागी * तजतवमनाजिमिजनबड़भागी ॥
दोहा-राम प्रेम भाजन भरत, बडी न यहकरतूति ॥
चातक हंस सराहियत, टेक विवेक विभूति ॥३२०॥

१ चारदिन ।

देह दिनहिं दिन दूबरि होई * बढ़त तेज बल मुखछबि सोई ॥
नित नव राम प्रेम प्रणपीना * बढ़त धर्म दल मन न मलीना ॥
जिमिजलनिघटतशरद प्रकाशे * बिलसत बेत सुबनज विकाशे ॥
शम दम संयम नेम उपासा *नखत भरतहिय विमल अकाशा
ध्रुव विश्वास अवधि राकासी *स्वामि सुरति सुर वीथि विकासी॥
राम प्रेमविधु अचल अदोषा *सहितसमाज सोह नित चोखा॥
भरत रहनि समुझनि करतूती * भक्तिविरतिगुणविमलविभूती॥
वर्णत सकल सुकवि सकुचाहीं * शेष गणेश गिरा गमनाहीं ॥
दोहा-नित पूजत प्रभु पाँवरी, प्रीत न हृदय समाति ॥
माँगि माँगि आयसु करत, राजकाज बहुभाँति ॥ ३२१ ॥
पुलकगात हिय सिय रघुवीरू * जीह नाम जपि लोचन नीरू ॥
लषण राम सिय कानन बसहीं *भरत भवनबासि तपतनु कसहीं॥
दुहुँदिशि समुझि कहतसबलोगू *सबविधि भरत सराहन योगू ॥
सुनि व्रत नेम साधु सकुचाहीं * देखि दशा मुनिराज लजाहीं ॥
परम पुनीत भरत आचरणू * मधुर मंजु मृदु मंगल करणू ॥
हरण कठिन कलिकलुष कलेशू *महामोह निशि दलन दिनेशू ॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजू * शमन सकल सन्ताप समाजू॥
जनरंजन भंजन भवभारू * रामसनेह सुधाकर सारू ॥
छंद-सिय राम प्रेम पियूष पूरण होत जन्म न भरत को ॥
मुनिमन अगम यमनियम शमदमविषमव्रतआचरतको १४
दुख दाह दारिद दम्भ दूषण सुयश मिस अपहरतको।
कलिकाल तुलसीसे शठहि हठि राम सन्मुख करतको॥ १५॥
सो०-भरतचरित करि नेम, तुलसी जे सादर सुनहि ॥
सीय राम पद प्रेम, अवशि होइ भवरस विरति ॥ १३॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमल विज्ञानवैराग्यसम्पादनो नाम तुलसीकृत अयोध[illegible] द्वितीयः सोपानः समाप्तः ॥२॥

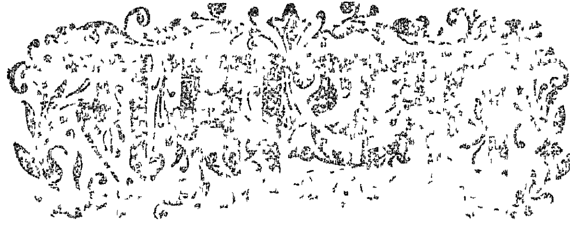
॥ इति [illegible]ण्डं समाप्तम् ॥

१आधिक- मन । २ कमल । ३ निर्मल । ४ चन्द्र [illegible] खड़ाऊँ । ७ वन । ८ सूर्यनारायण । ९ हाथी । १० सिंह ।

[illegible] विजयते।

अथ

श्रीयुतगोस्वामितुलसीदासजीकृत-



सटिप्पण,

आरण्यकाण्ड ३.

संपूर्ण क्षेपकों सहित.

जिसमें

जयंतकी स्त्रीका वरदान पाना, कौशलकुमार उदार श्रीरघुनाथजीका अत्रिऋषिसे मिलाप, कबन्धराक्षस वध, शरभंगऋषि समागम, सुतीक्ष्ण और अगस्त्यऋषिसे संभाषण, पंचवटीमें प्रवेश, शूर्पणखा कुरूपांत खर दूषण वध, जानकीहरण और जटायु वधादिकी अत्यन्त पवित्र कथा वर्णित हैं।

यह ग्रन्थ

पण्डित-ज्वालाप्रसादमिश्रजीकेद्वारा

शुद्धकराकर,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९६२, शके १८२७.

❀ आरण्यकाण्ड ३. ❀

दोहा-सो कुल धन्य उमा सुनु, जगत्पूज्य सुपुनीत ॥
श्रीरघुवीर परायण, जेहि नर उपज विनीत ॥

श्रीरामचंद्रजी करके कपट कांचन मृगबध और
रावण करके सीता हरण ।





चौपाई-इहिकलिकाल न साधन दूजा । योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा ॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं । सन्तत सुनिय रामगुण ग्रामहिं ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय, खेतवाडी-बंबई.
KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS
Shree Venkateshwar (Steam) Press, Khetwadi—BOMBAY.

श्रीः ।

॥ श्रीमद्वेङ्कटेश्वराय नमः ॥

अथ श्रीतुलसीदासविरचिते-

रामायणे आरण्यकाण्डम् ।

श्लोक ।

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघहरं ध्वान्तापहं तापहम् ।
मोहाम्भोधरपुंजपाटनविधौ खेशं भवं शंकरं
वन्दे ब्रह्मकुलंकलंकशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥ १ ॥
सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं
पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् ।
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं
सीतालक्ष्मणसंयुतंपथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

सो०-उमा राम गुण गूढ, पण्डित मुनि पावहिं विरति ॥
पावहिं मोह विमूढ, जेहरि विमुख न धर्मरति ॥ १ ॥

पुरजन भरत प्रीति मैं गाई * मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥
अबप्रभुचरित सुनो अतिपावन * करतजुवनसुरमुनि मनभावन॥
एकबार चुनि कुसुम सुहाये * निजकर भूषण राम बनाये ॥
सीतहिं पहिराये प्रभु सादर * बैठे फटिक शिला परभाधरं ॥

श्लोकार्थ-जो धर्मवृक्षके मूल विवेकसमुद्रके आनंद करनेवाले पूर्णचंद्र वैराग्य कमलके खिलाने को सूर्य पापके हरनेवाले अंधकारके हरनेवाले त्रिविध तापहारक. मोहरूपी बादल समूहोंके तोड़नेको पवनरूप ब्रह्म कुलके कलंकके नाशक श्रीराम भूपके प्यारे वा जिन्हें रामभूप प्यारे हैं ऐसे शंकरकी मैं वन्दना करताहूं ॥ १ ॥ जलभरे बादलके समान जिनका शरीर पीताम्बरधारणकिये सुन्दर हाथमें धनुष बाण कमरमें बाणोंसे भरा तरकस शोभायमान कमलके समान बड़े बड़े नेत्रवाले शिरपर जटाजूट शोभित सीता लक्ष्मण संयुक्त मार्गमें प्राप्त आनंददायक रामको मैं भजताहूँ ॥ २ ॥

१ वैराग्य । २ शोभित ।

"करहिं प्रकाश पास मणिझारी * रही छिटक पूनो उजियारी ॥
तेहि निशि नारि जयन्ता केरी * आई तहँ लै सुमुखि घनेरी ॥
रघुपतिरूपविलोकि जुडानी * नृत्यगान कीन्हों कलबानी ॥
मनभावत वर माँग सिधाई * सो सुधि कतहुँ जयन्तै पाई ॥"
सुरपतिसुत धरि वायस वेषा * शठ चाहत रघुपति बल देखा ॥
जिमि पिपीलिका सागर थाहा * महामन्दमति पावन चाहा ॥
सीताचरण चोंच हति भागा * मूढ मन्दमति कारण कागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना * सींक धनुष सायक सन्धाना ॥
दोहा-अति कृपालु रघुनायक, सदा दीन पर नेह ॥
तासन आई कीन्ह छल, मूरख अवगुण गेह ॥ १ ॥
विन अपराध प्रभु हतैं न काहू * अवसर परे ग्रसै शशिराहू ॥
जब प्रभुलीन्ह सींकधनुबाना * क्रोध जानिभा अनल समाना ॥
प्रेरित मंत्र ब्रह्मशर धावा * चला भाजि वायस भयपावा ॥
धरि निजरूप गयउ पितु पाहीं * राम विमुख राखा तिन नाहीं ॥
भानिराश उपजी हिय त्रासा * यथा चक्र भय ऋषि दुर्वासा ॥
ब्रह्मधाम शिवपुर सबलोका * फिराश्रमितव्याकुलभयशोका
काहू बैठन कहा न ओही * राखिको सकै रामकर द्रोही ॥
मातु मृत्यु पितु शमन समाना * सुधा होइ विष सुनु हरियाना ॥
मित्र करै शतरिपुकी करणी * ताकहँ विबुध नदी वैतरणी ॥
सब जग ताहि अनलते ताता * जो रघुवीर विमुख सुन भ्राता ॥
दोहा-जिमि जिमि भाजत शक्रसुत, व्याकुल अति दुखदीन ॥
तिमि तिमि धावत रामशर, पाछे परम प्रवीन ॥ २ ॥
बचहि उरग बरु ग्रसै खगेशा * रघुपतिशरछुटि बचब अँदेशा ॥
नारद देखा विकल जयन्ता * लागि दया कोमल चितसन्ता ॥
दूरिहिते कहि प्रभु प्रभुताई * भजे जात बहु विधि समुझाई ॥
पठवा तुरत राम पहँ ताही * कहसि पुकारि प्रणतहितपाही ॥

१ जयंत । २ चींटी । ३ लोहू । ४ बाण । ५ अवगुणका घर । ६ जो बाणब्रह्माकी सृष्टिभरमें विकलकरै ।
७ यम । ८ अमृत । ९ गरुड । १० अग्नि । ११ सर्प ।

आतुर समय गहेसि पद जाई * त्राहि त्राहि दयालु रघुराई ॥
अतुलितबल अतुलित प्रभुताई * मैं मतिमन्द जानि नहिं पाई ॥
निजकृतकर्म्मजनितफलपायउँ *अबप्रभुपाहिशरणताकिआयउँ॥
सुनि कृपालु अतिआरत बानी * एक नयन करि तजा भवानी॥
सो०–कीन्ह मोहवश द्रोह, यद्यपि त्यहिकर बध उचित ॥
प्रभु छाँडेउ करि छोह, को कृपालु रघुवीर सम ॥ २ ॥
रघुपति चित्रकूट बसि नाना *चरितकरतश्रुति सुधासमाना॥
बहुरि राम अस मन अनुमाना *होइहि भीर सबहिं मोहिंजाना॥
सकल मुनिन्हसन बिदा कराई * सीता सहित चले दोउ भाई ॥
अत्रीके आश्रम प्रभु गयऊ * सुनत महामुनिहर्षित भयऊ ॥
पुलकित गात अत्रि उठिधाये * देखि राम आतुर चलि आये॥
करत दण्डवत मुनि उरलाये * प्रेम बारि दोउ जन अन्हवाये॥
देखि रामछबि नयन जुडाने*सादर निज आश्रम तब आने ॥
करि पूजा कहि बचन सुहाये * दिये मूलफल प्रभु मनभाये ॥
सो०–प्रभुआसन आसीन, भरि लोचन शोभा निरखि ॥
मुनिवर परमप्रवीन, जोरिपाणि स्तुति करत ॥ ३ ॥
छंदप्रमाणिका–नमामि भक्तवत्सलं, कृपालुशीलकोमलम् ॥
भजामिते पदाम्बुजं, अकामिनां स्वधामदम् ॥
निकामश्यामसुन्दरं, भवांबुनाथमन्दरम् ॥
प्रफुल्लकंजलोचनं, मदादिदोषमोचनम् ॥ १ ॥
प्रलम्बबाहुविक्रमं, प्रभोऽप्रमेयवैभवम् ॥
निषंगचापसायकं, धरे त्रिलोकनायकम् ॥
दिनेशवंशमण्डनं, महेशचापखण्डनम् ॥
मुनीन्द्रसन्तरंजनं, सुरारिवृन्द भंजनम् ॥ २ ॥
मनोजवैरिवन्दितं, अजादिदेव सेवितम् ॥
विशुद्धबोधविग्रहं, समस्तदुःखतापहम् ॥

नमामि इन्दिरापतिं,सुखाकरं सता गतिम् ॥
भजे सशक्ति सानुजं, शचीपतिप्रियानुजम् ॥ ३ ॥
त्वदंघ्रिमूलजे नरा, भजन्ति हीनमत्सराः ॥
पतंति नो भवार्णवे, वितर्कवीचिसंकुले ॥
विविक्तवासनाः सदा, भजंति मुक्तिदं मुदा ॥
निरस्य इन्द्रियादिकं,प्रयांति ते गतिं स्वकम् ॥ ४ ॥
त्वमेकमद्भुतं प्रभुं, निरीहमीश्वरं विभुम् ॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं, तुरीयमेव केवलम् ॥
भजामि भाववल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभम् ॥
स्वभक्तकल्पपादपं, समस्तसेव्यमन्वहम् ॥
अनूपरूपभूपतिं, नतोऽहमुर्विजापतिम् ॥
प्रसीदमे नमामि ते, पदाब्जभक्ति देहिमे ॥
पठन्ति ये स्तवं इदं, नरादरेण ते पदम् ॥
व्रजन्ति नात्र संशयं, त्वदीयभक्तिसंयुतम् ॥ ६ ॥

छन्दार्थ—आप भक्तवत्सलहैं सुन्दर कोमल कृपालु आपका स्वभावहै सो आपको नमस्कार करताहूं कामना रहित स्वजनोंको स्वधामके देनेवाले आपके चरणकमलोंका मैं भजन करता हूं और अत्यन्त श्यामसुन्दर शरीर भवरूपी समुद्रके मथनेहारे आप मंदरहैं अधिक फूले कमलके समान आपके नेत्रहैं और आप मद आदि दोषके छुड़ानेवाले हैं ॥ १ ॥ हेप्रभो ! आपकी लम्बायमान भुजाओंको बल अप्रमेयहै तरकस धनुष बाण धारण किये आप त्रिलोकीके नाथहैं सूर्यवंशके शोभा देनेहारे शिवजीके धनुष तोड़नेहारे मुनींद्र संतोंके आनंददाता राक्षसोंके समूहोंकेमारने वालेहो ॥ २ ॥ कामदेवके वैरी शिवजी तुमको वंदना करते हैं ब्रह्मादिक देव सेवा करतेहैं आपका शरीर विशेष शुद्ध ज्ञानरूपीहै सब दोषोंका नाश कारकहै आप लक्ष्मीके पति सुखकी खान सज्जनोंकी गतिहैं आपको नमस्कारहै जानकी लक्ष्मण सहित आपका भजन करताहूं आप इंद्रके प्यारे अनुज हैं ॥ ३ ॥ जो मत्सर त्याग करके तुम्हारे चरण कमलको भजन करते हैं वे कुतर्क लहरोंसे संयुक्त भवसागरमें नहीं गिरते और एकांती आपको मुक्तिके लिये हर्ष पूर्वक सदा सेवते हैं सो इंद्रियादि रसोंको त्याग तुम्हारी निजगतिको प्राप्त होतेहैं ॥ ४ ॥ तुम एक अद्भुत प्रभुहो और निरीह उद्यम रहित ईश्वर और विभु अर्थात् व्यापक जगत्के गुरु और निरंतर जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति अवस्थाओंसे भिन्न केवल एक हो आपको भाव प्याराहै आप कुयोगियोंको दुर्लभ हो अपने भक्तोंको कल्पवृक्षहो और समस्तलोकको सुन्दर सेव्य और क्रोधरहित वा सनातन हो आपको

दोहा–विनती करि मुनि नाइशिर, कह करजोरि बहोरि ॥
चरण सरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि ॥ ३ ॥
जन्म जन्म तव पद सुखकन्दा * बढ़ौ प्रेम चकोरजिमिचन्दा ॥
देखि राम मुनि विनय प्रणामा * विविध भाँति पायउ विश्रामा॥
अनसूयाके पदगहि सीता * मिली बहोरि सुशील विनीता॥
जो सिय सकल लोक सुखदाता*अखिल लोक ब्रह्माण्डकिमाता॥
ते पाई सिय मुनिवरभामिनि *सुखीभईकुमुदिनिजिमियामिनि
ऋषिपत्नी मन सुख अधिकाई * आशिष देइ निकट बैठाई ॥
दिव्य वसन भूषण पहिराये * जे नित नूतन अमल सुहाये ॥
जिनहि निरखि दुख दूरि पराहीं *गरुड देखि जिमि पन्नग जाहीं॥
दोहा–ऐसे वसन विचित्र सुठि, दिये सीय कहँ आनि ॥
सन्मानी प्रियवचन कहि, प्रीति न हृदय समानि ॥ ४ ॥
कह ऋषिवधू सरल मृदुवानी *नारि धर्म्म कछु व्याज बखानी॥
मात पिता भ्राता हितकारी *मित सुखप्रद सुनु राजकुमारी॥
अमित दानि भर्त्ता वैदेही * अधम सोनारिजो सेवनतेही ॥
धीरज धर्म मित्र अरु नारी * आपदकाल परखिये चारी ॥
वृद्ध रोगवश जड धनहीना * अन्ध बधिर क्रोधीअति दीना ॥
ऐसहु पतिकर किये अपमाना * नारि पाव यमपुर दुख नाना ॥
एकै धर्म्म एक व्रत नेमा * काय वचन मन पति पदप्रेमा ॥
जग पतिव्रता चारिविधिअहहीं * वेद पुराण सन्त अस कहहीं ॥
दोहा–उत्तम मध्यम नीच लघु, सकल कहौं समुझाय ॥
आगे सुनहिं ते भवतरहिं, सुनहु सीय चितलाय ॥ ५ ॥
उत्तमके अस बस मनमाहीं * स्वप्नेहु आन पुरुष जग नाहीं ॥

भजताहूं ॥ ५ ॥ यह जो आपका जानकीपति अनूप भूपरूप है इसको मैं नमस्कार करताहूं ॥ आप प्रसन्न होके मुझे चरणकमलकी भक्तिदो और जो इस स्तोत्रको आदरपूर्वक पढ़ैं वे तुम्हारी भक्तिसहित तुम्हारे पदको निःसंदेह प्राप्तहों ॥ ६ ॥

१ अखिलकही समुह लोक एक ब्रह्मांडके भीतरहैं ऐसे अनेकब्रह्मांड तिनकीमाता। २ रात। ३ अनसूया। ४ बहरा।

मध्यम परपति देखहिं कैसे * भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ॥
धर्म विचारि समुझि कुल रहहीं * सो निकृष्टतिय श्रुतिअसकहहीं
विनु अवसर भयते रहजोई * जानेहु अधम नारि जग सोई ॥
पतिवंचक परपति रति करई * रौरव नरक कल्पशत परई ॥
क्षण सुख लागि जन्म शत कोटी * दुखनसमझ तेहिसम को खोटी ॥
विनुश्रम नारि परमगति लहई * पतिव्रत धर्म छाँडि छल गहई ॥
पति प्रतिकूल जन्म जहँ जाई * विधवा होइ पाइ तरुणाई ॥
सो०—सहज अपावनि नारि, पतिसेवत शुभगति लहहि ॥
यश गावत श्रुति चारि, अजहूं तुलसी हरिहि प्रिय ॥ ४ ॥
सुनु सीता तव नाम, सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं ॥
तोहिं प्राण प्रियराम, कहेहुँ कथा संसारहित ॥ ५ ॥
सुनि जानकी परम सुख पावा * सादर तासु चरण शिरनावा ॥
तब मुनिसन कह कृपानिधाना * आयसुहोइ जाउँ वन आना ॥
सन्तत मोपर कृपा करेहू * सेवक जानि तजेहु जनि नेहू ॥
धर्मधुरन्धर प्रभुकी वानी * सुनि सप्रेम बोले मुनि ज्ञानी ॥
जासुकृपा अज शिव सनकादी * चहत सकल परमारथवादी ॥
ते तुम राम अकाम पियारे * दीनबन्धु मृदु वचन उचारे ॥
अब जानी मैं श्री चतुराई * भजिय तुमहिं सब देवविहाई ॥
जेहि समान अतिशयनहिं कोई * ताकर शील कसन अस होई ॥
केहिविधि कहौं जाहु अबस्वामी * कहहु नाथ तुम अन्तर्यामी ॥
असकहि प्रभुविलोकिमुनिधीरा * लोचन जलबह पुलकशरीरा ॥
छंद—तनु पुलक निर्भर प्रेम पूरण नयन मुखपंकज दिये ॥
मन ज्ञान गुण गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप काकिये ॥
जप योग धर्म समूहते नर भक्ति अनुपम पावई ॥
रघुवीरचरित पुनीत निशिदिन दास तुलसी गावई ॥ ७ ॥
दोहा—मुनिहूँकी स्तुति कीन्ह प्रभु, दीन्ह सुभग वरदान ॥

१ पतिसे कपट रखनेवाली । २ शरीरकी सुधि नहीं है ।

सुमन वृष्टि नभ संकुल, जय जय कृपानिधान ॥६॥
"कलिमल शमन दमन मन, राम सुयश सुखमूल ॥
सादर सुनहिं जे ताहिंपर, राम रहहिं अनुकूल ॥७॥
सो०–कठिन सुकलिमल कोश, धर्म न ज्ञान न योग जप ॥
परिहर सकल भरोस, राम भजहिं ते चतुरनर" ॥६॥
मुनिपद कमल नाइ करिशीशा * चले वनहिं सुर नर मुनिईशा ॥
आगे राम अनुज पुनिपाछे * मुनिवर वेष बने अति आछे ॥
उभय बीच सिय सोहहिं कैसी * ब्रह्मजीव बिच माया जैसी ॥
सरिता वन गिरि[1] अवघटघाटा * पति पहिंचानि देहिं वरबाटा[2] ॥
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया * करहिंमेघ नभ तहँ तहँ छाया ॥

अथ क्षेपक ।

आश्रम विपुल दीख वनमाहीं * देव सदन तेहि पटतर नाहीं ॥
बहु तड़ाग सुन्दर अमराई * भाँति भाँति सब मुनिनलगाई ॥
दिव्य विटप वन चहुँदिशि सोहैं * देखत सकल सुरन मनमोहैं ॥
तेहि दिन तहँप्रभुकीन्हनिवासा * सकलमुनिन्हमिलिकीन्हसुपासा
दोहा–निज निज आश्रम वेदिका, तिहिपर तुलसि विराज ॥
अनुज जानकी सहित तहँ, राजतभे रघुराज ॥ ८ ॥
आनि सुआश्रम मुदितमन, पूजि पहुनई कीन्ह ॥
कन्द मूल फल अमिय सम, आनि रामकहँ दीन्ह ॥ ९ ॥
अनुज सीय सह भोजन कीन्हा * जो जिमि भाव सुभगवरदीन्हा
होत प्रभात मुनिन शिरनावा * आशिर्वाद सबहिं सन पावा ॥
सुमिरि उमा सुर सिद्ध गणेशा * पुनि प्रभु चले सुनहुविहँगेशा[3] ॥
वन अनेक सुन्दर गिरि नाना * लाँघत चले जाहिं भगवाना ॥
मिला असुर विराध मगुजाता * गर्जत घोर कठोर रिसाता ॥
रूप भयंकर मानहु काला * वेगवन्त धायउ जिमिव्याला ॥
गगन[4]देव मुनि किन्नर नाना * तेहिं क्षण हृदय हारि भयमाना

१ पर्वत । २ मार्ग । ३ गरुड़ । ४ आकाश ।

तुरतहिं सो सीतहि लैगयऊ * राम हृदय कछु विस्मयभयऊ॥
समुझि हृदय कैकयी कुकरणी * कहाअनुजसनबहुविधिवरणी॥
बहुरि लषण रघुवरहिं प्रबोधा * पाँचवाण छाँडे करिक्रोधा ॥
छंद-भये क्रोध लषण संधानिधनु शर मारि तेहि व्याकुल कियो॥
पुनि उठि निशाचर राखि सीतहिं शल लै धावत भयो ॥
जनु कालदण्ड कराल धावा विकल सब खग मृग भये ॥
धनु तानि श्रीरघुवंशमणिपुनि कोटि तेहिरजसम किये ॥८॥
दोहा-बहुरि एक शर मारेउ, पराधरणि धुनिमाथ ॥
उठा प्रबल पुनि गर्जेउ, चला जहाँ रघुनाथ ॥१०॥
ऐसे कहत निशाचर धावा * अब नहिं बचहु तुमहिंमैंखावा॥
तासु तेज शत मरुत समाना * टूटहि तरु[3] बहु उड़हिं पषाना ॥
जीव जन्तु जहँ लगि रहे जेते * व्याकुल भाजि चले सब तेते ॥
आव प्रबल यहिविधि जनुभूधर * होइहिकाहकहहिंव्याकुलसुर॥
उरग समान जोरि शर साता * आवतही रघुवीर निपाता ॥
तुरतहिं रुचिर रूप तेहि पावा * देखि दुखी निजधाम पठावा ॥
तासु अँस्थि गाडेउ प्रभु धरणी * देवमुदितमन लखिप्रभुकरणी॥
सीता आइ चरण लपटानी * अनुज सहित तब चलेभवानी॥
वहाँ शक्र जहँ मुनिशरभंगा * आये सकल देव निज संगा ॥
गये कहन प्रभु देन शिखावन * दिशि बल भेद बसत जहँ रावन
दोहा-सुरपति संशय तिमिरसम, रघुपति तेज दिनेश ॥
रावण जीवन निशा सम, बीते छुटहिं कलेश ॥ ११ ॥
सुनासीर प्रभु तिहिंक्षण देखा * तेज निधान शुभ्र अतिवेषा ॥
तुरग चारि बल मरुत समाना * रथ रवि सम नहिं जाय बखाना
क्षिति न परश अन्तरहित रहई * श्वेत क्षत्र चामर शिर ढरई ॥
अनुजहिं पियहि कहा समुझाई * सुरपति महिमा गुण प्रभुताई ॥
जिहिं कारण वासव तहँ आये * सो कछु वचन कहन नहिं पाये

१ रेणुका। २ पृथ्वी। ३ वृक्ष। ४ पर्वत। ५ देवताः। ६ सर्प। ७ हाड़। ८ इन्द्र। ९ घोड़

बीचहि सुनि आउब प्रभु केरा * कहि सारथी तुरत रथ फेरा ॥
दूरिहिते कहि प्रभुहि प्रणामा * हर्षि सुरेश गयउ निजधामा ॥

इति क्षेपक ।

प्रभु आये जहँ मुनिशरभंगा * सुंदर अनुज जानकी संगा ॥
दोहा–देखि राम मुखपंकज, मुनिवरलोचनभृंग ॥
सादर पान करत अति, धन्य धन्य शरभंग ॥ १२ ॥
कह मुनि सुन रघुवीर कृपाला * शंकर मानस राज मराला ॥
जात रहेउँ विरंचिके धामा * सुनेउँ श्रवण वन आवत रामा ॥
चितवत पन्थ रहेउँ दिन राती * अब प्रभु देखि जुडानी छाती ॥
नाथ सकल साधन मैं हीना * कीन्ही कृपा जानि जनदीना ॥
सो कछु देव न मोर निहोरा * निज प्रण राखेउ जन मन चोरा ॥
तबलगि रहहु दीन हित लागी * जबलगि मिलौं तुम्हैं तनुत्यागी ॥
योग यज्ञ जप तप व्रत कीन्हा * प्रभु कहँदेइ भक्तिवर लीन्हा ॥
यहिविधि सररचि मुनि शरभंगा * बैठे हृदय छाँडि सब संगा ॥
दोहा–सीता अनुज समेत प्रभु, नीलजलद तनु श्याम ॥
मम हिय बसहु निरंतर, सगुणरूप श्रीराम ॥ १३ ॥
असकहि योग अग्नि तनु जारा * राम कृपा वैकुण्ठ सिधारा ॥
ताते मुनि हरि लीन न भयऊ * प्रथमहिं भेद भक्तिवर लयऊ ॥
ऋषि निकायँ मुनिवरगतिदेखी * सुखी भये निज हृदयविशेषी ॥
स्तुति करहिं सकल मुनिवृन्दा * जयति प्रणतहितकरुणाकन्दा ॥
पुनि रघुनाथ चले वन आगे * मुनिवरवृन्द पुलकिसँगलागे ॥
अस्थि समूह देखि रघुराया * पूछा मुनिन्ह लागिअतिदाया ॥
जानतहहु का पूछहु स्वामी * समदर्शी उर अन्तर्यामी ॥
निशिचरनिकरसकलमुनिखाये * सुनि रघुनाथनयनजलछाये ॥
दोहा–निशिचर हीन करौं महि, भुज उठाय प्रण कीन्ह ॥
सकल मुनिन्हके आश्रमन्ह, जाइ जाइ सुखदीन्ह ॥ १४ ॥

१ भ्रमर । २ नीलमेघ । ३ मुनिसमूह । ४ हाड़ोंकेढेर ।

मुनि अगस्त्यकर शिष्य सुजाना * नाम सुतीक्षण रत भगवाना ॥
मन क्रम वचन रामपद सेवक * स्वप्नेहुँ आन भरोस न देवक ॥
प्रभु आगमन श्रवण सुनिपावा * करत मनोरथ आतुर धावा ॥
हेविधि दीनबन्धु रघुराया * मोसे शठ पर करिहहिं दाया ॥
सहित अनुज मोहिं राम गुसाँई * मिलिहहिं निज सेवककी नाँई॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं * भक्ति न विरति ज्ञान मनमाहीं॥
नहिं सतसंग योग जप यागा *नहिं दृढ चरण कमलअनुरागा॥
एकबानि करुणानिधानकी * सो प्रिय जाके गति न आनकी॥
छंद–सोउपरमप्रियअतिपातकीजिन्हकबहुँप्रभुसुमिरणकर्‌यो ॥
ते आजु मैं निज नयन देखौं पूरि पुलकित हियभर्‌यो ॥
जेपद सरोज अनेक मुनि करिध्यान कबहुँ न आवहीं ॥
तेराम श्रीरघुवंश मणि प्रभु प्रेमते सुख पावहीं ॥ ९ ॥
दोहा–पन्नगारि सुनुप्रेम सम, भजन न दूसर आन ॥
यह विचारि पुनि पुनि मुनि, करत रामगुणगान ॥१५॥
होइहिंसफल आजु मम लोचन * देखिवदन पंकज भवमोचन ॥
निर्भर प्रेम मगन मुनि ज्ञानी * कहि न जाइ सोदशाभवानी ॥
दिशि अरुविदिशिपंथनहिंसूझा * कोमैं कहाँ चलौं नहिं बूझा ॥
कबहुँक फिरि पाछे पुनि जाई * कबहुँक नृत्य करै गुण गाई ॥
अविरल प्रेम भक्ति मुनिपाई * प्रभुदेखहिं तरु ओट लुकाई ॥
अतिशय प्रीति देखि रघुवीरा * प्रकटे हृदय हरण भवभीरा ॥
मुनिमगु माँझ अचल होइबैसा * पुलकि शरीर पनसफलजैसा ॥
तब रघुनाथ निकट चलिआये * देखि दशा निजजनमनभाये॥
सो०–राम सुसहज स्वभाव, सेवक दुख दारिद दमन ॥
मुनिसन कह प्रभु आव, उठ उठ द्विज मम प्राणसम ॥ ७ ॥
मुनिहिं राम बहु भाँति जगावा * जाग नध्यान जनितसुखपावा॥
भूप रूप तब राम दुरावा * हृदय चतुर्भुज रूप दिखावा॥

१ भीति । २ आन कही कर्म धर्म अपरदेव अरु चारिउ पदार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इन सबनको भरोस जिनके लेशहू नहीहै । ३ गरुड । ४ कटहरकाफल । ५ उत्पन्न होनेका सब ।

मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे * बिकलहीनफणिमणिबिनुजैसे॥
आगे देखि राम तनुश्यामा * सीता अनुजसहितसुखधामा॥
परेउ लकुट इव चरणन्ह लागी * प्रेम मगन मुनिवर बडभागी ॥
भुजविशाल गहि लिये उठाई * प्रेम प्रीति राखेउ उरलाई ॥
मुनिहिमिलतअससोहकृपाला * कनकतरुहि जनु भेंटत माला॥
राम वदन विलोकि मुनि ठाढ़ा * मानहुँ चित्र माँझलिखि काढ़ा॥
दोहा--तब मुनि हृदय धीर धरि, गहि पद बारहिं बार ॥
निज आश्रम प्रभु आनि करि, पूजा विविध प्रकार ॥१६॥
कहमुनि प्रभु सुन विनती मोरी * स्तुति करौं कवन विधि तोरी॥
महिमा अमित मोरिमति थोरी * रविसन्मुख खद्योत[1] उजोरी ॥
श्याम तामरस[2] दाम शरीरं * जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं ॥
पाणि चाप शर कटि तूणीरं * नौमि निरन्तर श्रीरघुवीरं ॥
मोह विपिन घनदहन कृशानुं * सन्त सरोरुह कानन भानुं ॥
निशिचर करि बरूथ मृगराजं * त्रातु सदा नो भव खग बाजं ॥
अरुण नयन राजीव सुवेषं * सीता नयन चकोर निशेषं ॥
हर हृदि मानस राज मरालं * नौमि राम उर बाहु विशालं ॥
संशय सर्पग्रसन उरगादं * शमन सकल संताप विशादं ॥
भवभंजन रंजन सुरयूथं * त्रातु सदा नो कृपा वरूथं[3][4] ॥
निर्गुण सगुण विषम समरूपं * ज्ञान गिरा गोतीत अनूपं ॥
अमल अखिल अनवद्यमपारं * नौमि राम भंजन महिभारं ॥
भक्त कल्प पादप आरामं * तर्जन क्रोध लोभ मद कामं ॥
अतिनागर भवसागर सेतुं * त्रातु सदा दिनकर कुलकेतुं ॥
अतुलित भुजप्रताप बलधामं * कलिमल विपुल विभंजन नामं
धर्म्म वर्म्म नर्म्मद[5] गुण ग्रामं * संतत संतनोतु मम कामं ॥
यदपिविरज[6] व्यापक अविनासी*सबके हृदय निरन्तर वासी ॥
तदपिअनुज सिय सहितखरारी* बसहु मनसि मम काननचारी

१ जुगुनू । २ लालकमल । ३ पहिरे । ४ बख्तर । ५ अंतःकरणकी कठोरताके नाश करताहै किन्तु मदसे रहित करदेतेहैं । ६ मायासे रहित ।

जेजानहिं ते जानहु स्वामी * सगुण अगुण उर अन्तर्यामी॥
जो कोशलपति राजिव नयना * करौ सोरामहृदयममअयना॥
सो०—मायावश जिमि जीव, रहहिं सदा सन्तत मगन॥
तिमि लागहु मोहिंपीव, करुणाकर सुन्दर सुखद॥ ८॥
अस अभिमान जाय जनि मोरे * मैं सेवक रघुपति पति मोरे॥
राम भक्ति तजि चह कल्याना * सोनर अधम शृगालसमाना॥
सुनि मुनि वचन राम मन भाये * बहुरि हर्षि मुनिवर उरलाये॥
परम प्रसन्न जानि मुनि मोहीं * जोवर माँगु देउँ मैं तोहीं॥
मुनिकह मैं वर कबहुँ न याचा * समझि न परै झूठ का साँचा॥
तुमहिं नीक लागै रघुराई * सो मोहिं देहु दास सुखदाई॥
अविरल भक्ति विरति विज्ञाना * होहु सकलगुणज्ञाननिधाना॥
प्रभु जो दीन्ह सो वर मैं पावा * अब सो देहु मोहिं जो भावा॥
दोहा—अनुजजानकी सहित प्रभु, चाप बाण धरिराम॥
ममहिय गगन इन्दु इव, बसहु सदा निष्काम॥ १७॥
एवमस्तु कहि रमा निवासा * हर्षि चले कुम्भज ऋषिपासा॥
मुनि प्रणाम करि युगकर जोरी * सुनहु नाथ कछु विनती मोरी॥
बहुत दिवस गुरु दरशन पाये * भये मोहिं यहि आश्रम आये॥
अब प्रभु संग जाउँ गुरु पाहीं * तुमकहँ नाथ निहोरा नाहीं॥
चलेजात मग तव पदकंजा * देखिहौं जो विराध मद गंजा॥
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई * लिये संग विहँसि दोउ भाई॥
पन्थ कहत निज भक्ति अनूपा * मुनि आश्रम पहुँचे सुर भूपा॥
"आश्रम देखि महाशुचि सुंदर * सरित सरोवर कानन भूधर॥
जलचर थलचर जीव जहाँते * वैर न कराहिं प्रीति सबहीते॥
दोहा—तरु बहु विविध विहंग मृग, बोलत विविध प्रकार॥
बसहिं सिद्ध मुनि तप कराहिं, महिमा गुण आगार॥ १८॥
तुरतसुतीक्षण गुरु पहँ गयऊ * करिदण्डवत कहत असभयऊ॥

१ स्थान।

नाथ कोशलाधीश कुमारा * आये मिलन जगतआधारा ॥
राम अनुज समेत वैदेही * निशिदिन देव जपतहहु जेही ॥
सुनत अगस्त्य तुरत उठिधाये * प्रभु बिलोकि लोचन जलछाये॥
मुनि पद कमल परे दोउ भाई * ऋषि अति प्रीति लिये उरलाई॥
सादर कुशल पूछि मुनिज्ञानी * आसनपर बैठारे आनी ॥
पुनि करि बहु प्रकार प्रभुपूजा *मोहिं समभाग्यवन्त नाहिं दूजा॥
जहँ लगि रहे अपर मुनि वृन्दा * हर्षे सब बिलोकि सुखकन्दा ॥
दोहा-मुनि समूह महँ बैठि प्रभु, सन्मुख सबकी ओर ॥
शरद इन्दु जनु चितवत, मानहु निकर चकोर ॥ १९ ॥
पाइ सुथल जल हर्षित मीना * पारस पाइ सुखी जिमि दीना॥
प्रभुहिनिरखि सुखमाइहिभाँती * चातकजिमि पाइजलस्वाती ॥
तब रघुवीर कहा मुनि पाहीं * तुमसन प्रभु दुराव कछु नाहीं ॥
तुमजानहु ज्यहि कारणआयउँ * ताते तात न कहि समुझायउँ॥
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही * ज्यहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही॥
द्विज द्रोही न बचहिं मुनिराई * जिमि पंकजबन हिमऋतुपाई॥
मुनि मुसकाने सुनि प्रभु बानी * पूछहु नाथ मोहिं का जानी ॥
तुम्हरे भजन प्रभाव अधारी * जानौं महिमा कछुकतुम्हारी ॥
सो०-भृकुटी[१] निरखत नाथ, रहत सदा पद कमलतर ॥
जिनडारे निज हाथ, विविध विधाता सिद्ध हर ॥ ९ ॥
अतिकराल सब पर जग जाना * औरौ कहौं सुनिय भगवाना ॥
डूमरितरु[२] विशाल तव माया * फल ब्रह्माड अनेक निकाया ॥
जीव चराचर जन्तु समाना * भीतर बसहिं नजानहिंआना ॥
तेफल भक्षक कठिन कराला * तव भय डरत सदा सोकाला ॥
ते तुम सकल लोकपति साईं * पूँछहु मोहिं मनुजकी नाईं ॥
यह वर माँगो कृपा निकेता *बसहुहृदय सियअनुजसमेता॥
अविरल[३] भक्ति विरति सतसंगा * चरण सरोरुह प्रीति अभंगा ॥

१ भौंह । २ गूलरकावृक्ष । ३ जिसमें एकपल चित्तकी वृत्तिमें विक्षेप नपरै ।

यद्यपि ब्रह्म अखण्ड अनन्ता * अनुभवगम्य भजहिं ज्यहि संता ॥
अस तव रूप बखानौं जानौं * फिरिफिरि सगुण ब्रह्मरतिमानौं ॥
दोहा–जाहि जीव पर तव कृपा, सन्तत रहत हुलास ॥
तिनकी महिमा को कहै, जो अनन्य प्रियदास ॥ २० ॥
सन्तत दासन्ह देहु बड़ाई * ताते मोहिं पूछयहु रघुराई ॥
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ * पावन पंचवटी त्यहि नाऊँ ॥
गोदावरी नदी तहँ बहई * चारिहु युग प्रसिद्ध सो अहई ॥
दण्डकवन पुनीत प्रभु करहू * उग्रशाप मुनिवर कर हरहू ॥
वास करहु तहँ रघुकुल राया * कीजै सकल मुनिन्हपर दाया ॥
चले राम मुनि आयसु पाई * तुरतहि पंचवटी नियराई ॥
दिव्य लता द्रुम प्रभुमन भाये * निरखि राम ते भयउ सुहाये ॥
लषण राम सिय चरण निहारी * कानन अघ गा भा सुखकारी ॥
दोहा–गृध्रराजसों भेंट भइ, बहुविधि प्रीति दृढाय ॥
गोदावरी समीप प्रभु, रहे पर्ण गृह छाय ॥ २१ ॥
जबते राम कीन्ह तहँ वासा * सुखी भये मुनि बीते त्रासा ॥
गिरि¹ वन नदी ताल छवि छाये * दिनदिनप्रतिअतिहोतसुहाये ॥
खग मृग वृन्द अनन्दित रहहीं * मधुपमधुर गुंजत छबिलहहीं ॥

* एक समय पंचवटीमें दुर्भिक्ष पड़ा तब सब मुनि आहारार्थ गौतमऋषिके पास गये तब गौतमने तप बलसे बहुत कालतक ऋषियोंका पालन किया. पश्चात् ऋषियोंने आपसमें विचार किया कि, अब जनस्थानको चलना चाहिये परन्तु गौतमके भयसे जा न सके तब सबोंने छल करके मायाकृत एक गऊ बनाय गौतमऋषिके हाथमें दे उसकी प्रशंसा करने लगे इसमें वोह हाथ से छूट मरगई तब ऋषि गौतमजीको गोहत्या दोष लगाय दण्डकारण्यको चले गये जब पीछे गौतमजीने जाना कि, ऋषियोंने छल किया तब यह शाप दिया कि जिस वनके लोभसे मुझसे छल किया वो वन भ्रष्ट होजाय और राक्षस वासकरैं (दूसरी कथा) राजा दण्डकने अपनी गुरुपुत्रीसे अप्रसन्नतासे भोग किया उसने पिता भृगुमुनिसे कहा तब मुनिने शापदिया कि, इन राजाकी सब दिशा भ्रष्ट होजायँ और धूरि वर्षै तब ऋषिलोग वहाँसे भागकर जहाँ बसे वही स्थान जनस्थान कहलाया और रामचन्द्रने पवित्र किया तब फूल फल लगे हराहुवा ॥

१ वन । २ भय । ३ पर्व्वत ।

सो वन वरणि न सक अहिराजा * जहाँ प्रकट रघुवीर विराजा ॥
एक बार प्रभु सुख आसीना * लक्ष्मण वचन कहे छलहीना ॥
सुर नर मुनि सचराचर साँई * मैं पूँछौं निज प्रभुकी नाँई ॥
मोहिं समुझाइ कहो स्वइ देवा * सब तजि करहुँ चरण रजसेवा ॥
कहहु ज्ञान विराग अरु माया * कहहु सो भक्ति करहु ज्यहि दाया
दोहा–ईश्वर जीवहि भेद प्रभु, सकल कहहु समुझाइ ॥
जाते होइ चरणरति, शोक मोह भ्रम जाइ ॥ २२ ॥
थोरेमहँ सब कहौं बुझाई * सुनहु तात मति मन चितलाई
मैं अरु मोर तोर तैं माया * ज्यहि वश कीन्हें जीवनिकाया
गो गोचर जहँलगि मनजाई * सो सब माया जानहु भाई ॥
तेहिकर भेद सुनहु तुम सोऊ * विद्या अपर अविद्या दोऊ ॥
एक दुष्ट अतिशय दुखरूपा * जावश जीव परे भवकूपा ॥
एक रचै जग गुण वश जाके * प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताके
ज्ञान मान जहँ एको नाहीं * देखत ब्रह्म रूप सब माहीं ॥
कहिय तात सो परम विरागी * तृणसमसिद्धितीनिगुणत्यागी ॥
दोहा–माया ईश न आपु कहँ, जानि कहै सो जीव ॥
बन्ध मोक्षप्रद सर्व पर, माया प्रेरक सीव ॥२३॥
धर्म्म ते विरति योग ते ज्ञाना * ज्ञान मोक्षप्रद वेद वखाना ॥
जाते वेगि द्रवौं मैं भाई * सो मम भक्ति भक्त सुखदाई ॥
सो स्वतंत्र अवलम्ब न आना * जेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना ॥
भक्ति तात अनुपम सुखमूला * मिलहिंजोसन्तहोयँ अनुकूला ॥
भक्ति के साधन कहौं बखानी * सुगमपन्थ मोहिं पावहिं प्रानी ॥
प्रथमहिं विप्र चरण अति प्रीती * निजनिजधर्मनिरत श्रुतिनीती ॥
इहिकर फल मन विषय विरागा * तब मम चरण उपज अनुरागा ॥
श्रवणादिक नव भक्ति दृढाहीं * मम लीला रति अति मनमाहीं ॥
सन्तचरण पंकज अति प्रेमा * मन क्रम वचन भजन दृढनेमा ॥

१ पाँच ज्ञानइन्द्रिय पाँच कर्मइन्द्रिय श्रवण, त्वक्, नयन, रसना, नासिका ये पांच ज्ञानइन्द्रिय, पुनि, कर, गुदा, लिंग, पग, मुख, ये पाँच कर्मइन्द्रिय। २ साधन। ३ दृढ। ४ श्रवण कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, सख्य दास्य, आत्मनिवेदन।

गुरु पितु मातु बन्धु पति देवा * सब मोहिं कहँ जानै दृढ़सेवा॥
मम गुण गावत पुलक शरीरा * गद्गद गिरा नयन बह नीरा ॥
कामादिक मद दंभ न जाके * तात निरंतर वश मैं ताके ॥
दोहा-वचन कर्म मन मोरि गति, भजन करैं निष्काम ॥
तिनके हृदय कमल महँ, करौं सदा विश्राम ॥ २४ ॥
भक्तियोग सुनि अति सुखपावा*लक्ष्मणप्रभुचरणन्ह शिरनावा॥
नाथ सुने गत मम सन्देहा * भयउ ज्ञान उपजेउ नवनेहा ॥
अनुज वचन सुनिप्रभु मनभाये* हर्षि राम निज हृदय लगाये ॥
इहिविधि गये कछुक दिनबीती * कहत विराग ज्ञान गुण नीती॥
शूर्पणखा रावणकी[2] बहिनी *दुष्टहृदयदारुणजिमि अहिनी[1] ॥
पंचवटी सो गइ इक बारा *देखि विकल भइ युगुल कुमारा
भ्राता पिता पुत्र उरगारी * पुरुष मनोहर निरखत नारी ॥
होइ विकल सकमन नहिं रोकी*जिमिरविमणिद्रवरविहिविलोकी
दोहा-अधम निशाचरि कुटिल अति, चली करन उपहास ॥
सुनु खगेश भावी प्रबल, भा चह निशिचरनाश ॥२५॥
रुचिर रूप धरि प्रभु पहँ आई * बोली वचन मधुर मुसुकाई ॥
तुम सम पुरुष न मोसम नारी * यह सँयोग विधिरचा विचारी ॥
मम अनुरूप पुरुष जगनाहीं * देख्यउँ खोजि लोकातिहुँ माहीं॥
ताते अबलगि रहिउँ कुमारी *मन माना कछु तुमहिं निहारी॥
सीतहिं चितइ कही प्रभु बाता *अहै कुमार मोर लघु भ्राता ॥
गइ लक्ष्मण रिपुभगिनीजानी * प्रभु विलोकि बोले मृदुवानी ॥
सुन्दरि सुनु मैं उनकर दासा * पराधीन नहिं तोर सुपासा ॥
प्रभु समर्थ कोशलपुर राजा * जो कछु करैं उन्हैं सब छाजा॥
दोहा-केहरि सम नहिं करिवर, लवा[3] कि बाज समान ॥
प्रभु सेवक इमि जानहु, मानहु वचन प्रमान ॥२६॥
सेवक सुख चहमान भिखारी *व्यसनी धनशुभगति व्यभिचारी

१ सर्पिणी । २ रावणकी बहिन । ३ पक्षी ।

लोभी यश चह चार गुमानी * नभ दुहि दूध चहत ये प्रानी ॥
पुनि फिरि राम निकट सो आई * प्रभु लक्ष्मण पहँ बहुरि पठाई॥
लक्ष्मण कहा तोहिं सो बरई * जो तृण तोरि लाज परिहरई ॥
तब खिसि आनि रामपहँ गई * रूप भयंकर प्रगटत भई ॥
बिथुरे केश रदन बिकराला * भ्रुकुटीकुटिल करणलगि गाला
सीतहि सभय देखि रघुराई * कहा अनुज सन सैन बुझाई॥
अनुज राम मनकी गति जानी *उठ रिसाइ सो सुनहु भवानी॥
दोहा–लक्ष्मण अति लाघव तिहि, नाक कान विनु कीन्ह ॥
ताके कर रावण कहँ, मनहु चुनौती दीन्ह ॥ २७ ॥
नाक कान बिनु भइ बिकरारा * जनु स्रव शैल गेरु के धारा ॥
श्याम घटा देखत नभ केरी * तहँ वासव धनु मनहुँ उयेरी ॥
खर दूषण पहँ गइ बिलखाता * धिक धिक तव पौरुष बलभ्राता
तेइँ पूँछा सब कहेसि बुझाई * यातुधान सुनि सैन बुलाई ॥
चौदहसहस सुभट सँग लीन्हें *जिन्हस्वप्नेहु रण पीठ न दीन्हें ॥
धाये निशिचर निकर वरूथा* जनु सपक्ष कज्जल गिरि यूथा॥
नाना वाहन नानाकारा * नाना आयुध घोर अपारा ॥
शूर्पणखाहिं आगे करि लीनी * अशुभ रूप श्रुति नाशा हीनी ॥
दोहा–निज निज बल सब मिलि कहहिं, एकहि एक सुनाइ ॥
बाजन बाज जुझाउने, हर्ष न हृदय समाइ ॥ २८ ॥
अशकुन अमित होहिं भयकारी * गनहिं न मृत्युविवशसबझारी॥
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं*देखि कटक भट अति हरशाहीं॥
कोउ कह जियत धरहुदोउभाई * धरि मारहु तिय लेहु छुड़ाई ॥
कोउ कह सुनौ सत्य हमकहहीं * कानन फिरहिंवीरकोउअहहीं॥
एकै कहा मष्ट है रहहू * खरके आगे अस जनि कहहू ॥
यहि विधि कहत वचन रणधीरा * आये सकल जहाँ रघुवीरा ॥
धूरि पूरि नभ मण्डल रहाऊ * राम बुलाइ अनुज सन कहाऊ ॥

१ अशाम्र कल्पित गुण करे। २ उत्तम गुण। ३ दांत। ४ झुंडकेझुंड। ५ अस्त्रशस्त्र। ६ कान। ७ नाक। ८ आकाश। ९ सेना।

लै जानकिहि जाहु गिरिकंदर * आवा निशिचरकटक भयंकर॥
रहहु सजग सुनि प्रभु कै बाणी * चले सहित सिय शरधनुपाणी॥
देखि राम रिपुदल चलि आवा * बिहँसिकठिनकोदण्डचढ़ावा॥

छंद—हरिगीतिका।

कोदण्ड कठिन चढाइ प्रभु शिर जटा बाँधत सोहज्यों।
मर्कतशयल पर लसतदामिनि कोटिसंयुग भुजँगज्यों॥
कटिकसि निषंगविशाल भुजगहि चापविशिखसुधारिकै।
चितवत मनहुँ मृगराजप्रभु गजराज घटा निहारिकै॥१०॥

सो०—आय गये बगमेल, धरहु धरहु धाये सुभट॥
यथा विलोकि अकेल, बालरविहि घेरत दनुज॥१०॥

घेरि रहे निशिचर समुदाई * दण्डक खग मृग चले पराई॥
प्रभु विलोकि शर सकहिं नडारी * थकित भये रजनीचर झारी॥
सचिव बोलि बोले खर दूषण * यह कोउ नृप बालकनरभूषण॥
सुर नर नाग असुर मुनि जेते * देखे सुने हते हम केते॥
हम भरि जन्म सुनहु सब भाई * देखी नहिं असि सुन्दरताई॥
यद्यपि भगिनी कीन्ह कुरूपा * वध लायक नहिं पुरुष अनूपा॥
देहिं तुरत निज नारि पठाई * जीवत भवन जाहिं दोउ भाई॥
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु * तासुवचनसुनि आतुर आवहु॥

दोहा—भये कालवश मूढ़ सब, जानहिं नहिं रघुवीर॥
मशक फूंक किमि मेरु उड़, सुनहु गरुड़ मतिधीर॥२९॥

दूतन कहा रामसन जाई * सुनत राम बोले मुसुकाई॥
आजु भयो बड भाग्य हमारा * तुम्हरे प्रभु अस कीन्ह विचारा॥
हम क्षत्रिय मृगयाँ वन करहीं * तुमसे खलमृग खोजत फिरहीं॥
रिपु बलवन्त देखि नहिं डरहीं * एक बार कालहु सन लरहीं॥
यद्यपि मनुज दनुज कुलघालक * मुनिपालक खलशालक बालक॥
जो नहोइ बल घर फिरि जाहू * समर विमुख मैं हतौं न काहू॥

१ धनुष। २ बिजली। ३ नाग। ४ सिंह। ५ दैत्य। ६ पर्वत। ७ शिकार खेलनेको वनमें आये हैं।

रण चढ़ि करिय कपट चतुराई * रिपु पर कृपा परम कदराई ॥
दूतन जाइ तुरत सब कहेऊ * सुनि खर दूषण उरअतिदहेऊ॥
छंद-उरदहेउ कहेउ कि धरहु धावहु विकटभट रजनीचरा।
शर चाप तोमर शक्ति शूल कृपाण परिघ परशुधरा ॥
प्रभु कीन्ह धनुष टंकोर प्रथम कठोर घोर भयो महा ॥
भये बधिर[1] व्याकुल यातुधान न ज्ञान तेहि अवसररहा ११॥
दोहा-सावधान होइ धाये, जानि सबल आराति[2] ॥
लागे वर्षन राम पर, अस्त्र शस्त्र बहु भाँति ॥ ३० ॥
तिनके आयुध तृण सम, करि काटे रघुवीर ॥
तानि शरासन[3] श्रवण[4] लगि, पुनि छाँडे निजतीर ॥ ३१ ॥
छंद-लीलाबारहमात्रा।
तब चले बाण कराल, फुंकरत जनु बहु व्याल ॥
कोपेउ समर श्रीराम, चले विशिख निशित[5] निकाम ॥
अवलोकि खर तर तीर, मुरि चले निशिचर वीर ॥
इक एक कहँ न सँभार, कर तात भ्रात पुकार ॥१२॥
कोउ कहै खर का कीन्ह, जो युद्ध इनसन लीन्ह ॥
ये बाण अतिहि कराल, ग्रसे आइ मानहु काल ॥
भये क्रुद्ध तीनों भाइ, जो भागि रणते जाइ ॥
तेहि वधब हम निज पानि, फिरि मरण मनमहँठानि ॥१३॥
दोहा-उमा एक प्रभु दनुज बहु, पुनि इनके बड़भाग ॥
तरण चहहिं प्रभुशर लगे, बिना योग जप याग ॥३२॥
छंद -आयुध अनेक प्रकार, सन्मुख ते करहिं प्रहार ॥
रिपु परम कोपेउ जानि, प्रभु धनुष शर संधानि ॥
छाँडे विपुल नाराँच[6], लगे कटन विकट पिशाच ॥
उरशीश कर भुज चरन, जहँ तहँ लगे महि परन ॥१४॥
चिक्करत लागत बान, धर परत कुधर समान ॥

१ बहिरे। २ शत्रु। ३ धनुष। ४ कांन। ५ पैने। ६ बाण।

भट कटत तनु शत खंड, पुनि उठत करि पाखंड ॥
नभ उड़त बहु भुज मुण्ड, बिनु मौलि धावत रुण्ड ॥
खग कंक काक शृगाल, कटकटहिं कठिन कराल ॥ १५ ॥
पु०छं०--कटकटहिं जम्बुक भूत प्रेत पिशाच खप्परसाजहीं ।
वैताल वीर कपाल ताल बजाइ योगिनि नाचहीं ॥
रघुवीर बाण प्रचंड खण्डहिं भटनके उर भुज शिरा ।
जहँ तहँ परहिं उठि लरहिं धरुधरु करहिं गिरा भयंकरा ॥१६॥
अंतावली गहि उड़हिं गृध्र पिशाच कर गहि धावहीं ।
संग्राम पुरवासी मनहुँ बहु बाल गुड्डि उड़ावहीं ॥
मारे पछारे उर विदारे विपुलभट घूर्मित परे ।
अवलोकि निजदल विकलभट त्रिशिरादि खर दूषणफिरे १७॥
शर शक्ति तोमर परशु शूल कृपाण एकहि बारहीं ।
करि कोप श्रीरघुवीरपर अगणित निशाचरडारहीं ॥
प्रभु निमिष महँ रिपु शर निवारि प्रचारि डारि सायका ॥
दशदशविशिखउरमांझमारेसकलनिशिचरनायका ॥१८॥
महि परत उठि भट भिरत पुनि पुनि करत माया अतिघनी ॥
सुर डरत चौदहसहस निशिचर एक श्रीरघुकुलमनी ॥
सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायानाथ अतिकौतुक करयो ।
देखत परस्पर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मरयो॥१९॥
दोहा--राम राम कहि तनु तजहिं, पावहिं पद निर्वान ॥
करि उपाय रिपु मारेउ, क्षण महँ कृपानिधान ॥३३॥
हर्षित वर्षहिं सुमन सुर, बाजहिं गगन निशान ॥
स्तुति करि करि सब चले, शोभित विविधविमान ॥३४॥
जब रघुनाथ समर रिपु जीते * सुर नर मुनि सबके दुख बीते॥
तब लक्ष्मण सीतहि लै आये * प्रभुपद परत हर्षि उर लाये ॥
सीता निरखि श्याममृदुगाता * परम प्रेम लोचन न अघाता ॥

१ मुण्ड-गृध्र । २ सियार । ३ मुद्गर । ४ फरसा । ५ त्रिशूल । ६ तलवार । ७ पलमात्रमें । ८ बाण । ९ मोक्ष ।

पंचवटी वसि श्रीरघुनायक * करतचरितसुरमुनिसुखदायक
धुआँ देखि खर दूषण केरा * शूर्पणखा तब रावण प्रेरा ॥
बोली वचन क्रोध करि भारी * देश कोशकी सुरति बिसारी ॥
करसिपान सोवसि दिन राती * सुधि नहिं त्वहिं शिरपरआराती
राजनीति बिनु धन बिनु धर्मा * हरिहि समर्पे बिनुसतकर्मा ॥
विद्या बिनु विवेक उपजाये * श्रम फल पढे किये अरु पाये ॥
सँगते यती कुमंत्रते राजा * मानते ज्ञान ज्ञानते लाजा ॥
प्रीति प्रणय बिनु मदते गुनी * नाशहिं बेगि नीति अस सुनी॥
सो०–रिपु रुज पावक पाप, प्रभु अहि गणिय न छोट करि ॥
अस कहि विविध विलाप, पुनि लागी रोदन करन ॥ ११ ॥
दोहा–सभा माँझ व्याकुल परी, बहु प्रकार करि रोइ ॥
तोहिं जियत दशकन्धर, मोरि कि असगति होइ ॥ ३५ ॥
सुनत सभासद उठि अकुलाई * समुझाई गहि बाँह विठाई ॥
कह लंकेश कहसि किन बाता * क्यइँ तव नासा कान निपाता॥
अवध नृपति दशरथके जाये * पुरुषसिंह बन खेलन आये ॥
समुझि परी मोहिं उनकी करणी*रहित निशाचर करि हैं धरणी॥
जिनकर भुजबल पाइदशानन *अभयभयेविचरहिं मुनिकाननं॥
देखत बालक काल समाना * परम धीर धन्वी गुण नाना ॥
अतुलित बल प्रतापदोउ भ्राता * खलवधरत सुरमुनि सुखदाता
शोभाधाम राम अस नामा * तिन्हके सँगइक नारिललामा॥
सो०–अति सुकुमारि पियारि, पटतर योग न आहिकोउ ॥
मैं मन दीख विचारि, जहँरह तेहि सम आन नहिं ॥ १२ ॥
रूपराशि विधि नारि सँवारी *रतिशत कोटि तासु बलिहारी ॥
अजहुँ जाय देखब तुमजबहीं * होइहौ विकल तासु वशतबहीं॥
जीवनमुक्त लोकवश ताके *दशमुख सुनुसुन्दरिअसजाके॥
तासु अनुज काटीश्रुतिनासा * सुनितवभगिनीकरिपरिहासा॥

१ मदादिक । २ प्रबलशत्रु । ३ नम्रता । ४ शत्रु । ५ रोग । ६ अग्नि । ७ वनमें । ८ लक्ष्मणजीने ।

विना चूक असदशा हमारी * अपराधीकिमिवचाहि सुरारी ॥
खर दूषण सुनि लाग गुहारा * क्षणमहँ सकलकटकउनमारा ॥
खर दूषण त्रिशिराकरघाता * सुनि दशशीश जरा सब गाता ॥
भयो शोचवश नहिं विश्रामा * वीतहिं पल मानहुँ शत यामा ॥
दोहा--शूर्पणखहिं समुझाय करि, बल बोलेसि बहुभाँति ॥
भवन गयउ अति शोचवश, नींदपरी नहिं राति ॥ ३६ ॥
सुर नर असुर नाग जग माहीं * मोरे अनुचर सम कोउ नाहीं ॥
खर दूषण मोसम बलवन्ता * मारिकोसकै विनाभगवन्ता ॥
सुररंजन भंजन महिभारा * जो जगदीश लीन्ह अवतारा ॥
तौ मैं जाइ वैर हठकरिहौं * प्रभु शरते भवसागर तरिहौं ॥
होइ भजन नहिं तामस देहा * मन क्रम वचन मंत्र दृढ एहा ॥
जोनर रूप भूप सुत कोऊ * हरिहौं नारि जीति रण दोऊ ॥
चला अकेल यान चढि ताहाँ * बस मारीच सिंधु तट जाहाँ ॥
रथ अनूप जोरे खरचारी * वेगवन्त इमि जिमि उरगारी ॥
छंद--उरगारि सम अति वेग वर्णत जाय नहिं उपमा कही ॥
शिरछत्र शोभित श्यामघन जनु चमर श्वेत विराजहीं ॥
इहि भाँति नाघत सरित शैल अनेक वापी सोहहीं ॥
वन बाग उपवन वाटिका शुचि नगर मुनिमन मोहहीं ॥ २० ॥
दोहा--बहु तड़ाग शुचि विहँग मृग, बोलत विविध प्रकार ॥
इहिविधि आयउ सिंधुतट, शतयोजन विस्तार ॥ ३७ ॥
सुन्दर जीव विविध विधि जाती * करहिं कुलाहल दिन अरु राती ॥
कूदहिं ते गरजहिं घननाईं * महाबली बल वरणि नजाई ॥
कनक बालु सुन्दर सुखदाई * बैठहिं सकल जन्तु तहँ आई ॥
तिहिंपर दिव्यलता तरु लागे * जिहिं देखत मुनिमन अनुरागे ॥
गुहाविविधविधि रहहिं बनाई * वर्णत शारद मन सकुचाई ॥
चाहिय जहाँ ऋषिनकर वासा * तहाँनिशाचर करहिं निवासा ॥

१ टहलुवे । २ चारसौ कोश । ३ शोर । ४ स्वर्ण । ५ वृक्ष

दशमुख देखि सकल सकुचाने * जे जड़जीव सजीव पराने ॥
इहाँ राम जसि युक्ति बनाई * सुनहु उमा सो कथा सुहाई ॥
दोहा—लक्ष्मण गये बनहिं जब, लेन मूल फल कन्द ॥
जनकसुता सन बोल्यउ, बिहँसि कृपालुसुखकन्द ॥ ३८ ॥
सुनहु प्रिया ब्रतरुचिर सुशीला * मैं कछु करब ललितनरलीला॥
तुम पावक महँ करहु निवासा * जौं लगि करौं निशाचरनाशा ॥
जबहिं राम सब कहेहु बखानी * प्रभुपदधारिहियअनलसमानी॥
निज प्रतिबिम्ब राखि तहँसीता * तैसइ शील स्वरूप विनीता ॥
लक्ष्मणहू यह मर्म न जाना * जो कछु चरित रचाभगवाना ॥
दशमुख गयउ जहाँ मारीचा * नाइमाथ स्वारथरत नीचा ॥
नमनि नीचकी अति दुखदाई * जिमि अंकुशधनु उरगबिलाई॥
भयदायक खलकी प्रियबानी * जिमिअकालकेकुसुमभवानी ॥
दोहा—करि पूजा मारीच तब, सादर पूँछी बात ॥
कवन हेतु मन व्यग्र अति, अकसर आयउ तात ॥ ३९ ॥
दशमुख सकलकथा त्यहिआगे * कही सहित अभिमानअभागे ॥
होउ कपट मृग तुम छलकारी *ज्यहिविधि हरिआनौंनृपनारी॥
त्यइँ पुनि कहा सुनहु दशशीशा * ते नररूप चराचर ईशा ॥
तासों तात बैर नहिं कीजै * मारे मरिय जिआये जीजै ॥
मुनिमख राखन गयउ कुमारा *बिनुफरशररघुपतिमोहिंमारा ॥
शतयोजन आयउँ क्षणमाहीं * तिन्हसन बैर किये भलनाहीं ॥
भइ मति कीट भृङ्गकी नाँईं * जहँ तहँ मैं देखौं दोउ भाईं ॥
जोनर तात तदपि अतिशूरा * तिनहिं बिरोध न आइहिपूरा ॥
दोहा—ज्यइँ ताडका सुबाहु हति, खण्ड्यउ हरकोदण्ड ॥
खर दूषण त्रिशिरा बध्यउ, मनुज कि असबलबण्ड ॥ ४० ॥
रा अस नाम सुनत दशकन्धर * रहतप्राण नाहिं ममउर अन्तर॥
जाहु भवन कुल कुशलविचारी * सुनत जरा दीन्हेसि बहुगारी ॥

१ पुष्प । २ उचाट । ३ रावण । ४ हरिण । ५ जानकीजी । ६ विश्वामित्रकृतयज्ञ । ७ वशिष्ठ ।

गुरु जिमि मूढ़ करसि ममबोधा * कहु जगमोहिंसमानकोयोधा ॥
तब मारीच हृदय अनुमाना * नवहिं विरोधे नहिं कल्याना ॥
शस्त्री मर्मी प्रभु शठ धनी * वैद्य बन्दि कवि भानस गुनी ॥
उभय³ भाँति देखा निज मरणा * तबताकेसि रघुनायक शरणा ॥
उतर देत मोहिं वधिहि अभागे * कस नमरौं रघुपति शरलागे ॥
अस जिय जानि दशानन संगा * चला रामपद प्रेम अभंगा ॥
मन अतिहर्ष जनाव न तेही * आजु देखिहौं परम सनेही ॥

छंद–निज परमप्रीतम देखि लोचन सफल करि सुखपाइहौं ॥
सिय सहित अनुज समेत कृपानिकेत पद मन लाइहौं ॥
निर्वाणदायक क्रोध जाकर भक्ति अवशहिं वश करी ॥
निजपाणि शर संधानि सो मोहिं वधहि सुखसागरहरी ॥ २१॥

दोहा–मम पाछे धर धावत, धरे शरासन बान ॥
फिरि फिरि प्रभुहिं विलोकिहौं, धन्य न मोसम आन ॥ ४१॥

सीता लषण सहित रघुराई * ज्यहिवनवसहिंमुनिन्हसुखदाई॥
तेहिवन निकट दशानन गयऊ * तब मारीच कपट मृग भयऊ ॥
अतिविचित्रकछु वरणिन जाई * कनकदेह मणिरचित बनाई ॥
सीता परम रुचिर मृग देखा * अंग अंग सुमनोहर वेषा ॥
सुनहु देव रघुवीर कृपाला * इहि मृगकर अतिसुन्दरछाला ॥
सत्यसंध प्रभु वध करि एही * आनहु चर्म कहा वैदेही ॥
तब रघुपति जाना सब कारण * उठे हर्षि सुरकाज सँवारण ॥
मृगविलोकि कटिपरिकर बाँधा * करतलचाप रुचिरशरसाँधा ॥
प्रभु लक्ष्मणहिं कहा समुझाई * फिरतविपिन निशिचरसमुदाई
सीता केरि करेहु रखवारी * बुधिविवेकबलसमय विचारी ॥

दोहा–असकहि चले तहाँ प्रभु, जहाँ कपटमृग नीच ॥
देवहर्षविस्मय विवश, चातक वर्षाबीच ॥ ४२ ॥

प्रभुहिं विलोकि चलामृगभाजी * धाये राम शरासन साजी ॥

१ कपटवाली । २ भाट । ३ दोऊविधिते । ४ धनुष । ५ वर्णन ।

निगमनेति शिवध्यान न पावा * मायामृग पाछे सो धावा ॥
कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई * कबहुँक प्रगटै कबहुँ छिपाई ॥
प्रकटत दुरत करत छल भूरी * इहि विधि प्रभुहि गयो लै दूरी ॥
तब ताकि राम कठिन शर मारा * धरणि परयो करि घोर चिकारा ॥
लक्ष्मण कर प्रथमहिं लै नामा * पाछे सुमिरयासि मनमहँ रामा ॥
प्राणतजतप्रकटयासिनिजदेही * सुमिरयासि राम सहित वैदेही ॥
अन्तर प्रेम तासु पहिचानी * मुनिदुर्लभ गति दीन्ह भवानी ॥
दोहा—विपुल सुमन सुर वर्षहिं, गावहिं प्रभु गुणगाथ ॥
निजपद दीन्ह असुर कहँ, दीनबंधु रघुनाथ ॥४३॥
मृगवधि तुरत फिरे रघुवीरा * सोह चाप कर कटि तूणीरा ॥
आरतगिरा सुनी जब सीता * कह लक्ष्मण सन परम सभीता ॥
जाहु वेगि संकट तव भ्राता * लक्ष्मण बिहँसिकह्योसुनमाता ॥
भ्रुकुटि विलास सृष्टि लय होई * स्वप्नेहु संकट परै कि सोई ॥
सौंपि गये मोहिं रघुपति थाती * जो तजि जाउँ तोष नहिं छाती ॥
यह जियजानि सुनहु ममाता * पूँछत कहब कवन मैं बाता ॥
मर्म वचन सीता जब बोली * हरि प्रेरित लक्ष्मण मति डोली ॥
चहुँदिशिरेखा खींच अहीशा * बार बार नाये पद शीशा ॥
वन दिशि देव सौंपि सब काहू * चले जहाँ रावण शशि राहू ॥
चितवहिलषणसियहिफिरिकैसे * तजत वत्स निजमातहि जैसे ॥
दोहा—एक डरत डर रामके, दूजे सीय अकेलि ॥
लषण तेज तनुहत भये, जिमि दाधी दववेलि ॥ ४४ ॥
शून्य भवन दशकन्धर देखा * आवा निकट यतीके वेषा ॥
जाके डर सुर असुर डराहीं * निशि न नींद दिन अन्नन खाहीं
सो दशशीश श्वानकी नाईं * इत उत चितै चला भँडिहाईं ॥
जिमि कुपन्थपग देत खगेशा * रह न तेज बल बुधि लवलेशा ॥
करि अनेक विधि छल चतुराई * माँगेउ भीख दशानन जाई ॥

१ दुःखित वाणी। २ रामचन्द्रकी इच्छा। ३ लक्ष्मणर्मा। ४ संन्यासी। ५ कुत्ता। ६ गरुड़। ७ किंचित् मात्र।

अतिथिंजानिसियकन्दमूलफल * देनलगीरहिंकीन्हबहुरिछल ॥
कह दशमुख सुनु सुन्दरि बानी * भीखिमाँगि न लेउँ सयानी ॥
विधिगति बाम काल कठिनाई * मैन नाँधि सिय बाहेर आई ॥
दोहा—विश्वभरानि अघदलदलनि, करपि सकल सुरकाज ॥
जाना नाहिं दशशीश तेहि, मूढ़ कपटके साज ॥४५॥
नाना विधि कहि कथा सुनाई * राजनीति भय प्रीति दिखाई ॥
कह सीता सुनु यती गुसाईं * बोलेसि वचन दुष्टकी नाईं ॥
तब रावण निजरूप दिखावा * भइ सभीत जब नाम सुनावा ॥
कह सीता धरि धीरज गाढा * आइ गये प्रभु खल रहु ठाढ़ा ॥
जिमि हरिवधुहिं क्षुद्रशशचाहा * भयासिकालवशनिशिचरनाहा ॥
वायसकरचह खगपति समता * सिन्धुसमानहोइकिमिसरिता ॥
खरिकिहोइ सुरधेनु समाना * आहु भवन निज सुनु अज्ञाना ॥
सुनत वचन दशशीश लजाना * मनमहँ चरणवन्दि सुखमाना ॥
दोहा—क्रोधवन्त तब रावण, लीन्हेसि रथ बैठाय ॥
चल्यउ गगन पथ आतुर, भयरथ हाँकि न जाय ॥ ४६ ॥
हा जगदीश देव रघुराया * केहि अपराध बिसारेहु दाया ॥
आरतहरण शरण सुखदायक * हा रघुकुल सरोजदिननायक ॥
हा लक्ष्मण तुम्हार नहिं दोषा * सो फल पायउँ कीन्हेउँ रोषा ॥
कैकेयी मन जो कछु रहयऊ * सो विधिआजु मोहिं दुखदयऊ
पंचवटीके खग मृग जाती * दुखी भये वनचर बहुभाँती ॥
विविध विलाप करति वैदेही * भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥
विपति मोरि को प्रभुहि सुनावा * पुरोडाश चह रासभ खावा ॥
सीताकर विलाप सुनि भारी * भये चराचर जीव दुखारी ॥
दोहा—बहुविधि करत विलाप नभ, लिये जात दशशीश ॥
डरत न खल बर पाइ भल, जो दीन्हों अज ईश ॥ ४७ ॥
गृध्रराज सुनि आरत बानी * रघुकुल तिलकनारि पहिचानी ॥

१ भिक्षुक । २ कौवा । ३ नदी । ४ देवतानके यज्ञका भाग । ५ गदहा ।

अधम निशाचर लीन्हें जाई * जिमि मलेच्छवश कपिला गाई
अहहप्रथम बल ममतनु नाहीं * तदपि जाइ देखौं बल ताहीं ॥
सीता पुत्रि करसि जनि त्रासा * करिहौं यातुधान कर नाशा ॥
धावा क्रोधवंत खग कैसे * छूटै पवि पर्वत पहँ जैसे ॥
रे रे दुष्ट ठाढ किन होही * निर्भय चलेसिन जानेसि मोही
आवत देखि कृतांतसमाना * फिरि दशकंध करत अनुमाना ॥
की मैनाक कि खगपति होई * ममबल जान सहित पति सोई ॥
जाना जरठ जटायू येहा * ममकर तीरथ छाँडिहि देहा ॥
दोहा—मम भुजबल नहि जानत, आवत तपिन्ह सहाइ ॥
समरचढै तौ इहिहलौं, जियत न निज थल जाइ ॥ ४८ ॥
सुनत गृध्र क्रोधातुर धावा * कह सुन रावण मोर शिखावा ॥
तजि जानकी कुशल गृह जाहू * नाहित सत्य सुमहु बहुबाहू ॥
रामरोष पावक अतिघोरा * होइहि सकल शलभकुलतोरा ॥
उतर न देत दशानन योधा * तबहिं गृध्र धावा करि क्रोधा ॥
धरि कचविरथकीन्हमहिगिरा * सीतहिं राखि गृध्र पुनि फिरा ॥
दशमुख उठि कृतशरसन्धाना * गृध्र आइ काटचउ धनु बाना ॥
चोंचन्ह मारि बिदारेसि तेही * दण्ड एक भइ मूर्च्छा तेही ॥
दोहा— जिहिं रावण निजवश किये, मुनि गण सिद्ध सुरेश ॥
तेइँ रावण सन समर अति, धीर वीर गृध्रेश ॥४९॥
स्वस्थ भये सो पुनि उठिधावा * मारे गृध्र न सन्मुख आवा ॥
कीन्हेसि बहु जब युद्ध खगेशा * थकित भयातब जरठ गिधेशा ॥
तबसक्रोधनिशिचरखिसियाना * काढेसि परम कराल कृपाना ॥
काटेसि पंख परा खग धरणी * सुमिरि रामकी अद्भुतकरणी ॥
मनमहँ गृध्र परम सुखमाना * रामकाज मम लाग्यो प्राना ॥
सीतहि यान चढाय बहोरी * चला उताउल त्रास न थोरी ॥
करातिविलाप जातिनभसीता * व्याध विवशजनुमृगीसभीता ॥

१ राक्षस । २ वज्र । ३ कालके समान । ४ वृद्ध । ५ भरम- पतंग । ६ बाल ।

गिरिपर बैठे कपिन्ह निहारी * कहि हरि नाम दीन पट डारी॥
इहि विधि सीतहि सो लैगयऊ * वन अशोक महँ राखत भयऊ॥
दोहा—हारि परा खल बहुत बिधि, भय अरु प्रीति दिखाइ॥
तब अशोक पादप तरे, राखेसि यतन कराइ॥ ५०॥
"वहाँविधाता मन अनुमाना * सुरपति बोलि मंत्र अस ठाना"॥
तात जनकतनया पहँ जाहू * सुधीन पानजिहि निशिचरनाहू
असकहिविधिसुन्दरहविआनी * सौंपि बहुरि बोले मृदुबानी॥
इह भक्षण कृत क्षुधा न प्यासा * वर्ष सहस्रदश संशय नाशा॥
सो प्रसाद लै आयसु पाई * चले हृदय सुमिरत रघुराई॥
कछु वासव माया निज गोई * रक्षक रहे गये तहँ सोई॥
तदपि डरत सीता पहँ आयो * करिप्रणाम निज नाम सुनायो॥
निश्चय जानि सुरेश सुजाना * पिता जनक दशरथ सममाना॥
करि परितोष दूरकर शोका * हव्य खवाय गये निज लोका॥
दोहा—जेहि विधि कपट कुरंग सँग, धाय चले श्रीराम॥
सो छबि सीता राखिउर, रटति रहति हरि नाम॥५१॥
रघुपति अनुजहि आवत देखी * मनमहँ चिंता कीन्ह बिशेषी॥
जनकसुता परिहरेउ अकेली * आयहु तात वचन मम पेली॥
निशिचरनिकरफिरहिंवनमाहीं * मम मन सीता आश्रमनाहीं॥
अहहतात भल कीन्हेउ नाहीं * सियविहीन मम जीवन काहीं॥
इहितेकवन विपति बड़ भाई * खोयहु सीय काननहिं आई॥
गहि पदकमलअनुजकरजोरी * कहेउ नाथ कछु मोरिन खोरी॥
अनुज समेत गयउ प्रभु तहँवां * गोदावरि तट आश्रम जहँवां॥
आश्रम देखि जानकी हीना * भये विकल जस प्राकृत दीना॥
दोहा—कानन रहेउ तडाग इव, चक चकई सिय राम॥
रावण निशि बिछुरन किये, दुख बीते चहुँ याम॥५२॥
पर दुख हरण शोक दुखनाहीं * भा विषाद तिनके मन माहीं॥

१ इन्द्र। २ पायस। ३ भूँख। ४ आज्ञा। ५ इन्द्र। ६ समाधान। ७ कपटमृग मारीच। ८ भाई लक्ष्मणजी।

हागुणखानि जानकी सीता * रूप शील व्रत नेम पुनीता ॥
लक्ष्मण समुझाये बहुभाँती * पूँछत चले लता तरु पाँती ॥
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी * तुम देखी सीता मृगनैनी ॥
खंजन शुक कपोत मृगमीना * मधुप निकर कोकिला प्रवीना ॥
कुन्दकली दाडिम दामिनी * कमलशरदशशि अहिभामिनी ॥
वरुणपाश मनोज धनुहंसा * गज केहरि नित सुनत प्रशंसा ॥
श्रीफल कमल कदलि हर्षाहीं * नेकु नशंक सकुच मनमाहीं ॥
सुन जानकी तोहिं बिनु आजू * हर्षे सकल पाइ जनुराजू ॥
किमिसहिजातअनखतोहिंपाहीं * प्रिया वेगि प्रकटत कसनाहीं ॥
दोहा-मणि विहीन फणि दीन जिमि, मीन[1] हीन जिमि वारि ॥
तिमि व्याकुल भये लषण तहँ, रघुवरदशा निहारि ॥५३॥
धरि उरधीर बुझावहिं रामहिं * तजहिंनशोकअधिकसुखधामहिं
इहिविधिविलपतखोजतस्वामी * मनो महा विरही अतिकामी ॥
पूरण काम राम सुखराशी * मनुज चरितकर अज[3]अविनाशी
सरवर अमित नदी गिरि खोहा * बहु विधि राम लषण तहँ जोहा ॥
शोच हृदय कछुकहिनाहिं आवा * टूट धनुष शर आगे पावा ॥
कहुँ कहुँ शोणित[4] देखिय कैसे * श्रावण जल भा ढाबर जैसे ॥
कहत राम लक्ष्मणहि बुझाई * काहू कीन्ह युद्ध इहिं ठाईं ॥
आगे परा गृध्रपति देखा * सुमिरत रामचरणकी रेखा ॥
दोहा-करसरोज शिर परसेउ, कृपासिन्धु रघुवीर ॥
निरखि राम छवि धाम मुख, विगत भई सबपीर ॥ ५४ ॥
तब कह गृध्र वचन धरि धीरा * सुनहु राम भंजन भव भीरा ॥
नाथ दशानन यहगति कीन्ही * तेहिखल जनकसुता हरिलीन्ही
लै [illegible] गयउ गुसाँई * बिलपति अति कुररीकी न[illegible]
दरशलागि प्रभु राखेउँ प्राना * चलन चहत अब कृपानिध[illegible]
रामकहा तनु राख[illegible]

१ मछली । २ [illegible]नी । ३ अजन्मा । ४ रक्त ।

जाकर नाम मरतमुखआवा * अधमौ मुक्त होइ श्रुतिगावा ॥
सो मम लोचन गोचर आगे * राखहुँ देह नाथ केहिलागे ॥
जलभरि नयन कहा रघुराई * तात कर्म्म निजते गतिपाई ॥
परहित बस जिनके मनमाहीं * तिन्हकहँ जगदुर्लभ कछुनाहीं॥
तनुताजि तात जाहु मम धामा * देउँ कहा तुम पूरण कामा ॥
दोहा–सीताहरण तात जनि, कहहु पितासन जाइ ॥
जो मैं राम तौ कुल सहित, कहहि दशानन आइ ॥५५॥
गृध्र देह तजि धरि हरि रूपा * भूषण बहु पट पीत अनूपा ॥
श्यामगात विशाल भुजचारी *अस्तुति करत नयन भरिवारी॥
छंद–जय राम रूप अनूप निर्गुण सगुण गुण प्रेरक सही ॥
दशशीश बाहु प्रचण्डखण्ड चण्ड शर मण्डन मही ॥
पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं ।
नितनौमिराम कृपालु बाहु विशाल भवभय मोचनं ॥२२॥
बलमप्रमेयमनादिमजमव्यंक्तमेकमगोचरं ॥
गोविन्द गोपरद्वन्द्वहर विज्ञानघन धरणीधरं ।
जय राम मंत्र जपन्त सन्त अनन्त जन मन रंजनं ॥
नितनौमि राम अकाम प्रिय कामादि खलदलगंजनं॥२३॥
जेहि श्रुति निरंतर ब्रह्मव्यापक विरंज अज कहि गावहीं ॥
करिज्ञान ध्यान विराग योग अनेक मुनि जेहि पावहीं ॥
सोप्रकट करुणाकन्द शोभावृन्द अग जग मोहई ॥
ममहृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई ॥ २४ ॥
जोअगम सुगम स्वभाव निर्मल असम सम शीतल सदा॥

छन्दार्थ–हे राम ! आपके अनूपरूपकी जयहो यह रूप कैसा है कि निर्गुण जो व्यापक ब्रह्म है और सगुण मत्स्यादि अवतार और सत, रज, तम गुण अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन सबका प्रेरक है और आप धनुष बाणको पृथ्वीके भूषित करनेको और दूषणरूपी रावणके निपातके हेतु धारण किया है. आपका शरीर श्याम घनके समान है और कमलके तुल्य बड़े बड़े नेत्र हैं हे राम कृपालु संसारके भय छुड़ानेवाली विशालबाहुको मैं प्रणाम करताहूं ॥ २२ ॥

१ मन बुद्धिवाणीते परेहो । २ विरज कही षडविकार रहित जन्म, वृद्धि, विवर्ण, क्षीण, जरा, मरण ।

पश्यन्तियं योगी यतनकरि करत मन गो वश यदा ॥
सो राम रमानिवास संतत दासवश त्रिभुवन धनी ।
मम उर बसहु सो शमन संसृति जासु कीरतिपावनी ॥२५॥
दोहा--अविरल भक्ति माँगिवर, गृध्र गयउ हरिधाम ॥
तेहिकी क्रिया यथोचित, निजकर कीन्हीं राम ॥ ५६ ॥
कोमल चित अति दीनदयाला * कारण विन रघुनाथकृपाला ॥
गृध्र अधम खग आमिष भोगी *गति तेहिदीन्ह जोयाचतयोगी॥
सुनहु उमा ते लोग अभागी * हरितजि होहिंविषयअनुरागी ॥
पुनि सीतहि खोजत दोउभाई * चले विलोकत वन बहुताई ॥
संकुल लता विटप घनकानन * बहु खग मृग तहँ गजपंचानन॥
आवत पन्थ कबन्ध* निपाता * तेइँ सब कही शापकी बाता ॥
दुर्वासा मोहिं दीन्हों शापा * प्रभुपद देखि मिटा सो पापा ॥
सुन गंधर्व कहौं मैं तोहीं * मोहिं न सुहाइ ब्रह्मकुलद्रोही ॥

हे राम ! जो आपका बल अप्रमेय है और आप अनादि जन्मसे रहित और अप्रगटशक्ति और अद्वैत अगोचर अर्थात इंद्रियोंसे परे और गोविंद इंद्रियोंका भोक्ता और इंद्रियोंके परे द्वन्द्व मोहमेरा तेरा आदिके हरनेवाले विज्ञानके वरसनेवाले और पृथ्वीके धारण करनेवालेहो जो कोई अनंत संत राममंत्रको जपते हैं उनके मनको रंजन करतेहो हे कामादिखलदलगंजन अकाम प्रिय राम ! मैं आपको नित्य प्रणाम करताहूँ ॥ २३ ॥ जिनको वेद निरंतर रोगरहित जन्मरहित ब्रह्म कहिकै गावतेहैं और जिनको अनेक मुनि ज्ञान ध्यान विराग योगकरके ध्यान करतेहैं सोई करुणाजलके वरसनेवाले प्रगट होकै अपने शोभाके समूहोंसे जड़ चैतन्योंके मोहनेवाले मेरे हृदयकमलमें अनेक कामकी बहु छवियुक्त भृंग शोभायमान हो ॥२४॥ जो अगम और सुगम और स्वभाव करिकै निर्मल विषम सदा शीतल हो जिनको योगीजन मनके वशकरनेवाले अनेक यत्न कर हर्षसे देखते हैं। हे राम ! सोई रमानिवास त्रिभुवनधनी जो आप अपने दासके निरंतर वशरहते हो तुम्हारी कीर्ति जरा मरणकी नाश करनेवाली है मेरे हृदयमें बसो ॥ २५ ॥

*कवन्ध पूर्व जन्मका गन्धर्व था एक समय उसके गानेसे दुर्वासा ऋषि नहीं रीझे तो यह उनपर हँसा तब दुर्वासाऋषिने शाप दिया कि,राक्षस हो सो यह राक्षस होय उपद्रवकरने लगा तब इंद्रने वज्र मारा कि, शिर पेटमें घुसगया तबसे उसका नाम कवंधपड़ा और उसकी योजनभरकी बाहु थीं जो बाहुके बीचमें आताथा उसे खींचकर खालेता था सो जब रामचंद्रको खैचने लगा तो इन्होंने खड्गसे भुजा काट डालीं ॥

१ देखते हैं । २ जन्ममरण । ३ मास । ४ परिपूर्ण है लता जिस वनमें ।

दोहा-मन क्रम वचन कपट तजि, जो कर भूसुर[1] सेव ॥
मोहिं समेत विरंचि[2] शिव, वश ताके सब देव ॥ ५७ ॥

शपत ताड़त परुष कहंता * विप्र पूज्य अस गावहिं संता ॥
पूजिय विप्र शील गुण हीना * नहीं शूद्र गुण ज्ञान प्रवीना ॥
दुष्टौ धेनु[3] दुही सुन भाई * साधु रासभी[4] दुही न जाई ॥
काहे निज धर्म ताहि समुझावा * निजपद प्रीति देखि मनभावा ॥
रघुपति चरण कमल शिरनाई * गयउ गगन[5] आपनि गति पाई ॥
ताहि देइ गति राम उदारा * शबरीके आश्रम पगुधारा ॥
शबरी देखि राम गृह आये * मुनिके वचनसमुझिजियभाये ॥
सरसिज लोचन बाहु विशाला * जटा मुकुट शिर उरवनमाला ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई * शबरी परी चरण लपटाई ॥
प्रेम मगन मुखवचन न आवा * पुनि पुनि पदसरोजशिरनावा ॥
सादर जल लै चरण पखारे * पुनि सुन्दर आसन बैठारे ॥

दोहा-कन्द मूल फल सरस[6] अति, दिये राम कहँ आनि ॥
प्रेम सहित प्रभु खायउ, बारहिं बार बखानि ॥ ५८ ॥

पाणि जोरि आगे भइ ठाढी * प्रभुहिविलोकिप्रीतिअतिबाढ़ी ॥
केहिविधि स्तुति करहुँ तुम्हारी * अधमजातिमैं जड़मति भारी ॥
अधमतेअधम अधमअतिनारी * तिनमहँ मैं मतिमन्द गँवारी ॥
कह रघुपतिसुनभामिनि बाता * मानौं एक भक्ति कर नाता ॥
जाति पाँति कुलधर्म बड़ाई * धन बल परिजन गुण चतुराई ॥
भक्तिहीन नर सोहैं कैसे * विनु जल वारिद[7] देखिय जैसे ॥
नवधा भक्ति कहौं तोहिं पाहीं * सावधान सुनु धरु मनमाहीं ॥
प्रथम भक्ति सन्तनकरसंगा * दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ॥

दोहा-गुरुपद पंकज सेवा, तीसरि भक्ति अमान ॥
चौथि भक्ति मम गुणगण, करै कपट तजि गान ॥ ५९ ॥

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा * पंचम भजन सो वेद प्रकासा ॥

१ ब्राह्मण । २ ब्रह्मा । ३ गौ । ४ गधी । ५ आकाश । ६ अतिश्रेष्ठ । ७ मेघ

षट दम शील विरत बहु कर्मा * निरत निरन्तर सज्जन धर्मा ॥
सतईं सब म्वहिं मय जग देखै * मोतें सन्त अधिक करि लेखै ॥
अठईं यथा लाभ संतोषा * स्वप्नेहु नहिं देखै परदोषा ॥
नवम सरल सबसों छलहीना * मम भरोस हिय हर्ष न दीना ॥
नवमहँ एको जिन्हके होई * नारि पुरुष सचराचर कोई ॥
सो अतिशय प्रियभामिनिमोरे * सकल प्रकार भक्ति दृढतोरे ॥
योगि वृन्द दुर्लभ गति जोई * तोकहँ आज सुलभ भइ सोई ॥
मम दर्शन फल परम अनूपा * जीव पाव निज सहज स्वरूपा
दोहा—सब प्रकार तव भागवड़, मम चरणन्ह अनुराग ॥
तव महिमा जेहि उर बसहि, तासु परम बड़भाग ॥६०॥
सुनि शुभ वचन हर्ष कहँ पाई * पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई ॥
जनकसुताकैसुधिम्वहिंभामिनि * जानहुतोकहुकरिवरगामिनि ॥
पम्पासरहि जाहु रघुराई * मुनिवर विपुल रहे जहँ छाई ॥
ऋषिमतंग महिमा गुणभारी * जीव चराचर रहत सुखारी ॥
वैर न कर काहूसन कोई * जासन वैर प्रीति करु सोई ॥
शिखर सुहावन कानन फूले * खग मृग जीव जंतु अनुकूले ॥
करहु सफल श्रम सबकर जाई * तहँ होई सुग्रीव मिताई ॥
सो सब कहहि देव रघुवीरा * जानतहू पूँछत मतिधीरा ॥
बार बार प्रभुपद शिरनाई * प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥
छंद—कहिकथा सकल विलोकि हरिमुख हृदय पदपंकज धरे।
तजि योग पावकदेह हरिपद लीन भइ जहँ नहिं फिरे ॥
नर विविध कर्म अधर्म बहु मत शोकप्रद सब त्यागहू ।
विश्वास करि कह दास तुलसी रामपद अनुरागहू ॥ २६ ॥
दोहा—जातिहीन अघ जन्ममय मुक्तकीन्ह असनारि ॥
महामन्दमन सुख चहसि, ऐसे प्रभुहि विसारि ॥ ६१ ॥
चले राम त्यागे वन सोऊ * अतुलित बल नरकेहरि दोऊ ॥

१ अत्यंत । २ मार्ग ।

विरही इव प्रभु करत विषादा * कहत कथा अनेक सम्वादा ॥
लक्ष्मण देखहु कानन शोभा * देखत केहिकर मन नहिं क्षोभा ॥
नारिसहित सब खग मृग वृंदा * मानहु मोरि करतइहिं निन्दा ॥
हमहिं देखि मृग निकर पराहीं * मृगी कहहिं तुमकहँ भयनाहीं ॥
तुम आनन्द करहु मृगजाये * कंचन मृग खोजनये आये ॥
संग लाइ करिणी करि लेहीं * मानहुँ मोहिं शिखावन देहीं ॥
शास्त्रसुचिन्तित पुनिपुनिदेखिय * भूप सुसेवित वशनहिं लेखिय ॥
राखिय नारि यदपि उर माहीं * युवती शास्त्र नृपति वश नाहीं ॥
देखहु तात वसन्त सुहावा * प्रियाहीन म्वहिं भय उपजावा ॥
दोहा-विरह विकल बलहीन मोहिं, जानेसि निपट अकेल ॥
सहित विपिन मधुकर खगन्ह, मदन कीन्ह बगमेल ॥ ६२ ॥
देखि गयउ भ्राता सहित, तासु दूत सुनि बात ॥
डेरादीन्हेउ मनहुँ तिन्ह, कटक हटकि नहिं जात ॥ ६३ ॥
विटप विशाल लता अरुझानी * विविध वितान दिये जनु तानी ॥
कदलि ताल वर ध्वजा पताका * देखि न मोह धीर मन जाका ॥
विविध भाँति फूले तरु नाना * जनु बानैत बने बहु बाना ॥
कहुँ कहुँ सुन्दर विटप सुहाये * जनुभट विलग विलगहैछाये ॥
कूजत पिक मानहु गजमाते * ढेक महोख ऊंट विसराते ॥
मोर चकोर कीर वर बाजी * पारावत मराल सब ताजी ॥
तीतर लावा पदचर यूथा * वर्णि न जाइ मनोज वरूथा ॥
रथ गिरि शिला दुन्दुभी झरना * चातक बन्दी गुण गण बरना ॥
मधुकरमुखर भेरि सहनाई * त्रिविध बयारि बसीठी आई ॥
चतुरंगिनी सेन सब लीन्हें * विचरतसबहिं चुनौती दीन्हें ॥
लक्ष्मण देखहु काम अनीका * रहहिं धीर तिन्हके जगलीका ॥
यहिके एक परम बल नारी * त्यहिते उबर सुभट सो भारी ॥
दोहा-तात तीनि अति प्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ ॥

१ मृगोंके झुंडके झुंड भागते हैं । २ हथिनी । ३ स्त्री । ४ छत्र । ५

मुनि विज्ञान धाम मन, करहिं निमिषमहँ क्षोभ ॥ ६४ ॥
लोभके इच्छा दम्भ बल, कामके केवल नारि ॥
क्रोधके पुरुष वचन बल, मुनिवर कहहिं विचारि ॥ ६५ ॥
गुणातीत सचराचर स्वामी * राम उमा सब अन्तर्यामी ॥
कामिनकी दीनता दिखाई * धीरनके मन विरति दृढाई ॥
क्रोध मनोज लोभ मद माया * छूटहि सकल रामकी दाया ॥
सोनर इंद्रजाल नहिं भूला * जापर होइ सो नट अनुकूला ॥
उमा कहूं मैं अनुभव अपना * हरिको भजन सत्यजगस्वपना ॥
पुनि प्रभु गये सरोवर तीरा * पम्पानाम सुभग गम्भीरा ॥
सन्त हृदय जस निर्मल बारी * बाँधे घाट मनोहर चारी ॥
जहँ तहँ पियहिं विविधमृगनीरा * जिमि उदार गृह याचक भीरा ॥
दोहा–पुरइनि सघन ओट जल, वेगि न पाइय मर्म ॥
माया छन्न न देखिये, जैसे निर्गुण ब्रह्म ॥ ६६ ॥
सुखी मीन सब एकरस, अति अगाध जल माहिं ॥
यथा धर्म शीलान्हके, दिन सुख संयुत जाहिं ॥ ६७ ॥
विकसे सरसिज नानारंगा * मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा ॥
बोलत जल कुक्कुट कल हंसा * प्रभु विलोकि जनुकरतप्रशंसा ॥
चक्रवाक बक खग समुदाई * देखत बनै वरणि नहिं जाई ॥
सुन्दर खगगण गिरा सुहाई * जात पथिक जनुलेत बुलाई ॥
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाये * चहुँदिशिकानन विटपसुहाये ॥
चम्पक बकुल कदम्ब तमाला * पाटल पनस पलाश रसाला ॥
नव पल्लव कुसुमित तरुनाना * चंचरीकपटली कर गाना ॥
शीतल मन्द सुगंध सुहाऊ * सन्तत बहै मनोहर बाऊ ॥
कुहूकुहू कोकिल ध्वनि करहीं * सुनि रवसरस ध्यानमुनिटरहीं ॥
दोहा–फूले फले विटप सब, रहे भूमि नियराइ ॥
पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसम्पति पाइ ॥ ६८ ॥

१ वैराग्य । २ कामदेव । ३ सिद्धान्त । ४ नानारंगके कमल फूलेहैं । ५ मौलसिरी । ६ ढाक । ७ आँब । ८ शब्द

देखिराम अतिरुचिर तलावा * मज्जन कीन्ह परमसुख पावा ॥
देखि एक सुन्दर तरुछाया * बैठे अनुज सहितरघुराया ॥
तहँ पुनि सकल देव मुनि आये * स्तुति करि निजधाम सिधाये॥
बैठे परम प्रसन्न कृपाला * कहत अनुजसन कथा रसाला॥
विरहवन्त भगवंतहिं देखी * नारद मन भा शोच विशेषी ॥
मोर शाप करि अंगीकारा * सहत राम नाना दुख भारा ॥
ऐसे प्रभुहि विलोकहुँ जाई * पुनि न बनै अस अवसर आई॥
यह विचारि नारदकर बीना * गये जहाँ प्रभु सुख आसीना ॥
गावत रामचरित मृदुवानी * प्रेम सहित बहु भाँति बखानी॥
करत दण्डवत लिये उठाई * राखे बहुत बार उरलाई ॥
स्वागत पूँछि निकट बैठारे * लक्ष्मण सादर चरण पखारे ॥
दोहा–नानाविधि विनती करी, प्रभु प्रसन्न जिय जानि ॥
नारद बोले वचन तब, जोरि सरोरुह पानि ॥ ६९ ॥
सुनहु उदार परम रघुनायक * सुंदर अगम सुगम वरदायक ॥
देहु एक वर माँगौ स्वामी * यद्यपि जानहु अन्तर्यामी ॥
जानहु मुनि तुम मोर स्वभाऊ * जनसन कबहुँकि करौं दुराऊ ॥
कवनवस्तु असप्रियमोहिंलागी * जो मुनिवर नसकहु तुममाँगी॥
जनकहँ कछु अदेय नहिं मोरे * अस विश्वासतजहु जनिभोरे ॥
तब नारद बोले हरषाई * अस वर माँगौं करौं ढिठाई ॥
यद्यपि प्रभुके नाम अनेका * श्रुतिकहअधिक एकते एका ॥
राम सकल नामनते अधिका * होउनाथ अघखगगणवधिका ॥
दोहा–राका[2]रजनी भक्ति तव, राम नाम सोइ सोम[3] ॥
अपर नाम उडुगण[4] विमल, वसहु भक्ति उर व्योम[5] ॥ ७० ॥
एवमस्तु मुनि सन कहउ, कृपासिन्धु रघुनाथ ॥
तब नारद मन हर्ष अति, प्रभु पद नायउ माथ ॥ ७१ ॥
अति प्रसन्न रघुनाथहिं जानी * पुनि नारद बोले मृदुवानी ॥

१ सुंदर । २ पूर्णमासीकी रात्रि । ३ चन्द्र । ४ नक्षत्र । ५ आकाश ।

राम जबहिं प्रेर्यहु निजमाया * मोहहु मोहिं सुनहु रघुराया ॥
तब विवाह चाहौं मैं कीन्हा * प्रभुकेहिकारण करै न दीन्हा ॥
सुनु मुनि तोहिं कहौंसहरोसा * भजहिंमोहिंतजिसकलभरोसा॥
करौं सदा तिन्हकी रखवारी * जिमि बालकहि राखमहतारी ॥
गहि शिशुवत्सअनलअहिधाई * तहँ राखै जननी अरगाई ॥
प्रौढ भये त्यहि सुतपर माता * प्रीति करै नाहिं पाछिल बाता ॥
मोरे प्रौढ तनय सम ज्ञानी * बालक सुतसम दास अमानी॥
जिनहिं मोरबल निजबलताही * दुहुँ कहँ काम क्रोध रिपुआही॥
यह विचारिपंडितमोहिंभजहीं * पायहु ज्ञान भक्ति नहिं तजहीं॥
दोहा–काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोहकी धार ॥
तिन्हमहँ अति दारुण दुखद, मायारूपी नार ॥७२॥
सुनु मुनि कह पुराणश्रुति संता * मोह विपिन कहँ नारि वसंता ॥
जप तप नेम जलाशय झारी * होइ ग्रीषम शोषै सबनारी ॥
काम क्रोध मद मत्सर भेका * इनहिं हर्ष प्रद वर्षा एका ॥
दुर्वासना कुमुद समदायी * तिनकहँ शरद सदा दुखदाई ॥
धर्म सकल सरसीरुहवृन्दा * हौहिम तिन्हहिं देय दुखमन्दा॥
पुनि ममता जवास बहुताई * पलुहै नारि शिशिरऋतु पाई ॥
पाप उलूक निकर सुखकारी * नारि निबिड रजनी अँधियारी
बुधि बल शील सत्य सबमीना * वन्शीसम त्रिय कहहिंप्रवीना॥
दोहा–अवगुण मूल शूलप्रद, प्रमदा वस दुखखानि ॥
ताते कीन्ह निवारण, मुनि मैं यह जिय जानि ॥ ७३ ॥
सुनि रघुपतिके वचन सुहाये *मुनितनुपुलकिनयनभरिआये ॥
कहहु कवन प्रभुकी असरीती * सेवक पर ममता अतिप्रीती ॥
जे नभजहिं असप्रभुभ्रमत्यागी * ज्ञानरंक मतिमन्द अभागी ॥
पुनि सादर बोले मुनि नारद * सुनहु राम विज्ञान विशारद ॥
सन्तनक लक्षण रघुवीरा * कहहु राम भंजन भवभीरा ॥

१ सत्यसंकल्प । २ वृद्ध । ३

सुनु मुनि सन्तनके गुणकहऊँ * ज्यहि ते मैं उनके वश रहऊँ ॥
षट् विकारतजि अनघअकामा * सकलअकिंचनशुचिसुखधामा
अमित बोध परमारथ भोगी * सत्यसार कवि कोविद योगी॥
सावधान मद मान विहीना * धीर धर्म गति परम प्रवीना ॥
दोहा–गुणागार संसार दुख, रहित विगत सन्देह ॥
तजि मम चरण सरोज प्रिय, तिन्हकहँ देह न गेह ॥७४॥
निजगुणसुनतश्रवणसकुचाहीं * परगुण सुनत अधि कहर्षाहीं ॥
सम शीतल नहिं त्यागहिं नीती * सरल स्वभावसबहिंसनप्रीती॥
जप तप व्रत दम संयम नेमा * गुरु गोविंद विप्र पद प्रेमा ॥
श्रद्धा क्षमा मइत्री दाया * मुदिता मम पद प्रीति अमाया॥
विरति विवेक विनय विज्ञाना * बोध यथारथ वेद पुराना ॥
दम्भ मान मद करहिं न काऊ * भूलि न देहिं कुमारगपाऊ ॥
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला * हेतुरहित परहित रतशीला ॥
सुनु मुनि साधुनके गुण जेते * कहि न सकहिंशारदश्रुतितेते॥
छंद–कहिसक न शारद शेष नारद सुनत पदपंकज गहे ॥
अस दीनबन्धु कृपालु अपने भक्त गुण निज मुख कहे ॥
शिरनाइ बारहिं बार चरणन ब्रह्म पुर नारद गये ॥
ते धन्य तुलसी दास आश बिहाइ जे हरि रँगरये ॥ २७ ॥
दोहा–रावणारि यश पावन, गावहिं सुनहिं जे लोग ॥
रामभक्ति दृढ पावहिं, बिनु विराग जप योग ॥ ७५ ॥
दीपशिखा सम युवति जन, मनजनि होसि पतंग ॥
भजहिं राम तजि काममद, करहिं सदा सतसंग ॥ ७६ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनोनाम तुलसीकृतरामायणे आरण्यकांडे तृतीयः सोपानः समाप्तः॥ ३ ॥
इति आरण्यकाण्ड समाप्त ३.

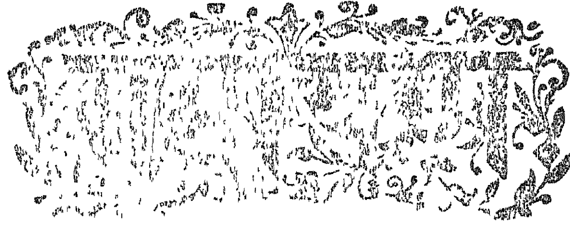
खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय-बंबई.

१ काम, क्रोध, मद, मत्सरादि । २ पापरहित

श्रीमद्वेङ्कटेशो विजयते।

अथ

श्रीयुतगोस्वामितुलसीदासजीकृत-



सटिप्पण,

किष्किन्धाकाण्ड ४.

संपूर्ण क्षेपकों सहित.

जिसमें

सुग्रीव और रघुनाथकी मित्रता, तथा सुग्रीव व वालिकी व्युत्पत्ति, वालि करके मायावी दानव वध तथा दुंदुभि दैत्यवधान्त वालि शाप, तालवृक्ष छेदन तथा वालि सुग्रीव युद्ध तथा रामबाणसे वालिवध तथा वर्षा शरद् ऋतु वर्णन, हनुमान्जी करके सेना एकत्र करना, सीताकी खोजमें दूतोंका जाना तथा हनुमान्जीका जीवन चरित आदि अत्यन्त पवित्रकथा वर्णित हैं।

यह ग्रन्थ

पण्डित-ज्वालाप्रसादमिश्रजीकेद्वारा

शुद्धकराकर,

खेमराज श्रीकृष्णदासने,

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९६२, शके १८२७.

❀ किष्किन्धाकाण्ड ४. ❀

दोहा-वारि मथे वरु होइ घृत, सिकताते वरु तेल ॥
विन हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धान्त अपेल॥

ऋष्यमूक पर्वतपर हनुमानजीका सुग्रीवकी आज्ञासे
रघुनाथजीका परिचयलेना।



चौपाई-संसृति रोग सजीवन मूरी। राम कथा गावहिं श्रुति भूरी ॥
अति हरि कृपा जाहिपर होई। पाँव देइ यहि मारग सोई ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय, खेतवाडी-बंबई.
KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS
Shree Venkateshwar (Steam) Press, Khetwadi—BOMBAY.

श्रीः ।

॥ श्रीमद्वेङ्कटेश्वराय नमः ॥

अथ श्रीतुलसीदासविरचिते-

रामायणे किष्किन्धाकाण्डम् ।

श्लोक ।

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ॥
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ १ ॥
ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ॥
संसारामयभेषजं सुमधुरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥२॥

सो०—मुक्तिजन्म महिजानि, ज्ञानखानि अघहानिकर ॥
जहँ बस शंभु भवानि, सोकाशी सेइय कस न ॥ १ ॥
जरत सकल सुरवृन्द, विषम गरल तेहि पान किय ॥
तेहि न भजसि मतिमन्द, को कृपालु शंकर सरिस ॥ २ ॥

आगे चले बहुरि रघुराया * ऋष्यमूक पर्वत नियराया ॥

श्लोकार्थ--कुन्दके फूलकी समान और नीलकमलके समान सुंदर अति बलवान् विज्ञानके घर दोनों शोभासंयुक्त धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ वेदस प्रशंसित और गो ब्राह्मणोंके प्यार करनेवाले मायासे मनुष्यरूप धारण कियेहुए सद्धर्मके कवच धारण किये हितकारी सीताके ढूँढनेमें तत्पर मार्गमें विचरते हुए राम लक्ष्मण दोनों मुझको भक्तिके देनेवाले हैं ॥१॥ वे सुकर्म कर्त्ता धन्यहैं जो निरंतर रामनामरूपी अमृतको पान करतेहैं वोह रामनामरूपी अमृत कैसा है कि, ब्रह्म वेदरूपी समुद्रसे उत्पन्न कलिमलका नाशक जन्ममरणादिकसे रहित शोभासे युक्त शिवजीके चन्द्रमुखमें सदैव शोभित और संसाररूपीरोगका औषधहै और सुंदर मधुरतर है और वियोग समयमें श्रीजानकीजीको जिलानेवालाहै ॥२॥

१ शोकके हरनेकी तरवारिसदृश । २ विष ।

तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा * आवत देखि अतुल बलसीवा ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना * पुरुष युगल बलरूप निधाना ॥
धरि बटुरूप देखु तैं जाई * कहेसि मोहिं निज सैन बुझाई ॥
पठवा बालि होइ मन मैला * भागौं तुरत तजौं यह शैला ॥
विप्ररूपधरि कपि तहँ गयऊ * माथनाय पूँछत अस भयऊ ॥
को तुम श्यामल गौर शरीरा * क्षत्री रूप फिरहु वन वीरा ॥
कठिन भूमि कोमलपद गामी * कवन हेतु विचरहु वन स्वामी ॥
मृदुल मनोहर सुन्दर गाता * सहत दुसह वन आतप बाता ॥
की तुम तीनि देव महँ कोऊ * नर नारायण की तुम दोऊ ॥
दोहा–जगकारण तारण भवहि, भंजन धरणी भार ॥
की तुम अखिल भुवनपति, लीन्ह मनुज अवतार ॥ १ ॥
सुनि बोले रघुवंश कुमारा * विधिकर लिखा को मेटनहारा ॥
कोशलेश दशरथके जाये * हम पितुवचन मानि वन आये
नाम राम लक्ष्मण दोउ भाई * संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥
इहां हरी निशिचर वैदेही * खोजत विप्र फिरहिं हम तेही ॥
आपन चरित कहा हम गाई * कहहु विप्र निज कथा बुझाई ॥
प्रभु पहिचानिपरे गहि चरणा * सो सुख उमा जाहि नहिंवरणा
पुलकित तनु मुखआव न वचना * देखत रुचिर वेषकै रचना ॥
पुनि धीरज धरि स्तुति कीन्हा * हर्षि हृदय निज नाथहि चीन्हा
मैं अजान होइ पूँछौ साईं * तुम कस पूँछहु नरकी नाईं ॥
तब मायावश फिरौं भुलाना * तातें प्रभु पद नहिं पहिचाना ॥
दोहा–एक मन्द मैं मोहवश, कीश हृदय अज्ञान ॥
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेहु, दीनबन्धु भगवान ॥ २ ॥
यद्यपि नाथ अवगुण बहु मोरे * सेवक प्रभुहि परे जनु भोरे ॥
नाथ जीव तव माया मोहू * सो निस्तरे तुम्हारे छोहू ॥
तापर मैं रघुवीर दुहाई * जानो नाहिं कछु भजन उपाई ॥

१ ब्रह्मचारी। २ पर्वत। ३ घाम। ४ ब्रह्मा, विष्णु, महेश। ५ अयोध्या। ६ जनककुमारी। ७ बन्दर

सेवक सुत पितु मातु भरोसे * रहै अशोच बनै प्रभु पोसे ॥
असकहि चरण परे अकुलाई * निजतनु प्रगट प्रीति उरछाई ॥
तब रघुपति उठाइ उर लावा * निजलोचनजलसींचिजुड़ावा ॥
सुनु कपिजियजनिमानसिऊना * तैं मम प्रिय लक्ष्मणते दूना ॥
समदरशी मोहिं कह सब कोई * सेवक प्रिय अनन्यगति सोई ॥
दोहा–सो अनन्य अस जाहिके, मति न टरै हनुमन्त ॥
मैं सेवक सचराचर, रूपराशि भगवन्त ॥ ३ ॥
देखि पवनसुत पति अनुकूला * हृदय हर्षि बीते सब शूला ॥
नाथ शैल पर कपिपति रहई * सो सुग्रीव दास तव अहई ॥
तासन नाथ मयत्री कीजे * दीन जानि त्यहिअभयकरीजे ॥
सो सीता कर खोज कराई * जहँ तहँ मर्कट कोटि पठाई ॥
इहि विधि सकल कथा समुझाई * लिये दोउ जन पीठि चढ़ाई ॥
जब सुग्रीव राम कहँ देखा * अतिशयधन्य जन्मकरिलेखा ॥
सादर मिल्यउ नाइ पदमाथा * भेंट्यउअनुजसहितरघुनाथा ॥
कपिके मन विचार यह नीती * करिहहिं विधि मोसन ये प्रीती ॥
दोहा–तब हनुमन्त उभय दिशि, कहि सब कथा सुहाइ ॥
पावक साखी देइ करि, जोरी प्रीति दृढाइ ॥४॥
कीन्हप्रीति कछुबीच न राषा * लक्ष्मण राम चरितसब भाषा ॥
कह सुग्रीव नयन भरि वारी * मिलिहिनाथमिथिलेशकुमारी ॥
मंत्रिन सहित यहाँ इकबारा * बैठि रह्यउँ कछु करतविचारा ॥
गगनपन्थ देखी मैं जाता * परवश परी बहुत विलखाता ॥
राम राम हा राम पुकारी * मम दिशि देखि दीनपट डारी ॥
मांगा राम तुरत सो दीन्हा * पट उरलाइ शोच अति कीन्हा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा * तजहु शोक मन आनहु धीरा ॥
सब प्रकार करिहौं सेवकाई * जेहिविधिमिलहि जानकीआई ॥
दोहा–सखा वचन सुनि हर्षेउ, रघुपति करुणासींव ॥

१ सन्देश । २ बंदर । ३ दोउदिशि । ४ आकाशमार्ग

कारण कवन बसहु वन, मोसन कहु सुग्रीव ॥ ५ ॥

अथ क्षेपक ।

पूँछहि प्रभु हँसि जानहिं ताहीं * महावीर मर्कट कुल माहीं ॥
तव स्थान प्रथम केहिठामा * कहु निज मातपिताकर नामा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई * कहहु आदिते उत्पति गाई ॥
ब्रह्मा नयनन कीच निकारी * लै अँगुरी भुइँ ऊपर डारी ॥
वानर एक प्रकट तहँ होई * चंचल बहु विरंचि बल सोई ॥
तेहिकर नाम धरा विधि जानी * ऋच्छराज तेहिसमनहिंज्ञानी ॥
विधि पदनाइ शीश कपि कहई * आयसु कहा मोहिंप्रभु अहई ॥
विचरहुवन गिरिवन फलखावहु * मारहु निश्चर जे जहँ पावहु ॥
सो ब्रह्माकी आज्ञा पाई * दक्षिण दिशा गयउ रघुराई ॥
दोहा—ऋच्छराज तहिँ विचरई, महावीर बलवान ॥
निश्चर मिलेते सबहने, लैलै घटे पषान ॥ ६ ॥
फिरत दीख यक कूप अनूपा * जल परिछाहिं दीख निजरूपा ॥
तब कपि शोच करत मनमाहीं * केहिविधिरिपुरहहीयाँ आहीं ॥
ताहि देखि कोपा कपिवीरा * सब छिद्रहि फिरा कूपके तीरा ॥
जो जो चरित कीन्ह कपि जैसा * सोसो चरित दीख तहँ तैसा ॥
गरजा कीश सोइ सो बोला * कूदिपरा जलमाहीं डोला ॥
तब तनु पलटि भई सो नारी * अति अनुपगुण रूप अपारी ॥
सुनहु उमा अति कौतुक होई * आइ बहोरि ठाढ़ि भै सोई ॥
सुरपति दृष्टि परी तेहि काला * तेहि तव बिंदु परा तेहि बाला ॥
मोहे भानु देखि छबिसीवा * छूटा बिंदु परा तेहि ग्रीवा ॥
दोहा—इंद्र अंशते बालि भा, महावीर बलधाम ॥
दिनकर[3] सुत दूसर भयो, तेहि सुग्रीवउ नाम ॥ ७ ॥
पुनि तत्काल सुनहु रघुवीरा * नारी पलटि भयो सोइवीरा ॥
तब ऋछराज प्रीति मनभयऊ * हमहिं संग लै विधि पहँ गयऊ ॥

१ आज्ञा । २ उपमा रहित । ३ सूर्यनारायण ।

करि प्रणाम सब चरित बखाना * कह अज हरि इच्छा बलवाना ॥
तब विधि हमहिं कहा समुझाई * दक्षिण दिशा जाउ दोउ भाई ॥
किष्किंधा तुम करु अस्थाना * रंग भोग बहु विधि सुखनाना ॥
जो प्रभु लोक चराचर स्वामी * सो अवतरहिं नाथ बहुनामी ॥
रघुकुल मणि दशरथ सुतहोई * पितु आज्ञा विचरहिं वन सोई ॥
नरलीला करिहैं विधिनाना * पैहौ दरश होइ कल्याना ॥
दोहा-तब हर्षे हम बंधु दोउ, सुनिकै विधिके बयन ॥
जप तप योग न पावहीं, सो हम देखब नयन ॥ ८ ॥
विधिपद वंदि चले दोउ भाई * किष्किन्धा तब आय गुसाँई ॥
वालीराज कीन सुरत्राता * वनवासि दैत्य हन्यो दोउ भ्राता
मयदानवके सुत दोउ वीरा * मायावी दुंदुभि रणधीरा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई * विधि गतिअलख जानि नहिं जाई

इति क्षेपक ।

नाथ वालि अरु मैं दोउ भाई * प्रीति रही कछु बरणिन जाई ॥
मयसुत मायावी तेहि नाऊं * आवा सो प्रभु हमरे गाऊं ॥
अर्धराति पुरद्वार पुकारा * वालिहु रिपुबल सहै न पारा ॥
धावा वालि देखि सोइ भागा * मैं पुनि गयउँ बन्धु सँग लागा ॥
गिरिवर गुहा[1] पैठि सो जाई * वालि मोहिं तब कहा बुझाई ॥
परखेहु मोहिं एक पखवारा * नहिं आवौं तो जानेउ मारा ॥
मास[2] दिवस तहँ रहउँ खरारी * निसरी रुधिर[3] धार तहँ भारी ॥
तब मैं निजमन कीन्ह विचारा * जाना असुर बन्धु कहँ मारा ॥
वालिहत्यासि मोहिं मारहि आई * शिला द्वारदे चलेउँ पराई ॥
दोहा-वालि महाबल अमित अति, समर[4] न जीतै कोय ॥
त्यहि मारिसि जो निशिचर, सो अब मारै मोय ॥ ९ ॥
गयउँ भवन[5] मनशोच अपारा * पूँछे वालि कह्यो जिमि मारा ॥
पंपापुरके जन तेहिं काला * तनुव्याकुल मनबहुतविहाला ॥

१ पर्वतकी कन्दरा । २ एकमहीना । ३ रक्त । ४ संग्राम । ५ गृह ।

मंत्रिन पुर देखा बिनु साईं * दीन्हेउ राज्य मोहिं बरिआईं[1]॥
वाली ताहि मारि गृह आवा * देखि मोहिं जिय भेद बढ़ावा ॥
रिपुसमान[2] म्वहिं मारेसि भारी * हरि लीन्हेसि सर्वस अरु नारी॥
ताके भय रघुवीर कृपाला * सकलभुवनमँफिर्‍यउँविहाला॥
इहाँ शापवश आवत नाहीं * तदपि सभीत रहौं मन माहीं ॥
सुनि सेवक दुख दीनदयाला * फरकि उठे दोउ भुजा विशाला

अथ क्षेपक ।

दोहा–सुनत वचन बोले प्रभु, कहहु शापकी बात ॥
दुंदुभिदैत्य सो कौन विधि, वालि हत्यो तेहि तात॥ १० ॥
समदर्शी शीतल सदा, मुनिवर परम प्रवीन ॥
मोहिं बुझाइ कहहु सब, शाप कौन हित दीन ॥ ११ ॥

पुनि पूँछत भए कृपानिकेता * वालिहि शाप भयो केहिहेता॥
बोले तब कपीश[3] मनलाई * दुंदुभिदैत्य महाबल भाई ॥
मल्लयुद्धकी गति सब जानै * और बली नहिं कोउ मनमानै॥
एकबार जलनिधि तट आयो * जाकै वारिध[4] माँझ थहायो ॥
सबही कटि प्रमाण जल भयऊ *करिअभिमान मथतसोलयऊ ॥
मथत सिंधु व्याकुल सबगाता * जीव जंतु सब भये निपाता ॥
तब अकुलाय सिंधु चलिआवा * वचन विचारिहि ताहि सुनावा॥
तुम बल सरवर और न कोऊ * वचन विचारि कहौं मैं सोऊ ॥
हिमगिरि[5] बल वरणौं ना जाई * त्याहि जीतन कर करहुउपाई ॥
वचन सुनत ताहीं चलि आयो *देखि हिमाचल अतिमनभायो॥
ताल ठोंकि हिम लीन उठाई * तब हिमगिरि बहुविनतीलाई ॥
तुम्हरे बल सरवर[6] मैं नाहीं * ताते करो न मान तुम्हाहीं ॥
पंपापुर तुम अब चलि जाहू * वालि महाबलनिधि अवगाहू ॥
सुनत वचन तब तहँ चलिआवा * वालि वालि कहिके गोहरावा ॥
दोहा–वेष किये सो महिषकर, गर्व बहुत मन माहिं ॥

१ जबरदस्ती । २ शत्रु । ३ सुग्रीव । ४ समुद्र । ५ हिमवान् । ६ तुल्य

आयो निकट सो गर्जिकर, मनहुँ तनक भय नाहिं ॥१२॥
मही महिं तरु करै निपाता * गर्जेउ घोर गिरा जनुघाता ॥
ठोंकेउ ताल वज्र जनु परहीं * तेहिकर मर्म जानि सबडरहीं॥
पंपापुर व्याकुल सब काहू * चंद्र ग्रसन जनु आयो राहू ॥
सुनत वालि धावा ततकाला * देखि असुर भुजदंड कराला ॥
भिरे युगल करिवर की नाईं * मल्लयुद्ध कछु वरणि न जाईं ॥
चारि याम सब कौतुक भयऊ * मुष्टि प्रहार तासु कपिदयऊ ॥
गिरा अवनि तब शैल समाना * जीव जंतु तरु टूटचउ नाना ॥
पुनितेहि वालि युगलकरिडारा * उत्तर दक्षिण कीन्ह प्रहारा ॥
तेहि गिरि पर मुनिकुटीसुहाई * रुधिर प्रवाह गयो तहँ धाई ॥
ऋषि मतंगकर तहाँ निवासा * गयेसो ऋषि मज्जनसुखरासा॥
मज्जन करि मतंगऋषि आये * देखि कुटी अति क्रोध बढ़ाये ॥
तबहिं विचार कीन्ह मनमाहीं * यक्ष एक चलि आवा ताहीं ॥
तिनहीं सकल कही इतिहासा * सुनिमतंग भे क्रोधनिवासा ॥
दोहा-दीन शाप तब क्रोध करि, नहिं मन कीन्ह विचार ॥
वालि नाश गिरि देखतहि, होइजाइ तनुछार ॥ १३ ॥
तेहिभय इहाँवालि नहिंआवत * ऋषिके वचन मानिभयपावत॥
तेहि भरोस यहि गिरिपर रहऊं * वालित्रास नहिं विचरतकहऊं॥
यहि दुखते प्रभु दिन अरु राती* चिंताबहुत जरति अतिछाती ॥
जानहु मर्म सकल रघुनाथा * इहाँ रहौं हनुमत लै साथा ॥
सो वृत्तांत वालि सब जाना * इहाँ न आवत कृपानिधाना ॥
सुनि सुग्रीव वचन भगवाना * बोले हरि हँसि धरि धनु बाना॥

इति क्षेपक ।

दोहा-सुन सुग्रीव मैं मारिहौं, वालिहि एकहिबाण ॥
ब्रह्म रुद्र शरणागतहु, गये न उबरहिं प्राण ॥ १४ ॥
जे न मित्र दुख होहिं दुखारी * तिन्हैं विलोकत पातक भारी॥

१ पृथ्वी । २ वृक्ष

निजदुखगिरिसम रजकै जाना * मित्रक दुख रज मेरु समाना ॥
जिनके असमति सहज न आई * ते शठ हठि कत करत मिताई ॥
कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा * गुण प्रगटै अवगुणहि दुरावा ॥
देत लेत मन शंक न धरहीं * बल अनुमान सदा हितकरहीं ॥
विपति काल कर शतगुण नेहा * श्रुति कह संत मित्रगुण एहा ॥
आगे कह मृदु वचन बनाई * पाछे अनहित मन कुटिलाई ॥
जाकर चित अहिगति सम भाई * अस कुमित्र परिहरे भलाई ॥
दोहा—मित्र मित्रसों प्रीति करि, हृदय आन मुख आन ॥
जाके मन वच प्रेम नहिं, दुरे दुराये जान ॥ ५ ॥
सेवक शठ नृप कृपण कुनारी * कपटी मित्र शूल सम चारी ॥
सखा शोच त्यागहु बल मोरे * सब विधि करब काज मैं तोरे ॥
कह सुग्रीव सुनो रघुवीरा * बालि महाबल अति रणधीरा ॥

अथ क्षेपक ।

सप्त ताल ये कृपानिधाना * वेधै सबहिं एकही बाना ॥
चंद्र मंडलाकार सुहाई * परै एक बाणहि महि आई ॥
ताके कर बाली प्रभु मरई * नातौ श्रम मिथ्या कोउ करई ॥
सुनि बोले प्रभु शीतल बानी * कपि चतुरई तोरि मैं जानी ॥
यहि विधि बलका करहु परेखू * कहहु तालकर चरित विशेषू ॥
सुनि सुग्रीव हिये हर्षाना * ताल वृक्ष कर चरित बखाना ॥
एक दिवस कपीश वन गयऊ * वृक्ष फूल फल देखत भयऊ ॥
मन हर्षाय सात फल लीना * जल मज्जनते शुचि सो कीना ॥
दोहा—लै आतुर चलि आयहु, पंपापुर जगदीश ॥
करि स्नान ध्यान पुनि, नाइ इष्ट कहँ शीश ॥ १६ ॥
राखे फल जे मगकरि दर्पा * तेहि फल पर बैठा इक सर्पा ॥
शशिमंडल समान फन काढी * देखि कपीश महारिस बाढी ॥
अरे दुष्ट भख मोर नशावा * यमपुर आज सदन तुव छावा ॥

१ रेणुका । २ पर्व्वत । ३ बरछीकी धारके समान । ४ हाथ । ५ बालि । ६ पवित्र ।

नाहिंत शीश शापले मोरा * वृक्ष फूटि निकसै तनु तोरा ॥
जहाँ जायकर बैठा वेदी * निकसै तालवृक्ष तनु छेदी ॥
क्रोध निवारि वालि गृह आवा * समाचार यह तक्षक पावा ॥
दोहा–पुत्र वधन सुनि क्रोध करि, मनदुख भयो अपार ॥
निश्चय मारै वालिसो, जो इह वेधै तार ॥ १७ ॥
सो सब समाचार मैं जानब * असतव कहब नाथ मन मानब
इति क्षेपक ।
दुंदुभि अस्थि ताल दिखराये * विनु प्रयास रघुनाथ ढहाये ॥
भये शतखण्ड वृक्षके जबहीं * निकस्यो सर्प ताल तर तबहीं ॥
करि स्तुति जब सर्प सिधावा * निरखि हरीश[1] प्रभुहि सुखपावा ॥
देखि अमित बल बाढी प्रीती * वालि वधन कर भइ परतीती ॥
वारहिं वार नाइ पद शीशा * प्रभुहि जानि मन हर्ष कपीशा ॥
उपजा ज्ञान वचन तब बोला * नाथ कृपा मन भयउ अडोला ॥
सुख सम्पति परिवार बडाई * सबपरिहरि[2] करिहौं सेवकाई ॥
ये सब राम भक्तिके बाधक * कहहिं सन्त तव पद अवराधक ॥
शत्रु मित्र दुख सुख जगमाहीं * मायाकृत परमारथ नाहीं ॥
वालि परमहित जासु प्रसादा * मिलेहु राम तुम शमनविषादा ॥
स्वप्नेहु जेहि सन होइ लराई * जागे समुझत मन सकुचाई ॥
अब प्रभु कृपाकरहु इहि भाँती * सबतजिभजनकरौंदिनराती ॥
सुनि विराग संयुत कपिवानी * बोले विहँसि राम धनुपानी ॥
जो कछु कहेउ सत्य सब सोई * सखा वचन मम मृषा[3] न होई ॥
नट मर्कट[4] इव सबहिं नचावत * राम खगेश[5] वेद अस गावत ॥
लै सुग्रीव संग रघुनाथा * चले चाप सायक[6] गहि हाथा ॥
तब रघुपति सुग्रीव पठावा * गर्जिसिजाइ निकट बल पावा ॥
सुनत वालि क्रोधातुर धावा * गहिकर चरण नारि समुझावा ॥
सुनु पति जिनहिं मिला सुग्रीवा * ते दोउ बन्धु तेजबल सींवा ॥

१ सुग्रीव । २ त्याग । ३ मिथ्या । ४ बंदर । ५ गरुड । ६ धनुष बाण ।

कोशलेश सुत लक्ष्मण रामा * कालहु जीति सकहिं संग्रामा॥
"सोइ रघुवीर हृदयमहँ आनहु *छाँडहु मोह कहा मम मानहु"॥
दोहा–कहा वालि सुनु भीरु प्रिय, समदरशी रघुनाथ ॥
जो कदापि मोहिं मारिहैं, तौ पुनि होव सनाथ ॥ १८ ॥
असकहि चला महा अभिमानी * तृण समान सुग्रीवहिं जानी ॥
"वालि देखि सुग्रीवहि ठाढा *हृदय क्रोध पुनि बहुविधिबाढ़ा"
भिरेउ युगल वाली अतितर्जा * मुष्टिक मारि महाधुनि गर्जा ॥
तब सुग्रीव विकल होइ भागा * मुष्टिप्रहार वज्र सम लागा ॥
मैं जु कहा रघुवीर कृपाला * बन्धु न होइ मोर यह काला ॥
एक रूप तुम भ्राता दोऊ * तेहि भ्रमते नहिं मारेउँ सोऊ॥
कर परशा सुग्रीव शरीरा *तनुभा कुलिश गई सब पीरा॥
मेली कण्ठ सुमनकी माला *पठवा पुनि बल देइ विशाला ॥
पुनि नानाविधि भई लराई *विटप ओट देखहिं रघुराई ॥
दोहा–बहु छल बल सुग्रीव करि, हृदय हारि भय मानि ॥
मारा वालिहि राम तब, हिये माँझ शरतानि ॥ १९ ॥
परा विकल महि शरके लागे * पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे॥
श्यामगात शिर जटा बनाये * अरुण नयन शर चाप चढ़ाये॥
पुनि पुनि चितै चरण चितदीन्हें*सफल जन्म माना प्रभु चीन्हें॥
हृदय प्रीति मुख वचन कठोरा * बोला चितै रामकी ओरा ॥
धर्महेतु अवतरेहु गुसाँई * मारेहु मोहिं व्याधकी नाईं ॥
मैं वैरी सुग्रीव पियारा * कारण कवन नाथ म्वाहिंमारा॥
अनुजवधू भगिनी सुत नारी * सुन शठ ये कन्यासम चारी ॥
इन्हैं कुदृष्टि बिलोकै जोई * ताहि वधे कछु पाप न होई ॥
मूढ़ तोहिं अतिशय अभिमाना*नारि शिखावन करेसि न काना॥
मम भुजबलआश्रित तेहिजानी*मारा चहसि अधम अभिमानी॥
दोहा–सुनहु राम स्वामी सुभग, चल न चातुरी मोरि ॥

१ दशरथ । २ पुष्पोंकीमाला । ३ वृक्ष । ४ बाण । ५ पृथ्वी । ६ राक्षिन ।

प्रभु अजहूं मैं पातकी, अन्तकाल गति तोरि ॥२०॥
सुनत राम अति कोमलवाणी * वालि शीश परस्यउ निजपाणी
अचल करौं तनु राखहु प्राना * वालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥
जन्म जन्म मुनि यतन कराहीं * अन्तराम कहि आवत नाहीं ॥
जासु नाम बल शंकर काशी *देत सबहिंसमगतिअविनाशी ॥
ममलोचन गोचर सोइ आवा * बहुरिकिप्रभुअसबनहिबनावा॥
छंद–सो नयन गोचर जासुगुण नित नेति कहि श्रुति गावहीं ।
जिमि पवन मन गोनिरस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं॥
मोहिं जानि अति अभिमान वश प्रभु कह्यउ राखु शरीरही ।
अस कवन शठ हठ काटि सुरतरुचारिकरहिं करीरही ॥१॥
अब नाथ करि करुणा विलोकहु देव यह वर माँगहूँ ।
ज्याहि योनि जन्मौं कर्मवश तहँ राम पद अनुरागहू ॥
यहतनय मम सम विनय बल कल्याण पद प्रभु दीजिये ।
गहि बाँह सुर नरनाह अंगद दास अपनो कीजिये ॥ २ ॥
दोहा–रामचरण दृढ़ प्रीतिकरि, वालि कीन्ह तनु त्याग ॥
सुमन माल जिमि कण्ठते, गिरत न जानै नाग ॥ २१ ॥
राम वालि निज धाम पठावा * नगरलोग सब व्याकुल धावा ॥
नानाविधि विलाप कर तारा * छूटे केश न देह सँभारा ॥
पुनि पुनि तासु शीश उरधरई * वदन विलोकि हृदयमहँ हतई॥
मैंपति तुमहिं बहुत समुझावा *कालविवश पिय मनहिंनआवा॥
अंगद कहँ कछुकहन न पायहु * बीचहि सुरपुर प्राण पठायहु ॥
तारा विकल देखि रघुराया * दीन्ह ज्ञान हरि लीन्हीं माया ॥
क्षिति जल पावक गगन समीरा * पंचरचित यह अधमशरीरा ॥
प्रगट सो तनु तव आगे सोवा * जीवनित्य तुमकेहि लगिरोवा॥
उपजा ज्ञान चरण तब लागी * लीन्हयासि परम भक्तिवरमाँगी॥
उमा दारुयोषितकी नाईं * सबहिं नचावत राम गुसाईं ॥

१ कल्पवृक्ष । २ दया । ३ सुत । ४ बाल । ५ भूमि । ६ अग्नि । ७ आकाश । ८ वायु ।

तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा * मृतककर्म विधिवत सब कीन्हा॥
रामकहा अनुजहि समुझाई * राज्य देहु सुग्रीवहि जाई॥
रघुपति चरण नाइ करि माथा * चले सकल प्रेरित रघुनाथा॥
दोहा-लक्ष्मण तुरत बुलावा, पुरजन विप्र समाज॥
राज दीन सुग्रीव कहँ, अंगद कहँ युवराज॥ २२॥
उमा राम सम हित जग माहीं * सुत पितु मातु बन्धु कोउ नाहीं॥
सुर नर मुनि सबकी यह रीती * स्वारथ लागि करैं सब प्रीती॥
वालित्रास व्याकुल दिनराती * तनु विवरण चिंता जर छाती॥
सो सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ * अति कोमल रघुबीर स्वभाऊ॥
ऐसे प्रभु कहँ जो परिहरहीं * काहे न विपति जाल नर परहीं॥
पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बुलाई * बहुप्रकार नृप नीति सिखाई॥
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीशा * पुर न जाउँ दश चारि बरीशा॥
गत ग्रीषम वर्षाऋतु आई * रहिहौं निकट शैलपर छाई॥
अंगद सहित करहु तुम राजू * सन्तत हृदय राखि मम काजू॥
तब सुग्रीव भवन फिरि आये * राम प्रवर्षण गिरि पर छाये॥
दोहा-प्रथमहिं देवन गिरिगुहा, राखी रुचिर बनाइ॥
राम कृपानिधि कछुक दिन, वास करहिंगे आइ॥ २३॥
सुन्दर वन कुसुमित तरु शोभा * गुंजत चंचरीक मधुलोभा॥
कन्द मूल फल अतिहि सुहाये * भये बहुत जबते प्रभु आये॥
देखि मनोहर शैल अनूपा * रहेतहँ अनुज सहित सुरभूपा॥
मङ्गलरूप भये वन तबते * कीन्ह निवास रमापति जबते॥
मधुकर खग मृग तनुधारि देवा * करहिं सिद्ध मुनि प्रभुकी सेवा॥
फटिकशिला अति शुभ्र सुहाई * सुखआसीन तहाँ दोउ भाई॥
कहत अनुजसन कथा अनेका * भक्ति विरति नृपनीति विवेका॥
वर्षाकाल मेघ नभ छाये * गर्जत लागत परम सुहाये॥
दोहा-लक्ष्मण देखहु मोरगण, नाचत वारिद पेखि॥

१ गेह। २ फूलेहुये। ३ भ्रमर।

गृही विरहि जिमि हर्षयुत, विष्णु भक्त कहँ देखि ॥ २४ ॥
घनघमण्ड नभ गर्जत घोरा * प्रियाहीन डरपत मनमोरा ॥
दामिनि दमकि रही घन माहीं * खलकी प्रीति यथा थिरनाहीं ॥
वर्षहिं जलद भूमि नियराये * यथा नवहिं बुध विद्यापाये ॥
बूंद अघात सहैं गिरि कैसे * खलके वचन सन्त सहँ जैसे ॥
क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई * जस थोरे धन खल बौराई ॥
भूमि परत भा ढाबर पानी * जिमि जीवहि माया लपटानी ॥
सिमिटि सिमिटि जल भरेतलावा * जिमि सद्गुण सज्जन पहँ आवा
सरिताजल जलनिधि महँ जाई * होइ अचल जिमि जन हरिपाई
दोहा—हरित भूमि तृण संकुल, समुझि परै नहिं पन्थ ॥
जिमि पाखण्ड विवादते, लुप्त भये सद्ग्रन्थ ॥२५॥
दादुर ध्वनि चहुँ ओर सुहाई * वेद पढै जन बटु समुदाई ॥
नव पल्लव भे विटप अनेका * साधुके मन जस होइ विवेका ॥
अर्क जवास पात बिनु भयऊ * जिमि सुराज्यखलउद्यमगयऊ ॥
खोजत पन्थ मिलै नहिं धूरी * करै क्रोध जिमि धर्महिं दूरी ॥
शशि सम्पन्न सोह महि कैसी * उपकारीकी सम्पति जैसी ॥
निशितम घन खद्योत विराजा * जनु दम्भिनकर जुरासमाजा ॥
महावृष्टि चलि फूटि कियारी * जिमि स्वतंत्रहोइ बिगरहिं नारी ॥
कृषी निरावहिं चतुर किशाना * जिमिबुधतजहिं मोहमदमाना ॥
देखियत चक्रवाक खग नाहीं * कलिहि पाइ जिमि धर्मपराहीं ॥
ऊषर वर्षै तृण नहिं जामा * सन्त हृदय जस उपजनकामा ॥
विविध जन्तु संकुल महिभ्राजा * बढ़ै प्रजा जिमि पाइ सुराजा ॥
जहँ तहँ पथिक रहे थकिनाना * जिमि इन्द्रियगण उपजेज्ञाना ॥
दोहा—कबहुँ प्रबल चल मारुत, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं ॥
जिमि कुपूत कुल ऊपजे, सम्पति धर्म्म नशाहिं ॥ २६ ॥
कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम, कबहुँक प्रगट पतंग ॥

१ सीताजी । २ बिजुली । ३ मेघ । ४ पर्वत । ५ मैला । ६ समुद्र । ७ मेढक । ८ मंदार । ९ खेती ।

उपजै बिनशै ज्ञान जिमि, पाइ सुसंग कुसंग ॥ २७ ॥
वर्षा विगत शरदऋतु आई * देखहु लक्ष्मण परम सुहाई ॥
फूले कास सकल महिछाई * जनु वर्षाऋतु प्रगट बुढाई ॥
उदित अगस्त्य पन्थजल शोषा * जिमि लोभहिं शोषै सन्तोषा ॥
सरिता सर जल निर्मल सोहा * सन्तहृदय जस गत मद मोहा॥
रस रस शोष सरित रसपानी * ममतात्याग करहिं जिमि ज्ञानी
जानि शरदऋतु खंजन आये * पाइसमय जिमिसुकृत सुहाये॥
पंक न रेणु सोह अस धरणी * नीतिनिपुण नृपकी जसकरणी॥
जल संकोचविकल भये मीना * विबुध कुटुम्बी जिमि धनहीना॥
बिनु घननिर्मल सोह अकाशा * जिमिहरि जनपरिहरसब आशा
कहुँ कहुँ वृष्टि शारदी थोरी * कोउयक पावभक्ति जिमि मोरी॥
दोहा–चले हर्षि तजि नगर नृप, तापस वणिक भिखारि ॥
जिमि हरि भक्ति पाइ जन, तजहिं आश्रमी चारि ॥ २८ ॥
सुखी मीन जहँ नीर अगाधा * जिमि हरिशरण न एकौबाधा॥
फूले कमल सोह सर कैसे * निर्गुण ब्रह्म सगुण भये जैसे ॥
गुंजत मधुकर निकर अनूपा * सुन्दर खग रव नाना रूपा ॥
चक्रवाक मनदुख निशि पेखी * जिमि दुर्जन परसम्पति देखी ॥
चातक रटत तृषा अति वोही * जिमि सुख लहै न शंकरद्रोही॥
शरदा तप निशि शशिअपहरई * सन्तदरश जिमि पातकटरई ॥
देखहिं विधु चकोर समुदाई * चितवहिंहरिजनहरिजिमिपाई ॥
मशक दंश बीते हिम त्रासा * जिमि द्विजद्रोहकियेकुलनासा॥
दोहा–भूमि जीव संकुल रहे, गये शरदऋतु पाइ ॥
सद्गुरु मिलेते जाहिं जिमि, संशय भ्रम समुदाइ ॥ २९ ॥
वर्षागत निर्मलऋतु आई * सुधि न तात सीताकी पाई ॥
एकबार कैसेहुँ सुधि जानौं * कालहु जीतिनिमिषमहँआनौं॥
कतहुँ रहौ जो जीवति होई * तात यत्न करि आनौं सोई ॥

१ खडरैचा । २ चहला । ३ मछली । ४ वर्षा । ५ पानी । ६ सम्पूर्ण ।

सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी * पावा राज्य कोष[1] पुर नारी ॥
जेहि सायक मैं मारावाली * तेहिशर हतौं मूढ कहँ काली ॥
जासु कृपा छूटै मद मोहा * ताकहँ उमा कि स्वप्नेहु कोहा[2] ॥
जानहिं यह चरित्र मुनि ज्ञानी * जिन रघुवीर चरण रति[3] मानी॥
लक्ष्मण क्रोधवन्त प्रभु जाना * धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥
दोहा-तब अनुजहि समुझावा, रघुपति करुणासींव ॥
भय देखाय लै आवहु, तात सखा सुग्रीव ॥२०॥
यहाँ पवनसुत हृदय विचारा * राम काज सुग्रीव बिसारा ॥
निकट जाइ चरणन शिरनावा * चारहुविधितेहिकहिसमुझावा॥
सुनि सुग्रीव परम भयमाना * विषय मोर हरि लीन्हेउज्ञाना॥
अब मारुतसुत दूतसमूहा * पठवहु जहँ तहँ वानर यूहा ॥
कहहु पक्ष महँ आव न जोई * मोरे कर ताकर वध होई ॥

अथ क्षेपक ।

सुनि पितु वचन बोल युवराजू * बिनु हनुमंत होइ नहिं काजू ॥
जानैहैं गिरिकंदर सागर * चतुर विचक्षण बुधिबलनागर ॥
केशरिपुत्र पवनकर अंशा * पठवहु नाथ करहु परशंसा ॥
तब सुग्रीव मारुति हंकारा * राम काज जनि लावहु बारा ॥
पति आज्ञा धरिशीश सिधाये * मारि फलांग पूर्वदिशि आये ॥
सुनि हनुमंत मिलनसबआवहिं* माथनाइ हितवचन सुनावहिं॥
कारण कवन कीन्ह श्रम भारी * तुम किष्किंधानाथ अघारी ॥
हम लायक जो कारज होई * नाथ शीश धरि मानब सोई ॥
सुनि कपि कहा न लावहु बारा * तुमहि वालिलघुबन्धु हँकार ॥
आतुर जाहु न विलँब करेऊ * परकाज भारी मन धरेऊ ॥
सुनत वचन सब चले तुरंता * जय सुग्रीव कहिगगनगहंता ॥
दोहा-असीलाख अरु सात शत, कपिदल वर बलचंड ॥
नभ मारग कूदत चले, गय गवाक्ष बलि दंड ॥२१॥

१ खजाना । २ कोध । ३ प्रीति ।४ हनुमान् ।

पठय तिनहि तरकथो हनुमाना * रोहित पर्वत जाय तुलाना ॥
दुर्धर्षण सब बात सुनाई * चला वीर कदलि वन आई ॥
गजसन कह सुन वानर राजा * पड़ा कठिन सुग्रीवहि काजा ॥
निज दल संग लाय सब लेहू * धीरजता निजपतिको देहू॥
भलेहिं नाथ कहि सब उठिचले * वसुधा हली शेष कलमले ॥
पद्म सात दल असी करोरी * चले द्विरद गज भई अँधेरी ॥
हनुमत व्याहर पर्वत आवा * जेठ पुत्र बलिवीर बुलावा ॥
तीस लाख दल साठि हजारा * पवनपुत्र सब कीन्ह जोहारा ॥
कारज होय सो आयसु दीजै * इतना श्रम केहि कारणकीजै ॥
आज्ञाकारिय होय जो काजा * कुशलहिं किष्किन्धा राजा ॥
कपिपति रघुपति कथा सुनाई * चला पवनसुत बिदा कराई ॥
धुंधमार पर्वत नियराना * कहताहिं श्रीखँड कीन पयाना ॥
छप्पनकोटि वनचर लै साथा * करिप्रणाम चले कपिनाथा ॥
तब हनुमत अंजनिगिरिआवा * कुमुदनाम कपिवीर बोलावा ॥
पद्म सात अरु लाख सतासी * धाये वीर महाबल रासी ॥
गगन मार्ग जय राम कहंता * आयो नीलगिरी हनुमंता ॥
जहँ रहँ नील नाम कपिभारी * अग्निपुत्र बल बुधि अधिकारी॥
मारुत सुत तेहि मर्म बुझावा * मेघ समान गर्जि कपिआवा ॥
अर्बुदचारि चारि सतबारा * समरधीर सब सुभट जुझारा ॥
गहेवृक्ष आयुध वनचारी * चले सकल जै राम पुकारी ॥
पवनपुत्र उत्तर दिशि गयऊ * बद्रिक आश्रम परशतभयऊ ॥
आतुर गँधमादन पर गयऊ * जल तडाग देखत सुखलहेऊ॥

दोहा—गज गवाक्ष कहँ मिल्यो पुनि, बहु प्रकार समुझाइ ॥
नाइ माथ स्तुति करत, चले वीर हर्षाइ ॥२२॥

हनुमत अर्जुन गिरिपर आवा* तारा तात वीर तहँ पावा ॥
नाम सुषेण महाबल वीरा * बुधि बल तेज समर रणधीरा॥

समाचार पुनि ताहि सुनावा * चलि हनुमंत सुमेरहि आवा ॥
कनक वरणसम दीपित काया * नेत्रलाल अति विपुल सुहाया ॥
पवन प्रसून गगनपर गरजे * राक्षस देखि काल सम तरजे ॥
लँगुर उठाय शीश पर लाये * मानहु मघवा धनुष सुहाये ॥
एक एक सन वचन सुनावा * हनुमत चरणन शिर तिननावा ॥
काया कष्ट कीन केहि काजा * कुशल अहहिं किष्किन्धाराजा ॥
कपि तहँ समाचार सबभाषा * चले दरश कारण अभिलाषा ॥
दोहा-दश करोरि नव लाख अरु, वीस सहस शत एक ॥
चले केसरी संग लै, करत चरित्र अनेक ॥ ३३ ॥
ताहिहु बिदाकीन्ह कपिपवना * रुद्रागिरी कैलासहि गवना ॥
कपिबल दुरद ताहिकर नाऊ * रखवारी अलकापुर गाऊ ॥
महातेज बल दुर्गम काया * परमचतुर जानत सब माया ॥
सुनिसो मारुतसुत पहँ आवा * ले सँग सैन शीश तेहिं नावा ॥
पूँछा कवन काजहै नाथा * दीन दरश मैं भये सनाथा ॥
नृप सुग्रीवके तुम परधाना * आज्ञा देहु वेगि हनुमाना ॥
कहा पवनसुत विलम न लावहु * लै निज सैन पंपपुर धावहु ॥
जय रघुवीर अनुज लघुवाली * साजि दल चले मेदिनीहाली ॥
सिंहनाद करि पूँछ उठाये * दरश उछाह सकलउठिधाये ॥
रहा न कोउ पवनसुत प्रेरा * मैनागिरिहिं हिमाचल हेरा ॥
प्रेम सहित कपि सकल बुलाये * आस वासना करत पठाये ॥
अंडक नाम महाबल कीशा * चले कहत जय राम अहीशा ॥
ताहि बिदाकर पवनकुमारा * बिन्ध्याचल कहँ शीघ्र पधारा ॥
नाम वसन्त * ले निजदल कपिनिकटतुलाना ॥
द्रकेलिके वन ि जेते नुमाति चरणगहे सब तेते ॥
आठ पद्म अरु अठासी जहँ अविनासी
राम काज हनुमत ि य धारे * कश्यप पर्वत जाय पुकारे ॥

नाम मयंद महाबल वीरा * तेजपुंज अति दुर्ग शरीरा ॥
इकिसकोटि वनचर लै साथा * पवनकुमारहि नायउ माथा ॥
कहा पवनसुत जानहु सोहीं * धन्यभाग्य दर्शन भा मोहीं ॥
करहु न बेर सुनहु बलसींवा * तुम्हहि बोलाय वेगि सुग्रीवा ॥
दोहा-सुनत मयंद गयंदगति, उच्छलंत आकाश ॥
अट्टहास गंभीर करि, सैन बोलाइसि पास ॥ ३४ ॥
टिड्डी समान सैन उथलानी * चलते दिगपालन भय मानी ॥
आतुर चले गगन करि छाहीं * उठे लँगूर पतंग छिपाहीं ॥
एक नीलदल तीस करोरा * धावत एकएक बर जोरा ॥
जय सिंहनाद करत बल दापा * देवन हाथ पेटमें चापा ॥
राम स्वरूप हिये महँ आना * करि दल विदा चला हनुमाना ॥
रसना करै राम गुण गाना * धवलागिरि का कीन्ह पयाना ॥
दुर्गंधनाम वानर बड़ योधा * ताहि बोलाय दीन वर बोधा ॥
आठ लाख शतवार गनाई * लै सँग सैन पंपपुर जाई ॥
हनुमत उदयागिरिपर आवा * बंदर धाय परे तेहि पावा ॥
कुंद कुमुद बंदर जे गाये * जे जहँ रहे वनच्चर सब छाये ॥
शब्द किलकिला नभपरकरहीं * वन सर शैल धरा सब धरहीं ॥
दोहा-रामकाजकारि पवनसुत, आये जहँ सुग्रीव ॥
मिले हर्षि स्तुति करि, धन्य धन्य बलसींव ॥ ३५ ॥
इति क्षेपक ।
तब हनुमन्त बुलाये दूता * सबकरकरि सन्मान बहूता ॥
भय अरु प्रीति नीति दिखराई * चले सकल चरणन शिरनाई ॥
त्यहि अवसर लक्ष्मण पुरआये * क्रोध देखि जहँ तहँ कपिधाये ॥
दोहा-धनुष चढ़ाइ कहा तब, जारि करौं पुर छार ॥
व्याकुल नगर देखि तब, आवा वालिकुमार ॥ ३६ ॥
चरणनाइ शिर विनती कीन्ही * लक्ष्मण अभयबाँह तेहिदीन्ही ॥

क्रोधवन्त लक्ष्मण सुनिकाना * कहकपीशअतिशयअकुलाना ॥
तुम हनुमन्त संग लै तारा * कारि विनती समझाउ कुमारा॥
तारा सहित जाइ हनुमाना * चरण वन्दि प्रभुसुयशबखाना॥
कारि विनती मन्दिर लै आये * चरण पखारि पलँग बैठाये ॥
तब कपीश चरणन शिरनावा * गहिभुज लक्ष्मणकण्ठलगावा ॥
नाथ विषयसममदकछुनाहीं * मुनि मन मोह करै क्षणमाहीं ॥
सुनत विनीत वचन सुखपावा * लक्ष्मणतेहिबहुविधिसमुझावा॥
पवनतनय सब कथा सुनाई * ज्यहिविधि गये दूत समुदाई ॥
दोहा-हर्षि चले सुग्रीव तब, अंगदादि कपिनाथ ॥
राम अनुज आगे किये, आये जहँ रघुनाथ ॥३७॥
नाय चरण शिर कह कर जोरी * नाथ मोरि कछु नाहिंन खोरी॥
अतिशय प्रबल देव तव माया * छूटै तबहिं करहु जब दाया ॥
विषयविवशसुरनरमुनिस्वामी *मैंपामर पशु कपि अतिकामी ॥
नारि नयन शर जाहि न लागा* महाघोरनिशि सोवत जागा ॥
लोभ पाश जेहि गर न बँधाया * सो नर तुमसमान रघुराया ॥
यह गुण साधनते नाहिं होई * तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई ॥
तब रघुपति बोले मुसुकाई * तुमप्रियमोहिं भरतजिमिभाई॥
अब सोइ यत्न करहु मनलाई *जेहि विधि सीताकी सुधि पाई ॥
दोहा-इहिविधि होत बतकही, आये वानर यूथ ॥
नाना वरण अतुल बल, देखिय कीश बरूथ ॥ ३८ ॥
वानर कटक उमा मैं देखा* सो मूरख जो किय चह लेखा॥
आय राम पद नावहिं माथा *निरखिवदन सबहोहिंसनाथा ॥
अस कपि एक न सेना माहीं * राम कुशल पूँछी जेहि नाहीं ॥
यहनहिंकछु प्रभुकी अधिकाई * विश्वरूप व्यापक रघुराई ॥
ठाढे जहँ तहँ आयसु पाई * कहि सुग्रीव सबहिं समुझाई ॥
राम काज अरु मोर निहोरा * वानर यूथ जाहु चहुँ ओरा ॥

१ सुग्रीव । २ लक्ष्मणजी । ३ विषयकही इंद्रियासक्त मोर तोर तैं मैं मद अष्टजाति कुल, रूप, यौवन, विद्या, धन, ज्ञान, मान । ४ आचरण ।

जनकसुता कहँ खोजहु जाई * मास दिवस महँ आयसुभाई ॥

अथ क्षेपक ।

तब कपीश दुइ दूत बुलाये * गज गवाक्ष आतुर चलिआये ॥
मन बुधि निगम केर गति जानी * बोलेउ कीश सुधासम बानी ॥
सियखोजनहित पूर्व सिधायउ * रामकाजकहँविलँब नलायउ ॥
उदधि सोत सरिता गिरिझरना * ब्रह्मपुरी कामावति बरना ॥
सर वापी गिरि कंदर जेते * देवनगर खोहादिक तेते ॥
जोकोउ तुमहिंमिलहिंजगमाहीं * सीता सुधि पूँछहु तिनपाहीं ॥
दोहा-रामचरण परणाम कर, उर धरि युगल स्वरूप ॥
सात कोटि वानर बली, चले पूर्व कहँ भूप ॥ १ ॥
वाली अनुज सुषेण बुलावा * करि सन्मान निकट बैठावा ॥
तुम मयंद उत्तरदिशि जाहू * सीता सुधि पूँछेहु सबकाहू ॥
मादनगंध सुमेरु महीधर * अर्जुन शैल नीलगिरि कंदर ॥
शिव कैलास अलकपुर छानी * गँधरव यक्ष पूँछ मृदुवानी ॥
उनहिं पूँछ आगे धरि पाऊं * जायहु दिव्य सरोवर ठाऊं ॥
पुष्प भार जहँ विटप सुहाये * परशतहैं धरणी नियराये ॥
श्रमनिवारि कछु करहु अहारा * प्रभु कारज हिय धरहुकरारा ॥
दोहा-ऋषि तपस्विन लों बूझिकै, करहु वलिष्ठ पयान ॥
श्वेत भूमि उत्तर दिशा, अन्त धराको जान ॥ २ ॥
शिखर सुमेरु मही कैलासू * काकभुशुंडि फेर वनवासू ॥
कुंड एक तहँ मोतीचूरा * पानी अमृत कीच कपूरा ॥
जमुनी वृक्ष अहै तेहिं ठाऊं * जम्बुद्वीप जासु ते नाऊं ॥
गज समान लागे फल ताही * अमृत रस कहि निगमसराहीं ॥
पकत सो फल धरणीपर परई * तेहिके शाक कुंड बहु भरई ॥
दिव्यरूप चढ देव विमाना * तेहिके नीर कराहिं अस्नाना ॥
सो शुभ नीर सरितहोयबहई * अवध समीप प्रसिद्ध सोअहई ॥

जहँ मज्जन कीनेते वीरा * सकल पाप दुख हरै शरीरा ॥
फल भोजन जल पान करेहू * राम काज हित हिये धरेहू ॥
शूरसेन कर मंडप जहाँ * सुमिरि राम जायहु पुनि तहाँ॥
लोमशऋषि कर दर्शन करहू * पुनि शांडिल्य जहाँ अनुसरहू॥
दोहा-रनवनघनजल शोधिके, सिया बतायहु राम ॥
मासदिवस महँ आतुर, फिरहु लहहु विश्राम ॥ ३ ॥
निज प्रभुकेरि मानि हित बानी * शीशधरे प्रभु चरणन आनी ॥
निदरि पवन दोऊ उठि चले * पद्म एकदश बनचर भले ॥
पुनि सुग्रीव ओर मुख देखी * वीर शतबलिहि कहा विशेषी ॥
सुनहु सुवीर प्राण हितकारी * राम काज हिय धरहु सँभारी ॥
तुमवसंत पश्चिम दिशि गवनी * सीता सुधि पूँछहु सब अवनी॥
पश्चिम देश शैल सर जायहु * अग्निदेव कर जोर मनायहु ॥
खोजो सब तहँके अस्थाना * रामकाज हित करहु पयाना ॥
रंगभूमि जायहु पुनि भाई * सीता सुधि पूँछेहु सब ठाँई ॥
सरिता शैल सुगिरि बन जेते * खोजहु सीतहि हित धरि तेते॥
जोकोउ मिलै महामुनिज्ञानी * पूँछहु समाचार मृदु बानी ॥
तुम्हरे बल गर्जत मैं भाई * मिलवहु वेगि जानकिहि आई॥
दोहा-पश्चिमदिशा विशेषसो, जहाँ धराको अन्त ॥
एकमास में लाइ सुधि, फिरौ वेग बलवन्त ॥ ४ ॥
चरण कमल सबकरहिं प्रणामा * पश्चिमदिशा चले बलधामा ॥
दशपटलाख हरी हर बोलत * चलेजाहिं गिरि कन्दर तोलत॥
इति क्षेपक ।
अवधि मेटि जो विनुसुधि पाये * अवशिमारिहि सोममकर आये
दोहा-वचन सुनत सब वानर, जहँ तहँ चले तुरन्त ॥
तब सुग्रीव बुलायउ, अंगदादि हनुमन्त ॥ २१ ॥
सुनहु नील अंगद हनुमाना * जाम्बन्त मतिधीर सुजाना ॥

सकलसुभटमिलि दक्षिणजाहू * सीता सुधि पूँछेहु सब काहू ॥
मनवचक्रमसों यतन बिचारेहु * रामचन्द्र कर काजसँवारेहु ॥
भानुपीठ सेइय उर आगी * स्वामी सेइय सब छलत्यागी॥
तजि माया सेइय परलोका[1] * मिटहि सकलभवसंभवशोका[2]॥
देह धरेकर यह फल भाई * भजिय राम सब कामबिहाई ॥
सोइ गुणज्ञ सोई बड़भागी * जो रघुबीर चरण अनुरागी ॥
आयसु माँगि चरण शिरनाई * चले सकल सुमिरत रघुराई ॥
पाछे पवनतनय शिरनावा * जानि काज प्रभुनिकटबुलावा॥
परशा शीश सरोरुह पानी * कर मुद्रिका दीन्ह जन जानी॥
बहुप्रकार सीतहि समुझायहु * कहि बल बिरह बेगि तुमआयहु॥
हनुमत जन्म सफल करिजाना * चले हृदय धरि कृपानिधाना ॥
यद्यपि प्रभु जानत सब बाता * राजनीति राखत सुरत्राता ॥
दोहा–चले सकल बन खोजत, सरिता सर गिरि खोह ॥
रामकाज लवलीन मन, बिसरा तनुकर छोह ॥ ४० ॥
कतहुँ होइ निशिचरसन भेंटा * प्राण लेहिं इक इक चपेटा ॥
"वज्रदंड इक राक्षस आवा * देखत कपिन परम दुख पावा ॥
भीमरूप यह को अब आवा * लखि अंगदक्रोधितउठिधावा"॥
देखत ताहि कोप युवराजा * सन्मुख जाय ताहिसनबाजा ॥
मल्लयुद्ध अति भयो अपारा * सब वानरमिलिकीन्ह विचारा॥
प्रथम पयानकाल चलिआवा * कहकपि विधिकाकीनबनावा॥
वालिसुवन तब हृदय विचारा * मुष्टिक एक तासुशिरमारा ॥
रामरूप हृदयमें आनी * अर्द्ध उर्ध्व धरि चीर भवानी ॥
जयजय शब्द भयो तेहिं बारा * पवनपुत्र हिय हर्ष अपारा ॥
वीसकोटि सँग सैन सुहाई * चले सकलजय कहि रघुराई॥
बहुप्रकार गिरि कानन हेराहिं * कोउमुनिमिलैताहि सब घेराहिं॥
लागि तृषा अतिशय अकुलाने * मिलै न जल घन गहनभुलाने॥

१ परलोक कही मोक्ष सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य, त्याहिचारिकं प्रति श्रीरामचन्द्र तिनकर सेवनकरिये ।
२ सम्भव कही उत्पन्न काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य इत्यादिक ।

तब हनुमान कीन्ह अनुमाना * मरण चहत सबबिनु जलपाना॥
चढ़िगिरि शिखर चहूँदिशिदेखा * भूमि विवर इक कौतुक पेखा ॥
चक्रवाक बक हंस उड़ाहीं * बहुतकखगप्रविशहिंतेहिमाहीं॥
गिरिते उतरि पवनसुत आवा * सब कहँ लै सो विवर दिखावा ॥
आगे करि हनुमन्तहि लीन्हा * पैठे विवर विलम्ब न कीन्हा ॥
"योजन चारि दुर्ग अति बाँकी * मयदानव गढ़ कीना ढाँकी ॥
दोहा-दीख जाइ उपवन सुभग, सर विकसे बहु कंज ॥
मन्दिर एक रुचिर तहँ, बैठि नारि तप पुंज ॥ ४१ ॥
दूरिहिते त्यहि सब शिरनावा * पूँछेसि निज वृत्तांत सुनावा ॥
तब तेइँ कहा करहु जलपाना * खाहु सरस सुन्दरफल नाना ॥
मज्जन कीन्ह मधुर फल खाये * तासु निकट पुनि सबचलिआये
तेहि सब आपनि कथा सुनाई * मैं अब जाब जहाँ रघुराई ॥
"देवांगना सुनाम हमारी * एकसमय तपकरन विचारी ॥
ब्रह्मासे माँगेउँ वरदाना * दर्शन मैं पाऊँ भगवाना ॥
ब्रह्मा कह्यो रह्यो यहि थाना * आवहिं यहाँ कीश बलवाना ॥
तिनसों राम खबर तुम पाई * दर्शन पावहुगी रघुराई ॥
सो वह सत्य भई अब वानी * जाउँ दर्शहित शारँगपानी" ॥
मूँदहु नयन विवर तजि जाहू * पैहहु सीतहि जानि कदराहू ॥
नयनमूँदि तब देखिहिं वीरा * ठाढ़ सकल सिन्धुके तीरा ॥
सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा * जाइ कमलपद नायसि माथा॥
नानाभाँति विनय त्यइँकीन्ही * अनपावनी भक्ति प्रभु दीन्ही ॥
दोहा-बदरीवन कहँ सो गई, प्रभु आज्ञा धरि शीश ॥
उर धरि राम चरण युग, जो वंदित अज ईश ॥४२॥
इहाँविचारहिं कपि मन माहीं * बीती अवधि काज कछु नाहीं॥
सब मिलि करहिं परस्पर बाता * विनु सुधि लियेकरबकाभ्राता॥
कह अंगद लोचन भरि वारी * दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी॥

इहाँ न सुधि सीताकर पाई * वहाँगये मारिहि कपिराई ॥
पिता बधे पर मारत मोही * राखा राम निहोर न ओही ॥
पुनि पुनि अंगद कह सबपाहीं * मरणभयो कछु संशय नाहीं ॥
अंगद वचन सुनत कपिवीरा * बोलि न सकहिं नयनबहनीरा ॥
क्षण इक शोक मगन ह्वै भये * पुनि असवचन कहतसबभये ॥
हम सीताकी बिन सुधि लीने * फिरब न सुनु युवराज प्रवीने ॥
अस कहि लवणसिन्धुतटजाई * बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥
जाम्बवन्त अंगद दुख देखी * कही कथा उपदेश विशेखी ॥
तात राम कहँ नर जनि जानहु * निर्गुणब्रह्म अजित अजमानहु॥
हम सब सेवक अति बड़भागी *सन्तत सगुण ब्रह्म अनुरागी ॥
दोहा–निज इच्छा अवतरेउ प्रभु, सुर द्विज गो महि लागि ॥
सगुण उपासक रहहिं सब, मोक्ष सकल सुखत्यागि ॥४३॥
यहिविधि कहत कथा बहु भाँती * गिरिकन्दरा सुना सम्पाती॥
बाहरहोइ देखे सब कीशा * मोहिं अहार दीन्ह जगदीशा ॥
आजु सबनकहँ भक्षणकरऊं * दिन बहुगए अहार बिनुमरऊं ॥
कबहुँ न मिलि भरिउदरअहारा * आजुदीन्हविधि एकहिंवारा ॥
डरपे गृध्र वचन सुनि काना * अबभा मरण सत्य हम जाना॥
कपि सब उठे गृध्र कहँ देखी * जाम्बवन्त मन शोचविशेखी ॥
कहविचारि अंगद मन माहीं * धन्यजटायुसरिसकोउनाहीं ॥
राम काज कारण तनु त्यागी * हरिपुर गयउ परम बड़भागी ॥
जो रघुवीर चरण चित लावै * तिहिंसमधन्य न आनकहावै ॥
सुनि खग हर्ष शोक युत वानी * आवा निकट कपिन भयमानी॥
ताहि देखि सब चले पराई * ठाढ कीन्ह तिन्ह शपथ दिवाई॥
तिन्हैं अभयकरि पूँछेसि जाई * कथा सकल तिन ताहिसुनाई॥
सुनि सम्पाति बन्धुकी करणी * रघुपतिमहिमाबहुविधिवरणी॥
दोहा–मोहिं लै चलहु सिन्धु तट, देउँ तिलांजलि ताहि ॥

१. कुश । २ सात्विक, राजस, तामस, तीनिहुँ गुणके पर हैं अज अजित कहीं कालहूके जीतिने योग्यहैं काल जिनकी आज्ञामें हैं।

वचन सहाय करब मैं, पैहहु खोजहु जाहि ॥ ४४ ॥
अनुज क्रियाकरि सागरतीरा * कहि निजकथा सुनहुकपिवीरा॥
हम दोउ बन्धु प्रथम तरुणाई * गगन गये रवि निकटउड़ाई ॥
तेज न सहिसकसोफिरि आवा * मैं अभिमानी रवि नियरावा ॥
जरे पंख रवितेज अपारा * परेउँ भूमि करि घोर चिकारा
मुनि इक नाम चन्द्रमा ओही * लागी दया देखि कर मोही ॥
बहुप्रकार तिन्ह ज्ञान सिखावा * देह जनित अभिमान छुड़ावा॥
त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरिहैं * तासु नारि निशिचरपतिहरिहैं॥
तासु खोज पठवहिं प्रभु दूता * तिन्हैं मिले तुम होब पुनीता ॥
जमिहहिं पंख करसि जनि चिंता * तिन्हें देखाइ देव तैं सीता ॥
यहकहिमुनिनिजआश्रमगयऊ *तिहिंक्षणहृदयज्ञानकछुभयऊ॥
"पुनि संपाती वचन उचारी * सुनो गिरा ममहू हितकारी ॥
पुत्र मोर सुप्रन तेहि नाऊं * सेवत मोहिं सदा यहि ठाऊं ॥
दोहा–क्षुधावन्त यक दिन भयउँ, कही पुत्र सुन बात ॥
वेगभक्षले आवहू, नतौ प्राण मम जात ॥ १ ॥
सुत शिर आज्ञा धारि सिधावा * मोहिं धीरज दे बहु समुझावा॥
नभपथ होय महावन गयऊ * गज मृगराज हनत बहुभयऊ॥
अस्त पतंग बहुरि घर आवा * क्षुधावश्य मैं क्रोध बढावा ॥
ज्ञान रंक मैं अधम अभागा * सुतको शाप देन तब लागा ॥
गहि ममबाहु कहेउ समुझाई * सुनहुतात मम वच चितलाई॥
जब आरण्य गयउँ मै ताता * तहँ पुनि एक भयउ उत्पाता॥
वीसभुजा दश मस्तक ताहीं *आतुर चलेउ जात मगमाहीं ॥
संग नारि इक दिव्य अनूपा *कोउ नाहिं वरणसकै तेहिरूपा॥
कोटि सुधाकर नख बलिहारी * रंभा रती शचीसी नारी ॥
जंतु जान तेहि धरा पछारी * दीनों छोड निरख सोइ नारी ॥
करमोहिंविनयदक्षिणादिशिगयऊ* याहिकारणविलम्बमोहिंभयऊ

सुनत वचन मोहिं लागि अँगारा * आपनि गति विचार हियहारा ॥
मैं तनु पंख हीन का करऊं * आतुर जाय आहि अब घरऊं ॥
दोहा-पंखहीन अवसर गये, सुत वल कौन विकारि ॥
गहि मम निकट न लायहु, हती रामकी नारि ॥ २ ॥
तब मुनिवचन ध्यान हियआवा * हियमें धीरज तव कछु पावा ॥
यहि मिस राम जो दूत पठावहिं * सियसुधि लेन अरण्यहिआवहिं
देखत दरश होब वडभागी * तुव मग देखत मन अनुरागी" ॥
सदा राम कर सुमिरण करऊं * निशि दिन मग जोवतादिन भरऊं
मुनिकी गिरा सत्य भइ आजू * सुनि ममवचन करहु प्रभुकाजू ॥
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका * तहँ रह रावण सहज अशंका ॥
तहाँ अशोकवाटिका अहई * सीय बैठि तहँ शोचति रहई ॥
दोहा-मैं देखौं तुम नाहिं न, गृध्रहि दृष्टि अपार ॥
बूढ़ भयो नतु करतेउँ, कछुक सहाय तुम्हार ॥ ४५ ॥
जो लाँघै शत योजन सागर * करै सो रामकाज अति आगर
जो कोइ करै रामकर काजू * तेहिसम धन्य आन नाहिं आज ॥
मोहिं विलोकि धरहु मन धीरा * राम कृपा कस भयउ शरीर ॥
पापिउ जाकर सुमिरण करहीं * अति अपार भवसागर तरहीं ॥
तासु दूत तुम तजि कदराई * रामहृदय धरि करहु उपाई ॥
असकहि उमा गृध्र जब गयऊ * सबके मन अति विस्मयभयऊ
निज निज बल सबकाहू भाखा * पारजान कर संशय राखा ॥
जरठ भयों अब कह ऋक्षेशा[1] * नाहिं तनु रहा प्रथमबल लेशा ॥
जबहिं त्रिविक्रम[2] भये खरारी[3] * तब मैं तरुण रह्यों बल भारी ॥

अथ क्षेपक ।

दोहा-धरि अंगदहि सब कहा, अब कछु करहु उपाय ॥
है कोउ सुभट प्रवीण अस, सिन्धु उलँघि जो जाय ॥ ४६ ॥
बोला विकट सुनहु युवराजू * योजनबीस उलंघहुँ आजू ॥

१. जाम्बवन्त । २ वामनरूप । ३ परमेश्वर ।

नील कहा चालिस मैं जाऊं * आगे परत मोर नहिं पाऊं ॥
नीलवचन सुनि दुर्धर कहई * योजन पचास मोरबल अहई ॥
बोल्यो नल दुइ भुजा उठाई * योजनसाठि मोरिगति भाई ॥
दधिमुख कह अस्सी उपरंता * योजनसात जानु बलवंता ॥
सुनहु वचन मम सुभटप्रवीना * आगे होइ मोर बलहीना ॥
सुनि सब वचन बोल युवराजू * यांहि बलहोइ नप्रभुकरकाजू ॥
बहु दुख कृशि जब अंगद देखी * जाम्बवन्त तब कहा विशेखी ॥
बूढ भयउँ अब कहेउऋछेशा * नहिं तनुरहा प्रथम बललेशा ॥
वृद्ध भये बल ऐसा भाई * नाँघत पलमें जलधिहि धाई ॥
सबकहि बात सत्य सन्मानी * मानी सत्य कर्म्म मन वानी ॥
यक दिन बद्रिक आश्रमगयऊ * अरन विलोकिमहासुखभयऊ ॥
भक्षण करिफल पीन्हा पानी * बैठेउँ एक शिलासुख मानी ॥
ब्रह्मज्ञान इक विप्र सुजाना * बैठि अराधत श्रीभगवाना ॥
ताहि वधन[1] यक दानव आवा * देखत नयन क्रोध मोहिं छावा ॥
सुनि भयदेखि गयउँ तेहि सामू * तेहुततर कीन्हा असकामू ॥
तीस योजन इक शैल उठाई * मारेसि मोहिं गोड़में आई ॥
लागत गिरि तनु सहा प्रहारा * भयो क्रोध तेहि अवनि[2]पछारा ॥
चीरेउ दोउ चरण करि रीसा * सुखपायो द्विज[3] दीन अशीसा ॥
सोबल नहिं अब तुमहिंबखानू * सुनत बात सब अचरजमानू ॥
शैल प्रहार करत मम पाऊँ * योजन नवे पाँच महँ जाऊँ ॥

इति क्षेपक ।

दोहा–बलि बाँधत प्रभु बाढेउ, सो तनु[4] बरणि न जाइ ॥
उभय घरीमहँ दीन्हमैं, सात प्रदक्षिण धाइ ॥ ४७ ॥

अंगद कहा जाउँ मैं पारा * जिय संशय कछु फिरतीबारा ॥
जाम्बवंत कह तुम सब लायक * किमिपठवौं सबहीं करनायक ॥
कहाऋच्छपति सुनु हनुमाना * का चुपसाधि रह्यो बलवाना ॥

१ मारनेके कारण । २ पृथ्वीमें । ३ विप्र । ४ शरीर ।

पवनतनय बल पवन समाना * बुधि बिवेक बिज्ञान निधाना ॥
कौनसोकाज कठिनजगमाहीं * जो नहिं तात होइ तुमपाहीं ॥

अथ क्षेपक ।

तव उत्पति अब कहौंसहेता * सुनहु सकल बैठे इहरेता ॥
हिमचल पर्वतके इक पासा * कश्यपऋषि तपराज प्रकाशा ॥
दिग्गज इक ऐरावतकी सम * आयो ऋषि सन्मुख दुर्धरयम ॥
निरखिताहिऋषि सकलसकाने * चलेनचरण शिथिलभयमाने ॥
तात तोर तेहि बनकर राजा * केशरिनाम तेज बल छाजा ॥
सो गज देखि मुनी तेहि ओरा * हेकपि सकल शरणहै तोरा ॥
ऋषि दुख देखि ब्यथा मनमाहीं * धायो तुरत तात बलवाहीं ॥
भिन्यो ताहि यक मुष्टिक मारा * उभय दशनगहि भूमि पछारा ॥
पऱ्यो धरणि करि घोरचिकारा * तब मुनि होय प्रसन्नबिचारा ॥
दोहा-तव पितु बहुबल देखि मन, मुनिवर दीन अशीश ॥
मॉंगु मॉंगु वर भाय मन, हर्षितमाल कपीश ॥ ४८ ॥
सानुकूल तपस्वी कहँ जानी * बोला तात जोरि जुगपानी ॥
जो प्रसन्न मोपर भगवाना * पुत्र देहु बल अनिलसमाना ॥
एवमस्तु कहि ऋषि तब गयऊ * आगिल चरित सुनहुजोभयऊ ॥
माता तोरि अंजनी सती * रूप अपार नहीं हियरती ॥
नवसत साजि शृंगार बनाई * बैठी शैल शिखर पर जाई ॥
त्रिविध समीर बहै सुखदाई * निरखत बन शोभा अधिकाई ॥
चीरउड़ावन पवन सुवर्सा * भुजा दीर्घ कर चाहतपर्सा ॥
देखि मातु तव क्रोध करेही * लागी शाप देन पुनि तेही ॥
मारुत मधुरे वचन कहेऊ * शाप न देउ वचनसुनिलेऊ ॥
तवपति ऋषिसन सुतवरमॉंगा * ताते पराशि अंग तर लागा ॥
निज काया धरि मिले न तोहीं * काहेक शाप देति तुम मोहीं ॥
अस कहि पवन गुप्त होय रहेऊ * सो तव माता पतिसन कहेऊ ॥

१ स्थान । २ पर्वतका कँगूरा । ३ ठंडी मंद सुगंध वायु । ४ वायु ।

अब तव जन्म कहहुसुखमानी * सुनहु सकल वन दीपकजानी ॥
शुभ नक्षत्र शुभ घरी सुहाई * जन्मत भयउ देव बल पाई ॥
पुनि वरदान पवनकर दरशा * धीरज तोहि पिताकर परशा ॥
उदित भये दंपति सुख साने * करहिं केलि मनमहँ सुखमाने ॥
एक दिवस माताकी गोदा * करत रहेउ पयपान विनोदा ॥
देखेउ अरुणबंधु छबि लाला * तड़कि अकाशगयोततकाला ॥
सूर्यगहन जब भुजा पसारा * क्रोधे इंद्र वज्र सो मारा ॥
दोहा–सहि प्रहार मन क्रोधकरि, धाहि पतंगाहि लीन ॥
बाल अवस्था व्यसनते, सूरजका भषकीन ॥४९॥
अंधकार चारिउ दिशि भयऊ * जप तप दान धर्म रहि गयऊ ॥
स्तुति सुरन कीन्ह निजहेता * बोले शिव गुण ज्ञान निकेता ॥
धरहुधीर जनि होहु उदासा * सब मिलि चलहु केशरी पासा ॥
शिव विरंचि सुर इंद्र समेता * आये सकल केशरी निकेता ॥
कह सुत तोर सूर्य गहि लीना * श्वास समीर रोकि दुखदीना ॥
तजहु भानु रहें प्राण भलाई * तुमकहँ सुयश होय जगमाई ॥
जो मनभाव सो लेहु वरदाना * तजहु पतंग होइ कल्याना ॥
देवगिरा सुनि सुंदरवानी * बोलत तात जोरि युगपानी ॥
अमरअजीत सकलबलसागर * सुतहि देहु वर देवन नागर ॥
रामभक्त अरु निकट निवासी * यह वरदान देव बलराशी ॥
एवमस्तु सब देवन कीना * सूर्य समीर छाँड़ि तब दीना ॥
दै वरदान देव सब गयऊ * विचरे वनहिं महासुखभयऊ ॥
तात मातकर प्राण समाना * इंद्रजु हनौ नाम हनुमाना ॥
तजहु शोक मन आनहु धीरा * मोहिं निश्चय सेवक रघुवीरा ॥
हनुमत वचन सुनत सबकाना * जयजयजय सबकरहिंबखाना ॥
होइहै सिद्ध रामकर काजा * अति सुखलहेउ हियेयुवराजा ॥
जाम्बवंत औरौ नल नीला * अंगद आदि सुभट बलशीला ॥

१ दूध । २ देवतन । ३ स्थान । ४ सूर्य । ५ बाणी । ६ अंगद ।

मिले सबै हनुमंतहि धाई * राम काज लग जानु सुभाई ॥
बोले पवनंतनय सुखबानी * धरहु धीर कारज शुभजानी ॥
कह हनुमंत सिंधुतन देखी * राम रूप उर आनि विशेषी ॥
तब ऋक्षेश अस वचन उचारा * सादर सुनहु समीरकुमारा ॥
इति क्षेपक ।
राम काज लगि तव अवतारा * सुनि कपि भयउ पर्वताकारा॥
कनकवर्णतनु तेज विराजा * मानहुँ अपर गिरिनकर राजा॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा * लीलहिंलाँघौंजलनिधि खारा ॥
सहित सहाय रावणहिं मारी * आनौं इहाँ त्रिकूट उपारी ॥
जाम्बवन्त मैं पूँछौं तोहीं * उचित शिखावन दीजै मोहीं॥
इतना करहु तात तुम जाई * सीतहि देखि कहौ सुधि आई॥
तब निज भुजबल राजिवनयना * कौतुकलागि संगकपिसयना ॥
छंद–कपिसेन संग सँहारि निशिचर राम सीतहि आनिहैं ॥
त्रयलोक पावन सुयश सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परमपद नर पावहीं ॥
रघुवीरपद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावहीं ॥ ३ ॥
दोहा–भव[2]भेषज रघुनाथ यश, सुनै जो नर अरु नारि ॥
तिनकर सकल मनोरथ, सिद्धि करहिं त्रिपुरारि ॥ ५० ॥
सो०–नीलोत्पल[3] तनु श्याम, काम कोटि शोभा अधिक ॥
सुनिय तासु गुणग्राम, जासु नाम अघ खग वधिक ॥ ३ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनोनाम तुलसीकृतरामायणे किष्किन्धाकांडे चतुर्थः सोपानः समाप्तः ॥ ४ ॥

इति किष्किन्धाकाण्ड समाप्त ४.

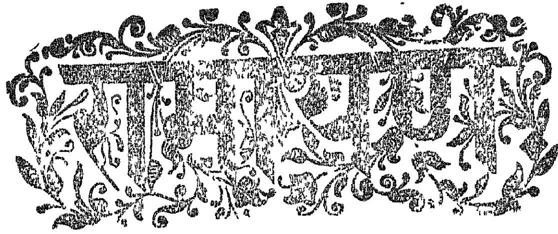
खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय–बंबई.

१ हनुमानजी । २ भव कही संसार विषे जन्म मरण रोग सो नाश करिबेको भेषज कहि औषध संजीवन मूरिहै । ३ नीलमणि ।

श्रीमद्रङ्गेशो विजयते।

अथ

श्रीयुतगोस्वामितुलसीदासजीकृत-



सटिप्पण,

सुन्दरकाण्ड ५.

संपूर्ण क्षेपकों सहित.

जिसमें

हनुमानजीका सिन्धुउल्लंघन, लंकाकी शोभा वर्णन, जानकीका मिलाप, अशोकवाटिका विध्वंसन, अक्षकुमार वध, रावणसे वार्ता पश्चात् लंकादहन, तथा सीताजीसे चूडामणि ले राम मिलाप, रामचन्द्रजीका कटक सहित सिन्धुपर पहुँचना, विभीषण प्रपत्ति, मंदोदरीका रावणको समझाना, विभीषणको रामजीकी शरण आना, रावणको रामसैन्यमें दूत भेजना तथा सेतुबन्ध मंत्र दृढ करना इत्यादि अद्भुत राम भक्ति स्वरूपकथा वर्णित हैं।

यह ग्रन्थ

पण्डित-ज्वालाप्रसादमिश्रजीकेद्वारा

शुद्धकराकर,

खेमराज श्रीकृष्णदासने,

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

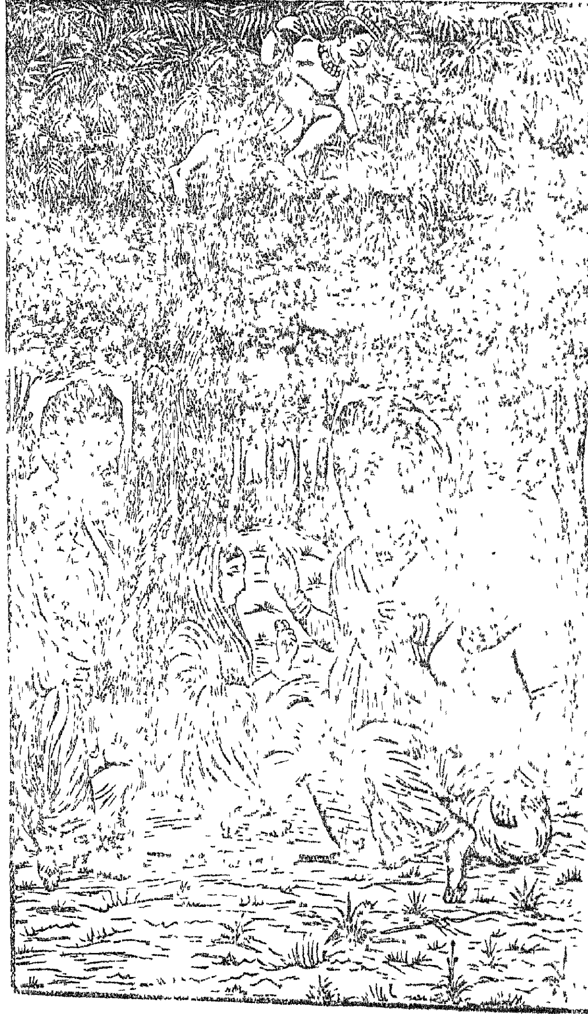
मुद्रितकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९६२, शके १८२७.

ॐ सुन्दरकाण्ड ५. ॐ

दोहा--यहरहस्य रघुनाथ कर, वेगि न जानै कोइ ॥
जानै ते रघुपति कृपा,स्वप्नेहु दुःख न होइ ॥

हनुमानजीका अशोक वाटिकामें दुःखित सीताको रघुनाथजीकी मुँदरी देना।



चौ०--तृपा जाइ वरु मृगजल पाना। वरु जामहिं शश शीश वृषाना ॥
अन्धकार वरु रविहि नशावै। राम विमुख सुख जीव न पावै ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय, खेतवाडी-बंबई.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS

Shree Venkateshwar (Steam) Press, Khetwadi—BOMBAY.

श्रीः ।

॥ श्रीमद्वेङ्कटेश्वराय नमः ॥

अथ श्रीतुलसीदासविरचिते-

रामायणे सुन्दरकाण्डम् ।

श्लोकाः ।

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्मशंभुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदांतवेद्यं विभुम् ॥
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वंदेहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

जाम्बवन्तके वचन सुहाये * सुनि हनुमान हृदय अतिभाये ॥
तबलगि मोहिं परखेहु भाई * सहि दुख कन्द मूल फलखाई ॥
जबलगि आवौं सीतहि देखी * होइ काज मन हर्ष विशेषी ॥

श्लोकार्थः--जो निरन्तर शान्त अप्रमेय अर्थात् प्रमाणरहित देवतोंको शांतिदेनेवाले ब्रह्मा शिवजी शेषजी करके नित्यही सेव्यमान वेदान्तसे जानने योग्य समर्थ राम जिनका नाम जगतके ईश्वर देवताओंके गुरु मायाके मनुष्य विष्णु करुणाकी खान रघुवंशियोंमें श्रेष्ठ और राजाओंके चूडामणि हैं तिनको मैं नमस्कार करताहूं ॥ १॥ सो हे रघुपति ! मेरे हृदयमें और कोई इच्छा नहीं है यह मैं सत्य कहताहूं और आप सबके अन्तःकरणके आत्माहैं. हेरघुवंशियोंमें श्रेष्ठ ! मुझे पूर्ण भक्ति दो और मेरे मनको कामादि दोषोंसे रहितकरो ॥२॥ अतुलितबलके घर, सुवर्णके पर्वतकी कान्तिके समान देह, राक्षसोंके वनको जलानेको अग्नि, ज्ञानियोंमें अग्रगण्य, सम्पूर्ण गुणोंके निधान, वानरोंके राजा रामचंद्रके श्रेष्ठदूत वायुपुत्र हनुमान्जीकी मैं वन्दना करताहूं ॥३॥

अस कहि नाइ सबनिकहँ माथा * चले हर्ष हिय धरि रघुनाथा ॥
सिन्धुतीर इक सुन्दर भूधर * कौतुक कूदि चढ़े तेहि ऊपर ॥
बार बार रघुवीर सँभारी * तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥
जेहि गिरि चरण देइ हनुमन्ता * सो चलि जाय पताल तुरन्ता ॥
जिमि अमोघ रघुपतिके बाना * ताही भाँति चला हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपतिदूत विचारी * कह मैनाक होहु श्रमहारी ॥

क्षेपक ।

इन्द्र वज्र जादिन करलीन्हा * पर्वत सबै पंख बिन कीन्हा ॥
तादिन मारुत कीन्ह सहाई * तासु तनय लंकाको जाई ॥
दोहा-सिन्धु वचन सुनि कान, तुरत उठे मैनाक तब ॥
कपि कहँ कीन्ह प्रणाम, बार बार करजोरिकै ॥

इति क्षेपक ।

दोहा-हनूमान तेहि परशि करि, पुनि तेहि कीन्ह प्रणाम ॥
रामकाज कीन्हें बिना, मोहिं कहाँ विश्राम ॥ १ ॥
जात पवनसुत देवन देखा * जानाचह बल बुद्धि विशेषा ॥
सुरसा नाम अहिनकी[1] माता * पठई देव कही तिन बाता ॥
आज सुरन मोहिं दीन अहारा * सुनि हँसि बोला पवनकुमारा ॥
रामकाज करि फिरि मैं आवौं * सीताकी सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥
तब तव वदन[2] पैठिहौं आई * सत्य कहौं मोहिं जानदे माई ॥
कवनिहुँ यतन देहि नहिं जाना * ग्रससि न मोहिं कहा हनुमाना ॥
योजन भरि तेइँ वदन पसारा * कपितनु कीन्ह दुगुणविस्तारा ॥
सोरह योजन मुख तेइँ ठयऊ * तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ ॥
जस जस सुरसा वदन बढ़ावा * तासु दुगुण कपि रूप दिखावा ॥
शतयोजन तेहि आनन[3] कीन्हा * अति लघुरूप पवनसुत लीन्हा
वदन पैठि पुनि बाहर आवा * माँगी बिदा ताहि शिरनावा ॥
मोहिं सुरन्ह जेहि लागि पठावा * बुधि बल मर्म तोर मैं पावा ॥

१ सर्पोंकी माता । २ मुखमें । ३ मुख ।

दोहा-राम काज सब करिहहु, तुम बल बुद्धिनिधान ॥
आशिषदै सुरसा चली, हर्षि चले हनुमान ॥ २ ॥

निशिचर एक सिन्धु महँ रहई * करि माया नभके खग गहई ॥
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं *जल बिलोकि तिनकीपरिछाहीं॥
गहै छाँह सक सोन उड़ाई * इहिविधि सदा गगनचर खाई ॥
सोइ छल हनूमानसन कीन्हा *तासुकपटकपि तुरतहि चीन्हा॥
ताहि मारि मारुतसुत बीरा * वारिधि पार गयउ मतिधीरा॥
तहाँ जाइ देखी वन शोभा * गुञ्जत चञ्चरीक मधुलोभा ॥
नाना तरु फल फूल सुहाये * खग मृग वृन्द देखि मनभाये ॥
शैल विशाल देखि इक आगे * तापर कूदि चढेउ भय त्यागे ॥
उमा न कछु कपिकी अधिकाई * प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥
गिरिपर चढि लंका तेहिं देखी *कहि न जाइ अति दुर्ग विशेखी ॥
अति उतंग जलनिधिचहुँपासा * कनककोट कर परम प्रकासा ॥

छंद समष्टी ।

कनककोट विचित्र मणि कृत सुन्दराजित अति घना ॥
चौहट्ट हट्ट सुघट्ट बीथी चारु पुर बहुविधि बना ॥
गजवाँजि खच्चर निकर पदचर रथवँरूथनिको गनै ॥
बहु रूप निशिचर यथ अति बलसेन वर्णत नहिं बनै ॥१॥
वन बाग उपवन वाटिका सर कूप वापी सोहहीं ॥
नर नाग सुर गन्धर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥
कहुँ मल्ल देह विशाल शैल समान अति बल गर्जहीं ॥
नाना अखारन्ह भिरहिं बहुविधि एक एकन तर्जहीं ॥२॥
करि यत्न भट कोटिन्ह विकट तनु नगर चहुँदिशि रक्षहीं ॥
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खग निशाचर भक्षहीं ॥
इहिलागि तुलसीदास इनकी कथा संक्षेपहि कही ॥
रघुवीर शर तीरथ सरित तनु त्यागि गति पैहैं सही ॥३॥

१ समुद्र । २ घोडा । ३ समूह । ४ झुंडके झुंड ।

दोहा-पुर रखवारे देखि बहु, कपि मन कीन्ह विचार ॥
अतिलघुरूप धरौं निशि, नगर करौं पैसार ॥ ३ ॥
मशक[1] समान रूप कपिधरी * लंका चले सुमिरि नरहरी ॥
नाम लंकिनी एक निशिचरी * सो कह चलेसि मोहिं निंदरी ॥
जानसि नाहिं मर्म शठ मोरा * मोर अहार लंक कर चोरा ॥
मुष्टिक एक ताहि कपिहनी * रुधिर[2] वमत धरणी ठनमनी ॥
पुनि संभारि उठी सो लंका * जोरि पाणि करिविनयसशंका॥
जब रावणहिं ब्रह्म वर दीन्हा * चलतविरंचिकहा मोहिंचीन्हा॥
"त्रेता राम लषण अवतरहीं * भक्त हेतु मानुष तनु धरहीं ॥
तासु प्रिया रावण हर लावै * सो अपनो यक दूत पठावै" ॥
विकल होसि जब कपिके मारे * तब जानसि निशिचर संहारे ॥
तात मोर अति पुण्य बहूता * देखेउँ नयन राम कर दूता ॥
दोहा-तात स्वर्ग[3] अपवर्ग[4] सुख, धरी तुला[5] इक अंग ॥
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सत्संग ॥ ४ ॥
प्रविशि नगर कीजै सब काजा *हृदय राखि कोशलपुर राजा ॥
गरल सुधा रिपु करै मिताई * गोपद सिन्धु अनल शितलाई॥
गरुअ सुमेरु रेणुसम ताही * रामकृपाकरि चितवहिं जाही॥
अति लघुरूप धरेउ हनुमाना *पैठ्यो नगर सुमिरि भगवाना॥
मन्दिर मन्दिर प्रतिकरि शोधा * देखे जहँ तहँ अगणित योधा॥
गयेउ दशानन मन्दिर माहीं *अतिविचित्रकहिजात सुनाहीं ॥
शयन किये देखा कपि तेही * मन्दिरमहँ न दीख वैदेही॥

क्षेपक-किसीमहात्माजीकीकल्पितउक्ति.

निरखत मंदिर आयउ तहँवां * कुम्भकर्ण सोवतरह जहँवा ॥
अतियकार तनु चितै नजाई * चौंतिस योजनकी चकलाई ॥
योजन तीनि तीनिके काना * बाइस योजन बाहु अजाना ॥
सत्रहयोजन जाँघ लँबाई * शतयोजनतनु वरणि नजाई ॥

१ मशा । २ रक्त । ३ भूर्भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम् । ४ मोक्ष । ५ तराज ।

दुइयोजनकै नाक जो बाढ़ी * योजन एक मूँछ रहै ठाढ़ी ॥
दोहा-षष्ठमासकै नींद तेहि, सोवत भीतर लंक ॥
बाजत ढोल जुझाउ शिर, जागत नहीं अशंक ॥ ५ ॥
शोचै लाग कहाँ अब जाऊँ * कहाँ दरश सीताकर पाऊँ ॥
बिन देखे जो सीतहि जाऊँ * कैसे वदन प्रभुहि दरशाऊँ ॥
कपिसब करैं मोर उपहासा * लछिमन मोहिंदेखावहिंत्रासा ॥
जाम्बवन्त पूँछहिं कुशलाता * नीके अहहिं जानकी माता ॥
कवन उतर देहौं तिन जाई * पवनतनय मनमहँ पछिताई ॥
निशिचर घोर भयंकर रहहीं * सीताकीसुधि कोउ न कहहीं ॥
पूँछौं काहि कहौं केहिजाई * जनकसुता सो देइ बताई ॥
इति क्षेपक ।
भवन एक पुनि दीख सुहावा * हरिमंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥
राम नाम अंकित गृह सोहा * वरणि नजाइ देखि मनमोहा ॥
दोहा-राम नाम अंकित गृह, शोभा वरणि न जाय ॥
नवतुलसीके वृन्द बहु, देखि हर्ष कपिराय ॥ ६ ॥
लंका निशिचर[1] निकर निवासा * यहाँ कहाँ सज्जन कर वासा ॥
मनमहँ तर्क[2] करन कपि लागे * ताही समय विभीषण जागे ॥
राम राम तेहि सुमिरण कीन्हा * हृदय हर्ष कपि सज्जन चीन्हा ॥
इहिसन हठि करिहौं पहिचानी * साधुते होइ न कारज हानी ॥
विप्र रूप धरि वचन सुनावा * सुनत विभीषण उठितहँआवा॥
करि प्रणाम पूँछी कुशलाई * विप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥
की तुम हरिदासन महँ कोई * मोरे हृदय प्रीति अति होई ॥
की तुम राम दीन अनुरागी * आयहु मोहिं करन बड़भागी ॥
दोहा-तब हनुमंत कही सब, राम कथा निज नाम ॥
सुनत युगल तनु पुलक अति, मगन सुमिरि गुणग्राम ॥७॥
सुनहु पवनसुत रहनि हमारी * जिमि दशनन[3]महँ जीभविचारी॥

१ राक्षस । २ विचार । ३ दाँतनमें ।

तात कबहुँ मोहिं जानिअनाथा * करिहहिंकृपाभानुकुल नाथा ॥
तामस तनु कछु साधन नाहीं * प्रीति न पद सरोज मनमाहीं ॥
अब मोहिं भा भरोस हनुमन्ता * बिनुहरिकृपा मिलहिंनहिंसंता॥
जो रघुवीर अनुग्रह कीन्हा * तौतुम मोहिंदरश हठिदीन्हा ॥
सुनहु विभीषण प्रभुकी रीती * करहिं सदा सेवकपर प्रीती ॥
कहहु कवन मैं परम कुलीना * कपि चंचल सबहीविधि हीना॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा * तादिन ताहि न मिलै अहारा॥
दोहा-अस मैं अधम सखा सुन, मोहू पर रघुवीर ॥
कीन्ही कृपा सुमिरि गुण, भरे विलोचन नीर ॥ ८ ॥
जानतहू अस स्वामि बिसारी * तेनर काहेन होइँ दुखारी ॥
इहिविधि कहत राम गुणग्रामा * पावन श्रवण सुखदाविश्रामा ॥
पुनि सब कथा विभीषण कही * जोहिविधि जनकसुता जहँरही॥
तब हनुमन्त कहा सुन भ्राता * देखा चहौं जानकी माता ॥
युक्ति विभीषण सकल सुनाई * चलेउ पवनसुत विदा कराई ॥
धरि सोइरूप गयउ पुनि तहँवाँ * वन अशोक सीता रह जहँवा॥
देखि मनहिं मन कीन्ह प्रणामा * बैठे बीति गई निशियामा ॥
कृश तनु शीश जटा इक वेणी * जपतिहृदय रघुपतिगुणश्रेणी॥
दोहा-निज पद नयन दिये मन, रामचरण लवलीन ॥
परमदुखीभा पवनसुत, निरखि जानकी दीन ॥ ९ ॥
तरु पल्लव महँ रह्यो लुकाई * करै विचार करौं का भाई ॥
तेहि अवसर रावण तहँ आवा * संग नारि बहु किये बनावा ॥
बहु विधि खल सीतहि समुझावा * साम दाम भय भेद दिखावा ॥
कहरावण सुनु सुमुखि सयानी * मंदोदरी आदि सब रानी ॥
तव अनुचरी करौं प्रण मोरा * एक बार विलोकु मम ओरा ॥
तृण धरि ओट कहति वैदेही * सुमिरि अवधपति परमसनेही॥
सुन दशमुख खद्योत प्रकाशा * कबहुँकिनलिनीकरहिंविकाशा ॥

१ दया । २ आँखोंमें । ३ जल । ४ एक पहर । ५ जुगनू । ६ कमल ।

असमन समुझति कहति जानकी * खल नहिं सुधि रघुवीरबानकी
शठ सूने हरि आनेसि मोहीं * अधम निलज्ज लाज नहिं तोहा॥
दोहा-आपुहिं सुनि खद्योत सम, रामहि भानु समान ॥
परुषवचन सुनि काढि असि, बोला अति रिसिआन॥१०॥
सीता तैं ममकृत अपमाना * काटौं तव शिर कठिन कृपाना॥
नाहित सपदि मानु मम बानी * सुमुखि होत नतु जीवन हानी ॥
श्याम सरोज दाम समसुन्दर * प्रभुभुजकरिकरसमदशकन्धर॥
सो भुजकंठकि तव असि घोरा * सुन शठ अस प्रमाण प्रणमोरा॥
चन्द्रहास हरु मम परितापा * रघुपति विरह अनल संतापा॥
शीतल निशि तव असिवर धारा * कह सीता हरु मम दुखभारा॥
सुनत वचन पुनि मारन धावा * मयतनया कहि नीति बुझावा ॥
कहेसि सकल निशिचरी बुलाई * सीतहिं त्रास दिखावहु जाई ॥
मास दिवस महँ कहा नमाना * तौमैं मारब कठिन कृपाना ॥
दोहा-भवन गयउ दशकन्धतब, इहाँ निशाचरि वृन्द ॥
सीतहि त्रास दिखावहीं, धरहिं रूप बहुमन्द ॥ ११ ॥
त्रिजटा नाम राक्षसी एका * रामचरणरत निपुण विवेका ॥
सबहिं बुलाइ सुनायसि सपना * सीतहि सेइ करौ हित अपना॥
स्वप्ने वानर लंका जारी * यातुधान सेना सब मारी ॥
खर आरूढ़ नग्न दशशीशा * मुण्डित शिर खंडित भुजबीशा॥
इहि विधि सो दक्षिणदिशि जाई * लंका मनहुँ विभीषण पाई ॥
नगर फिरी रघुवीर दुहाई * तब प्रभु सीतहि बोलि पठाई॥
यह स्वप्ना मैं कहौं विचारी * होइहि सत्य गये दिनचारी ॥
तासु वचन सुनि ते सब डरीं * जनकसुताके चरणन परीं ॥
दोहा-जहँ तहँ गईं सकल मिलि, सीताके मन शोच ॥
मास दिवस बीते मोहिं, मारिहि निशिचरपोच ॥ १२॥
त्रिजटा सन बोलीं करजोरी * मातु विपति संगिनि तैं मोरी ॥

१ निरादर वचन । २ तरवारि । ३ तरवारि । ४ शीघ्र । ५ मन्दोदरी ।

तजौं देह करु बेगि उपाई * दुसह बिरह अब सहा नजाई॥
आनु काठ रचु चिता बनाई * मातु अनल तुम देहु लगाई ॥
सत्य करहु मम प्रीति सयानी *सुनै को श्रवण शूलसम बानी ॥
सुनत वचन पदगहि समुझावा * प्रभु प्रताप बल सुयश सुनावा॥
निशिनअनलमिलुराजकुमारी * असकहिसोनिजभवनसिधारी॥
कह सीता विधि भा प्रतिकूला * मिलै न पावक मिटै न शूला॥
देखियत प्रगट गगन अंगारा * अवनि न आवत एकौ तारा ॥
पावक मय शशि स्रवत न आगी * मानहुँ मोहिं जानि हतभागी ॥
सुनहु विनयममविटपअशोका * सत्यनामकरु हरु ममशोका॥
नूतन किसलय अनल समाना * देहु आगिनि ममकरहु निदाना॥
देखिपरम विरहाकुल सीता *सो क्षण कपिहि कल्पसमबीता॥
सो०—कपि करि हृदय विचार, दीन्ह मुद्रिका डारि तब ॥
जनु अशोक अंगार, दीन्ह हर्षि उठि करगहेउ ॥१॥
तब देखी मुद्रिका मनोहर *राम नाम अंकित अति सुन्दर॥
चकित चितै मुद्रिक पहिचानी * हर्ष विषाद हृदयअकुलानी ॥
जीतिको सकै अजय रघुराई * मायाते असि रची न जाई ॥
सीता मन विचार कर नाना * मधुर वचन बोले हनुमाना ॥
रामचन्द्र गुण वर्णन लागे * सुनतहि सीताकर दुख भागे ॥
लागी सुनै श्रवण मन लाई * आदिहिते सब कथा सुनाई ॥
श्रवणामृत जिहिं कथा सुनाई * काहे न प्रगट होत किन भाई॥
तब हनुमंत निकट चलिगयऊ * फिर बैठी मन विस्मय भयऊ॥
रामदूत मैं मातु जानकी *सत्य शपथ करुणानिधानकी॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी * दीन्हराम तुमकहँ सहिदानी॥
नर वानरहि संग कहु कैसे * कही कथा संगति भइ जैसे ॥
दोहा—कपिके वचन सप्रेम सुनि, उपजा मन विश्वास ॥
जाना मन क्रम वचन यह, कृपासिन्धु कर दास ॥ १३ ॥

१ अग्नि । २ शांति । ३ ग्रह । ४ पृथ्वीमें । ५ चिह्न ।

हरिजन जानि प्रीति अतिबाढी * सजल नयन पुलकावलिठाढी॥
बूड़त विरह जलधि हनुमाना * भयउ तात मोकहँ जलयाना॥
अब कहु कुशल जाउँ बलिहारी * अनुजसहितसुखभवनखरारी॥
कोमल चित कृपालु रघुराई * कपि केहि हेतु धरी निठुराई॥
सहज बानि सेवक सुखदायक * कबहुँकसुरतिकरतरघुनायक॥
कबहुँ नयन मम शीतल ताता * होइहहिनिरखिश्यामसृदुगाता॥
वचन न आव नयन भरि वारी * अहोनाथ मोहिंनिपटबिसारी॥
देखि विरह व्याकुल अतिसीता * बोलेउ कपिमृदुवचनविनीता॥
मातु कुशलप्रभु अनुज समेता * तवदुखदुखितसोकृपानिकेता॥
जननी जनि मानहु मन ऊना * तुमते प्रेम राम के दूना॥

दोहा—रघुपतिके सन्देश अब, सुनु जननी धरि धीर॥
अस कहि कपि गद्गद भयउ, भरे विलोचन नीर॥१४॥

राम वियोग कहा सुनु सीता * मोकहँ सकल भयउविपरीता॥
नूतन[3] किसलय मनहु कृशानू[4] *कालनिशासमनिशिशशिभानू॥
कुवलय[5]विपिनकुन्तवनसरिसा * वारिद[7] तप्त तेल जनु बरिसा॥
जेहि तरु रहौं करत सो पीरा * उरगश्वाससम[8] त्रिविधसमीरा॥
कहहूते कछु दुख घटि होई * काहि कहौं यह जान न कोई॥
तत्त्व प्रेमकर मम अरु तोरा * जानत प्रिया एक मन मोरा॥
सो मन सदा रहत तोहिं पाहीं * जानु प्रीति रस इतने माहीं॥
प्रभु सन्देश सुनत वैदेही * मगन प्रेमतनु सुधि नहिं तेही॥
कह कपि हृदयधीरधरुमाता * सुमिरि राम सेवक सुखदाता॥
उर आनहु रघुपति प्रभुताई * सुनि ममवचनतजहुविकलाई॥

दोहा—निशिचर निकर पतंग सम, रघुपति बाण कृशानु॥
जननि हृदय निज धीर धरु, जरे निशाचर जानु॥१५॥

जो रघुवीर होत सुधि पाई * करते नहिं विलम्ब रघुराई॥
राम बाण रविउदय जानकी * तम वरूथ कहँ यातुधानकी॥

१ नौका। २ सन्देह। ३ तरुनकेनवीन पल्लव। ४ अग्निकेलवरतुल्य। ५ कमलके वन। ६ बरछी। ७ मेघ। ८ सर्पकेश्वाससम।

अबहिं मातु मैं जाउँ लेवाई * प्रभु आयसु नहिं राम दुहाई ॥
कछुक दिवस जननी धरुधीरा * कपिन्ह सहित ऐहैं रघुवीरा ॥
निशिचर मारि तुमहिं लैजैहैं * तिहुँपुर नारदादि यश गैहैं ॥
हैं सुत सब कपि तुम्हहिं समाना * यातुधान भट अतिबलवाना ॥
मोरे हृदय परम सन्देहा * सुनिकपिप्रगटकीन्हनिजदेहा ॥
कनक भूधराकार शरीरा * समर भयंकर अति रणधीरा ॥
सीता मन भरोस तब भयऊ * पुनिलघु रूप पवनसुतलयऊ ॥
दोहा—सुनु माता शाखामृगहि, नहिं बल बुद्धि विशाल ॥
प्रभु प्रतापते गरुडही, खाय परम लघु व्याल ॥१६॥
मन सन्तोष सुनत कपि बानी * भक्ति प्रताप तेज बल सानी ॥
आशिष दीन्ह राम प्रिय जाना * होहु तात बलशील निधाना ॥
अजर अमर गुणनिधिसुत होहू * करहु सदा रघुनायक छोहू ॥
करहिं कृपा प्रभु अससुनिकाना * निर्भर प्रेम मग्न हनुमाना ॥
बार बार नायउ पद शीशा * बोले वचन जोरिकर कीशा ॥
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता * आशिष तवअमोघ विख्याता ॥
सुनहुमातुमोहिंअतिशय भूखा * लागि देखि सुन्दर फलरूखा ॥
सुनु सुत करैं विपिन रखवारी * परम सुभट रजनीचर भारी ॥
तिनकर भय माता मोहिं नाहीं * जो तुम सुख मानहु मनमाहीं ॥
दोहा—देखि बुद्धि बल निपुण कपि, कहेउ जानकी जाहु ॥
रघुपति चरण हृदय धरि, तात मधुर फल खाहु ॥१७॥
चलेउ नाइ शिर पैठेउ बागा * फल खाये तरु तोरन लागा ॥
रहे तहाँ बहु भट रखवारे * कछु मारे कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपि भारी * तेइँ अशोक वाटिका उजारी ॥
खायासि फल अरु विटपउपारे * रक्षक मर्दि मर्दि महि डारे ॥
सुनि रावण पठये भटनाना * तिनहिं देखि गरजा हनुमाना ॥
सब रजनीचर कपि संहारे * गये पुकारत कछु अधमारे ॥

१ आज्ञा । २ राक्षस । ३ आशीर्वाद । ४ अजर कही बाल युवा वृद्ध मरणते रहित । ५ गुणके समुद्र । ६ कृतार्थ । ७ वृक्ष ।

पुनि पठवा तेइँ अक्षकुमारा * चला संग लै सुभट अपारा ॥
आवत देखि विटप गहि तर्जा * ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥
दोहा–कछु मारेसि कछु मर्दैसि, कछुक मिलायसि धूरि ॥
कछु पुनि जाइ पुकारे, प्रभु मर्कट बलभूरि ॥ १८ ॥
सुनि सुतवध लंकेश रिसाना * पठवा मेघनाद बलवाना ॥
मारेसि जनि सुत बाँधेसि ताही * देखौं कीश कहाँकर आही ॥
चला इंद्रजित अतुलित योधा * बन्धुवधन सुनि उपजा क्रोधा ॥
कपि देखा दारुण भट आवा * कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥
अति विशाल तरु एक उपारा * विरथ कीन्ह लंकेशकुमारा ॥
रहे महाभट ताके संगा * गहि गहि कपि मर्दैसि निजअंगा
तिन्हैं निपाति ताहिसनबाजा * भिरे युगल मानहु गजराजा ॥
मुष्टिक मारि चढा तरु जाई * ताहि एक क्षण मूर्च्छा आई ॥
उठि बहोरि कीन्हेसि बहु माया * जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥
दोहा–ब्रह्म अस्त्र तेहि साधेऊ, कपिमन कीन्ह विचार ॥
जो न ब्रह्मशर मानऊं, महिमा मिटै अपार ॥ १९ ॥
ब्रह्मबाण तेहि कपि कहँ मारा * परातिहु बार कटक संहारा ॥
तेहि देखा कपि मूर्च्छित भयऊ * नागपाश बाँधेसि लै गयऊ ॥
जासु नाम जपि सुनहु भवानी * भवबंधन काटहिं नर ज्ञानी ॥
तासु दूत बंधन तर आवा * प्रभुकारज लगि आपु बँधावा ॥
कपिबंधन सुनि निशिचर धाये * कौतुक लागि सभा लै आये ॥
दशमुख सभा दीख कपि जाई * कहि नजायकछु अतिप्रभुताई ॥
करजोरे सुर दिशिप विनीता * भृकुटिविलोकतसकलसभीता ॥
देखि प्रताप न कपिमन शंका * जिमिअहिगणमहँगरुडअशंका ॥
दोहा–कपिहि विलोकि दशानन, विहँसा कहि दुर्वाद ॥
सुतवध सुरति कीन्ह पुनि, उपजा हृदय विषाद ॥ २० ॥
कह लंकेश कवन तैं कीशा * केहिके बल घालेसि वन खीशा ॥

कीधौं श्रवण सुनेसि नहिं मोहीं * देखौं आसिअशक शठतोहीं ॥
मारेसि निशिचर केहिअपराधा * कहुशठ तोहि न प्राणकीबाधा॥
सुनु रावण ब्रह्माण्ड निकाया * पाइ जासु बल विरचतिमाया॥
जाके बल विरंचि हरि ईशा * पालत हरत सृजत दशशीशा॥
जा बल शीश धरे सहसानन * अंडकोशसमेत गिरि कानन ॥
धरे जो विविध देह सुरत्राता * तुमसे शठन शिखावन दाता ॥
हरकोदण्ड कठिन जेइँ भंजा * तेहिं समेत नृपदल मद गंजा॥
खर दूषण विराध अरु बाली * बधे सकल अतुलित बलशाली॥
दोहा–जाके बल लवलेशते, जितेउ चराचर झारि ॥
तासु दूतहौं जाहिकी, हरि आनेहु प्रिय नारि ॥ २१ ॥
जानौं मैं तुम्हारि प्रभुताई * सहसबाहुसन परी लड़ाई ॥
समरबालिसन करि यशपावा * सुनिकपि वचनविहँसिबहिलावा
खायउँ फल मोहिंलागी भूखा * कपि स्वभावते तोरेउँ रूखा ॥
सबके देह परम प्रिय स्वामी * मारहिं मोहिं कुमारगगामी ॥
जिन्ह मोहिंमारा तेहिं मैंमारा * तेहिपर बाँधेउ तनयतुम्हारा ॥
मोहिं न कछु बाँधेकर लाजा * कीन्ह चहौं निजप्रभुकरकाजा॥
विनती करौं जोरि कर रावन * सुनहुमानतजि मोरशिखावन॥
देखहु तुम निजहृदय विचारी * भ्रम तजि भजहुभक्तभयहारी॥
जाके डर अति काल डराई * जो सुर असुर चराचरखाई ॥
तासों बैर कबहुँ नहिं कीजै * मोरे कहे जानकी दीजै ॥
दोहा–प्रणतपाल रघुवंशमणि, करुणासिन्धु खरारि ॥
गये शरण प्रभु राखिहैं, तव अपराध बिसारि ॥२२ ॥
रामचरण पंकज उर धरहू * लंका अचल राज्य तुमकरहू॥
ऋषिपुलस्त्ययशविमलमयंका * तेहिकुलमहँजनिहोसिकलंका ॥
राम नाम विनु गिरा नसोहा * देखु विचारि त्यागिमद मोहा॥
सब भूषण भूषित वर नारी * वसन हीन नहिं सोह सुरारी॥

१ शेषजी । २ ब्रह्माण्ड । ३ देवतोंके रक्षा हेतु । ४ धनुष । ५ बलके स्थान । ६ राक्षस । ७ वस्त्र ।

राम विमुख सम्पति प्रभुताई * जाइ रही पाई बिनु पाई ॥
सजल मूल जेहि सरितानाहीं * बरषिगये पुनि तबहिं सुखाहीं ॥
सुनु दशकण्ठ कहौं प्रणरोपी * राम विमुख त्राता नहिंकोपी ॥
शंकर सहस विष्णु अजतोही * सकहिं न राखि रामकर द्रोही ॥
दोहा—मोह मूल बहु शूल मद, त्यागहु तुम अभिमान ॥
भजहु राम रघुनायकहि, कृपासिन्धु भगवान ॥ २३ ॥
यदपि कही कपि अतिहितवानी * भक्ति विवेक धर्म नयसानी ॥
बोलाविहँसि अधम अभिमानी * मिलाहमहिंकपिगुरुबड़ज्ञानी ॥
मृत्यु निकट आई खल तोहीं * लागेसि अधम शिखावनमोहीं ॥
उलटा होइ कहा हनुमाना * मतिभ्रम तोरि प्रगट मैं जाना ॥
सुनिकपिवचनबहुतरिसआना * वेगि न हरहु मूढकर प्राना ॥
सुनत निशाचर मारन धाये * सचिवन सहित विभीषणआये ॥
नाइशीश करि विनय बहूता * नीति विरोध न मारिय दूता ॥
आनदण्ड कछु करिय गुसाईं * सबही कहा मंत्र भल भाई ॥
सुनत विहँसि बोला दशकन्धर * अंगभंग करि पठयहु बन्दर ॥
दोहा—कपिकर ममता पूँछपर * सबहिं कहा समुझाय ॥
तेलबोर पट बाँधि पुनि, पावक देहु लगाइ ॥ २४ ॥
पूँछहीन वानर जब जाइहि * तब शठ निज नाथहिलैआइहि ॥
जिन्हकी कीन्हेसि अमित बड़ाई * देखौं मैं तिन्हकी प्रभुताई ॥
वचन सुनत कपि मन मुसुकाना * भइ सहाय शारद मैं जाना ॥
यातुधान सुनि रावण वचना * लागे रचन मूढ सोइ रचना ॥
रहा न नगर वसन घृत तेला * बाढी पूँछ कीन्ह कपिखेला ॥
कौतुक कहँ आये पुरवासी * मारहिं चरण करहिं बहु हाँसी ॥
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी * नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥
पावक जरत दीख हनुमंता * भयउ परम लघुरूप तुरंता ॥
निबुकिचढ्योकपिकनकअटारी * भई सभीत निशाचरनारी ॥

१ नदी । २ रक्षक । ३ ब्रह्मा । ४ शोभा । ५ वस्त्र । ६ अग्नि । ७ अत्यन्त

दोहा-हरि प्रेरित तेहि अवसर, वहे पवन उनचाश ॥
अट्टहास करि गरजेउ, कपिबढ़ि लाग अकाश ॥ २५ ॥

अथ क्षेपक ।

चढ्यो फलांगि धाम लूम लामको उठायऊ । मनोअकाशतेनदी कृशानुकी बहायऊ ॥ किलंकलीलनेककालजीहसीपसारहू । किधौं अनी महानशूरसैफसी निकारहू ॥ फिरायलायलायअथनमथन सेलगेबरैं । गयंदछोरवाजिछोर ऊंटछोरियै खरैं ॥ अनेक बाल बालकी सु तात मात बोलहीं । अनाथ लीजिये हमें सभय समान डोलहीं ॥ अनेकनारि मारि रिंभ डिंभ काढि लावहीं । अनेकडारि डारिवस्तुवारिलैनधावहीं ॥ अनेक कंतवीरतेपुकारबैनयोंकहैं ॥ उठायलेहुलालमालजालदेपरातहैं ॥ गिरेकँगूरदूरते तबैकहैमँदो-दरी । विहायलोकलाजकानि भागतीनक्योंअरी ॥ अरे अकंपना यकिकंठकीमहोदरम् । लिवायलेहुअद्भुगातिपूतनातिसोदरम् ॥ अनेकबार मैं कही बुझायहू विभीषणं । नमानिदाढिजारने कुठारवंशतीक्षणम् ॥ निकेतद्वारअर्द्धऊर्द्धहाटबाटमें जहां । लुकातजायनीरकीशतीरदेखियेतहां ॥ वधूजोकुम्भकर्णकी पसारिहाथभाषिये । दुहाइरामचंद्रकेरमोरकन्तराखिये ॥ अनेकधायधायजायरावणेसुनायहू । विचारिवीरमेघनादसेबलीपठायहू ॥ अनेक अस्त्रशस्त्रलायआयमारनेलगे । घुमायदीनबालधी पुकारक्रूरसे भगे ॥ विशालज्वालजानिकोपमेघबोलयोंकही । बुझायदेहु आगिरेबहायकीशकोसही ॥ भलेसुनायमेघआयपुंजपाथछाँडेऊ । यथा सनेहपायचौगुनीकृशानुबाढेऊ ॥ लगीजुअंगअंगवानप्रान लेभजेसबै । निहाररीतमालवानस्यानबोलियोंतबै ॥ न आहि याहिअग्निआहिईशकीजुवामता । समीरश्वाससीयकीजुरामरोषमामता ॥ बुलायकालतेकह्योलँगूरलाउमारिकै । बटोरभूत प्रेतयक्षदंडचंडधारिकै ॥ विलोकवातजात घातकीनसेनतासुको ।

उठायगालमैंधरोपरोखँभारजासुको ॥ समेतशंभुइंद्रवातजात पासआयऊ । समीतपंकजासनादिदीनतीपुनायऊ ॥

दोहा-देहु छाँड़ि यमराज कहँ, यही विनय इक मोर ॥
वरवस आयो लखन सुनि, दीन गालते छोर ॥

इति क्षेपक ।

देह विशाल परम हरुआई * मन्दिरते मन्दिर चढ़िजाई ॥
जरत नगर भे लोग विहाला * लपट झपट बहु कोट कराला ॥
तात मातु सब करहिं पुकारा * यहि अवसर को हमहिंउबारा ॥
हम जो कह यह कपि नहिंहोई * वानर रूप धरे सुर कोई ॥
साधु अवज्ञा कर फल ऐसा * जरै नगर अनाथकर जैसा ॥
जारा नगर निमिष इक माहीं * एक विभीषणको गृह नाहीं ॥
जाकर भक्त अनल जेहिंसिरजा * जरानसोतेहिकारण गिरिजा ॥
उलटि पलटि लंका कपि जारी * कूदि परा पुनि सिंधु मँझारी ॥
दोहा-पूँछ बुझाइ खोय श्रम, धरि लघु रूप बहोरि ॥
जनकसुताके आगे, ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥ २६ ॥

मातु मोहिं दीजे कछु चीन्हा * जैसे रघुनायक मोहिं दीन्हा ॥
चूड़ामणि उतारि तब दीन्हा * हर्ष समेत पवनसुत लीन्हा ॥
कहेहु तात अस मोर प्रणामा * सबप्रकार प्रभु पूरण कामा ॥
दीनदयालु बिरुद सम्भारी * हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
तात शक्रसुत कथा सुनायहु * बाण प्रताप प्रभुहि समुझायहु ॥
मास दिवस महँ नाथ न आवहिं * तौपुनिमोहिंजियतनहिंपावहिं ॥
कहुकपिकेहि विधि राखौं प्राना * तुमहूँ तात कहत अब जाना ॥
तुमहिं देखि शीतल भइ छाती * पुनि मोकहँसोइदिनसोइराती ॥

अथ क्षेपक ।

दोहा-जिमि मणि विन व्याकुल भुजग, जल विन व्याकुल मीन ॥
तिमि देखे रघुनाथ बिन, तलफतहौं मैं दीन ॥ १ ॥

[illegible] बाँधि पहुँचाइहैं, फिर [illegible] ॥
भरत शत्रुहन लोग सब, कब [illegible] ॥ २ ॥
तहँ [illegible] पुजिहैं [illegible] काम ॥
नखशिख कब अवलोकिहौं, रघुपति छवि अभिराम ॥ ३ ॥
शीश मुकुट मणिगण जटित, श्रवणन कुण्डल लोल ॥
जगमगात कब देखिहौं, टोपी दिये अमोल ॥ ४ ॥
अलकैं सींची अतर सों, निकट कपोलन मुक्त ॥
भरि लोचन कब देखिहौं, कुसुम कलिन संयुक्त ॥५॥
भाल तिलक भासित सुभग, भृकुटी धनु अनुहारि ॥
भूरिभाग्य कब देखिहौं, नयनन पलक बिसारि ॥ ६ ॥
चंचल चारु विशाल शुभ, लोचन मोचन मान ॥
चितवत दिशि कब देखि हौं, मनको करि कुरबान ॥ ७ ॥
कीरतुण्ड सम नासिका, लटकनकी छवि भूरि ॥
कब चकोर सम देखिहौं, मुखमयंक तृणतूरि ॥ ८ ॥
अरुण अधर दाडिमदशन, रसन चारु मृदुहास ॥
हेहरि कब अवलोकिहौं, शशिकर सरिस प्रकास ॥ ९ ॥
मधुर वचन जन मन हरन, कब सुनिहौं निजकान ॥
चिबुक चारु कब देखिहौं, चितवन अली समान ॥ १० ॥
कम्बु कण्ठ तुलसी सुभग, मणि मोतिनकी माल ॥
उरदीरघ अवलोकिहौं, कब त्रिवली सुख जाल ॥ ११ ॥
भुज विशाल करि कर सरिस, करतल कमल समान ॥
सहित विभूषण देखिहौं, कब लीन्हें धनुबान ॥ १२ ॥
झीन झगा पहिरे ललित, ता ऊपर पट पीत ॥
कब निज नयन सिराइहौं, देखि उदर उपवीत ॥ १३ ॥

इति क्षेपक ।

दोहा—जनकसुतहिं समुझाइ करि, बहु बिधि धीरज दीन्ह ॥

चरणकमल शिरनाइ कारि, गमन रामपहँ कीन्ह ॥ २७॥
चलत महाधुनि गरजेउभारी * गर्भस्रवहिंसुनिनिशिचरनारी॥
नाँघि सिंधु यहि पारहिं आना *शब्दकिलकिलाकपिनसुनाना ॥
हर्षे सब विलोकि हनुमाना * नूतन जन्म कपिन तबजाना ॥
मुख प्रसन्न तनुतेज विराजा * कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा॥
मिले सकल अति भयेसुखारी * तलफत मीन पाव जनु बारी ॥
चले हर्षि रघुनायक पासा * पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥
तब मधुवन भीतर सब आये * अंगद सहित मधुर फल खाये॥
रखवारे जब बरजन लागे * मुष्टि प्रहार करत सब भागे ॥
दोहा–जाइ पुकारे सकलते, बन उजार युवराज ॥
सुनि सुग्रीवहिं हर्षि कपि, करि आये प्रभु काज ॥२८॥
जो नहोत सीता सुधि पाई * मधुवनके फल को सक खाई॥
इहि विधि मनविचारकरराजा * आयगयेकपि सहित समाजा॥
आइ सबन नायउ पदशीशा * मिलेसबन अतिप्रेमकपीशा ॥
पूँछेउ कुशल कुशल पद देखी * रामकृपा भा काज विशेषी ॥
नाथ काज कीन्हेउ हनुमाना * राखे सकलकपिनकर प्राना ॥
सुनि सुग्रीव बहुरिउठि मिलेऊ * कपिनसहितरघुपतिपै चलेऊ॥
राम कपिन कहँ आवतदेखा * किये काज उर हर्ष विशेषा ॥
फटिक शिला बैठे दोउ भाई * परे सकल कपि चरणनजाई ॥
दोहा–प्रीति सहित भेंटे सकल, रघुपति करुणा पुंज ॥
पूँछा कुशल कुशल अब, नाथ देखि पद कंज ॥२९॥
जाम्बवन्त कह सुनु रघुराया * जापर नाथ करहु तुम दाया ॥
ताहि सदा शुभ कुशलनिरंतर * सुर नर मुनि प्रसन्नतेहिऊपर॥
सोविजयी विनयी गुणसागर * तासुसुयशतिहुँलोक उजागर॥
प्रभुकी कृपा भयउ सब काजू * जन्म हमार सफल भा आजू॥
नाथ पवनसुत कीन्हजोकरणी * सो मुख लाखहु जाइनवरणी॥

१ नवीन । २ सुग्रीव ।

पवनतनयके वचन सुहाये * जाम्बवन्त रघुपतिहिसुनाये ॥
सुनि कृपालु उठि हृदय लगाये * जानि सुभट रघुपतिमनभाये॥
कहहु तात केहि भाँति जानकी * रहति करति रक्षा स्वप्राणकी॥

अथ क्षेपक ।

कौन भाँति लंका विस्तारा * सो सब वर्णहु पवनकुमारा ॥
सुनत वचन मारुति कह वानी * सुनिये दीनबंधु सुखदानी ॥
गिरि त्रिकूटपर लंक सुहाई * वर्णि न जाय मनोहरताई ॥
पाँच लक्ष हैं पत्थरके घर * औ नवलाख काष्ठके सुंदर ॥
दोहा-सातकोटिहैं ताम्रके, चांदीके श्रुतिकोटि ॥
जातरूपकेहू इते, माणिक कोट सुकोटि ॥
तृण निर्मित षटकोटि विशाला * वंशछाल शतकोटि दयाला ॥
नव करोर स्फटिक सुहाये * सहसकोटिमणिनील सुछाये॥
शतयोजनमें पुरी सुहाई * घनी बसत अतिशय रघुराई॥
राज्य करत रावण तहँस्वामी * सो तुम जानत अंतर्यामी ॥
दश शिर ताके भुज प्रभुवीसा * देव दनुज नावत सबशीशा ॥
ताकी प्रभुताई तहँ भारी * राज्य करत भयत्यागिखरारी॥
चलियेअबप्रभु विलमनकीजै * जनकसुताको धीरज दीजै ॥
तुम बिनसीय महादुख पावत * तुमबिन तिन्हैंकछूनहिंभावत॥

इति क्षेपक ।

दोहा-नाम पाहरू[1] दिवस निशि, ध्यान तुम्हार कपाट[2] ॥
लोचन निज पद यन्त्रिका, प्राण जाहिं केहि बाट[3] ॥३०॥
"चलती बार कह्यो मोहिंटेरी * सुरति कराय शक्रसुतकेरी[4]" ॥
चलत मोहिं चूडामणि[5] दीन्हीं * रघुपति हृदयलाइतेहिलीन्हीं॥
नाथ युगल लोचन[6] भरि वारी * वचन कह्योकछुजनककुमारी॥
अनुज समेत गहेउप्रभुचरणा * दीनबन्धु प्रणतारति हरणा ॥
मन क्रम वचन चरण अनुरागी* केहिअपराध नाथमोहिंत्यागी॥

१ किवाँर । २ कुलुफ । ३ मार्ग । ४ जयन्त । ५ शीशपर जो चूडाविषे मणि रहती है । ६ हेनाथ दोनों नेत्रोंमें जलभर ।

अवगुण एक मोर मैं जाना * बिछुरत प्राण न कीन्ह पयाना॥
नाथ सो नयनन कर अपराधा * निसरतप्राण करहिंहठिबाधा॥
विरह अग्नि तनु तूल¹ समीरा * श्वास जरै क्षण माँह शरीरा॥
नयन स्रवैंजल निजहितलागी * जरै न पाव देह विरहागी॥
सीताकी अति विपति विशाला * विना कहे भल दीनदयाला॥
दोहा—निमिष निमिष करुणायतन, जाहिं कल्पशत बीति॥
वेगि चलिय प्रभु आनिये, भुजबल खलदल जीति॥ ३१॥
सुनि सीतादुखप्रभुसुखअयना * भरि आये जल राजिवनयना॥
वचन काय मन ममगति जाही * स्वप्नेहु विपतिकि चाहियताही॥
कह हनुमान विपति प्रभु सांई * जबतव सुमिरण भजननहोई॥
कितिक बात प्रभु यातुधानकी * रिपुहि जीति आनिये जानकी॥
सुनुकपि तोहिं समान उपकारी * नहिंकोउसुरनरमुनितनुधारी॥
प्रति उपकार करौं का तोरा * सन्मुखहोइ नसकतमनमोरा॥
सुनु कपि तोहिं उऋण मैं नाहीं * देखेउँ करि विचार मन माहीं॥
पुनिपुनिकपिहिंचितवसुरत्राता * लोचननीर पुलकि अतिगाता॥
दोहा—सुनि प्रभु वचन विलोकि मुख, हृदय हर्ष हनुमन्त॥
चरण परेउ परमाकुल, त्राहि त्राहि भगवन्त॥ ३२॥
बार बार प्रभु चहत उठावा * प्रेम मगन तेहि उठब नभावा॥
प्रभुपद पंकज कपिकर शीशा * सुमिरि सो दशामगनगौरीशा²॥
सावधान मन करि पुनि शंकर * लागे कहन कथा अति सुंदर॥
कपिउठाय प्रभुहृदय लगावा * कर गहि परम निकट बैठावा॥
कहु कपि रावण पालित लंका * केहि विधि दहेउ दुर्ग अतिवंका³
प्रभुप्रसन्न जाना हनुमाना * बोले वचन विगत अभिमाना॥
शाखामृग⁴की अति मनुसाई * शाखाते शाखा पर जाई॥
नाँघि सिन्धु हाटकपुर जारा * निशिचरगणवधिविपिनउजारा
सो सब तव प्रताप रघुराई * नाथ न कछुक मोरि प्रभुताई॥

१ रुई। २ महादेवजी। ३ अगम। ४ बानर।

दोहा—ताकहँ प्रभु कछु अगम नहिं, जापर तुम अनुकूल ॥
तव प्रताप बडवानलहिं, जारि सकै खल तूल ॥ ३३ ॥
सुनतवचन प्रभु बहु सुखमाना * मनक्रमवचन दासनिजजाना ॥
माँगु वचन सुत वर अनुकूला * देहुँ आज तुम कहँ सुखमूला ॥
नाथभक्तितव सबसुखदायिनि * देहु कृपाकरि सोअनपायिनि ॥
सुनि प्रभु परमसरल कपिवानी * एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमा राम स्वभाव जिन जाना * ताहि भजनतजि भावनआना ॥
यह संवाद जासु उर आवा * रघुपति चरणभक्ति तेइँपावा ॥
सुनि प्रभु वचन कहैं कपिवृन्दा * जयजयजय कृपालुसुखकन्दा ॥
तव रघुपति कपिपतिहि बुलावा * कहा चलै कर करहु बनावा ॥
अब विलंब केहि कारण कीजै * तुरत कपिन कहँआयसुदीजै ॥
कौतुक देखि सुमन[3] बहु वर्षे * नभते भवन चले सुर हर्षे ॥
दोहा—कपिपति[1] वेगि[2] बुलायहू, आये यूथप यूथ ॥
नानावरण अतुलबल, वानर भालु वरूथ ॥ ३४ ॥
प्रभु पदपंकज नावहिं शीशा * गर्जहिं भालु महाबल कीशा ॥
देखी राम सकल कपि सैना * चितव कृपा करि राजिवनैना ॥
राम कृपा बल पाइ कपिन्दा * भये पक्ष युत मनहुँ गिरिन्दा[4] ॥
हर्षि राम तब कीन्ह पयाना * शकुन भये सुन्दर शुभ नाना ॥
जासु सकल मंगलमय नीती * तासु पयान शकुनयहनीती ॥
प्रभु पयान जाना वैदेही * फरके वाम अंग शुभ तेही ॥
जो जो शकुन जानकिहि होई * अशकुन भयउ रावणहि सोई ॥
चला कटक को वरणै पारा * गर्जहिं वानर भालु अपारा ॥
नखआयुध गिरि पादपधारी * चले गगन महि इच्छाचारी ॥
केहरिनाद[5] भालु कपि करहीं * डगमगाहि[6] दिग्गज चिक्करहीं ॥
छंद—चिक्करहिं दिग्गज डोलमहि गिरिलोलसागर खरभरे ।
मन हर्ष दिनकर[7] सोम[8] सुर मुनि नाग किन्नर दुखटरे ॥

१ सुग्रीव । २ देर । ३ पुष्प । ४ सुमेरु । ५ सिंहनाद । ६ पृथ्वी काँप उठी । ७ सूर्य । ८ चन्द्र ।

कटकटहिं मर्कट विकट भट बहु कोटि कोटिन धावहीं ।
जय राम प्रबल प्रताप कोशलनाथ गुण गण गावहीं ॥
सहिसक न भार उदार अहिपति बार बार विमोहई ।
गहि दशन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ कठोर सोकिमिसोहई ॥
रघुवीर रुचिर पयान प्रस्थित जानि परम सुहावनी ॥
जनु कमठ खप्पर सर्पराजसोलिखित अविचलपावनी॥ ५ ॥
दोहा–इहिविधि जाइ कृपानिधि, उतरे सागर तीर ॥
जहँ तहँ लागे खान फल, भालु विपुल कपिवीर ॥ ३५ ॥
वहाँ निशाचर रहहिं सशंका * जबते जारि गयउ कपिलंका ॥
निज निज गृह सब करैं विचारा *नहिं निशिचर कुलकेर उबारा॥
जासु दूत बल वरणि न जाई * तेहि आये पुर कवन भलाई ॥
अति सभीत सुनि पुरजन वानी* मन्दोदरी हृदय अकुलानी ॥
रही जोरि कर पति पद लागी * बोली वचन नीति रस पागी ॥
कन्त कर्ष हरिसन परिहरहू *मोर कहा अतिहित चितधरहू॥
समुझत जासु दूतकी करनी * स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी ॥
तासु नारि निज सचिव बुलाई * पठवहु कन्त जो चहहु भलाई॥
तव कुल कमल विपिन दुखदाई* सीता शीत निशासम आई ॥
सुनहु नाथ सीता विनु दीन्हें *हितनतुम्हार शम्भु अजकीन्हें॥
दोहा–राम बाण अहिगणसरिस, निकरनिशाचर भेक ॥
जौं लगि ग्रसत न तबहिंलगि, यतनकरहुताजिटेक ॥ ३६ ॥
श्रवण सुनत शठ ताकी वानी *विहँसा जगतविदित अभिमानी
सभय स्वभाव नारिकरसाँचा * मंगल माहिं अमंगलराँचा ॥
जो आवै मर्कट कटकाई * जियहिं विचारे निशिचरखाई॥
कम्पहि लोकप जाके त्रासा * तासु नारि सभीतबडिहासा ॥
असकहि विहँसि ताहि उरलाई *चलेउ सभा ममता अधिकाई॥
मन्दोदरी हृदय कर चीता * भयो कन्तपर विधिविपरीता ॥

१ शेषनाग । २ मूर्च्छित । ३ विरोध । ४ निशाचरीगर्भकोढ़ादेतीहै । ५ सीताजी । ६ सर्पगणतुल्य । ७ निशिचरगण मेढकतुल्य ।

बैठे सभा खबरि असपाई * सिन्धुपार सेना सब आई ॥
बूझेसि सचिव उचितमतकहहू * ते सब हँसि मौनकरि रहहू ॥
जितहु सुरासुर तब श्रम नाहीं * नर वानर कोहि लेखे माहीं ॥

अथ क्षेपक ।

सुनि घटश्रुति बोला अहँकारी * कोहै त्रिभुवन सरिस हमारी ॥
जो सन्मुख सक नयन मिलाई *अस कह चला विवश औंघाई॥
तब सक्रोध बोला अतिकाया * आयसु मोहिं देहु करिदाया ॥
अबहीं क्षिति नर हरिविन करहूँ* और मंत्रका बहु उच्चरहूँ ॥
कामरूप बोला घननादा *मम प्रभाउ जग जानत जादा॥
विधि हरि हर वशकिये जुझारू* नर वनरनहित कौन विचारू ॥
कुंभ निकुंभ दम्भ छलकारी * बोले विभुता विदित हमारी ॥
कृपादृष्टि सब देव निहारैं * देखत उच्चासन बैठारैं ॥
भोजन हित कहियत तिनपाहीं* हम काहूकर छुवा न खाहीं ॥
डाटत बोलिसकै नहिं एकू * कपि मानुष हम गनै न नेकू ॥
मत्सररूप अकम्पन कहई * हमैंजियत असको सिय लहई॥
कहो उपाय करौं अब सोई * नर वानर जेहि बचै न कोई ॥
अपर कथा कहिये का छोभी * तब भा भनत महोदर लोभी ॥
जो आवै अनगिन्त करोरी * डारौं खाय भरै नहिं झोरी ॥
तौ कपि सहस लाख केहिलेखे * जेहैं भूमि नाग हम देखे ॥
बोला तब दुर्मुख पाखण्डी *छलकर हरि आनौ दोउ दण्डी॥
जो चाहो सो कीन्हो पाछे * बद मकराक्ष कपट वपुकाछे ॥
विपुलविप्रजा मैं वरिआनी *भूसुर बनि कोइ सकै न जानी ॥
दोहा-तिनके छलसे रामको, प्रभु तहँ लेहिं बुलाय ॥
धर बाँधैं लावैं यहाँ, कैसो कहो उपाय ॥ १ ॥

इति क्षेपक ।

दोहा-सचिव वैद्य गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहिं भयआश ॥

राजधर्म तनु तीनकर, होइ वेगही नाश ॥ ३७ ॥
सोइ रावण कहँ बनी सहाई * अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई॥
अवसर जानि विभीषण आवा * भ्राता चरण शीश तेहिनावा ॥
पुनि शिरनाइ बैठि निज आसन* बोला वचन पाइ अनुशासन ॥
जो कृपालु पूँछेहु मोहिं बाता * मति अनुरूप कहव मैं ताता॥
जो आपन चाहो कल्याना * सुयशसुमतिशुभगतिसुखनाना
तो परनारि लिलार गुसाँई * तजो चौथि चंदाकी नाँई ॥
चौदह भुवन एकपति होई * भूत द्रोह तिष्ठै नहिं सोई ॥
गुणसागर नागर नर जोऊ * अल्प लोभ भल कहै न कोऊ ॥
दोहा–काम क्रोध मद लोभ सब, नाथनरककर पन्थ ॥
सब परिहरि रघुवीर पद, भजहु कहहिं सद्ग्रन्थ ॥ ३८ ॥
तात राम नहिं नर भूपाला * भुवनेश्वर कालहुके काला ॥
ब्रह्म अनामय अज भगवन्ता * व्यापक अजित अनादि अनंता
गो द्विज धेनु देव हितकारी * कृपासिन्धु मानुष तनुधारी ॥
जनरंजन भंजन खल व्राता * वेद धर्म रक्षक सुरत्राता ॥
ताहि वैर तजि नाइय माथा * प्रणतारति भंजन रघुनाथा ॥
देहु नाथ प्रभु कहँ वैदेही * भजहु राम विनु काम सनेही ॥
शरण गये प्रभु ताहु न त्यागा * विश्वद्रोह कृत अघ जेहिलागा॥
जासु नाम त्रयताप नशावन * सोप्रभुप्रगट समुझजियरावन॥
दोहा–बार बार पद लागौं, विनय करौं दशशीश ॥
परिहरि मान मोह मद, भजहु कोशलाधीश ॥ ३९ ॥
मुनि पुलस्त्य निज शिष्य सन, कहि पठई यह बात ॥
तुरत सो मैं तुमसन कही, पाय सुअवसर तात ॥ ४० ॥
मालवंत अति सचिव सयाना *तासुवचनसुनिअतिसुखमाना॥
तात अनुज तव नीति विभूषण *सोइउरधरहुजोकहतविभीषण॥

१ आज्ञा। २ अनुसार। ३ भाद्रपदकी चौथिके चन्द्रतुल्य। ४ जीव। ५ षट्वर्ग-जन्म, वृद्धि, विवरण, क्षीण, जरा, मृत्युरहित।

रिपु उत्कर्ष कहत शठ दोऊ * दूरि न करहु इहाँति कोऊ ॥
मालवंत गृह गयउ बहोरी * कहइ विभीषण पुनि करजोरी
सुमतिकुमति सबके उर रहई *नाथ पुराण निगम अस कहई॥
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना *जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना
तव उर कुमति बसी विपरीती * हित अनहित मानत रिपु प्रीती
कालरात्रि निशिचर कुलकेरी * तेहि सीता पर प्रीति घनेरी॥
दोहा—तात चरण गहि माँगौं, राखहु मोर दुलार ॥
सीता देहु राम कहँ, अति हित होइ तुम्हार ॥ ४१ ॥
बुध पुराण श्रुति सम्मत वानी * कही विभीषण नीति बखानी॥
सुनत दशानन उठा रिसाई * खलतोहिंमृत्युनिकटचलिआई
जियसि सदा शठमोर जिआवा* रिपुकर पक्ष सदा तोहिंभावा ॥
कहसिनखल असको जगमाहीं* भुजबलजेहि जीता हमनाहीं ॥
ममपुरवासि तपसिनसन प्रीती * शठमिलुजाहि ताहिकहुनीती॥
असकहि कीन्हेसि चरणप्रहारा * अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥
उमा संतकी यही बड़ाई * मंद करत जो करै भलाई ॥
तुम पितुसरिस भले मोहिंमारा * रामभजे हित होइ तुम्हारा ॥
सचिव संगलै नभ पथ गयऊ * सबहिंसुनाइ कहतअसभयऊ॥
दोहा—राम सत्यसंकल्प प्रभु, सभा कालवश तोरि ॥
मैं रघुनायक शरण अब, जाउँ देहु जनि खोरि ॥ ४२ ॥
असकहि चलाविभीषण जबहीं * आयुहीनभे निशिचर तबहीं ॥
साधु अवज्ञा तुरत भवानी * कर कल्याण अखिल करहानी॥
रावण जबहिं विभीषण त्यागा *भयो विभवविनु तबहिंअभागा॥
चलेउ हर्षि रघुनायक पाहीं * करत मनोरथ बहु मनमाहीं ॥
देखिहौं जाइ चरण जलजाता *अरुण मृदुल सेवक सुखदाता॥
जेपद परशि तरी ऋषिनारी * दण्डक कानन पावनकारी ॥
जे पद जनकसुता उर लाये * कपट कुरंग संग धरिधाये ॥

१ क: मन्त्रीलेकर । २. आयुर्बल । ३ समय । ४ अहल्या ।

हर उर सरसरोज पद जोई * अहो भाग्य मैं देखब सोई ॥
दोहा–जिन पाँयन कर पादुका, भरत रहे मन लाइ ॥
ते पद आजु विलोकिहौं, इन नयनन अब जाइ ॥४३॥
यहिविधि करत सप्रेम विचारा * आयउ सपदि सिन्धुके पारा॥
कपिन विभीषण आवत देखा * जानेउ कोउ रिपुदूत विशेषा ॥
ताहि राखि कपिपति पहँ आये * समाचार सब जाइ सुनाये ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई * आवा मिलन दशानन भाई ॥
कह प्रभु सखा बूझिये काहा * कहै कपीश सुनहु नरनाहा ॥
जानि न जाय निशाचर माया * कामरूप केहि कारण आया॥
भेद हमार लेन शठ आवा * राखिय बाँधि मोहिं असभावा॥
सखा नीति तुम नीक विचारी * मम प्रण शरणागत भयहारी॥
सुनि प्रभु वचन हर्ष हनुमाना * शरणागत वत्सल भगवाना ॥
दोहा–शरणागत कहँ जो तजहिं, निज अनहित अनुमानि ॥
ते नर पामर पापमय, तिनहिं विलोकत हानि ॥४४॥
कोटि विप्र वध लागहि जाही * आये शरण तजौं नहिं ताही ॥
सन्मुख होइ जीव मोहिं जबहीं * जन्मकोटि अघ नाशौं तबहीं॥
पापवन्त कर सहज स्वभाऊ * भजन मोर तेहिभाव न काऊ॥
जो पै दुष्ट हृदय सो होई * मोरे सन्मुख आव कि सोई ॥
निर्मलमन जन सो मोहिंपावा * मोहिं कपट छल छिद्र नभावा॥
भेद लेन पठवा दशशीशा * तबहुँनकछुभय हानि कपीशा॥
जगमहँ सखा निशाचर जेते * लक्ष्मणहनहिंनिमिष महँ तेते॥
जो सभीत आवा शरनाई * रखिहौं ताहिं प्राणकी नाई ॥
दोहा–उभय भाँति लै आवहु, हँसिकह कृपानिधान ॥
जय कृपालु कहि कपिचले, अंगदादिहनुमान ॥ ४५ ॥
सादर तेहि आगे करि वानर * चले जहाँ रघुपति करुणाकर॥
दूरिहिंते देखे दोउ भ्राता * नयनानन्द दानके दाता ॥

१ पाप। २ दुष्टभावसे आयाहो या आर्त्तहो दोऊ भाँतिसे ले आवो

भुज प्रलंब[1] कंजारुण[2] लोचन *श्यामलगातप्रणतभय मोचन ॥
सिंह कन्ध आयत[3] उर सोहा *आनन[4] अमितमदनछबिमोहा॥
नयननीर पुलकित अतिगाता * मन धरिधीर कही मृदुबाता ॥
निशिचर वंश जनम सुरत्राता *नाथ दशानन कर मैं भ्राता ॥
सहज पाप प्रिय तामस देहा * यथा उलूकहि तम पर नेहा ॥
दोहा—श्रवण सुयश सुनि आयऊँ, प्रभु भंजन भयभीर ॥
त्राहि त्राहि आरतहरण, शरण सुखद रघुवीर ॥४६॥
असकहि करत दण्डवत देखा * तुरत उठे प्रभु हर्ष विशेषा ॥
दीनवचनसुनि प्रभु मन भावा * भुजविशालगहिहृदयलगावा ॥
अनुजसहितमिलि ढिगबैठारी * बोले वचन भक्त हितकारी ॥
कहु लंकेश सहित परिवारा * कुशल कुठाहर वास तुम्हारा ॥
खल मण्डली बसहु दिनराती * सखा धर्म निबहै केहि भाँती॥
मैं जानी तुम्हारि सब रीती * अतिशयनिपुणनभावअनीती॥
बरु भल बास नरक कर ताता * दुष्ट संग जनि देहि विधाता ॥
अब पद देखि कुशल रघुराया * जो तुमकीन्हजानिजनदाया ॥
दोहा—तब लगि कुशल न जीव कहँ, स्वप्नेहु मन विश्राम ॥
जबलगि भजन न रामके, शोक धाम तजि काम ॥४७॥
तबलगि हृदय वसत खल नाना * लोभ मोह मत्सर मद माना ॥
जबलगि उर न बसत रघुनाथा * धरे चाप सायक कटि भाथा ॥
ममता तिमिरतरुण अँधियारी * राग द्वेष उलूक सुखकारी ॥
तबलगि वसत जीव उर माहीं * जबलगि प्रभुप्रतापरवि नाहीं ॥
अब मैं कुशल मिटे भयभारे * देखि राम पदकमल तुम्हारे ॥
तुम कृपाल जापर अनुकूला * ताहिनव्याप त्रिविध भवशूला ॥
मैंनिशिचरअतिअधमस्वभाऊ * शुभ आचरणकीन्हनहिंकाऊ ॥
जासुरूप मुनि ध्यान न आवा * सो प्रभु हर्षिहृदय मोहिंलावा॥
दोहा—अहो भाग्य मम अमित अति, राम कृपा सुखपुंज ॥

१ आजानुभुजा । २ अरुणकमल इव नेत्र । ३ चौड़ी । ४ मुख ।

देखउँ नयन विरंचि शिव, सेव्य युगल पदकंज ॥ ४८ ॥
सुनहु सखानिज कहहुँस्वभाऊ *जानिभुशुण्डिशम्भुगिरिजाऊ॥
जो नर होइ चराचर द्रोही * आवै सभय शरणताकिमोही ॥
तजि मद मोह कपट छलनाना * करौं सखा तेहि साधु समाना ॥
जननी[1] जनक[2] बन्धु सुत[3] दारा[4] * तन धन भवन सुहृदपरिवारा॥
सबकी ममता ताग बटोरी * ममपदमनहिं बाँधि बटि डोरी ॥
समदरशी इच्छा कछु नाहीं * हर्ष शोक भय नहिं मन माहीं ॥
अस सज्जन मम उर बस कैसे * लोभी हृदय वसत धन जैसे ॥
तुम सारिखे संत प्रिय मोरे * धरौं देह नहिं आन निहोरे ॥
दोहा–सगुण उपासक परमहित, निरत नीति दृढ नेम ॥
ते नर प्राण समान मोहिं, जिनके द्विजपदप्रेम ॥ ४९ ॥
सुनु लंकेश सकल गुण तोरे * ताते तुम अतिशय प्रियमोरे ॥
राम वचन सुनि वानर यूथा * सकलकहहिं जय कृपावरूथा ॥
सुनत विभीषण प्रभुकर वानी * नहिं अघात श्रवणामृतजानी ॥
पद अम्बुज गहि बारहिं बारा * हृदय समात न प्रेम अपारा ॥
सुनहु देव सचराचर स्वामी * प्रणतपाल उर अन्तर्यामी ॥
उर कछु प्रथम वासना रही * प्रभुपद प्रीति सरित सो बही ॥
अब कृपालु निजभक्ति पावनी * देहु दया करि शंभु भावनी ॥
एवमस्तु प्रभु कहि रणधीरा * माँगा तुरत सिन्धुकर नीरा ॥
यदपि सखा तोहिं इच्छा नाहीं * ममदर्शन अमोघ जगमाहीं ॥
असकहिरामतिलक तेहिसारा * सुमनवृष्टि नभ भयउअपारा ॥
दोहा–रावण क्रोधानल सरिस, श्वास समीर प्रचण्ड ॥
जरत विभीषण राखेउ, दीन्हेउ राज अखण्ड ॥ ५० ॥
जो सम्पति शिव रावणहि, दीन्ह दिये दशमाथ ॥
सो संपदा विभीषणहिं, सकुच दीन्ह रघुनाथ ॥ ५१ ॥
असप्रभु छाँड़ि भजहिं जेआना * ते नर पशु विनु पूँछ बखाना ॥

१ माता । २ पिता । ३ पुत्र । ४ स्त्री ।

निजजन जानि ताहि अपनावा * प्रभुस्वभाव कपिकुलमनभावा ॥
पुनि सर्वज्ञ सर्व उर वासी * सर्व रूप सब रहित उदासी ॥
बोले वचन नीति प्रतिपालक * कारण मनुज दनुजकुलघालक ॥
सुनु कपीश लंकापति वीरा * केहिविधिउतारियजलधिगँभीरा ॥
संकुल उरग मकर झषजाती * अति अगाध दुस्तर सबभाँती ॥
कह लंकेश सुनहु रघुनायक * कोटिसिन्धु शोषै तव सायक ॥
यद्यपि तदपि नीति अस गाई * विनय करिय सागर पहँजाई ॥
दोहा-प्रभु तुम्हार कुलगुरु जलधि, कहहि उपाय विचारि ॥
विनु प्रयास सागर तरहिं, सकल भालु कपिधारि ॥ ५२ ॥
सखा कह्यो तुम नीकि उपाई * करब दैव जो होइ सहाई ॥
मंत्र न यह लक्ष्मण मन भावा * राम वचन सुनिअतिदुखपावा ॥
नाथ दैवकर कवन भरोसा * सोखिय सिंधुकरियमन रोसा ॥
कादर मनकर एक अधारा * दैव दैव आलसी पुकारा ॥
सुनत बिहँसि बोले रघुवीरा * ऐसेइकरब धरहु मन धीरा ॥
असकहिप्रभु अनुजहिसमुझाई * सिन्धु समीप गये रघुराई ॥
प्रथम प्रणाम कीन्ह प्रभु जाई * बैठे तट पुनि दर्भ डसाई ॥
जबहिं विभीषण प्रभुपहँ आये * पाछे रावण दूत पठाये ॥
दोहा-सकल चरित उन्ह देखेउ, धरे कपट कपि देह ॥
प्रभुगुण हृदय सराहि अति, शरणागत पर नेह ॥ ५३ ॥
प्रकट बखानत राम स्वभाऊ * अति सप्रेमगा बिसारि दुराऊ ॥
रिपुके दूत कपिन जब जाना * ताहिबाँधि कपिपतिपहँआना ॥
कह सुग्रीव सुनहु सब वनचर * अंगभंग करि पठवहुनिशिचर ॥
सुनि सुग्रीव वचन कपि धाये * बाँधि कटक चहुँपास फिराये ॥
वहु प्रकार मारन कपि लागे * दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
जो हमार हर नासा काना * तेहि कोशलाधीश कर आना ॥
सुनिलक्ष्मण तेहि निकट बुलाई * दया लागि हँसि दीन छुड़ाई ॥

१ भाईको । २ कुशासन । ३ नासिका । ४ सौं

रावणकर दीन्हेउ यह पाती * लक्ष्मण बचन बाँच कुलघाती॥
दोहा–कहेउ मुखागर मूढ सन, मम सन्देश उदार ॥
सीता देहु मिलहु नतो, आवा काल तुम्हार ॥५४॥
तुरत नाइ लक्ष्मण पद माथा * चले दूत वर्णत गुणगाथा ॥
कहत राम यश लंका आये * रावण चरण शीश तिननाये ॥
विहँसि दशानन पूछेसि बाता * कहसिनशुकआपनिकुशलाता॥
पुनिकहु कुशल विभीषणकेरी * जासु मृत्यु आई अति नेरी ॥
करतराज्य लंका शठ त्यागा * होइहि यवकर कीट अभागा ॥
पुनि कहु भालु कीश कटकाई * कठिन काल प्रेरित चलिआई ॥
तिनके जीवनकर रखवारा * भयउ मृदुलचित सिंधुबिचारा॥
कहु तपसिंन कर बात बहोरी * जिनके हृदय त्रास बड़िभोरी ॥
दोहा–भई भेंटकी फिरिगये, श्रवण सुयश सुनि मोर ॥
कहसि न रिपुदल तेज बल, कस चकित चित तोर ॥ ५५॥
नाथ कृपा करि पूँछहु जैसे * मानहु वचन क्रोध तजि तैसे ॥
मिलाजाइ जब अनुज तुम्हारा * जातहिं राम तिलकतेहिसारा ॥
रावण दूत हमहिं सुनिकाना * कपिन बाँधि दीन्हें दुख नाना॥
श्रवण नासिका काटन लागे * राम शपथ दीन्ही तब त्यागे ॥
पूँछहु नाथ कीश कटकाई * वदन कोटि शत वरणि नजाई ॥
नानावरण भालु कपि धारी * विकटानन विशाल भयकारी॥
जेइ पुर दहेउ वधेउ सुत तोरा * सकलकपिनमहँतेहिबलथोरा॥
अमित नामभट कठिन कराला * विपुलवरण तनु तेज विशाला॥
दोहा–द्विविद मयन्द नील नल, अंगदादि विकटासि ॥
दधिमुख केहरि कुमुद गव, जाम्बवन्त बलराशि ॥ ५६ ॥
ये कपि सब सुग्रीव समाना * इन्ह सम कोटि गनै को नाना॥
राम कृपा अतुलित बलतिनहीं * तृणसमानत्रयलोकहि गिनहीं॥
अस मैं श्रवण सुना दशकन्धर * पद्म अठारह यूथप बन्दर ॥

१ राम–लक्ष्मण । २ यूथोंके पति ।

नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं * जो न तुम्हैं जीतहि रण माहीं॥
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा * आयसु पै न देहिं रघुनाथा॥
शोषहिं सिन्धु सहित झष व्याला * पूरहिं न त भरि कुधर विशाला॥
मर्दि गर्दि मिलवहिं दशशीशा * ऐसे वचन कहहिं सब कीशा॥
गर्जहिं तर्जहिं सहज अशंका * मानहुँ ग्रसन चहत अब लंका॥
दोहा–सहज शूर कपि भालु सब, पुनि शिर पर श्रीराम॥
रावण कोटिन काल कहँ, जीति सकहिं संग्राम॥५७॥
राम तेज बल बुधि विपुलाई * शेष सहस शत सकहिं न गाई॥
सक शर एक शोषि शत सागर * तव भ्रातहि पूछेउ नयनागर॥
तासु वचन सुनि सागर पाहीं * माँगत पन्थ कृपा मन माहीं॥
सुनत वचन विहँसा दशशीशा * जो असि मति सहाय कृत कीशा॥
सहज भीरु कर वचन दृढ़ाई * सागर सन ठानी मचलाई॥
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई * रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई॥
सचिव सभीत विभीषण जाके * विजय विभूति कहाँ जग ताके॥
सुनि खल वचन दूत रिस बाढ़ी * समय विचारि पत्रिका काढ़ी॥
राम अनुज दीन्ही यह पाती * नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती॥
विहँसि वामकर लीन्हेंसि रावन * सचिव बोलि शठ लागु बँचावन
दोहा–बातन मनहिं रिझाय शठ, जनि घालसि कुल खीश॥
राम विरोध न उबरिहहु, शरण विष्णु अज ईश॥५८॥
होउ मान तजि अनुज इव, प्रभुपद पंकज भृंग॥
होइ राम शर अनल खल, जनि कुल सहित पतंग॥५९॥
सुनत सभय मनमहँ मुसुकाई * कहत दशानन सबहिं सुनाई॥
भूमि परा कर गहत अकाशा * लघु तापस कर वागविलासा॥
कह शुक नाथ सत्यसबबानी * समुझहु छाँडि प्रकृति अभिमानी
सुनहु वचन मम परिहरि क्रोधा * नाथ राम सन तजहु विरोधा॥
अति कोमल रघुबीर स्वभाऊ * यद्यपि अखिल लोककर राऊ॥

१. पर्वत।

मिलत कृपा प्रभुतुमपर करिहैं * उर अपराध न एकौ धरिहैं ॥
जनकसुता रघुनाथहि दीजै * इतना कहा मोर प्रभु कीजै ॥
जब तेइँ देन कहेउ वैदेही * चरणप्रहार कीन्ह शठ तेही ॥
चरणनाइ शिर चला सो ताहाँ * कृपासिन्धु रघुनायक जाहाँ ॥
करि प्रणाम निज कथा सुनाई * राम कृपा आपनि गति पाई ॥
ऋषि अगस्त्यकर शापभवानी * राक्षस भयउ रहा मुनिज्ञानी ॥
वन्दि रामपद बारहिं बारा * मुनिनिज आश्रमकहँ पगुधारा ॥

दोहा–विनय न मानत जलधि जड़, गये तीन दिन बीति ॥
बोले राम सकोप तब, भय विनु होय न प्रीति ॥ ६० ॥

लक्ष्मण बाण शरासन आनू * शोषौं वारिधि विशिख कृशानू ॥
शठसन विनय कुटिलसनप्रीती * सहजकृपणसनसुन्दर नीती ॥
ममतारत सन ज्ञान कहानी * अतिलोभी सन विरतिबखानी ॥
क्रोधिहि सम कामिहिहरिकथा * ऊपर बीज बये फल यथा ॥
असकहि रघुपति चाप चढ़ावा * यह मत लक्ष्मणके मनभावा ॥
सन्धानेउ शर विशिखकराला * उठी उदधि उर अन्तर ज्वाला ॥
मकर उरग झषगण अकुलाने * जरत जन्तुजलनिधिजबजाने ॥
कनकथार भरि मणिगणनाना * विप्ररूप आये तजि माना ॥

दोहा–काटे पै कदली फलै, कोटि यत्न करि सींच ॥
विनय न मान खगेश सुन, डाटेहिं पै नव नीच ॥ ६१ ॥

सभय सिन्धु गहि पद प्रभु केरे * क्षमहुनाथ सब अवगुण मेरे ॥
गगन समीर अनल जल धरणी * इनकी नाथ सहजजड़करणी ॥
तव प्रेरित माया उपजाये * सृष्टि हेतु सब ग्रन्थन गाये ॥
प्रभुआयसुजेहिकहँजसअहही * सो तेहि भाँतिरहे सुखलहही ॥
प्रभुभलकीन्हमोहिं शिखदीन्हीं * मर्य्यादासब तुम्हरी कीन्हीं ॥
ढोल गँवार शूद्र पशु नारी * ये सब ताड़नके अधिकारी ॥
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई * उतरिहि कटक न मोरि बड़ाई ॥

प्रभु आज्ञा अपेल श्रुति गाई * करहु सोगि जो तुम्हहिं सोहाई ॥
दोहा-सुनत विनीत वचन अति, कह कृपालु मुसुकाइ ॥
जेहि विधि उतरै कपिकटक, तात सो करहु उपाइ ॥ ६२ ॥
नाथ नील नल कपि दोउ भाई * लरिकाई ऋषि आशिष पाई ॥
"सरिता निकट रहे मुनि छाई * करहिं उपद्रव तहँ दोउ जाई ॥
आँखमूँद मुनि ध्यान लगावैं * तब ये ठाकुरको ले जावैं ॥
सो जलमें सब देहिं डुबाई * तबमुनि शापदियो रिसिआई॥
प्रस्तर छुआ तुम्हार जो होई * पानी पै उतरावै सोई ॥
आस्थिर रहै चलै सो नाहीं * तबयह कछु समझे मनमाहीं॥
तिनके परश किये गिरिभारे * तरिहहिंजलधि प्रताप तुम्हारे॥
मैं पुनि उरधारि प्रभु प्रभुताई * करिहौं बल अनुमान सहाई ॥
इहि विधि नाथपयोधिबँधाइय * जिहिअससुयशलोकातिहुँगाइय
इहि शर मम उत्तर तटवासी * हतहुनाथ खलगण अघराशी ॥
सुनि कृपालु सागर मन पीरा * तुरतहि हरी राम रणधीरा ॥
देखि राम बल अतुलितभारी * हर्षि पयोनिधि भयो सुखारी ॥
सकलचरितकहि प्रभुहिसुनावा * चरणवन्दि पाथोधिसिधावा ॥
छंद-निज भवन गवनेउ सिन्धु श्रीरघुवीरहियमतभायऊ ॥
यह चरित कलिमलहरण जसमति दास तुलसी गायऊ ॥
सुखभवन संशयदमन शमन विषाद रघुपति गुणगना ॥
तजि आशसकल भरोस गावहिसुनहिंसज्जनशुचिमना ॥ ६॥
दोहा-सकल सुमंगलदायक, रघुनायक गुणगान ॥
सादर सुनहिं ते तरहिं भव, सिंधु विना जलयान ॥ ६३ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनोनाम तुलसीकृतरामायणे सुन्दरकांडे पंचमः सोपानः समाप्तः ॥ ५ ॥

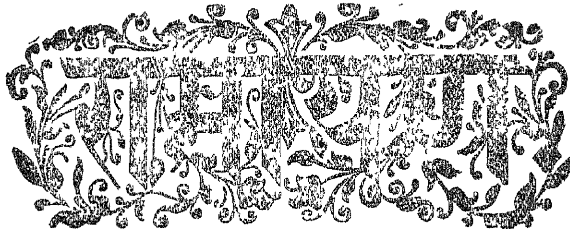
इति सुन्दरकाण्ड समाप्त ५.

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय-बंबई.

श्रीमद्रङ्केशो विजयते ।

अथ

श्रीयुतगोस्वामितुलसीदासजीकृत-



सटिप्पण,

लङ्काकाण्ड ६.

संपूर्ण क्षेपकों सहित.

जिसमें

सेतुरचना, चन्द्रोदय दर्शन, शुकसारणका कपिसैन्य दिखाना, अंगदको रावणकी सभामें जाना, राम रावणसंग्राम, कुंभकर्ण तथा मेघनाद वध, अहिरावण तथा नारांतक वधान्त रामचंद्रजी करके रावणका माराजाना, विभीषणको राज्यतिलक, जानकीजीका बंदिसे छूटना, शिव, ब्रह्मा इन्द्रकृत स्तुति, श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण, जानकीजीका सहित कपि यूथपोंके पुष्पक विमानारूढ हो अयोध्या गमन आदि अत्यन्त राम भक्ति अमृतरसभरी अद्भुत कथा वर्णित हैं।

यह ग्रन्थ

पण्डित-ज्वालाप्रसादजी मिश्रकेद्वारा

शुद्धकराकर,

खेमराज श्रीकृष्णदासने,

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९६२, शके १८२७.

॥ लङ्काकाण्ड ६ ॥

दोहा—समर विजय रघुवीरके, सुनहिं जे संत सुजान ॥
विजय विवेक विभूति नित, तिनहिं देहिं भगवान ॥

नल नीलादि बन्दरों करके सेतु रचना और श्रीरामचन्द्रजीका रामेश्वर (शिवलिंग) स्थापन करना।

चौपाई—भवभंजन गंजन संदेहा। जनरंजन सज्जन प्रियएहा ॥
रामउपासक जे जगमाहीं। इह सम प्रिय तिनकहँ कछुनाहीं॥

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय, खेतवाडी—बंबई.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS

Shree Venkateshwar (Steam) Press, Khetwadi—BOMBAY.

श्रीः ।

॥ श्रीमद्वेङ्कटेश्वराय नमः ॥

अथ श्रीतुलसीदासविरचिते-

रामायणे लङ्काकाण्डम् ।

श्लोकाः ।

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् ।
माया तीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं
वंदे कुन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥१॥
शंखेन्द्वाभमतीव सुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं
कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियम् ।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशंकरं कामदम् ॥ २॥
यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् ।
खलानां दण्डकृद्योऽसौ शंकरः शं तनोतु मे ॥३॥

"दोहा-छठवाँ लंकाकाण्ड यह, वारिधितट रघुवीर ॥
शोभित सभा ससैन घन, वन्दत रहत न पीर ॥१॥
सुदृढ सुभग शुठि सेतु रचि, सहित भालु कपि सैन ॥

श्लोकार्थ-शिवजीसे सेवित संसारभयको हरनेवाले कालरूपी मतवाले हाथीको सिंह योगियोंमें इंद्र और ज्ञानसे जानने योग्य गुणोंके समुद्र अजित गुणोंसे परे विकाररहित मायासे पृथक् देवताओंके गुरु दुष्टोंके मारनेमें प्रीति करनेवाल ब्राह्मणगणोंके एकही देवता जल और जलसे पूरित मेघकीसी आभा जिनके शरीरकी कमलकेसे नेत्र ऐसे पृथ्वीपति रामकी मैं वन्दना करताहूं ॥ १॥ शंख और चन्द्रमाके समान गौर और अतिसुंदर जिनका शरीर सिंहका चर्म जिनका वस्त्र और जो कालके समान सर्प और कपालभूषणको धारण करनेवाले और गंगा चंद्रमा जिनको अति प्रियहैं काशीके ईश पापके नाशक कल्याणके कल्पवृक्ष गिरिजाके पति चराचरके पूजनीयगुणोंके समूह कामदेवके शत्रु शिवजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ २ ॥ जो शिवजी सज्जनोंको दुर्लभ मुक्ति देतेहैं और खलोंको दंड करतेहैं सो शंकर मेरे कल्याणका विस्तार करैं ॥३॥

कृष्णविहारी पार भे. राम लषण बलवन्त ॥ २ ॥
मंदाकारि मुनि शीशधुनि. बहु विधि कंत मनाय ॥
अखिल अजन्म अनन्त अज. रूप विराट दिखाय ॥ ३ ॥
ताहिप्रबोधत आप शठ. गुणी समूह बुलाय ॥
निर्भय देखत नाट्य सुख, विविध यंत्र बजवाय ॥ ४ ॥
परम सुभट अरि शीशपर. यद्यपि भय नहिं लेश ॥
महासुबल सुसभायुत. राजत प्रभु अवधेश ॥ ५ ॥
नीति निपुण अंगद गये, प्रभुआज्ञाधरि शीश ॥
लंकापति सों बतकही, कहि न मान दशशीश ॥ ६ ॥
बहुरि चढाई लंककी. समर अकम्पनकाय ॥
मेघनाद योधा अपर, लड़े मरे गतिपाय ॥ ७ ॥
सती सुलोचनि कुंभश्रुति. समर कथा निकाय ॥
अहिरावण जूझन बहुरि. नारानक मुनि आय ॥ ८ ॥
तासु वधन सुनि पिंडु माति, समर भयो लंकेश ॥
व्याकुल सुर मुनि विप्रलखि. हत्यो ताहि अवधेश ॥ ९ ॥
बहुरि जानकी कर मिलन. विनती सुरन सों कीन ॥
भालु कपिन कर पुनि जियन.राज्य विभीषणदीन ॥ १० ॥
सहित जानकी लषण प्रभु. सचिव भक्त हनुमंत ॥
पुष्पकयान अरूढहै. चले अवध भगवंत ॥ ११ ॥
जहाँ तहाँ क्षेपक कथा. अरु बहु प्रसँग मिलाय ॥
गाथा रघुवर नामकी. पढत सुनत रुज जाय" ॥ १२ ॥

दोहा–लव[1] निमेष[2] परिमाणु युग. वर्ष[3] कल्प[4] शर चण्ड ॥
भजसि न मन तेहि राम कहँ. काल जासु कोदण्ड ॥ १ ॥

सो०–सिन्धु वचन सुनि राम, सचिव बोलि प्रभु अस कह्यउ ॥
अब विलम्ब केहि काम, रचहु सेतु उतरै कटक ॥ १ ॥
सुनहु भानुकुल केतु, जाम्बवन्त करजोरि कह ॥

१ पलककालगनावंदहोना । २ साठिनिमिषकाएकपरिमाणु । ३ बारह मासका एकवर्ष । ४ कल्पकही हजार सतयुग हजार त्रेता हजार द्वापर हजार कलियुग ऐसे चारिउयुग हजार हजार मिलके हजार चौकडी जब बीतैं तब ब्रह्माका एकदिन होताहै

नाथ नाम तव सेतु, नर चढि भवसागर तरहिं ॥ २ ॥
यह लघुजलधितरतकत बारा * असमुनिपुनिकहपवनकुमारा ॥
प्रभु प्रताप बडवानल भारी * शोषेउ प्रथम पयोनिधि वारी ॥
तव रिपुनारि रुदन जलधारा * भऱ्यो बहोरि भयो तेहि खारा ॥
सुनि असिउक्ति पवनसुतकेरी * विहँसे रघुपति कपितन हेरी ॥
जाम्बवन्त बोले दोउ भाई * नल नीलहि सब कथा सुनाई ॥
रामप्रताप सुमिरिउरमाहीं * करहु सेतु प्रयास कछुनाहीं ॥
बोलि लिये कपिनिकर बहोरी * सकल सुनहु विनती इक मोरी ॥
रामचरण पंकज उर धरहू * कौतुक एक भालु कपि करहू ॥
धावहु मर्कट विकट वरूथा * आनहु विटप गिरिनके यूथा ॥
सुनि कपि भालु चले करिहूहा * जय रघुवीर प्रताप समूहा ॥
दोहा–अति उतंग तरु शैल गण, लीलहिं लेहिं उठाइ ॥
आनि देहिं नल नील कहँ, विरचहिं सेतु बनाइ ॥ २ ॥
शैल विशाल आनि कपि देहीं * कंदुक इव नल नील सो लेहीं ॥
देखि सेतु अति सुन्दर रचना * बिहँसिकृपानिधि बोले वचना ॥

अथ क्षेपक ।

प्रथम दिवस नल सेतु सुहावन * चौदह योजन कीन्ह सुभावन ॥
द्वितियदिवस शुभ योजनवीसा * तीजे दिनइकइस कियकीसा ॥
दिवस चतुर्थ सुबाइस योजन * पंचमतेइस कियोमुदितमन ॥
दश योजन आयत अतिसुन्दर * शत योजन विशाल शोभाधर ॥
आज्ञा तब रघुराज सुनाई * पर्वत विटप नलावहु भाई ॥
सुनत वचन कीशन सुख माना * जहँ तहँ पर्वत तजे निदाना ॥
पवनपुत्र उत्तरते आवत * गोवर्द्धन पर्वत कहँ लावत ॥
वृन्दावन कानन नियराई * प्रभुकी आज्ञा सुनी सुहाई ॥
तहँ गोवर्द्धनको पधरायो * विप्ररूप तिन वचन सुनायो ॥
प्रभु दर्शनकी इच्छा भारी * तजो न विनती सुनहु हमारी ॥

अस सुनि चले द्विज मुनि ज्ञानी * [illegible] बानी ॥
रघुपति कह्यो सुनहु हनुमाना * [illegible] मतिमाना ॥
द्वापर जन्म कृष्ण अवतारा * करिहौं हरन भूमि कर भारा ॥
सात दिना तोहि कर पर धारौं * व्रजवासिन को कष्ट निवारौं ॥
यह तुम ताहि सुनावहु जाई * चले पवनसुत आतुर धाई ॥
कही सकल तेहि प्रभु की बानी * आये सुनि प्रभु पाहिं सुखमानी ॥

इति क्षेपक ।

परमरम्य सुंदर यह धरणी * महिमा अमित जाइ नहिं बरणी ॥
करिहौं यहाँ शम्भु थापना * मोरे हृदय परम कल्पना ॥
सुनि कपीश बहु दूत पठाये * मुनिवर सकल बोलि लै आये ॥
लिंग थापि विधिवत करि पूजा * शिवसमान प्रिय मोहिं न दूजा ॥
शिवद्रोही ममदास कहावै * सो नर सपनेहु मोहि न भावै ॥
शंकर विमुख भक्ति चह मोरी * सो नारकी मूढ मति थोरी ॥
दोहा—शंकरप्रिय ममद्रोही, शिवद्रोही मम दास ॥
ते नर करहिं कल्प भरि, घोर नरक महँ बास ॥
जो रामेश्वर दर्शन करिहैं * ते तनु तजि मम लोक सिधारिहैं ॥
जो गंगाजल आनि चढाइहि * सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहि ॥
होई अकाम जो छल तजि सेइहि * भक्ति मोरि तिहिं शंकर देइहि ॥
ममकृत सेतु जु दर्शन करिहैं * सो बिनु श्रम भवसागर तरिहैं ॥
रामवचन सबके मनभाये * मुनिवर निज निज आश्रम आये ॥
गिरिजा रघुपति की यह रीती * सन्तत करहिं प्रणत पर प्रीती ॥
बाँधेउ सेतु नील नल नागर * रामकृपा यश भयउ उजागर ॥
बूडहिं आनहिं बोरहिं जेई * भये प्रबल बोहित सम तेई ।
महिमा यह न जलधिकी बरणी * पाहन गुण न कपिनकी करणी ॥
दोहा—श्रीरघुवीर प्रतापते, सिन्धु तरे पाषान ॥
ते मतिमन्द जे रामतजि, भजहिं जाय प्रभु आन ॥४॥

१ अत्रि, अगस्त्य, च्यवन, मार्कण्डेय, गर्ग, मुद्गल, नारद, शुकदेवादि अनन्तमुनि अपने अपने स्थानको गये ।
२ निरन्तर । ३ शरणागत । ४ श्रेष्ठ । ५ जहाज । ६ पत्थर । [illegible]

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा * देखि कृपानिधिके मनभावा॥
चली सेन कछु बरणि न जाई * गर्जहिं मर्कट भट समुदाई॥
सेतु बंध ढिग चढ़ि रघुराई * चितै कृपालु सिन्धु अधिकाई॥
देखन कहँ प्रभु करुणाकन्दा * प्रगट भये सब जलचर वृन्दा॥
नाना मकर नक्र झष व्याला *शत योजन तनु परम विशाला॥
ऐसे एक तिन्हहिं धरि खाहीं * एकन के डर एक पराहीं॥
प्रभुहि विलोकहिं टरहिं न टारे * मन हर्षित सब भये सुखारे॥
तिनकी ओट न देखिय वारी * मगन भये हरिरूप निहारी॥
चला कटक कछु बरणि न जाई * को कहि सक कपिदल विपुलाई
दोहा—सेतुबन्ध भइ भीर अति, कपि नभ पन्थ उड़ाहिं॥
अपर जलचरनि ऊपर चढ़ि, विनु श्रम पारहिं जाहिं॥५॥
यह कौतुक विलोकि दोउ भाई * विहँसि चले कृपालु रघुराई॥
सेन सहित उतरे रघुवीरा * कहि न जात कछु यूथप भीरा॥
सिन्धु पार प्रभु डेरा कीन्हा *सकलकपिनकहँआयसुदीन्हा॥
खाहु जाइ फलमूल सुहाये * सुनत भालुकपि जहँ तहँ धाये॥
सब तरु फले राम हित लागी * ऋतुअनऋतुहि कालगति त्यागी
खाहिं मधुरफल विटप हिलावहिं*लंकासन्मुखशिखर चलावहिं॥
जहँ कहुँ फिरत निशाचरपावहिं* घेरि सकलमिलिनाचनचावहिं
दशनन काटि नासिका काना * कहि प्रभु सुयश देहिं तब जाना
जिनकर नासा कान निपाता * तेइँ रावणहिं कही सब बाता॥
सुनत श्रवण वारिधि बंधाना * दशमुख बोलि उठा अकुलाना॥
दोहा—बाँधेउ जलनिधि नीरनिधि, जलधि सिन्धुवारीश॥
सत्य तोयनिधि पंकनिधि, उदधि पयोधि नदीश॥६॥
व्याकुलता निज समुझि बहोरी*विहँसि चला गृह करिमतिभोरी
मन्दोदरी सुना प्रभु आये * कौतुक ही पाथोधि बँधाये॥
करगहिपतिहिभवननिजआनी * बोली परममनोहर बानी॥

१ मीन। २ पानी। वृक्ष। ४ दाँतनसे। ५ बिसराइके। ६ हाथपकरके।

[illegible] जाइ फिर आनल रोपा * सुनहु [illegible] करि कोपा ॥
नाथ बैर कीजै ताही सों * बुधि [illegible] ही सों ॥
तुम्हहिं रघुपतिहि अंतर कैसा * खलु खद्योत दिनकरहि जैसा ॥
अतिबल मधुकैटभ जिनमारे * महावीर दितिसुत संहारे ॥
जेहि बलि बाँधि सहसभुजमारा * सोइ अवतरेउ हरणमहिभारा ॥
तासु विरोध न कीजिय नाथा * काल कर्मगुण जिनके हाथा ॥
दोहा—रामहिं सौंपहु जानकी, नाइ कमलपद माथ ॥
सुत कहँ राज्य दइ वन, जाइ भजहु रघुनाथ ॥ ७ ॥
नाथ दीनदयालु रघुराई * बाघौ सन्मुख गये न खाई ॥
चाहियकरण सो सब करि बीते * तुम सुर असुर चराचर जीते ॥
वेद कहहिं अस नीति दशानन * चौथेपनहिं जाइ नृप कानन ॥
तासु भजन कीजिय तहँ भर्त्ता * जो कर्त्ता पालक संहर्त्ता ॥
सोइ रघुवीर प्रणत अनुरागी * भजहु नाथ ममता मद त्यागी ॥
मुनिवर यत्न करहिं जेहि लागी * भूपराज्य तजि होहिं विरागी ॥
सोइ कोशलाधीश रघुराया * आये करन तोहिंपर दाया ॥
जो पिय मानहु मोर शिखावन * होइहि सुयश तिहूँ पुर पावन ॥
दोहा—अस कहि लोचन वारि भरि, गहि पद कंपित गात ॥
नाथ भजहु रघुनाथ पद, मम अहिवात न जात ॥ ८ ॥
तब रावण मयसुता उठाई * कहै लागु खल निज प्रभुताई ॥
सुनु तैं प्रिया मृषा भयमाना * जग योधा को मोहिं समाना ॥
वरुण कुबेर पवन यम काला * भुजबलजित्यहुँसकलदिग्पाला
देव दनुज नर सब वश मोरे * कौन हेतु भय उपजा तोरे ॥
नानाविधिकहि तेहि समुझाई * सभा बहोरि बैठ सो जाई ॥
मन्दोदरी हृदय अस जाना * काल विवश उपजा अभिमाना ॥
सभा जाइ मंत्रिन सों बूझा * करियकवनविधिरिपुसन जूझा
कहहिंसचिवसुनिनिशिचरनाहा * बार बार प्रभु पूँछहु काहा ॥

१ वन । २ मद । ३ निन्दा ।

कहहु कवनभय करियविचारा * नर कपि भालु अहार हमारा ॥
दोहा-वचन सबनके श्रवण सुनि, कह प्रहस्त करजोरि ॥
नीति विरोध न करिय प्रभु, मंत्रिन मति अतिथोरि ॥ ९ ॥
कहहिं सचिव सब ठकुरसुहाती * नाथ न भल होइहि यहिभाँती॥
वारिधि लाँघि एक कपि आवा * तासु चरित मनमहँ सबगावा ॥
क्षुधा न रही तुमहिं सब काहू * जारत नगर न साँकिधरिखाहू ॥
सुनत नीक आगे दुखपावा *सचिवनअसमत प्रभुहिसुनावा॥
जो वारीश बँधायउ हेला * उतरे कपिदल सहित सुवेला ॥
सो जनु मनुज खाब हमभाई * वचन कहहु सब गालफुलाई ॥
सुनि ममवचन तात अतिआदर*निजमनगुणहुमोहिंकहिकादर॥
प्रियवाणी जे सुनहि जे कहहीं * ऐसे जग निकाय नर अहहीं ॥
"वचन परम हित सुनत कठोरे * कहहिं सुनहिंते नर प्रभुथोरे ॥
प्रथम बसीठ पठव सुन नीती * सीतहि देइ करिय पुनि प्रीती ॥
दोहा-नारि पाइ फिरि जाहिं जो, तौ न बढ़ाइय रार ॥
नाहिं तो सन्मुख समर महँ, नाथ करिय हठ मार" ॥१०॥
यह मत जो मानहु प्रभु मोरा * उभय प्रकार सुयश जगतोरा ॥
सुतसन कह दशकंध रिसाई *असमति तोहिंशठ कौनशिखाई
अबहींते उर संशय होई * वेणुवंश सुत भयासि घमोई ॥
सुनि पितुगिरा परुष अतिघोरा * चला भवन कहिवचनकठोरा ॥
हित मत तोहि न लागत कैसे * कालविवश कहँ भेषज जैसे ॥
संध्या समय जानि दशशीशा * भवनचलानिरखतभुजवीसा ॥
लंका शिखर रुचिर आगारा *अति विचित्र तहँ होयअखारा॥
बैठ जाइ तेहि मन्दिर रावन * लागे किन्नर गँधरव गावन ॥
बाजै ताल पखावज वीणा * नृत्य कराहिं अप्सरा प्रवीणा ॥
दोहा-सुनासीर शत सरिस सो, सन्तत करै विलास ॥
परम प्रबल रिपु शीश पर, तदपि न कछु मन त्रास ॥ ११ ॥

१ बहुत है। २ औषधी। ३ इन्द्र। ४ भय।

यहाँ सुबेल शैल रघुबीरा * उतरे सेन सहित अति भीरा ॥
शैल शृंग इक सुन्दर देखी * अति उतंग सम शुभ्र विशेषी ॥
तहँ तरु किसलय सुमन सुहाये * लक्ष्मण रचि निज हाथ डसाये ॥
तापर रुचिर मृदुल मृगछाला * तेहि आसन आसीन कृपाला ॥
प्रभुकृत शीश कपीशउछंगा * बाम दहिन दिशि चाप निषंगा ॥
दुहुँ कर कमल सुधारत बाना * कह लंकेश मंत्र लगि काना ॥
बड़भागी अंगद हनुमाना * चरणकमल चापत विधि नाना ॥
प्रभु पाछे लक्ष्मण वीरासन * कटि निषंग कर बाणशरासन ॥
दोहा—इहि विधि करुणा शील गुण, धाम राम आसीन ॥
ते नर धन्य जो ध्यानयहि, रहहिं सदा लवलीन ॥ १२ ॥
पूरव दिशा विलोकि प्रभु, देखा उदित मयंक ।
कह्यो सबहिं देखहु शशिहि, मृगपति सरिस अशंक ॥ १३ ॥
पूरव दिशि गिरिगुहानिवासी * परम प्रताप तेज बल राशी ॥
मत्त नाग तम कुम्भ विदारी * शशि केहरी गगन वनचारी ॥
विथुरे नभमुकुताहल तारा * निशि सुन्दरी केर शृंगारा ॥
कह प्रभुशशिमहँ मेचकताई *कहहु काहनिजनिजमति भाई ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराया * शशि महँ प्रगट भूमिकीछाया ॥
मारेहु राहु शशिहि कहकोई * उर महँ परी श्यामता सोई ॥
कोउकहजबविधिरतिमुखकीन्हा * सारभागशशिकरहरिलीन्हा ॥
छिद्रसो प्रगट इन्दु उरमाहीं * तेहिमगदेखियनभपरिछाहीं ॥
कोउ कह गरलबन्धु शशि केरा * अतिप्रिय निज उरदीन्हबसेरा ॥
विष संयुक्त कर निकर पसारी * जारत विरहवन्त नर नारी ॥
दोहा—कह मारुतसुत[13] सुनहु प्रभु, शशि तुम्हार प्रियदास ॥
तव मूरति तेहि उर बसत, सोइ श्यामता भास ॥ १४ ॥
पवनतनयके वचन सुनि, बिहँसे राम सुजान ॥
दक्षिण दिशा विलोकि पुनि, बोले कृपानिधान ॥ १५ ॥

१ अत्यन्त ऊंचा। २ बराबर। ३ कोमलपत्ता। ४ विराजमान भये हैं। ५ सुग्रीव। ६ गोद। ७ निर्भय। ८ चन्द्र। ९ सिंह। १० श्यामता। ११ विधाता। १२ विष। १३ हनुमानजी।

देखु विभीषण दक्षिण आसा * घन घमण्ड दामिनी विलासा॥
मधुर मधुर गर्जत घन घोरा * होइ वृष्टि जनु उपल कठोरा ॥
कहत विभीषण सुनहु कृपाला * होइ न तडित न वारिदमाला ॥
लंकाशिखर रुचिर अगारा * तहँ दशकन्धर केर अखारा ॥
छत्र मेघ डम्बर शिरधारी * सो जनु जलदघटा अतिकारी॥
मन्दोदरी श्रवण ताटंका * सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका॥
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा * सोइ रव सरस सुनहु सुरभूपा॥
प्रभुमुसुकान देखि अभिमाना * चाप चढाइ बाण सन्धाना ॥
दोहा-छत्र मुकुट ताटंक सब, हते एकही बान ॥
सबके देखत महि गिरे, मर्म न काहू जान ॥ १६ ॥
अस कौतुक करि रामशर, प्रविश्यो आइ निषंग ॥
रावण सभा सशंक सब, देखि महारसभंग ॥ १७ ॥
कम्प न भूमि न मरुत विशेषा * अस्त्र शस्त्र कोउ नयन न देखा॥
शोचहिंसबनिजहृदयविचारी * अशकुन भयउ भयंकर भारी॥
रावण दीख सभा भयपाई * विहँसि वचन कहयुक्तिबनाई॥
शिरौ गिरे सन्तत शुभ जाही * मुकुट गिरेकसअशकुन ताही॥
शयन करहु निजनिजगृहजाई * गवने भवन सकल शिरनाई॥
मन्दोदरी शोच उर बसेऊ * जब ते श्रवणफूल महि खसेऊ॥
सजल नयन कह युगकरजोरी * सुनहु प्राणपति विनती मोरी ॥
राम विरोध कन्त परिहरहू * जानिमनुजजनि हठ उरधरहू॥
दोहा-विश्वरूप रघुवंश मणि, करहु वचन विश्वास ॥
लोक कल्पना वेद कह, अंग अंग प्रति जास ॥१८॥
पदपाताल शीश अज धामा * अपरलोक अंगन्ह विश्रामा ॥
भ्रुकुटि विलास भयंकर काला * नयन दिवाकर कचघनमाला॥
जासु घ्राण अश्विनीकुमारा * निशिअरुदिवसनिमेषअपारा॥
श्रवण दिशा दश वेद बखानी * मारुत श्वास निगमनिजवानी॥

१ स्थान । २ सभा । ३ गर्जन । ४ धनुष

अधर लोभ यम दशन कराला * माया हास बाहु दिगपाला ॥
आनन अनल अम्बुपति जीहा * उत्पति पालन प्रलय समीहा॥
रोमावली अष्टदश भारा * अस्थि शैल सरिता नसजारा॥
उदर उदधि अघ गोयातना * जगमय प्रभु की बहुकल्पना ॥
दोहा--अहंकार शिव बुद्धि अज, मन शशि चित्त महान ॥
मनुज वास चर अचर मय, रूपराशि भगवान ॥ १९ ॥
अस विचारि सुनु प्राणपति, प्रभु सन वैर विहाइ ॥
प्रीति करहु रघुवीरपद, मम अहिवात नजाइ ॥ २० ॥
बिहँसानारि वचन सुनि काना * अहो मोह महिमा बलवाना ॥
नारि स्वभाव सत्य कविकहहीं * अवगुण आठ सदा उर रहहीं ॥
साहस अनृत चपलता माया * भय अविवेक अशौच अदाया॥
रिपुकर रूप सकल तैं गाया * अतिविशालभय मोहिं सुनावा॥
सो सब प्रिया सहजवश मोरे * समुझि परा प्रभाव अब तोरे ॥
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई * यहिविधिकहहुमोरिप्रभुताई ॥
तव बतकही गूढ मृगलोचनि * समुझतसुखदसुनतभयमोचनि
मन्दोदरि मनमहँ अस ठयऊ * पियहिंकालवशमतिभ्रमभयऊ
दोहा-बहुविधि जल्पेसि सकल निशि, प्रात भये दशकन्ध ॥
सहज अशंक सो लंकपति, सभा गयो मदअन्ध ॥ २१ ॥
सो०-फूलै फलै न बेत, यदपि सुधा वर्षहिं जलद ॥
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरंचिसम ॥ ३ ॥

अथ क्षेपक ।

दोहा-मंत्रिन सहित दशानन, चढेउ धवरहरजाय ॥
शुक सारन कह राज सन, देखहु कांपे समुदाय ॥२२॥
ये जो सिंहनाद किल करहीं * सत ताल उन्नत संचरहीं ॥
सहस कोटि अतुलितबलवाना * इनके सँग वानर परिमाना ॥
रण अजीत ये सहज अशंका * नाद सुने काँपै गढलंका ॥

१ बिनाविचारे शीघ्र कामकरना । २ मिथ्या कहना । ३ चंचल स्वभाव । ४ अभिमान भरी बातें मन्दोदरीसे करतारहा ।

नभ निरखहु इनके लंगूरं * जनु ऋतु पावस धनु नभ पूरं ॥
विश्वकर्माके सुत गुणखानी * इन्ह परशं पय शिल उतरानी॥
बसहिं ताम्र गिरि कन्दर माहीं * गोदावरी विमल जल पाहीं ॥
अतिबल आगे धावहिं वीरा * इनपर कृपा करहिं रघुवीरा ॥
करहिं यमहु कर संगर ढीला * कज्जल बरण नाम नलनीला ॥
दोहा-पद्म अठारह कपि कटक, चल इनकी भुजछाहँ ॥
निज कर सुरभी सुमन लै, रघुपति पूजी बाहँ ॥ २३ ॥
यह जो आवत अचल समाना * चौदह ताड ऊंच परमाना ॥
वास पुलिन्दा के तट करई *अम्बुध निकर निरखिकरधरई॥
रक्त कमल दल सम सब देहा * जनुविकसेउ संध्याकर मेहा ॥
हतै मेदिनी पूंछ भवाँई * लंका सौंह चितव जनु खाई ॥
तारा सुवन वालिको जायो * अतिजुझार रघुपति मनभायो॥
हृदय गगन इहिके प्रभु भानू * पंच पद्म इनकर परमानू ॥
करैवज्र वासव कर भंगा * उदयाचल कहँ लेइ उछंगा ॥
परम चतुर सेनप यहि लागी * रघुपति कृपा परम बड़भागी ॥
दोहा-पाउँ धराधरि चापै, पन्नग होइ अकाज ॥
सैन अग्रसर देखहु, यह अंगद युवराज ॥ २४ ॥
यह जो श्वेत वर्ण तनुरेखा * मनहु रजत गिरि शृंगविशेषा ॥
दीर्घकेश दारुण भुजदण्डा * चलत चपल बलबुद्धिप्रचण्डा ॥
वास करै जलनिधिके तीरा * पान करै गोमती सुनीरा ॥
नृप सुग्रीव केर अधिकारी * सबल व्यूह यह रचै सँवारी ॥
जन्मत चन्द्रहि ग्रसन उड़ाना * इहिकर पुरुषारथ जगजाना ॥
निरखि गगन राकाशशिसोहा * शिशुअजानतेहिलगिमनमोहा
धरणी धसकिधरनजबउडेऊ * सत्तारि योजनते पुनि फिरेऊ॥
दोहा-कोटि पंचशत मर्कट, रहहिँ सर्वदा साथ ॥
कालहुते रण लरि सकै, कुमुद नाम कपिनाथ ॥ २५ ॥

१ पृथ्वी । २ इन्द्र । ३ शेषनाग

ये देखहु जे चहुँदिशि घुमडे * मनहुँ लंक सावन घन उमडे ॥
आगू पीछू दशदिशि धावहिं * शिला शृंग तरु तोरत आवहिं ॥
सहस नागबल सबहिं समाना * सत पद्म इनकर परिमाना ॥
काशीपुरी वास इन्हकेरी * समर कतहुँ जिन पीठ नफेरी ॥
तीक्षणदन्त नखायुध धारी * द्वन्द्व युद्ध ये जानहिं भारी ॥
धूमकेतु यूथप इन्ह केरा * लंकानिकट कीन्ह जेहि डेरा ॥
इहिकर जेठ बन्धु जँबवन्ता * तेहिके बल कर पावकोअन्ता ॥
देव दनुज को जूझै ताही * धरा होहिकर कंदुक जाही ॥
बसै अशंक नर्मदा तीरा * अशनि समान अभेद शरीरा ॥
दोहा-सचिव सुकण्ठ राजकर, रघुवर कर प्रियदास ॥
सो जड़ मन्द जो याहि रण, चह जीतन की आस ॥२६॥
अब देखहु यह यूथ अपारा * पीतवरण होइ गयउ पहारा ॥
बाल अरुण मरीचिजसफूटी * निशिचर निकरतमीचहछूटी ॥
चौबिस अर्बुद इनकर यूहा * सहस वृंद सौ कोटि समूहा ॥
शिला शैल जे आगे परहीं * पाँयन मर्दि गर्द सम करहीं ॥
कंचन गिरि कन्दरके वासी * इनकर यूथ नाथ अविनासी ॥
अति बल वासव कर हितकारी * सखा सुकण्ठकेर सुखकारी ॥
पान करै गंगाकर नीरा * पर्वत शृंग समान शरीरा ॥
क्षण क्षण सिंहनाद जो होई * गर्जत आवत है कपि सोई ॥
दोहा-यश तिहुँ मण्डल गलित गज, बलकर नाहिंन अंत ॥
यह कपिराजा केशरी, सुवंन जासु हनुमंत ॥ २७ ॥
उत्तर दिशि देखहु रजधानी * जनुदुकाल लगिशलभउड़ानी ॥
मर्कट निकर विकल बल टूटे * आवत उदधि कूल जनु छूटे ॥
इहिदल यूथनाथ जो अहई * अतिबलवंत राजसँग रहई ॥
कपिके रूप अनल अविनासी * एदोउ पारियात्रके वासी ॥
अतिसुन्दर अरु समर विपक्षा * महाबली दोउ गवय गवक्षा ॥

१ वज्र । २ सुग्रीव । ३ पुत्र । ४

ये दोउ गर्जत अति रणधीरा * पीवहिं तुंगभद्र कर नीरा ॥
सत्तारिसहस नागबल जाहीं * इनमहँ एक कहौं मैं ताही ॥
अपर बली गँधमादन नामा * रण अजेय पुनि सब गुणधामा
दोहा–वासव विबुध वृन्द महँ, तेजनमहँ जस भानु ॥
पनस नाम यह वानर, अतिबल नीति निधानु ॥ २८ ॥
यह जो कुमुदपत्र सम देहा * जस कैलास शरद कर मेहा ॥
लोचन मधु पिंगल अति लोने * कामरूप चितवन चहुँ कोने ॥
लंका सौंह लँगूर फिराई * गर्जत प्रलय मेघकी नाई ॥
सुरपति साथ युद्ध कहँ गयऊ * तब ते कामरूप यह भयऊ ॥
मघवा इहिसन कीन्ह मिताई * करै सदा यह देव सहाई ॥
सहस कोटि कपि इहिके संगा * राते पीत श्वेत बहुरंगा ॥
वचन मृषा मम प्रभु यह नाहीं * अपरवालि जानहु मन माहीं ॥
दरदुर शैल सदन इहि केरा * मन वच कर्म्म राम कर चेरा ॥
दोहा–गिरिवर लाँघत आवत, चलत उडावत रेणु ॥
तरणि तेज इन रूँधेउ, तारातनय सुषेणु ॥ २९ ॥
यह कपि लसत मनहुँ गिरिगेरू * दिनमुखछबिजसलहतसुमेरू ॥
सोइकपि प्रथम लंक जेहिजारी * प्रभुकेहि लगि आवत इहिवारी ॥
अंजनि गर्भ जन्म जब भयऊ * क्षुदित जननिसनअरतसठयऊ
तेइँकहसुपक्क अरुण फलखाहू * सुनत चितवइतउत चितचाहू ॥
बाल अरुण लखि गगन उड़ाना * ग्रसेसि तरणि वासव तबजाना ॥
मारेउ वज्र चिबुक भइ टेढी * कोपि पवन समीर सम वेढी ॥
देव विकल होइ अस्तुति कीन्हा * कुशलहोउ तनु असवरदीन्हा ॥
तब रवि छाँडि पवनसुतदीन्हा * जय जयकार देवतन कीन्हा ॥
विद्या पढत भानुके पाहीं * उलटी गति रवि आगे जाहीं ॥
वारिधि लाँघेउ गोपद जैसे * यहि कपीशसन जूझब कैसे ॥
दोहा–अंबक पीत बालरवि, वदन तेज अति राज ॥

पवन ते वेग अधिक जनु, अनल नितंब सुभ्राज ॥ ३० ॥
अतसी कुसुम वरण तनु रेखा * पुरुष पुराण धरे नरवेषा ॥
मत्त गजेन्द्र शुण्ड भुजदण्डा * धनुष बाण असि धरे प्रचण्डा ॥
उरविशाल अति उन्नत कंधर * कम्बु कण्ठ रेखा प्रसन्नवर ॥
मुख छबिकी उपमा कविजोहैं * शशि सरोज सम कहै न सोहैं॥
दशन पाँति की काँति कहै को * ललकतमन पटतारिय लहै को॥
देखत अधरन की अरुणाई * विम्बाफल बन्धूक लजाई ॥
शुक तुण्डहि नासिका लजावै * थके सुकवि नहिं पटतर आवै॥
शीश जटा के मुकुट बनाये * भाल विशालतिलक अति भाये
दक्षिण दिशि लक्ष्मण बलवीरा * रामबाहु सम अति रणधीरा ॥
दोहा--वाम विभीषण सोहहीं, शिर अभिषेका राज ॥
बीजमंत्र सब जानहीं, अकसरकरहिं सुकाज ॥ ३१ ॥
अब देखहु यह सेन सुहाई * भादौं मेघ घटा जनु छाई ॥
कन्या एक ब्रह्म उपजाई * नयन भूरि अरु रूप लुनाई ॥
बाल भाव दिनकर बल दीन्हा * ऋतु जानी वासव रति कीन्हा॥
जातक यमल वीर दोउ जाये * देव अंश वानर तनु पाये ॥
किष्किन्धापर इनकर थाना * देव सारिस मधुवन उद्याना ॥
ऋष्यमूक इनकर विश्रामा * चातुर्मास वसे जहँ रामा ॥
वाली ज्येष्ठ राम रणमारा * यहि कहँ राजातिलक प्रभुसारा
तारा तासु भई पटरानी * जेहि कर सुत अंगद अतिज्ञानी
सहस शंकु कर अर्बुद एका * अर्बुद सहस कि वृन्द विशोका॥
सहस विन्दु गणकन गणिमाना * महापद्म तेहि कर परिमाना ॥
ऐसे पद्म अठारह साजा * विग्रह बढ़ेउ राम के काजा ॥
वीर वेष अरु नयन विशाला * कम्बु कण्ठ मोतिनकी माला ॥
दोहा-हस्ती साठि सहस्र बल, सदा धर्म्मकी सींव ॥
श्वेत छत्र शिर शोभित, यह राजा सुग्रीव ॥ ३२ ॥

१ शंख । २ ओष्ठनकी । ३ कुंदरू । ४ उपमा ।

इहि विधि सकल दिखाये, सारन कपिदलयूह ॥
गनै न रावण कालवश, अतिशय गर्व समूह ॥ ३३ ॥
इति क्षेपक ।

इहाँ प्रात जागे रघुराई * पूँछा मत सब सचिव बुलाई ॥
कहहु वेगि का करिय उपाई * जाम्बवन्त कह पदशिरनाई ॥
सुनु सर्व्वज्ञ सकल उरवासी * सर्व्व रूप सब रहित उदासी ॥
मंत्र कहब निजमति अनुसारा * दूत पठाइय वालिकुमारा ॥
नीकमंत्र सबके मनमाना * अंगद सन कह कृपानिधाना ॥
वालितनय बुधिवल गुणधामा * लंका जाहु तात ममकामा ॥
वहुत बुझाइ तुमहिं का कहऊं * परम चतुर मैं जानत अहऊं ॥
काज हमार तासु हित होई * रिपुसन करेहु बतकही सोई ॥
सो०-प्रभु आज्ञा धरिशीश, चरण वन्दि अंगद कह्यहु ॥
सोइ गुणसागर ईश, राम कृपा जापर करहु ॥ ४ ॥
स्वयं सिद्धि सब काज, नाथ मोहिं आदर दयउ ॥
अस विचारि युवराज, तनु पुलकित हर्षित भयउ ॥ ५ ॥
वन्दि चरण उर धरि प्रभुताई * अंगद चलेउ सबहिं शिरनाई ॥
प्रभुप्रताप उर सहज अशंका * रण बाँकुरा[1] वालिसुतबंका ॥
पुर पैठत रावणकर बेटा[2] * खेलत रहा सो होइ गइ भेटा ॥
बातहिं बात कर्ष[3] बढ़ि आई * युगल अतुलबल पुनितरुणाई ॥
तेहि अंगद कहँ लात उठाई * गहिपद पटकेउ भूमि भ्रमाई ॥
निशिचर निकर देखि भटभारी * जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी ॥
एक एक सन मर्म[4] न कहहीं * समुझि तासुबलचुपहोइरहहीं ॥
भयउ कोलाहल[5] नगर मँझारी * आवा कपि लंका जेइ जारी ॥
अबधौं कहा करहि करतारा * अतिसभीतसब करहिंविचारा ॥
बिनु पूँछे मग[6] देहिं बताई * जेहि बिलोकि सोइजाइसुखाई ॥
दोहा-गयो सभा दरबार रिपु, सुमिरि रामपदकंज ॥

१ युद्धक्रियामें प्रवीण । २ महस्त । ३ क्रोध । ४ भेद । ५ हल्ला । ६ रास्ता ।

सिंहठवनि इत उत चितै, धीर वीर बलपुंज ॥ ३४ ॥

तुरत निशाचर एक पठावा * समाचार रावणहिं सुनावा ॥
सुनत वचन बोलेउ दशशीशा * आनहु बोलि कहाँकर कीशा ॥
आयसु पाइ दूत बहु धाये * कपि कुंजरहि बोलि लै आये ॥
अंगद दीख दशानन वैसा * सहित प्राण कज्जलगिरि जैसा ॥
भुजा विटप[१] शिर शृंग[२]समाना * रोमावली लता तरु नाना ॥
मुख नासिका नयन अरु काना * गिरि कन्दरा खोह अनुमाना ॥
गयउ सभा मन नेकु न मुरा * बालितनय अति बलबाँकुरा ॥
उठी सभा सब कपि कहँ देखी * रावण उरभा क्रोध विशेखी ॥

दोहा–यथा मत्त गजयूथ महँ, पंचानन[३] चलिजाय ॥
रामप्रताप सँभारि उर, बैठु सभाहिं शिरनाय ॥ ३५ ॥

कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर * मैं रघुवीर दूत दशकन्धर ॥
मम जनक[४]हि तोहिं रही मिताई * तवहित कारण आयउँ भाई ॥
उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती * शिव विरंचि पूजेहु बहु भाँती ॥
वर पायउ कीन्हेउ सब काजा * जीतहु लोकपाल सुरराजा ॥
नृप अभिमान मोहवश किम्बा * हरि आनेहु सीता जगदम्बा ॥
अब शुभ कहा करहु तुम मोरा * सब अपराध क्षमहिंप्रभुतोरा ॥
दशन गहहु तृण कण्ठ कुठारी * पुरजन संग सहित निज नारी ॥
सादर जनकसुता करि आगे * इहिविधिचलहुसकलभयत्यागे ॥

दोहा–प्रणतपाल रघुवंश मणि, त्राहि त्राहि अब मोहिं ॥
सुनतहि आरत वचन प्रभु, अभय कराहिंगे तोहिं ॥ ३६ ॥

रे कपि पोच बोलु न सँभारी * मूढ़ न जानसि मोहिं सुरारी ॥
कह निजनाम जनक कर भाई * केहि नाते मानिये मिताई ॥
अंगद नाम बालि कर बेटा * तोसों कबहुँ भई होइ भेटा ॥
अंगद वचन सुनत सकुचाना * रहा बालि वानर मैं जाना ॥
अंगद तुहीं बालिकर बालक * उपजेउ वंशअनलकुलघालक[५] ॥

१ वृक्ष । २ पर्वतकाकँगूरा । ३ सिंह । ४ पिता । ५ विकल ।

गर्भ न खसेउ वृथा तुम जाये * निजमुख तापस दूत कहाये ॥
अब कहु कुशल वालिकहुअहँई * विहँसि वचन अंगदअसकहई॥
दिन दश गये वालि पहँ जाई * पूँछेहु कुशल सखा उर लाई ॥
राम विरोध कुशल जस होई * सो सब तुमहिं सुनाइहिसोई ॥
सुनु शठ भेद होइ मन ताके * श्रीरघुवीर हृदय नाहिंजाके ॥
दोहा—हम कुलघालक सत्य तुम, कुलपालक दशशीश ॥
अन्धउ बधिर न कहहिं अस, श्रवण नयन तव वीश॥३७॥
शिव विरंचि सुर मुनि समुदाई * चाहत जासु चरण सेवकाई ॥
तासु दूत होइ हम कुलबोरा * ऐसी मति उर विहरु न तोरा॥
सुनि कठोरवाणी कपि केरी * कहत दशानन नयन तरेरी ॥
खल तव वचन कठिन मैं सहऊँ * नीति धर्म सब जानत अहऊँ॥
कह कपि धर्मशीलता तोरी * हमहुँ सुनी कृतपरातियचोरी॥
देखेउँ नयन दूत रखवारी * बूडि न मरेहु धर्मव्रत धारी ॥
नाक कान विनु भगिनि निहारी * क्षमा कीन्ह तुम धर्म विचारी॥
धर्म शीलता तव जग जागी * पावा दरश हमहुँ बड़भागी ॥
दोहा—जनि जल्पसि जड जन्तु कपि, शठ विलोकु ममबाहु ॥
लोकपाल बल विपुल शशि, ग्रसन हेतु जिमिराहु ॥ ३८ ॥
पुनि नभ सर ममकर निकर, कर कमलन पर वास ॥
शोभित भयो मरालइव, शम्भु सहित कैलास ॥ ३९ ॥
तुम्हरे कटक माहिं सुनु अंगद * मोसन भिरहि कौन योधा वद॥
तव प्रभु नारि विरह बलहीना * अनुजतासु दुख दुखितमलीना
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ * बन्धु हमार भीरु अति सोऊ॥
जाम्बवन्त मंत्री अतिबूढा * सो किमि होइ समर आरूढा॥
शिलपकर्म जानत नल नीला * है कपि एक महाबलशीला ॥
आवा प्रथम नगर जेहिजारा * सुनि हँसि बोलेउ वालिकुमारा
सत्यवचन कह निशिचर नाहा * साँचहु कीश कीन्ह पुर दाहा॥

१ बहिरा । २ डरपोक ।

रावण नगर अल्प कपि दहई * को अस झूंठ कहै को सुनई ॥
जो अति सुभट सराहेउ रावन * सो सुग्रीव केर लघुधावन ॥
चले बहुत सो बीर न होई * पठवा खबरि लेन हम सोई ॥
दोहा–"अब जाना पुरदहेउ कपि, बिनु प्रभु आयसु पाइ ॥
गयउ न फिर निजनाथ पहँ तेहि भय रहेउ लुकाइ" ॥४०॥
सत्य कहसि दशकण्ठतैं, मोहिं न सुनि कछु कोहँ ॥
कोउ न हमरे कटक अस, तुमसन लरत जो सोह ॥ ४१ ॥
प्रीति विरोध समान सन, करिय नीति अस आहि ॥
जो मृगपति वध मेडुकहि, भलो कहै को ताहि ॥ ४२ ॥
यद्यपि लघुता रामकहँ, तोहिं वध बड दोष ॥
तदपि कठिन दशकण्ठसुन, क्षत्रि जाति कर रोष ॥ ४३ ॥
"वक्र उक्ति धनु वचन शर, हृदय दह्यउ रिपुकीश ॥
प्रतिउत्तर सडसी मनहूँ, काढत भट दशशीश" ॥ ४४ ॥
हँसि बोलेउ दशमौलि तब, कपिकर बडगुण एक ॥
जो प्रतिपालै तासु हित, करै उपाय अनेक ॥ ४५ ॥
धन्य कीश जो निजप्रभुकाजा * जहँ तहँ नाचहिं परिहरि लाजा
नाचि कूदि करिलोग रिझाई * पतिहित करत कर्म निपुणाई॥
अंगद स्वामि भक्त तव जाती * प्रभुगुण कसनकहसिइहिभाँती
मैंगुणगाहक परम सुजाना * तव कटुवचन करौं नहिं काना॥
कह कपि तव गुण गाहकताई * सत्य पवनसुत मोहिं सुनाई ॥
वन विध्वँसि सुत वधि पुरजारा *तदपिनतेइँकृत कछु अपकारा॥
सोइ विचारि तव प्रकृतिसुहाई * दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई ॥
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा* तुम्हरे लाज न रोष न माषा ॥
जो असिमातिपितु खायहुकीशा* कहिअसवचनहँसा दशशीशा॥
पितहिं खाइ खातेउँ अबतोही *अबहीं समुझि परा कछु मोहीं ॥
वालि विमलयश भाजन जानी *हतौं न तोहिं अधम अभिमानी॥

१ आज्ञा । २ क्रोध । ३ सिंह । ४ रावण ।

कहु रावण रावण जग केतें * मैं निज श्रवण सुने सुनु तेते ॥
बलिजीतन इक गयउ पताला * राखा बाँधि शिशुन हयशाला ॥
खेलहिं बालक मारहिं जाई * दयालागि बलि दीन्हछुड़ाई ॥
एक बहोरि सहसभुज देखा * धाइ धरा जनु जन्तु विशेषा ॥
कौतुक लागि भवनं लै आवा * सो पुलस्त्यमुनि जाइछुडावा ॥
दोहा-एक कहत मोहिं सकुच अति, रहा वालिकी काँख ॥
तिनमहँ रावण कवन तैं, सत्य कहहु तजि माख ॥ ४६ ॥
सुनुशठ सोइ रावण बलशीला * हर गिरि जान जासु भुजलीला ॥
जान उमापति जासु शुराई * पूजे जेहि शिर सुमन चढाई ॥
शिर सरोज निजकरन उतारी * पूजे अमित बार त्रिपुरारी ॥
भुजविक्रम जानहिं दिगपाला * शठ अजहूं निजके उरशाला ॥
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई * जब जब जाइ भिरेउँ बरिआई ॥
जिनके दशन कराल न फूटे * उर लागत मूलक इव टूटे ॥
जासु चलत डोलत इमि धरणी * चढतमत्तगजजिमिलघुतरणी ॥
सोइ रावण जगविदित प्रतापी * सुनेन श्रवण अलीक अलापी ॥
दोहा-तेहि रावण कहँ लघु कहसि, नर कर करसि बखान ॥
रे कपि बर्बर खर्ब्ब खल, अब जाना तव ज्ञान ॥ ४७ ॥
सुनि अंगद सकोप कहवानी * बोलसँभारि अधम अभिमानी ॥
सहसबाहु भुज गहन अपारा * दहनअनलसम जासु कुठारा ॥
जासु परशु सागर खरधारा * बूडे नृप अगणित बहु बारा ॥
तासु गर्व जेहि देखत भागा * सोनर किमि दशकंठअभागा ॥
राम मनुज कसरे शठबंगा * धन्वी राम नदी पुनि गंगा ॥
पशु सुरधेनु कल्पतरु रूखा * अन्नदान पुनि रस पीयूषा ॥
वैनतेय खग अहि सहसानन * चिन्तामणिकी उपल दशानन ॥
सुन मतिमन्द लोक वैकुण्ठा * लाभ कि रघुपतिभक्तिअकुण्ठा
दोहा-सेन सहित तव मान मथि, वन उजारि पुरजारि ॥

१ बालकन । २ गृह । ३ अमृत । ४ गरुड । ५ पत्थर ।

कसरे शठ हनुमान कपि, गये जो तव सुत मारि ॥ ४८ ॥
सुनु रावण परिहरि चतुराई * भजसि न कृपासिन्धु रघुराई ॥
जो खल भयसि रामकर द्रोही * ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ॥
मूढ मृषा जनि मारसि गाला * रामवैर होइहि अस हाला ॥
तवशिर निकर कपिनके आगे * परिहैं धरणि राम शर लागे ॥
तेतव शिर कन्दुकइव नाना * खेलहिं भालु कीश चौगाना ॥
जबहिं समर कोपहिं रघुनायक * छूटहिं अति कराल बहुसायक ॥
तब कि चलहिअसगालतुम्हारा * असविचारि भजु राम उदारा ॥
सुनत वचन रावण पर जरा * जरत अनलमहँ जनु घृतपरा ॥
दोहा-कुम्भकर्ण सम बन्धु मम, सुत प्रसिद्ध शक्रारि ॥
मोर पराक्रम सुनेसि नहिं, जितेउँ चराचर झारि ॥ ४९ ॥
शठ शाखामृग जोरि सहाई * बाँध्यो सिन्धु इहै प्रभुताई ॥
नाँघहिं खग अनेक वारीशा * शूर न होहिं सुनहु जड़ कीशा ॥
मम भुज सागर बल जल पूरा * जहँ बूडे सुर नर वर शूरा ॥
वीस पयोधि अगाध अपारा * को अस वीर जो पावहिं पारा ॥
दिगपालन मैं नीर भरावा * भूप सुयश खल मोहिं सुनावा ॥
जोपै समर सुभट तव नाथा * पुनि पुनिकहसिजासुगुणगाथा ॥
तौ बसीठ पठवत केहि काजा * रिपुसन प्रीतिकरत नहिंलाजा ॥
हरगिरि मथन निरखिममबाहू * पुनिशठकपिनिजस्वामिसराहू ॥
दोहा-शूर कवन रावण सरिस, निजकर काटे शीश ॥
हनेउँ अनलमहँ बारबहु, हर्षित साखि गिरीश ॥ ५० ॥
जरत विलोकेउँ जबहिंकपाला * विधिकेलिखे अंक निजभाला ॥
नरके कर आपन वध बाँची * हँसेउँजानिविधि गिराअसाँची ॥
सो मन समुझि त्रास नहिंमोरे * लिखा विरंचि जरठ मतिभोरे ॥
आन वीर को शठ मम आगे * पुनिपुनिकहसि लाजपरित्यागे ॥
कह अंगद सलज्ज जग माहीं * रावण तोहिंसमान कोउनाहीं ॥

१ गेंदकेतुल्य । २ अग्नि । ३ वृद्धापा ।

लाजवन्त तव सहजस्वभाऊ * निजगुणनिजमुखकहसिनकाऊ
शिर अरु शैल कथा चित रही * ताते बार बीस तैं कही ॥
सो भुजबल राखेउ उर घाली * जितेउ नसहसबाहुबलिवाली॥
सुन मतिमन्द देह अवपूरा * काटे शीश न होइयशूरा ॥
बाजीगर कहँ कहिय न वीरा * काटै निजकर सकल शरीरा ॥
दोहा–जरहिं पतंग विमोहवश, भार वहहिं खरवृन्द ॥
ते नहिं शूर कहावहीं, समुझ देख मतिमन्द ॥५१॥
अवजानि बतबढाव खलकरई * सुनि ममवचन मान परिहरई॥
दशमुख मैं न बसीठी आयउ * अस विचारि रघुबीर पठायहु ॥
बार बार अस कहेउ कृपाला * नहिं गजारि यश वधे शृगाला॥
मनमहँ समुझि वचन प्रभु केरे * सहेउँ कठोर वचन शठ तेरे ॥
नहिं तो करि मुखभंजन तोरा * लै जातेउँ सीतहि बरजोरा ॥
जानेउँ तव बल अधम सुरारी * सूने हरि आनी परनारी ॥
तैं निशिचर पति गर्व बहूता * मैं रघुपति सेवककर दूता ॥
जो न राम अपमानहिं डरऊं * तोहिं देखत अस कौतुककरऊं॥
दोहा–तोहिं पटकि महि सेन हति, चौपट करि तव गाँउँ ॥
मन्दोदरी समेत शठ, जनकसुतहि लै जाउँ ॥५२॥
जो अस करउँ न तदपि बड़ाई * मुयेहि वधे कछु नहिं मनुसाई॥
कौल कामवश कृपणविमूढा * अति दरिद्र अयशी अतिबूढा ॥
सदा रोगवश सन्तत क्रोधी * राम विमुखश्रुतिसन्तविरोधी॥
निज तनु पोषक निर्दय खानी * जीवत शव सम चौदह प्रानी ॥
अस विचारि खल वधौं न तोहीं * अवजानिरिसउपजावसिमोहीं॥
सुनिसकोप कह निशिचर नाथा * अधरदशन गहिमींजतहाथा ॥
रे कपि पोच मरणअबचहसी * छोटे वदन बात बडि कहसी ॥
कटुजलपसि जड कपिवलजाके * बुधि बल तेज प्रताप न ताके ॥
दोहा–अगुण अमान विचारि त्यहि, दीन पितावनवास ॥

१ गदहा । २ सिंह । ३ मुर्दा । ४ दरिद्री ।

सोदुख अरु युवतीविरह, पुनि निशिदिन ममत्रास ॥ ५३ ॥
जिनके बल कर गर्व तोहिं, ऐसे मनुज अनेक ॥
खाहिं निशाचर दिवस निशि, मूढ समुझुतजि टेक ॥५४॥
जब तेइँ कीन्ह रामकी निन्दा * क्रोधवन्त तब भयउ कपिन्दा॥
हरि हर निन्दा सुनै जो काना * होय पाप गोघात समाना ॥
कटकटाइ कपिकुंजर भारी * दोउभुजदण्डतमकिमहिमारी॥
डोलत धरणि सभासद खसे * चले भागि भय मारुत ग्रसे ॥
गिरत दशानन उठ्यो सँभारी * भूतल परेउ मुकुट षटचारी ॥
कछु निजकर लै शिरनसँभारे * कछु अंगद प्रभु पास पँवारे ॥
आवत मुकुट देखि कपि भागे * दिनहीं लूक परन अब लागे ॥
की रावण करि कोप चलाये * कुलिशचारि आवतअतिधाये॥
कह प्रभुहँसि जनिहृदय डराहू * लूक न अशनि केतु नहिं राहू॥
ये किरीट दशकन्धर केरे * आवत बालितनयके प्रेरे ॥
दोहा–तरकि गहे कर पवनसुत, आनि धरे प्रभु पास ॥
कौतुक देखहिं भालु कपि, दिनकर सरिसप्रकास ॥ ५५ ॥
वहाँ करत दशकन्ध रिसाई * धरि मारहु कपि भागिनजाई ॥
इहि विधि वेगि सुभटसब धावहु * खाहु भालु कपिजहँतहँपावहु॥
महि अकीश करि फेरि दोहाई * जियत धरहु तापस दोउभाई ॥
पुनि सकोप बोलेउ युवराजा * गाल बजावत तोहिं न लाजा ॥
मरुगलकाटि निलजकुलघाती * बलविलोकिविदरतनहिंछाती ॥
रतिय चोर कुमारगगामी * खलमलराशिमन्दमतिकामी ॥
सन्निपात जलपसि दुर्वादा * भयसि कालवश शठमनुजादा॥
याको फल पावहुगे आगे * वानर भालु चपेटन लागे ॥
राम मनुज बोलत अस वानी * गिरहिनतव रसना अभिमानी ॥
गिरिहै रसना संशय नाहीं * शिरनसमेत समरमहिमाहीं ॥
सो०–सो नर क्यों दशकन्ध, बालि वधेउ जेहि एकशर ॥

१ अंगद । २ वज्र । ३ मुकुट । ४ फेंके । ५ सूर्य । ६ जिह्वा ।

बीसहु लोचन अन्ध, धृक तव जन्म कुजाति जड ॥ ६ ॥
तव शोणितकी प्यास, तृषित रामसायक निकर ॥
तजेउँ तोहिं तेहि आस, कटु जल्पसि निशिचर अधम॥७॥
मैं तवदशन तोरिबेलायक * आयसु पै न दीन रघुनायक ॥
असरिस होत दशौं मुख तोरौं * लंका गहि समुद्रमहँ बोरौं ॥
गूलरफल समान तव लंका * बसहिंमध्य जनु जन्तु अशंका॥
मैं वानर फल खात न बारा * आयसु दीन न राम उदारा ॥
युक्ति सुनत रावण मुसुकाई *मूढ सिखेसि कहँ बहुत झुठाई॥
वालि कबहुँ असगालनमारा *मिलि तपसिन तैं भयसिलबारा
साँचउ मैं लबार दशशीशा * जो न उपारों तव भुजबीशा ॥
राम प्रताप सुमिरिकपिकोपा * सभा माँझ प्रणकरि पदरोपा ॥
जो ममचरण सकसि शठटारी * फिरहिं राम सीता मैं हारी ॥
सुनहु सुभट सब कह दशशीशा *पदगहि धरणि पछारहु कीशा ॥
इन्द्रजीत आदिक बलवाना * हर्षि उठे जहँ तहँ भटनाना ॥
झपटहिं करि बल विपुलउपाई * पद न टरै बैठहिं शिरनाई ॥
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती * टरै न कीश चरण इहि भाँती ॥
पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी *मोह विटप नहिं सकहिं उपारी॥
दोहा–भूमि न छाँडै कपिचरण, देखत रिपुमद भाग ॥
कोटि विघ्न जिमि सन्त कहँ, तदपि नीति नहिं त्याग॥५६॥
कपिबल देखि सकल हियहारे * उठा आप कपिके परचारे ॥
गहत चरण कहँ वालिकुमारा * ममपद गहे न तोर उबारा ॥
गहसि न रामचरण शठ जाई * सुनत फिरा मन अति सकुचाई
भयो तेजहत श्री सब गई * मध्य दिवस जिमिशशिसोहई॥
सिंहासन बैठा शिरनाई * मानहु सम्पति सकल गँवाई ॥
जगदाधार प्राणपति रामा *तासुविमुखकिमिलहविश्रामा ॥
उमा रामकर भ्रुकुटि विलासा * होइ विश्व पुनि पावै नासा ॥

१ झूँठ। २ देवतोंकेवैरी। ३ पाखण्डी। ४ दोपहर

तृणते कुलिश कुलिश तृणकरहीं * तासदत पद कहु किमिटरहीं ॥
पुनि कपि कहीं नीति विधि नाना * म .नतनाहिं काल नियराना ॥
रिपुमदमथि प्रभु सुयश सुनाये * असकहि चले वालिनृपजाये ॥
अबहीं मुखका करौं बड़ाई * हतिहौं तोहिं खेलाइ खेलाई ॥
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा * सो सुनि रावण भयो दुखारा ॥
यातुधान अंगद बल देखी * भेव्याकुल अति हृदय विशेषी
दोहा-रिपुबल धर्षि हर्ष हिय, वालितनय बलपुंज ॥
सजल नयन तनुपुलकअति, गहे रामपदकंज ॥ ५७ ॥
साँझ जानि दशकण्ठ तब, भवन गयो बिलखाइ ॥
मन्दोदरी अनेक विधि, बहुरि कहा समुझाइ ॥ ५८ ॥
कन्तसमुझि मन तजहुकुमतिही * सोह न समर तुमहिंरघुपतिही ॥
राम अनुज धनु रेख खँचाई * सो नहिं लाँघेहु अस मनुसाई ॥
पिय तोहिते जीतब संग्रामा * जाके दूतनके असकामा ॥
कौतुक सिंधु लाँघि तवलंका * आयउ कपि केहरी अशंका ॥
रखवारे हति विपिन उजारा * देखत तुमहिं अक्ष जिन मारा ॥
जारि नगर जेइँ कीन्हेसि क्षारा * कहाँ रहा बल गर्व तुम्हारा ॥
अबपति मृषा गाल जनि मारहु * मोरकहाकछु हृदयविचारहु ॥
पतिरघुपतिहि मनुजजनिजानहु * अगजगनाथअतुलबलमानहु ॥
वाणप्रताप जान मारीचा * तासु कहा नहिं मानेहु नीचा ॥
जनकसभा अगणित महिपाला * रहेउ तहाँ तुम गर्व विशाला ॥
भंजि धनुष जानकी विवाही * तब संग्राम न जीत्यउ ताही ॥
सुरपतिसुत जानै बल थोरा * राखा जियत आँखियकफोरा ॥
शूर्पणखाकी गति तुम देखी * तदपि हृदयनाहिं लाजविशेषी ॥
दोहा-वधि विराध खर दूषणहिं, लीला हतेउ कबन्ध ॥
वालि एक शर मारेउ, तेहि नर कहँ दशकन्ध ॥ ५९ ॥
जेहि जल : नाथ बधायोहेला * उतरेउ कपिदल सहित सुवेला ॥

१ परास्त । २ स्वांग ।

कारुणीक दिनकर कुलकेतू * दूत पठायउ तव हित हेतू ॥
सभामाँझ जेइँ तव बलमथा * करि वरूथ[1] महँ मृगपतियथा ॥
अंगद हनुमत अनुचर जाके * रण बाँकुरे वीर अति बाँके ॥
तेहि कहँ पियपुनि पुनिनरकहहू * मृषा मान ममता मदगहहू ॥
अहह कन्त कृत राम विरोधा * कालविवश मन होइ न बोधा ॥
कालदण्ड गहि काहु न मारा * हरै धर्म्म बल बुद्धि विचारा ॥
निकट काल जेहि आवत साँईं * तेइ भ्रम होइ तुम्हारिहिनाँईं ॥
दोहा–दुइ सुत मारेउ पुर दहेउ, अजहुँ पीय सिय देहु ॥
कृपासिन्धु रघुवीर भजि, नाथ विमल यशलेहु ॥ ६० ॥
नारिवचन सुनि विशिख[2]समाना * सभा गयो उठि होत विहाना[3] ॥
बैठा जाइ सिंहासन फूली * अतिअभिमान त्राससबभूली ॥
वहाँ राम अंगदहि बुलावा * आइ चरण पंकज शिरनावा ॥
अति आदर समीप बैठारी * बोले विहँसि कृपालु खरारी ॥
वालितनय अति कौतुक मोहीं * तात सत्य कहु पूँछौं तोहीं ॥
रावण यातुधान कुल टीका * भुजबलअतुल जासुजगलीका ॥
तासु मुकुट तुम चारि चलाये * कहहु तात कवनी विधि पाये ॥
कहा वालिसुत सुनहु खरारी * मुकुट न होइ भूपगुण चारी ॥
साम दाम अरु दण्ड विभेदा * नृप उर वसहिं नाथ कहवेदा ॥
नीति धर्मके चरण सुहाये * अस जियजानि नाथपहँआये ॥
दोहा–धर्महीन प्रभुपद विमुख, कालविवश दशशीश ॥
आये गुण तजि रावणहिं, सुनहु कोशलाधीश ॥ ६१ ॥
परम चतुरता श्रवण सुनि, विहँसे राम उदार ॥
समाचार तब सब कहेउ, गढके वालिकुमार ॥ ६२ ॥
रिपुके समाचार जब पाये * राम सचिवतब निकट बुलाये ॥
लंका बंका चारि दुआरा * केहिविधिलागियकरहुविचारा ॥
तब कपीश ऋक्षेश विभीषण * सुमिरिहृदय दिनकरकुलभूषण ॥

१ हाथियोंके झुंडमें जैसे सिंह । २ बाण । ३ भोर ।

करि विचार तिन मंत्र दृढ़ावा * चारि अनी कपिकटक बनावा ॥
यथायोग्य सेनापति कीन्हें * यूथपसकलबोलि तिन लीन्हें ॥
प्रभुप्रताप सब कहि समुझाये * सिंहनाद करि सब कपिधाये ॥
हर्षित रामचरण शिरनावैं * गहिगिरिशिखरभालुकपिधावैं॥
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीशा * जयरघुवीर कोशलाधीशा ॥
जानत परमदुर्ग गढ़लंका * प्रभु प्रताप कपिचले अशंका ॥
घटाटोप करि चहुँदिशि घेरी * मुखहि निशान बजावहिं भेरी ॥
दोहा-जयति राम भ्रातासहित, जय कपीश सुग्रीव ॥
गर्जैं केहरिनाद कपि, भालु महाबल सींव ॥ ६३ ॥
लंका भयउ कोलाहल भारी *सुनेउ दशानन अतिहि हँकारी ॥
देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई * विहँसि निशाचर सेन बुलाई ॥
आये कीश कालके प्रेरे * क्षुधावन्त रजनीचर मेरे ॥
असकहि अट्टहास शठकीन्हा * गृह बैठे अहार विधिदीन्हा ॥
सुभट सकल चारिहुँ दिशिजाहू * धरि धरि भालु कीश सबखाहू ॥
उमा रावणहि अस अभिमाना * जिमि टिट्टिभपग सूत उताना ॥
चले निशाचर आयसु माँगी * गहिकर भिंदिपाल वरसाँगी ॥
तोमर मुद्गर परिघ प्रचण्डा * शूल कृपाण परशु गिरि खण्डा ॥
जिमिअरुणोपल निकर निहारी* धाये खग शठ मांस अहारी ॥
चोंचभंगदुख तिनहिं न सूझा * तिमि धाये मनुजाद अबूझा ॥
दोहा-नानायुध शर चाप धरि, यातुधान बलवीर ॥
कोट कँगूरन चढि गये, कोटि कोटि रणधीर ॥ ६४ ॥
कोट कँगूरन सोहहिं कैसे * मेरु शृंग पर जनु घन जैसे ॥
बाजहिं ढोल निशान जुझाऊ * सुनि सुनि सुभटनकेमनचाऊ॥
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा * सुनि कादर उर होइ दरारा ॥
देखि न जाइँ कपिनके ठट्टा * अति विशाल तनु भालुसुभट्टा॥
धावहिं गनहिं न अवघट घाटा * पर्वत फोरि करहिं गहि बाटा ॥

१ पर्वत । २ कँगूरा । ३ सिंहनाद । ४ हल्ला ।

कटाकटाइ कोटिन भट गर्जहिं * दशनन ओठ काटि अतितर्जहिं
उत रावण इत राम दुहाई * जयति जयति कहि परीलराई॥
निशिचरशिखरसमूहढहावहिं *कूदिधरहिं कपिफेरि चलावहिं॥

छंद–हरिगीतिका।

धरि कुधर खण्ड प्रचण्ड मर्कट भालु गढपर डारहीं॥
झपटैं चरण गहि पटकि महि भजि चलत बहुरि प्रचारहीं॥
अति तरल तरुण प्रताप तर्जहिं तमकि गढपर चढ़िगये॥
कपि भालु चढि मन्दिरन जहँ तहँ राम यश गावतभये॥१॥

दोहा–एक एक गहि रजनिचर, पुनि कपिचले पराइ॥
ऊपर आपुहि हेठभठ, गिरहिं धरणिपर आइ॥ ६५॥

राम प्रताप प्रबल कपियूथा *मर्दहिं निशिचर निकर वरूथा॥
चढे दुर्ग पुनि जहँ तहँ वानर * जय रघुवीर प्रताप दिवाकर॥
चले तमीचर[1] निकर पराई * प्रबलपवन जिमिघन[2]समुदाई॥
हाहाकार भयो पुर भारी * रोवहिं आरत बालक नारी॥
सबमिलि देहिं रावणहिं गारी * राज्य करत जेहिमृत्यु हँकारी॥
निजदलविचल सुनाजबकाना * फिरि सुभट लंकेश रिसाना॥
जो रणविमुख फिरा मैं जाना * तेहि मारिहौं कराल कृपाना॥
सर्व्वस खाइ भोग करि नाना * समरभूमिभा दुर्लभ प्राना॥
उग्र वचन सुनि सकल डराने *फिरे क्रोध करि सुभट लजाने॥
सन्मुख मरण वीरकी शोभा *तब तिन तजा प्राणकर लोभा॥

दोहा–बहु आयुध[3] धरि सुभट सब, भिरहिं प्रचारि प्रचारि॥
कीन्हें व्याकुल भालु कपि, परिघ प्रचण्डनि मारि॥ ६६॥

भय आतुर कपि भागन लागे * यद्यपि उमा जीतिहैं आगे॥
कोउ कह कहँ अंगदहनुमन्ता * कहँ नलनीलद्विविद बलवन्ता॥
निजदल विचल सुना हनुमाना * पश्चिम द्वार रहा बलवाना॥
मेघनाद तहँ करै लराई * टूट न द्वार परम कठिनाई॥

१ राक्षस। २ बादल। ३ अस्त्रशस्त्र।

पवनतनयमन भा अति क्रोधा * गर्जेउ [illegible] क्रोधा ॥
कूदि लंकगढ़ ऊपर आवा * गहि गिरि [illegible]यनाद पर धावा ॥
भंजेउ रथ सारथी निपाता * तासु हृदय महँ मारेउ लाता ॥
दूसर सूत विकल तेहि जाना * स्यंदन घालितुरतघर आना ॥
दोहा—अंगद सुनेउ कि पवनसुत, गढ़ पर गयउ अकेल ॥
समर बाँकुरा बालिसुत, तर्कि चढ़ेउ करि खेल ॥ ६७ ॥
युद्ध विरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर * रामप्रताप सुमिरि उरअन्तर ॥
रावन भवन चढे दोउ धाई * करहिं कोशलाधीश दुहाई ॥
कलशसहित सब भवनढहावहिं * देखिनिशाचरअतिभयपावहिं॥
नारिबृन्द करि पीटहिं छाती * अब दोउ कपि आये उतपाती॥
कपिलीलाकरि सबहिं डरावहिं * रामचंद्रकर सुयश सुनावहिं ॥
पुनि कर गहि कंचनके खम्भा * कहन लगे उतपात अरम्भा ॥
कूदिपरे रिपु कटक मँझारी * लागे मर्दन भुजबल भारी ॥
काहुहि लात चपेटन्ह केहू * भजेहु न रामहिं सो फल लेहू ॥
दोहा—एक एक सन मर्दि करि, तोरि चलावहिं मुंड ॥
रावण आगे परहिंते, जनु फूटहिं दधिकुंड ॥ ६८ ॥
महा महा मुखिया जे पावहिं * ते पदगहि प्रभुपास चलावहिं ॥
कहहिं विभीषण तिनके नामा * देहिं राम तिनकहँ निजधामा॥
खल मनुजाद जो आमिषभोगी * पावहिं गति जो याचतयोगी ॥
उमा राममृदुचित करुणाकर * वैरभावमोहिंसुमिरतनिशिचर॥
देहिं परमगति असजिय जानी * कोकृपालु अस अहै भवानी ॥
जे असप्रभु नभजहिं भ्रमत्यागी * ते मतिमन्द सोपरमअभागी ॥
अंगद अरु हनुमन्त प्रवेशा * कीन्ह दुर्ग असकह अवधेशा ॥
लंकामहँ कपि सोहहिं कैसे * मथहिं सिन्धु दुइ मन्दरजैसे ॥
दोहा—भुजबल रिपुदल दलिमलेउ, देखि दिवसकरअन्त ॥
कूदे युगल प्रयासविनु, आये जहँ भगवन्त ॥ ६९ ॥

१ मारा। २ रथमेंडाल।

प्रभुपदकमल शीश तिन नाये * देखि सुभट रघुपतिमनभाये ॥
राम कृपा करि युगल निहारे * भये विगत श्रम परमसुखारे ॥
गये जानि अंगद हनुमाना * फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥
यातुधान प्रदोष बल पाई * धाये करि दशशीश दुहाई ॥
निशिचर अनी देखि कपिफेरे * कटकटाइ जहँ तहँ भटभेरे ॥
दोउ दल भिरहिं प्रचारि प्रचारी * लरहिंसुभट नहिं मानहिंहारी ॥
वीर तमीचर सब अतिकारे * नानावरण बली मुख भारे ॥
सबलयुगलदलसब अतियोधा * विविधप्रकारलरहिं करिक्रोधा ॥
प्रांविट शरद पयोद घनेरे * लरत मनहुँ मारुतके प्रेरे ॥
अवनिअकम्पनअरुअतिकाया * विचलतसेन करी तिनमाया ॥
भयउनिमिषमहँअतिअँधियारा * काहु न सूझै अपन पसारा ॥
मारि खाहु सब करहिं पुकारा * वृष्टि होइ रुधिरोपल क्षारा ॥
दोहा—देखिनिबिडतमदशहुँदिशि, कपिदलभयउ खँभार ॥
एकहिं एक न देखहीं, जहँ तहँ करहिं पुकार ॥७०॥
सकल मर्म्म रघुनायक जाना * लिये बोलि अंगद हनुमाना ॥
समाचार सब कहि समुझाये * सुनत कोपि कपि कुंजर धाये ॥
पुनिकृपालु हँसि चापचढावा * पावकसायक सपदि चलावा ॥
भयउ प्रकाश कतहुँ तम नाहीं * ज्ञान उदय जिमि संशय जाहीं ॥
भालु बली मुख पाइ प्रकाशा * धाये कोपि विगत श्रम त्रासा ॥
हनूमान अंगद रणगाजे * हाँक सुनत रजनीचर भाजे ॥
भागतभट पटकहिं गहिधरणी * करहिंभालुकपिअद्भुत करणी ॥
गहिपदडारहिं सागर माहीं * मकरउरगझषधरिधरिखाहीं ॥
दोहा—कछु घायल कछु रण परे, कछु गढ चले पराइ ॥
गर्जे मर्कट भालु भट, रिपु दल बल बिचलाइ ॥७१॥
निशा जानि कपि चारिउ अनी * आये सब जहँ कौशलधनी ॥
राम कृपा करि चितवा जबहीं * भये विगतश्रम वानर तबहीं ॥

१ वर्षाऋतु । २ मेघ । ३ लोहू । ४ पत्थर । ५ धूरि । ६ अंधकार । ७ राक्षस । ८ रात्रि । ९ श्रमरहित ।

वहाँ दशानन सचिव हँकारे * सब सन कहेसि सुभटजेमारे ॥
आधा कटक कपिन संहारा * कहहु बेगि का करियविचारा॥
मालवन्त इक जरठ निशाचर * रावण मातु पिता मंत्रीवर ॥
बोला वचन नीति अतिपावन * तात सुनहुकछुमोराशिखावन॥
जबते तुम सीता हरिआनी * अशकुन होहिं न जातबखानी॥
वेद पुराण जासु यश गावा * तासु विमुख सुखकाहुनपावा॥
दोहा-हिरण्याक्ष भ्राता सहित, मधुकैटभ बलवान ॥
जेइ मारेउ सोइ अवतरेउ, कृपासिन्धु भगवान ॥७२॥
कालरूप खलवनदहन, गुणागार घन बोध ॥
जेहिं सेवहिं शिव कमलभव, तिहिंसनकौनाविरोध ॥७३॥
परिहरि वैर देहु वैदेही * भजहु कृपानिधि परम सनेही॥
ताके वचन बाण सम लागे * करियामुखकरि जाहु अभागे॥
बूढभयसि नत मरतेउँ तोहीं * अबजनिवदनदेखावसिमोहीं ॥
तेइँ अपने मन अस अनुमाना * वध्यो चहतयहि कृपानिधाना ॥
सो उठि गयउ कहत दुर्वादा * तब सकोप बोलेउ घननादा ॥
कौतुक प्रात देखियहु मोरा * करिहौं बहुत कहतहौं थोरा ॥
सुनि सुतवचन भरोसा आवा * प्रीति समेत निकट बैठावा ॥
करत विचार भयउ भिनुसारा * लगे भालु कपि चारिउ द्वारा ॥
कोपि कपिन दुर्गम गढघेरा * नगर कोलाहल भयउ घनेरा॥
विविध अस्त्र गहिनिशिचरधाये * गढते पर्व्वत शिखर ढहाये ॥
छंद-ढाये महीधरशिखरकोटिन विविध विधि गोलाचले ॥
घहरात जिमि पविपात गर्जत प्रलयके जनु बादले ॥
मर्कट विकट भट जुटत कटत न लरत तनु जर्जरभये ॥
गहि शैल ते गढ पर चलावहिं जहँसो तहँनिशिचरहये ॥२॥
दोहा-मेघनाद सुनि श्रवण अस, गढ पुनि छेंका आइ ॥
उतरि दुर्गते वीरवर, सन्मुख चला बजाइ ॥७४॥

१ मंत्रियोंमें श्रेष्ठ । २ मुख । ३ मेघनाद । ४ तमासा ।

कहँ कोशलाधीश दोउ भ्राता * धन्वी सकल लोक विख्याता ॥
कहँ नल नील द्विविद सुग्रीवा * कहँ हनुमत अंगद बलसींवा ॥
कहाँ विभीषण भ्राता द्रोही * आजुशठहिहठिमारउ ओही ॥
अस कहि कठिन बाण संधाने * अतिशयकोपि श्रवणलगिताने ॥
शर समूह सो छाँड़ै लागा * जनु सपक्ष धावैं बहु नागा ॥
जहँ तहँ परत देखिये बानर * सन्मुखहोइन सकत तेहि अवसर
भागे भय व्याकुल कपि ऋच्छा * बिसरी सबहिं युद्धकी इच्छा ॥
सो कपि भालु न रणमें देखा * कीन्हेसिजेहि न प्राण अवशेषा ॥
दोहा-मारेसि दश दश विशिखं उर, परे भूमि सब वीर ॥
सिंहनाद करि गर्जतब, मेघनाद रणधीर ॥ ७५ ॥
देखि पवनसुत कटक विहाला * क्रोधवन्त धावा जनुकाला ॥
महा महीधर तमकि उपारा * अति रिस मेघनाद पर डारा ॥
आवत देखि गयउ नभसोई * रथ सारथी तुरँग सब खोई ॥
बार बार प्रचार हनुमाना * निकट न आव मर्म्म सो जाना ॥
राम समीप गयो घननादा * नानाभाँति कहत दुर्वादा ॥
अस्त्रशस्त्र बहु आयुध डारे * कौतुकही प्रभु काटिनिवारे ॥
देखि प्रभाव मूढ खिसियाना * करै लाग माया विधिनाना ॥
जिमिकोउकरै गरुडसनखेला * डरपावहिं गहि स्वल्पसपेला ॥
दोहा-जासु प्रबल माया विवश, शिव विरंचि बड छोट ॥
ताहि देखावतरजनिचर, निज माया मति खोट ॥ ७६ ॥
नभचढि वर्षै विपुल अँगारा * महिते प्रगट होइ जलधारा ॥
नानाभाँति पिशाच पिशाची * मारु काटु ध्वनि बोलहिं नाची ॥
कीन्हेसि वृष्टि रुधिर कच हाडा * वर्षै कबहुँ उपल बहु छाँड़ा ॥
वर्षि धूरि कीन्हेसि अँधियारा * सूझ न आपन हाथ पसारा ॥
अकुलाने कपि माया देखे * सब कर मरण बना इहि लेखे ॥
कौतुक देखि राम मुसुकाने * भये सभीत सकल कपि जाने ॥

१ प्राणसंकटमें । २ बाण । ३ आकाश । ४ वर्षा

एकहि बाण काटि सब माया * जिमि दिनकर हर तिमिरनिकाया
कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके * भये प्रबल रण रहहिं न रोके ॥
दोहा—आयसु माँग्यउ राम पहँ, अंगदादि कपिसाथ ॥
लक्ष्मण चले सकोप तब, बाण शरासन हाथ ॥ ७७ ॥
जलजनयन[1] उर बाहु विशाला * हिमगिरिवरणकछुकइकलाला ॥
वहाँ दशानन सुभट पठाये * नाना अस्त्र शस्त्र गहिधाये ॥
भूधर[2] नख विटपायुध धारी * धाये कपि जय राम पुकारी ॥
भिरे सकल जोरीसन जोरी * इत उत जय इच्छा नहिं थोरी ॥
मुठिकन लातन दाँतन काटहिं * कपिगिरिशिलामारिपुनिडाटहिं
मारु मारु धरु धरु धरु मारू * शीश तोरि गहि भुजा उपारू ॥
अस ध्वनि पूरि रही नभखण्डा * नाचहिं जहँ तहँ रुण्ड प्रचण्डा ॥
देखहिं कौतुक नभ सुर वृन्दा * कबहुँक बिस्मय कबहुँ अनन्दा ॥
दोहा—जमेउ गाढ भरि भरि रुधिर, ऊपर धूरि उड़ाइ ॥
जिमि अंगारन राशिपर, मृतक छार रहि छाइ ॥ ७८ ॥
घायल वीर बिराजहिं कैसे * कुसुमित किंशुक के तरु जैसे ॥
लक्ष्मण मेघनाद दोउ योधा * भिरहिं परस्पर[3] करि अति क्रोधा
एकहिं एक सकै नहिं जीती * निशिचर छल बल करै अनीती
क्रोधवन्त तब भयउ अनन्ता[4] * भंजेउ रथ सारथी तुरन्ता ॥
नानायुध प्रहार करि शेषा * राक्षस भयउ प्राण अवशेषा ॥
रावणसुत निजमन अनुमाना * संकट भये हरिहि मम प्राणा ॥
वीरघातिनी छाँडेसि साँगी * तेज पुंज लक्ष्मण उर लागी ॥
मूर्च्छा भई शक्तिके लागे * तब चलिगयउनिकटभयत्यागे ॥
दोहा—मेघनाद[5] सम कोटि शत, योधा रहे उठाय ॥
जगदाधार अनन्त सो, उठहिं न चला खिसाय ॥ ७९ ॥
सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू * जारै भुवन चारि दश आसू ॥
सक संग्राम जीति को ताही * सेवहिं सुरनर अग जग जाही ॥

१ कमलनयन । २ पर्वत । ३ आपसमें । ४ लक्ष्मणजी । ५ मेघनाद ।

[illegible] * जो ईश्वर कृपा सामग्री होई ॥
सन्ध्या महँ फिरी कीन्ह ऐसी * [illegible] निज नित्य जैसी ॥
व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेश्वर * लछिमन कहँ पूछा करुणाकर ॥
तब लागे लै आये हनुमाना * अनुजहिं देखि प्रभु अतिदुखमाना ॥
जाम्बवन्त कह वैद्य सुषेना * लंका रहइ पठइय कोउ लेना ॥
धरि लघुरूप गयो हनुमन्ता * आनेउ भवन समेत तुरन्ता ॥
दोहा–रघुपति चरण सरोज शिर, नायउ आइ सुषेन ॥
कहा नामगिरि औषधी, जाहु पवनसुत लेन ॥ ८० ॥
"कह हनुमन्त जोरि युगहाथा * लषण शोच जनिकीजै नाथा ॥
कहौ चन्द्र मैं पटइव गारी * अबहीं देउँ अमी मुख डारी ॥
कहौ विबुध वैदहि गहि आनौ * मीत मारि सबके दुखभानौ ॥
कहौ फोरि नभ रविहि निकारौं * रिपुतोहि द्वार राहु बैठारौं ॥
कहौ ब्रह्म हरि हर कहँ आनौं * अमर अमर बुलवावौं बानी ॥
कहौ पताल जाय छिति भागा * आनौं अमीकुंड यहि जागा ॥
कहौ देहुँ निज देहै त्यागी * अबहीं उठौं लषण घट जागी ॥
दोहा–जो कछु तव मनमें रुचै, सो मोहिं आयसु होय ॥
नाथ शपथ क्षणमें करौं, प्रभु प्रताप बल सोय" ॥
रामचरण सरसिज उर राखी * चलेउ प्रभंजन सुत बलभाषी ॥
वहाँ दूत इक मर्म जनावा * रावण कालनेमि गृह आवा ॥
दशमुख कहा मर्म तेहि सुना * पुनि पुनि कालनेमि शिरधुना ॥
देखत तुमहिं नगर जेहि जारा * तासु पन्थ को रोकनहारा ॥
भजिरघुपतिहि करहुहितअपना * तजो नाथ अब मृषा जल्पना ॥
नीलकंज तनु सुन्दरश्यामा * हृदय राखु लोचन अभिरामा ॥
अहंकार ममता मद त्यागहु * महामोह निशि सोवत जागहु ॥
कालव्याल कर भक्षक जोई * स्वप्नेहु समर कि जीतै कोई ॥
दोहा–सुनि दशकन्ध रिसान तब, तेइँ मन कीन्ह विचार ॥

१ सर्वविषेव्याप्त । २ मार्ग । ३ आनन्दके दाता ।

रामदूतकर मरणभल, यह खल नतु मोहिं मार ॥ ८१ ॥
असकहि चला रचेसि मगमाया * सरमंदिर वर बाग बनाया ॥
मारुतसुत देखा शुभ आश्रम * मुनिहिंबूझिजलपियोंजाइश्रम॥
राक्षस कपट वेष तहँ सोहा * मायापति दूतहि चह मोहा ॥
जाय पवनसुत नायउँ माथा * लागा कहन रामगुणगाथा ॥
होत महारण रावण रामहिं * जीतहिं राम न संशय यामहिं॥
इहाँ भये मैं देखौं भाई * ज्ञानदृष्टि बल मोहिं अधिकाई॥
माँगा जल तेइँ दीन्ह कमण्डल * कह कपिनहिं अघाउँ थोरेजल॥
सरमज्जन[1] करि आतुर आवहु * दीक्षा देइँ ज्ञान जेहि पावहु ॥
दोहा–सर पैठत कपि पद गहेउ, मकरी अति अकुलान ॥
मारि ताहि धरि दिव्य तनु, चली गगन चढि यान ॥ ८२ ॥
कपि तव दरश भइहुँनिहपापा * मिटा तात मुनिवर कर शापा॥
मुनि न होइ यह निशिचर घोरा * मानहु सत्य वचन कपिमोरा ॥
असकहि गई अप्सरा जवहीं * निशिचरनिकटगयउकपितवहीं
कह कपि मुनि गुरुदक्षिणा लेहू * पाछे हमहिं मंत्र तुम देहू ॥
शिर लंगूर लपेटि पछारा * निजतनु प्रकटेसि मरतीवारा ॥
राम राम कहि छाँडेसि प्राना * सुनि मन हर्षि चले हनुमाना ॥
देखा शैल न ओषधि चीन्हा * सहसाकपिउपारि गिरिलीन्हा॥
गहि गिरि निशिनभधावतभयऊ * अवधपुरी ऊपर कपिगयऊ ॥
दोहा–देखा भरत विशाल अति, निशिचर मन अनुमानि ॥
बिनु फर सायक मारेउ, चाप श्रवण लगि तानि ॥ ८३ ॥
परेउ मूर्च्छि महि लागतसायक * सुमिरत राम रामरघुनायक ॥
सुनि प्रियवचन भरत उठिधाये * कपिसमीप अति आतुरआये॥

* यह कालनेमि पूर्वजन्मका गन्धर्व और मकरी अप्सरा थी. एकसमय इन्द्रकी सभामें नृत्य करतेहुए दुर्वासाऋषिको देखकर हँसे. तब उन्होंने शाप दिया कि, राक्षस होजाओ तब इन्होंने स्तुति करी कि,शाप अनुग्रह करहु तब मुनिने कहा कि, जब त्रेताके अन्तमें रामावतारहो रामजी लंकामें आवेंगे तब उनके दूतद्वारा तुम दोनोंका छुटकारा होजायगा, सो शापसे छूटकर इंद्रलोकको गई ॥

[1] तालाबमें स्नानकर ।

विकल विलोकि कीश उरलावा * जागा नहिं बहु भाँतिजगावा॥
मुख मलीन मन भयउ दुखारी * कहत वचन भरि लोचनवारी॥
जेहिविधिरामविमुखमोहिंकीना* तेहि पुनि यह दारुणदुखदीना॥
जो मोरे मन वच अरु काया * प्रीति रामपद कमल अमाया॥
तौ कपि होउ विगत श्रम शूला * जो मोपर रघुपति अनुकूला ॥
वचन सुनत उठि बैठ कपीशा * कहिजयजयातिकोशलाधीशा॥
सो०—लीन्ह कपिहि उरलाय, पुलक गात लोचन सजल ॥
प्रीति न हृदय समाय, सुमिरि राम रघुकुलतिलक ॥ ८॥
तात कुशल कहु सुखनिधानकी *सहितअनुजअरुमातुजानकी॥
कपि सब चरित समास बखाने * भये दुखित मनमहँपछिताने ॥
अहह दैव मैं कत जग जायउँ * प्रभुके एकौ काज न आयउँ ॥
जानि कुअवसर मन धरि धीरा *पुनि कपिसनबोलेउबलवीरा ॥
"भले भरतकह बोले ताता * पाछे सुनि दुख पैहैं माता ॥
तेहिते चल दीजे समुझाई * आय भवन सब कथा सुनाई॥
सुतघायलसुनिसाधुसुमित्रहिं * भयउ हर्षअरुशोचविचित्रहिं॥
बोली धन्य सुवन मम आजू * जूझेउ समर स्वामिके काजू॥
परयक दुःख होत अति ताता * कुसमय भये राम विनभ्राता॥
पुनि स्वभाय रिपुहनते कहेऊ * जाहु तात तुम प्रभुपहँ रहेऊ ॥
सुनत उठे मुदसहित प्रकाशा * विधिवश सुढर ढरे जनुपासा॥
दोहा—अम्ब अनुजगति देखमन, मानी सबनि गलानि ॥
बोली रघुपति मातु तब, कपिते धीरज आनि ॥
जेहि सौंपेउँ मैं लषण कहँ, तिनकी यहगति होय ॥
अब कब देखौं नयन भरि, पुत्र कमलमुख सोय" ॥
बोले मारुतसुवन तब, सकल धरहु मनधीर ॥
कुशल जानकीलषणयुत, ऐहैं श्रीरघुवीर ॥८४॥
तात गहरु होइ हैं तुहिं जाता * काज नशा इहि होतप्रभाता ॥

१ निष्काम । २ रहित । ३ विलम्ब।

चढ ममसायंक शैल समेता * पठवौं तोहिं जहँ कृपानिकेता ॥
सुनि कपिमनउपजाअभिमाना * मोरे भार चलहि किमिबाना ॥
रामप्रताप विचारि बहोरी * वन्दिचरण बोलेउ करजोरी ॥
तव प्रताप उर राखि गुसाईं * जैहौं नाथ बाणकी नाईं ॥
हर्षि भरत तब आयसुदीन्हा * पदशिरनायगमनकपिकीन्हा ॥

दोहा–भरत बाहुबल शीलगुण, प्रभुपद प्रीति अपार ॥
जात सराहत मनहिंमन, पुनि पुनि पवनकुमार ॥८५॥

वहाँ राम लक्ष्मणहिं निहारी ॥ बोले वचन मनुज अनुहारी ॥
अर्द्धरात्रि गइ कपि नहिं आवा * राम उठाइ अनुज उर लावा ॥
सकहु नदुखितदेखिमोहिंकाऊ * बन्धुसदा तव मृदुलस्वभाऊ ॥
ममहितलागि तजेउ पितु माता * सहेउविपिन हिमआतपवाता ॥
सो अनुराग कहाँ अब भाई * उठउन सुनि ममवचविकलाई ॥
जो जनत्यों वन बंधु बिछोहू * पितावचन नहिं मनतेउँ वोहू ॥
सुत वित नारि भवन परिवारा * होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ॥
अस विचारि जिय जागहुताता * मिलहि न बहुरिसहोदरभ्राता ॥
यथा पंख विनु खगपति दीना * मणिविनु फणि करिवर रहीना ॥
अस मम जीवन बंधु विनतोहीं * जो जड दैव जियावै मोहीं ॥
जैहौं अवध कवन मुँहलाई * नारिहेतु प्रियबन्धु गवाई ॥
वरु अपयश सहतेउँ जगमाहीं * नारिहानि विशेष क्षति नाहीं ॥
अब अपलोक शोक यह तोरा * सहै कठोर निठुर उर मोरा ॥
निज जननीके एक कुमारा * तात तासु तुम प्राण अधारा ॥
सौंपेहु मोहिं तुमहिं गहिपानी * सबविधिसुखदपरमहितजानी ॥
उतर ताहि देहौं का जाई * उठिकिन मोहिंशिखावहुभाई ॥
बहुविधिशोचतशोचविमोचन * स्रवतसलिलराजिवदललोचन ॥

१ मेरबाणमें । २ बोझ । ३ मनुष्यकेतुल्य । ४ वन । ५ धूप । ६ गरुड । ७ सर्प । ८ हाथी ।

उमा अखण्ड एक रघुराई * नरगति भाव कृपालु दिखाई ॥
सो०-प्रभु विलाप सुनि कान, विकलभये वानरनिकर ॥
आइ गये हनुमान, जिमि करुणामहँ वीररस ॥ ९ ॥
हर्षि राम भेंटेउ हनुमाना * अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाना ॥
तुरत वैद्य तब कीन उपाई * उठि बैठे लक्ष्मण हरषाई ॥
हृदय लाइ भेंटेउ प्रभु भ्राता * हर्षे सकल भालु कपि व्राता ॥
पुनि कपि वैद्य तहाँ पहुँचावा * जेहि विधि तबहिं ताहि लै आवा

अथ क्षेपक ।

हरिदिन धूम्राक्ष बलवाना * चढि कीन्हों अति समर महाना ॥
महावीर तेहि कियो निपाता * चढ्यो अकंपन पुनि दुखदाता ॥
समर कीन्ह ताने अतिभारी * मार्‍योतेहि युवराज प्रचारी ॥
पुनि प्रहस्त क्रोधातुर आवा * नील मारि तेहि धरणि गिरावा ॥
चलो महीधर करि अति क्रोधा * महावीर मारो सो योधा ॥
पुनि अतिकायभिर्‍योरिसिआई * मर्‍यो आठ दिन कीन्ह लराई ॥
कुम्भनिकुंभ आय रणठाना * मरे पाँच दिन करि मैदाना ॥
पुनि मकराक्ष महाभट आवा * लक्ष्मणसे अति युद्धमचावा ॥
दोहा-तब लक्ष्मणने क्रोधकर, ताको डारो मार ॥
कपिदलमें आनँद छयो, जैजैकार पुकार ॥

इति क्षेपक ।

यह वृत्तान्त दशानन सुनेऊ * अतिविषाद पुनि पुनि शिर धुनेऊ
व्याकल कुम्भकर्ण पहँ गयऊ * करि बहुयत्न जगावत भयऊ ॥

अथ क्षेपक ।

दशसहस्र राक्षस तब धाये * ढोल दमामें अधिक बजाये ॥
करनलगे कोउ मुद्गर मारी * तद्यपि उठ्यो न सो असुरारी ॥
कोऊ लात चपेट लगावें * पर ताके कछु मनहिं न आवें ॥
भूधरसम तेहि पर्‍यो शरीरा * तासों तनुमें गिनत न पीरा ॥

१ पंक्तिकी पंक्ति ।

श्वासत जत आँधीसी आवत * सन्मुखतेहिकोउटिकननपावत॥
तब राक्षस यह कीन्ह विचारी * काटन लगे प्रचार प्रचारी ॥
उठ्यो न पुनि तब कियो उपाई * दिये नाकमें मेष चलाई ॥
औ हाथिनकी दायँ चलाई * छींक महा निशिचरको आई ॥
दोहा–कुंभकर्ण ऐंडायकर, तबै उघारे नैन ॥
राक्षस लागे भागने, रावण मान्यो चैन ॥
इति क्षेपक ।
जागानिशिचर देखिय कैसा * मानहुँ काल देह धरि वैसा ॥
कुम्भकर्ण पूँछा सुनु भाई * काहे तव मुख रहा सुखाई ॥
कथा कही सब तेइँ अभिमानी * जेहि प्रकार सीता हरि आनी ॥
तात कपिन निशिचर संहारे * महा महा योधा सब मारे ॥
दुर्मुख सुर रिपु मनुज अहारी * भट अतिकाय अकंपन भारी ॥
अपर महोदर आदिक वीरा * परे समरमहँ सब रणधीरा ॥
दोहा–दशकन्धरके वचन सुनि, कुम्भकर्ण बिलखान ॥
जगदम्बा हरि आनिकै, शठ चाहसि कल्यान ॥ ८६ ॥
भल न कीन्ह तैं निशिचरनाहा * अबमोहिंआनि जगायहुकाहा ॥
अजहुँ तात त्यागहु अभिमाना * भजहु राम होइहि कल्याना ॥
हेदशशीश मनुज रघुनायक * जाके हनूमानसे पायक[1] ॥
अहह बन्धु तैं कीन खुटाई[2] * प्रथमहिं मोहिंनजगायहुआई ॥
कीन्हेहु प्रभु विरोधे तेहि देवक * शिव विरंचि सुर जाके सेवक॥
नारदमुनिमोहिं ज्ञानजोकहेऊ * कहतेउँ तोहिं समय नहिंरहेऊ॥
अब भरि अंक भेंट मोहिं भाई * लोचन सफल करौं मैं जाई ॥
श्यामगात सरसीरुह लोचन * देखौं जाइ तापत्रय मोचन ॥
दोहा–रामरूप गुण सुमिरि मन, मग्न भयो क्षण एक ॥
रावण माँगेउ कोटि घट, मद अरु महिष[3] अनेक ॥ ८७ ॥
महिष खाइ करिमदिरापाना * गर्जेउ वज्रघात अनुमाना ॥

१ सेवक । २ शत्रुता । ३ भैंसा ।

कुम्भकर्ण दुर्मद रणरंगा * चला दुर्गतजि सेन न संगा ॥
देखि विभीषण आगे आयउ *पुनिपदगहिंहिनिजनामसुनायउ॥
अनुज उठाय हृदय तेहि लावा * रघुपति भक्त जानि मनभावा॥
तातलात मोहिं रावण मारा * कहत परमहित मंत्र विचारा॥
तेहिगलानि रघुपति पहँ आयउँ* दीन जानि प्रभुकेमनभायउँ ॥
सुनसत भयउ कालवश रावन * सोकिमिमानै परमशिखावन ॥
धन्य धन्य तैं धन्य विभीषण * भयउतातनिशिचरकुलभूषण॥
बन्धु वंश तैं कीन्ह उजागर * भयहु राम शोभा सुखसागर ॥
दोहा–वचन कर्म मन कपट तजि, भजहु तात रघुवीर ॥
जाहु न निजपर सूझ मोहिं, भयउँ कालवशवीर ॥ ८८ ॥
बन्धुवचन सुनि फिरा विभीषण* आयउ जहँ त्रैलोक्यविभूषण ॥
नाथ भूधराकार शरीरा * कुम्भकर्ण आवत रणधीरा॥
इतना कपिन सुना जब काना * किलकिलाइ धाये बलवाना ॥
लिये उपारि विटप अरु भूधर * कटकटाइ डारे तिहि ऊपर ॥
कोटिकोटि गिरि शिखर प्रहारा * करहिं भालु कपि एकहिंबारा॥
गिरै न मुरै टरै नहिं टारे * जिमि गज अर्क फलनकेमारे॥
तब मारुतसुत मुष्टिकहनेऊ *परेउधरणिव्याकुलशिरधुनेऊ ॥
पुनि उठि तेइँ मारेउ हनुमन्ता * घुर्मित घायल परेउ तुरन्ता ॥
पुनिनलनीलहिं अवनिपछारेसि* जहँ तहँ पटकि २ भटडारेसि॥
चली बलीमुख सेन पराई *अतिभयत्रासितनकोउसमुहाई॥
दोहा–अंगदादि कपि मूर्च्छित, करि समेत सुग्रीव ॥
काँखदाबि कपिराजकहँ, चला अमित बलसीव ॥ ८९ ॥
उमा करत रघुपति नरलीला *खेलगरुड़जिमिअहिगणमीला॥
भ्रुकुटि भंग जिहि कालहि खाई* ताहि कि ऐसी सोह लराई ॥
जगपावनि कीरति विस्तरहीं * गाइ गाइ नर भवनिधि तरहीं॥
मूर्च्छा गइ मारुतसुत जागा * सुग्रीवहिं तब खोजन लागा ॥

१ वीररसमदमें मत्त निर्भय । २ उखारि । ३ वृक्ष । ४ पर्वत । ५ हाथी । ६ मन्दारफल-बूँदी । ७ सुग्रीव । ८ भौंह । ९ टेढी ।

कपिराजहुकर मुर्च्छा बीती * निबुकिगयउतेहिमृतकप्रतीती॥
काटेसि दशन नासिका काना * गर्जि अकाश चलातेहिजाना ॥
गहेसि चरणधारि धरणि पछारा * अतिलाघव[1]ँपुनिउठि तेहिमारा॥
पुनि आयउ प्रभु पहँ बलवाना * जयतिजयतिजयकृपानिधाना ॥
नाक कान काटे तेहि जानी * फिरा क्रोधकारि मानिगलानी ॥
सहजभीम[2]पुनिबिनुश्रुति नासा * देखत कपिदल उपजी त्रासा ॥
दोहा—जय जय जय रघुवंशमणि, धाये कपि करि हूह ॥
एकहिं बार जो तासपर, डारे गिरि तरु जूह ॥ ९० ॥
कुम्भकर्ण रणरंग विरुद्धा * सन्मुखचला कालजनु क्रुद्धा ॥
कोटि कोटि कपि धरि धरिखाई * जिमि टीडी गिरिगुहा समाई ॥
कोटिन गहि शरीरसन मर्दा * कोटिन मींजि मिलायसिगर्दा ॥
मुख नासिका श्रवणकी बाटा * निकसिपराहिंभालु कपिठाटा ॥
रणमदमत्त निशाचर दर्पा * मानहु विश्व ग्रसनकहँ अर्पा ॥
मुरे सुभट रण फिराहिं न फेरे * सूझ न नयन सुनाहिं नाहिं टेरे॥
कुम्भकर्ण कपि सेन बिदारी * सुनि धाये रजनीचर झारी ॥
देखी राम विकल कटकाई * रिपु अनीक नानाविधि आई ॥
दोहा—सुनहु विभीषण लषण सह, सकल सँभारहु सैन ॥
मैं देखौं खलबल दलहिं, बोले राजिवनैन ॥ ९१ ॥
कर सारंग[3] विशिख[4] कटि भाथा[5] * अरिदल दलन चले रघुनाथा॥
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुटंकोरा * रिपुदलबधिर[6]भयउसुनिशोरा ॥
धनु संधानि छाँड शरलक्षा * कालसर्प जनु चले सपक्षा ॥
अतिबल चले निकर नाराचा * लगेकटनभटविकट पिशाचा ॥
कटहिंचरण शिर उर भुजदण्डा * बहुतकवीर होहिं शत खण्डा ॥
घुर्मि घुर्मि घायलभट परहीं * उठहिंसँभारिसुभटफिरिलरहीं॥
लागतबाण जलधि जिमि गाजैं * बहुतक देखि कटिन शरभाजैं ॥
रुण्ड प्रचण्ड मुण्ड बिनुधावहिं * धरु धरु मारुमारु गोहरावहिं॥

१ अतिशीघ्रतासे । २ भयानक । ३ धनुष । ४ बाण । ५ तूणीर । ६ बहरे ।

दोहा–क्षणमहँ प्रभुके सायकन, काटे विकट पिशाच ॥
पुनि रघुपतिके त्रोणमहँ, प्रविशे सब नाराच ॥ ९२ ॥
कुम्भकर्ण मन दीख विचारी * क्षण महँ हते निशाचर झारी ॥
भयउ क्रोध दारुण बलवीरा * करि मृगनायक नाद गँभीरा ॥
कोपि महीधर[1] लियो उपारी * डारेसि जहँ मर्कट भट भारी ॥
आवत देखि शैल प्रभु भारे * शरन काटि रज सम करिडारे ॥
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक * छाँड़े अति कराल बहुसायक ॥
तनुमहँप्रविशिनिसारिशरजाहीं * जिमिदामिनि[2]घनमाहँसमाहीं ॥
शोणित[3] स्रवत सोह तनुकारे * जिमिकज्जलगिरि गेरु पनारे ॥
विकल विलोकिभालुकपिधाये * विहँसाजबहिं निकटचलिआये ॥
दोहा–गर्जत धायउ वेग अति, कोटि कोटि गहि कीश ॥
महि पटकै गजराज इव, शपथ करै दशशीश ॥ ९३ ॥
भागे भालु कपिनके यूथा * वृक[4] विलोकिजिमिमेषवरूथा[5] ॥
चले भालु कपि भागि भवानी * विकलपुकारत आरत बानी ॥
यह निशिचर दुकालसमअहई * कपिकुलदेश परन अब चहई ॥
कृपावारिधर राम खरारी * पाहि पाहि प्रणतारत हारी ॥
करुणा वचन सुनत भगवाना * चले सुधारि शरासन बाना ॥
रामसेन निज पाछे घाली * चले सकोप महाबलशाली ॥
खैंचि धनुष शत शर संधाने * छूटे तीर शरीर समाने ॥
लागत शर धावा रिसभरा * कुधर डगमगेउ डोली धरा ॥
लीन्ह एक तेइँ शैल उपाटी * रघुकुलतिलक भुजासोइकाटी ॥
धावा वाम बाहु गिरिधारी * प्रभु सोउभुजाकाटिमहिडारी ॥
काटे भुज सोहै खल कैसा * पक्षहीन मन्दर गिरि जैसा ॥
उग्र विलोकनिप्रभुहि विलोका * मानहु ग्रसन चहत त्रैलोका ॥
दोहा–करि चिकार मुख घोर अति, धावा वदन पसार ॥
गगन सकल सुर त्रास अति, हाहाकार पुकार ॥९४॥

१ पर्वत । २ बिजुली । ३ रुधिर । ४ भेड़हा । ५ भेड़ियाके झुंड ।

सभय देव करुणानिधि जाने * श्रवण प्रयंत शरासन ताने ॥
विशिखनिकरनिशिचरमुखभरेऊ * तदपि महाबलभूमिनपरेऊ ॥
शरन मरा मुख सन्मुख धावा * कालत्रोणजनुतनु धरिआवा॥
तब प्रभु कोपि तीव्रशर लीन्हा * धडते भिन्न तासुशिरकीन्हा ॥
सो शिरपरा दशानन आगे * विकलभयउजिमिफणिमणित्यागे॥
धरणि धसै धरधाव प्रचण्डा * तबप्रभु काटिकीन्ह युगखण्डा॥
परेउ भूमि जिमि नभते भूधर * तरेदावि कपिभालु निशाचर॥
तासु तेज प्रभुवदन समाना * सुरमुनि सबहिं अचम्भामाना॥
नभदुन्दुभी बजावहिं हर्षहिं * जयजयकहिप्रसून सुरवर्षहिं॥
करि विनती सुरसकल सिधाये * तब तेहि समय देवऋषिआये ॥
गगनोपरि हरि गुणगण गाये * रुचिर वीररस प्रभु मनभाये॥
वेगि हतहु खल मुनिकहिगये * रामसमरमहँ शोभित भये ॥

छन्द—हरिगीतिका ।

संग्राम भूमि विराज रघुपति अतुलबल शोभाघनी ॥
श्रम बिन्दु मुख राजीवलोचन रुचिर तनु शोणित कनी ॥
भुज युगल फेरत कर शरासन भालु कपि चहुँ दिशि बने ॥
कह दासतुलसीकहि न सक छवि शेष जेहि आननघने ॥३॥

दोहा—निशिचर अधम मलायतनु, ताहिदीन निजधाम ॥
गिरिजाते नर मन्दमति, जे न भजहिं श्रीराम ॥९५॥

दिनके अन्त फिरी दोउ अनी * समर भयो सुभटन श्रम घनी॥
रामकृपा कपि दल बल बाढा * जिमितृणपाइअनलअतिडाढा॥
छीजहिंनिशिचरदिनअरुराती * निजमुखकहेसुकृतजेहिभाँती॥
बहु विलाप दशकन्धर करहीं * पुनि पुनि बन्धुशीशउरधरहीं॥
रोवहिं नारि हृदय हतिपानी * तासु तेज बल विपुल बखानी॥
मेघनाद तेहि अवसर आवा * कहिबहुकथापितहिसमुझावा॥
देखहु कालिह मोरि मनुसाई * अबहिं बहुत का करौं बड़ाई ॥

१ अनेकबाण । २ तरकस । ३ अलग । ४ आकाशके ऊपर । ५ मन वचन कर्मते दुष्टकामोंमें तत्पर ।

इष्टदेव सन जो वर पायउँ * सो बल तात न तुमहिं सुनायउँ ॥
इहिविधिजल्पत भयो बिहाना * लगे भालु कपि चहुँदिशिनाना ॥
इत कपिभालु कालसम वीरा * उत रजनीचर अति रणधीरा ॥
लरहिंसुभट निज निज जयहेतू * वरणि न जाय समर खगकेतू ॥
दोहा– मेघनाद माया विरचि, रथ चढि गयउ अकाश ॥
गर्जेउ प्रलय पयोधि जिमि, भा कपिदल अतित्रास ॥१६॥
शक्ति शूल शर परिघ कृपाना * अस्त्र शस्त्र कुलिशायुधनाना ॥
डारे परशु प्रचण्ड पषाना * लागेउ वृष्टि करै बहु बाना ॥
रहे दशहुँ दिशि सायक छाई * मानहुँ मघा मेघ झरि लाई ॥
धरु धरु मारु सुनहिं कपिकाना * जो मारै तेहि कोउ न जाना ॥
गहि गिरि तरु अकाशकपिधावैं * देखहिं तेहि न दुखितफिरिआवैं ॥
अवघट घाट बाट गिरिकन्दर * माया बल कीन्हेसि शरपंजर ॥
जाहिं कहाँ भय व्याकुल बंदर * सुरपति बंदि परे जिमि मंदर ॥
मारुतसुत अंगद नल नीला * कीन्हेसिविकलसकलबलशीला ॥
पुनि लक्ष्मण सुग्रीव विभीषण * शरन मारि कीन्हेसिजर्जरतन ॥
पुनि रघुपतिसन जूझन लागा * छाँड़त शर होइ लागहिं नागा ॥
व्यालपाश वश भये खरारी * स्ववश अनन्त एक अविकारी ॥
नटइव चरित करत विधि नाना * सदा स्वतंत्र राम भगवाना ॥
रण शोभा हित आपु बँधावा * देखि दशा देवन भय पावा ॥
दोहा–खगपतिजाकर नाम जपि, नर काटहिं भवपाश ॥
सो प्रभु आवकि बन्ध तर, व्यापक विश्वनिवास ॥ १७ ॥
चरित रामके सगुण भवानी * तर्किनजाइँ बुद्धि बलवानी ॥
अस विचारि जो परम विरागी * रामहिं भजहिं तर्क सबत्यागी ॥
व्याकुल कटक कीन्ह घननादा * पुनिभा प्रगट कहत दुर्बादा ॥
जाम्बवन्त कह खलरहु ठाढा * सुनिकै ताहि क्रोध अति बाढा ॥
बूढ जानि शठ छाँडेउँ तोहीं * लागेसि अधम पचारन मोहीं ॥

१ बर्छी । २ तरवारि ।

असकहि तरल त्रिशूलचलावा * जाम्बवन्त सो करगहि धावा ॥
मारेउ मेघनादकी छाती * परा धरणि घुर्मित सुरघाती ॥
पुनिरिसाइ गहि चरण फिरावा * महि पछारि निजबलहिदेखावा
वरप्रसाद सो मरहि न मारा * तव पद गहि लंकापर डारा ॥
इहाँ देवऋषि गरुड़ पठाये * रामसमीप सपदि चलि आये॥

अथ क्षेपक ।

कह्यो भवानी तब सुख पाई * शक्ति सुलोचन केहिविधिपाई॥
तब शिव कहन लगे इतिहासा * मन प्रसन्न कर सुरवासिनिवासा॥
मेघनाद तप कीन्ह अपारा * तब देवी वर माँग उचारा ॥
मेघनाद कह सुनहु भवानी * यान लोप दीजै सुखदानी ॥
तेहि पर चढ सन्मुख जोहि पावौं * बिना प्रयास मारतौंहिलावौं ॥
रथ दीन्हों देवी सुख पाई * कह्यो सदा रख याहि छिपाई॥
परै कठिन रण जब कहुँ आई * तब यहि पर चढ करेहुलराई॥
जाय अकाश पहर दो माहीं * जितिहौ समर वीर सकनाहीं॥
दोहा-जो त्यागै द्वादशवरष, नींद अन्न अरु नारि ॥
तासों मत करियै समर, सो तोहिं डारै मारि ॥
यह कह अंतर भई भवानी * शिवकी कठिन तपस्या ठानी॥
समरकरत भय लगै न तोही * यहवरदान दियो शिव ओही॥
एक दिवस लै सैन अपारा * चढ्यो इन्द्रपर कियो प्रहारा॥
ठान्यो समर भयंकर भारी * वासवको पुनि धरयो प्रचारी ॥
ले आवा पुनि लंकमँझारी * रावणने सुख मानो भारी ॥
तुरत कमलभव लंक सिधाये * तजो इन्द्र यह वचन सुनाये॥
दियोछाँड़ि सुनि विधिके वयना * मे प्रसन्नतबअजसुखअयना ॥
तबहिं अमोघ शक्ति विधिदीन्ही * गे प्रसन्न मति हरि पदलीन्ही॥
दोहा-नागलोक घननादने, तुरतहि कीन्ह पयान ॥
तहाँ वासुकी नागसे, कीन्हों युद्ध महान ॥

चौदह दिवस युद्ध करि भारी * बाँधिलियो अहिराज प्रचारी ॥
लंकालाय पितहि दिखरायो * बाँध्यो बहुरि गेहले आयो ॥
कह्यो वासुकी त्यागो हमको * कन्या व्याह देहुँ मैं तुमको ॥
छाँड़ि दियो सुनि वचन भवानी * दीन्हि वासुकी सुता सयानी ॥
याहिविधि मिली सुलोचनिनारी * इन्द्रजीत भा नाम सुरारी ॥
जेहि विधि महाशक्ति खलपाई * सो सब तुमको दीन्ह सुनाई ॥

इति क्षेपक ।

दोहा–पन्नगारि खाये सकल, क्षण महँ व्याल वरूथ ॥
भई विगत माया तुरत, हर्षे वानर यूथ ॥ ९८ ॥
गहि गिरि पादप उपल बहु, धाये कीश रिसाइ ॥
चले तमीचर विकल अति, गढपर चढे पराइ ॥ ९९ ॥

मेघनादकी मूर्च्छा जागी * पितहिंविलोकि लाजअतिलागी
तुरत गयो सो गिरिवर कन्दर * करहुँअजयमखअसमनहठधर॥
सो सुधिपाइ विभीषण कहई * सुनु प्रभु समाचार असअहई ॥
मेघनाद मख करै अपावन * खल मायावी देव सतावन ॥
सो प्रभु सिद्धि होइ जो पाइहि * नाथ वेगि रिपुजीति न जाइहि ॥
सुनिरघुपतिअतिशयसुखमाना * बोले अंगदादि कपि नाना ॥
लक्ष्मण संग जाहु सब भाई * मखविध्वंस करहु तुम जाई ॥
तुम लक्ष्मण रणमारेहु ओही * देखि सभयसुर बड़ दुखमोही॥
जाम्बवन्त कपिराज विभीषण * सेन समेत रहहु तीनों जन ॥
जब रघुवीर दीन अनुशासन * कटि निषंग कर बाणशरासन ॥
प्रभु प्रताप उर धरि रणधीरा * बोलेउ घन इव गिरा गँभीरा ॥
जो तेहि आजु वधे विनु आवौं * तौ रघुपति सेवक न कहावौं ॥
जो शत शंकर करहिं सहाई * तदपि हतौं रघुवीर दुहाई ॥
दोहा–वन्दि राम पद कमल युग, चले तुरन्त अनन्त ॥

अंगद नील मयन्द नल, संग सुभट हनुमन्त ॥ १०० ॥
जाइ कपिन देखा सो वैसा * आहुति देत रुधिर अरु भैंसा ॥
तब कीशन कृतयज्ञ विध्वंसा * जब न उठै तब करहिं प्रशंसा ॥
तदपि न उठै धरहिं कच जाई * लातन हति हति चलहिं पराई ॥
लै त्रिशूल धावा कपि भागे * आवा रामअनुजके आगे ॥
आवत परम क्रोध करि मारा * गर्जि घोर रव बारहिं बारा ॥
कोपि मरुतसुत अंगद धाये * हति त्रिशूल उर धरणि गिराये ॥
प्रभु पर छाँडेसि शूल प्रचण्डा * शरहति कृत अनन्त युगखण्डा ॥
उठि बहोरि मारुत युवराजा * हतेउ कोपि तेहि घाव न बाजा ॥
फिरे वीर रिपु मरै न मारा * पुनि धावा करि घोर चिक्कारा ॥
धावतदेखि क्रोध जनुकाला * लक्ष्मण छाँडे विशिख कराला ॥
आवत देखि वज्र सम बाना * तुरत भयो खल अन्तर्द्धाना ॥
विविध वेषधरि करै लड़ाई * कबहुँक प्रगट कबहुँ दुरिजाई ॥
तब त्रिशूलछाँड़ेसिलक्ष्मणपर * काटिकीन्हशतखंडधरणिधर ॥
शिखर एक लै पुनि सो धावा * राम अनुज सो काटि खसावा ॥
दोहा—आयुध विविध प्रहार किय, रज सम कीन फणीश ॥
हर्ष विवश कपि रीछ सब, विबुध सहित सुरईश ॥ १०१ ॥
बहुरि विविध शर छाँड़न लागा * रणकानन छूटहिं जिमिनागा ॥
राम अनुज शर गरुड समाना * उमा ग्रसत छूटत अभिमाना ॥
देखि अजयरिपु डरपेउकीशा * परमक्रोध तब भये अहीशा ॥
देखिय जिमि रवि तेज समाना * फुरकत मनहु व्याल अनुमाना ॥
लक्ष्मण मन अस मंत्र दृढावा * इहि पापिहि मैं बहुत खेलावा ॥
सुमिरि कोशलाधीश प्रतापा * शर संधान कीन्ह अति दापा ॥
छाँड़ा बाण तासु उर लागा * शीश भुजा काटे नृपनागा ॥
घन समान सो गर्जि अभागा * मरती बार कपट सब त्यागा ॥
दोहा—राम अनुज कहि राम कहि, असकहि छाँडेसि प्रान ॥

१ पर्वत । २ लक्ष्मणजी । ३ क्रोध ।

धन्य शक्रजित मातु तव, कहि अंगद हनुमान ॥१०२॥

अथ क्षेपक ।

जो जगकहँ दंडक यमदंडा * हरिद्रोही सुत समर प्रचण्डा ॥
महिमा अमित महाबलसींवा * जासु प्रताप अभय दशग्रीवा ॥
भुजबल सुरनायक वशकीन्हा * चौदह भुवन जीति यश लीन्हा ॥
रिपु तरु लखण मूलखनि गंजेउ * जिमिगजकमलनालगहिभंजेउ
जिमिवारणगहिकुलिशकराला * कौशिककठगिरिपक्ष विहाला ॥
रणसागर महँ पर्यो शरीरा * लसै दारु जिमिरुधिर सुनीरा ॥
दंत विकट मुख परमभयावन * चिकुरसघनचलअशुभअपावन
रसना लाल रंग जनु जावक * धूमकी शिखा सोहजनु पावक ॥
पायसु आयसु ऋषभ कपीशा * करगहि लीन दुष्ट कर शीशा ॥
दोहा—करि श्रम मार्यो महारिपु, राम अनुज रणधीर ॥
निडर सुमन वर्षहिं विबुध, कहि जय गिरागँभीर ॥१०३॥

इति क्षेपक ।

विनप्रयास हनुमान उठाये * लंकद्वार राखि पुनि आये ॥
तासु मरन सुनि सुर गन्धर्वा * चढि विमान आये नभ सर्वा ॥
वर्षि सुमन दुन्दुभी बजावहिं * श्रीरघुवीर विमल यश गावहिं ॥
जय अनन्त जय जगदाधारा * तुम प्रभु सर्व देव निस्तारा ॥
अस्तुतिकरि सुरसकलसिधाये * लक्ष्मण कृपासिन्धु पहँ आये ॥
प्रभुहिं विलोकि शीशपद नाये * उठि प्रभु अनुज हर्षि उरलाये ॥
मुखप्रसन्नता देखि छके सब * रिपुवध कहा विभीषणहू तब ॥
कृपादृष्टि करि अनुजहि हेरा * विगतभयो श्रमजबकर फेरा ॥
बाण वेध तनु देखियत कैसे * कनक तूण शर पूरित जैसे ॥
धरतेहि शीश आन प्रभु आगे * वानर भालु विलोकन लागे ॥
प्रभुकौतुकीनिरखिसोइशीशा * राखन कहेउ कोशलाधीशा ॥
दोहा—प्रभु आयसु सुनि कीशपति, राखेउ यतन कराय ॥

१ इन्द्र । २ वज्र । ३ मेंहदी । ४ अग्नि ।

कटक सहित रघुवंशमणि, शोभित अति सोउभाय ॥ १०४॥
कृपादृष्टि सब कटक निहारे * भये श्रम रहित राम बैठारे ॥
सुनहु उमा इहिविधि रिपुमारे * सुर नर मुनि सब भयेसुखारे ॥
सुत वध सुना दशानन जबहीं * मूर्च्छितभयउपर्‌यो महितवहीं ॥
मंदोदरी रुदन करि भारी * उरताडत बहुभाँति पुकारी ॥
नगरलोक सब व्याकुलशोचा * सकल कहहिं दशकंधरपोचा ॥
दोहा—तब दशकंठ विविध विधि, समुझाई सब नारि ॥
नश्वर रूप प्रपंच सब देखहु हृदय विचारि ॥ १०५॥
तिनहिं ज्ञान उपदेशत रावन * आपन मंद कथा अतिपावन ॥
पर उपदेश कुशल बहुतेरे * जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥
अथ क्षेपक सुलोचनाकी कथा ।
अब सो सुनहु भुजा तेहि केरी * खगजिमि गई लंक शरप्रेरी ॥
मेघनाद आँगनमें परी * बाण विद्ध शोणितसन भरी ॥
राजति तहँ सुलोचना कैसी * रतिते रुचिर रूप गुण जैसी ॥
नागसुता दशकन्ध पतोहू * वासवरिपु तिय छबिमयजोहू ॥
हेमासिंहासन सोहति बाला * सेवत विद्याधर तियमाला ॥
पूजहिं विविध विनय करताहीं * सुख प्रमोद को सकहि सराही ॥
तहँ पति भुजा परी इहि भाँती * मनहु सकलसुखतरुकीकाँती ॥
दोहा—तब तिहिं दासिनिदेखि तहँ, रक्त स्रवत भुजदण्ड ॥
भयउ समर आश्चर्यमय, मनहुँ अखंडनखण्ड ॥ १०६॥
सुनकर सकल सखी मुखबैना * तजि सिंहासन उठी सुनैना ॥
नारि स्वभाव धुक धुकी धरकी * सूचकअशुभदाहिनभुजफरकी ॥
होत महारण रावण रामहिं * वीर धुरीण मोर पिय तामहिं ॥
सकल सुरासुर सकहिंनजूझी * विधि वामता परत नहिं बूझी ॥
इतना कहत गई चलिआपू * पतिभुजलखिकरिकोटिकलापू ॥
कंकण मणिगण भूषण सोई * महाविटप सम आननहोई ॥

१ नागवान । २ पृथ्वी,आपु, वायु, आकाश, तीनोंगुण इत्यादिक । ३ स्वर्णसिंहासन । ४ प्रसन्नता । ५ सुलोचना । ६ देवर्ता-राक्षस ।

देखत मनहिं न आवत तेही * तासु प्रभाव सुना पहिलेही ॥
नींद नारि भोजन परिहरई * बारह वर्ष तासु कर मरई ॥
दोहा-करि विचार मन टेकहै, मैं पतिदैवत नारि ॥
भुजलिखि मेटहु दुचितही, सुनकर दीन पसारि ॥१०७॥
लखिरुख तासु सखी उठिधाई * तुरतहि खोजि खरी लै आई ॥
दीनहाथ मणिमय अँगनाई *लिखनलषणकीरातिरुचिराई ॥
नींद नारि भोजन शत कोटी * तजततासु महिमा अतिछोटी॥
अक्षय अखंडअलख अविनाशी* अतुल अमित घटघटकेवासी॥
प्रकटहिं पालहिं पुनि संहरई * त्रिगुण रूप त्रय मूरति धरई॥
जो कालहु कर काल भयंकर * वर्णत शेष शारदा शंकर ॥
लीला तनु सुर सेवक हेतू * जासु नाम भवसागर सेतू ॥
मुनिमनपुण्डरीक जाके घर * वचन विवेक विचाबुद्धिवर ॥
दोहा-कोटिकल्प वर्णत निगम, अगम जासुगुणनाथ ॥
तम शरीर जड जीव बिनु, किमिवर्णतालिखिहाथ ॥१०८॥
ममशिर गयो दरश रघुराई * तव प्रतीत लगि भुजा पठाई॥
इहिविधि लिखीसकलभुजवाता* परी भूमि तब अतिविलपाता॥
बाँचिसकलभुजालिखितयथारथ* लक्ष्मण रामनाम परमारथ ॥
त्रियास्वभाव तदपि बहुभाँती * विलखतसकलसखिनकरपाँती
गुणगण साहस शील नाहको * कहि रोवतबलविपुल बाँहको॥
जेहि भुज बल सुरनाथ बिगोवा * सो प्रभुआजुसमरमहि सोवा॥
मणिगण भूषण वसन बिसारत * महिलोटत करतलशिरमारत॥
मगनशोकसारि तनुसुधिनाहीं * दारुण विपति कहौंकेहिपाहीं॥
क्षणक प्रबोधं सखी कोउ करई * बहुरि शोक दावानल जरई ॥
क्षणक्षण उठत परत धरणीतल *पुनिपुनिसबसराह पतिकोबल॥
दोहा-तिनमें सखी सयान इक, कहि समुझावतबैन ॥
शोक छाँडि पतिदेवता, सुमति करौ जिय चैन ॥१०९॥

१ सावधान ।

सुनकहु सहसाननतनु जाता * सत्यकहहु तुम सखी सुजाता ॥
विधि निर्मित मोकहँ दुखलाहू * सुख परिपूर भुवन सब काहू ॥
विजय राम लक्ष्मणकहँ आवा * सुयशसकल मर्कट[1] कुलपावा ॥
कुल कलंक बडलहेउ बिभीषन * कुलकुठाँर[2]अस सुनेउ नदीखन ॥
छूटि बन्दि अब सुरगण केरी * निज निज पुरन दुहाई फेरी ॥
मुनिपुलस्त्यकर भा कुलनाशा * अबरविशशिसुखकराहिंप्रकाशा ॥
तेजवन्त पावक परिहरि दुख * बहब समीरआजुअमनेसुख ॥
सलिल गगन भू निर्मल आजू * सुवश बसहिं सुरनायकराजू ॥
दोहा-यम कुबेर दिग्पाल सब, प्रमुदित सुरनर नाग ॥
खाँय अघाय विहाय दुख, पाय सुयज्ञ विभाग ॥११०॥
इतना कहि मन्दिरमहँ आई * देखत मणिगण धन बहुताई ॥
सुरपति भवन सुपटतर[3] नाहीं * जहँ ऋधिसिधितनुधरेकमाहीं ॥
देखत बिभव न मन अनुरागा * पतिपदप्रेम निपुण मनलागा ॥
देत दान मणि भूषण चीरा * धेनु बसन मणि हाटक हीरा ॥
मणिमय शिबिकारुचिरसुहाई * भुज चढाइ परिराइ बनाई ॥
आपन चढत भई तहँ आई * सुर दुर्लभ सुख सदन विहाई ॥
वीतरागजिमितजत विषयगन * तेहितसभाँतितिन्हयोपतिपदमन
शुकसारिका सुलोचनि जाये * कनक पिंजरन राखि पढाये ॥
व्याकुलकहकहंजात सुनयना * सुनि धीरजपरिहरतसुबयना ॥
भये विकल खग मृग इहिभाँती * अपर दशा कैसे कहिजाती ॥
प्रजा लोग गृह तजि सँगलागे * प्रेम उमँगि लोचन जल पागे ॥
दोहा-बाजन लगे निसान बहु, ढोल दुंदुभी भेरि ॥
पुरजन परिजन संग सब, चले पालकी घेरि ॥१११॥
देखि भीर दशकन्धर द्वारे * सजग भये तब वीरप्रचारे ॥
जानेउ कटक रिपुन कर आवा * अस्त्र शस्त्र कर गहि कर धावा ॥
धनु चढाइ कटि तरकस बाँधे * कोउ असिचर्मशरासनसाधे ॥

१ बन्दर । २ कुल्हाडी । ३ समान ।

तोमर परशु प्रचण्ड गदा गहि * तीक्ष्णचोखे शूल शक्ति लहि ॥
मारु मारु धरु धरु कहि धाये * प्रगट दशानन विजय सुनाये ॥
गर्जत तर्जत गिरा गँभीरा * समर भयंकर निशिचरबीरा ॥
निपटहिं निकट पालकी आई * चीन्ह सकलभट रहे लजाई ॥
देखि जुहारि नागपति कन्या * सतीशिरोमणि त्रिभुवनधन्या॥
दोहा-द्वारपाल दशकन्ध कहँ, खबर जनाई जाय ॥
भयउ रजायसु वेगि तब, वचन कहति बिलखाय ॥ ११२ ॥
तुमहिं अछत असिदशा हमारी * सुखतजिभई शोकअधिकारी॥
नभपथहै भुज मम गृह परी * बाण विद्ध शोणित तनुभरी ॥
देखि भुजा मनमें अति डरी * संशय जानि दीन्ह कर खरी ॥
लिखी राम लक्ष्मण महिमाइन * क्रम क्रम सों सबकथाकहीतिन
ठगिसी रही बाँचि गुणगाथा * जरहुँ संग जो पाऊं माथा ॥
रणकबन्ध भुज ममगृह आई * शिरतहँ गयउ जहाँ रघुराई ॥
करहु सो यत्न मिलहिंमोहिंशीशा*तुम सामर्थ निशाचर ईशा ॥
सुनत कुलिशसम[1] गिरावधूकी *जीवन आश दशानन मूकी ॥
तदपि धीरधरि करत प्रबोधा * कहुको मोसमान जगयोधा॥
दोहा-राम लषण सुग्रीव नल, नील द्विविद हनुमन्त ॥
माथ विभीषण ऋषभ कर, आनब मारि तुरन्त ॥ ११३ ॥
अबलगि रहेउ भरोसा भारी * कुम्भकर्ण घननाद सुरारी ॥
हमहुँ आज लगि कीन्ह नजूझा * इन सबकर पुरुषारथ बूझा ॥
मरे ते नर वानरके मारे * बात सुनत अति लाज हमारे॥
गिनती कवन वीरमें तिनकी *अति दुर्दशाकीन कपिजिनकी॥
तजहु शोक कुलवधू पतोहू * उनसमान जनिमानसि मोहू ॥
पुत्रि विलम्ब करौ घटि चारी * देखहु मोरि भयंकर मारी ॥
आनि शीश तव शत्रुन केरा * विन प्रयास नहिं लावौं वेरा ॥
भोगत जन्तु पुराकृत भोगा *नतुकिमि निशिचर वनचरयोगा

१ वज्रसमान । २ छोटी ।

दोहा-मेरु उखारन हारजे, धरा धरत कर बीच ॥
तेमटखाये मशक शिशु, कालकुटिलता नीच ॥ ११४ ॥
क्रोधावेश प्रगट बल बोलहि *हृदयशोकतरुअचलनडोलहि॥
समाधान नहिं मानति सोई * सुनि प्रलाप परितोष न होई ॥
नर वानर पुरुषारथ देखत * बड़ो प्रभाव छोटकरि लेखत ॥
कूदि सिंधु कपि लंकाजारी * लघुकर मानत ताहि सुरारी॥
कुंभकर्ण अतिकाय महोदर *ममपति गिरेउ समेत सहोदर॥
ते रिपु चहत दशानन जीती * देखहु महा मोहकर रीती ॥
उतरदेउँ तौ पातक होई * कह विवाद कर सर्वस खोई ॥
फिरहि राज्य कछु मोहिं नकाजू* विनापियसकलनरककरसाजू ॥
दोहा--तुरतहि उठी सुलोचना, गइ मयतनया पास ॥
पदगहि रोवति सकल कहि, प्रगट शोक इतिहास ॥११५॥
आदिहिते सब कथा बखानी * सुनि सुनि रोवति रावण रानी॥
कहनिजपति भुजलिखितबहोरी* राम लषण महिमानहिं थोरी ॥
कह्यो बहुरि दशकन्धर क्रोधा * मुये विडंबनकीन्हेसि बोधा ॥
सुनि निज पुत्रवधूकी वानी * बोलीदुखित मँदोदरि रानी ॥
कहौं सो मानहु सत्य सयानी * सुनी जो नारदमुनिकी वानी ॥
पाछिलबात भई सब साँची * अनुभव कीन्ह न एकहु बाँची॥
देविन होय मृषा ऋषि भाषित * अपने महा मोह मनमाखित ॥
अगली कथा समाज समेता * सुनु पुत्री ऋषि वरणेउ जेता ॥
वीरभाव दशकन्धर जूझब * प्राणहु गये नीति नहिं बूझब ॥
सिया शोक संकटसे छूटहिं * वानर भालु राज्य घर लूटहिं॥
सुरमणि भूषण वसन विमाना * भोग करहिं वनचरकुलनाना॥
दोहा-राज्य विभीषण पाइहैं, अमर कल्प निरवाह ॥
भावीवश दुख सुख जगत, उपदेशिय कहु काह ॥ ११६ ॥
मुनिवर वचन मोहिं परतीती * अनुभव दोउ हार अरुजीती॥

१ पृथ्वी। २ बोध । ३ मंदोदरी। ४ सुलोचना। ५ वानर-ऋच्छ।

अब पुत्री परिहरि सब शोका * पतिसँग वेगि साध परलोका ॥
जाहु रामपहँ पतिशिरलागी * तज संकोच आनकिनमाँगी ॥
आज नहोउ लाजकर भूषण * समय हीन गुण गणियनदूषण॥
है पुनि श्वशुर विभीषण तोरा * वालितनय बालकसम मोरा ॥
एक नारि व्रत रघुवर केरा * लषण सुयश तुम सुनेउ घनेरा
मन्त्री जाम्बवन्त सुग्रीवा * द्विविद मयंद महाबल सीवा ॥
जानहु ब्रह्मचर्य हनुमन्ता * शिवस्वरूप भव हर भगवन्ता॥
सदा नीतिरत राम नरेशा * तहाँ जात कहु कवन कलेशा ॥
दोहा-विदित तोरपति भुजालिखित, लक्ष्मण राम प्रभाव ॥
हमहूं ऋषि भाषित कहेउ, अब विलंब जनिलाव ॥ ११७॥
सुनत सासुमुखकी हितवानी * जाहुँ रामपहँ अस जिय जानी॥
बार बार चरणन शिरनाई * चली जहाँ लक्ष्मण रघुराई ॥
देखत कटक भालु कपि केरा * सिन्धु सुवेल महीधर घेरा ॥
उमँगेउ मनो महोदधि दूसर *हरित पीत कपि धूमर धूसर ॥
व्योम लाल भाषत अनुहेरी * मनहु लेत वड़वानल घेरी ॥
गिरत रुधिर भुजसहज भयंकर*जहँ तहँ प्रगट होत जनुजलधर॥
लक्ष्मण शेष सुअंक शीशधर *कटक जलधि सोवत राघववर॥
अक्षयवट तहँ बैठ विभीषण * अससुकृती कहँ सुने नदीखन॥
दोहा-देखत डरत सुलोचना, धीरज धरत बहोरि ॥
महाराज रघुवीर कहँ, विनय सुनावो मोरि ॥ ११८ ॥
वानर सकल उठे अस बोली * अरिपुरते आवत इक डोली ॥
जानि परत रावण अब बूझा * भइमति मेघनाद जब जूझा ॥
हठताजि सीतहि दीन पठाई * तजहु शोच अब मिटी लराई ॥
जिहिलगिप्रगटकीन्हपुरआगी * बाँधेउ सेतु हेतु जेहि लागी ॥
सो सीता अब बिनु श्रमपाई * जानहु विधि अनुकूल सहाई ॥
विजय राम सुग्रीवहि आवा * सुयश वीर वानर कुल पावा ॥

१ त्याग । २ अंगद । ३ प्रगट । ४ महासागर । ५ लंका ।

विरह राम लक्ष्मण कर छूटा * बिनकलेश लंकागढ टूटा ॥
युग युग कीरति चलब हमारी * कहँ राक्षस कहँ लघु वनचारी॥
दोहा-इहिविधि चारु विचारु करि, निश्चयकरि मनमाहिं ॥
भयउ काज रघुराज कर, बात दूसरि नाहिं ॥ ११९ ॥
पैठत कटक अतिहि सकुचाई *अनविन्हारि जनु परघर जाई ॥
आगे जाइ देखि रघुबीरा * छबि श्यामलमय गौरशरीरा ॥
मरकतकनकछबिहिजनुनिंदक* सो जन धन्य उमा जे वंदक ॥
मत्तगयन्द शुण्ड भुजदण्डा * धनुष बाण असि धरे प्रचण्डा ॥
उरविशाल अति उन्नत कन्धर * कंबुकण्ठ रेखा त्रय सुन्दर ॥
दशनपाँतिकी कांति कहैको *लक्षत मन पटतरहि लहैको ॥
देखत अधरनकी अरुणाई * बिम्बाफल बन्धूक लजाई ॥
शुक तुण्डहि नासिका लजाई * थाकेउ कवि पटतरहिं नपाई ॥
दोहा-छबिमय गुणमय तेजमय, राम उदधि अवगाह ॥
जहाँ न पावत पारसुर, किमि वरणै कविथाह ॥ १२० ॥
भ्रुकुटी ललित कपोल सुहाये * शीश जटा कर मुकुट बनाये॥
भाल विशाल तिलक युत सोहै *ध्यान समय मुनिमानस मोहै॥
वल्कल वसन तूण कटिबाँधे * करशर सुभग शरासन काँधे ॥
वीरासन आसीन कृपाला * नवपल्लव प्रसून कर माला ॥
चरण सरोज बरणि नहिं जाई * जहँ मुनि मधुकर रहे लुभाई ॥
प्रगट भई जिहि थलसे गंगा * श्रुतिपुराण कह कथा प्रसंगा ॥
नवत महेश विरंचि जाहिको * लोचन गोचर होत काहिको ॥
भय भंजन जन रंजन जोहित * भवसागर तारण कहँ वोहित ॥
दोहा-प्रणतपाल बिरुदावली, जिन चरणनकी बानि ॥
शोकहरण संशय दलन, करण सुमंगलखानि ॥ १२१ ॥
कर जोरे अंगद हनुमाना * द्विविद मयन्द कुमुदबलवाना॥
जाम्बवन्त कपिपतिबलशीला *ऋषभसुषेण सहित नल नीला॥

१ ऊँचा । २ छाल-भोजपत्र । ३ धनुष ।

महावीर वानर सब राजत * लषण विभीषणदोउदिशिभ्राजत
मितभाषित प्रभुचरण सुसेवक * चितवत रुखरघुनन्दन देवक ॥
सभामध्य सोहत अघमोचन * कीन्हेउसफलनिरखिनिजलोचन
करतदण्डवत शिर धारि धरणी * तिहिका चरित विभीषणवरणी ॥
पुत्रवधू दशकन्धर केरी * बड़ि पतिव्रता जानि प्रभुहेरी ॥
मेघनादकी नारि सुशीला * अस गति तव विरोध करलीला ॥
करत प्रणाम प्रेम नहिं थोरे * करुणा वचन कहत कर जोरे ॥
दोहा-मुये ज्ञान पति भुजाहिं सब, लिख समुझाई मोहिं ॥
महाराज रघुवंशमणि, याचन आई तोहिं ॥ १२२ ॥
छंद--परशे चरणकर प्रेम पूरण प्रणतपाल खरारिके ॥
जिमि नमत शंकर शेष सुर मुनि धरणि भंजन भारके ॥
प्रभु जानसो विनती सुलोचनि करत कहि विनतीघनी ॥
जय शोकहरणकृपालु जय जयजयति जय रघुकुलमनी ॥४॥
प्रभु ब्रह्म रूप स्वभाव शीतल अतुलबल त्रिभुवन धनी ॥
जय हरण धरणीभार बाहु विशाल खंडन खलअनी ॥
तव दीनबन्धु दयालु अपरम्पार सब गुण आगरे ॥
करुणानिधान सुजान शील सनेह रूप उजागरे ॥ ५ ॥
षट् अष्टलोक जो रचत पालत प्रलय सो मायासुरी ॥
केहि भाँति वरणौं नाथ गुणगण नारि जड़मति बावरी ॥
जेइ चरण ईश महेश शारद श्रुति निरन्तर ध्यावहीं ॥
हूंभूरिभाग्य सरोजपद सोइ हर्ष शिरसि लगावहीं ॥ ६ ॥
छंद-मात्रात्रिभंगी ।
गहकरवाणी शारँगपाणी सबगुणखानी रामबली ॥
सुरसुरभीरक्षक राक्षसभक्षक भक्तहिरक्षक भाँतिभली ॥
मैं रिपुसुतनारी जान अघारी अधिकारी नहिंदुखभारी ॥
हरि विरहदवारी अतिभयकारी सहबहुवारी दुखकारी ॥७॥

१, निधान । २ चौदहलोक । ३ गौ ।

तव शरणै आई जनसुखदाई रघुराई करुणासागर ॥
पतिमस्तकपाऊं जारिसँगजाऊँ शिरपाऊँ शोभाआगर ॥
पतिममतनुत्यागीअतिबड़भागी अनुरागीजिनमुक्ति लई ॥
ममताकिमितासू वरणूंआसूजासु अचल जगपंक्तिरही॥८॥
यहिविधिपदपंकजसेव्यरमाअजाशिरनामिदोउकरजोरिरहीं॥
सुनिपंकजलोचनि वचनसुलोचनि लोचनमें जलधारबहीं ॥
यहिभाँति सुनैना अस्तुतिबैना बारबार हरिचरणपरी ॥
प्रभु होहु दयाला अतिहिकृपाला पावों भक्तिअनूपहरी ॥९॥

दोहा—अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारण रहित दयाल ॥
तुलसिदास शठ ताहि भज, छाँड कपट जंजाल ॥ १२३ ॥
तुम त्रिभुवन त्रैलोकके, दूसर और न कोय ॥
काहिं पुकारों छोंडि तोहिं, सत्य नाम प्रभहोय १२४ ॥

तुम अन्तर्यामी भगवाना * नहिं तव आदि मध्य अवसाना॥
करुणावचन[1] सुनत रघुवीरा * पुलक रोम भे शिथिलशरीरा ॥
देउँ जियाय तारपति आजू * करहू लंक कल्पशत राजू ॥
छाँड़ि शोच अब मन हरषाहू * तुरत भवन अपने फिरिजाहू ॥
सुनि अस सत्यसिन्धुकी वानी * मनमें वनचर[2] अति भयमानी॥
काहिनसकत कछु प्रभुरुखदेखी* कहा करब करतार विशेखी ॥
सीय शोच कर फल नहिं होई * जोकरि कृपा राम यहि जोई ॥
सब देवनकर शोच न जाई * जो अस कृपा करैं रघुराई ॥

दोहा—राज्य विभीषण लंककर, किहिविधि करिहहिं भाइ ॥
समुझि वैर घननाद जब, गहिहि शरासन धाइ ॥ १२५ ॥

मुखरुखदेखि कपिनभयमाना * प्रणतपाल भगवन्त सुजाना ॥
देखि बहुत रघुवरको छोहू * विनय करति दशकन्ध पतोहू॥
तुम उदार सब देबे लायक * करुणामय देखे रघुनायक ॥

१ दीनवचन । २ कपि-ऋच्छ ।

हमहुँ विचारि दीख मनमाहीं * जीवनते अस मरण सराहीं ॥
भुजबल जीति लोक वशकीन्हें * चौदहभुवन भोग करि लीन्हें ॥
रणतीरथ याचक बड़ चीन्हा * प्राण सुधनलक्ष्मणकरदीन्हा॥
अब न उचितपति लेउँ उभारा *तेहिपरअधिकसुदरशतुम्हारा॥
हमहूँ जाइ मरब सतसाधी *मिलबतुमहिंजसामिलतसमाधी
दोहा-निर्मलगति अवसर भयउ, सुनहु सत्य रघुवीर ॥
तुमहिं मिलत नहिं होयभव, यथा सिन्धु गत नीर ॥१२६॥
मनकी जाननहार सुदेवा * भवसागर तारहु यह खेवा ॥
लीन्हेउ राम कपीश बुलाई * मेघनाद शिर दीन्ह मँगाई ॥
पाय कृतारथ मानेउ आपू * मिटा विरह संभव परितापू ॥
अंचल पोंछत मुखकी धूरी * कहि मम प्राण सजीवन मूरी॥
देखि करत संशय सुग्रीवा *भुजमहिलिखतजीहविनग्रीवा॥
हँसिहहिवदन तीह तो साँची * नातर निशिचर माया याँची ॥
कितअसज्ञानमृतक भुजगावा * जो मुनिवर साधन नहिंपावा ॥
प्रभु असकहेउ हँसबयहशीशा *करत कुतर्क न उचित कपीशा॥
दोहा-शिरसों कहति सुलोचना, हँसहु वेगि ममनाथ ॥
नातर सत्य न मानि हैं, लिखा जो तुम्हरे हाथ ॥१२७॥
क्षणक विलम्बकीन्हनहिं बोला * मृतक वदन मूँदतनहिंखोला ॥
पुनिपुनिकहतिसोनागकुमारी * श्रमित भयउ रणमेंकरिमारी॥
लगे लषण शर क्षोभ बढावा * प्रभुसमीपकस मोहिं लजावा॥
जो मन वचन कर्म यह देही * पतिदेवता न आन सनेही॥
तौ प्रभु सभा बीच शिर बोलै * रहहि छाययश सुयशअमोलै॥
जो जानति तव यहगति साईं * बोलि पठावत पितहि सहाई ॥
सुनि तियवचनहँसेउतबशीशा * चौंके चकित भालुभटकीशा ॥
हँसेउ ठठाय वदन सबदेखा *विस्मयभयउसकलजिहिंपेखा॥
कुलिश समान सुनानहिंजाई * रहेउ सो वदन बहुरि अरगाई॥

१ लोक । २ पानी । ३ आश्चर्य । ४ वज्र । ५ चुप ।

सकुच कपीशहि तोषेउ नारी * बड आश्चर्य भयो वनचारी ॥
पूँछत कपिपति पद शिरनाई * कारण कवन हँसाशिर साँई ॥
प्रभु कह सुन सुग्रीव कपीशा * शीश हँसेकर सुनहु अदीशा ॥
मन क्रम वचन पतिहिसेवकाई * तियहित इहिसम आनउपाई ॥
असजियजानिकराहिंपतिसेवा * तिहिंपर सानुकूल मुनि देवा ॥
यह सतवति अहिराजकुमारी * तेहिसतते हँसि शीश सुरारी ॥
सुनिप्रभुवचन कपिनसुखमाना * पुनि पुनि चरणगहे हनुमाना ॥
सुनु गिरिजा[1] असप्रभु प्रभुताई * केवल भक्तहिं देत बड़ाई ॥
जासु दृष्टि जग[2] उपजत नाशा * असकौतुककर कोतिकआशा ॥
दोहा-शीशपाय प्रभु चरण गहि, बहुविधि विनय सुनाय ॥
आजके दिन रण परिहरहु[3], ममहित कोशलराय ॥ १२८ ॥
बहुरि विभीषण पगन परीसो * रघुपतिचरणदियेमनपुनिसो ॥
तुम पितु सम दशकन्धर भाई * इहिकुलकी तोहिं लाजबडाई ॥
मुनि पुलस्त्य परिवारण दीपा * पायउ फल रघुवीरसमीपा ॥
महामोह बड अनभल माना * ज्ञान भयोतव गुण पहिचाना ॥
युगयुगकरहु अकण्टक[4] राजू * सहितसुकीरतिसुकृतसमाजू ॥
सुमिरततुमहिंसुजनगतिपावा * रघुपति चरित संगकरगावा ॥
सुनत विभीषण मनकरुणाकर * प्रकट नकहतसमथाविरहाकर ॥
काल कर्म गति कह समुझाई * चली तुरत गुरु आयसुपाई ॥
दोहा-बाहर करि कपि कटकते, फिरेउ विभीषण आप ॥
बिसरेउ दशमुख वैरही, हृदय अधिक सन्ताप[5] ॥ १२९ ॥
शिर चढाइ पालकी चढीसो * रघुपतिकृपा प्रभाव बढीसो ॥
हृदय राखि मूरति घनश्यामा * रसना रटत निरंतर नामा ॥
सरित सिन्धु संगमजहँ पावन * असमुधिपायगयो तहँ रावन ॥
संग मँदोदरि सब रविवासू[6] * मनहुशोक रवि कीन्हप्रकासू ॥
पाय रजायसु सेवक धाये * चन्दन अगर सुगँध बहुलाये ॥

१ पार्वती । २ संसार । ३ त्यागहु । ४ एकछत्र । ५ दुःख । ६ निद्रा ।

रचि दृढ़ दारुण चितावनाई * जनु सुरलोक निसेनीलाई ॥
करि प्रणाम सब जनपरितोषी * धीरज धरसि तासु मति पोषी॥
शिर भुजधारि बैठी करि आसन * भइ जनु योग सिद्धिकर बासन॥
दोहा-देत अनल ज्वालावढी, लपट गगन लगिजाय ॥
लखी न काहू जात तेहि, सुरपुर पहुँचीधाय ॥ १३० ॥
देखि चरित पुनीत सुरगावहिं * वर्षि सुमन दुंदुभी बजावहिं ॥
तासुक्रियाकरि निशिचरनाहा * भयउ शोचवश अतिडरदाहा॥
सचिव आइ सब लगे बुझावन *बादि विषादकरिय जनि रावन॥
सुत वित नारि त्रिविधसुखकैसे * उपजहि घटा जाहिं नभ जैसे॥
तडित विदित देखिय घनमाहीं * रहै न थिर लहिं तुरत छिपाहीं॥
यह जियजानि सुनहु दशभाला* बचहिं न कोउ जग आयेकाला
अब प्रभु यतन विचारहु सोई * रिपुकर नाश जवन विधिहोई॥
वचन सुनततेहिकछुसुखमाना * काल विवश जिमि तीरथन्हाना

आहिरावणकी कथा ।

दोहा-लागेउ करन विचार पुनि, बहुप्रकार दशशीश ॥
समुझि हृदय अहि रावणहिं, आयउ जहाँ गिरीश ॥१३१॥
दण्डचारि तब तहँ निशि बीती * सन्ध्या वन्दन कीन्ह सप्रीती॥
लागेउ करन ध्यान दशशीशा * ह्वै हर्षित संपुट भुज बीशा ॥
शंकर सेवक अति अनुरागी * सुन खगेश तेहिते बडभागी ॥
मंत्राकर्षण जप दशभाला * अहिरावण चित डोल पताला॥
लागेउ करन सो मन अनुमाना* केहिकारणदशमुखअकुलाना ॥
निशिचर नाह भुवन वश जाके* जीतन कहँ न वीर कोउ ताके॥
मन क्रम वचन आननहिं सेवी* धरेउ ध्यान उर कामददेवी ॥
चलेउ बहुरि आयउ सो तहँवाँ* शिवमण्डप रावण रह जहँवाँ ॥
निशिचरपतिकहँतेहिशिरनायउ*करगहि निजआसनबैठायउ ॥
दोहा-अहिरावण तब रावणहि, बूझी कुशल सप्रीति ॥

१ मंत्री । २ मिथ्या । ३ घडी ।

प्रथम कही तेहिं सब कथा, जैसे भगिनि अनीति ॥१३२॥
वध खर दूषण जिमि सधिपाई * मृग मारीच कपट कृत जाई ॥
कहेसि बहुरि सीता कर हरणा * लंकदहन हनुमत कर वरणा ॥
सेतुबाँधिजिमिप्रभुचलिआयउ * बालिकुमार विवाद सुनायउ ॥
अनी अकम्पन अरु अतिकाया * परे समरमाहि सुनु अहिराया॥
तात कुशल अब सबै सिरानी * कटक निशाचर सकल नशानी
कुम्भकर्ण घननादहु मारे * राम लषण दुइ मनुज विचारे॥
आनेहु बोलि तोहिं निज पासा * कहहु सुयतन होइ रिपुनासा॥
सुनत शोचभा अहिरावणमन * बोला वचन सुहावन पावन ॥
सुन रावण जगनीति पियारी * करे अनीति होय भय भारी॥
विना विचारि रारि तुम ठानी * कीन्ह सेन कुल सर्वस हानी ॥
मनुज प्रताप प्रभाव न जानेउ * सबते बड़ तोहिलघुकरिमानेउ॥
यदपि न योग मोहिं असबाता * तदपि हरहुँतवलगि दोउभ्राता॥
लै पताल देविहिं बलि देहौं * यशपूरण निशिचरकुल लेहौं ॥
लै जैहौं तुम जानेउ तबहीं * रविसम तेज होइ निशिजबहीं॥
दोहा-कहि अस वचन प्रबोध करि, शीशनाइ बलभाखि ॥
आयउ रघुपति कटकमें, निज देविहि उर राखि ॥१३३॥
गिरिजाकहेउ सुनो भगवाना * अहिरावणको अतिबलवाना ॥
कहो तासु प्रभु उत्पति गाई * सुन बोले शिव गिरा सुहाई ॥
मंदोदरि ऐसा सुत जायो * रावण जाको सुन दुख पायो ॥
बीस व्यालयुत सुन विबुधारी * रावनयोगन मनहि विचारी ॥
स्वानाननते कह्यो बुलाई * आवहु याहि गाडि कहुँजाई ॥
दूत दाबि नैर्ऋत्य सिधावा * पृथ्वी खोदि तोपि तर आवा ॥
रघुपति चरित करनहित आगे * मरा न सो बालक तेहिं लागे ॥
खायसि खनि माटी यक मासा * पुनिगा निकर नीरनिधिपासा॥
तेहि लखिराहुजननि अनुरागी * भवनलायनिज पालन लागी ॥

१ अंगद । २ युद्धभूमि ।

यकदिन तहाँ शुक्र चलिआयो * बोले पुत्र कहाँ यह पायो ॥
दोहा-जेहिविधि पायो उदधि ढिग, सोसब दियो सुनाय ॥
कह्यो शुक्र दशशीशसुत, यह जानो सतभाय ॥ १३४ ॥
आदिहिते सब चरित सुनाये *अहिरावण धरि नाम सिधाये ॥
निजउत्पत्ति सुनी तेहि जबहीं * कूदि परा सागरमहँ तबहीं ॥
निकसा तुरत विकलमहँ जाई * तहाँ रहै अहिपुरी सुहाई ॥
तप प्रभाव तहँ सुनेउ घनेरा * वासुकि नगर देख चहुँ फेरा ॥
तपहितचल्यो नदी ढिग जाई * कामन्दा देवी जेहि ठाई ॥
सुथलसमझ तहँ ध्यान लगावा * संवत चौदहसहस बितावा ॥
सबविधिदेखि समाधि अडोली * वरंब्रूहि तब देवी बोली ॥
इष्टवचन सुनि तेहि करजोरी * माँगहु वर सुख भोग बहोरी ॥
दोहा-शेष महेश दिनेश सुर, ईश अजीश अनन्त ॥
मरौं न काहू हाथसे, होउँ निशाचर कन्त ॥ १३५ ॥
पितहु कीन्ह अपमान हमारा * सोऊ मोहिं याँचै इकबारा ॥
सुनि देवी बोली सुन ताता *करिहो तुमबहुविधि सुखगाता॥
त्रेता शेष समय दशशीशा * याचहिंतोहिं जोरि भुजबीशा ॥
मारै तुम्हैं न कोउ जगमाहीं * कपियक मम वाचावशनाहीं ॥
कहि अस अन्तर भई भवानी * अहिरावण तब यहमतिठानी॥
विविध भेष धरि अहिपुर जाई *अज गज हय खर डारहिखाई॥
पुनि नागनसे भरयो प्रचारी * कीन्हों व्याकुल सबहिन मारी॥
तब नृप दर्विक बोल्यो ताही * विधिवत कन्या दई विवाही ॥
कुन्दानिनाम पाय तब नारी * काननमें घर करन विचारी ॥
पुनि कामन्दाके ढिग आवा * योजन नव कर नगर बसावा ॥
दोहा-रह्यो असुरले ताहिमें, करन लग्यो सुखभोग ॥
अबत्रेताके शेषमें, भयो प्राप्त सोइ योग ॥ १३६ ॥
सूझ न निजकर अति अँधियारी * मर्कटभट जागहिं तहँ भारी ॥

कहहिजयतिजयजयतिकृपाला * अतिहिअगमजहँनाहिं गतिकाला ॥
तहँ मारुतसुत रच्यउ उपाई * करि लंगूर कोट कठिनाई ॥
सो शोभा इहिभाँति सुनाई * भुजगराज कुंडली लगाई ॥
देखिय उन्नत शैल समाना * द्वार जहाँ तहँ पुरुष हनुमाना ॥
देखि हृदय अहिरावण हारा * किमि रविगृहकर तिमिरपसारा
एकौ युक्ति न मन ठहरानी * कपटवेष तेहि कीन्ह भवानी ॥
वेष विभीषण सब अनुहारी * पवनतनय पहँ गा छलकारी ॥
दोहा–सहज प्रतापी पवनसुत, पुनि सुरपति पति त्रास ॥
तिनहिं निदरि चल राम पहँ, मूढ हृदय नहिं त्रास ॥ १३७॥
मर्म्म न जान प्रभंजनजाता * कीन्हेसिगमन विभीषणभाँता॥
ठाढ होहु बोलेउ सुनु भ्राता * चलेउँ जहाँ कृपालु जनत्राता॥
मैं रघुपति सन आयसु पाई * संध्या करन गयउँ सुनभाई ॥
तेहितें तुरत चलेउँ प्रभुपाहीं * भइ विलम्ब जानि रामरिसाहीं॥
सत्यवचनकपि निजमनमाना * सुनु खगेश भावी बलवाना ॥
कपट चतुरगति जानि नजाई * परमन हरै हरहि धन भाई ॥
आयसु पाइ गयउ सो तहँवाँ * रहेफणीशअरुप्रभु दोउजहँवाँ॥
कपिपति जाम्बवन्त नलनीला * वालीसुत सुषेण बल शीला ॥
दोहा–द्विविद मयन्द कीश गण, गय गवाक्ष कपिवीर ॥
सहित विभीषण अपरभट, सोये सब रणधीर ॥ १३८ ॥
तिनहिं मध्य रावणशशिराहू * एक संग सोवत फणिनाहू ॥
दक्षिण दिशि सोवत रघुनाथा * अनुज वामदिशि तेहिपरहाथा॥
प्रभुकर उर पर राजत कैसे * जातरूप पंकज फणि जैसे ॥
कपि समूह जनु सागर क्षीरा * तहँ सोये मानहुँ दोउ वीरा ॥
सुभग बाण धनु धरे बनाई * लक्ष्मणसह समीप रघुराई ॥
अहिरावण मन कीन्ह प्रणामा * देखि राम सुन्दर घनश्यामा ॥
ब्रह्मादिक जेहि ध्यान नपावहिं * मुनि महेश पूजा मन लावहिं ॥

१ ऊँचा । २ अंधकार । ३ अनुसार । ४ डर । ५ भेद । ६ हनुमान् । ७ लक्ष्मणजी ।

करहिं विविध जप योग विरागी * रटहिंनिरन्तरनिशिदिनजागी ॥
सो प्रभु तेहि देखा भरिलोचन * कृपासिंधु सेवक भयमोचन ॥
बहुरि हृदय तेहि कीन्ह बिचारा * करहुँ काज रावण अनुसारा ॥
कछु निज माया कृत गुण आई * कवनी भाँति जाहिं दोउ भाई ॥
दोहा-मोहनते मोहे सकल, मन्त्रनते मुख मूँदि ॥
भयउ अदृश्य उठाइकरि, प्रभुहि चलेउ लै कूदि ॥१३९॥
यहि विधि गयउ दुहुँन लै सोई * नभ मारग प्रकाश अति होई ॥
सो प्रकाश जब रावण देखा * कियप्रमाणतेहि वचन विशेखा ॥
मनमहँ हर्ष करहिं अति भारी * अहिरावण लैगा असुरारी ॥
लै निज लोक गयउ पल माहीं * भयउ शोर तब कपिदलमाहीं ॥
जागे वानर श्रीहत भारी * देखिय जिमि सरितावितुवारी ॥
पुनिदेखिय जिमि निशि विनु इन्दू * भेवानरजिमिउडु विनु चन्दू ॥
रविबिनु दिवस जीव विनु देहा * जिमि देखिय दीपक विनुगेहा ॥
एकहिं एक लगे तब बूझन * कहाँगये त्रैलोक्य विभूषन ॥
दोहा-शोधेउ सबमिलि कटक तिन, नाहिं पाये दोउ वीर ॥
भेव्याकुल सब भालु कपि, जिमिजलचरगत नीर ॥१४०॥
सकलकहहिंयहविधिकहकीन्हा * रघुपतिविरहप्राणकतलीन्हा ॥
शोकग्रसित धरिसकहिं न धीरा * कहाँराम लक्ष्मण दोउ वीरा ॥
करुणाकरहिं कपीश अपारा * बनी बात विधि कहा बिगारा ॥
कटक निशाचर सकल सँहारी * रहा एकरिपु रावण भारी ॥
सोउ न रहत राम शरलागे * भाइउ हम सब परम अभागे ॥
कबहुँजोदशशिरअरिरणजीतहिं * उत्तर कवन देब हम सीतहिं ॥
असकहि विकल मूर्च्छिमहिपरे * लागत वज्र शैल जिमि गिरे ॥
दशा बिभीषण कही न जाई * विगत वत्स जनु धेनु लवाई ॥
दोहा-सहित पवनसुत ऋच्छपाति, दुख मन भा बडिभाँति ॥
खगपतिसूझ न कतहुँकछु, तम अपार तिहिराति ॥१४१॥

१ नदी । २ चन्द्र । ३ घर । ४ पानी ।

पवनतनय पुनि कह सब पाहीं * विस्मय एक होत मन माहीं ॥
कोउ इक आव विभीषण वेशा * प्रभुके निकट जात हमदेखा ॥
पूँछत वचन कहेसि अतिनीका * कपटजानिथानिशिचरजीका ॥
वचन सुनत बोलेउ लंकेशा * अहिरावण लैगा अवधेशा ॥
पन्नगलोक निवासी सोई * मम तनु वेष अवर नहिंकोई ॥
महाबली जानै सब माया * निश्चय तेहि दशशीश पठाया॥
जेहि बलहोइ तहाँ सो जाई * ताहि जीति आनै दोउ भाई ॥
कहेउ भालुपति सुनु हनुमाना * तव बल तात सकलजगजाना॥
वेगि सो यतन विचारहुताता * कृपासिंधु आनहु दोउ भ्राता ॥
दोहा-बिलखि कहेउ कपिपति बहुरि, सुनु मारुतसुत तात ॥
बिनु रघुनायक जन्म धिग, पल युग सरिस बिहात॥ १४२॥
यथा तृषित बिनु वारि दुखारी *रविबिनुजलज मीन बिनुवारी॥
भट अशस्त्र रणअनी अनाथा * वह्नि अनिंधन गातसमाथा ॥
दीप अवर्ति सकल क्षणभंगी *तिमि हमसब देखियबजरंगी॥
जिमि सीता सुधि भेषज आनी * तेहि प्रकार आनहु सुखदानी
सुनत वचन मारुतसुत बोला * राखहुचित थिर कटकअडोला॥
भुवन चारिदश तीनिहुँ लोका * आनहुँ प्रभुबलप्रभुतजु शोका ॥
अवतुम सजगरहेउ सब भाई * लरेहु कालसन जो चढ़िआई ॥
असकहि सकृतचलेउ हनुमाना * गर्जत प्रलय पयोधि समाना ॥
चलत बाट इक तरुवर गयऊ * गृध्रनि गृध्र कहत असभयऊ ॥
दोहा-नारिगर्भिणी गृध्रकर, बोली पतिसन बैन ॥
आनहु आमिष मनुजप्रिय, खाउँहोइ जियचैन ॥ १४३ ॥
तासुवचन सुनिखग असकहेऊ * अहिरावण रामहिं लै गयऊ ॥
देइहि बलि देविहि सो जाई * सो आमिष बड भागन पाई ॥
कवनेउ यत्न देब मैं आनी * असकहि विहँग वामसनमानी॥
जबहिं पवनसुत अस सुधिपाई * चलेउ तहाँ सुमिरत रघुराई ॥

१ चिन्ता । २ विभीषण । ३ कमल । ४ अग्नि । ५ औषधि । ६ मांस ।

अभयप्लवंग पतालहि गयऊ * अहिरावण पुर प्रविशत भयऊ॥
द्वारपाल मकरध्वज कीशा * कपिसन डाँटि कहत बहुरीशा॥
निदरिजातमोहिंतोहिंडरनाहीं * दीपहि जिमि न पतंग डराहीं॥
जानेसिमोहिंनमरुतसुतबालक * स्वामिभक्तभंजनमुखकालक॥
सो०-सुनत वचन हनुमान, बोलत भे विस्मय विवश॥
अरे मूढ अज्ञान, मोरे सुत स्वप्नेहु नहीं॥ १०॥
कहत वचन शठ संयुत खोरी * काम विवशकवभइमतिमोरी॥
ममसुनबनासि मूढ़ केहि काजा * इतना कहत तोहिं नहिं लाजा॥
केहिप्रकार तुममसुत भयऊ * निजउत्पातिमोसननकिनकहऊ॥
सुनत कहहि मकरध्वजवचना * किहेउ दाह रावणपुर रचना॥
जब आयोचलि उदधि समीपा * बहेउ स्वेद तब तनुकपिदीपा॥
सो प्रस्वेद सागरमहँ गयऊ * पिएउ मीन तेहिते मैं भयऊ॥
याहिप्रकार मैं तव सुत ताता * गोपहुँ नाहिं निज पितान माता॥
अहिरावणसेवा मैं करहूँ * राखहुँ द्वार न कबहूँ टरहूँ॥
दोहा-सत्यवचन हनुमान कहि, पुनि पूछी सब बात॥
लावा लक्ष्मण राम कहँ, कहा करत सो तात॥१४४॥
कहहु तात तेहि स्थल नाऊँ * जान चहौं मैं तव प्रभु ठाऊँ॥
यह वृत्तान्त न जानहुँ ताता * यह मैं श्रवण सुनेउँ कछुबाता॥
सीतापति अरुफणिपतिसाथा * सो लै आयउ निशिचरनाथा॥
करत होम तेहि कारण आजू * देविहि बलि देइ नृपराजू॥
जोकछुनिजश्रवणनसुनिपायउँ * तातसकलसो तुमहिंसुनायउ॥
निजप्रभुकाजलागिदुख सहेउँ * तुमसन सत्यवचन मैं कहेऊँ॥
जानकहहु तुम जान न देऊँ * प्रभु आज्ञा तजि अयशनलेऊँ॥
सुनि असपोलि चलेउहनुमाना * भयउक्रोध मकरध्वज जाना॥
दोहा-तेहि मुष्टिक कपि कहँ हनेउ, पुनि मारेउ कपि ताहिं॥
हनहिं परस्पर एक इक, बल समान घट नाहिं॥१४५॥

१ समुद्र। २ पसीना। ३ मछली। ४ हाल। ५ कानन।

एकहिं एक सकहिं नहिं पारी * पिता पुत्र दोऊ भट भारी ॥
सुतहि लूमसन बाँधि भवानी * चलेउवातसुत विलँब नआनी॥
धरि लघुरूप होम गृह देखा * जीव सजीव परै नहिं लेखा ॥
तहँ देवीकर मण्डप रहई * शोणित घट बहुकोकहिसकई॥
विविध भाँति मेवा पकवाना * धरे आनि देवी स्थाना ॥
मालिनि तहँ प्रसून लै आई *सुमन मध्य प्रविशेउ कपिराई॥
सुमनहुँते करि अति हलुकाई * लेत पाणि जेहि जानि नजाई॥
जब देविहि सो पुष्प चढायउ * विकटरूपतबकपिदिखरायउ॥
दोहा-छुवत चरण देवी तुरत, धरणी रही समाइ ॥
मुख बगारि ठाढे भये, कपि छबि लखत डराइ ॥१४६॥
देवी प्रकट समुझ खलझारी * करहिं विचारहृदयअतिभारी ॥
कहहिं कि देवि प्रगटभइ आजू* बडभागी भा निशिचरराजू ॥
करि प्रणाम पुनि पूजा करहीं * जो चढाव सोकपिमुख परहीं ॥
जो जहँ रही वस्तु समुदाई * बची नकछुकसकलकपिखाई॥
कपिखिलारि कौतुक विस्तारा * भाचह निशिचरकुल संहारा ॥
अहिरावण उर भा सुख कैसे * चले काँध पर बलिपशु जैसे ॥
जबहीं होम सिद्धि तेहि जाना * लक्ष्मण राम तुरत तहँ आना॥
ठाढ कीन्ह प्रभु कहँ तहँ आनी * निशिचरबहुआयुधधरिपानी ॥
कोऊ गदा कोउ धनु बाणा * शक्ति शूल धरि कोउकृपाणा॥
दोहा-तोमर मुद्गर परशु असि, पाश परिघ अरु बेत ॥
शूल भुशुण्डी पटि परशु, देखत बिसरत चेत ॥१४७॥
मायाबलते सकल विचक्षण * अतिविकारमयमूढकुलक्षण ॥
यहि विधि सकलवीरतहँ रहहीं * अहिरावण आज्ञा दृढ गहहीं ॥
आयसु पाइ खड्ग तिन काढे * मारन कहँ प्रभुपर भए ठाढे ॥
कोउ कह राजनीति अनुसरहू * भारित्रयदण्ड विलंबअबकरहू ॥
पुनि अस वचन मूढइमि कहहीं * सुमिरहुजोतुम्हरोहितुअहहीं ॥

१ जीति । २ पूछ । ३ अब-शस्त्र ।

नाहिंत काल आइ नियराना * निशास्वप्न सम दोउजन प्राना ॥
बोलहिं मूढ असम्भव बानी * सकुच लगै सो कहत भवानी ॥
दोहा-फणिपति चितवत रामतन, राम चितव अहिराज ॥
प्रभुकर कौतुक कहिय किमि, सुनो दशा खगराज ॥ १४८ ॥
बिहँसि कीन्ह प्रभु हृदयविचारा * जपै सकल जग नाम हमारा ॥
जाना देवि रूप हनुमाना * बिहँसि कहा तब राम सुजाना ॥
कालकौर तुम सुमिरहु रक्षक * भइ तुम्हारि देवि तुम भक्षक ॥
सुनत गिरा तिन मारन ठयऊ * घन समान कपि गर्जत भयऊ ॥
निशिचर सकल त्रासित भेभारी * कहहिंवचनभयहृदयविचारी ॥
अहिरावण भल कीन्ह न काजू * आने कपटवेष सुरराजू ॥
तेहिते देवि क्रुद्ध भइ आजू * अब भा सबकर मरण समाजू ॥
संभ्रम वश तब निशिचर झारी * बहुरि कीश गर्जेउ अति भारी ॥
दोहा-प्रगटरूप करि पवनसुत, अट्टहास गम्भीर ॥
अतिभय त्रासित रजनिचर, सुनहु उमा मतिधीर ॥ १४९ ॥
डगमगानानिशिचर अभिमानी * मारुतवेग यथा नदिपानी ॥
तेहि क्षण कपिलीन्हें दौड भाई * धुनत तूल निशिचर समुदाई ॥
छीन कृपाण लीन्ह हनुमाना * काटत भुज शिर कूष्मी समाना ॥
खण्ड खण्ड तब खलदल कीन्हा * गहिपदडारिअनलमहँ दीन्हा ॥
करि लंगूर कोट कपिराई * तेहि महँ घिरि कोउ भागि नजाई
इहि विधि सब निशिचर संहारे * अहिरावण लखि वचन उचारे ॥
रेकपि ढीठ त्रास नहिं तोहीं * अहिरावण तैं जान नमोहीं ॥
जम्बुमालि कहँ जिमि तैं मारा * अरु रावणसुत हतेउ बिचारा ॥
दोहा-कालनेमि सम नाहिं मैं, करु कपि वचन प्रमान ॥
असकहि खड्ग प्रहार किय, कपितनुवज्रसमान ॥ १५० ॥
लै असि ताहि पवन सुत मारा * काटि शीश पावकमहँ डारा ॥
आहुति पूर्ण दीन्ह तब कीशा * लै पुनि चलेउ लषण जगदीशा ॥

१ लक्ष्मणजी । २ चरित । ३ गरुड । ४ वाणी । ५ मेघ । ६ शोक-संदेह । ७ रुई । ८ खेती । ९ अग्नि । १० तलवार ।

मकरध्वज विनती तब कीन्हा *बन्धन छोरि राज्य तेहि दीन्हा॥
इहाँ राज्य भोगहु तुम ताता * भजहु सदा मम प्रभु दोउभ्राता
अस कहिकपि निजदलसो आवा* हर्षेउकटक सबनि सुखपावा॥
मृतकशरीर प्राण जिमि आवहिं*गइमणिपाइफणी[1] सुख पावहिं॥
बिछुरि अलभ्य मिले जनु आई*तिमि हर्षे सब लखि दोउभाई॥
मिलेउ कपीश चरणधरि माथा* पुनि पद गहे निशाचर नाथा॥
दोहा-जाम्बवन्त अंगद सहित, मिले भालु अरु कीश॥
सन्माने कहि वचन प्रिय, लषण कोशलाधीश॥ १५१॥
बहुरि सबहिं भेंटे हनुमाना * कहहिं तात तुम राखे प्राना॥
देवन सुमन वृष्टि तब कीन्ही * प्रमुदित हृदय दुन्दुभीदीन्ही॥
अनुज सहित हर्षित रघुवीरा * कहेउ वचन सुनु तनयसमीरा॥
तव समान नहिं कोउ हितकारी* सुरमुनिसिद्ध मनुज तनुधारी॥
यशतुम्हार त्रिभुवनमहँ भयऊ *सुनिप्रभुवचनचरणकपिनयऊ॥
नाथकीन्ह सब मैं कहिलेखे * तरणी[2] चलत अगम जल देखे॥
तैसे सब प्रताप तव नाथा * सुनिअसमिलेकपिहि रघुनाथा
कटक सहित हर्षे दोउ भाई * तेहिअवसरसुखकिमिकहिजाई
छंद-कहिजाइसुखकिमितेहिसमयकरसुनहुगिरिजाचितधरे॥
रघुवीर रुख अवलोकि हर्षत आरती सुरगण करे॥
अति प्रेमसों मारुतसुवन यश गाइ विबुधन असकहा॥
नर नारि यह कीरति सुनत गावत लहत मंगलमहा॥१०॥
दोहा-करि बहुविधि हरि आरती, वाणी सत्य सुनाय॥
रामचरण अनुरागेउ, अमर सुमन झरिलाय॥ १५२॥
देवानिडर प्रभु गुणगण गावहिं *आरत हरकहँ विनय सुनावहिं॥
विबुध विनयरघुपतिसुनिकाना* कहप्रभुसत्यासिन्धु भगवाना॥
चतुरानन[3] वर दीन्ह अपेला *तेहिं कारण यह बाढ्यो खेला॥
नाहित लषण एक पल माहीं * राखत यातुधान कुलनाहीं॥

१ सर्प। २ नौका। ३ ब्रह्मा।

अजहुँ होय रण कौतुक भारी *निरखहु तुमसब शोचविसारी ॥
अब जो रहेउ निशाचर शेषा *भटमहँ आसु भुजाकर रेखा ॥
तेहि रण माहि महँ हतहुँ प्रचारी * बिनु श्रम सबसों कहतखरारी॥
शंभुकृपा अब संशय नाहीं * सुनि सुर अति हर्षे मनमाहीं॥
"दोहा-सत्यवचन सुनि रामके, आनन्दित सुरयूहं ॥
चले कहत जय जयति प्रभु, वर्षें सुमन समूह ॥
यह चरित्र शुचि सुभग सुहावा * खगपति राम कृपा मैं गावा ॥
अब हिय हर्षि सुनहु द्विजराई * मानस कहहुँ सुमिरि रघुराई॥
याज्ञवल्क्य पद वन्दि सप्रीती * भरद्वाज बोले शुचि नीती ॥
यह चरित्र अति रुचिरसुहावा *सुनि ममनाथ परमसुखपावा॥
अहिरावण वधान्त भगवाना * चरित किये सो करहुबखाना॥
सुनिमुनि विनयऋषय पुलकाई * बोले हृदय सुमिरि गिरिराई ॥
प्रश्न तुम्हार तात अति पावन * सहजसुभग सज्जनमनभावन ॥
मानस हरि चरित्र सुठि नीका *सुनतकरत जो कोउ मनफीका॥
दोहा-सोइ जगवंचक सुनहु मुनि, जेहि मानस न सुहाय ॥
भवसागरमहँ भ्रमत सो, अमितकल्प चलिजाय ॥
मानस सुनत न मनहिं अघाहीं * तासम धन्य अवर कोउनाहीं ॥
धन्य धन्य तुमसन कोउ आना * ललितचरितअतिसुनहुसुजाना
राम लषण दलसहित विराजे * जयति रामकहिकपिगणगाजे॥
राम सैन सुखमा अधिकाई * निगमागम जानेउ बुध भाई॥
वहाँ दशानन सब सुधि पाई * दूत सँदेश दीन्ह सब जाई ॥
अहिरावण कर वध[2] सुनि काना* भयउ तेजहत अतिदुखमाना॥
वचन वज्र सम लागेउ ताही * संभ्रम मूर्च्छि परेउ महिमाहीं॥
कटे पंख जिमि विहँग[3] विहाला * रंगचीरगति निशिहिम काला॥
मुख सुखान लोचन जल बहई * वचन न आव शीशधुनिरहई ॥
दोहा-मयतनया[4] तब आइ पुनि, बहु प्रकार समुझाइ ॥

१ देवगण । २ मरण । ३ पक्षी । ४ मन्दोदरी ।

मान न मूरख कालवश, परमक्रोध कहँ पाइ ॥
नारि वचन सुनि तेहि रिसबाढ़ी * उठि बैठेउ धरि धीरज गाढ़ी ॥
तेहि अवसर मंत्री इक आवा * करि आदर दशमुख बैठावा ॥
सिन्धुरनाद नाम बलवाना * वृद्ध ज्ञानमय परमसुजाना ॥
सदा विभीषण कर सँग ठयऊ * कबहूँ दशमुख सभानगयऊ ॥
आवा सो भल अवसर पाई * कहेसि नीति रावणहिं बुझाई ॥
ज्ञानकथा दशमुख न सुहानी * तब आहिराइ बात कह आनी ॥
करिवर नाद हृदय असगुनेऊ * प्रभु दुहुँ लाग हृदय पट बुनेऊ॥
अब यहि कहौं सो सहजउपाई * जेहि यह मूल समूलनशाई" ॥
दोहा-यह विचारि बोलेउ सचिव, सुनहु दनुजकुलराउ ॥
धीर धरहु संशय विगत, कहहुँ सो करिय उपाउ ॥ १५३॥

नरांतकका संग्राम.

अक्षादिकन सुनत बल दूना * कस सुरारि मन मानहु ऊना॥
सचिववचन सुनिदशमुखकहई *अब हमरे कुल को भट अहई॥
अपने मनमहँ करहु विचारा * हैनारान्तक तनय तुम्हारा ॥
मूल अमुक्त माहिं भा जोई * दियो बहाइ मरा नाहिं सोई ॥
शम्भुप्रसाद ताहि कछु भयऊ * पुर निहवावल नृप ता दयऊ ॥
कोटिबहत्तर एक प्रभाऊ * राजा प्रजा भेद नाहिं काऊ ॥
दूत पठाय बुलावहु ताही * जीतिहिसो रिपु रणके माही ॥
दनुज अधीश चतुर चर पठवौ * धरहु धीर चित चिंता घटवौ ॥
दोहा-तासु मंत्र सुनि दशवदन, हृदय प्रमोद अमान ॥
धूम्रकेतु कहँ बोलि ढिग, समुझायउसनमानि ॥ १५४ ॥
धूम्रकेतु तुम परम सयाना * लै ममपाती करहु पयाना ॥
वसत जहाँ नारान्तक राजा * तहाँ न तात अवरकर काजा॥
अवसर पाइ हेतु समुझाई * सपदि ताहि लै आनौ भाई ॥
आयसु पाइ चारु तहँ गवना *यहसुनिविहँसिकहेउअहिदवना

१ संदेह । २ योद्धा । ३ अत्यंतप्रसन्न ।

काकनाथ यह गाथ सुहाई * मोसन तात कहहु समुझाई ॥
नारान्तक उत्पत्ति यथाविधि * पुर विहवावल गा कवनीसिधि॥
सुमिरिकाकपति उर अवधेशा * मनप्रसन्न कर कह काकेशा ॥
अति सुन्दर शुचि यह संवादू * चित थिर करि सुनियेउरगादू ॥
दोहा--नख चौगुण वसु ऊन तहँ, सत्त अकाश मिलाइ ॥
इतने निशिचर एक दिन, मे रावणपुर आइ ॥ १५५ ॥
पुरमहँ उपजे खल इक साथा * तब सुनि हर्षा निशिचर नाथा॥
निजगुरु बोलि चरण शिरनाई * बूझा मुदित सो कलश धराई ॥
भृगुनन्दन तब तेहिसन कहेऊ * आजु बाल सब मूलन भयऊ ॥
सत्य कहत दशमुख तुमपाहीं * भये आजु जे तव पुर माहीं ॥
तेसुत सब निजनिजपितुघाती * मुख देखत सुन सुर आराती ॥
घर राखे धनसहित विनाशा *होइ अवशि नाहिं उबरन आशा ॥
शुक्र वचन सुनि डरे निशाचर * कह करिये अति वाद परस्पर॥
निश्चय कीन्ह प्रसव शिशुआजू *सौंपिय सिन्धुहिं और न काजू॥
दोहा-सर्पादि करहु सबकाजयह, लावहु बाल बटोर ॥
राखे होई हानि अति, कह दशवदन बहोर ॥१५६॥
सेवक दशमुख आयसु पाई * धाये तुरत चरण शिरनाई ॥
रावण आयसु नगर पुकारी *सुनहु सकल पुर नर अरु नारी॥
आज अभुक्तमूल भये बालक * डारहु सागर सब कुलघालक ॥
बौरे सबनि बाल इकठाई * भावीवश मधुमाखी नाई ॥
पाय अधार वृक्ष वट बोरा * पावन लगे क्षीर चहुँ ओरा ॥
पीवत क्षीर अब्द भर साती * पुष्ट भये खल निशिचर जाती ॥
पुनि सब एक संग तहँ जाई * सुरसरि संगम भा जेहि ठाई ॥
तहँ शिव मन्दिर परमसुहावा * सबनिविलोकिमुदितशिरनावा
छंद-शिरनाइ मुदित विलोकि शिव मंदिर सुहावन पावनम् ॥
कछु दिन रहे तहँ सकल पुनि उठिचले सुन अहिदावनम् ॥

१ गरुड़ । २ बैरी । ३ बालक । ४ शीघ्र । ५ आज्ञा । ६ दूध ।

रावणपुरी ते दिशाप्राची कोश शतरस चलिगये ॥
बैठे जलधिमहँ पाइ थल वर शंभु चरणनचितदये ॥२१॥
दोहा-जानत नाहिं उत्पत्ति निज, मनमहँ करत विचार ॥
गेतेहि ढिग चाकर विदित, रविते छठवीं बार ॥१५७॥
हरिअरिगुरुनिजशिष्यनचीन्हा* करतप्रणाम आशिषादीन्हा ॥
कहिनिजनाम सबनिसमुझावा* कुलगुरु जाना विनय सुनावा ॥
निज उत्पति बूझी शिरनाई * भृगुनन्दनसों सकल सुनाई ॥
सुनत अपन वृत्तान्त लजाने *लखिरुख भृगुनायक सन्माने ॥
करा प्रतोष मंत्र गुरुदीन्हा * शिक्षा पाइ गमन तिन कीन्हा ॥
ज्ञान लहेउ सब संशयत्यागी * भे विरंचि पद सब अनुरागी ॥
निराहार बैठे इक आसन * वर्ष सहस तप कियउरगासन ॥
श्वास धार कृत वर्ष हजारा * रहे ऊर्ध्व मुख विना अहारा ॥
दोहा-एकपाद पुहुमी दये, अपर अंग अनयास ॥
सबल पुष्टतनु मन हरष, स्वप्नेहु भूँख न प्यास ॥१५८॥
तप अतिउग्र विचार विधाता * तिन ढिग गमने मुखमुसकाता ॥
हंसारूढ कमंडलु हाथे * श्वेत मुकुट शुचि चारिउ माथे ॥
आनन चारि नयन वसु नीके * चारिउ भाल भस्म शुभटीके ॥
उपमामय प्रभु सब जगअयना* भाष्यो दयासदन वरवयना ॥
माँगहु वर जो सब मनभावा * सुनेउसबनिविधिपदशिरनावा ॥
नाथ चहत हम यह वरदाना * हमहिं न कोउ जीतै मैदाना ॥
एवमस्तु विधि कहेउ विचारी * आनपाणि नहिं मृत्यु तुम्हारी ॥
न किहेउनकबहुँ लराई ॥
दोहा-जो तेहिसन करिहौ समर, मरिहौ वचन प्रमान ॥
पानिधान ॥१५९॥
दियउ नरांतक कहँ वरदाना र उर ध्याना
तिनसन वरंभ्रा

१ पूर्व । २ शुक्र । ३ शत्रु । ४ समाधान । ५ पृथ्वी । ६ कठिन । ७ दधिबल । ८ हर्ष

सुनिविधिगिरासबानिकहस्वामी * देहुँ एक वर अन्तर्यामी ॥
देवासुर संग्रामहि माहा * जीतहिं हम यह वर सुरनाहा ॥
असकहि रहे दनुज शिरनाई * तिनसन कहेउ विरंचि बुझाई॥
तुम अजीत सब सन सब भाँती * वानर भालु त्यागि दुइ जाती॥
यहि विधि सब कहँदै वरदाना * ब्रह्मलोक गये ब्रह्म सुजाना ॥
विधितै लहि वर तिन सुख बाढा * लागे करन बहुरि तप गाढा ॥
दोहा–गिरा गिरीश समेत सब, जपहिं निरन्तर नाम ॥
जोरि युगल कर एक पद, निशिदिन आठौ याम ॥१६०॥
विनु प्रयास ठाढे सब भाई * क्षुधा[1] तृषा[2] निद्रा बिसराई ॥
गुण सहस्र संवत सब ऐसे * गये बीति प्रथमहिं तप जैसे ॥
सबन शीश पुनि अवनी दीन्हा * उभय चरण ऊरध कहँ कीन्हा॥
जोरेकर निरोध कर श्वासा * जपहिं मंत्र शंकर वर आसा ॥
मुनिगण तिनकर साधन देखी * मन महँ मानतसकुच विशेषी॥
हरिइच्छा बल हृदय विचारी * निरखिचले मुनि जपत पुरारी॥
अयुत अब्द बीते खगनायक * भे प्रसन्न शिव जनसुखदायक॥
चढे वरद[3] हिमसुता[4] समेता * आये तिनतट कृपानिकेता ॥
दोहा–बोले तिनहिं प्रशंसि शिव, माँगहु वर मन भाव ॥
नारान्तक करि दण्डवत, बोला सुन सुरराव ॥ १६१ ॥
मैं तप कीन्ह दरश तव लागी * नाथदीन जनचित अनुरागी ॥
अब माँगत आवत मोहिं लाजा * ठाढरहा कहि निशिचरराजा ॥
माँगु सकुचतजिअसहर कहेऊ * नारांतक तब माँगत भयऊ ॥
मोहिं विभव[5] अस देहु गुसाँई * भूप प्रजा नहिं परहुँ लखाई ॥
पुर अनयास[6] सबहिं ममनाथा * यह कहिं रहा जोरि युगहाथा ॥
एवमस्तु कहि हर सुर ईशा * गवने भवन सहित वागीशा ॥
शिवप्रसाद नारांतक पावा * अंतरिक्षपुर सपदि बसावा ॥
पुर विहवावलकी रुचिराई * कहत कछू क तुमसन गाई ॥

१ भूख । २ पियास । ३ बैल । ४ पार्वती । ५ ऐश्वर्य । ६ बेपरिश्रम ।

दोहा-ऋतु रवि दूने कोटिसो, भवन बसे इक ठोर ॥
जातरूप मय नग जडित, अति शोभित चहुँ ओर॥१६२॥
योजन ढाई शत चकलाई * चौंसठ कोस उतंग सुहाई ॥
दुर्गम दुर्ग जलधि चहुँ फेरा * विस्मय विश्वकर्म्म मन घेरा ॥
चारि दुवार कुलिश पट रूरे * गढ भीतर चौहट निधि पुरे ॥
वणिक पद्म धन तुच्छबखाना * वन उपवन सरिता सर नाना ॥
वसत प्रजा पुर सवन अपारा * नारातक गढ मध्य सँभारा ॥
षोडशकोश कोट चहुँ ओरा * मणि माणिक लागे नहिं थोरा॥
हय गज रथ खच्चर समुदाई * कहिनजाइ खग मृग विपुलाई॥
कोटि बहत्तर एकै साथा * विद्या पढन लगे खगनाथा ॥
दोहा-हरि प्रेरित तेहि काल महँ, दधि बल पहुँचा आय ॥
पुर विह्वावल निरखिसो, कछुदिनरहा लुभाय ॥ १६३ ॥
भावीवश निशिचर सँग कीड़ा * वर्ष एक पढ सुनहु मुनीशा ॥
गुरु इकबार कहेउ रिसियाई * हतिहँसितैं आपन गुरुभाई॥
विनु अघ[2] सुनिदधिबलगुणशापा* विदा माँगि गमना करिदापा[3] ॥
मारग मिले देवऋषि तेही * गहे सुकंठ सुवन पग नेही ॥
लखि अशीश दै बूझा तेही * दधिबल कवन काजगएजेही॥
तब नारांतकपुर प्रभुताई * दधिबल नारदमुनिहि सुनाई ॥
सुनी निशाचर संपति भारी * रहे ब्रह्मसुत हृदय विचारी ॥
क्षणक देवऋषि कीन्ह गुमाना * बार बार सुमिरे भगवाना ॥
दोहा-दधिबलते नारद कहेउ, सुनहु तात चितलाइ ॥
तनु धरि जेहि हरिभक्ति नहिं, जन्मवादिजगजाइ ॥ १६४ ॥
यह विचारि भजु रामहिं ताता * उपजेउ सुनत ज्ञानमुनिबाता॥
ऋषि पद परशि आशिषा पाई * कपिपति सुत गमने हर्षाई ॥
सपदि कीश तव पहुँचा जहँवाँ * पयोनिधिमध्यरुचिरगिरितहँवाँ
धवलागिरि तेहि नाम सुहावा * सुभग देखि कपिवर मनभावा॥

१ नारान्तक । २ पाप । ३ क्रोध । ४ नारद । ५ सुग्रीवसुत दधिबल । ६ वृथा । ७क्षीरसागर ।

गौरि गिरीश सुमिरि गणराई * कीन्ह निवास बैठ हरषाई ॥
नारदताहि देइ उपदेशा * गये विरंचिहि धाम खगेशा ॥
उत दशमुखसुत विद्यापाई * जहाँतहाँकी विविध लराई ॥
बिन्दुनामइक निशिचरआहा * सो खल रहा वितलथलमाहा ॥
सो०-अति रणधीर जुझार, चढे शक्रपर बलिविपुल ॥
कीन्हेउ समर अपार, अब्द एक श्रुति सन्त कह ॥ ११ ॥
सप्तकोटि निशिचर सँग ताके *असित मेरु सम खल भटबाँके॥
सुनासीर कोपेउ इक बारा * सब कहँ समर मध्य संहारा ॥
भाजि बिन्दु केवल गृह गयऊ * तासु नारिनिशिचर सुखदयऊ॥
सब निशि भोगकरा खल पापी * उपजे बहु बालक परतापी ॥
सप्तकोटि सुत नाना नामा * सुन्दर वंक सकल बलधामा ॥
कोटि बहत्तर तनया जाके * लाजहिं मृगलोचन लखिताके ॥
तिनमहँ बिन्दुमती इक सुन्दरि * नभचारिनि रतिरूप निरन्तरि॥
निरखि बिन्दुनिजमनअनुमाना* नाहिनारांतकसमकोउ आना ॥
दोहा-यह विचारि चितबिन्दु तब, नारान्तकहि बुलाइ ॥
बिन्दुमती आदिक सुता, सुन्दर साज सजाइ ॥ १६५ ॥
सकल सुता इक संग विवाहीं *यथायोग्य जेहि कहँ जसचाहीं॥
नारांतक सबसेन समेता * करिविवाह फिरगयउ निकेता[3] ॥
पुर विहवावल कीन्हबसेरा * प्रजासहित सुख करत घनेरा॥
जोतिय चहिय विबुध गृह भाई * सो भावीवश निशिचर पाई ॥
नारि पतिव्रत जेहिघरमाहीं * तेहि प्रतापनिज अमरडराहीं ॥
बिन्दुमती विद्या समताता * बुधजनसभा चरित विख्याता ॥
नारांतक उत्पति मैं गावा *सुन खगेश पुनि चरित सुहावा॥
पुनि पुनि हरि हर पद शिरनाई* गुरुसन सुनेउँ सो कहेउँ बुझाई
दोहा-चारन दशमुखको तुरत, मगचालि पहुँचो जाय ॥
ग्रामान्तर योजन युगल, ठाढ भयउ हर्षाय ॥ १६६ ॥

१ इन्द्र । २ ढेठा । ३ घर ।

तेहि मारुतदिशि कानन भारी * पर्णलेत देखेउ तहँ बारी ॥
सकुचि समीप जाइ भा ठाढा * बूझेसि ताहि धीर धरि गाढा ॥
कवन रीति यहि पुर महँ भाई * तरुपर चढत भूपसुतआई ॥
चार वचन सुनि सो मुसकाना * कवन नगर तुम बसत अयाना ॥
नारांतक नृपकै यह बारी * तेहिकर सेवक मैं लघुचारी ॥
धूम्रकेतु तेहि उतर न दीन्हा * कछुडरि पुनिनिजमारगलीन्हा ॥
लिये कनकघट सुखमा पूरी * बारिलेन आई तियरूरी ॥
देखि भयउ तेहि संशय भारी * बूझा सत्य कहहु सुकुमारी ॥
दोहा--तुम्हरे पुर कह चोरि नहिं, रानी कहहु स्वभाव ॥
आइउ तुम जलभरन कहँ, बोलेउ त्याग डराव ॥ १६७ ॥
दूतवचन सुनि निशिचर चरी * बोली हँसि करि एकहि बेरी ॥
नारातक दासिनकी दासी * हम ताकी दासी विश्वासी ॥
सदा भरैं यहि सागर पानी * यहँ आवहिं केहि कारणरानी ॥
कहिहउ और काहु अस बाता * पैहहु मार मुष्टिका लाता ॥
असकहि गवनी लै जल नारी * तिनसँग धूम्रकेतु पगधारी ॥
गढभीतर कीन्हेसि पैसारी * निरखे बिपुल कूप सर बारी ॥
नाना गज रथ खच्चर घोरा * फिरत बिलोकत पुर चहुँ ओरा ॥
अन्तगढ तेहि चारि दुवारा * तहाँ न चर पावहिं पैसारा ॥
छंद--पावत नहीं पैसार चरगति द्वारलगि फिरि आयऊ ।
यहि भाँति रावण दूत घटिका युगल दिवस गँवायऊ ॥
मनमहँ बिसूरत ठाढ़ चौहट मध्यसो जब रहि गयो ।
निशिचर निकंदन होनलागि विधितेहिइकअवसरदयो १२ ॥
सो०--गमने भूपति द्वार, नृत्य करन इक कौतुकी ॥
लीन्ह धार तेहिं मार, गढ इमि कीन्ह प्रवेश चर ॥ १२ ॥
बैठेउ सभा नारातक जाई * कोटि बहत्तर संयुत भाई ॥
व्योम तीनि रसगुण वसु एका * अंकरीति लिखि गुणी विवेका ॥

१ वृक्ष । २ स्वर्णकलश । ३ बहुत । ४ तालाब । ५ देखत । ६ नाश । ७ ब्रह्मा । ८ नट--विशेष तमाशा करनेवाले ।

बन्दीजन नट कौतुक करहीं *प्रतिदिन कविकोविद उच्चरहीं॥
रावण दूत सभा सो देखी * मनमहँ चकृत भयो विशेषी ॥
तब चारण मन अस अनुमाना * कोटि बहत्तर रूप न आना ॥
भूषण वसन सुआसन ओहा * देखि सुखद चारण मनमोहा ॥
याम दिवसगत अवसर पावा * नारांतककहँ शीश नवावा ॥
दीन्ह पत्रिका पद शिरनाई * कुशल तासु बूझी हर्षाई ॥
दोहा--नारांतक निज कुशल कहि, बूझा दशमुख हेतु ॥
समाचार गढ़ लंककर, वर्णेउ दूत सचेतु ॥ १६८ ॥
चरभाषित नारान्तक सुनेऊ *क्षणकमाहिं निजकारण गुनेऊ॥
पुनि पत्री निशिचरपति बाँची * मानी चार बात सब साँची ॥
उठ्यो सभाते हृदय रिसाई * गा निजभवन शोच[1] सरसाई ॥
बिन्दुमती कहँ बाँचि सुनाई * पितुपर भीर पत्रिका आई ॥
समाचार सुनि कह तेइ नारी * तुम जनि करहु रामसन रारी ॥
गहहु चरण पिय अकसर जाई *रसन सफलकरि विनयसुनाई॥
माँगि भक्ति वरप्रेम दृढ़ाई * निर्भय राज्य करहु गृह आई ॥
नारिवचन तेहि मनहिं न भावा * तब उठि कोटद्वार खलआवा ॥
दोहा–कहत बजाव निशान घन, सजहु सेन चतुरंग ॥
जन्मभूमि जावा चहहुँ, पितु चारनके संग ॥ १६९ ॥
आयसु दीन्ह नरान्तक राजा * लगे निशाचर सजन समाजा ॥
अमित वाजि[3] गज[4] उष्टर नाना * रथ खच्चर खेचर बहु याना ॥
नाना अस्त्र शस्त्र गहिपानी * निशिचरअनी[5] नजाइबखानी ॥
जय सब संयुत साज सजाई * विविध निशान हने हर्षाई ॥
कन्त जात निश्चय जियजानी * बिंदुमतीनिजचित
राम विरोध न यहि कल्याना * महूँ संग अब कर
भूषण वसन सुअंग बना

१ निदान । २ अधिक । ३ घोड़ा । ४ हाथी । ५ सेना

दोहा-दशमुखसुत सुनि तियवचन, हृदयपरमसुखमानि ॥
कहेउचलहु सबसखिनसह, प्रभुहितछाँड़ि गलानि॥ १७० ॥
सुनि पति वचन नारि हर्षानी * चली संग ले सखी सयानी ॥
ले दल नारान्तक पग धारा * अमितसेनको कहिसकपारा ॥
बुधजन कहत सुनहु खगराजा * अयुत[1] सतावन बाजत बाजा ॥
धूम्रकेतु कहँ ढिग सँग लीन्हें * अतिआतुर गमना रिसकीन्हें ॥
चलत शकुन मग ताहि न होई * गनइ न मृत्यु विवश शठसोई ॥
तासु पयान जानि दिगपाला * जियमहँ संशय करत विशाला ॥
कोल कूर्म अहिपति[2] अतिडरहीं * पुनि पुनि रामचरणचितधरहीं ॥
समुझि रामबल संशय त्यागी * सुर दिगेश प्रभुपद अनुरागी ॥
दोहा-नारान्तक लंका तुरत, दल समेत नियरान ॥
दिग योजन दल रहेउ जब, सुनु मुनीशसज्ञान ॥ १७१ ॥
इहाँ कृपालु रमेश खरारी * असित जलदसमसेननिहारी ॥
प्रभु सर्वज्ञ नीति हित सेतू * सचिव बोलिकह रघुकुलकेतू ॥
सखा विलोकहु दक्षिण ओरा * गर्जत घन आवतनाहिं थोरा ॥
उमा राम सब अन्तर्यामी * चरित हेतु बूझा अस स्वामी ॥
रामवचन सुनि दशमुख भ्राता * कहहँसि गहिप्रभुपदजलजाता ॥
देव देव नाहिं दल जलवाहा * अहहि नरान्तक निशिचरनाहा
विहवावल पुर वसत गुसाँई * पठवा तेहि दशकन्ध बुलाई ॥
आवत धूम्रकेतु चर संगा * करत कुलाहल[3] नाद उतंगा ॥
दोहा-तेहिसँग गुणीअनेक प्रभु, गावत हनत निशान ॥
सेन संग चतुरंग[4] खल, डोलत विविध निशान ॥ १७२ ॥
यह प्रभाव तेहि सुनि भगवाना * विहँसे प्रभु बल बुद्धिनिधाना ॥
पाइ राम रुख पवनकुमारा * उठे हर्षि हिय गर्जि प्रचारा ॥
सहित लषण प्रभुपद शिरनाई * धाये कहि जय जय रघुराई ॥
वातजात निशिचर समुदाई * देखि सपदि ढिग पहुँचे जाई ॥

१ सत्तावनहजार । २ शेषनाग । ३ हल्ला । ४ रथारूढ़, गजारूढ़, अश्वारूढ़, पदचर

कटकटाइ गर्जै अति भारी * देखे इमि आवत वनचारी ॥
बूझेउ दूतहि निशिचर त्राता * यह आवत धावत को भ्राता ॥
स्वर्ण शैल विकराल शरीरा * गर्जत प्रलय जलद सम वीरा ॥
तब नारान्तक सन कह दूता * यहै पवनसुत बली अकूता ॥
दोहा–सिन्धु लाँघि लंकहि दहेसि, पुनि हति अक्षकुमार ॥
कालनेमि कहँ मारिमग, लावा मेरु उपार ॥१७३॥
पुनि अहिरावण सह परिवारा * पैठि पताल सदल संहारा ॥
लै आवा तापस दोउ भाई * आवत अब तव ढिगसोइ धाई॥
यहिकर भुजबल अहै अपारा * सुनि रिसान दशकण्ठकुमारा ॥
चाप चढ़ाइ सुधारेसि बाना * तजन न पाव गहेउ हनुमाना ॥
सो शर धनुष तोरि कपि डारा* पुनि रिसाय उर मुष्टिक मारा ॥
परा दशानन सुत महि कैसे * मिश्र रसातलगे गिरि जैसे ॥
पवनपूत बल लूम पसारा * कोटिन रथ गहि तापर डारा ॥
रथ सारथी चूर्णसम भयऊ * विधिवश तेहिकर प्राणनगयऊ।
दोहा–एकदण्ड अति विकल खल, रह भूतल धुनि माथ ॥
पुनि शठ उठा सँभारि तनु, धायउ धनु धरि हाथ ॥१७४॥
छाँडेसि अगणितसायक कोपी * क्षण इक कीश कटक गा तोपी॥
रामप्रताप प्रभंजन जाया * करगहि अरिशर तोरिबहाया ॥
देखि पवनसुतकी प्रभुताई * वर्षत सुमन विबुध झरिलाई ॥
जय जय पिंगलाक्षसुरभाषा * सुनि दशकन्धतनयमनमाषा॥
नारान्तक अति हृदय रिसाई * कपि तट पहुँचा आतुर धाई ॥
कहकलकीश जोकछुबल धरहू * मोसन मल्लयुद्ध रण करहू ॥
गावहिं विबुध तोर भुजजोरा * निजउर सहुइक मुष्टिकमोरा ॥
लागत ठाढ रहै जो वानर * तौ जानहुँ तव भुजबल आगर॥
सो०–हरि सुनि ताकर बात, रामदूत रिसि रोंकि उर ॥
अति सकोप मुसक्यात, क्षणक ठाढ सम्मुख रहेउ॥१३॥

तबतेहि कपिकहँ मुष्टिकमारा * भयउ ताडित समशब्दअपारा॥
टरा न तहँते पग हनुमाना * हृदय न निशिचरनेकुलजाना॥
दुइ मुष्टिक तेइँ फारि चलावा * तब मारुतसुत कोप बढ़ावा॥
किलकिलाय लंगूर लपेटा * डारि भूमि तिन दीन्ह चपेटा॥
विकलताहिकारि कपिअतिगाजे * भेव्याकुलनिशिचरबहु भाजे॥
कोटिन निशिचरकपिकरगहहीं * रामदूत कर कौतुक अहहीं॥
मर्दि मर्दि बहु वारिधि डारे * देखि देव जय जयति पकारे॥
एकदंड गत निशिचर जागा * बहुविधि समरकरनसो लागा॥
छंद-लागेउ करन पुनि समर बहुविधि निजसुभट बहु फारिकै।
खल कोटि कोटि प्रचंड नायक कपिहि रणमहँ घेरिकै॥
रणरंग रंजित वीर मारुतपूत पुनि पुनि गर्जहीं।
गहि गहि विपुल दनुजहिं पछारतउरविदारत तर्जहीं॥१२॥
दोहा-सघनबाहिनी जलज वन, जिमि करिकृत उत्पात॥
रिपुन हनततिमि वायुसुत, विनुश्रमप्रमुदितगात॥१७५॥
करत समर आयउ तेहि ठामा * जहँ नित होत रहा संग्रामा॥
लरत अकेल तहाँ हनुमाना * धायउ वालितनय बलवाना॥
ता पाछे कपि चमू अपारा * चले कहत जय कृपाअगारा॥
लीन्हें गिरिवर तरु पाषाना * जहँ तहँ करन लगे मैदाना॥
अंगद आइ पवनसुत पाहाँ * कहिजयरघुवरसन द्विजनाहाँ॥
दोऊ भट इकसँग करि हूहा * हतनलगे अरिसेन समूहा॥
देखत भालु कीशकृतमारी * भागिचले निशिचर भयभारी॥
देखि अनी निज त्रासित बहूता * भा अति कुपितदशाननपूता॥
छंद-अति कुपितभादशमुखसुवननिजभटनशपथादिवाइकै।
फेरेउ सबनि करि कोप बोला जात कहहु पराइकै॥
विधिदीन विविध अहार कपि दल खात कस न अघाइकै।
विनु भालु कपि महि करहु पुनि हठ धरहु तापस धाइकै १४

१ फारत। २ गर्जहिं। ३ हनुमान्। ४ तनु। ५ युद्ध। ६ कृपाके स्थान।

दोहा-सुनि नारान्तक सरुष वच, रजनीचर समुदाय ॥
लागे लरन सकोप सब, माया कपट कुभाय ॥ १७६ ॥
मायातिमिर[1] पसार अपारा * अस्त्र शस्त्र बहु भाँति प्रहारा ॥
शक्ति शूल वर विशिखकराला * डारहिं रज तरु शैल विशाला ॥
गिरतऋच्छकपिलागतसायक *उठहिंबहुरिकहिजयरघुनायक॥
निजदलविकलविलोकिखरारी * सत्यासिंधु इकसर संचारी ॥
रिपु शर काटि तिमिरकर दूरी* प्रभु शर हते निशाचर भूरी ॥
हरि निषंग[2]महँ पुनि सो तीरा * प्रविशेउ आइ सुनहु मुनिधीरा॥
निरखि प्रकाश भालु अरुकीशा*गहिगिरि[3]तरु[4]कहिजयजगदीशा॥
निशिचर अनी मध्यगे जबहीं * दिये डारि गिरि रज तरु तबहीं
दोहा-मरे तमीचर[5] कोटि षट, जानि निशा[6] परिवेश ॥
दलयुत अंगद पवनसुत, चले जहाँ अवधेश ॥ १७७ ॥
अंगद हनुमदादि कपि भालू * आये जहँ रघुवीर कृपालू ॥
प्रभुहि विलोकि चरण शिरधरे * भे श्रमरहित सकल सुखभरे ॥
अतिआदर प्रभुकिय सन्माना * सब कहँ बैठन कह भगवाना ॥
पुनि रजाइ[7] लै थलनि सिधाये * छबिवारिधि प्रभुपद शिरनाये॥
अंगद हनुमत निकट निवासी * रामचरणसुखमा गुणराशी ॥
दोउभट कर परसत प्रभु पाऊ * देखि सुरन मन भा अतिचाऊ॥
हमहुँ होत जग कीश स्वरूपा * पद गहि नित्त रहत नरभूपा ॥
हरि न सिहाहिं सुमन झरलाये *निजनिजआश्रमअमरासिधाये॥
दोहा-बन्धु सचिव सेना सहित, शोभित श्रीभगवान ॥
तुलसिदास ते धन्य नर, जे यह ध्यान लुभान ॥ १७८ ॥
उत नारान्तक सेन समेता * गयउ जहाँ दशकन्ध निकेता ॥
सुतहि सुरारि[8] मिला पुलकाई * कुशल बूझि बैठेउ हर्षाई ॥
देखि नरान्तककै समुदाई * दशमुखशठ सब शोच दुराई॥
जेहि विधि हरि लावा जगमाता * ताहिआदि कृतकृत विख्याता॥

१ मायारूपी अन्धकार । २ तूण । ३ मेरु । ४ वृक्ष । ५ निशाचर । ६ सन्ध्याकाळ । ७ आज्ञा । ८ रावण ।

कुम्भकर्ण घननाद निपाता * कहि बिलखा अहिरावण घाता ॥
पितुमन मलिन नरांतक देखा * बोला खल उर गर्व विशेखा ॥
तजहु सकल संशय विबुधारी * करिहहुँ प्रात समरअतिभारी ॥
चमूकीशविनु क्षितिकरिताता * धरिहौं तापस होत प्रभाता ॥
छंद०–धरि आनि तापस भ्रात दोउ परभात बार न लाइहौं ।
धरि धरि विपुल कपि भालु दीन निशाचरन अघवाइहौं ॥
भुजबल कहहुँ निज नहिं बहुत करिरिपुन प्रगट दिखाइहौं ।
विनु श्रमहिं तातनको बयरलै तवचरण शिरनाइहौं ॥१५ ॥
दोहा–सुनत वीसभुज सुतवचन, बार बार उर लाइ ॥
लाग करावन नृत्य जड, गुणी समूह बुलाइ ॥ १७९ ॥
बिंदुमती आदिक रनिवासू * सब चलिगईं मँदोदरिपासू ॥
सासुहि मिलि बैठीं सब नारी * मयतनया करि आदर भारी ॥
बूझि परस्पर रावण घरनी * प्रभुयश ताहि सुनायउ बरनी ॥
देइ पतोहुन वास सुहावन * आपुलगी सुमिरन जगपावन ॥
शयनकरहुकहसुतहि निशाचर * उठाआप मतिमन्द अघाकर ॥
गातेहि भवन कुटिल दशग्रीवा * जहँ मयतनया सद्गुण सीवा ॥
आयहु पिय मन्दोदरि जानी * पाइ सुअवसर गहि पगपानी ॥
पियसुनाय अति कोमलवयना * लगीकहनजलभरियुगनयना ॥
दोहा–नाथ निगम आगमविबुध, कहत प्रगट यह बात ॥
बुधजन सो जो आधहू, राखै सरवस जात ॥ १८० ॥
तजहि न हठ शठ सरवसखोवै * यद्यपिअन्त शीश धुनि रोवै ॥
सो विचारि प्रभु परमसुजाना * मोरवचन सुनि कीजिय काना ॥
अजहुँ करहु हठ दूरि गोसाँई * अनुजभाँति मिलिये प्रभुजाई ॥
प्रथमहिं सीतहि देहु पठाई * पुनि तुम गवनहुँ पुत्र लखाई ॥
प्रभुपद गहि माँगहु वरएहू * पदपंकजरति विमल सनेहू ॥
प्रियावचन तेहिविषसमलागा * सो गृह तजिगा अनतअभागा ॥

१ पृथ्वी । २ निद्रा । ३ कुबुद्धि । ४ भाईकीतरह ।

निजनारी कहिकटुअभिमानी *कीन्हशयन निशिगइबड़जानी॥
सो रजनी गत भयउ प्रभाता * जागे रघुवर त्रयजगत्राता ॥
दोहा-ऋच्छ कीश जगदीशपद, शीशनाइ रुखपाइ ॥
धरि गिरितरु धावत भयउ, कहि जय जय रघुराइ॥ १८१॥
कपि घेरा गढ यह सुनिकाना *रावणसुत लखि निपट रिसाना॥
साजिविपुलदल हनतनिशाना * गढते चला निकर बलवाना ॥
चारि द्वार करि कठिन लराई *विशिखवराषिकपिदलविचलाई॥
निकरे निशिचर गढते कैसे * शलभ समूह शैलते जैसे ॥
मारुतसुत देखा कपि भाजे * कटकटाइ भति विक्रमगाजे ॥
कपि लँगूर चहुँ ओर भँवाई * रोके खल निशिचर समुदाई ॥
पटकत महि निशिचर फलबेलू*कोतिनदेत विदिशि दिशि मेलू॥
इक दिशि इमिहरिकृत संग्रामा * दिगदूजी अंगद बलधामा ॥
दोहा-निशिचर सेना उदधिसम, मन्दर इव दोउ कीश ॥
मथतदेखि जय रतन लागि, हँसे विबुध सुरईश ॥ १८२ ॥
छं०-इमि निरखि पराक्रम करतकीश, भाक्रोधपरमरजनीचरीश
करिप्रलय कन्दते घोर शोर, धर कुधर शस्त्र धाये कठोर ॥
इकबार मारकर शर समूह, किय विकल अस्त्र हनिकीशजूह ॥
कोउ टेरतकपिपतिचितवउचोट,कोउसुरतकरतनिजधामओट१६
बहु चले कन्दरा शैल ताक, कोउ दबकत इतउतपातझाक ॥
कोउ देत दुहाई लषण राम, कोउ कहत विधाता भयोवाम ॥
यहि बीच नरान्तक कर प्रधान, तेहिधायगहेयुवराजपान ॥
बहुभटलपटाने अंग संग, सब सँग उठेउ अंगद उतंग ॥ १७ ॥
नभकीश कीन्ह कौतुक अभूत, रविमंडलपहुँचेउ बालिपूत ॥
अँगगारे जारे तपनि आँच, पुनि आयउ जहँ संग्रामराच ॥
यह निरखि अपर यूथप पिशाच, तुर आइ गयउ सेना समाच ॥
लै विषम शूल मारिसिप्रचण्ड, उर लाग आन अतिकठिनदण्ड१८

१ रात्रि व्यतीत हुये । २ टीडी । ३ मंदराचल पर्वत । ४ नरांतक । ५ समूह ।

माँहि परेउ तनयतारा तुरन्त, लखि दौरि परेउ हनुमंत सन्त ॥
सोइ शूल खैंचि मारेउ प्रचण्ड, होइ गिरेउ यूथपति सहसखंड ॥
सब चरित सुनेउ रविकुलदिनेश, कह जाहु वेगि अहिराज शेष॥
चलेनाइ माथ शंकर मनाइ, धनु बाँधिबाँधि विकरालल्लाइ ॥
उर अंगद कर धरिसुमिरिराम,श्रमविगतभयउबलअतुलधाम १९
दोहा-विगत भई मूर्च्छा तुरत, बहुरि चलेउ युवराज ॥
लक्ष्मणचाप टँकोर सुनि, फिरा कीश दलसाज ॥ १८३ ॥
सुनत टँकोर शरासननिशिचर*बधिर भये नहिं सुनत शब्दपर॥
वर्षा विशिख कीन्ह अहिनाथा * काटे पाणि पाँय बहुमाथा ॥
उडहिं अकाश शीश भुज कैसे * धुनकत तूल रोमगण जैसे ॥
रुण्ड अशीश फिरहिं रणधरणी* यथा अकाल क्षुधारतकरणी ॥
इत कपि भालु विजयअभिलाषे* उतहिं निशाचर जय हित राखे॥
मारुतसुत अंगद बलवीरा * समरबाँकुरे अति रणधीरा ॥
सिंहनाद कीन्हा हरि दोऊ * भाजे कपि रण गाजे सोऊ ॥
दोउ दल युद्ध परस्पर करहीं * प्रमुदित भट कायरहिय डरहीं॥
छंद-कायरडरहिं प्रमुदित सुभट सब लरत हारि न मानहीं ।
जहँ तहँ गिरैं पुनि उठि भिरैं दुहुँ ओर जयति बखानहीं ॥
कौतुक विलोकत विबुधगण विस्मय हरष उर आनहीं ।
रघुवीर सेनानि पर सुमन झरि लाय विनती ठानहीं॥२०॥
दोहा-अति अद्भुत करणी करहिं, ऋच्छ कीश बल भूरि ॥
कर पद विनु कर रजनिचर, तिन मुख डारहिं धूरि॥ १८४॥
बहुतनके शिर तोरि चलावहिं * निज भुजबल रावणहिंजनावहिं
गये याम युग दिवस भवानी * नारान्तक अधसेन सिरानी ॥
मरे निशाचर अमित निहारी * रावण सुवन कोप करि भारी ॥
रथ समेत ऊपर नभ जाई * भयउ अदृश्य अस्त्र झरि लाई९
क्षणमहँ करि मूर्च्छित कपिसैना*पुनिशठगा जहँराजिवनयना ॥

१ लक्ष्मण । २ अंगद । ३ बाहिर । ४ आकाश ।

गर्जा मनहुँ मेघ समुदाई * कहन लाग कटु वचन रिसाई॥
होसि सजग निश्चर कुलद्रोही * बन्धु वैर लगि मारहुँ तोही ॥
प्रभुकहँ कटुककहतसुनिकाना * कोपेउ जाम्बवन्त बलवाना ॥
दोहा-शूल एक तेहि छाँड़ेऊ, सो करगहि ऋच्छेश ॥
धाय तासु उर मारेऊ, भाषि जयति अवधेश ॥ १८५ ॥
लगत शूल सो मूर्च्छित भयऊ* जाम्बवन्त तब करगहि लयऊ ॥
बार अमित महि माँह पछारा * बाँधि गाड़ि बारू महँ डारा ॥
जागे सकल बलीमुख ऋच्छा * लगेकरन रणनिजनिज इच्छा ॥
जाम्बवन्त यह हृदय विचारा * मरै नहीं यह खल मम मारा ॥
विधि इच्छा पुनि ताहि उखारी* मुष्टि चारि उर माहिं प्रचारी ॥
गहिपद संचारा गढ़ माहा * सपादिपरा जहँ निशिचरनाहा॥
दशौ वदन हाहाकारि धावा * नारान्तकहिं हृदय तब लावा ॥
निरखि निशाचर गण समुदाई * गढ़कहँ गे सब संभ्रम धाई ॥
दोहा-कपिगण सभय प्रदोष लखि, रामचरण धरि माथ ॥
ठाढभये सब तन चितै, दयादृष्टि रघुनाथ ॥ १८६ ॥
बिनुश्रमकीन्ह सबनिजगदीशा* गये सुवास भालु अरु कीशा ॥
रुचिरासन आसीन रमेशा * ढिग वीरासन उरगनरेशा ॥
अंगद मारुतसुत प्रभु चरणा * लाग पलोटन सुनहु अपरणा ॥
पुण्यपुंज अरु भाग्यनिधाना * जिनपर नित प्रसन्न भगवाना ॥
वहाँ सुरारि सुतहिं पौढ़ाई * बिलखहिं तासु नारि समुदाई॥
होत प्रभात नरांतक जागा * पितु विलोकि लज्जारसपागा ॥
रथ चढ़ि तुरत इकाकी धावा * नभपथ समरपुहुमिमहँ आवा ॥
कीशकटक यह मर्म नजाना * होइ लोप कीन्हेसि झरिबाना ॥
दोहा-धावहिं व्योमहिं भालु कपि, ताहि न हेरैं नैन ॥
घायल होइ होइ गिरहिंमहि, भाषहिं आरतबैन ॥ १८७ ॥
बाण एक शत तड़ित समाना * छाँड़ेसिशठ जहँ कृपानिधाना ॥

१ जाम्बवन्त । २ मेरा । ३ फेंका । ४ रावण । ५ सन्ध्याकाल । ६ विराजमान ।
७ लक्ष्मणजी । ८ संग्रामभूमि । ९ अदृश्य । १० आकाश ।

लागत विपुल कीश मुरझाने * बहुतक कायर देखि पराने ॥
भागि सेतु ढिग एक अयाना * टरे फिरहिं न सुन हरियाना ॥
मारुतसुत अंगद सुग्रीवा * कुमुद मयंद द्विविद बलसीवा ॥
ये सब वीर हाँक दै धावहिं * नभपथ ताहि न खोजत पावहिं ॥
तब सब वीर एक मत ठाना * लै गिरि तरु किय लंक पयाना ॥
दशमुख भवन तासु कंगूरा * बैठे कपि पसारि लंगूरा ॥
करते डारि देहिं पाषाना * बहुत दनुज भे चूर्ण समाना ॥

छंद-भे चूर्ण निशिचर यूथ, गे निशिचरी भय गूथ ॥
मुखबीन आरत दीन, भइ भवन रावण लीन ॥
बिलखीं कराहिं कराहिं, ममरक्षक कोऊ नाहिं ॥
सुनि बोलि भट दशभाल, कह खाहु कीश कराल ॥ २१ ॥
करि यत्न भागहिं कीश, अस कहेउ वच दशशीश ॥
मम लहहु आयसु छार, सोइ जानिहौं रिपु मोर ॥
सो शूर मोकहँ प्यार, जो खाय मर्कट धार ॥
जो जाय आयसु छोर, सोइ जानिहौं रिपु मोर ॥ २२ ॥

दोहा-ऐतु ऐतु गुण रजनिचर, एक एक भुज जोर ॥
रावन पावन राखि शिर, धाये करि रवघोर ॥ १८८ ॥

देखि लँगूर सकल हर्षाने * मधुमाखी सम सब लपटाने ॥
कपि उर सुमिरि रमेश प्रतापा * डारे सबनि पटकि करि दापा ॥
काचे घटसम दनुज विदारी * जयतिराम जय लषणखरारी ॥
सुभट छुहानि पुनि फारि लँगूरा * भूमि गिरावहिं कोटि कँगूरा ॥
अति विशाल गहि कंचनखंभा * जिमि प्रयासविनुकरुआरम्भा ॥
लै ढाहत अपक्क घट यूहा * कपि तिमि तोरत दनुजसमूहा ॥
पुनि विचार करि हरि भटधाये * निशिचर निकरमध्यचलिआये ॥
करि कोटिन बिनु नासा काना * करपद हीन कीन्ह रिपुनाना ॥

छंद-रिपु कीन्ह कर पद हीन अगणित दीनवचन पुकारहीं ।
गढते निकर निशिचर अखिल शल विपिन वाट सिधारहीं ॥

१ पूँछ । २ पत्थर । ३ बन्दर । ४ शत्रु । ५ शब्द ।

पीपर परणसम धरणि लंका कम्प षट कीशनिकरा ॥
तोरे कपाट निपाटि अरितिय केश खैंचत गहिकरा ॥२३॥
दोहा--भयउ कुलाहल लंक अति, नारान्तक सुनि कान ॥
नभते स्यन्दन सहित शठ, प्रकटिपरम रिसियान॥१८९॥
निरखि दशा निज नारिन केरी * कहन लागु कटु गिरा घनेरी ॥
शठ आयउ संग्राम विहाई * लरत तियन सँग लाजनआई॥
अबलनपै बल भट न कराहीं * छाँड़हु तियन लरहु ममपाहीं ॥
सुनि मर्कटनि भयउ सुखभारी * तजी निशाचारि दीन पुकारी ॥
भाजि भवन भययुत गईं नारी* लीन्ह कपिन कराशिलाउपारी॥
शिलप्रहार हय स्यन्दन भंजा * आयुध तोरि सारथी गंजा ॥
धारि पछारि रावण दृग देखा * कौतुक कीशनकीन्ह विशेषा ॥
लागेपद गहि खलन फिरावन * नाचहिं गाइ राम यश पावन ॥
दोहा-तोरत तिन तनु पटकि महि, कहत जयति रघुवीर ॥
करत युद्धगत याम युग, कीश छहौं रणधीर ॥१९०॥
अस्ताचल रवि कीन्ह प्रवेशा * वन्दे चरण जाइ अवधेशा ॥
श्याम सरोरुह प्रभु तनु देखी * पदधारि शिरसखलहेउविशेखी॥
राम सबन सादर सन्माना * को दयालु रघुवीर समाना ॥
कह प्रभु होहु थलन आसीना * आयसु पाइ भये श्रमहीना ॥
भये विगत श्रम वानर भालू * अनुजसहितमनमुदितकृपालू॥
सुनहु उमा ता निशि रघुनायक* गावतजनगुणसबगुणदायक ॥
याम तीनि यामिनि गत जबहीं* उत नारान्तक जागेउ तबहीं ॥
शोच विवश मींजत दोउहाथा * लज्जित हृदय निशाचरनाथा ॥
छंद-लाजकै रथै सँवारि वाजि साजि हृष्ट पुष्ट ।
शंक छाँड़ि शस्त्र माँड़ि गाढ़ वीर संग दुष्ट ॥
भेरि दुंदुभी निशान गान काडकैत कर्त ।
धीर वीर अग्र गौन गाजि गाजि शब्द भर्त ॥२४॥

१ बाल । २ खिन । ३ वानरोंको । ४ घोडे । ५ रथ । ६ हथियार । ७ रथ हांकनेवालेको । ८ रात्रि । ९ अश्व ।

जीव आश त्रास नाश वाजि मोह छण्ड छण्ड ।
बंक शूर शंक दूर वीरता सपूर चण्ड ॥
वाजि नाग शोर घोर पूरिगे दशो दिशान ।
धूर पूरि मेघ बोध शोध ना परौ अपान ॥२५॥
कूदि कूदि व्योम पन्थ जाय आइ जाइ भूमि ॥
अस्त्र शस्त्र काढ़ि काढि क्रुद्ध क्रुद्ध झूमि झूमि ॥२६॥
दोहा--प्रलय मनहुँ चाहत करन, अनीतमीचर[1] चण्ड ।
सुनु खगेश मर्कट विकट, जिमि धाये बरबण्ड ॥१९१॥
छंद--निहारि हर्ष कीश ऋच्छ फूलि फूलि शैलभे ॥
बजाइ कटकटाइ हूह एक बारकै अभै ॥
उपारि भूधरा[2] अपार वृक्ष अश्म शृंगहू ।
मरे निशाचरानि रुण्ड झुण्ड शुण्ड भंगहू ॥
रदीहरी मृगावती सवार उष्ट्र मण्डहू ।
मनो विचित्र वाहिनी दई मनोज खण्डहू ॥२७॥
हलै धरा[3] बलै विचारि भार धारि को सकै ॥
सुनै पुकारि जयति राम शत्रुसे नहीं थकै ॥
लँगूर शूलसे अकाश भीत उच्च औ चट्यो ॥
गिरे पयोद[4] पौनते[5] झपेट भेटते कट्यो ॥ २८ ॥
सो०--शब्दकरत अति घोर, इमि पहुँचो दल भालु कपि ॥
आयुध झारि अति जोर, परै लागि घन प्रलय सम ॥१४॥
सजगहोन कपि भालु न पाये * अतिशय निकटतमीचर[6] आये॥
असितनिशाचरअतिअँधियारी[7] * तापर करैं शत्रु कै मारी ॥
सूझहिं कपिन न हाथ पसारे * जहँ तहँ एकनि एक पुकारे ॥
सन्मुख कोउ न करत लराई * कपिन मारि रणभूमि सुवाई ॥
गे अनेक भाजि सिंधु समीपा * सेन विकललखिरघुकुलदीपा ॥
साजि शारंग[8] तजा इकबाना * भा प्रकाश दिग तरणि[9]समाना॥

१ राक्षसी । २ पर्वत । ३ पृथ्वी । ४ बादल । ५ वायु । ६ राक्षस । ७ काले । ८ धनुष । ९ श्रीसूर्यनारायण ।

लखि तम[1] विगत भालु[2] कपि[3]हर्षै[4] * कटकटाइ धाये रिपु धर्षै ॥
भिरे एकसन एक प्रचारी * लागे करन कठिन हठ भारी ॥
दोहा-शीश शिला तरु करन धरि, काँखन भरि भरि धूरि ॥
गरजे भालु बली वदन, धाय धाय नभ[5] दूरि ॥ १९२ ॥
डारहिं गिरि तरु निशिचरशीशा * दधिघटसमरफोरहिं भट कीशा
चढहिं अनेक कन्धपर जाईं * काटहिं कान दृगनि[6] रजँ[7] नाईं ॥
तोरहिं शूल[8] चाँप[9] नाराँचा[10] * अरिदल अस्त्र न एकौ बाचा ॥
अस्त्रहीन रिपुसेन पराई * देखि पवनसुत हँसेउ ठठाई ॥
बैठि अवँनि[11] अतिलूम लफाई * अति उँतंग[12] दीरघ चौड़ाई ॥
तर्कित खसे निशाचर कैसे * पक्षहीन नभते खग जैसे ॥
गिरत कीशगहि चरण फिरावहिं * पटकि भूमि गाडहिं विहँसावहिं
तुम्बरि सम अगणित भुजतोरत * अगणित रुण्ड सिंधु महँ बोरत
दोहा-कोटि बयालिस तमीचर, नारान्तक कर घात ॥
रामकृपा बल हति खलनि, कपिन बिताईरात ॥ १९३ ॥
प्रभु तुणीर[13] महँ हरि शर जबहीं * प्रविशे कीन्ह उदय[14]रवि तबहीं ॥
देखि कटक निज परमविहाला * नारान्तक भट कोटि कराला ॥
करि बहु शपथ लिये सँग वीरा * वर्षत शक्ति उपल[15] गण तीरा ॥
शर अस्तम्भन विपुल पनारे * भये अचल कपि टरहिंन टारे ॥
लैलै पाश निशाचर धाई * बाँधत जिमि चुंगलि शुक पाई ॥
व्याधि पींजरा सम बहुजाना * भरे जान प्रति अयुत प्रमाना ॥
जे कपि लखैं विपुल बल बंका * ते मूर्च्छित फेकैं गढ लंका ॥
रावण देखि तनयकी करणी * बन्दीजनाजिमि भुजबलवरणी ॥
दोहा-हरिइच्छा जानै न कस, सुतहि सराहत मूढ ॥
काल विवश मति संभ्रमित, सुनहु ऋषय बुधिगूढ ॥१९४॥
अंगद हनूमान जब जागे * नारान्तक सन जूझन लागे ॥
क्षण इक कीश न पायउ लरई * पुनि शरहति मूर्च्छावशकरई ॥

१ अँधियारा । २ रीछ । ३ बन्दर । ४ पुकारकर । ५ आकाश । ६ नेत्र । ७ धूरि । ८ बरछी । ९ शरासन ।
१० बाण । ११ पृथ्वी । १२ ऊंची । १३ निषंग । १४ सूर्य्य । १५ पत्थर ।

याम युगल तेहिकर वरदाना * राखेउ तेहि कारण भगवाना ॥
रिपुहि खिलावत रघुकुलकेतू * पालक बुधवाणी श्रुतिसेतू ॥
सो युगयाम गये जब बीती * तब रघुवीर सजी जयरीती ॥
हाँक देइ कपि भालु जगाये * भये विगत मूर्च्छा सब धाये ॥
हनूमान अंगद जब जागे * राम लषण चरणन अनुरागे ॥
प्रभुपद शीश रहे धरि कीशा * तब हँसि बोले श्रीजगदीशा ॥
सो०-विधि वाचा लगि आज, तात तुमहिं मूर्च्छा भई ॥
पुनि कह प्रभु रघुराज, अब श्रम स्वप्नेहु अनत नहिं॥१५॥
तुमहिंसुमिरि अंगद हनुमाना * जितिहैं जगत मनुज रणनाना॥
असबर जबहिं रमापतिभाषा * सुनत गिरा[1] हर्षे मृगशाखा ॥
कहेउ बहोरि वचन रघुवीरा * सुनुअंगद हनुमत रणधीरा ॥
तात तुरत तुम उभयसिधावहु * लंक गये कपि तिन्हैं छुडावहु ॥
सुनि दोउ भट गहिशैल विशाला*सुमिरि कोशलाधीशकृपाला॥
सपदि[3]कीश गढपर चढि गये * देखि लंक महँ खरभर भये ॥
सकल कपिनकै मूर्च्छा बीती * तोरि पाश भाजि राम सप्रीती ॥
वायुसूनु[4] युवराज[5] निहारी * हर्षै कहि जय जयति खरारी ॥
दोहा-मेष[6] बरूथहिं पाइ जिमि, वृक[7]गण करहिं सँहार ॥
तिमि मर्दहिं दनुजन[8] सुभट, कीश भालु बरियार ॥ १९५॥
याम[9] एक वासर[10] अवशेषा * कह अंगद कीशन तन देखा ॥
चलिय तात अब जहँ सुरभूपा * देखिय पदपाथोज[11] अनूपा ॥
अंगदवचन पवनसुत भाये * सपदि सहितदल प्रभुपहँआये॥
निशिचरकोटि नरान्तक संगा * करतरहे बहु विधि रणरंगा ॥
माया करि निजगात बचावहिं * जहँ तहँखल रावणयशगावहिं॥
अदिति[12]नन्द लखितिनकरमाया* सभयभये जाना रघुराया ॥
दीननाथ अनुज[13]हि अनुशासन[14] * उठनामितगहि विशिख[15]शरासन[16]
अहिपति कहेउ तिष्ठक्षण एका * तैं कीन्हें रण खेल अनेका ॥

१ वाणी। २ सुन्दर। ३ शीघ्र। ४ हनुमान्। ५ अंगद। ६ भेड़ोंकेझुण्ड। ७ भेड़हा ८ निशाचर। ९ पहर।
१० दिन। ११ चरणकमल। १२ सुग्रीव-इन्द्र। १३ लक्ष्मणजी। १४ आज्ञा १५ बाण १६ धनुष।

छंद-मैं कीन्ह खेल अनेक विधि अबहिं खल रणभूथला ॥
इमि कहि अहि चढाइ धनुशर करन निशिचर दलमला॥
निज अनी निरखि निदान हारिआरि सुवनधावा रिसिभरा ॥
डारत अनेक नेराच्च प्रभुपर शिला तरुवर भूधरा ॥ २९ ॥
रघुवीर अनुज प्रवीण खलबलदलन श्रुति यश गावहीं ।
तरु उपल गिरि अरि तीर उपरहि बाण लषण चलावहीं ॥
रिपु शस्त्र अस्त्र अनेक आयुध कनक करि करि डारहीं ।
सुरगणप्रफुल्लित सुमन झरिकरि जयतिलषणपुकारहीं ३०॥
दोहा-मायापतिके अनुज सन, माया करत अयान ॥
लगत न एको जानि जिय, तबखल निकट तुलान ॥१९६॥
हनालषणउर पविसमसायक * लगतगिरे रणमहि अहिनायक॥
पुनिखलदलभा प्रबल अपारा * भक्षणलाग भालु कपिधारा ॥
चले पराय कीश भयभीता * अवन बच्चब करिकाल प्रतीता॥
निशिचर धारि भालु कपिवेषा * लागे खान कपिन अस देखा ॥
कपि डर कीश भालु डर ऋक्षा * आपु आपुमह मिलनअनिक्षा ॥
कोउ न काहु निकट नियराई * जो जेहि पाव ताहि तेहि खाई ॥
पुनि शठ साधि विभीषण रूपा * गहि अंगद हनूमत कपिभूपा ॥
काहु न यह माया कछु जानी * कपट मिलाप विभीषण ठानी ॥
दोहा-तेहि अवसर जागे लषण, देखा सेन विनाश ॥
अहिरावण छल पवनसुत, समुझतउड़ा अकाश॥ १९७ ॥
गर्जेउ जाय भयंकर भारी *फटेउहृदयसुनिनिशिचर झारी॥
मायाहत शर लषण पवारा * उघरे कपटकपाट अपारा ॥
नारान्तककै माया बीती * गयउ यज्ञशाला अतिप्रीती ॥
खोजिसि सकल समग्री ताकी * कीन्हअरम्भविजयनिजताकी॥
यज्ञ आसुरी तेहि तब ठाना * पशु समूह बलि कारण आना॥
भये निशामुख श्रमवश सेना * फिरे सुमिरि सब राजिवनैना ॥

१ शर । २ पहाड । ३ आया । ४ वज्र । ५ बाण । ६ श्रीलक्ष्मणजी । ७ यूथकेयूथ । ८ कमलनेत्र श्रीरामचंद्रजी ।

तुरत अहीश रामपहँ आये * सहित अनी प्रभुपद शिरनाये॥
कृपाअयन निरखे मृगशाखा * प्रभु श्रमछीन दीन अभिलाषा॥
दोहा-टिकहु थलनि सबसन कहा, सुखसागर रघुनाथ ॥
पाय सुआयसु भालु कपि, चले सुमिरि श्रीनाथ ॥ १९८ ॥
तब रघुराज अनुज उरलावा * निज आसन समीप बैठावा ॥
मघवासुत सुत अरु हनुमाना * इनसम भाग्यवंत नहिंआना ॥
अमलाम्बुज पदगहि निजपानी * परशे सबनि सनेह भवानी ॥
जाम्बवन्त लंकेश हरीशा[1] * प्रभुसमीप सबमुदितमुनीशा॥
अनुज सखा नारान्तक करणी * युद्धप्रबलता बहुविधि वरणी ॥
शिवप्रताप तेहि अमितप्रतापा[2] * मरण न दीन्हें बहु संतापा[3] ॥
सुने वचन रघुपति मुसकाने * अति सनेह हरिचरित बखाने॥
सुनहुसकल हम शम्भु नआना * जिनहिं भेद ते वश अज्ञाना ॥
दोहा-जे सुमिरहिं शिवसह उमा, ते जानहु मम प्रीय ॥
शंकर भजहिं सो मोहिं भजहिं, मोहिं सो शंभु अतीय ॥१९९॥
चारिपदारथ करतल[4] ताके * बसहिं महेश उमा उर[5] जाके ॥
जो मम प्रण शिव सदानिवाहा * सो जय देव न संशय आहा ॥
सुख कलत्र जय विजय विभूती * शंकर सुमिरत होइ अकूती ॥
भक्ति मोरि शंकर आधीना * जलाधीन जिमि जीवन मीना॥
कह आश्चर्य नरान्तक एहा * मोपर गिरिपति परमसनेहा ॥
सुमिरहु सदा विश्व इक साथा * कपट त्यागि नावहु सबमाथा॥
होइहि विजय धीर मन धरहू * वेगि उपाव पाव सुख करहू ॥
शंभुउपासन कर ममदासा * तात हृदय धरि दृढ़ विश्वासा॥
दोहा-जो नर चाहत भक्ति मम, सो छल कपट दुराइ ॥
शिवासमेत गिरीशपद, निशिदिन रहु मनलाइ ॥ २०० ॥
मन क्रम वचन शम्भुपदआशा * करहिं ताहि उर सबगुणवासा॥
निर्भय कारि जो हरपद नेहू * ता उर रमासहित मम गेहू ॥

१ सुग्रीव । २ अपारिमाण । ३ दुःख । ४ हथेली । ५ हृदय ।

भववारिधि लाँघहिं विन खेवाहिं * यह विचारि बुधजन भव सेवहिं ॥
भवभंजन यह हित उपदेशा * अनुजाहि सखहि बुझावरमेशा ॥
ध्रुववाणी सुनि अतिसुख पावा * अहिपति रामचरणशिरनावा ॥
अंगद हनूमान नल नीला * कपिपपति अरु ऋक्षेश सुशीला ॥
सहित विभीषण राजन साता * सुन श्रीमुखहरयशविख्याता ॥
रामहिं शिवहिं एक जे जाने * भय तजि नाम जपत हरषाने ॥
दोहा--कहत सुनत इतिहास शुचि, निशि बीती युगयाम ॥
खगपति आगम देवऋषि, जित शोभित श्रीराम ॥२०१॥
राम लषण सुखसींव विराजे * मार[२] अपार निहारत लाजे ॥
निरखिमानि मुनिहृदयसनाथा * उठे हर्षि प्रभु रघुकुलनाथा ॥
शीशनाइ प्रभु आसन दीन्हा * आशिषपाइहर्षि हित कीन्हा ॥
मुनि नीके हरिरूप विलोका * यथा इन्दु[३] लखि सुखलह कोका[४] ॥
पुलकिगात तब कह ऋषिराजा * सुनहु नाथ आयउँ जेहिकाजा ॥
चतुरानन[५] पठवा मोहि स्वामी * यदपि कृपानिधि अन्तर्यामी ॥
सदा अनाथ नाथ भगवाना * विभव विरंचिकरियपरिमाना ॥
जबलगि होन प्रभात न पावहिं * तबलगिहरिहरिसुत[८] लैआवहिं ॥
दोहा--जपत निरन्तर नाम तव, सो जानहु भगवान ॥
विधि वर हित इत आनिये, तेहि कहँ कृपानिधान ॥२०२॥
नारान्तकवध है तेहि हाथा * दधिबलनाम भक्त तव नाथा ॥
नाथ बहुत यहिखलहिंखिलावा * रण विलोकि देवन दुखपावा ॥
अब रघुवीर करहु सोइ वाता * विनु प्रयास[७] रिपुमरै प्रभाता ॥
तेहि सन तुमहिं न सोह लराई * दधिबल सन्मुखकरहुगलाई ॥
सविनय नाइ शीश वर भाषी * गवने मुनि प्रभु छविउरराखी ॥
नारद गये जबहिं विधिलोका * वायुतनय तन राम विलोका ॥
तात तुरत तुम गवनहु तहँवाँ * वारिधिमहँ धौलागिरि जहँवाँ ॥
तहँ दधिबल रह ध्यान लगाये * बहुत दिवस चलिगये सुभाये ॥

१ संसारसागर। २ काम। ३ चन्द्रमा। ४ कमल। ५ ब्रह्मा। ६ दधिबल। ७ श्रम-यत्न। ८ हनुमान।

दोहा-अहै तपोबल तेजस्वी, तात तासु ढिगजाइ ॥
मन प्रसन्न करि चतुरई, आनहु वेगि बुलाइ ॥२०३॥
पवनकुमार पाइ अनुशासन * चलेउ वाल्हिपद हर्षि उदासन ॥
वेगवन्त धावा कपि कैसे * वर नराच दधिसुतसे तैसे ॥
लोक अर्द्ध घटिका तेहि ठामा * पहुँचे वायुपुत्र बलधामा ॥
देखि तरणिसम तासु प्रकाशा * ठाढ सभय कपि मंदिर पासा ॥
दण्डयुगल कपि इच्छित रहेऊ * हिय महँ राम राम अस कहेऊ ॥
उत रण होई होत प्रभाता * इत इन कर चितहरिपदराता ॥
क्षण इककपिमन कीन्हविचारा * प्रभु पहँ चालिये कवन प्रकारा ॥
जो गृहसहित चलहुँ लै येही * नाहिं अस आयसु भक्तसनेही ॥
दोहा-बुध जन शीश शिरोरतन, अति लजात मुनिराउ ॥
ताहि जगावन हेतु तब, कीन्हें अमित उपाउ ॥ २०४ ॥
अचल ध्यान कपि तासुप्रमाना * तजि प्रवीणता भजि भगवाना ॥
रामचरण चित कपि वरदयऊ * दण्ड एक औरौ चलिगयऊ ॥
विधिप्रेरित दधिबल लघुशंका * करन उठेउ देखा भटबंका ॥
जय श्रीराम वायुसुत बोला * सुनिदधिबलनिजलोचन[1]खोला ॥
बूझि हरिहिं कीशहिं उरलाई * कही परस्पर[2] दोउ कुशलाई ॥
पुनि हनुमान कहेउ सुर भ्राता * चलहु विलोकन त्रिभुवनत्राता ॥
सानुज राम सुखद पद कंजा * जिनमकरन्दशिला अघगंजा ॥
जेहिलागि तप कीन्हेउबहुकाला * सो तुमपर अनुकूल[3] कृपाला ॥
दोहा-धूरजटी हृदमानसर, बसत हंस इव जोइ ॥
सादर तुमकहँ लेन लगि, पठवा मोहिं प्रभुसोइ ॥२०५॥
सुनि शुभवचन सुकंठकुमारा[4] * हरिपहँ हरिसँग तुरतसिधारा ॥
आये नाथ निकट मृगशाखा * देखे पद जे हर हियराखा ॥
रहेउ चरण गहि प्रीति समेता * दधिबल निरखेउकृपानिकेता ॥
सानुज हर्षि मिले सुखपुंजा * तासुपाणिगहि निजकरकंजा ॥

१ आंखें । २ आपसमें । ३ प्रसन्न । ४ सुग्रीवकुमार ।

बैठे ताहि निकट बैठावा * तेहि अवसर सुकंठ तहँ आवा॥
निरखितनय कपिपति हरषाना * मिलत प्रेम नाहिंजायबखाना ॥
गइमणि पन्नग जनु पुनि पाई * देही देह मीन जलजाई ॥
सुख सुग्रीव लहेउ प्रभु भेंटे * अवगुण तीन ताहि क्षण मेटे ॥
सो०–दधिबल वालिकुमार, मिले परस्पर हर्षिहिय ॥
भयउ आइ भिनुसार, न्हाइ सबनि प्रभुपद गहे ॥ १६ ॥
जहँ तहँ समर[1] करन वनचारी * चले कहत जय लषण खरारी॥
वहाँ नरान्तक प्रात प्रबोधा * रथ चढ़ि चलेउ भयंकर योधा॥
निशिचर अनी सुभटसँगताके * आयुध अखिल भयानक बाके॥
माहि संग्राम[2] निशाचर ठाढे * असितमेघसम अति रिस बाढे॥
कारि माया तेइँ गात छिपावा * भयउ प्रगट जब प्रभुढिग आवा॥
दधिबल लखा सखा चलिआयउ*भुजापसारि हर्षि उठि धायउ॥
नारान्तकहु दीख गुरु भाई * मुदित मिले उर उभय अघाई ॥
भेंटि सप्रेम बूझि कुशलाता * निज निजदशा कीन्ह विख्याता
दोहा–हरिपति पूत प्रवीन अति, सुनि तेहि मुख विख्यात ॥
लगे बुझावन मित्र कहँ, सुनहु वीयपति बात ॥ २०६ ॥
वंशस्वभाव सत्य कवि कहहीं *फल पियूष विष बेलि न लहहीं ॥
समुझहु तात विचारि निदाना *किये अनीति न जग कल्याना॥
पितुचरित्र समुझहु मनमाहीं * रामविरोध कतहुँ जय नाहीं ॥
तुम प्रवीण भा मतिभ्रम कैसे * कूप धसत विकबाट अनैसे ॥
तुमहुँ कीन्ह दिनचारि लड़ाई * जानेउ भालु कीश बल भाई ॥
तजि कुमंत्र सम्भव अज्ञाना * कहहु पाहि रघुवर भगवाना ॥
सफल करहु भव प्रभुपदपरशी * करिहैं अभय तोहिं समदरशी ॥
मानहु सीख मोरि सुखकारी * प्रणतपाल रघुवीर खरारी ॥
दोहा–शारंगी शर तरणि सम, दशमुख वपु खग लेख ॥
जरत राखु यहि समय तुव, कारि विज्ञान विशेष ॥२०७ ॥

१ सर्व । २ युद्ध ।

सुनत वचन गुरुभ्राता केरा * नारान्तक भा क्रोध घनेरा ॥
कहनलाग खल ताहि कुभाँती * सहज सभीत कीश दिन राती ॥
वालिहि हतेउ जौन तपधारी * भा अंगद तिन्ह आज्ञाकारी ॥
दधिबल यह वानर कुलरीती * हमरे करहिं न अरिसन प्रीती॥
यह कहि प्रभु सन्मुख सो धावा* दधिबल लूम लपेटि टिकावा ॥
नारान्तक कह रे शठ वानर * तव तनु नहीं मोर डर कादर ॥
छाँडहुँ मूढ समुझि गुरुभाई * कहि अस पेलि चला कठिनाई॥
तब सुकंठसुत क्रोधित भयऊ * सपदि कूदि आगे गहि लयऊ ॥
दोहा-नारान्तक दधिबलभिरे, निरखि भालु अरु कीश ॥
लगे लरन सँग निशिचरन, कहि जय श्रीजगदीश ॥२०८॥
छंद-कपि शूर सँहारे शिलनिमारि, बहुमर्दिकेरिसिकतापहारि ॥
भट विहवाबलवासीजितेक, कपिमारि गिराये बचे न एक ॥
रह एकाकी मनुजादवीर, किय द्वन्द्व युद्ध उरगादधीर ॥
दोउलरतलहैंछबिएकभाँति, गिरिकज्जलकंचनउभयगाति ॥
युग घटिका ऊपर एक याम, दोउ भिरे समर बलयोगधाम॥
पुनिभा अलक्ष सो करत युद्ध,बलवंत उभय श्रमगतसक्रुद्ध
कह षट् प्रकार श्रुति युद्धरीति,सुखमानेउ सुर देखतसुप्रीति॥
लखि पुत्रइकाकी पुलकिगात, कहवालिअनुज अतिहर्षबात ॥
दोहा-जाम्बवन्तसन वचन मृदु, कहेउ सुकंठ पुकारि ॥
कहहु तात दधिबल कब दनुजहिं डारिहि मारि॥२०९॥
समर करत लागी अति बारा * यह सुनि बोलेउ [illegible]
क्षणक हृदय धरु धीर कपीशा*दधिबल गुरुसन लही अशीशा ॥
सो अवसर अब आय तुलाना* एकपलकमहँ मारिहि अयाना ॥
सुनि हरीश मन महँ अतिहर्षे * तबहीं विबुध सुमन बहु वर्षे ॥
दधिबल धन्य भुजाबल तोरा * रणकौतूहल कीन्ह न थोरा ॥
हरिस्तुति सुनि हरि अरिकोपा*कपिहिसाहितखलभयउ अलोपा

योजन अयुतअष्ट नभ जाई * दधिबल सुमिरि हृदय रघुराई॥
गहि मनुजाद भूमिपर डारा * करि चिकार तेहि मरती बारा॥
छंद-मरतीसमय अतिशब्दकरि दशमुखतनय हरि हरि कही।
तजिअधमतनु धरि सुभगवपु द्विजनाथसुनि सोगतिलही॥
जेहि हेतु सुर मुनि सिद्ध नाना भाँति जप तप मख किये।
श्रीरामकरुणासिन्धु सो फल सहजही दनुजै दिये॥ ३४॥
दोहा-देखि तासु गति विबुध गण, अभय भये खगराइ॥
प्रमुदित वर्षै पुहुप झरि, रामचरण चितलाइ॥ २१०॥
मरा नरान्तक दधिबल जानी *तोरि तासु शिर गहि निजपानी॥
रुण्ड तासु गहि लंक सचारी * आपु चले जहँ नाथ खरारी॥
निशाप्रवेश भूत वैताला * चढि चढि वाहन वेषकराला॥
जाइ समर महि सुखद समेता* उदर अघाइ गये सुनिकेता॥
आयउ दधिबल प्रभुके पासा * देखि हर्षि उर रमानिवासा॥
सानुज राम मिले अति प्रीती * परमप्रसाद नाथ नितरीती॥
बैठे रघुकुलमणि दोउ भाई * सखा सुतहि निज ढिग बैठाई॥
हनुमदादि मर्कट प्रभु पाहीं * नाइ माथ प्रमुदित मनमाहीं॥
दोहा-राम रजायसु पाय पुनि, होइ विगत श्रम कोश॥
तब दधिबल प्रभुचरण गहि, आगे धरि अरिशीश॥२११॥
समुझि कौतुकी रिपुसुतशीशा * सुनहु सुकण्ठ कह्यो जगदीशा॥
नारान्तक कर शीश धरावहु * यतनसमेत न सेत चलावहु॥
नाथ रजायँ पाय कपिराई * राखेउ सो शिर यतन कराई॥
पुनि दधिबल हरि कीन्ह बड़ाई * श्रीपति श्रीमुख बहुविधिगाई॥
जासु बड़ाई किय बड़ईशा * सबहिं सराहत सो जगदीशा॥
दधिबलप्रभु अनुकूल विलोकी *सफलजन्मलखिभयउविशोकी॥
प्रेमवारि लोचन करजोरी * बोलेउ गिरा भक्तिरस बोरी॥
जगदात्मा तुम्हार यह बाना * सन्तत करहु दीनसनमाना॥

१ आठसहस्र। २ आकाश। ३ राक्षस। ४ कोलाहल। ५ पुष्प। ६ स्थान। ७ अनुशासन। ८ सदैव।

दोहा-वनचर पामर सहज जड, बुद्धि विषम अज्ञान ॥
विरुद स्वभाव कृपालु प्रभु, सेवक सुयश बखान ॥२१२॥
तव यश विमल विदित अवधेशा * कहत न पार पाव श्रुति शेषा ॥
सो मैं प्रभु कहि सकहुँ न कैसे * पर्णवणिक गजमणिगुण जैसे ॥
असकहि हरि हरिपद लपटाने * देख प्रेम कपि विबुध सिहाने ॥
अन अभिमान ताहि प्रभु जाना * दीनदयालु बहुरि सनमाना ॥
मागु वत्स जो वर मन भावा * सुनि दधिबल करि विनयसुनावा
नाथ तुम्हार रूप गुण नामा * कराहिं निरन्तर मम उर धामा॥
हो मुहिं प्रिय पदपंकज कैसे * कामहि वामे सूमधन जैसे ॥
एवमस्तु तुम कहँ वर येहू * मम इच्छा कछु औरौ लेहू ॥
सो०-विहवावलपुर राज, करहु तात तुम मुदित मन ॥
छाँडि और सब काज, शिवाशम्भुपद भक्ति दृढ़ ॥ १७ ॥
यहै काज शुभ संतत चहई * जोइ सोइ प्राणी मम मन रहई ॥
उमा राम कर यहै स्वभाऊ * जनपर प्रेम न कबहुँ दुराऊ ॥
माहिं निजरूप रमापति जाने * ताते वारंवार बखाने ॥
जानेउ श्रीरघुवरस्वभाव जिन * सबताजि प्रेमभक्ति माँगीतिन॥
रामभक्ति वारीश जासु उर * महिमातासु कहत श्रुतिबुधवर॥
सर सरिता सब सुखद सुहाये * सहजहिंआवत विनहिं बुलाये ॥
ताहि शुद्ध शिष दै रघुनाथा * पुनिप्रभुकीन्हतिलकनिजहाथा
सारंगी रुख सबहीं पावा * अंगदादि ताकहँ शिरनावा ॥
दोहा-पाइ भक्ति वर राज्य वर, प्रभु चरणन शिरनाइ ॥
दधिबल पठयउ तुरत हठ, सुनहु कृषय मनलाइ ॥ २१३ ॥
तन मन रामचरण अनुरागे * दधिबल राज्यकरत भयत्यागे॥
सैनसहित श्रीराजिवनयना * राजत देखि विबुध चितचयना॥
हनत दुन्दुभी विविध प्रकारा * पुहुपमाल झरि करत अपारा ॥
करि स्तुति वर विनय पुकारे * अदितिसूनु निज गेह सिधारे ॥

१ वेद । २ शेषनाग । ३ स्त्री । ४ लोभी । ५ समुद्र ।

उताहि जहाँ बैठा दशभाला * बिनु शिरवपु सो परा दिशाला ॥
देखि विकल आये उठि धावा * पहिचानततोहिअति दुखपावा॥
हा नारातक कहि खल परा * महा खँभार लंकगढ भरा ॥
मयतनयाआदिक निशिचरी * शोकसमाज विषादहिं भरीं ॥
दोहा–बिन्दुमती आदिक सकल, नारान्तककी नारि ॥
व्याकुल महिलोटहिंपरी, निजनिजदशाबिसारि ॥२१४॥
करि विलापजिमिनिशिचरनारी*सो न जातकहि सुननभचारी ॥
शोक जलधि लंका लघुतरणी * चढींसकलनिशिचरकीघरणी॥
बूड़त जानि न कतहुँ निबाहा * कहत मँदोदरि तब सब पाहा॥
बिन्दुमती कर गहि बैठाई * नागसुताकी कथा सुनाई ॥
सुनत सुनयनाश्री शुचिकरणी * धारि धीर नारान्तकघरणी ॥
सबनि बुझायसासुपग लागी *तजिधनधाम स्वामि अनुरागी॥
मातु करहु सो यतन उताउल * मिलहु जाइजोहि पदनिजराउल
सुन सुतवधू न आन उपाऊ * जाउ जहाँ राजत रघुराऊ ॥
दोहा–जेहि विधिगई सुलोचना, सोहिभाँति तुम भयत्यागि ॥
निरखहु रघुपति पदकमल, लावहु पतिशिर माँगि॥२१५॥
सासुवचनसुनिजानिप्रभाता *उठिनिशिचरतियपुलकितगाता॥
जातरूपमय यान मँगाई * निज कर गहि पति देहचढाई॥
चली अकेलि यान चढि जबहीं* तासु सवति इक आई तबहीं ॥
नाम चित्ररेखा अस तासू * गुण गण सुभग बसै तनु जासू॥
सो करि विनय चढी तेहिसंगा * कीन्ह पयान रँगी सतरंगा ॥
रथ अकेल आवत कपि देखा * कायर डरपे हृदय विशेखा ॥
आवत मानि सबल रिपु कोऊ *नल अरु नील सुभट वर दोऊ॥
आये धाय सपदि तब आगे * युगल नारि तनु निरखन लागे॥
दोहा–समुझि बूझि वृत्तान्त दोउ, फिरि आये प्रभु पास ॥
वन्दि कंजपद उभय कह, सुनिये रमानिवास ॥२१६॥

१ दुःख । २ नाव । ३ स्त्री । ४ सुलोचना । ५ वर । ६ स्वामी । ७ शोभित । ८ रथ । ९ हाल

नाथ नरान्तककी दोउ नारी * आवत शरण प्रणत भयहारी ॥
सुनि रघुवीर हृदय मुसकाने * उतहि टिकावहु सखा सयाने ॥
सुनि प्रभुवचन बहुरि सो धाये * कटक विगत रथ दूरि टिकाये ॥
बिन्दुमती चित्तरेखा दूनो * विनयहमारि कीश अस सूनो ॥
कहहु जाइ तुम प्रभुहि बुझाई * केहि कारण हम दरश न पाई ॥
हम अबला कपि विनवैं तोहीं * बूझि नाथसन कहिये मोहीं ॥
नारिविनय सुनि कपि दोउभले * नीति विचारि राम पहँ चले ॥
विनती नारि जाय नल वरणी * सुनिविहँसिप्रभु तिनकीकरणी ॥
दोहा-परम मृदुल रघुनाथ चित, कहत सन्त बुध वेद ॥
ताकहँ देत न दरश प्रभु, सुनु खगेश सो भेद ॥२१७॥
प्रेम परीक्षा हित रघुनायक * कौतुक करतसमरसुखदायक ॥
नाथ सखा तब बहुरि बुझाई * पुनि नल नारिन पास पठाई ॥
कह कपि सुनहु नरान्तकनारी * दरशन तुमहिं न देत खरारी ॥
तुम गृह जाहु वचन मम मानी * बोलीं सो तिय वचन सयानी ॥
हम अबला दरशन हित आई * नयनसफलबिनु किमिगृहजाई ॥
यहि विधिकरतविनयदोउनारी * कीशन कटक कीन पैसारी ॥
आवत निकट जानि रिपुरवनी * यद्यपि पतिव्रतहैं सुखभवनी ॥
तदपि नाथ तेहि दरशनदेहीं * जाइ निकट विनती की तेहीं ॥
दोहा-प्रभु सीतापति जगतपति, सुरनरपति रघुनाथ ॥
देउ दरश करुणायतन, दीनबन्धु श्रुतिमाथ ॥२१८॥
बोले राम न सो तिय बोली * विमलज्ञानपतिव्रत अनुडोली ॥
नाथ सत्य यह नीति बखानै * पुरुष न परातिय स्वप्नेहुँ जानै ॥
प्राकृत पुरुषनकी यह रीती * जिनके हृदय कपट पर प्रीती ॥
समदरशी कछु दोष न स्वामी * सो विचारु प्रभु अन्तर्यामी ॥
आरतबन्धु विलंब न कीजै * करुणाकर वर दरशन दीजै ॥
नहिं बोले प्रभु पुनि सो कहई * तवयश असश्रुतिगावत अहई ॥

१ नम्र । २ लीला । ३ श्रीरामचंद्र । ४ शत्रुकी स्त्रियां ।

गौतमनारि राम तुम तारी * अधम जाति मिलनी निस्तारी॥
सुनि मम हृदय परी परतीती * अब प्रभु कस देखियविपरीती॥
दोहा-तारि तारि अधमनि अमित, बार बार श्रमजान ॥
तातें करत अनाकनी, मोरि ओर भगवान॥२१९॥
प्रभु मुसकाहिं न उत्तर देहीं * ताकर प्रेमपरीक्षा लेहीं ॥
बिकल उभय नारान्तकबाला * बार बार करि विनयविशाला ॥
धर्मधुरन्धर प्रभु अवतारा * केवल पतिव्रतधर्म हमारा ॥
जो हम सत्य सत्यतुम स्वामी * द्रवहु वेगि उर अन्तर्यामी ॥
वृथा करतकत प्रभु श्रुति भाषा * पूजत नाथ न मम अभिलाषा॥
लीन भयउ पतिप्राण राम महँ * अर्द्धभाग हम कहहु जाइँ कहँ ॥
वृन्दाचारित नाथ सुधि करहू * विनय हमारि वेगि उर धरहू ॥
विनय प्रीति सतधर्म जनाई * परीं प्रेमवश महि अकुलाई ॥
दोहा-पाहि पाहि रघुवंश मणि, हतहु न बिरुद प्रतीति ॥
प्रीतम प्रीति न नरकडर, तुम कहँ नाथ अनीति ॥ २२० ॥
सतीनिराश विनय सुनि वानी * पुलके दीनदयालु भवानी ॥
दुहुँन लीन निजकटक बुलाई * परीं युगल प्रभुपदतर आई ॥
तिन्हैं उठाय राम बैठावा * जगदीश्वर मृदुवचन सुनावा ॥
बिन्दुमती तैं परमसयानी * पति पदरति दृढ़ हृदयसमानी ॥
बहुत करहुँका तव गुण गाना * माँगु वेगि वर जो मन माना ॥
सुनत वचन लोचन जल बाढ़ी * जोरि युगल कर दोऊ ठाढ़ी ॥
प्रभु तुम दानि देव तरुवरसे * पदजलजात देखि सुरसरिसे ॥
परमपवित्र भईं हम दोऊ * हम सम धन्य नारि नहिंकोऊ॥
छंद-कोधन्य हम सम नारि जगमहँ सुनहु श्रीरघुनायकम्।
दै दरश कीन्हीं पतितपावन नाथ सुर अरिघायकम् ॥
अब कृपासागर यशउजागर देहु वर सुरभावरम् ॥
जेहि मिलैं पतिकहँ जाइ विनु श्रम बढै तव यश श्रीधरम्२५

१ अहल्या। २ शबरी। ३ कृपाकरहु। ४ भूमिमें। ५ त्राहि त्राहि। ६ दोनों। ७ आँखें। ८ कल्पवृक्ष। ९ गंगाजी।

सो०-यह कहि बिंदुकुमारि, साहित भाँति प्रभुपद परी ॥
तिन्हें उठाइ खरारि, जगमाता इमि कहत पुनि ॥ १८ ॥

धरहु धीर तुम जानि अब डरहू * निजपति लेहु भवन सुखकरहू ॥
केहउ देव हम कहँ यह नीका * हमहुँ कहत अब भावत जीका ॥
गिरिजासहित गिरीश बिरागी * नाथ तुम्हार दरश अनुरागी ॥
नारदादि सनकादिक जैसे * जप तप करहिं विविध विधि तैसे ॥
तेउ न कबहुँ हमारी नाईं * देखहिं पदजलजात अघाईं ॥
हरिदर्शन लवलेश प्रमाना * जगके सब सुख नाहिं समाना ॥
अमिय अघाइ गरल को खाई * विनय हमारि यहै सुरसाँई ॥
देहु कन्त शिर सपदि मँगाई * दयाशील सागर रघुराई ॥

दोहा-नारान्तककरशीश तब, दीन्ह मँगाइ रमेश ॥
पाइ स्वामिशिर मुदित है, बोली दोउ उरगेश ॥ २२१ ॥

नाथ विनय हम औरौ करहीं * दाहुबिना हमकेहि विधि जरहीं ॥
सुखसागर सुनि वचन प्रमाना * हनुमत अंगदादि भट नाना ॥
कह प्रभु सखा लंकमहँ धावहु * चन्दन अगर भार बहु लावहु ॥
पाइ राम अनुशासन धाये * लंका गढ गृह गृह सचुपाये ॥
कपिन शोधि चन्दन बहु भारा * लाये जहँ श्रीनाथ उदारा ॥
कह रघुवीर सुनहु लंकेशा * तात यहै बड हित उपदेशा ॥
बिंदुमती जहँ चाहत ठाऊ * दाह भार सँग तुम तहँ जाऊ ॥
दशकन्धर कर वैर विहाई * चिता चारु शुचि देहु बनाई ॥

दोहा-रघुवर आज्ञा धारि शिर, उठे दशानन भाइ ॥
अयुतभार चंदन अगर, तेहि सँग चले लिवाइ ॥ २२२ ॥

जहाँ जरी मघवाजित नारी * तेहि गहर शुचि चिता सँवारी ॥
तहवाँ अपर सौति मनुनारी * बिंदुमती मनभाव पियारी ॥
मूर्च्छित परीं प्रथम सुधि नाहीं * चली सुनतगतिदुखमनमाहीं ॥
चली चतुर्दश निशिचारि कैसे * निरखि दवास मृगगण जैसे ॥
हाहा बिंदुमती पतिप्यारी * कहाँ गई तुम हमहिं बिसारी ॥

१ घर । २ अमृत । ३ विष । ४ शीघ्र । ५ गरुड । ६ विभीषण । ७ सुन्दर । ८ दशहजार । ९ इंद्रजीतकी स्त्री सुलोचना ।

पहुँचीं सहविलाप तहँ सोऊ * हरषीं हृदय विलोकत दोऊ ॥
षोडश निशिचारि भईं सभागी * मन पुन्यकथ पतिपद अनुरागी॥
सकल अन्हाय मृतकअन्हवाईं * सुमिरत हृदय रामगतिदाई ॥
दोहा–उत दशकन्धर जगेउ जाउ, सुनेउ श्रवण सबहेतु ॥
संगमँदोहारि आदि तिय, गवना लै खगकेतु ॥ २२३ ॥
बाजत ढोल कपिन्हं सुनिकाना * आपने मन तिन अस अनुमाना।
आव युद्ध हित उत कोउ वीरा* हमकहँ ठाढ करत यहितीरा॥
कीश अयुत तब प्रभुपहँ आये * पूरणप्रेम चरण शिरनाये ॥
नाथ उताहि दशकंधर जाता * कीश एक कह सनु जनत्राता ॥
प्रभुकह कुमुद तुरत तुमधावहु* वेगि विभीषण कहँ लै आवहु ॥
राम रजाइ सुशिर धरि धाये * सपदि विभीषण पहँ सोआये ॥
तात तुमहिं रघुराज बुलावा * सुनत लंकपति आतुर आवा ॥
हेतु पतोहुन कहि समुझावा * कुमदसहित रघुपतिपहँ आवा॥
दोहा–मोहनिशा तहँ तरुण रवि, तिन चरणन शिरनाइ ॥
भाग्यवंत रावण अनुज, बैठेउ प्रभु रुख पाइ ॥ २२४ ॥
दशमुख तियनसहित गातहँवाँ* बिंदुमती चितरेखा जहँवाँ ॥
देखत अतिबिलखा बिबुधारी * करुणाकरत निशाचरं झारी ॥
सासु श्वशुर कहँ देखि दुखारी * शान नवीन नरांतकनारी ॥
कहि शुचिगाथं सबन समुझाई * स्वामि समेत चितापर आई ॥
यथायोग्य बैठीं सब तैसे * पतिगृह रहत रहीं नित जैसे ॥
अग्नि दीन ज्वाला अति धाई * पहुँचीं सुरपुर सब तिय जाई ॥
देखि दशा तिनकी सुररवनी *तिनहिंसराहि भवननिजगवनी॥
रावण सहित युवति निजगेहा * गयो भरोसा सति संदेहा ॥
छंद–संदेह सासत भरेउ रावण सहित दारनि गृह गयो ।
इमिमयसुतादिकनिशिचरिनिलखिविकलसबमूर्च्छितभयो॥
दशमाथ गति देखत विपुल बिलखैं निशाचर निशिचरी ।
संताप शोक विलाप भय भ्रम कटक लंकामहँ परी ॥ ३६ ॥

१ सोलह । २ बन्दरन । ३ दशहजार । ४ राक्षसी । ५ पवित्रकथा । ६ देववधू ।

दोहा--राम विरोधिहिं जस उचित, तसदिन पहुँचा आइ ॥
सो विचार करि लंक गढ, उतरी विपति बजाइ ॥ २२५ ॥

इहाँ देव देवायसु जाना * वर आसन शोभित भगवाना ॥
यथायोग्य बैठे मृगशाखा[1] * सब कीन्हें प्रभुपद अभिलाषा॥
रिपु बड़ मरेउ हर्ष सबके मन * पुनि पुनि हेरतसुभगश्यामतन॥
तिनकी रुचि लखिदीनदयाला * शिवयश गावहु कहा कृपाला ॥
भरद्वाज प्रभु आज्ञा पाई * गावहि कपि कलकंठ[2] लजाई ॥
डमरु भृंगि शृंगीः करतारी * घ्राण[3] पाणि[4] मुखते वनचारी ॥
गोंडर तन्तु वेणु मंजीरा * शंख मृदंग नाद गंभीरा ॥
नृत्यत कीशभाव दिखरावत * शिवासहित शिवकीरतिगावत॥

छंद--शिवाशिवा कीरति विमलगावत भालु वानर सुखभरे ।
अहिनाथयुत रघुनाथ छबि निरखत सकल चितपदधरे ॥
प्रभु देखि कौतुक अनुजसाहित सखन बखानत श्रीमुखम् ॥
तुलसी पगे यहि ध्यान जे जन पाइहैं नित यशसुखम् ॥३७॥

सो०--गत रजनी युग याम, तब कीशन करुणाअयन[5] ॥
करि पूरण मन काम, सबनि कहेउ राजहु थलन ॥ १९ ॥

बैठे निज निज थल रणधीरा * अनुजसहित राजत रघुवीरा ॥
सुखमासीवं[6] सेनयुत राजैं * जयजय ध्वनि कपिभालुसमाजैं
उमा चरित यह रुचिर[7] सुहावा * नाथ कृपा मैं तुमहिं सुनावा ॥
अपर[8]चरित गिरिराजकुमारी[9] *सुनहु कहत तव प्रीति निहारी॥
वहाँ मध्य निशि रावण जागा*कोउकोउसचिवशिखावनलागा॥
उग्र शिखावन कहि बुधि बाँके* थके न कछु मन मानै ताके ॥
रावण मन औरै कछु लसई * मेटि को सकै जोविधिउरबसई॥
प्रभुविरोध करि चहकल्याना * मोहविवश सो शठ अज्ञाना ॥

इति क्षेपक ।

१ वानर । २ कोकिल । ३ नाक । ४ हाथ । ५ दयाके धाम श्रीरामचन्द्रजी । ६ मर्य्यादा । ७ सुभग । ८ और चरित्र । ९ पार्वती ।

वचन सुनत तेइँ कछु सुखमाना * कालविवश जस तीरथज्ञाना ॥
इहिविधिजलपत भाभिनुसारा * लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा ॥
सुभट बुलाय दशानन बोला * रणसन्मुख जाकर मनडोला ॥
सो अबहीं बरु जाहु पराई * रणसन्मुख भागे न भलाई ॥
निज भुजबल मैं वैर बढ़ावा * देहौं उतर जो रिपु चढि आवा ॥
असकहि मरुतवेग रथ साजा * बाजहिं सकल जुझाऊ बाजा ॥
चले वीर सब अतुलित बली * जनु कज्जल गिरि आँधीचली ॥
अशकुन अमितहोहिं तेहिकाला * गनै न भुजबल गर्व विशाला ॥
छंद–अतिगर्व गनत न शकुन अशकुन स्त्रवहिं आयुध हाथते ।
भट गिरहिं रथते वाजि गज चिक्करत भाजत साथते ॥
गोमायु गृध्र शृगाल खररव श्वानं बोलहिं अति घने ॥
जनु कालदूत उलूक बोलहिं सकल परम भयावने ॥ ३८ ॥
दोहा–ताहि कि सम्पति शकुन शुभ, स्वप्नेहु मन विश्राम ॥
भूतद्रोह रत मोहवश, रामविमुख रतकाम ॥२२६॥
चली निशाचर अनी अपारा * चतुरंगिनी चमू बहुधारा ॥
विविध भाँति वाहन रथ याना * विपुलवरणपताक ध्वजनाना ॥
चले मत्तगज यूथ घनेरे * मनहुँ जलद मारुतके प्रेरे ॥
वर्ण वर्ण वर दैत्य निकाया * समर शूर जानहिं बहु माया ॥
अति विचित्र वाहिनी विराजी * वीर वसन्तसेन जनु साजी ॥
चलतकटक दिगसिन्धुरडगहीं * क्षुभितपयोधिकुधरडगमगहीं ॥
उठी रेणु रवि गयउ छिपाई * पवन थकितवसुधा अकुलाई ॥
पणव निशान घोररव बाजहिं * महाप्रलयके जनु घन गाजहिं ॥
भेरि नफीरि बाज सहनाई * मारूराग शूर सुखदाई ॥
केहरिनाद वीर सब करहीं * निजनिजबल पौरुषअनुसरहीं ॥
कहै दशानन सुनहु सुभट्टा * मर्दहु भालु कपिनकर ठट्टा ॥
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई * अस कहि सन्मुख सैनचलाई ॥

१ बायु । २ कुत्ता । ३ घुग्घु । ४ मेघ । ५ हवा । ६ दिग्गज । ७ समुद्र । ८ पर्वत । ९ पृथ्वी । १० सिंहनाद ।

यहसुधि सकलकपिन जबपाई * धाये करि रघुवीर दुहाई ॥
छंद-धाये विशाल कराल मर्कट भालु काल समानते ।
मानहु सपक्ष उडाहिं भूधर वृन्द नाना वाणते ॥
नख दशन शैलन करन द्रुमगहि सबल शंक न मानहीं ॥
जय राम रावण मत्तगज मृगराज सुयश सुनावहीं ॥३१॥
दोहा-दुहुँ दिशि जयजयकार करि, निज निज जोरी जानि ॥
भिरे वीर इत रघुपतिहिं, उत रावणहिं बखानि ॥ २२७ ॥
रावण रथी विरथ रघुवीरा * देखि विभीषण भयउ अधीरा ॥
अधिक प्रीति उर भा संदेहा * वन्दिचरण कह सहित सनेहा ॥
नाथ न रथ नाहीं पदत्राना * केहिविधि जीतब रिपुबलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना * जेहि जयहोइ सोस्यन्दनआना॥
शौरज धर्म जाहि रथचाका * सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल³ विवेक⁴ दम⁵ परहित⁶ घोरे * क्षमा⁷ कृपा⁸ समता रजु जोरे ॥
ईशभजन सारथी सुजाना * विरति चर्म सन्तोष कृपाना ॥
दान परशु बुधि शक्ति प्रचण्डा * वर विज्ञान कठिन कोदण्डा ॥
संयम नियम शिलीमुख नाना * अमलअचलमनत्रोणसमाना॥
कवच अभेद विप्रपदपूजा * इहिसम विजय उपाय नदूजा ॥
सखा धर्ममय अस रथजाके * जीतन कहँ न कतहुँ रिपुताके॥
दोहा-महाघोर संसार रिपु, जीति सकै सो वीर ॥
जाके अस रथ होइ दृढ, सुनहु सखा मतिधीर ॥२२८॥
सुनत विभीषण प्रभुवचन, हर्षि गहे पदकंज ॥
इहि विधि मोहिं उपदेश किय, रामकृपा सुखपुंज ॥२२९॥
उतप्रचार दशकन्धर, इत अंगद हनुमान ॥
लरत निशाचर भालु कपि, करिनिज निजप्रभुआन ॥२३०॥
सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना * देखहिं रण नभ चढ़े विमाना ॥
हमहूँ उमा रहे तेहि संगा * देखत रामचरित रणरंगा ॥

१ कपि । २ वृक्ष । ३ शरीरबल, विद्याबल बुद्धिबल । ४ सारासार को विचार सारको ग्रहण असारको त्याग । ५ पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच कर्मेंद्रियं इनको स्वाधीन रखना । ६ मन बचनकर्मते पराया उपकार करे ये चारघोडे । ७ सहना । ८ अहेतु दीनोंपर द्रवना ॥

सुभट समररस दुहुँ दिशि माते * कपि जयशीलरामबल ताते ॥
एक एक सन भिरहिं प्रचारहिं * एकन एक मर्दि महि पारहिं ॥
मारहिं काटहिं धरणि पछारहिं * शीश तोरि शीशनसन मारहिं ॥
उदर विदारहिं भुजा उपारहिं * गहिपदअवनिपटकि भटडारहिं ॥
निशिचर भटमहि गाडहिं भालू * ऊपर डारि देहिं बहु बालू ॥
वीर बली मुख युद्ध विरुद्धा * देखिय विपुल काल जनुक्रुद्धा ॥
छंद–क्रुद्धे कृतान्त समान कपि तनु स्रवत शोणित राजहीं ।
मर्दहिं निशाचर कटक भट बलवंत जिमि घन गाजहीं ॥
मारहिं चपेटन काटि दाँतन डारि लातन मींजहीं ।
चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिंजेहिखलछीजहीं ॥४० ॥
धरि गाल फारहिं उर विदारहिं गल अंतावरि मेलहीं ।
प्रह्लादपति जनु विविध तनु धरि समर अंगन खेलहीं ॥
धरु मारु काटि पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही ।
जयराम जो तृणते कुलिश करु कुलिशते करु तृणसही ४१॥
दोहा–निजदल विचल विलोकि तब, बीशभुजा दशचाप ॥
चला दशानन कोप करि, फिरहु फिरहु करिदाप ॥ २३१॥
धावा परम क्रोध दशकन्धर * सन्मुख चले हूह करि बन्दर ॥
गहि गिरि पादप उपल पहारा * डारहिं तिहिंपरएकहि बारा ॥
लागहिं शैल वज्र तनु तासू * खण्ड खण्ड होइ फूटहिं आसू॥
चला न अचल रहा रथ रोपी * रणदुर्मद रावण अति कोपी ॥
इत उत झपटि दपकि कपियोधा * मरदै लाग भयो अति क्रोधा ॥
चले पराय भालु कपि नाना * त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥
पाहि पाहि रघुवीर गुसाईं * यह खल आव कालकी नाईं ॥
तेहि देखे कपि सकल पराने * दशहु चाप सायक सन्धाने ॥
छंद–संधानिधनुशर निकरछाँडेसिउरगजिमिउड़िलागहीं ।
रहे पूरिशर धरणीगगनदिशि विदिशि कहँकपिभागहीं ॥

१ हृदय । २ वज्र । ३ युद्धमद । ४ धनुष । ५ सर्प । ६ आकाश ।

भा अति कोलाहल विकल दल कपि भालु बोलहिं आतुरे।
रघुवीर करुणासिन्धु आरतबन्धु जन रक्षकहरे ॥ ४२ ॥
दोहा–बिचलत देखा कपिकटक, कटिनिषंग धनु हाथ ॥
लक्ष्मण चले सकोप तब, नाइ रामपद माथ ॥ २३२ ॥
रे खल का मारसि कपि भालू * मोहिं बिलोकु तोर मैं कालू ॥
खोजत रहेउँ तोहिं सुतघाती * आजु निपाति जुड़ावौं छाती ॥
कहिअस छाँडेसि बाण प्रचंडा * लक्ष्मण किये तुरत शतखंडा ॥
कोटिन आयुध रावण डारे * तिलप्रमाण प्रभु काटि निवारे ॥
पुनि निजबाणन कीन्ह प्रहारा * स्यन्दन भंजि सारथी मारा ॥
शत शत शर मारे दशभाला * गिरिशृंगन जनुप्रविशहिंव्याला॥
पुनि शत शर मारे उरमाहीं * परेउ अवनि तनु सुधिकछु नाहीं
उठा प्रबल पुनि मूर्च्छा जागी * छाँडेसि ब्रह्मदत्त जो साँगी ॥
छंद–जोब्रह्मदत्त प्रचण्ड शक्ति अनन्त उर लागीसही।
पर्‌यो विकलवीर उठाव दशमुख अतुलबल महिमारही ॥
ब्रह्माण्ड भुवन विराज जाके एक शिर जिमि रजकनी।
तेहि चह उठावन मूढ रावण जान नहिं त्रिभुवनधनी॥ ४३
दोहा–देखत धावा पवनसुत, बोलत वचन कठोर ॥
आवत तेहि उर महँ हनेउ, मुष्टि प्रहार प्रघोर ॥ २३३ ॥
जानु टेकि कपि भूमि न परेऊ * उठा सँभारि बहुरि रिस भरेऊ॥
मुष्टिक एक ताहि कपि मारा * परेउ शैल जिमि वज्र प्रहारा ॥
मूर्च्छा गई बहुरि सो जागा * कपि बल विपुल सराहनलागा॥
धृक धृक धृक बल पौरुष मोही * जो तैं जियत उठा सुरद्रोही ॥
असकहिकहिलक्ष्मणकहँल्याये* देखि दशानन विस्मय पाये ॥
कह रघुवीर समुझि जियभ्राता* तुम कृतांतभक्षक सुरत्राता ॥
सुनत वचन उठि बैठ कृपाला * गगन गई सो शक्ति कराला ॥
पुनि कोदण्ड बाण गहि धाये * रिपुसन्मुख अति आतुर आये॥

१ दुःखित। २ मारि। ३ सौटुकडे। ४ रथ। ५ सर्प। ६ बहुत। ७ शोक।
८ काल। ९ देवतोंके रक्षक। १० धनुष।

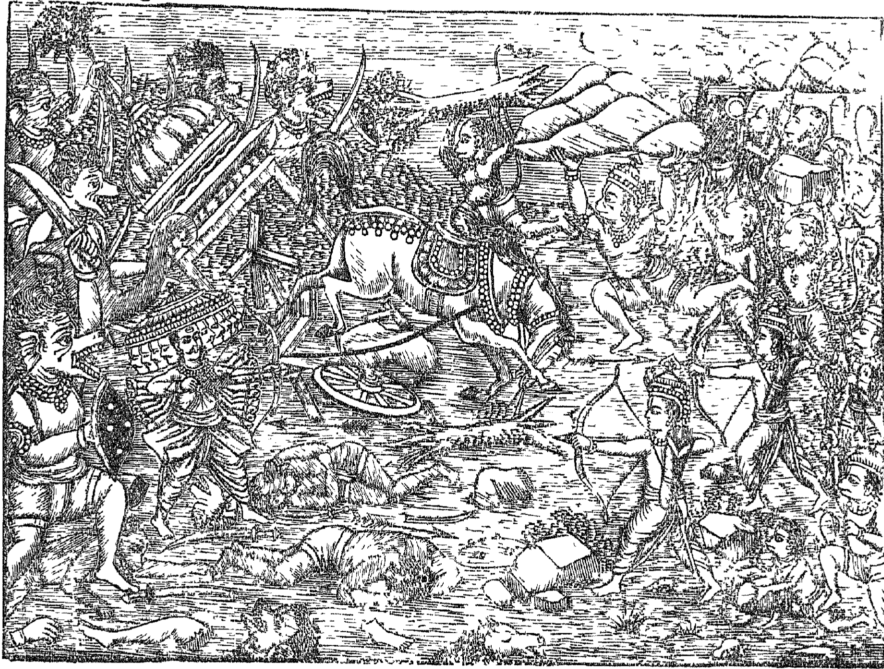
छंद–आतुर बहोरि विभंजिस्यंदन सूतहति व्याकुलकियो ।
गिरचो धरणि दशकंधर विकल तनु बाण शत वेधो हियो ॥
सारथी रथ घालि दूसर ताहि लंका लै गयो ।
रघुवीरबन्धु प्रतापपुंज बहोरि प्रभु चरणन नयो ॥ ४४ ॥
दोहा–वहाँ दशानन जाइकै, करन लाग कछु यज्ञ ॥
जय चाहत रघुपति विमुख, शठ हठवश अतिअज्ञ ॥२३४॥
यहाँ विभीषण जब सुधि पाई * सपदि जाय रघुपतिहि सुनाई॥
नाथ करै रावण इक यागा *सिद्धि भये नहिं मरिहि अभागा॥
पठवहु नाथ वेगि भट बन्दर * करहिं विध्वंस आवदशकंधर ॥
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये * हनुमदादि अंगद सब धाये ॥
कौतुक कूदि चढे कपि लंका * पैठे रावण भवन अशंका ॥
जबहीं यज्ञ करत तेहि देखा *सकलकपिन भा क्रोध विशेखा॥
रणते भागि निलज गृह आवा * यहाँ आइ बकध्यान लगावा ॥
अस कहि अंगद मारेउ लाता* चितव न शठ स्वारथ मनराता॥
छंद–नहिंचितवजब कपिकोपितब गहिदशन लातन मारहीं ।
धरि केश नारि निकारि बाहर तेपि दीन पुकारहीं ॥
तब उठा कोपि कृतांतसम गहि चरण वानर डारहीं ॥
इहि भाँति यज्ञ विध्वंस करि कपि नेकुमनहिं नहारहीं ॥४५॥
दोहा–मखविध्वंस करि कपि सकल, आये रघुपति पास ॥
चला दशानन क्रोध करि, छाँडी जियकी आश ॥ २३५ ॥
चलतहोहिं तेहिअशुभ भयंकर* बैठहिं गृध्र उड़ाहिं शिरन पर ॥
भयउ कालवश कहा न माना * कहेसि बजावहु युद्धनिसाना ॥
चली तमीचर अनी अपारा * बहु गज रथ पदचर असवारा ॥
प्रभुसन्मुख खल धावहिं कैसे * शलभसमूह अनल कहँ जैसे ॥
इहाँ देव सब विनती कीन्हीं * दारुणविपतिहमहिं इनदीन्हीं ॥
अब जनि नाथ खेलावहु एही * अतिशय दुखित होति वैदेही ॥

१ सारथी । २ दांत । ३ बाल । ४ राक्षसी सैन्य । ५ पतंगसमूह ।

देववचन सुनि प्रभु मुसुकाना * उठि रघुवीर सुधारेउ बाना ॥
जटाजूट दृढ़ बाँधी माथे * सोहत सुमन बीच बिच गाथे ॥
अरुणनयन वारिदतनु श्यामा * अखिललोकलोचनअभिरामा॥
कटि तट परिकर कसे निषंगा * कर कोदण्ड कठिन सारंगा ॥
छंद-सारंगकर सुन्दर निषंग शिलीमुखाकर कटि कस्यो ।
भुजदण्ड पीन मनोहरायत उर धरा सुरपद लस्यो ॥
कह दासतुलसी जबहिं प्रभु शर चाप कर फेरन लगे ।
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे॥ ४६॥
दोहा-हर्षे देव बिलोकि छबि, वर्षहिं सुमन अपार ॥
जय जय प्रभु गुण ज्ञान बल, धाम हरण महिभार ॥२३६॥
इहिके बीच निशाचर अनी * कसमसाति आई अतिघनी ॥
देखि चले सन्मुख कपिभट्टा * प्रलयकालके जिमि घनघट्टा ॥
शक्ति शूल तरवारि चमकहिं *जनुदशदिशि दामिनीदमकहिं॥
गज रथ तुरंग चिकार कठोरा * गर्जत मनहुँ बलाहक घोरा ॥
कपिलंगूर विपुल नभ छाये * मनहुँ इन्द्रधनु उदय सुहाये ॥
उठी रेणु मानहु जलधारा * बाणवृन्द भइ वृष्टि अपारा ॥
दुहुँ दिशि पर्वत करत प्रहारा * वज्रपात जनु बारहिं बारा ॥
रघुपति कोपि बाण झरिलाई * घायल भे निशिचर समुदाई ॥
लागत बाण वीर चिक्करहीं * घुर्मि घुर्मिअगणित महिपरहीं॥
स्रवहिं शैल जनु निर्झर वारी * शोणितसर कादर भय भारी ॥
छंद-कादर भयंकर रुधिर सरिता चली परम अपावनी ।
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अवर्त बहति भयावनी ॥
जलजन्तु गज पदचर तुरँग रथ विविध वाहनको गने ।
शर शक्ति तोमर सर्प चाप तुरंग चर्म कमठ घने ॥ ४७॥
दोहा-वीर परे जनु तीरतरु, मज्जा बह जनु फेनु ॥
कादर देखत डरहिं जिय, सुभटनके मन चैन ॥ २३७॥

१ आनन्ददाता । २ मुनिपट पहिरे । ३ पुष्प । ४ भृगुलात । ५ मेघ । ६ पूँछ । ७ वर्षा । ८ पर्वत । ९ रुधिरके तालाब । १० ढाल । ११ कछुआ ।

राम गवण समर ।



मज्जहिं भूत पिशाच वैताला * केलि करहिं योगिनी कराला ॥
काक कंक ले भुजा उड़ाहीं * इकते एक छीनि धरि खाहीं ॥
एक कहहि ऐसिउ बहुताई * शठ तुम्हार दारिद्र न जाई ॥
कहरत भट घायल तट गिरे * जहँ तहँ मनहुँ अर्द्धजल परे ॥
खैंचहिं आँत गृध्र तट भये * जनु बंशी खेलत चित दये ॥
बहुभट बहे चढे खग जाहीं * जिमि नावरि खेलहिंजलमाहीं॥
योगिनिभरि भरिखप्परसाचहिं* भूतपिशाचविविधविधनाचहिं ॥
भट कपाल करताल बजावहिं* चामुण्डा नानाविधि गावहिं ॥
जम्बुक निकर तहाँ कटकटहीं * खाहिं अघाहिं हुआहिंदपटहीं॥
कोटिन रुण्डमुण्डविनडोलहिं * शीशपरेमहिजयजयबोलहिं ॥
छंद–बोलहिं जो जय जय रुण्ड मुण्ड प्रचण्ड शिर विनु धावहीं॥
परिणाम युद्ध अगुद्ध बोलहिं सुभट सुरपुर पावहीं ॥
निशिचर वरूथनि मर्दि गर्जहिं भालु कपि दर्पित भये ॥
संग्राम अंगन सुभट सोहहिं रामशर निकरनहये ॥४८॥

१ गृध्र । २ देवी ।

"सो०–सप्त दिवस दिन रात, बाजेउ घंटा धनुष कर ॥
हरि पूजाकी भाँत, भये सुभट संहार सब ॥
दोहा–घंटाकी परमान अब सुनिये संगर बीच ॥
नाग अयुत दशलाखहैं, रथी डेढ शत मीच ॥
मरहिं कोटि दश पैदर जबहीं * नाचत इक कबंध रण तबहीं ॥
नृत्यकरहिं जब कोटि कबन्धा * तब इक खेचर उठत निबंधा ॥
खेचर कोटि नचहिं निहकंटा * तब इक धनुकर बाजत घंटा ॥
श्लोक–एवं सप्तदिनख्यातं स्वर्गे मर्त्ये रसातले ॥
अभूद्भूरि भटध्वंसो रामरावणसंगरे" ॥
दोहा–हृदय विचारिसि दशवदन, भा निशिचर संहार ॥
मैं अकेल कपि भालु बहु, माया करौं अपार ॥२३८॥
देवन प्रभुहि पयादहि देखा * उर उपजा अति क्षोभ विशेषा॥
सुरपति निजरथ तुरत पठावा * हर्षसहित मातलि लै आवा ॥
तेजपुंज रथ दिव्य अनूपा * विहँसि चढे कौशलपुरभूपा ॥
चंचल तुरँग मनोहर चारी * अजरअमर मानस गतिहारी ॥
रथारूढ रघुनाथहिं देखी * धाये कपि बल पाइ विशेखी ॥
सही नजाइ कपिनकी मारी * तब रावण माया विस्तारी ॥
सो माया रघुवीरहिं बाँची * सब काहू मानी कर साँची ॥
देखी कपिन निशाचरअनी * बहु अंगद कपि लक्ष्मण धनी ॥
छंद–बहु वालिसुत लक्ष्मण कपीश विलोकि मर्कट अपडरे ॥
जनु चित्र लिखित समेत लक्ष्मण जहँ सो तहँ चितवतखरे।
निज सेन चकित विलोकि हँसि धनु तानिशर कोशलधनी।
माया हरि हरि निमिष महँ हर्षी सकल मर्कट अनी ॥४९॥
दोहा–बहुरि राम सब तन चितै, बोले वचन गँभीर ॥
द्वन्द्वयुद्ध देखहु सकल, श्रमित भये अति वीर॥२३९॥

१ संदेह। २ इन्द्र। ३ वृद्धतासे रहित। ४ किसीके मारे न मरै। ५ द्वन्द्वकही तीनों लोकमें न ऐसा युद्ध हुआ न होगा जैसा हमारा और रावणका होगा तुम खडे देखो।

असकहि रथ रघुनाथ चलावा * विप्रचरण पंकज शिरनावा ॥
तब लंकेश क्रोध करि धावा * गर्जि तर्जि प्रभुसन्मुख आवा॥
जीतेहु जो भट संयुग माहीं * सुन तापस मैं तिनसम नाहीं॥
रावण नाम जगत यश जाना * लोकप जेहिके बंदीखाना ॥
खर दूषण विराध तुम मारा * हतेउ व्याधइव वालिविचारा ॥
निशिचर सुभट सकल संहारे * कुम्भकर्ण घननादहि मारे ॥
आज करौं खल कालहवाले * परेउ कठिन रावणके पाले ॥
आजु वैर सब लेउँ निबाही * जो रणभूमि भागि नहिं जाही॥
सुनि दुर्वचन कालवश जाना * कहेउ विहँसि तबकृपानिधान॥
सत्य सत्य तव सब प्रभुताई *जनि जल्पसि देखव मनुसाई ॥

छन्द हरिगातिका ।

जनिजल्पनाकरि सुयशनाशहि नीतिसुनि शठ करु क्षमा ।
संसार महँ पूरुष विविध पाटल रसाल पनसःसमा ॥
इक सुमनप्रद इक सुमनफल इक फलै केवल लागहीं ।
इक कहहिं करहिं न एक कहिकरएककरहिंनवागहीं ॥५०॥

दोहा–राम वचन सुनि विहँसि कह, मोहिं शिखावहु ज्ञान ॥
वैर करत तब नहिं डरेहु, अब लागत प्रियप्रान ॥२४०॥

कहि दुर्वचन क्रोधि दशकन्धर * कुलिशसमानलाग छाँडनशर॥
नानाकार शिलीमुख धाये * दिशिअरुविदिशिगगनमहँछाये
अनलबाण छाँडे रघुवीरा * क्षणमहँ जरे निशाचर तीरा ॥
छाँडेसि तीव्र शक्ति खिसियाई * बाणसंग प्रभु फेरि पठाई ॥
कोटिन चक्र त्रिशूल पवाँरे * तृणसमान प्रभु काटि निवारे ॥
विफल होइँ रावणशर कैसे * खलके सकल मनोरथ जैसे ॥
तबशतबाण सारथिहिमारेसि * परे भूमि जय राम पुकारेसि ॥
राम कृपा करि सूत उठावा * तब प्रभु परम क्रोधउर आवा ॥

१ संग्राम- गिनती- शीघ्र । २ इन्द्रादिक । ३ बारबार अपने मुखसे अपनी प्रशंसा मतकर । ४ आम । ५ वज्र । ६ दिशोंके कोने आग्नेय, ईशान, नैर्ऋत्य, वायव्य । ७ रथहांकनेवालेको ।

छंद–भये क्रुद्ध युद्ध विरुद्ध रघुपति त्रोण सायक कसमसे ।
कोदण्ड धुनि सुनि चण्ड अति मनुजाद भय मारुतग्रसे ॥
मन्दोदरी उर कम्प कम्पित कमठ भूधर अतित्रसे ।
चिक्करहिं दिग्गज दशनगहि महि देखि कौतुक सुरहँसे५१॥

दोहा–तानिशरासन श्रवण लगि, छाँड़े विशिख कराल ॥
रामबाण नभ मग चले, लहलहात जनु व्याल ॥ २४१ ॥

चले बाण सपक्ष जनुउरगा * प्रथमहिं हते सारथी तुरगा ॥
रथ विभंजि हनि केतु पताका * गर्जा अति अन्तर बल थाका ॥
तुरत आनरथ चढि खिसियाना * छाँडेसि अस्त्र शस्त्र विधिनाना ॥
विफल होइँ सब उद्यम ताके * जिमि परद्रोह निरतमनसाके ॥
तब रावण दशशूल चलाये * बाजि चारि महि मारि गिराये ॥
तुरँग उठाइ कोपि रघुनायक * छाँडे अति कराल बहु सायक ॥
रावण शिर सरोज वनचारी * चले रघुनाथ शिली मुखधारी ॥
दश दश बाण भाल दश मारे * निसरिगये चल रुधिर पनारे ॥
स्रवत रुधिर धावा बलवाना * प्रभु पुनिकृत धनु शरसंधाना ॥
तीस तीस रघुवीर पवाँरे * भुजन समेत शीश महि पारे ॥
काटतही पुनि भये नवीने * राम बहोरि भुजा शिर छीने ॥
प्रभु बहुवार बाहु शिर हये * कटित झटित पुनि नूतन भये ॥
पुनि पुनिप्रभुकाटहिंभुजशीशा * अति कौतुकीकोशलाधीशा ॥
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू * मानहुँ अमित केतु अरु राहू ॥

छंद–जनु राहु केतु अनेक नभ पथ स्रवत शोणित धावहीं ।
रघुवीरतीर प्रचण्ड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥
इक एक शिर शर निकर छेदे नभ उड़त इमि सोहईं ।
जनु कोपि दिनकर करनिकर जहँ तहँ विधुन्तुदपोहईं॥५२॥

१ राक्षस । २ कान । ३ बाण । ४ सर्प्प । ५ वीर । ६ बर्छी । ७ घोडे । ८ लोहू । ९ टपकत । १० राहु केतु ।

दोहा–जिमिजिमिप्रभुहततासुशिर, तिमितिमिहोहिंअपार ॥
सेवत विषय विवर्द्धजिमि, नित नित नूतन मार ॥ २४२ ॥

दशमुख दीख शिरनकी बाढी * बिसरा मरण भई रिस गाढी ॥
गरजेउ मूढ महाअभिमानी * धायउ दशहु शरासन तानी ॥
समरभूमि दशकन्धर कोपा * वर्षि बाण रघुपति रथ तोपा ॥
दण्ड एक रथ देखि न परेऊ * जनु निहार महँ दिनकर दुरेऊ॥
हाहाकार सुरन सब कीन्हा * तब प्रभुकोपि धनुष कर लीन्हा॥
शर निवारि रिपुके शिर काटे *ते दिशि विदिशि गगन महिपाटे॥
काटे शिर नभ मारग धावहिं*जयजय ध्वनिकहिभयउपजावहिं
कहँ लक्ष्मण हनुमन्त कपीशा * कहँ रघुवीर कोशलाधीशा ॥

छंद–कहँ राम कहि शिरनिकरधावहिं देखिमर्कट भजिचले ।
सन्धानि शर रघुवंशमणि तब शरन शिर बेधे भले ॥
शिरमालिका गहि कालिका तहँ वृन्द वृन्दनि सों मिलीं ।
करि रुधिर सर मज्जन मनहुँ संग्रामवट पूजनचलीं॥५३॥

दोहा–पुनि रावण अति कोप करि, छाँडी शक्ति प्रचण्ड ॥
सन्मुख चली विभीषणहि, मनहुँ काल कोदण्ड ॥ २४३ ॥

आवत देखि शक्ति अतिभारी * प्रणतारत हरि बिरुद सँभारी ॥
तुरत विभीषण पाछे मेला * सन्मुख राम सहेउ सो शेला ॥
लगी शक्ति मूर्च्छा कछु भई * प्रभुकृत खेल सुरन विकलई ॥
देखि विभीषण प्रभु श्रमपायउ *गहिकर गदा क्रोधकरि धायउ॥
रेअभाग्य शठ मन्द कुबुद्धे * तैं सुर नर मुनि नाग विरुद्धे ॥
सादर शिव कहँ शीश चढाये * एक एकके कोटिन पाये ॥
तेहि कारण खल अब लगि बाचा*अब तव काल शीशपर नाचा ॥
रामविमुख शठचहसि सम्पदा * अस कहि हनेसि माँझ उरगदा॥

१ कुहिरा । २ सूर्य । ३ माला बनाके । ४ शक्ति । ५ देवता ।

छंद-उरमाँझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत महिपर्यो ।
दशवदन शोणित स्रवत पुनि संभारि धायो रिसि भर्यो ॥
दोउ भिरे अति बल मल्लयुद्ध बिलोकि एकहि इक हनै ।
रघुवीर बल गर्वित्त विभीषण माल नहिं ताकहँ गनै ॥५४॥

दोहा-उमा विभीषण रावणहिं, सन्मुख चितव कि काउ ॥
भिरत सो काल समान अब, श्रीरघुवीर प्रभाउ ॥ २४४ ॥

देखा श्रमित विभीषण भारी * धावा हनूमान गिरिधारी ॥
रथ तुरंग सारथी निपाता * हृदय माँझ मारेउ तेहि लाता ॥
ठाढ रहा अति कम्पित गाता * गयउ विभीषण जहँ जनत्राता॥
पुनि रावण तेहि हतेउ प्रचारी * चला गगन कपि पूँछ पसारी ॥
गहेसि पूंछ कपिसहित उडाना* पुनि नभ भिरेउ प्रबलहनुमाना॥
लरत अकाश युगलसमयोधा* हनत एक एकहि करि क्रोधा ॥
शोभित नभछल बल बहुकरहीं*कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीं॥
बुधिबल निशिचर परै न पारा * तब मारुतसुत प्रभुहि सँभारा॥

छंद-संभारि श्रीरघुवीर धीर प्रचारि कपि रावण हन्यो ।
महि परत पुनि उठिलरत देवन युगल कहँ जयजय भन्यो॥
हनुमन्त संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले ॥
रणमत्तरावण सकल सुभट प्रचंड भुजबल दलिमले ॥५५॥

दोहा-राम प्रचारे वीर सब, धाये कीश प्रचण्ड ॥
कपिदल विपुल विलोकितेइँ,कीन्ह प्रकट पाखण्ड ॥२४५॥

अन्तर्द्धान भयो क्षण एका * पुनि प्रकटेसि खल रूपअनेका॥
रघुवर कटक भालु कपि जेते * जहँ तहँ प्रकट दशानन तेते ॥
देखे कपिन अमित दशशीशा * भागे भालु विकल भटकीशा ॥
चले बलीमुख धरहिं न धीरा * त्राहि त्राहि लक्ष्मण रघुवीरा ॥

१ पर्वतलेके । २ श्रीरामचंद्र । ३ स्मरणकिया ।

दश दिशि कोटिन धावहिंरावन * गर्जहिं घोर कठोर भयावन ॥
डरे सकल सुर चले पराई * जयकी आशा तजहु रे भाई ॥
सब सुर जिते एक दशकन्धर * अब बहुभये तकहु गिरिकंदर ॥
रहे विरंचि शंभु मुनि ज्ञानी * जिन जिन प्रभुकीमहिमाजानी ॥

छंद–जानहिं प्रताप ते रहे निर्भय कपिन रिपु मानेउफुरे ।
चले विकल मर्कट भालु सकल कृपालु पाहि भयातुरे ॥
हनुमन्त अंगद नील नल बलवन्त अति रणबाँकुरे ।
मर्दहिं दशानन कोटि कोटिन्ह कपट भटके आँकुरे ॥ ५६ ॥

दोहा–सुर वानर देखे विकल, हँसे कोशलाधीश ॥
साजि शरासन निमिष महँ, हरे सकल दशशीश ॥ २४६ ॥

प्रभु क्षण महँ माया सब काटी * जिमि रविउदय जाहि तम[१] फाटी
रावण एक देखि सुर हर्षे * विपुल सुमन पुनि प्रभुपर वर्षे ॥
भुज उठाय रघुपति कपि फेरे * फिरे एक एकनिके टेरे ॥
प्रभु बल पाइ भालु कपि धाये * तरल[२] तमकि संयुग[३]महि आये ॥
करत प्रशंसा सुर तेहँ देखे * भयउँ एक मैं इनके लेखे ॥
शठहु सदा तुम मोर मरायल * असकहि गगनपंथ कहँ धायल ॥
हाहाकार करत सुर भागे * शठहु जाहु कहँ मोरे आगे ॥
देखि विकल सुर अंगद धावा * कूदि चरण गहि भूमि गिरावा ॥

छंद–गहि भूमि पार्‌यो लात मार्‌यो वालिसुत प्रभुपहँ गयो ।
संभारि उठि दशकण्ठ घोर कठोर करि गर्जत भयो ॥
करि दाप[४] धनुष चढाइ दश सन्धानि शर बहु वर्षई ।
कियेसकलभट घायलवियाकुल देखिनिजबलहर्षई ॥५७॥

दोहा–तब रघुपति लंकेशके, शीश भुजा शर चाप ॥
काटे भये नवीन पुनि, जिमि तीरथके पाप ॥ २४७ ॥

१ अन्धकार । २ अतिशयक्रोधकारके । ३ सन्मुख-शीघ्र । ४ क्रोध ।

शिर भुज बाढि देखि रिपु केरी * भालु कपिन रिस भई घनेरी ॥
मरत न मूढ कटे भुज शीशा * धाये कोपि भालु अरु कीशा ॥
बालि तनय मारुत नल नीला * द्विविद मयन्द महाबल शीला ॥
विटप महीधर करहिं प्रहारा * सोइ गिरितरुगहिकपिन्हसोमारा
एकन नख गहि वपुष[1] विदारी * भागि चलहिं यक लातनमारी ॥
तब नलनील शिरनिचढिगयऊ * नखनि ललाट विदारतभयऊ ॥
रुधिर विलोकि सकोप सुरारी[2] * तिनहिं धरन कहँ भुजापसारी ॥
गहे न जाहिं शिरनि पर फिरहीं * जनु युगमधुप[3] कमलवनचरहीं ॥
कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी * महिपटकेसि गहि[4]भुजामरोरी ॥
पुनि सकोपि दशधनुकरलीन्हा * शरनिमारिघायलकपिकीन्हा ॥
हनुमदादि मूर्च्छित सबबन्दर * पाइ प्रदोष[5] हर्ष दशकन्धर ॥
मूर्च्छितदेखि सकल कपिबीरा * जाम्बवन्त धावा रणधीरा ॥
संग भालु भूधर[6] तरु भारी * मारन लगे प्रचारि प्रचारी ॥
भयो क्रोध रावण बलवाना * गहि पद महि पटके भटनाना ॥
देखि भालुपति निजदल घाता * कोपि माँझ उर मारेसिलाता ॥

छंद–उरलात घात प्रचण्ड लागत विकलरथते महिगिरा ।
गहि भालु बीसहु करनि मानहु कमल निशिवश मधुकरा ॥
मूर्च्छित विलोकि बहोरि पदहति भालुपति[8] प्रभुपहँ गयो ॥
निशि[9] जानि स्यंदन[10] घालितेहि तबसूत[11]यतनसुगृहनयो ॥५८॥

दोहा–मूर्च्छा गइ कपि भालु तब, सब आये प्रभुपास ॥
सकल निशाचर रावणहिं, घेरि रहे अति त्रास[12] ॥ २४८ ॥

तेहि निशि महँ सीतापहँ जाई * त्रिजटा सब कहि कथाबुझाई ॥
शिर भुज बाढि सुनत रिपु[13] केरी * सीताउर भै त्रास घनेरी ॥
मुख मलीन उपजी मनचिन्ता * त्रिजटासन बोली तब सीता ॥

१ शरीर । २ रावण । ३ भ्रमर । ४ पकड । ५ संध्याकाल । ६ पर्वत । ७ दलि । ८ जाम्बवन्त । ९ रात्रि । १० रथ । ११ सारथी । १२ भय । १३ रावण ।

होइहि कहा कहसि किन माता * केहिविधिमारिहिविश्वदुखदाता॥
रघुपतिशर शिर कटे न मरई * विधिविपरीतचरितसबकरई ॥
मोर अभाग्य जिआवतओही * जेहि हौंहरिपदकमलबिछोही॥
जेइँ कृत कनककपटमृग झूठा * अजहुँ सो दैव मोहिं पर रूठा॥
जेइँविधिमोहिंदुखदुसहसहावा * लक्ष्मणकहँ कटु वचनकहावा॥
रघुपतिविरह विषम शरभारी * तकि तकि वार वारमोहिंमारी॥
ऐसेहु दुख जो राखु मम प्राणा * सोविधितांहिजिआवनआना ॥
बहुविधि करत विलाप जानकी * करि करिसुरतिकृपानिधानकी॥
कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी * उर शर लागत मरिहि सुरारी॥
ताते प्रभु उर हतहिं न तेही * इहिके हृदय बसति वैदेही ॥

छंद–इहिके हृदय बस जानकी मम जानकी उरबास है।
मम उदर भुवन अनेक लागत बाण सबको नाश है ॥
अस सुनत हर्ष विषाद उर अति देखि पुनि त्रिजटाकहा।
अब मरिहिरिपुइहिभाँतिसुंदरि तजहुतुमसंशयमहा ॥५९॥

दोहा–काटत शिर होइहि विकल, छूटिजाइ तव ध्यान ॥
तबरावणके हृदय शर, मारहिं राम सुजान ॥२४९॥

अस कहि बहुप्रकार समुझाई * पुनित्रिजटानिजभवनसिधाई॥
राम स्वभाव सुमिरि वैदेही * उपजी विरह व्यथा अतितेही॥
निशिहिशशिहिनिन्दतबहुभाँती * युगसम भई बिहाति न राती॥
करत विलाप मनहिं मन भारी * रामविरह जानकी दुखारी ॥
जब अति भयो विरह उरदाहू * फरकेउ वाम नयन अरु बाहू॥
शकुन विचारि धरी उर धीरा * अब मिलिहहिंकृपालुरघुवीरा॥
इहाँ अर्द्ध निशि रावण जागा * निजसारथिसनखीझन लागा॥
शठ रणभूमि छुडायहु मोहीं * धृकधृकअधममन्दमतितोहीं॥

१ संसार। २ लीला। ३ स्वर्णमृगमारीच। ४ धर। ५ विदेहमहाराजजनककुमारी सीताजी।

तेइँ पद गहि बहुविधिसमुझावा * भोरभये रथचढि पुनि आवा ॥
सुनि आगमन दशानन केरा * कपिदल खरभर भयउ घनेरा ॥
जहँ तहँ भूधर विटप उपारी * धाये कटकटाइ भट भारी ॥

छंद–धाये जो मर्कट विकट भालु कराल कर भूधर धरा ।
अति कोपि करहिं प्रहार भारत भाजि चले रजनीचरा ॥
बिचलाइ दल बलवन्त कीशनि घेरि पुनि रावण लियो ।
दशदिशिचपेटन्ह मारि नखन विदारि तेहि व्याकुल कियो॥६०

दोहा–देखिमहा मर्कट प्रबल, रावण कीन्ह विचार ॥
अन्तर्हित होइ निमिष महँ, कारि मायाविस्तार ॥ २५० ॥

छंदलीला–जब कीन्ह तेइँ पाखण्ड, भये प्रगट जन्तु प्रचण्ड ॥
वैताल भूत पिशाच, कर धरे धनुष नराच[1] ॥
योगिनि गहे करवाल[2], इक हाथ मनुज कपाल ॥
करिसद्य[3] शोणितपान, नाचहिं करहिं गुणगान ॥६१॥
धरु मारु बोलहिं घोर, रहि पूरि धुनि चहुँ ओर ॥
मुखबाय धावहिं खान, तब लगे कीश परान ॥
जहँ जाहिं मर्कट भागि, तहँ बरत देखहिं आगि ॥
भय विकल वानर भालु, पुनि लाग वर्षनबालु ॥६२॥
जहँ तहँ थकित करि कीश, गर्जा बहुरि दशशीश ॥
लक्ष्मण कपीश समेत, भये सकल वीर अचेत ॥
हा राम हा रघुनाथ, कहि सुभट मींजहिं हाथ ॥
इहिविधि सकल बल तोरि, तेहि कीन कपटबहोरि॥६३॥
प्रगटेसि विपुल हनुमान, धाये गहे पाषान ॥
तिन राम घेरेउ जाइ, चहुँ दिशि वरूथ[4] बनाइ ॥
मारहु धरहु जनिजाइ, कटकटाहिं पूँछ उठाइ ॥
दशदिशि लँगूर विराज, तेहि मध्य कोशलराज ॥६४॥

१ बाण । २ खड्ग । ३ तुरन्तका । ४ झुण्डके झुण्ड ।

छंद–हरिगीतिका ।

तेहि मध्य कोशलराज सुन्दर श्याम तनु शोभा सही ।
जनु इन्द्रधनुष अनेक किय बर बारि तुंग तमालही ॥
प्रभु देखि हर्ष विषादउरसुरवदति जय जय जयकरी ।
रघुवीर एकहि तीर कोपित निमिष महँ मायाहरी ॥६५
माया विगत कपि भालु हर्षे विटप गिरि गहि सब फिरे ।
शर निकर छाँडे राम रावण बाहु शिर पुनि पुनि हरे ॥
श्रीराम रावण समरचरित अनेक कल्प जो गावहीं ।
शतशेष नारद निगम कवि तेउ तदपि पार न पावहीं ॥६६॥

दोहा–कहे तासु गुणगण कछुक, जडमति तुलसीदास ॥
निज पौरुष अनुसारजिमि,मशकउड़ाहिंअकास ॥ २५१ ॥
काटि शीशभुज बार बहु, मरै न भट लंकेश ॥
प्रभु क्रीडत मुनि सिद्ध सुर, व्याकुल देखि कलेश ॥२५२॥

काटत बढहिं शीश समुदाई *जिमिप्रति लाभ लोभ अधिकाई
मरै न रिपु श्रम भयउ विशेषा * राम बिभीषण तन तब देखा ॥
उमा काल मरु जाकी इच्छा * सो प्रभु जनकी लेत परीच्छा॥
सुन सर्वज्ञ चराचरनायक *प्रणतपालसुरमुनिसुखदायक ॥
नाभी कुंड सुधा वस वाके * नाथ जियत रावण बल ताके ॥
सुनत विभीषण वचन कृपाला * हर्षि गहे प्रभु बाण कराला ॥
अशकुन होन लगे विधि नाना * रोवहिं बहु शृगाल खर श्वाना ॥
बोलहिं खग अति आरतहेतू * प्रगट भये जहँ तहँ नभकेतू ॥
दश दिशि दाह होन तब लागा * भयउ पर्व विनु रवि उपरागा ॥
मन्दोदरि उर कम्पित भारी *प्रतिमा स्रवहिं नयनबह वारी ॥

छंदहरिगीतिका-प्रतिमास्रवहिंपविपातनभअतिवातबहडोलतमही
वर्षहिं बलाहक रुधिर कच रज अशुभ अति सक को कही॥
उत्पात अमित विलोकि नभसुर विकल बोलहिं जय जये ।
सुर सभय जानि कृपालुरघुपति चापशर जोरत भये ॥६७॥

१ मशा । २ लीला करतेहैं । ३ अमृत । ४ पक्षी । ५ मूर्ति । ६ पत्थर । ७ वायु । ८ मेघ ।

दोहा–आकर्षेउ धनु श्रवण लगि, छाँडे शर इकतीस ॥
रघुनायक सायक चले, मानहुँ काल फणीस ॥ २५३ ॥
सायक एक नाभि शर शोषा * अपर लगे शिर भुज करि रोषा॥
लै शिर बाहु चले नाराचा * शिरभुजहीन रुंड महि नाचा ॥
धरणि धसै धर धाव प्रचण्डा *तब शर हति प्रभु कृतयुगखण्डा॥
गर्जेउ मरत घोर रव भारी * कहाँ राम रण हतौं प्रचारी ॥
डोली भूमि गिरत दशकन्धर *क्षुभित सिन्धु सर दिग्गज भूधर
परेउ भूमि युग खंड बढाई * चापि भालु मर्कट समुदाई ॥
मन्दोदरि आगे भुज शीशा * धरि शर चले जहाँ जगदीशा॥
प्रविशे सब निषंग महँ आई * देखि सुरन दुन्दुभी बजाई ॥
तासु तेज समान प्रभुआनन * हर्षे देव शम्भु चतुरानन ॥
जयध्वनि पूरि रही नवखंडा * जय रघुवीर प्रबल भुजदण्डा॥
वर्षहिं सुमन देव मुनि वृन्दा *जयकृपालु जयजयतिमुकुन्दा॥
छंद–जय कृपाकन्द मुकुन्द हरि मर्दन निशाचर मद प्रभो ।
खलदल विदारण परम कारण कारुणीक सदा विभो ॥
सुर सुमन वर्षत सकल हर्षत बाजि दुन्दुभि गहँगही ।
संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु शोभा लही ॥६८॥
शिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं ।
जनु नीलगिरिपर तडितपटल समेत उडुगण भ्राजहीं ॥
भुज दण्ड फेरत शर शरासन रुधिरकण तनु अतिबने ।
जनु रायमुनियतमालतरुवर बैठि बहु सुख आपने ॥६९॥
दोहा–कृपादृष्टि करि वृष्टि प्रभु, अभय किये सुरवृन्द ।
हर्षे वानर भालु सब, जय सुखधाम मुकुन्द ॥२५४॥
पति शिर दीखजबहिमन्दोदरि * मूर्च्छित विकलखसीधरणीपरी
युवतिवृन्द रोवत उठि धाई * तेहि उठाय रावणपहँ ल्याई ॥
पतिगतिदेखिसो करति पुकारा* छूटे केश न देह सँभारा ॥

१ बाण । २ जल ऊपरको उछलने लगा । ३ समुद्र । ४ तालाब । ५ हाथी । ६ पर्वत । ७ मुखमें । ८ ब्रह्मा ।
९ करुणाके मर्य्यादा श्रीरामचन्द्रजी । १० गंभीर । ११ नक्षत्र । १२ शोभित ।

उर ताडना करै विधि नाना * रोदन करै प्रताप बखाना ॥
तव बल नाथ डोल नित धरणी * तेजहीन पावक[1] शशि तरणी[2] ॥
शेष कमठ सहि सकहिं नभारा * सो तनु आजु परा महिछारा ॥
वरुण कुबेर सुरेश समीरा * रणसन्मुख धरु काहु न धीरा ॥
भुजबल जीति काल यम साईं * आजु सो परेउ अनाथ किनाईं॥
जगत विदित तुम्हारि प्रभुताई * सुत परिजन बल वरणि नजाई॥
रामविमुख अस हाल तुम्हारा * रहा न कुल कोउ रोवनिहारा ॥
तव वश विधि प्रपंच सब नाथा * सब दिगपालि तोहिं नावहिंमाथा
अब तवशिर भुज जम्बुकखाहीं *रामविमुख यह अनुचित नाहीं॥
कालविवश पति कहा न माना * अग जगनाथ[3] मनुजकरिजाना॥
छंद–जानेउ मनुज करि दनुज काननदहन पावक हरि स्वयम् ॥
ज्यहिनमत शिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु ना करुणामयम् ॥
आजन्मते परद्रोहरत पापौघमय[4] तव तनु अयम् ॥
तुमहुँ दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयम् ॥ ७०॥
दोहा–अहहनाथ रघुनाथ सम, कृपासिन्धु को आन ॥
मुनि दुर्लभ जो परमगति, तुमहिं दीन भगवान ॥ २५५ ॥
मन्दोदरी वचन सुनि काना * सुरमुनिसिद्धसबहिं सुखमाना॥
अज महेश नारद सनकादी * जे मुनिवर परमारथवादी[5] ॥
भरि लोचन रघुपतिहि निहारी * प्रेम मगन सब भये सुखारी ॥
रोदन करत विलोकेउ नारी * गये विभीषण मन दुखभारी ॥
बन्धुदशा देखत दुख भयऊ * तब प्रभु अनुजहिआयसुदयऊ॥
लक्ष्मण तेहि बहुविधिसमुझाये * सहित विभीषण प्रभुपहँ आये॥
कृपादृष्टि प्रभु ताहि विलोका *करहु क्रिया परिहरि सबशोका ॥
कीन्ह क्रिया प्रभु आयसु मानी * विधिवत देश कालगति जानी॥
दोहा–मयतनयादिक नारि सब, देइँ तिलांजलि[6] ताहिं ॥
भवन गईं रघुवीरगुण, गण वर्णति मनमाहिं ॥ २५६ ॥

१ अग्नि । २ श्रीसूर्यनारायण । ३ अनेक ब्रह्मांड चराचरके स्वामी । ४ पापोंका समूह । ५ ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मज्ञानी । ६ त्याग आंजली

आइ बिभीषण पुनि शिरनावा * कृपासिंधु तब अनुज बुलावा ॥
तुम कपीश अंगद नल नीला * जाम्बवन्त मारुतसुत शीला ॥
सब मिलि जाहु बिभीषणसाथा * सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ॥
पितावचन मैं नगर न जाऊँ * आपुसरिस कपिअनुज पठाऊँ ॥
तुरत चलेकपि सुनि प्रभुवचना * कीन्ही जाय तिलककी रचना ॥
सादर सिंहासन बैठारी * तिलक कीन्ह अस्तुतिअनुसारी
जोरि पाणि सबहीं शिर नाये * सहित बिभीषण प्रभुपहँआये ॥
तब रघुवीर बोलि कपि लीन्हें * कहिप्रियवचन सुखीसबकीन्हें ॥
छंद-कीन्हें सुखी सब कहि सुवाणी बल तुम्हारे रिपुहयो ॥
पायो विभीषण राज्य तिहुँपुर यश तुम्हारो नित नयो ॥
मोहिं सहित शुभ कीरति तुम्हारी परमप्रीति जो गाइहैं ॥
संसारसिन्धु अपारपार प्रयासबिनु तरिजाइहैं ॥ ७१ ॥
दोहा-सुनत रामके वचन मृदु, नहिं अघात कपिपुंज ॥
बारहिं बार विलोकि मुख, गहे सकल पदकंज ॥ २५७ ॥
तब प्रभु बोलि लिये हनुमाना * लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥
समाचार जानकिहि सुनावहु * तासुकुशललै तुमचलिआवहु ॥
तब हनुमान नगर महँ आये * सुनि निशिचरी निशाचरधाये ॥
पूजा बहु प्रकार तिन कीन्ही * जनकसुता दिखायपुनि दीन्ही ॥
दूरिहिते प्रणाम कपि कीन्हा * रघुपति दूत जानकी चीन्हा ॥
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता * कुशल अनुज प्रभु सेनसमेता ॥
सब विधि कुशल कोसलाधीशा * मातु समर जीत्यो दशशीशा ॥
अविचल राज्य विभीषण पावा * सुनि कपिवचन हर्ष उरछावा ॥
छंद-अतिहर्षमन तनु पुलक लोचन सजल पुनि पुनि कहरमा ॥
का देउँ तोहिं त्रैलोक्य महँ कपि किमपि नहिं वाणीसमा ॥
सुन मातु मैं पायउँ अखिल जगराज्य आजु न संशयम् ॥
रण जीति रिपुदल बन्धुयुत पश्यामि रामनिरामयम् ॥ ७२ ॥

१ भाई । २ हाथ । ३ शत्रुका नाश भयो । ४ श्रम । ५ मधुर । ६ अचल । ७ आमय षट्विकार जन्म, वर्तमान, वृद्धि, परिणाम, क्षीणता, मृत्यु ।

दोहा–सुन सुत सद्गुण सकल तब, हृदय बसे हनुमन्त ॥
सानुकूल रघुवंशमणि, रहहिं समेत अनन्त ॥ २५८ ॥

अब सोइ यत्न करहु तुमताता * देखौं नयन श्याम मृदुगाता ॥
तब हनुमन्त राम पहँ आई * जनकसुता कर कुशल सुनाई ॥
सुनि वाणी पतंगकुलभूषण * बोलि लिये कपिराज विभीषण ॥
मारुतसुतके संग सिधावहु * सादर जनकसुता लै आवहु ॥
तुरतहि सकल गये जहँ सीता * सेवहिं सब निशिचरी विनीता ॥
वेगि विभीषण तिनहिं शिखावा * सादर तिन सीतहि अन्हवावा ॥
दिव्यवसन भूषण पहिराये * शिबिकारुचिर साजि पुनिल्याये
तेहि पर हर्षि चढी वैदेही * सुमिरि राम सुखधाम सनेही ॥
वेंतपाणि रक्षक चहुँपासा * चले सकल मन परम हुलासा ॥
संग लिये त्रिजटा निशिचरी * चली राम पहँ सुमिरत हरी ॥
देखन भालु कीश बहु धाये * रक्षक कोटि निवारण आये ॥
कह रघुवीर कहा मम मानहु * सीतहि सखा पयादेहि आनहु ॥
देखहिं कपि जननीकी नाई * विहँसि कहा रघुवीर गुसाई ॥
सुनि प्रभु वचन भालु कपि हर्षे * नभते सुरन सुमन बहु वर्षे ॥
सीतहि प्रथम अग्निमहँ राखी * प्रगट कीन्ह चह अन्तरसाखी ॥

दोहा–तेहि कारण करुणाअयन, कहे कछुक दुर्वाद ॥
सुनत यातुधानी सकल, लागी करन विषाद ॥ २५९ ॥

प्रभुके वचन शीश धरि सीता * बोली मन क्रम वचन पुनीता ॥
लक्ष्मण होहु धर्मके नेगी * पावक प्रगट करहु तुम वेगी ॥
सुनि लक्ष्मण सीताकी वानी * विरह विवेक धर्म रति सानी ॥
लोचन सजल जोरि कर दोऊ * प्रभुसनकछुकहिसकतनओऊ ॥
देखि राम रुख लक्ष्मण धाये * पावक प्रगट काठ बहु लाये ॥
प्रबल अनल विलोकि वैदेही * हृदय हर्षकछुभयनहिं तेही ॥
जो मन क्रम वचमम उरमाहीं * तजि रघुवीर आनगति नाहीं ॥

१ समीचीन। २ लक्ष्मणजी। ३ विभीषणके चोपदार। ४ अग्नि। ५ ज्ञान। ६ प्रीति। ७ नेत्रोंमें जल भराहै।

तौ कृशानु सबकी गति जाना * मोकहँ हो श्रीखण्डसमाना ॥

छंद–श्रीखंडसम पावकप्रगटाकिय सुमिरिप्रभु तेहिमहँचली ॥
जय कोशलेश महेशवन्दितचरणरज अति निर्मली ॥
प्रतिबिम्ब अरु लौकिक कलंक प्रचण्ड पावकमहँ जरे ॥
प्रभुचरित काहु न लखेउसुरमुनि सिद्धसबदेखहिंखरे ॥७३॥
तब अनलभूसुररूप करगहि सत्य श्री श्रुतिविदत जो ॥
जिमिक्षीरसागर इन्दिरारामहिं समर्पी आनिजो ॥
सोइ राम वामविभागराजित रुचिर अति शोभा भली ॥
नव नील नीरज निकट मानहु कनक पंकजकी कली ॥

दोहा–हर्षि सुमन वर्षहिं विबुध, बाजहिं गगन निशान ॥७४॥
गावहिं किन्नर अप्सरा, नाचहिं चढीं विमान ॥२६०॥
श्रीजानकी समेत प्रभु, शोभा अमित अपार ॥
देखि भालु कपि हर्षेउ, जय रघुपति सुखसार ॥ २६१ ॥

तब रघुपति अनुशासन पाई * मातलि चले चरण शिरनाई ॥
आये देव सदा स्वारथी * वचन कहहिं जनु परमारथी ॥
दीनबन्धु दयालु रघुराया * देव कीन्ह देवनपर दाया ॥
विश्वद्रोहरत खल अतिकामी * निजअघ गयउ कुमारगगामी ॥
तुम सर्वज्ञ ब्रह्म अविनाशी * सदा एक रस सहज उदासी ॥
अकल अगुण अनवद्यअनामय * अजितअमोघएककरुणामय ॥
मीन कमठ सूकर नरहरी * वामन परशुराम वपुधरी ॥
जबजबनाथसुरन्ह दुखपावा * नाना तनु धरि तुमहिं नशावा ॥
रावण पापमूल सुरद्रोही * कामक्रोधमदरत अतिकोही ॥
अधम शिरोमणि तवपदपावा * यह हमरे मन अचरज आवा ॥
हम देवता परम अधिकारी * स्वारथरत तवभक्ति बिसारी ॥
भव प्रभाव सन्तत हम परे * अब प्रभु पाहि शरण अनुसरे ॥

दोहा–करि बिनती सुर सिद्ध सब, रहे जहँ तहँ करजोरि ॥

१ चन्दन । २ अग्नि ब्राह्मणका रूप धरके । ३ इन्द्रका सारथी । ४ परमारथकहीं परमअर्थ श्रीरामचन्द्र स्वरूप परब्रह्म प्रताप ऐश्वर्य तेज कृपा परमदिव्य देवता वर्णन करतेहैं । ५ कलारहित । ६ तामस, राजस, सात्विकतेपरे ।

अतिशय प्रेम सरोज विधि, स्तुति करत बहोरि ॥२६२॥
तोटकछंद-जयराम सदासुखधामहरे, रघुनायकसायकचापधरे॥
भववारण दारुणसिंह प्रभो, गुणसागर नागर नाथ विभो ॥
तनु काम अनेक अनूप छबी, गुणगावत सिद्धि मुनींद्र कवी॥
यशपावनरावणनागमहा, खगनाथयथाकरिकोपगहा॥७५॥
जनरंजन भंजन शोक भयं, गत कोह सदाप्रभु बोधमयम्॥
अवतार उदार अपार गुणं, महिभार विभंजनज्ञानघनम् ॥
अजव्यापकमेकमनादिसदा, करुणाकररामनमामिमुदा ॥
रघुवंशविभूषणदूषणहा, कृतभूपविभीषण दीनरहा ॥७६॥
गुणज्ञान निधानअमान अजं, नितरामनमामिविभुंविरजम् ॥
भुजदण्डप्रचण्डप्रतापबलं, खलवृन्दनिकन्दमहाकुशलम् ॥
विनुकारण दीनदयालुहितं, छबि धाम नमामि रमासहितम् ॥
भवतारण कारणकाजपरं, मनसम्भवदारुणदोषहरम्॥७७॥
शर चाप मनोहरतूणधरं, जलजारुणलोचन भूपवरम् ॥
सुखमन्दिर सुंदरश्रीरमणं, मद मारमहा ममता शमनम् ॥
अनवद्य अखंड अगोचरगो, समरूप सदा सब होइनसो ॥
इतिवेदवदन्ति न दन्तकथा, रविआतपभिन्न नभिन्नयथा ॥७८॥
कृतकृत्य विभो सब वानरये, निरखन्त तवानन सादरये ॥
धृकजीवन देव शरीरहरे, तव भक्ति विना भव भूलि परे ॥
अब दीनदयालु दयाकरिये, मतिमोरि विभेदकरी हरिये ॥
जिहितेविपरीतक्रियाकरिये, दुखमेंसुखमानसुखी चरिये ७९॥
खलखण्डन मण्डन रम्यक्षमा, पदपंकज सेवित शंभुउमा॥
नृपनायक दे वरदानमिदं, चरणाम्बुजप्रेमसदाशुभदम् ॥८०॥
दोहा-विनय कीन्ह बहु भाँति विधि, प्रेम प्रफुल्लित गात ॥
वदन विलोकत रामकर, लोचन नाहिं अघात ॥ २६३ ॥
तिहि अवसर दशरथतहँ आये* तनय विलोकि नयनजलछाये॥

१ सर्वोपरिश्रेष्ठ अतिप्रवीण । २ जनोंके आनन्दकर्ता । ३ स्थान । ४ सबप्रकारसमर्थहो । ५ मायातेरहितहो । ६ प्रवीण ।
७ योग, वैराग्य, ज्ञान, ध्यान, समाधि इत्यादिकका अभिमान । ८ नाशकर्त्ता । ९ वाणीतेपरेहो । १० तेज ।

सहितअनुजप्रणाम प्रभु कीन्हा*आशिर्वाद पिता तव दीन्हा ॥
तात सकल तव पुण्यप्रभाऊ * जीतेउँ अजय निशाचर राऊ॥
सुनिसुतवचन प्रीति अतिबाढी * नयन सलिल रोमावलिठाढी॥
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना * चितै पितहिंदीन्हेउदृढज्ञाना॥
ताते उमा मोक्ष नहिं पावा * दशरथ भेद भक्ति मन लावा ॥
सगुण उपासक मोक्ष न लेहीं * तिनकहँ राम भक्ति निजदेहीं॥
बारबार करि प्रभुहि प्रणामा * दशरथ हर्षि गये निजधामा ॥
दोहा–अनुजजानकीसहित प्रभु, कुशल कोशलाधीश ॥
छवि विलोकि मन हर्ष अति, प्रस्तुति कर सुरईश॥२६४॥
तोमरछंद–जय राम शोभाधाम, दायक प्रणत[3] विश्राम ॥
धृत तूर्ण[4] वर शर[5] चाप, भुजदण्ड प्रबल प्रताप ॥
जय दूषणारि खरारि, मर्दन निशाचर झारि ॥
यह दुष्ट[6] मारेउ नाथ, भये देव सकल सनाथ ॥८१॥
जय हरण धरणीभार, महिमा उदार अपार ॥
जय रावणारि कृपाल, किये यातुधान विहाल ॥
लंकेश अति बलगर्व, किये वश्य सुर गन्धर्व ॥
मुनि सिद्ध नर खग नाग, हठि पन्थ सबके लाग ॥ ८२ ॥
परद्रोह रत अति दुष्ट, पायो सो फल पापिष्ठ ॥
अब सुनहु दीनदयाल, राजीवनयन विशाल ॥
मोहिं रहा अति अभिमान, नहिं कोउ मोहिं समान ॥
अब देखि प्रभुपदकंज, गत मानप्रद दुखपुंज ॥ ८३ ॥
कोउ ब्रह्म निर्गुण ध्याव, अव्यक्त[7] जिहि श्रुति[8]गाव ॥
मोहिं भाव कोशलभूप, श्रीराम सगुण स्वरूप ॥
वैदेहि अनुज समेत, मम हृदय करहु निकेत ॥
मोहिं जानिये निजदास, देभक्ति रमानिवास ॥ ८४ ॥
पु०छं०–दे भक्ति रमा निवास त्रासहरण शरणसुखदायकम्॥

१ जो किसीकेजीतिबे योग्यनहीं । २ पानी । ३ शरणागत । ४ तरकस । ५ धनुर्बाण । ६ रावण । ७ अप्रकट अदृश्य । ८ वेद ।

सुखधाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकम् ॥
सुरवृन्दरंजन द्वन्द्वभंजन मनुज तनु अतुलित बलम् ॥
ब्रह्मादि शंकर सेव्यराम नमामि करुणाकोमलम् ॥८५॥

दोहा–अब करिकृपा विलोकि मोहिं, आयसु देहु कृपालु ॥
काह करौं सुनि प्रियवचन, बोले दीनदयालु ॥२६५॥

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे * परे भूमि निशिचरके मारे ॥
ममहित लागि तजे इन प्राना * सकल जिआउ सुरेश सुजाना॥
सुनु खगेश प्रभुकी यह वानी * अति अगाधजानहिंमुनिज्ञानी॥
प्रभुचह त्रिभुवनमारि जिवाई * केवल शक्रहि दीन्हि बड़ाई ॥
सुधावरषि कपि भालु जिआये * हर्षि उठे सब प्रभु पहँ आये ॥
सुधा वृष्टि भइ दुहुँ दल ऊपर * जियेभालु कपि नहिंरजनीचर॥
रामाकार भये तिन्हके मन * गये ब्रह्मपद तजि शरीर रन ॥
सुरअंशकसबकपिअरुऋच्छा *जियेसकलरघुपतिकी इच्छा ॥
रामसरिस को दीन हितकारी * कीन्हे मुक्त निशाचर झारी ॥
खल मल धाम कामरत रावण * गति पाई जो मुनि वर पावन ॥

दोहा–सुमन वर्षि सब सुर चले, चढ़ि चढ़ि रुचिर विमान ॥
देखि सुअवसर राम पहँ, आये शम्भु सुजान ॥ २६६ ॥
परम प्रीति कर जोरि युग, नयन नलिन भरि वारि ॥
पुलकित तनु गद्गद गिरा, विनय करत त्रिपुरारि ॥ २६७॥

छंद–मामभिरक्षयरघुकुलनायक, धृतवरचापरुचिरकरसायक ॥
मोहमहा घन पटल प्रभंजन, संशयविपिनअनलसुररंजन॥
अगुणसगुणगुणमंदिर सुंदर, भ्रमतमप्रबलप्रतापदिवाकर ॥
कामक्रोधमद गजपंचानन, वसहुनिरन्तर
विषय मनोरथ पुंज कंजवन, प्रबल तुषार उदार पारमन॥
भव वारिधि मन्दर परमन्दर, वारय तारय संसृतिदुस्तर॥

१ जन्म मरणके नाशकर्ता । २ इन्द्र । ३ अमृतकी वर्षा । ४ राक्षस । ५ कमलनेत्र । ६ ७ सिंह
८ जन्म मरण ।

अनुजजानकी सहित निरन्तर, वसहुरामनृपममउरअन्तर ॥
मुनिरंजन महिमण्डलमण्डन,तुलसिदासप्रभुत्रासविखण्डन८७
दोहा–नाथ जबहिं कोशलपुर, होइहि तिलक तुम्हार ॥
तब आउब हम सुनहु प्रभु. देखन चरित उदार ॥ २६८ ॥
करि विनती जब शम्भु सिधाये*तब प्रभु निकट विभीषण आये॥
नाइ चरण शिर कहमृदुवाणी * विनयसुनियमम शारँगपाणी ॥
सकुल सदल प्रभ रावण मारा * पावन यश त्रिभुवन विस्तारा ॥
दीन मलीन हीन मति जाती * मोपर कृपा कीन्ह बहु भाँती ॥
अब जन गृहपुनीत प्रभुकीजै * मज्जनं करियसकलश्रमछीजै ॥
देश कोश मन्दिर सम्पदा * देहु कृपालु कपिन कहँ मुदा ॥
सब विधि नाथ मोहिं अपनाइय*पुनिमोहिंसहितअवधपुरजाइय
सुनत वचन मृदु दीनदयाला * सजल भये हरि नयनविशाला
दोहा–तोर कोशगृह मोर सब, सत्य वचन सुनु तात ॥
दशा भरतकी सुमिरि मोहिं, पलक कल्पसमजात ॥२६९॥
तापस वेष शरीरकृश, जपैं निरन्तर मोहिं ॥
देखौं वेगि सो यतनकरि, सखा निहोरों तोहिं ॥ २७० ॥
जो जैहौं बीते अवधि, जियत न पाऊं वीर ॥
प्रीति भरतकी समुझि प्रभु, पुनि पुनि पुलक शरीर ॥ २७१ ॥
करहु कल्प भरि राज्य तुम, मोहिं सुमरेहु मन माहिं ॥
पनि सिधारेउ, जहाँ संत सब जाहिं ॥ २७२ ॥
सुनत विभीषण वचन रामके * हर्षि गहे पद कृपाधामके ॥
वानर भालु सकल हर्षाने *प्रभुपदगहि गुण विमलबखाने॥
बहुरि विभीषण भवन सिधाये *मणिगण वसन विमान भराये॥
पुष्पक प्रभु
चढिविमान सुन सखा विभीषण* गगँन जाइ वर्षहु पट भूषण ॥
नभ पर जाइ विभीषण तबहीं * वर्षि दिये पट भूषण सबहीं ॥

१ शृंगार । २ विशेषखण्डनकर्ता । ३ पवित्र । ४ स्नान । ५ खजाना । ६ आनन्दसह । ७ दूबर । ८ चौदहवर्षकीमर्यादा
९ कपडे । १० आकाश । ११ वस्त्र । १२ गहना

जो जेहि मन भावै सो लेहीं * मणिमुख मोलि डारि कपि देहीं ॥
हँसत राम सिय अनुजसमेता * परम कौतुकी कृपानिकेता ॥
दोहा–ध्यान न पावहिं जासु मुनि, नेति नेति कह वेद ॥
कृपासिन्धु सोइ कपिन सों, करत अनेक विनोद ॥ २७३ ॥
उमा योग जप दान तप, नाना व्रत मख नेम ॥
रामकृपा नहिं करहिं तस, जस निःकेवल प्रेम ॥ २७४ ॥
भालु कपिन पट भूषण पाये * पहिरिपहिरि रघुपतिपहँ आये ॥
नाना जिनिसि देखि प्रभुकीशा * पुनि पुनि हँसत कोशलाधीशा ॥
चितै सबनि पर कीन्हीं दाया * बोले मधुर वचन रघुराया ॥
तुम्हरे बल मैं रावण मारा * तिलकविभीषणकहँपुनिसारा ॥
निज निज गृह अबतुमसबजाहू * सुमिरहुमोहिंडरहुजनि काहू ॥
वचन सुनत प्रेमाकुल वानर * जोरि पाणि बोले सब सादर ॥
प्रभु जो कहहु तुमहिं सब सोहा * हमरे हिय उपजै सुनि मोहा ॥
दीन जानि कपि किये सनाथा * तुम त्रैलोक्य ईश रघुनाथा ॥
सुनि प्रभुवचन लाज हम मरहीं * मशककबहुँ खगपतिहितकरहीं ॥
देखि राम रुख वानर ऋच्छा * प्रेम मगन नहिं गृहकी इच्छा ॥
दोहा–प्रभुप्रेरित कपि भालु सब, राम रूप उर राखि ॥
हर्ष विषाद समेत तब, चले विनय बहु भाषि ॥ २७५ ॥
जाम्बवन्त कपिराज नल, अंगदादि हनुमान ॥
सहित विभीषण अपर जे, यूथप अति बलवान ॥ २७६ ॥
कहि न सकहिं कछु प्रेमवश, भरि भरि लोचन वारि ॥
सन्मुख चितवहिं रामतन, नयन निमेष निवारि ॥ २७७ ॥
अतिशय प्रीति देखि रघुराई * लीन्हें सकल विमान चढाई ॥
मन महँ विप्रचरण शिरनावा * उत्तर दिशिहि विमानचलावा ॥
चलत विमान कोलाहल होई * जय रघुवीर कहैं सब कोई ॥
सिंहासन अतिउच्च मनोहर * सिय समेत बैठे प्रभु तापर ॥

१ काले, नीले, पीले, हरित, लाल, श्वेत, लघु, मध्य, दीर्घ।

राजत राम सहित भामिनी * मेरु शृंग जनु घन दामिनी ॥
रुचिरविमान चला अतिआतुर * कीन्हीं सुमन वृष्टि हर्षे सुर ॥
परमसुखद चलित्रिविध बयारी * सागर सुरसरि निर्मल वारी ॥
शकुन होहिं सुन्दर चहुँपासा * मन प्रसन्न निर्मल नभ आशा ॥
कह रघुवीर देख रण सीता * लक्ष्मण हत्यो इहाँ इँद्रजीता ॥
अंगद हनूमानके मारे * रणमहँ परे निशाचर भारे ॥
कुम्भकर्ण रावण दोउ भाई * इहाँ हतेउँ सुर मुनि दुखदाई ॥
दोहा-सुन्दरि सेतु देखु यह, थापेउँ शिव सुखधाम ॥
सीता सहित कृपायतन, शंभुहिं कीन प्रणाम ॥ २७८ ॥
जहँ जहँ कृपासिन्धु वन, कीन्ह वास विश्राम ॥
सकल दिखाये जानकिहि, कहि कहि सबके नाम ॥ २७९ ॥
सपदि विमान तहाँ चलिआवा * दंडकवन जहँ परम सुहावा ॥
कुम्भजादि मुनि नायक नाना * गये राम सबके स्थाना ॥
सकल मुनिनसों पाइ अशीशा * आये चित्रकूट जगदीशा ॥
तहँ करि ऋषिन केर सन्तोषा * चला विमान तहाँते चोखा ॥
बहुरि राम जानकी दिखाई * यमुना कलिमल हरणिसुहाई ॥
पुनि देखी सुरसरी पुनीता * राम कहा प्रणाम करु सीता ॥
तीरथपति पुनि दीख प्रयागा * देखत जाहि पाप सब भागा ॥
देखि राम पावन पुनि वेनी * हरण शोक सुरलोक निशेनी ॥
देखी अवधपुरी अति पावनि * त्रिविधताप भव दापनशावनि ॥
दोहा-तब रघुनन्दन सिय सहित, अवधहि कीन प्रणाम ॥
सजल विलोचन पुलक तनु, पुनि पुनि हर्षितराम ॥ २८० ॥
बहुरि त्रिवेणी आय प्रभु, हर्षित मज्जन कीन्ह ॥
कपिनसहितमहिसुरन्हकहँ, दानाविविधविधिदीन्ह ॥ २८१ ॥

*श्लोक-अत्रपूर्वंमहादेवःप्रसादमकरोद्विभुः ॥ एतत्तुदृश्यतेतीर्थंसागरस्यमहात्मनः ॥ १ ॥
सेतुबन्धइतिख्यातंत्रैलोक्येचसुपूजितम् ॥ एतत्पवित्रंपरमंमहापातकनाशनम् ॥ २ ॥

१ सीता। २ बिजुली। ३ मेघनाद। ४ अतिशीघ्र। ५ अधिभूत, अध्यात्म, अधिदैव। ६ गंगा, यमुना, सरस्वतीसंगम।

प्रभु हनुमन्तहि कहा बुझाई * धरि द्विज रूप अवधपुर जाई ॥
भरतहि कुशल हमारि सुनावहु * समाचार लै पुनि चलि आवहु ॥
तुरत पवनसुत गवनत भयऊ * तब प्रभु भरद्वाजपहँ गयऊ ॥
नानाविधि पूजा मुनि कीन्ही * स्तुति करि पुनि आशिष दीन्ही ॥
मुनिपद बन्दि युगल करजोरी * चढि विमान प्रभु चले बहोरी ॥
इहाँ निषाद सुना प्रभु आये * नाव नाव कहि लोग बुलाये ॥
सुरसरि लाँघि यान जब आवा * उतरा तहँ प्रभु आयसु पावा ॥
तब सीता पूजी सुरसरी * बहु प्रकार करि चरणन परी ॥
दीन्ह अशीश मुदित मन गंगा * सुन्दरि तव अहिवात अभंगा ॥
सुनतहि गुह धावा प्रेमाकुल * आवा निकट परमसुख संकुल ॥
प्रभुहि विलोकि सहित वैदेही * परेउ अवनितनु सुधि नहिं तेही ॥
परम प्रीति विलोकि रघुराई * हर्षि उठाइ लीन्ह उरलाई ॥
छंद-लिये हृदय लाइ कृपानिधान सुजान राम रमापती ॥
बैठारि परम समीप पूँछी कुशल सो करि वीनती ॥
अब कुशल पदपंकज विलोकि विरंचि शंकर सेव्यजे ।
सुखधाम पूरणकाम राम नमामि राम नमामिते ॥८८॥
सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लायऊ ।
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोहवश बिसरायऊ ॥
यह रावणारि चरित्र पावन रामपद रतिप्रद सदा ।
कामादि हर विज्ञान कर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा ॥८९॥
दोहा-समर विजय रघुवीरके, सुनहिं जे संत सुजान ॥
विजय विवेक विभूति नित, तिनहिं देहिं भगवान ॥२८२॥
यह कलिकाल मलायतनु, मन करि देखु विचार ॥
श्रीरघुनायक नाम तजि, नहिं कछु आन अधार ॥२८३ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनो विमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनो नाम तुलसीकृतरामायणे लङ्काकांडे षष्ठः सोपानः समाप्तः ॥ ६ ॥

इति लंकाकाण्ड समाप्त ।

१ ब्राह्मणकारूप । २ पूर्णप्रेमभरे । ३ पृथ्वी । ४ रामचन्द्रका । ५ प्रीति । ६ षड्विकारहर्ता । ७ प्रसन्नतासे ।

इति

श्रीमद्गोस्वामि तु० दा० कृ० रामायणे-

लंकाकाण्ड समाप्त।



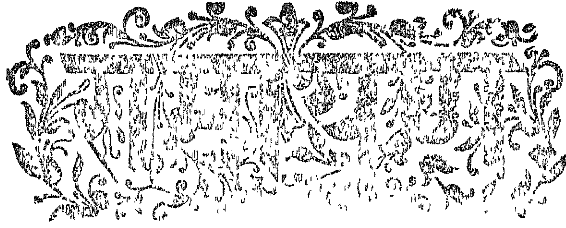
खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यंत्रालयाध्यक्ष- बंबई.

श्रीमद्वेङ्कटेशो विजयते।

अथ

श्रीयुतगोस्वामितुलसीदासजीकृत-



सटिप्पण,

उत्तरकाण्ड ७.

संपूर्ण क्षेपकों सहित.

जिसमें

श्रीरामचन्द्र भरत मिलाप तथा रघुनाथजीको राजगद्दीपर बैठना, रामराज्य वर्णन, रामचन्द्रजीका प्रजाको सदुपदेश करना, काकभुशुण्ड और गरुडजीका सम्वाद, ज्ञान भक्तिकी अभेदता, कलियुग महिमा काकभुशुण्ड प्रति गरुडजीके सप्त प्रश्न आदि अत्यंतसुमधुर कलिमलनाशनीकथा वर्णित हैं।

यह ग्रन्थ

पण्डित-ज्वालाप्रसादजी मिश्रकेद्वारा

शुद्धकराकर,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९६२, शके १८२७.

❀ उत्तरकाण्ड ७. ❀

दोहा-बार बार वर माँगौं, हर्षि देहु श्रीरंग ।
पदसरोज अनपावनी, भक्ति सदा सतसंग ॥


श्रीराम भरतभेट चित्र.

चौ०-जे सकामनर सुनहिं जे गावहिं । सुखसम्पति नानाविधि पावहिं ॥
सुर दुर्लभ सुख करि जगमाहीं । अन्तकाल रघुपति पुर जाहीं ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम) यन्त्रालय, खेतवाडी-बंबई.
KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS
Shree Venkateshwar (Steam) Press, Khetwadi—BOMBAY.

॥ श्रीमद्वेङ्कटेश्वराय नमः ॥

अथ श्रीतुलसीदासविरचिते-

रामायणे उत्तरकाण्डम् ।

श्लोकाः ।

केकीकण्ठाभनीलंसुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बंधुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥१॥
कोसलेन्द्रपदकंजमंजुलौ पद्मयोनिशितिकंठवन्दितौ ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिंतकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ ॥२॥
इन्दुकुन्ददरगौर सुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ॥
कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शंकरमनङ्गमोचनम् ॥३॥

दोहा–पूर्णेन्दुसमजगसुखद, रामचंद्ररघुराज ॥ निर्मलमूरतिअवधपुर, रही विराजसमाज ॥
करदंडवतसप्रेमसे, चरणहियेमेंधार ॥ उत्तरको शोधन करहुँ, कछु निजमति अनुसार ॥

दोहा–रहा एक दिन अवधिकर, अति आरत पुरलोग ॥
जहँ तहँ शोचहिं नारि नर, कृशतनु राम वियोग ॥१॥
शकुन होहिं सुन्दर सकल, मन प्रसन्न सब केर ॥
प्रभु आगमन जनाव जनु, नगररम्य चहुँ फेर ॥२॥

श्लोकार्थ–मोरके कण्ठकी कान्तिके समान नीलवर्ण देवताओंमें श्रेष्ठ ब्राह्मणोंके चरणकमलका जिनके हृदयमें चिह्न है शोभाके निधि पीतवस्त्र धारण किये कमलसे नेत्र सदा प्रसन्नरहनेवाले हाथमें धनुष बाणलिये कपिसमूहोंसेसंयुक्त भाइयोंसे सेवित जानकीके पति पुष्पकविमानपर बैठेहुये स्तुतियोग्य रामकी मैं वन्दना करताहूं ॥ १ ॥ रामचंद्र कोसलपुरीके ईश्वर जिनके युगलचरण कमल ब्रह्मा शंकरसे वंदनीयहैं जो जानकीके हस्तकमलसे प्यार किये हुयेहैं और ध्यान करनेवाले दासोंके मन भृंगके संगीहैं तिनकी वंदना करताहूं ॥२॥ चन्द्रमा कुंदके पुष्प शंखके समान गौर वर्ण गिरिजाके पति इच्छित सिद्धिके दाता करुणारससेभरे, उत्तम कमलके समान नेत्र और कामके जलानेहारे शिवजीको नमस्कार करताहूं ॥३॥

१ मर्यादा चौदह वर्षकी । २ दूबर । ३ विक्षेप ।

कौशल्यादिक मातु सब, मन अनंद अस होइ
आये प्रभु सिय अनुज युत, कहन चहत अस कोइ ॥३॥
भरत नयन भुजदक्षिण, फरकहिं बारहिं बार ॥
जानि शकुन मन हर्ष अति, लागे करन विचार ॥४॥
रहा एक दिन अवधि अधारा * समुझत मन दुखभयउअपारा॥
कारण कवन नाथ नहिं आये * जानिकुटिलप्रभुमोहिंबिसराये॥
अहह धन्य लक्ष्मण बड़भागी * रामपदारविन्द अनुरागी ॥
कपटी कुटिल नाथ मोहिंचीन्हा * ताते नाथ संग नहिं लीन्हा ॥
जोकरणी समुझैं प्रभु मोरी * नहिंनिस्तार कल्प शत कोरी॥
जन अवगुण प्रभु मान नकाऊ * दीनबन्धु अतिमृदुल स्वभाऊ ॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई * मिलिहहिं रामशकुनशुभहोई ॥
बीते अवधि रहैं जो प्राना * अधमकवनजग मोहिं समाना॥
दोहा—राम विरह सागर महँ, भरत मगनमन होत ॥
विप्र रूप धरि पवनसुत, आइ गये जिमि पोत ॥५॥
बैठे देखि कुशासन, जटा मुकुट कृशगात ॥
राम राम रघुपति जपत, स्रवत नयन जलजात ॥ ६ ॥
देखत हनूमान अति हर्षे * पुलकि गात लोचन जल वर्षे ॥
मनमहँ बहुतभाँति सुखमानी * बोले श्रवण सुधासम बानी ॥
जासु विरह शोचहु दिनराती * रटहु निरन्तर गुण गण पाती ॥
रघुकुलतिलक सुजनसुखदाता * आवत कुशल देव मुनि त्राता॥
रिपुरणजीति सुयश सुरगावत * सीताअनुजसहितप्रभुआवत ॥
सुनत वचन बिसरे सब दूखा * तृषावन्त जनु पाय पियूषा ॥
को तुम तात कहाँते आये * मोहिं परमप्रिय वचन सुनाये ॥
मारुतसुत मैं कपि हनुमाना * नाम मोर सुनु कृपानिधाना ॥
दीनबन्धु रघुपति कर किंकर * सुनत भरत भेंटे उठि सादर ॥

१ कोमल । २ डूबत । ३ नौका । ४ टपकते हैं । ५ कमल । ६ शरीर । ७ अमृतसम । ८ रक्षक । ९ सुधा । १० सेवक

मिलत प्रेमनहिं हृदयसमाता * नयनस्त्रवत जल पुलकितगाता॥
कपि तव दरश सकल दुखबीते * मिले आजु मोहिं राम सप्रीते॥
बार बार पूँछी कुशलाता * तो कहँ काह देउँ सुनु भ्राता॥
यहि संदेश सरिस जगमाहीं * करि विचार देखा कछु नाहीं॥
नाहिन उऋण तात मैं तोहीं * अब प्रभु चरित सुनावहु मोहीं॥
तब हनुमान नाइ पदमाथा * कहेसिसकल रघुपतिगुणगाथा॥
कहु कपि कबहुँ कृपालु गुसाँई * सुमिरत मोहिं दासकी नाँई॥

छंद–निजदास ज्यों रघुवंशभूषण कबहुँ मम सुमिरन करचो॥
सुनि भरतवचन विनीत अति कपि पुलकतनुचरणनपरचो॥
रघुवीर निजमुख जासु गुणगण कहत अग जग नाथसो।
काहे न होउ विनीत परम पुनीत सद्गुणगाथसो॥ १॥

दोहा–राम प्राणप्रिय नाथ तुम, सत्यवचन मम तात॥
पुनि पुनि मिलत भरतसन, प्रेम न हृदय समात॥ ७॥

सो०–भरत चरण शिरनाइ, तुरतगये कपि राम पहँ॥
कही कुशल सब जाइ, हर्षि चले प्रभु यानचढ़ि॥ १॥

हर्षि भरत कोशलपुर आये * समाचार सब गुरुहिं सुनाये॥
पुनि मन्दिरमहँ बात जनाई * आवत नगर कुशल रघुराई॥
सुनत सकल जननी उठिधाई * कहि प्रभु कुशल भरतसमुझाई॥
समाचार पुरवासिन पाये * नर अरु नारि हर्षि उठि धाये॥
दधि दूर्वा रोचन फल फूला * नव तुलसीदल मंगलमूला॥
भरि भरि थार हेमवर भामिनि * गावत चलीं सिन्धुरा गामिनि॥
जो जैसे तैसे उठि धावहिं * बाल वृद्ध कोउ संग न लावहिं॥
एक एक सन पूछहिं धाई * तुम देखे दयालु रघुराई॥
अवधपुरी प्रभु आवत जानी * भई सकल शोभाकी खानी॥

भा सरयू अति निर्मल नीरा * बहै सुहावनि त्रिविध समीरा॥

दोहा–हर्षित गुरु पुरजन अनुज, भूसुरवृन्द समेत ॥
चले भरत अति प्रेममन, सन्मुख कृपानिकेत ॥ ८ ॥
बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह, निरखहिं गगन विमान ॥
देखि मधुर स्वर हर्षित, करहिं सुमंगल गान ॥ ९ ॥
राकाशशि रघुपति पुरी, सिन्धु देखि हर्षान ॥
बढ़े कोलाहल करत जनु, नारि तरंग समान ॥ १० ॥

रविकुल कमल दिवाकर आवत * नगर मनोरथ कपिन देखावत॥
सुनु कपीश अंगद लंकेशा * पावनिपुरी रुचिर यह देशा ॥
यद्यपि सब वैकुण्ठ बखाना * वेद पुराण विदित जग जाना ॥
अवध सरिस प्रिय मोहिंनसोऊ * यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ ॥
जन्मभूमि ममपुरी सोहावनि * उत्तरदिशि सरयू बह पावनि ॥
जोमज्जहिं सो विनहिं प्रयासा * मम समीप नर पावहिं वासा॥
अति प्रिय मोहिं इहाँके वासी * मम धामदा पुरी सुखराशी ॥
हर्षे कपि सुनि प्रभुकी बानी * धन्य अवध जोहिंराम बखानी ॥

दोहा–आवत देखे लोग सब, कृपासिन्धु भगवान ॥
नगर निकट प्रभु आयउ, उतरे भूमि विमान ॥११॥
बहुरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि, तुम कुबेर पहँ जाहु ॥
प्रेरित राम चलेउ सो, हर्ष विरह अति ताहु ॥१२॥

आये भरत संग सब लोगा * कृश तनु श्री रघुवीर वियोगा ॥
वामदेव वसिष्ठ मुनिनायक * देखे प्रभु महिधरिधनुसायक ॥
धाइ धरे गुरुचरण सरोरुह * अनुजसहितअतिपुलकिततनूरुह
भेंटे कुशल पूँछि मुनिराया * हमरे कुशल तुम्हारिहि दाया॥
सकलद्विजन कहँ नायउमाथा * धर्म धुरन्धर रघुकुल नाथा ॥

१ वायु । २ पूर्णमासी का चन्द्रमा । ३ पवित्र । ४ स्नानकरे । ५ परिश्रम । ६ हमारे । ७ तनुके रोम खड़ेहोगये हैं ।

गहे भरत पुनि प्रभुपद पंकज * नवहिंजिनहिंशंकरसुरमुनिअज॥
परेभूमि नहिं उठत उठाये * बल करि कृपासिन्धु उरलाये ॥
श्यामलगात रोम भये ठाढ़े * नव राजीव नयन जल बाढ़े ॥

छन्द—हरिगीतिका ।

राजीव लोचन स्रवतजल तनु ललित पुलकावलि बनी ।
अतिप्रेम हृदय लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुवन धनी ॥
प्रभु मिलत अनुजहि सोह मोपहँ जात नहिं उपमा कही ।
जनु प्रेम अरु शृंगार तनु धरि मिलत वर सुखमा³ लही ॥२॥
पूँछत कृपानिधि कुशल भरतहिं वचन बेगि न आवई ।
सुनु शिवा सो सुख वचन मनते भिन्न जान न पावई ॥
अब कुशल कोशलनाथ आरत जानि जन दर्शन दियो ।
बूड़त विरह वारिधि कृपानिधि काढ़ि मोहिं करगहि लियो॥३॥

दोहा—"सधन चोर मम मुदित मन, धनी गही जिमि फेंट ॥
तिमि सुग्रीव विभीषण, प्रभुहि भरतकी भेंट"॥ १३ ॥
पुनि प्रभु हर्षित शत्रुहन, भेंटे हृदय लगाइ ॥
लक्ष्मण भेंटे भरत पुनि, प्रेम न हृदय समाइ ॥ १४ ॥

भरत अनुज लक्ष्मण तब भेंटे * दुसह विरह सम्भव दुख मेटे ॥
सीता चरण भरत शिरनावा * अनुज समेत परमसुखपावा ॥
प्रभु विलोकि हर्षे पुरवासी * जनित वियोगविपतिसबनासी॥
प्रेमातुर सब लोग निहारी * कौतुक कीन्ह कृपालु खरारी ॥
अमितरूप प्रगटे तेहि काला * यथायोग्य मिलिसबहिंकृपाला॥
कृपादृष्टि सब लोग विलोका * किये सकल नरनारि विशोका॥
क्षणमहँ सबहिं मिले भगवाना⁴ * उमा मर्म यह काहु नजाना ॥
यहिविधि सबहिं सुखीकरिरामा * आगे चले शीलगुणधामा ॥

१ ब्रह्मा । २ कमल । ३ शोभा । ४ भगवान् कही षट् भग संयुक्त ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, वैराग्य, मोक्ष ।

कौशल्यादि मातु सब धाई * निरखि वत्स जनु धेनु लवाई ॥

छन्द–हरिगीतिका ।

जनु धेनु बालक वत्स तजि गृहचरन बन परवश गई ।
दिन अन्त पुर रुख स्रवत थन हुंकार करि धावति भई ॥
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेंटे वचन मृदु बहु विधि कहे ।
गइविषम विपति वियोगभवतिन्हहर्ष सुख अगणितलहे ॥४॥

दोहा–भेंटेउ तनय सुमित्रा, रामचरण रति जानि ॥
रामहिं मिलत कैकयी, हृदय बहुत सकुचानि ॥ १५ ॥
लक्ष्मण सब मातन्ह मिले, हर्षे आशिष पाइ ॥
कैकयि कहँ पुनि पुनि मिले, मनकर क्षोभ न जाइ ॥ १६ ॥

सासुन सबहिं मिली वैदेही * चरणन लागि हर्ष अति तेही ॥
देहिं अशीश पूँछि कुशलाता * होइ अचल तुम्हार अहिवाता[1] ॥
सबरघुपतिपदकमल विलोकी * मंगल जानि नयन जल रोकी ॥
कनकथार[2] आरती उतारहिं * बार बार प्रभु गात निहारहिं ॥
नानाभाँति निछावरि करहीं * परमानन्द हर्ष उर भरहीं ॥
कौशल्या पुनि पुनि रघुबीरहिं *चितवहिं कृपासिन्धु रणधीरहिं॥
हृदय विचारहिं बारहिं बारा * कवन भाँति लंकापति मारा ॥
अति सुकुमार युगल[3] ममबारे * निशिचर सुभट महाबलभारे ॥

दोहा–लक्ष्मण अरु सीता सहित, प्रभुहि विलोकहिं मात ॥
परमानन्द मगनमन, पुनि पुनि पुलकित गात ॥ १७ ॥

लंकापति[4] कपीश[5] नल नीला * जाम्बवन्त अंगद शुभ शीला ॥
हनुमदादि सब वानर वीरा * धरे मनोहर मनुज शरीरा ॥
भरत सनेह शील व्रत नेमा * सादर सब वर्णहिं अति प्रेमा ॥
देखि नगरवासिनकी रीती * सकल सराहहिं प्रभुपदप्रीती ॥

१ सुहाग । २ सोनेके थार । ३ राम–लक्ष्मण । ४ विभीषण । ५ सुग्रीव ।

पुनि रघुपति निजसखाबुलाये * मुनिपदलागहु सबहिं शिखाये॥
गुरु वासिष्ठ कुलपूज्य हमारे * इनकी कृपा दनुज रण मारे ॥
ये सब सखा सुनहु मुनि मेरे * भये समर सागर कहँ बेरे ॥
मम हित लागि जन्म इनहारे * भरतहुँतेमोहिं अधिक पियारे ॥
सुनि प्रभुवचन मगन सबभये * निमिषनिमिष उपजतसुखनये

दोहा–कौशल्याके चरण युग, पुनि तिन नायउ माथ ॥
आशिष दीन्हीं हर्षि हिय, तुम प्रिय जिमि रघुनाथ ॥१८॥
सुमन वृष्टि नभ संकुल, भवनचले सुखकन्द ॥
चढ़े अटारिन देखहिं, नगर नारि नर वृन्द ॥ १९ ॥

कंचन कलश विचित्र सँवारे * सबनिधरे साजिनिजनिजद्वारे ॥
बन्दनवार पताका केतू * सबन्हि बनाये मंगलहेतू ॥
वीथिन सकल सुगंधि सिंचाये * गजमणि रचि बहु चौकपुराये॥
नानाभाँति सुमंगल साजे * हर्षि निसान नगर बहु बाजे ॥
जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं * देहिं अशीश हर्ष उर भरहीं ॥
कंचन थार आरती नाना * युवती साजिकरहिं कलगाना ॥
करहिं आरती आरतिहरकी * रघुकुलकमलविपिनदिनकरकी
पुर शोभा सम्पति कल्याना * निगम शेष शारदा बखाना ॥
तेउ यह चरित देखि ठगरहहीं *उमातासुगुण नरकिमिकहहीं ॥

दोहा–नारि कुमुदिनी अवध सर, रघुपति विरह दिनेश ॥
अस्त भये विकासित भई, निरखि राम राकेश ॥ २० ॥
होहिं शकुन शुभ विविध विधि, बाजहिं गगन निसान ॥
पुर नर नारि सनाथ करि, भवन चले भगवान ॥ २१ ॥

प्रभु जाना कैकयी लजानी * प्रथम तासु गृह गये भवानी ॥
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा *पुनिनिजभवनगवनप्रभुकीन्हा॥

१ जहाज। २ पलपल। ३ अतिसघन। ४ गलिनमें। ५ बाजा। ६ मधुरगान। ७ सूर्य। ८ फूली। ९ पूर्णचन्द्र।

कृपासिन्धु जब मन्दिर गयऊ * पुर नर नारि सुखीसब भयऊ॥
गुरुवसिष्ठ द्विज लिये बुलाई * आजु सुघरी सुदिन सुखदाई॥
सब द्विज देहु हर्षि अनुशासन * रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन॥
मुनि वसिष्ठके वचन सुहाये * सुनत सकल विप्रन मनभाये॥
कहहिं वचन मृदु विप्र अनेका * जग अभिराम राम अभिषेका॥
अब मुनिवर विलम्ब नाहिं कीजै * महाराज कहँ तिलक करीजै॥

दोहा—जहँ तहँ धावन पठै पुनि, मंगल द्रव्य मँगाइ॥
हर्ष समेत वसिष्ठ पद, पुनि शिर नायउ आइ॥ २२॥
तब मुनि कहेउ सुमन्त्र सन, तुरत चले शिरनाइ॥
रथ अनेक गज वाजि बहु, सकल सँवारे जाइ॥ २३॥

अवधपुरी अति रुचिर बनाई * देवन सुमनवृष्टि झरिलाई॥
राम कहा सेवकन बुलाई * प्रथम सखन अन्हवावहु जाई॥
सुनत वचन जन जहँ तहँ धाये * सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये॥
पुनि करुणानिधि भरत हँकारे * निज कर जटा राम निरवारे॥
अन्हवाये पुनि तीनिहु भाई * भक्त वछल कृपालु रघुराई॥
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई * शेष कोटिशत सकहिं न गाई॥
पुनि निज जटा राम बिवराये * मुनि अनुशासन पाइ अन्हाये॥
करि मज्जन भूषण प्रभु साजे * अंग अनंग कोटि छवि लाजे॥

दोहा—सासुन सादर जानकिहि, मज्जन तुरत कराइ॥
दिव्य वसन वर भूषणनि, अँग अँग सजे बनाइ॥ २४॥
राम वाम दिशि शोभित, राम रूप गुणखानि॥
देखि सासु सब हर्षित, जन्म सफल निज जानि॥ २५॥
सुनु खगेश तेहि अवसर, ब्रह्मा शिव मुनि वृन्द॥
चढ़ि विमान आये सकल, सुर देखत सुखकन्द॥ २६॥

१ आज्ञा। २ राज्यातिलक। ३ दूत। ४ आज्ञा। ५ स्नान। ६ श्रेष्ठ। ७ गहना।

श्रीरामराज्याभिषेक चित्र।



प्रभु विलोकि मुनिमन अनुरागा * तुरत दिव्य सिंहासन मांगा ॥
रवि सम तेज वरणि नहिं जाई * बैठे राम द्विजन शिरनाई ॥
जनकसुता समेत रघुराई * देखि प्रहर्षे[1] मुनि समुदाई ॥
वेदमंत्र द्विजवर उच्चारे * नभसुरमुनिजय जयतिपुकारे॥
प्रथम तिलक वसिष्ठमुनिकीन्हा * पुनिसबविप्रन आयसु दीन्हा ॥
सुत विलोकि हर्षित महतारी * बार बार आरती उतारी ॥
विप्रन दान विविध विधि दीन्हें * याचकसकल अयाचक कीन्हें॥
सिंहासन पर त्रिभुवन साँई * देखि सुरन्ह दुन्दुभी बजाई ॥

छं०ह०—नभदुन्दुभी[2]बाजहिं विपुल[3] गन्धर्व किन्नर गावहीं ।
नाचहिं अप्सरा वृन्द परमानन्द मुनि सुर पावहीं ॥
भरतादि अनुज विभीषणांगद हनुमदादि समेतजे ।
गहे छत्र चामर व्यजन धनु असिचर्म[4] शक्ति विराजते ॥५॥

१ अतिउत्कर्ष हर्ष । २ नगारा । ३ बहुत । ४ ढोल ।

सिय सहित दिनकर वंश भूषण कामबहुछबि सोहहीं।
नवअम्बुधर वरगात अम्बर पीत मुनि मन मोहहीं ॥
मुकुटांगदादि विचित्र भूषण अंग अंगन प्रति सजे ।
अंभोज नयन विशाल उर भुज धन्य नर निरखंतजे ॥६॥
दोहा-वहशोभा सुजमाज सुख, कहत न बनै खगेश ॥
वर्णै शारद शेष श्रुति, सो रस जान महेश ॥२७॥

अथ क्षेपक ।

उठ्यो विभीषण तव सुखपाई * रत्नमाल कर लई उठाई॥
दीन्ह जलधि रावणको जोई * पुनः विभीषण पाई सोई ॥
सोई रत्नमाल सुखकारी * दीन्ह जानकीके गरडारी ॥
तासु ज्योति अस भई विशाला *सन्मुखलखिनसकतमहिपाला॥
राज समूह अधिक तहँ सोहा * तेहि विलोकिसबकरमनमोहा॥
तेहि क्षण जनकसुता महारनी* चितैराम तन पुनि मुसकानी ॥
कह्यो कृपालु प्रिया सुन लीजै * जो इच्छा जेहिका सो दीजै ॥
सुनत वचन तव जनकदुलारी * सोई गलसे माल उतारी ॥
काहि देउँ यह हृदय विचारी * मारुतसुतकी ओर निहारी ॥

दोहा-कृपादृष्टि लखि पवनसुत, हर्षि दंडवत कीन्ह ॥
रत्नमाल सो जानकी, डारि गरेमहँ दीन्ह ॥ १ ॥

महावीर मनमाहिं विचारी * है कोइ गुण मालामें भारी ॥
परमानन्द प्रेम रस पागे * मणियें सकल विलोकन लागे॥
विनु प्रकाश कछु और न तामें * मन लागै भक्तनको जामें ॥
मणि भीतर कछु हैहै सारा * मुक्ता एक तोरि तव डारा ॥
ताके मध्य विलोकन लागे * देख लोग अचरजमें पागे ॥
पुनि दूजो तोर्‍यो हनुमाना * देख निसार तज्यो बलवाना ॥
इहि विधि तोरत क्रम क्रममोती * पीर अधिक दर्शकगण होती ॥

१ विशाल अरुणकमल तद्वत् नेत्र । २ हाथ । ३ समुद्र । ४ राजा ।

कहन लगे निजनिज मनमाहीं * जो कोई अधिकारी नाहीं ॥
ताको ऐसी वस्तु न दीजै * नहिंतौ यही दशा लखि लीजै॥
दोहा-बोल उठ्यो कोउ नृपति यह, कहा करत हनुमान ॥
क्यों तोरतहो माल तुम, सुन्दर रत्न सुजान ॥२॥
वचन सुनत कह मारुतिवानी * देखहुँ राम नाम सुखदानी ॥
नाम न यामें परत लखाई * ताते तोरत डारत भाई ॥
कह कोउ सकल वस्तुके माहीं * राम नाम कहँ सुनियत नाहीं॥
कह मारुति न नाम जेहिमाहीं * सोतौ काहु कामकी नाहीं ॥
बोलो सोइ सुनो बलधामा * तुम तनु माहिं रामको नामा ॥
सुनत वचन कह पवनकुमारा * निश्चय तनु हरि नाम उदारा ॥
असकह कपि निजहृदयविदारा * राम राम प्रभु नाम अपारा ॥
अंकित राम नाम सब ठाहीं * लखिसब चकित भयेमनमाहीं॥
पुष्पवृष्टि नभ जयति उचारी * कृपादृष्टि रघुनाथ निहारी ॥
दोहा-अंग भयो पुनि कुलिश सम, उठ तुरंत भगवान ॥
वारि विलोचन पुलकतनु, हिय लाये हनुमान ॥३॥
भयो तहाँ अचरज यह भारी * देवन जय जय जयति उचारी ॥

इति क्षेपक ।

दोहा-भिन्न भिन्न स्तुतिकरी, गेसुरनिजनिजधाम ॥
वान्दि वेषधरि वेद तब, आये जहँ श्रीराम ॥ २८ ॥
प्रभु सर्वज्ञ कीन्ह अति, आदर कृपानिधान ॥
लखा नकाहू मर्म कछु, लगे करन गुणगान ॥२९॥

प्रथम सामवेद बोल्यो ।

छं०ह०गी०-जयसगुणनिर्गुणरूपराम अनूपभूप शिरोमने ॥
दशकन्धरादिप्रचण्ड निशिचर प्रबल खल भुज बल हने ॥
अवतार नर संसार भार विभंजि दारुण दुख दहे ॥

छंदार्थ-हे अनूपरूप भूपशिरोमणे ! आपकी जयहो क्योंकि तुम्हारे सगुण निर्गुण रूपमें यह प्रधान भूपरूप है रावण आदि भयंकर राक्षसोंको अपनी भुजाओंके बलसे नाशकरनेवालेहो मनुष्य

जय प्रणतपाल दयालु प्रभु संयुक्त शक्तिनमामि हे ॥७॥१

पुनि यजुर्वेद बोल्यो ।

तव विषममाया वश सुरासुर नाग नर अग जग हरे ॥
भव पंथ भ्रमित श्रमित दिवसनिशि कालकर्म गुणनिभरे॥
जेहिनाथ करि करुणा विलोकहु त्रिविधदुख ते निर्वहे ॥
भव खेद छेद न दक्षहम कहँ रक्षा राम नमामिहे ॥८॥२

पुनि अथर्ववेद बोल्यो ।

जे चरण शिवअजपूज्यरज शुभ पराशिमुनिपत्नी तरी ॥
नख चरण निर्गता सुखवन्दिता त्रैलोक्यपावन सुरसरी॥
ध्वज कुलिशअंकुशकंजयुत वन फिरत कंटक किन लहे ॥
पदकंज द्वंद्व मुकुन्दराम रमेश नित्य भजामिहे ॥९॥३
जे ज्ञानमान विमत्त तव भवहरणिभक्ति न आदरी ॥
ते पाइ सुरदुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ॥
विश्वास करि सब आश परिहरि दास तव जे होरहे ॥
जपिनामतवविनुश्रमतरहिंभवनाथ रामनमामिहे ॥१०॥४

का अवतार धारणकर संसारके भारको उतार दारुणदुःखके जलादेनेवाले हो, दीनोंके पालनेवाले दयायुक्त शक्तिसहित आपको प्रणाम करते हैं ॥ १ ॥ हे हरे तुम्हारी तीक्ष्णमायाके अर्थात अविद्याके वशमें होकर सुर, असुर, नाग, नर और जड चैतन्य हैं ते भवके मार्गमें रात दिन घूमते हुए थकगये हैं इसपरभी उनके ऊपर काल कर्म गुणोंके अनुकूल बोझ धराहै. हेनाथ ! जिनपर आप करुणा करके दृष्टि करते हो वह तीनों प्रकारके दुःख अर्थात् काल कर्म गुणोंसे छूट जाते हैं. हे जगतके दुःख काटनेमें चतुर रामजी ! हमारी रक्षा करो. हम आपको नमस्कार करते हैं ॥ २ ॥ जिन चरणोंकी रजको शिव ब्रह्मा पूजन करते हैं और जिसको स्पर्शकर मुनिकी पत्नी तरगई और जिनके नखोंसे नमस्कार योग्य त्रैलोक्यपावनी गंगा निकलीहै और जिन चरणोंमें ध्वज कुलिश अंकुशका चिह्न है जिनमें कि वनोंके फिरनेसे काँटे आदिकोंसे चिह्न पड़गये हैं वा कंटकिन कोल किरातोंने जो चरण पाये हैं.हे लक्ष्मीपति राम! आपके चिह्न मोक्षके देनेवाले दोनों चरणकमलोंका हम भजन करते हैं॥ ३ ॥ जिन्होंने ज्ञानके मानसे मतवाले होकर तुम्हारी भक्तिका आदर नहीं किया है उन्हें हम देखते हैं कि सुरदुर्लभपदको पाकर फिरभी पतित होते हैं और जो सब आशा छोड विश्वासकरके तुम्हारे दास होरहे हैं वे तुम्हारा नाम जपके विनाही श्रम

पुनि ऋग्वेद बोल्यो ।

अव्यक्त मूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ॥
षट्कन्ध शाख पंचविंश अनेक पर्ण सुमन घने ॥
फल युगल विधि कटु मधुरवेलि अकेलि जेहि आश्रितरहे ॥
पल्लवित फूलत नवल नित संसार विटप नमामिहे ॥ ११ ॥५
जेब्रह्म अज अद्वैत अनुभव गम्य मन पर ध्यावहीं ॥
तेकहहु जानहु नाथ हम तव सगुण यश नित गावहीं ॥
करुणायतन प्रभु सद्गुणाकर देव यह वर माँगहीं ॥
मनकर्म्मवचनविकारतजितवचरणहमअनुरागहीं ॥ १२ ॥६

दोहा--सबके देखत वेदन, विनती कीन्ह उदार ॥
अन्तर्द्धान भये तब, गये ब्रह्म आगार[1] ॥ ३० ॥
वैनतेय[2] सुन शंभु तब, आये जहँ रघुवीर ॥
विनय करत गद्गद गिरा, पूरित पुलक शरीर ॥ ३१ ॥

भवसागरपार होजाते हैं ऐसे आपका हम भजन करते हैं ॥४॥ इस संसाररूपी वृक्षकी जड विद्या मायारूपी अदृश्य है और यह वृक्ष अनादि है इसमें चारखान--अंडज पिंडज स्वेदज जरायुज ये चार बक्कल हैं, यह वेद शास्त्र कहता है और इसमें छः स्कन्ध हैं सुख, दुःख, शीत, उष्ण ज्ञान, अज्ञान, इन छःस्कंधोंमेंसे पचीस शाखा निकलती हैं पाँच तत्त्व पृथ्वी,जल, अग्नि,वायु, आकाश पाँच इनके विषय-शब्द, स्पर्श, रूप, रस गंध और दशइंद्रिय,पाँचज्ञानेन्द्रिय, नाक, कान, आँख, जिह्वा, त्वक्, पाँच कर्मेन्द्रिय चरण, लिंग, गुदा,हाथ, वाक्य और अन्तःकरण, मन बुद्धि अहंकार चित्त, महत्तत्त्व और अनेक प्रकारकी वासना पत्तोंके समूह हैं जो लगते और झड़ते रहते हैं और अनेक प्रकारके संकल्प फूल हैं किसीमें फल लगता है कोइ वैसेही गिरपडता है वोह फल पाप-पुण्यरूप होनेसे दो प्रकारके हैं एक खट्टा एक मीठा, उसपर अविद्या मायाकी वेल चढरही है उसमें सो नित्य पल्लव निकलते हैं और वोह नित्य फूलती रहती है ऐसे संसारवृक्षरूपी आपको हम नमस्कार करते हैं॥५॥जो जन आपको ब्रह्मरूप अज अजन्म और मायारहित अद्वैत स्वरूपादिक अनुभवसे जानने योग्य मनसे परे ध्यावते हैं सो वही कहैं वही जानैं हम तो तुम्हारा सगुणरूप नित्य अर्थात् ब्रह्म कहिके ध्यावते हैं और हे देव ! करुणानिधान सद्गुणोंकी खान ! आपमे हम यहीवर माँगते हैं कि, मन वचन कर्मसे विकार तज तुम्हारे चरणोंमें प्रीति करते रहैं ॥६॥

१ ब्रह्मलोक । २ गरुड ।

तो०छं०–जयरामरमारमणंशमनं, भवतापभयाकुल पाहिजनं ॥
अवधेश सुरेश रमेश विभो, शरणागत माँगत पाहिप्रभो ॥
दशशीश विनाशन वीसभुजा, कृतदूरिमहामहिभूरिरुजा ॥
रजनीचर वृन्द पतंग रहे, शरपावकतेज प्रचण्डदहे ॥१३॥१
महिमण्डलमण्डन चारुतरं, धृतसायक चाप निषंगवरं ॥
मद मोह महा ममतारजनी, तमपुंजदिवाकर तेजअनी ॥
मन जात किरात निपात किये, मृगलोग कुभोगशरेनहिये ॥
हितनाथअनाथनिपाहिहरे, विषयावशपामरभूलिपरे॥१४॥२
बहुरोग वियोगन्ह लोग हये, भवदंघ्रि निरादरके फलये ॥
भवसिंधु अगाध परे नरते, पदपंकज प्रेम न जे करते ॥
अति दीनमलीन दुखी नितहीं, जिनके पदपंकज प्रीतिनहीं॥
अवलंबभवंतकथाजिनको, प्रियसंतअनंदसदातिनको १५॥३
नहिंराग न रोष न मान मदा, तिनके सम वैभव वा विपदा॥
यहिते तव सेवक होतमुदा, मुनि त्यागत योग भरोससदा॥

हे रमारमण राम भवताप अर्थात् जरामरणके दूरकरनेवालेऔर डरसे व्याकुलजनोंकी रक्षाकरने वाले हो अवधेश हो और यही रूप आपका सुरेश रमेश है और व्यापकहे हेप्रभो ! शरणागतकी रक्षा वाले हो और पृथ्वीके रोगरूपी अनेक राक्षसों को आपने दूर किया और जो पतंगरूपी राक्षसोंके समूह थे वो आपकी तीक्ष्णवाणरूपी अग्निमें जलगये॥१॥पृथ्वीमंडलके आप श्रेष्ठ भूषण हैं धनुष बाण तरकस धारण किये हुए मद मोह ममता की बड़ी अँधेरी रात उसके नाश करनेमें आप तेजोंकी सेनाके लिये सूर्य हैं कामरूप वहेलियेने उन लोग मृगोंको जो अनाथ थे कुभोगबाण हृदयमें मारके निपात किया सो उसभयसे मैं शरणागत होताहूं आप मेरे नाथ हो और जो और जीव मारेगये वे अधम विषयवनमें भूलेपड़े थे ॥२॥ और उनमेंसे जो बचे सो कोई रोग कोई मरेहुओंके वियोगमें नष्ट हुए सो आपके चरणोंके निरादरका यही फल है और जो उनमेंसे भी बचे थे सो इस अथाह भवसागरमें पडे डूबते हैं, क्योंकि इन्होंने आपके चरणकमलमें प्रेम नहीं किया, क्योंकि जिनकी आपके चरणकमलोंमें प्रीति नहीं है वे नित्यही दीन और मलीन दुःखी रहते हैं और
है वा आपकी भवछेदन करनेवाली कथाका जिनको अवलम्ब है वा जिनको अनन्त सन्त सदा प्यारे हैं ॥३॥कैसे सन्त हैं कि, जिनको राग रोष मान मद नहीं है विपत्ति सम्पत्ति समान है इसीसे तुम्हारे सेवक मुनि आनन्दसे रहते हैं और योगके भरोसको छोड़देतेहैं जो आपके प्रेमका

कारि प्रेम निरंतर नेमलिये, पदपंकज सेवत शुद्धहिये ॥
सममान निरादर आदरही, सबसन्तसुखीविचरन्तमही १६।४
मुनि मानस पंकज भृंग भजै, रघुवीर महारण धीर अजै ॥
तव नाम जपामि नमामि हरी, भवरोग महामद मानअरी ॥
गुण शील कृपा परमायतनं, प्रणमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
रघुनन्दनिकन्दनद्वन्द्वघनं, महिपालविलोकयदीनजनं १७।५

दोहा–बार बार वर माँगौं, हर्षि देहु श्रीरंग ॥
पदसरोज अनपावनी, भक्ति सदा सतसंग ॥ ३२ ॥
वर्णि उमापति रामगुण, हर्षि गये कैलास ॥
तब प्रभु कपि न दिवाये, सब विधि सुखप्रद वास ॥ ३३ ॥

सुनुखगपति यहकथा सुहावनि*त्रिविधताप भव दोष नशावनि॥
महाराज कर शुभ अभिषेका *सुनत लहहिं नर विरति विवेका॥
जे सकाम नर सुनहु जेगावहिं *सुखसम्पति नानाविधि पावहिं॥
सुर दुर्लभ सुख कारि जगमाहीं * अन्तकाल रघुपति पुर जाहीं ॥
सुनहिं विमुक्त विरत अरुविषई*लहहिंभक्तिसुख सम्पतिनितई॥
खगपति राम कथा मैं वरणी *सुमति विलास त्रास दुखहरणी॥
विरति विवेक भक्ति दृढ करणी* मोहनदी कहँ सुंदर तरणी ॥
नित नव मंगल कोशलपुरी * हर्षित रहहिं लोग सब कुरी ॥
नित नव प्रीति रामपद पंकज *सेवत जेहि शंकर सुरमुनिअज ॥

नियमलिये शुद्धहृदयसे आपके चरणकमलको सेवते हैं और आदर अनादरको सम मानके पृथ्वी में विचरते हैं॥४॥ऐसे मुनियोंके मनकमलको आप भ्रमर होके सेवतेहार घुवीर महारणधीर और अजितहो मुनियोंके मनमें वसतेहो हेहरे आपके नामको हम जपते हैं और आपको प्रणाम करतेहैं तुम्हारा नाम भवरोग महामद मानका शत्रु है गुणशील कृपा और परमशोभाके घर हो ऐसे आप श्रीरमणको मैं अतिशय प्रणाम करताहूं हेद्वन्द्वघन अर्थात् रावण कुम्भकर्णके नाशक रघुनाथ महीपाल कृपाकर मुझ दीन जनको देखिये हे लक्ष्मीपति बार २ यही वर मांगताहूं कि, आपके चरणकमलकी अनपावनी भक्ति मिलै ॥ ५ ॥

१ ज्ञान विज्ञान। २ च्यारिउ वर्णके अनेक भेद

मंगन बहु प्रकार पहिराये * द्विजन दान नाना विधिपाये ॥

दोहा--परमानन्द मगन कपि, सबके प्रभुपद प्रीति ॥
जात न जानेउ दिवस निशि, गये मासषट[1] बीति ॥ ३४ ॥

बिसरे गृह स्वप्ने सुधि नाहीं * जिमि परद्रोह सन्त मनमाहीं॥
तब रघुपति सब सखा बुलाये * आइ सबहिं सादर शिरनाये ॥
प्रेम समेत निकट बैठारे * भक्तसुखद मृदु वचन उचारे ॥
तुम अति कीन्ह मोरि सेवकाई * मुखपर केहि विधि करौंबड़ाई॥
ताते मोहिं तुम अतिप्रिय लागे * ममहितलागिभवनसुख त्यागे॥
अनुज राज्य सम्पति वैदेही * देह गेह परिवार सनेही ॥
सब मोहिं प्रिय नहिं तुमहिंसमाना * मृषा न कहौं मोर यहबाना॥
सब कहँ प्रिय सेवक यह नीती * मोरे अधिक दास पर प्रीती ॥

दोहा-अब गृह जाहु सखा सब, भजहु मोहिं दृढ नेम ॥
सदा सर्वगत[2] सर्वहित, जानि करेहु अति प्रेम ॥ ३५ ॥

सुनि प्रभुवचन मगन सब भये * को हम कहाँ बिसारि गृहगये ॥
यकटक रहे जोरि कर[3] आगे * कहिनसकत कछु अतिअनुरागे[4]
परम प्रीति तिनकर प्रभु देखी * कहा विविधविध ज्ञान विशेषी ॥
प्रभु सन्मुख कछु कहै नपारहिं * पुनिपुनिचरणसरोजनिहारहिं॥
तब प्रभु भूषण वसन मँगाये * नाना रंग अनूप सुहाये ॥
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराये * भरत वसन निज हाथ बनाये ॥
प्रभु प्रेरित लक्ष्मण पहिराये * लंकापति[5] रघुपति मन भाये ॥
अंगद बैठिरहे नहिं डोले * प्रीति जानि प्रभु ताहि न बोले॥

दोहा-जाम्बवन्त नीलादि सब, पहिराये रघुनाथ ॥
हिय धरि राम स्वरूप सब, चले नाय पद माथ ॥ ३६ ॥
तब अंगद उठि नाइशिर, सजल नयन करजोरि ॥
अति विनीत बोले वचन, मनहुँ प्रेम रस बोरि ॥ ३७ ॥

१ छः महीना । २ व्यापक । ३ हाथ । ४ प्रीतियुक्त भये । ५ विभीषण ।

सुन सर्वज्ञ कृपासुखसिन्धो * दीन दयाकर आरतबन्धो ॥
मरती बार नाथ मोहिं बाली * गयो तुम्हारे पगतर घाली ॥
अशरण शरण बिरुद सम्भारी * मोहिंजनितजहु भक्तभयहारी॥
मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता * जाउँ कहाँ तजि पदजलजाता॥
तुमहि विचारि कहहु नरनाहा * प्रभुतजिभवन काजममकाहा॥
बालक अबुध ज्ञान बल हीना * राखहु शरण जानि जन दीना॥
नीच टहल गृहकी सब करिहौं * पद बिलोकि भवसागर तरिहौं॥
असकहि चरण परे प्रभु पाहीं * अबजनिनाथ कहहु गृहजाहीं॥

दोहा–अंगद वचन विनीत सुनि, रघुपति करुणासींव ॥
प्रभु उठाय उर लायऊ, सजल नयनराजीव ॥ ३८ ॥
निज उरमाला वसन मणि, वालितनय पहिराय ॥
बिदा किये भगवान तब, बहुप्रकार समुझाय ॥ ३९ ॥

भरत अनुज सौमित्रि[1] समेता * पठवन चले भक्तकृतचेता[2] ॥
अंगद हृदय प्रेम नहिं थोरा *फिरिफिरिचितवतप्रभुकीओरा॥
बार बार करि दण्ड प्रणामा *मनअसरहनकहहिंमोहिंरामा॥
राम विलोकनिबोलनिचलनी*सुमिरिसुमिरिशोचतहँसिमिलनी॥
प्रभुरुख देखि विनय बहु भाषी * चले हृदय पदपंकज[3] राखी ॥
अति आदर सब कपि पहुँचाये * भाइन सहित राम फिरि आये ॥
तब सुग्रीव चरण गहि नाना * भाँति विनय कीन्हीं हनुमाना ॥
दिनदशकरि रघुपतिपद सेवा * तब फिरि चरण देखिहौं देवा ॥
पुण्यपुंज तुम पवनकुमारा * सेवहु जाइ कृपालु अगारा ॥
असकहि कपिपति चले तुरंता * अंगद कहेउ सुनहु हनुमंता ॥

दोहा–करेहु दण्डवत प्रभु सन, तुमहिं कहौं करजोरि ॥
बार बार रघुनायकहि, सुरति करायहु मोरि ॥ ४० ॥
अस कहि चलेउ वालिसुत, फिरि आये हनुमंत ॥

१ लक्ष्मणजी । २ सब भक्तनके बाह्यांतरके चैतन्यकर्ता । ३ चरणकमल ।

तासु प्रीति प्रभुसन कही, मगन भये भगवंत ॥ ४१ ॥
कुलिशहुँ चाह कठोर अति, कोमल कुसुमहु चाहि ॥
चित खगेश रघुनाथ अस, समुझिपरै कहु काहि ॥ ४२ ॥

पुनिकृपालु लियबोलि निषादा * दीन्हेउ भूषण वसन प्रसादा ॥
जाहु भवन मम सुमिरण करहू * मन क्रम वचन धर्म अनुसरहू ॥
तुम मम सखा भरत सम भ्राता * सदा रहहु पुर आवत जाता ॥
वचन सुनत उपजा सुखभारी * परेउ चरण लोचन भरिवारी ॥
चरणकमल उरधारि गृह आवा * प्रभुप्रभाव परिजनहिं सुनावा ॥
रघुपति चरित देखि पुरवासी * पुनि पुनि कहहिंधन्यसुखरासी ॥
राम राज्य बैठे त्रयलोका * हर्षित भयउ गयउ सब शोका ॥
बैर न कर काहूसन कोई * रामप्रताप विषमता खोई ॥

दोहा–वर्णाश्रम निज निज धरम, निरत वेदपथ लोग ॥
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नहिं भय शोक न रोग ॥ ४३ ॥

दैहिक[1] दैविक[2] भौतिक[3] तापा * रामराज्य नहिं काहुहिं व्यापा ॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती * चलहिं सुधर्म निरत श्रुतिनीती ॥
चारिउ चरण धर्म्म जगमाहीं * पूरि रहा स्वप्नेहु अघ नाहीं ॥
रामभक्तिरत नर अरु नारी * सकल परमगतिके अधिकारी ॥
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउँ पीरा * सब सुंदर सब निरुज शरीरा ॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना * नहिं कोउ अबुध न लक्षणहीना ॥
सब निर्दम्भ धर्म रत धरणी * नरअरु नारि चतुर शुभकरणी ॥
सब गुणज्ञ सब पण्डित ज्ञानी * सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी ॥

दोहा–रामराज्य विहँगेश सुनु, सचराचर जगमाहिं ॥
काल कर्म स्वभाव गुण, कृत दुख काहुहि नाहिं ॥ ४४ ॥

भूमि सप्त सागर मेखला * एक भूप रघुपति कोशला ॥
भुवन अनेक रोमप्रति जासू * यह प्रभुता कछु बहुत न तासू ॥

१ दैहिक कही आध्यात्म देहसम्बन्धीतामें दो भेदहैं, एक बाह्यज्वर मिथ्या भाषणादि. पुनि एकअन्तर, काम क्रोध, लोभ, मात्सर्य इत्यादि । २ अधिदैवत जो देवतोंकरके विघ्नहोय पाला, पत्थर, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, वज्रपातादि । ३ अधिभूत जो जीवनकरके पीडित होय ।

सो महिमा समुझत प्रभुकेरी * यह वर्णत हीनता घनेरी ॥
यह महिमा खगेश जिन जानी * फिरियहचारिततिनहुँरतिमानी॥
सो जाने कर फल यह लीला * कहहिंमहामुनिसुमतिसुशीला॥
रामराज्य कर सुख सम्पदा * वरणि नसकहिंफणीशशारदा॥
सब उदार सब परउपकारी * द्विजसेवकसब नर अरु नारी ॥
एकनारि व्रत रत नरझारी * ते मन वच क्रमपतिहितकारी॥
दोहा–दण्ड यतिनकर भेद जहँ,नर्तक नृत्य समाज ॥
जीतहिं मनहिं सुनिय अस, रामचन्द्रके राज ॥४५॥
फूलहिं फलहिं सदा तरुकानन * रहहिं एकसँग गज पंचानन ॥
खग मृग वैर सहज बिसराई * सबनि परस्पर प्रीति बढाई ॥
कूजहिं खग मृग नानावृन्दा * अभयचरहिंवनकरहिंअनन्दा॥
शीतलसुरभि पवन वह मन्दा * गुंजत अलि लेचलु मकरन्दा ॥
लता विटप मांगे फल द्रवहीं * मनभावते धेनु पय स्रवहीं ॥
शशिसम्पन्न सदा रह धरणी * त्रेता भइ सतयुगकी करणी ॥
प्रगटे गिरि नाना मणि खानी * जगदात्मा भूप पहिचानी ॥
सरिता सकल वहैं वर वारी * शीतल अमल स्वाद सुखकारी॥
सागर निज मर्य्यादा रहहीं * डारहिंरत्न तटनि नर लहहीं ॥
सरसिजसंकुल सकल तड़ागा * अतिप्रसन्नदशादिशा विभागा ॥
दोहा–विधु[11]महि पूर पियूषन[12], रवि तप जित नहिं काज ॥
माँग वारिद[13] देहिं जल, रामचन्द्रके राज ॥४६॥
कोटिन वाजपेयि प्रभु कीन्हें * अमित दान विप्रनकहँ दीन्हें ॥
श्रुतिपथपालक धर्मधुरन्धर * गुणातीत अरु भोग पुरन्दर ॥
पति अनुकूल सदा रह सीता * शोभाखानि सुशील विनीता ॥
[illegible] न्धु प्रभुताई * सेवति चरणकमलमन लाई ॥
यद्यपि गृह सेवक सेवकिनी * सब प्रकार सेवा विधि लीनी॥
निजकर परि[14]चर्याकरहीं * रामचन्द्र आयसु अनुसरहीं

१ वन । २ सिंह । ३ सुगंधित । ४ भ्रमर । ५ रस । ६ डालैं । ७ गाय । ८ दूध । ९ धान्ययुक्त । १० कम
११चन्द्र । १२ किरणामृत । १३ मेघ । १४ टहल ।

जेहिविधि कृपासिन्धुसुखमानहिं * सोइसियसेवाविधिउरआनहिं
कौशल्यादि सासु गृह माहीं * सेवहिं सबै मान मद नाहीं ॥
उमा रमा ब्रह्माणि वन्दिता * जगदम्बा सन्ततमानिन्दिता ॥
दोहा–जाकी कृपा कटाक्ष सुर, चाहत चितवनि सोइ ॥
रामपदारविन्दरत, रहति स्वभावहिं सोइ ॥४७॥
सेवहिं सानुकूल सब भाई * रामचरण रति प्रीति सुहाई ॥
प्रभुपदकमल विलोकत रहहीं * कबहुँकृपालुहमहिं कछु कहहीं॥
राम करहिं भ्रातन पर प्रीती * नाना भाँति शिखावहिं नीती ॥
हर्षित रहहिं नगरके लोगा * करहिंसकलसुरदुर्लभ भोगा ॥
अहंनिशिविधिहिमनावतरहहीं * श्रीरघुवीरचरण रति चहहीं ॥
दुइ सुत सुन्दर सीता जाये * लव कुश वेद पुराणन गाये ॥
दोउविजयीविनयीअतिसुन्दर * हरिप्रतिबिंब मनहुँ गुणमंदिर॥
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन केरे * भये रूप गुणशील घनेरे ॥
दोहा–ज्ञान गिरा गोतीत अज, माया गुण गोपार ॥
सोइ सच्चिदानन्द घन, कर नरचरितअपार ॥४८॥
प्रातकाल सरयू करि मज्जन * बैठहिं सभासंग द्विज सज्जन ॥
वेद पुराण वसिष्ठ बखानहिं * सुनहिंरामयद्यपि सबजानहिं॥
अनुजन संयुत भोजन करहीं * देखि सकलजननीसुखभजहीं॥
भरत शत्रुहन दोनों भाई * सहित पवनसुत उपवन जाई ॥
पूछहिं बैठि रामगुण गाहा * कहहनुमान सुमतिअवगाहा ॥
सुनतविमलगुणअतिसुखपावहिं * बहुरिबहुरिकैविनयसुनावहिं ॥
सबके गृह गृह होय पुराना * रामचरित सुन्दर विधिनाना ॥
नर अरु नारिरामगुणगावहिं * करहिंदिवसनिशिजातनजानहिं
दोहा–अवधपुरी वासिन्ह कर, सुख सम्पदा समाज ॥
सहसशेष नहिं कहि सकहिं, जहँ नृप राम विराज ॥४९॥
नारदादि सनकादि मुनीशा * दर्शन लागि कोसलाधीशा ॥

१ चरणकमल । २ रात दिन । ३ भीति । ४ इन्द्रियोंसे परे । ५ भाइन । ६ माता । ७ निर्मल । ८ हजार शेषनाग

दिनप्रति सकल अयोध्या आवहिं * देखि नगर विराग बिसरावहिं ॥
रत्नजटित मणि कनक अटारी * नाना रंग रुचिर गच ढारी ॥
पुर चहुँपास कोट अतिसुंदर * रचे कँगूरा रंग रंग वर ॥
नव गृह सुन्दर निकर बनाई * जनु दूसरि अमरावति आई ॥
माहि बहुरूप रुचिरगचकाँचा * जो विलोकि मुनिवर मनराँचा ॥
धवल धाम ऊपर नभचुम्बत * कलशमनहु शशिरविद्युतिनिन्दत
बहुमणि रचित झरोखन भ्राजैं * गृह गृह प्रति मणि दीप विराजैं ॥
छंद–मणि दीपराजहिं भवन भ्राजहिं देहरी विद्रुम रची ॥
सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर अति फटिकन खची ॥
मणिखंभ भीति विरंचि विरचित कनकमणि मरकतरचे ॥
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाय बहु वज्रन खचे ॥ १८ ॥
दोहा–चारु चित्रशाला अमित, गृह गृह रचे बनाइ ॥
रामधाम जो निरखत, मुनि मन लेत चुराइ ॥ ५० ॥
सुमनवाटिका सबहिं लगाई * विविध भाँति करि यतनबनाई ॥
लता ललित बहुभाँति सुहाई * फूलहिं सदा वसन्तकि नाई ॥
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर * मारुत त्रिविध सदा बहसुंदर ॥
नाना खग बालकन जिआये * बोलत मधुर उड़ात सुहाये ॥
मोर हंस सारस पारावत * भवननपर शोभा अति पावत ॥
जहँ तहँ देखहिं निज परिछाहीं * बहुविधि पूजहिं नृत्य कराहीं ॥
शुक सारिका पढावहिं बालक * कहहु राम रघुपति जनपालक ॥
राजद्वार सबही विधि चारू * वीथी चौहट रुचिर बजारू ॥
छंद–बाजार रुचिर न बनै वर्णत वस्तु बिनुगथ पाइये ॥
जहँ भूप रमानिवास तहँकी सम्पदा किमि गाइये ॥
बैठे बजाज सराफ वणिक अनेक मनहुँ कुबेरते ॥
सब सुखी सब सुचारित्र सुन्दर नर युवा शिशु जरठते ॥ १९ ॥
दोहा–उत्तरदिशि सरयू बहै, निर्मल जल गम्भीर ॥

१ भृंगा । २ अँगनाई । ३ हीरा । ४ सन्दर । ५ भ्रमर । ६ वायु । ७ बोलाई । ८ सुन्दर । ९ अमूल्य ।

बाँधे घाट मनोहर, स्वल्प पंक[1] नाहिं तीर ॥ ५१ ॥
दूर फराक रुचिर सो घाटा * चहँ जलपियहिं बाजिगजठाटा॥
पनिघट परम मनोहर नाना * तहाँ न पुरुष कराहिं अस्नाना ॥
राजघाट सबही विधि सुन्दर * मज्जहिं तहाँ बरणचारिउ नर ॥
तीर तीर देवनके मन्दिर * चहुँदिशि तिहिंके उपवन सुंदर॥
कहुँ कहुँ सरिता तीर निवासी * वसहिं ज्ञानरत मुनि संन्यासी॥
जहँ तहँ तुलसीवृन्द सुहाये * बहुप्रकार सब मुनिन लगाये ॥
पुर शोभा कछु वरणि न जाई * बाहर नगर परम रुचिराई ॥
देखत पुरी अखिल[3] अघभागा * वन उपवन वापिका तड़ागा ॥
छंद–वापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहई ॥
सोपान सुन्दर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहई ॥
बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं ॥
आराम रम्य पिकादि खग रव मनहुँ पथिक[4] हँकारहीं॥२०॥
दोहा–रमानाथ जहँ राजा, सो पुर वरणि न जाइ ॥
अणिमादिक सुख सम्पदा, रही अवधपुर छाइ ॥ ५२ ॥
जहँ तहँ नर रघुपतिगुणगावहिं* बैठि परस्पर इहै शिखावहिं ॥
भजहु प्रणतप्रतिपालक रामहिं * शोभाशीलरूप गुणधामहिं ॥
जलज[5]विलोचन श्यामलगातहिं* पलकनयन इव सेवकत्रा[6]तहिं ॥
धृत[7] शर रुचिर चाप तूणीर[8]हिं * सन्त कंजवन रवि रण धीरहिं ॥
काल कराल व्याल खगराज[9]हिं * नमत राम अकाम ममताजहिं॥
लोभ मोह मृगयूथ किरातहिं *मनसिज[10] करि[11] हरिजनसुखदातहिं
संशय[12] शोकनिबिडतम[13]भानु[14]हिं * दनुजगहन वनदहन कृशानु[15]हिं ॥
जनकसुता समेत रघुवीरहिं * कस न भजहु भंजनभवभीरहिं॥
बहुवासना मशकहिम[16]राशिहिं * सदाएकरसअज[17]अविनाशिहिं ॥
मुनिरंजन[18] भंजन महि भारहिं * तुलसिदासके प्रभुहि उदारहिं ॥
दोहा–इहि विधि नगर नारि नर, करहिं रामगुणगान ॥

१ कीच । २ घांडे । ३ सम्पूर्ण । ४ मुसाफिर । ५ कमलनयन । ६ रक्षक । ७ धारणकिये हैं । ८ तरकस । ९ गरुड । १० कामदेव ११ हाथी । १२ भ्रम । १३ अतिसघनअन्धकार । १४ श्रीसूर्यनारायण । १५ अग्नि । १६ पालोंकीराशि । १७ अजन्मा । १८ आनन्दकर्त्ता

सानुकूल सन्तत रहत, सब पर कृपानिधान ॥ ५३ ॥
जबते राम प्रताप खगेशा * उदित भयउ अतिप्रबलदिनेशा ॥
पूरि प्रकाश रह्यो तिहुँ लोका * बहुतन सुख बहुतन मन शोका ॥
जिनहिं शोक तेहि कहौं बखानी * प्रथम अविद्या निशा सिरानी ॥
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने * काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥
विविध कर्म गुण काल स्वभाऊ * ये चकोर सुख लहहिं नकाऊ ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा * इनकहँसुखनाहिंकवनिहुँ ओरा ॥
धर्म तड़ाग ज्ञान विज्ञाना * ये पंकज विकसे विधि नाना ॥
सुख सन्तोष विराग विवेका * विगत शोक ये कोक अनेका ॥
दोहा–यह प्रताप रवि जासु उर, जब प्रभु करहिं प्रकाश ॥
पाछिल बाढहिं प्रथमजे, कहेते पावहिं नाश ॥ ५४ ॥
भ्रातन सहित राम इक बारा * संग परमप्रिय पवनकुमारा ॥
सुन्दर उपवन देखन गयऊ * सबतरु कुसुमितपल्लवनयऊ ॥
जानि समय सनकादिक आये * तेज पुंज गुण शील सुहाये ॥
ब्रह्मानन्द सदा लय लीना * देखत बालक बहु कालीना ॥
धरे देह जनु चारिउ वेदा * समदरशी मुनिविगतविभेदा ॥
आशावसन व्यसन नहिं तिनहीं * रघुपतिचरितहोइ तहँ सुनहीं ॥
तहाँ रहे सनकादि भवानी * जहँघटसम्भवमुनिवर ज्ञानी ॥
रामकथा मुनि बहु विधि वरणी * ज्ञान योगपावक जिमिअरणी ॥
दोहा–देखि राम मुनि आवत, हर्षि दण्डवत कीन्ह ॥
स्वागत पूँछी पीत पट, प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ॥ ५५ ॥
कीन्ह दण्डवत तीनिउँ भाई * सहित पवनसुतसुख अधिकाई ॥
मुनिरघुपतिछबिअतुलविलोकी * भयेमग्नमन सकत न रोकी ॥
श्यामलगात सरोरुह लोचन * सुंदरतामन्दिर भवमोचन ॥
कटक रहे निमेष न लावहिं * प्रभु करजोरे शीश नवावहिं ॥

कुमुदिन । २ चकचकई । ३ तदात्मक ब्रह्माकारवृत्ति एकरस अखंड । ४ दशोंदिशा । ५ अगस्त्यमुनि । ६

कर गहि प्रभु मुनिवर बैठारे * परम मनोहर वचन उचारे ॥
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीशा * तुम्हरे दरश जाहिं अघ खीशा ॥
बडे भाग्य पाइय सतसंगा * बिनहिं प्रयास होहिं भवभंगा ॥
दोहा–सन्त संग अपवर्ग कर, कामी भव कर पंथ ।
कहहि सन्त कवि कोविद, श्रुति पुराण सद्ग्रन्थ ॥ ५६ ॥
सुनि प्रभुवचन हर्षि मुनिचारी * पुलकगात स्तुति अनुसारी ॥
जय भगवन्त अनन्त अनामय[2] * अनघ[3] अनेक एक करुणामय ॥
जय निर्गुण जय जय गुणसागर * सुखनिधान तिहुँलोकउजागर ॥
जय इन्दिरारमण जय भूधर * अनुपमअजअनादिशोभाकर ॥
ज्ञाननिधान अमान मानप्रद * पावन सुयश पुराण वेद वद ॥
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञता भंजन * नाम अनेक अनाम निरंजन ॥
सर्व सर्वगत सर्व उरालय * वसहुसदाहमकहँ प्रतिपालय ॥
द्वंद्व विपति भवफंद विभंजन * हृद वसु राम काम मद गंजन ॥
दोहा–परमानन्द कृपायतन, तुम परिपूरणकाम ।
प्रेमभक्ति अनपावनी, देहु हमहिं श्रीराम ॥ ५७ ॥
देहु भक्ति रघुपति अनपावनि * त्रिविध तापभव[10] दाप[11] नशावनि ॥
प्रणत[12] काम सुरधेनु कल्पतरु * होइ प्रसन्न प्रभु दीजै यह वरु ॥
भववारिधि कुंभज[13] रघुनायक * सेवकसुलभ सकलसुखदायक ॥
मनसम्भव[14] दारुण दुखदारय * दीनबन्धु समता विस्तारय ॥
आस त्रास ईर्षादि निवारक * विनयविवेक विरति विस्तारक ॥
भूप मौलि मणि मण्डन धरणी * देहु भक्ति संसृति सरि तरणी ॥
मुनि मन मानस हंस निरंतर * चरणकमलवन्दित अज शंकर ॥
रघुकुलकेतु सेतु श्रुतिरक्षक * काल कर्म स्वभाव गुणभक्षक ॥
तारण तरण हरण सब दूषण * तुलसिदासप्रभु त्रिभुवन भूषण ॥
दोहा–बार बार अस्तुति करि, प्रेम सहित शिरनाय ।
ब्रह्मभवन सनकादिगे, अति अभीष्ट वरपाय ॥ ५८ ॥

१ मोक्ष । २ षट्विकारते रहित । ३ पापरहित । ४ लक्ष्मीपति । ५ परमतत्वरूप परमतत्ववत्ता । ६ सबकी करणीके जाननहार । ७ मायातरहित । ८ नाशकर्त्ता । ९ कृपाके स्थान । १० संसार । ११ दुःख । १२ शरण । १३ अगस्त्यमुनि । १४ उत्पन्न ।

सनकादिक विधिलोक सिधाये * भ्रातन रामचरण शिरनाये ॥
पूँछत प्रभुहिंसकलसकुचाहीं * चितवहिं सबमारुतसुतपाहीं ॥
सुना चहहिंप्रभुमुखकर वाणी * जो सुनि होयसकलभ्रमहानी ॥
अन्तर्यामी प्रभु सब जाना * पूँछत कहा कहहु हनुमाना ॥
जोरि पाणि तब कह हनुमंता * सुनिये दीनबन्धु भगवन्ता ॥
नाथ भरत कछु पूँछन चहहीं * प्रश्न करत मन सकुचतअहहीं॥
तुम जानहु कपि मोर स्वभाऊ * भरतहि मोहिं न कछू दुराऊ ॥
सुनिप्रभुवचनभरतगहिचरणा * सुनियनाथप्रणतारति हरणा ॥
दोहा–नाथ न मोहिं संदेह कछु, स्वप्नेहु शोक न मोह ॥
केवल कृपा तुम्हारि प्रभु, चिदानन्द संदोह ॥५९॥
करौं कृपानिधि एक ढिठाई * मैं सेवक तुम जन सुखदाई ॥
संतनकी महिमा रघुराई * बहुविधि वेद पुराणन गाई ॥
श्रीमुख पुनि तुम कीन्हबडाई * तिन्हपरप्रभुहिंप्रीतिअधिकाई ॥
सुना चहौं प्रभु तिन्हकरलक्षण * कृपासिन्धु गुणज्ञान विचक्षण ॥
सन्त असन्त भेद बिलगाई * प्रणतपाल मोहिंकहिय बुझाई॥
सन्तनके लक्षण सुनु भ्राता * अगणित श्रुतिपुराण विख्याता॥
सन्त असन्तनकी अस करणी * जिमिकुठारचन्दन आचरणी ॥
काटे परशु मलय सुनु भाई * निज गुण देइ सुगन्ध बसाई ॥
दोहा–ताते सुर शीशन चढत, जगवल्लभ श्रीखण्ड ॥
अनल दाहि पीटतघनहिं, परशु वदन यह दण्ड ॥६०॥
विषय अलंपट शीलगुणाकर * परदुखदुखसुख सुख देखेपर ॥
सम अद्भुत रिपु विमदविरागी * लोभामर्ष हर्ष भय त्यागी ॥
कोमल चित दीननपर दाया * मन वच क्रम ममभक्तअमाया॥
सबहिं मानप्रद आपु अमानी * भरत प्राणसम मम ते प्रानी ॥
विगतकाम मम नाम परायन * शान्तविरक्तविदितमुदितायन॥
शीतलता सरलता मयत्री * द्विजपदप्रेम धर्म जनु यंत्री ॥

१ समूहसमुद्रहो। २ प्रवीण। ३ करता। ४ प्रिय। ५ चन्दन। ६ रहित। ७ लीन। ८ आनंदके स्थान।

यह सब लक्षण बसहिं जासु उर * जानेहु तात संत संतत फुर ॥
शम दम नियम नीतिनहिं डोलहिं * परुषवचनकबहूँ नहिंबोलहिं ॥
दोहा–निन्दा अस्तुति उभय सम, ममता मम पद कंज ॥
ते सज्जन मम प्राणप्रिय, गुणमन्दिर सुखपुंज ॥ ६१ ॥
सुनहु असन्तन केर स्वभाऊ * भूलेहु संगति करिय न काऊ ॥
तिनकर सँग सदा दुखदाई * जिमि कपिलहिं घालै हरहाई ॥
खलन हृदय अतिताप विशेषी * जरहिं सदा परसम्पति देखी ॥
जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई * हर्षहिं मनहुँ परी निधिपाई ॥
काम क्रोध मद लोभ परायन * निर्दय कपटी कुटिल मलायन[3] ॥
वैर अकारण सब काहूसों * जोकर हित अनहित ताहूसों ॥
झूठै लेना झूठै देना * झूठै भोजन झूठ चबेना ॥
बोलहिं मधुरवचन जिमि मोरा * खाहिं महा अहिहृदय कठोरा ॥
दोहा–परद्रोही परदाररत, परधन परअपवाद ॥
ते नर पामर[4] पापमय, देह धरे मनुजाद ॥ ६२ ॥
लोभै ओढन लोभै डासन * शिश्नोदर पर यमपुर त्रासन ॥
काहूकी जो सुनहिं बड़ाई * श्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ॥
जब काहूकी देखहिं विपती * सुखी होहिं मानहु जगनृपती ॥
स्वारथरत परिवार विरोधी * लम्पट काम लोभअतिक्रोधी ॥
मात पिता गुरु विप्र न मानहिं * आपु गयेअरुघालहिं आनहिं ॥
करहिं मोहवश द्रोह परावा * सतसंगति हरि भक्ति न भावा ॥
अवगुणसिन्धु मन्दमति कामी * वेद विदूषक[11] परधनस्वामी ॥
विप्रद्रोह परद्रोह विशेषी[12] * दम्भ[13] कपट[14] जियधरे सुवेषी ॥
दोहा–ऐसे अधम मनुज खल, कृतयुग त्रेता नाहिं ॥
द्वापर कछुक वृन्द[15] बहु, होइहैं कलियुग माहिं ॥ ६३ ॥
[16]परहित सरिस धर्म नहिं भाई * परपीडा सम नहिं अधमाई ॥
निर्णय सकल पुराण वेदकर * कहेउँ तातजानहिं कोविदनर ॥

१ दोनों । २ परायाद्रव्य । ३ पापोंकेस्थान । ४ नरपशु । ५ राक्षस । ६ लीन । ७ ईर्षा । ८ कुकर्म । ९ अल्पबुद्धि । १० परस्त्रीरत । ११ निंदक । १२ अत्यंतकर । १३ ठगनार्थ अनेक भेषधरना । १४ अन्तर और प्रकट और । १५ समूह । १६ गैरको तन मन धनसे सहारा देना ।

नर शरीर धरि जो पर पीरा * करहिं ते सहहिं महा भवभीरा ॥
करहिं मोहवश नर अघ नाना * स्वारथ रत परलोक नशाना ॥
कालरूप मैं तिनकहँ ताता * शुभ अरुअशुभकर्मफलदाता॥
अस विचारि जो परम सयाने * भजहिं मोहिं संसृतदुख जाने ॥
त्यागहिं कर्म शुभाशुभदायक * भजैं मोहिं सुरनर मुनिनायक॥
सन्त असन्तनके गुण भाषे *ते न परहिं भव जिन लखिराखे॥
दोहा–सुनहु तात मायाकृत, गुण अरु दोष अनेक ॥
गुण यह उभय न देखिये, देखिय सो अविवेक ॥६४॥
श्रीमुखवचन सुनत सबभाई * हर्ष प्रेम नहिं हृदय समाई ॥
करहिं विनय अति बारहिं बारा* हनूमान हिय हर्ष अपारा ॥
पुनि रघुपति निजमन्दिर गये * इहिं विधिचरितकरतनितनये॥
बार बार नारद मुनि आवहिं * चरित पुनीत रामकर गावहिं ॥
नित नवचरित देखिमुनिजाहीं * ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं ॥
सुनिविरंचिअतिशयसुखमानहिं*पुनिपुनितातकरहुगुणगानहिं ॥
सनकादिक नारदहिं सराहहिं * यद्यपिब्रह्मनिरत मुनि आहहिं ॥
सुनि गुणगान समाधि बिसारी* सादर सुनहिं परम अधिकारी॥
दोहा–जीवनमुक्ति ब्रह्मपर, चरित सुनहिं तजि ध्यान ॥
जेहरि कथा न करहिं रति, तिनके हृदय पषान ॥६५॥
एक बार रघुनाथ बुलाये * गुरु द्विज पुरवासी सब आये ॥
बैठे गुरु द्विज वर मुनि सज्जन * बोले वचन भक्त भय भंजन ॥
सुनहु सकल पुरजन मम वानी* कहौं न कछु ममताउर आनी॥
नहिं अनीति नहिंकछुप्रभुताई * सुनौ करहु जो तुमहिं सुहाई ॥
सोइ सेवक प्रीतम मम सोई * मम अनुशासन मानै जोई ॥
ति कछु भाषौं भाई * तो मोहिंबरजेहु भय बिसराई ॥
बडे भाग्य मानुष तनु पावा * सुरदुर्लभ सदग्रन्थन गावा ॥
साधन धाम मोक्षकर द्वारा * पाइन जे परलोक सँवारा ॥

बोरसागर । २ ब्रह्मा । ३ प्रीति । ४ पत्थर । ५ अपनपौ । ६ आज्ञा । ७ शरीर

दोहा–सो परत्र दुख पावई, शिर धुनि धुनि पछिताइ ॥
काळहि कर्म्महिं ईश्वरहि, मिथ्या दोष लगाइ ॥ ६६ ॥

यहि तनुकर फल विषयन भाई * स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई ॥
नर तनु पाइ विषय मन देहीं * पलटि सुधाते शठ विष लेहीं ॥
ताहि कबहुँ भल कहै नकोई * गुंजा गहहि परस मणि खोई ॥
आकर[1] चारि[2] लाख चौरासी * योनिनभ्रमत जीवअविनासी ॥
फिरत सदा मायाके प्रेरे * काल कर्म स्वभाव गुण घेरे ॥
कबहुँक करि करुणानरदेही * देत ईश बिनु हेतु सनेही ॥
नर तनु भव वारिधि[3] कहँ बेरे[4] * संमुख मरुत[5] अनुग्रह मेरे ॥
कर्णधार सद्गुरु दृढ़ नावा * दुर्लभ साजसुलभ करि पावा ॥

दोहा–जो न तरै भवसागरहिं, नर समाज अस पाइ ॥
सोकृतनिन्दक[6] मन्दमति, आतमहनगतिजाइ ॥ ६७ ॥

जोपरलोक इहाँ सुख चहहू * सुनिममवचनहृदयदृढ गहहू ॥
सुलभ सुखद यह मारग भाई * भक्ति मोरि पुराण श्रुतिगाई ॥
ज्ञान अगम प्रत्यूह[7] अनेका * साधन कठिन नमनमहँ टेका ॥
करत कष्ट बहु पावत कोई * भक्तिहीन प्रिय मोहिं न सोई ॥
भक्तिस्वतंत्र सकल सुखखानी * विन सतसंग न पावहिं प्रानी ॥
पुण्यपुंज बिन मिलहिं न संता * सतसंगति संसृति कर अंता ॥
पुण्य एक जगमहँ नहिं दूजा * मन क्रम वचन विप्र पद पूजा ॥
सानुकूल तिहिंपर सब देवा * जो तज कपट करै द्विज सेवा ॥

दोहा–औरौ एक गुप्त मत, सबहिं कहौं कर जोरि ॥
शंकर भजन विना नर, भक्ति न पावै मोरि ॥ ६८ ॥

कहहु भक्तिपथ कवन प्रयासा * योग न मख जप तप उपवासा ॥
सरलस्वभाव[8] न मन कुटिलाई * यथालाभ सन्तोष सदाई ॥
मोर दास कहाइ नर आशा * करहि तो कहहु कहा विश्वासा ॥
बहुत कहौं का कथा बढाई * इहि आचरण वश्य मैं भाई ॥

१ रत्ती । २ चारिखानि-जरायुज, उद्भिज्ज, अंडज ऊष्मज । ३ संसारसागर । ४ जहाज । ५ पवन । ६ कृतनिन्दक कही जो काहूते नीकि करणीकरै और वह न मानै । ७ विघ्न । ८ दम्भ, पाखण्ड, कपट, छलछिद्र, ईर्षा इनते रहित

वैर न विग्रह आश न त्रासा * सुखमय ताहि सदा सब आसा ॥
अनारम्भ अनिकेत अमानी * अनघ अरोष दक्ष विज्ञानी ॥
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा * तृण सम विषय स्वर्ग अपवर्गा ॥
भक्ति पक्षता नहिं शठताई * दुष्ट कर्म सब दूरि विहाई ॥
दोहा–मम गुणग्राम नाम रत, गत ममता मद मोह ॥
ताकर सुख सोइ जानै, परानंद सन्दोह ॥ ६९ ॥
सुनत सुधासम वचन रामके * सबन्हि गहे पद कृपाधामके ॥
जननि जनक गुरु बन्धु हमारे * कृपानिधान प्राणते प्यारे ॥
तन धन धाम राम हितकारी * सबविधि तुमप्रणतारति हारी ॥
अस शिख तुम विनु देइ नकोऊ * मातु पिता स्वारथ रत ओऊ ॥
हेतु रहित सब विधि उपकारी * तुम तुम्हार सेवक असुरारी ॥
स्वारथ मीत सकल जगमाहीं * स्वप्नेहु कोउ परमारथ नाहीं ॥
सबके वचन प्रेमरस साने * सुनि रघुनाथ हृदय हर्षाने ॥
निज निज गृह गए आयसु पाई * वर्णत प्रभुकी गिरा सुहाई ॥
दोहा–उमा अवधवासी नर, नारि कृतारथ रूप ॥
ब्रह्मसच्चिदानन्द घन, रघुनायक जहँ भूप ॥ ७० ॥
एक बार वसिष्ठ मुनि आये * जहाँ राम सुखधाम सुहाये ॥
अति आदर रघुनायक कीन्हा * पद पखारि चरणोदक लीन्हा ॥
राम सुनहु मुनि कह करजोरी * कृपासिन्धु विनती इक मोरी ॥
देखि देखि आचरण तुम्हारा * होत मोह मम हृदय अपारा ॥
महिमा अमित वेद नहिं जाना * मैं केहि भाँति कहौं भगवाना ॥
उपरोहिती कर्म अति मन्दा * वेद पुराण सुमृतिकर निन्दा ॥
जब न लेउँ तबहीं विधि मोहीं * कहा लाभ आगे सुत तोहीं ॥
परमात्मा ब्रह्म नर रूपा * होइहैं रघुकुल भूषण भूपा ॥
दोहा–तब मैं हृदय बिचार किय, योग यज्ञ जप दान ॥
जेहि नित करिय सो पाइये, धर्म न इहिसम आन ॥७१॥

१ पापरहित । २ भगवान् कहीं षड्भगयुक्त ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, वैराग्य, मोक्ष ।

जप तप नियम योग व्रत धर्मा * श्रुति स्वभाव नानाविधिकर्मा ॥
ज्ञान[1] दया दम[2] तीरथ मज्जन * जहँलगि धर्म कहे श्रुतिसज्जन ॥
आगम निगम पुराण अनेका * पढे सुने कर फल प्रभु एका ॥
तव पद पंकज प्रीति निरंतर * सब साधनकर फल यहसुंदर ॥
छूटै मल कि मलहिके धोये * घृत कि पाव कोउ वारि विलोये ॥
प्रेमभक्ति जल बिनु रघुराई * अभ्यन्तर मल कबहुँ न जाई ॥
सोइ सर्वज्ञ तज्ञ[3] सोइ पंडित * सोइ गुणज्ञ विज्ञान अखंडित ॥
दक्ष सकल लक्षण युत सोई * जाके पद सरोज रति होई ॥
दोहा—नाथ एक वर माँगौं, मोहिं कृपा करि देहु ॥
जन्म जन्म प्रभुपद कमल, कबहुँ घटै जनि नेहु ॥ ७२ ॥
असकहि मुनिवसिष्ठगृह आये * कृपासिन्धुके मन अतिभाये ॥
हनूमान भरतादिक भ्राता * संग लिये सेवक सुखदाता ॥
पुनि कृपालु पुर बाहर गयऊ * गज रथ तुरँग मँगावत भयऊ ॥
देखि कृपा करि सकल सराहे * दिये उचित जिन्ह जिन्हजोचाहे
हरण सकलश्रम प्रभु श्रमपाई * गये जहाँ शीतल अमराई ॥
भरत दीन्ह निज वसन डसाई * बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई ॥
मारुतसुत[4] मारुत तव करई * पुलकि गात लोचन जलभरई ॥
हनूमान सम को बड़ भागी * नहिं कोउ रामचरण अनुरागी ॥
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई * वार वार प्रभु निज मुख गाई ॥
दोहा—तेहि अवसर मुनि नारद, आये करतल वीन ॥
गावन लागे राम गुण, कीरति सदा नवीन ॥ ७३ ॥
मामवलोकय[5] पंकज लोचन * कृपा विलोकनि शोचविमोचन ॥
नीलतामरस[6] श्याम काम आरि * हृदय कंज मकरंद मधुपहरि ॥
यातुधान[7] वरूथ बल गंजन * मुनि सज्जन रंजन अघभंजन ॥
भूसुर[8] नवशशि वृन्दवलाहक[9] * अशरण शरण दीनजन गाहक ॥
भुजबल विपुल भार महि खंडित * खर दूषण विराध वधपण्डित ॥

१ ज्ञानमें दो भेद एक शास्त्रजन्य दूसरा आत्मज्ञान । २ शुद्धमनइंद्रियनको जीतना । ३ तत्त्ववेत्ता । ४ पवनात्मज—हनूमान ५ मेरी ओर देखो । ६ नीलकमल । ७ दानव । ८ ब्राह्मण । ९ मेघ ।

रावणारि सुख रूप भूपवर * जयदशरथकुलकुमदसुधाकर॥
सुयश पुराणविदित निगमागम* गावत सुरमुनि सन्तसमागम॥
कारुणीक वाली मद खंडन *सब विधि कुशल कोशलामंडन॥
कलिमल मथननाम ममताहन* तुलसिदासप्रभुपाहिप्रणतजन॥
दोहा–प्रेम सहित मुनि नारद, वर्णि राम गुणग्राम ॥
शोभासिन्धु हृदय धरि, गये जहाँ विधि धाम ॥ ७४ ॥
गिरिजा सुनहु विशद[1] यह कथा* मैं सब कही मोरि मति यथा ॥
रामचरित शत कोटि अपारा * श्रुति शारदा न वरणै पारा ॥
राम अनन्त अनन्त गुणानी * जन्म कर्म अगणित नामानी ॥
जलसीकर महिरज गणिजाहीं *रघुपति चरितनवरणिसिराहीं ॥
विमलकथा यहहरिपददायिनि * भक्तिहोइसुनिअतिअनपायिनि
उमा कहेउँ सोइ कथा सुहाई * जो भुशुण्ड खगपतिहि सुनाई॥
कछुक रामगुण कहेउँ बखानी अबका कहौं सो कहहु भवानी ॥
सुनि शुभ कथा उमा[2] हर्षानी * बोली अति विनीत मृदुवानी ॥
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी * सुनेउँ राम गुण भव भयहारी॥
दोहा–तुम्हरी कृपा कृपायतन, अब कृतकृत्य[3] नमोह ॥
जानेउँ राम प्रभाव प्रभु, चिदानन्द सन्दोह ॥ ७५ ॥
नाथ तवानन[4] शशि[5] स्रवत, कथा सुधा[6] रघुवीर ॥
श्रवणपुटन[7] मन पानकरि, नहिं अघात मतिधीर ॥ ७६ ॥
राम चरित जे सुनत अघाहीं * रस विशेष जाना तिन्ह नाहीं॥
जीवन्मुक्त महामुनि जेऊ * हरि गुण सुनत अघात न तेऊ॥
भवसागर चह पार जो पावा * राम कथा ताकहँ दृढ़ नावा ॥
विषयिनकहँ पुनि हरिगुणग्रामा* श्रवणसुखद अरुमनविश्रामा॥
श्रवणवंत अस को जगमाहीं * जाहि न रघुपति कथा सुहाहीं॥
ते जड़जीव निजातम[8]घाती *जिनहिं न रघुपति कथासुहाती॥
रामचरित मानस तुम गावा * सुनि मैं नाथ परमसुख पावा ॥

१ अतिपावन–उज्ज्वल । २ पार्वती । ३ कृतार्थ । ४ सुख । ५ चन्द्रमा । ६ अमृत । ७ कान । ८ अपने अत्माको नाशकरनेवाला

तुम जु कही यह कथा सुहाई * काकभुशुण्डि गरुड़ प्रतिगाई ॥
दोहा--बिरंति ज्ञान विज्ञान दृढ, रामचरण अति नेह ॥
वायसतनु रघुपति भगति, मोहिं परम संदेह ॥ ७७ ॥
नर सहस्रमहँ सुनहु पुरारी * कोउ इक होइ धर्म व्रतधारी ॥
धर्म शील कोटिन महँ कोई * विषय विमुख विराग रत होई ॥
कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई * सम्यकज्ञानसुकृतकोइ लहई ॥
ज्ञानवन्त कोटिनमहँ कोई * जीवन्मुक्त सुकृत कोइ होई ॥
तिनसहसनमहँ सब सुखखानी* दुर्लभ ब्रह्म निरत विज्ञानी ॥
धर्म शील विरक्त अरु ज्ञानी * जीवन्मुक्त ब्रह्म पर प्रानी ॥
सबते सो दुर्लभ सुरराया * रामभक्ति रत गत मद माया ॥
सो हरिभक्ति काक किमि पाई * विश्वनाथ मोहिं कहहु बुझाई ॥
दोहा--रामपरायण ज्ञानरत, गुणागार मतिधीर ॥
नाथ कहहु केहि कारण, पायउ काक शरीर ॥ ७८ ॥
यह प्रभुचरित पवित्र सुहावा * कहहु कृपालु काक किमिपावा॥
तुम केहिभाँति सुना मदनारी* कहहु मोहिं यह कौतुक भारी॥
गरुड महाज्ञानी गुणराशी * हरि सेवकअतिनिकटनिवासी॥
सो केहि हेतु काकसन जाई * सुनी कथा मुनि निकरविहाई ॥
कहहु कवन विधि भा सम्वादा * दोउ हरिभक्त काक उरगादा ॥
गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई * बोले शिव सादर सुखपाई ॥
धन्य सती पावनि मति तोरी * रघुपति चरण प्रीति नहिंथोरी॥
सुनहु परमपुनीत इतिहासा * जोसुनि होइ सकलभ्रमनासा॥
उपजहि रामचरण विश्वासा *भवनिधि तर नर विनहि प्रयासा
दोहा--ऐसे प्रश्न विहँगपति, कीन्ह काकसन जाइ ॥
सो सब सादर कहतहौं, सुनहु उमा चित लाइ ॥ ७९ ॥
मैं जिमि कथा सुनी भवमोचनि*सोप्रसंग सुनुसुमुखिसुलोचनि ॥
प्रथम दक्षगृह जब अवतारा * सती नाम तब रहा तुम्हारा ॥

१ वैराग्य । २ शम्भु । ३ संदेह । ४ गरुड । ५ वाणी । ६ काकभशुण्डि

दक्ष यज्ञ तव भा अपमाना * तुम अति क्रोध तजे तहँ प्राना॥
मम अनुचरन[1] कीन्ह मख भंगा * जानहु तुम सो सकल प्रसंगा[2] ॥
तब अतिशोच भयउ मन मोरे * दुखित भयउँ वियोग[3] प्रियतोरे॥
सुन्दर गिरि वन सरित[4] तडागा * कौतुक देखत फिरौं विभागा ॥
गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी * नील शैल इक सुन्दर भूरी ॥
तासु कनक[5]मय शिखर सुहाये * चारि चारु[6] मोरे मन भाये ॥
तेहिपर इक इक विटप[7] विशाला * वट पीपर पाकरी रसाला[8] ॥
शैलोपरि[9] सुन्दर सर[10] सोहा * मणि सोपान[11] देखि मन मोहा ॥
दोहा–शीतल अमल मधुर जल, जलज[12] विपुल[13] बहुरंग ॥
कूजत कल रव हंस गण, गुंजत नाना भृंग ॥ ८० ॥
तेहि गिरि रुचिर बसै खग सोई * तासु नाश कल्पांत न होई ॥
मायाकृत गुण दोष अनेका * मोह मनोज आदि अविवेका ॥
रहेउ व्यापि समस्त जग माहीं * तेहि गिरिनिकट कबहुँ नहिंजाहीं
तहँबासि हरिहिभजैजिमिकागा * सो सुन उमा सहित अनुरागा ॥
पीपर तरुतर ध्यान सो धरई * जाप योग पाकर तर करई ॥
आँब छाहँ करि मानस पूजा * तजि हरि भजनकाज नहिं दूजा
वटतर कह हरिकथा प्रसंगा * आवहिं सुनहिं अनेक विहंगा[14] ॥
रामचरित विचित्र विधि नाना * प्रेम सहित करु सादर गाना ॥
सुनहिं सकलमति विमलमराला * बसहिं निरंतर जो जेहिकाला ॥
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा * उर उपजा आनन्द विशेषा ॥
दोहा–तब कछु काल मराल[15] तनु, धरि तहँ कीन्ह निवास ॥
सादर सुनि रघुपति चरित. पुनि आयउँ कैलास ॥ ८१ ॥
गिरिजा कहेउँ सोसब इतिहासा * मैं जेहि समय गयउँ खगपासा
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू * गयउ काक पहँ खगकुलकेतू ॥
जब रघुनाथ कीन्ह रण क्रीडा * समुझत चरित होत मोहिंव्रीडा[16]॥
इंद्रजीत कर आपु बँधावा * तब नारद मुनि गरुड़ पठावा ॥

१ गणन । २ इतिहास । ३ विक्षेप । ४ नदी । ५ स्वर्णके । ६ पवित्र । ७ वृक्ष । ८ आँब । ९ पर्वतकें ऊपर । १० तालाब । ११ सीढी । १२ कमल । १३ अनेक । १४ पक्षी । १५ हंस । १६ लज्जा ।

बंधन काटि गयउ उरगादा * उपजा हृदय प्रचण्ड विषादा ॥
प्रभु बन्धन समुझत बहु भाँती * करत विचार उरग आराती ॥
व्यापक ब्रह्म विरज[1] वागीशा * माया मोह पार परमीशा[2] ॥
सो अवतार सुनेउँ जगमाहीं * देखा सो प्रभाव कछु नाहीं ॥
दोहा–भवबन्धनसे छूटहिं, नर जपि जाकर नाम ॥
खर्व[3] निशाचर बाँधेऊ, नागफाँस सोइ राम ॥ ८२ ॥
नानाभाँति मनहिं समुझावा * प्रकट न ज्ञान हृदय भ्रम छावा ॥
खेद[4] खिन्न मन तर्क बढाई * भयउ मोहवश तुम्हरी नाई ॥
व्याकुल गयउ देवऋषि[5] पाहीं * कहेसि जो संशय निजमनमाहीं
सुनिनारदहि लागि अति दाया * सुनु खग प्रबल रामकी माया ॥
जो ज्ञानिन्ह कर चित अपहरई * भारिआई विमोह बश करई ॥
जेहि बहु बार नचावा मोही * सो व्यापी विहंगपति तोही ॥
महामोह उपजा मन तोरे * मिटहि न वेगि कहे खग मोरे ॥
चतुरानन[6] पहँ जाहु खगेशा * सोइ करहु जो होहि निदेशा ॥
दोहा–असकहि चले देवऋषि, करत राम गुणगान ॥
हरिमाया बल वर्णत, पुनि पुनि परमसुजान ॥ ८३ ॥
तब खगपति विरंचिपहँ गयऊ * निज सन्देह सुनावत भयऊ ॥
सुनि विरंचि रामहिं शिरनावा * समुझि प्रताप प्रेम उर छावा ॥
मनमहँ करहिं विचार विधाता * मायावश कवि कोविद ज्ञाता ॥
हरि मायाकर अमित प्रभावा * विपुल बार जो मोहिं नचावा ॥
अग[7] जगमय[8] जग[9] ममउपजाया * नहिं आश्चर्य मोह खगराया ॥
पुनि बोले विधि गिरा सुहाई * जानु महेश राम प्रभुताई ॥
वैनतेय[10] शंकर पहँ जाहू * तात अनत पूँछहु जनि काहू ॥
तहाँ होइ तव संशय हानी[11] * चलाविहँगपति सुनिविधिवानी ॥
दोहा–परमातुर सुविहंगपति, तब आयउ मम पास ॥
जातरहेउँ कुबेर गृह, उमा रहिहु कैलास ॥ ८४ ॥

१ मायाते परे । २ सर्व ईशनके ईश । ३ अल्प । ४ दुःख । ५ नारद । ६ ब्रह्मा । ७ स्थावर । ८ जगम
९ संसार । १० गरुड । ११ नाश ।

तेइँ मम पद सादर शिरनावा * पुनि आपुन संदेह सुनावा ॥
सुनिताकर पुनीत मृदुवानी * प्रेमसहित मैं कहेउँ भवानी ॥
मिलेउ गरुड मारग महँ मोहीं * कवनि भाँति समुझावौं तोहीं ॥
जब कछुकाल करिय सतसंगा * तब यह होइ मोह भ्रम भंगा ॥
सुनिय तहाँ हरिकथा सुहाई * नानाभाँति मुनिन्ह जो गाई ॥
जेहिमहँ आदि मध्य अवसाना * प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥
नित हरि कथा होत जहँ भाई * पठवौं तोहिं सुनहु तहँ जाई ॥
जाइहि सुनत सकल सन्देहा * होइहि रामचरण दृढ़ नेहा ॥
दोहा–विनु सतसंग न हरिकथा, तेहि विनु मोह नभाग ॥
मोहगये विनु रामपद, होइ न दृढअनुराग ॥ ८५ ॥
मिलहिंनरघुपति विनुअनुरागा * किये योग जप ज्ञान विरागा ॥
उत्तर दिशि सुन्दर गिरि नीला * तहँरह काकभुशुण्ड सुशीला ॥
राम भक्ति पथ परमप्रवीना * ज्ञानी गुण गृह बहु कालीना ॥
राम कथा सोइ कहै निरंतर * सादर सुनहिं विविधविहंगवर॥
जाइ सुनहु तहँ हरिगुण भूरी * होइहि मोहजनितदुख दूरी ॥
मैं जब सब तेहि कहा बुझाई * चले हर्षि मम पद शिरनाई॥
ताते उमा न मैं समुझावा * रघुपति कृपा मर्म सब पावा ॥
होइहि कीन्ह कबहुँअभिमाना * सो खोवा चह कृपानिधाना ॥
कछु तेहिते पुनि मैं नहिं राखा * खग जानै खगहीकी भाखा ॥
प्रभु माया बलवंत भवानी * जाहि न मोह कवनअसज्ञानी॥

*एक समय कागभुशुंडि दशरथके आँगनमें बाललीला देखरहेथे कि, देखते देखते मोह हुवा तब रामजीके हाथसे पूरी छीनकै भागे. रामजीने मोहसे इनकी ढिठाई देख गरुडका स्मरण किया सो गरुड़ और भुशुंडि दोनोंमें अत्यंत युद्धभया निदान कागभुशुंडिजी भागे और त्रिलोकी में फिरे परन्तु गरुड़ने पीछा नहीं छोड़ा जब फिर रामजीकी शरणमें आये तब रामजीने गरुडको निवारणकर कागभुशुंडिको ज्ञान उपदेश किया वही अभिमान गरुड़को रहा सो कृपानिधानने श्रोता बनायके सो अभिमान दूर किया ॥

१ अन्तर । २ प्रीति । ३ जामेअन्तरनपरै । ४ श्रेष्ठपक्षी । ५ समूह । ६ उत्पन्न । ७ पखेरू ।

दोहा–ज्ञानीभक्त शिरोमणि, त्रिभुवनपतिकर यान ॥
ताहि मोह माया प्रबल, पामर करहिं गुमान ॥८६॥
शिव विरंचि कहँ मोहई, को है बपुरा आन ॥
अस जिय जानि भजहिं मुनि,मायापति भगवान ॥८७॥
गयउ गरुड जहँ बसै भुशुण्डी * मतिअकुण्ठहरिभक्तिअखण्डी॥
देखि शैल प्रसन्न मन भयऊ * माया मोह शोक भ्रम गयऊ ॥
करितड़ाग मज्जन जल पाना * बटतर गयउ हृदय हर्षाना ॥
वृद्ध वृद्ध विहंग तहँ आये * सुनहिं रामके चरित सुहाये ॥
कथा अरम्भ करै सो चाहा * ताही समय गयउ खगनाहा ॥
आवत देखि सकल खगराजा * हर्षेउ वायस सकल समाजा ॥
अतिआदरखगपतिकरकीन्हा * स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा ॥
करि पूजा समेत अनुरागा * मधुरवचन बोलेउ तब कागा ॥
दोहा–नाथ कृतारथ भयउँ मैं, तव दर्शन खगराज ॥
आयसु होइ सो करौं अब,प्रभु आयहु केहि काज ॥८८॥

जाका स्तुति सादरहिं, निजमुख कीन्ह महेश ॥८९॥
सुनहु तात जेहिकारण आयउँ * सो सब भयउँ दर्श तव पायउँ॥
देखि परमपावन तव आश्रम * गयउ मोह संशय नाना भ्रम॥
अब श्रीरामकथा अतिपावनि * सदा सुखद दुखपुंजनशावनि॥
सादर तात सुनावहु मोहीं * बार बार विनवौं प्रभु तोहीं ॥
सुनत गरुड़की गिरा विनीता * सरल सप्रेम सुखद सुपुनीता ॥
भयउ तासु मन परम उछाहा * कहै लाग रघुपति गुणगाहा ॥
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी *रामचरित सब कहेसिबखानी ॥
पुनि नारद कर मोह अपारा * कहेसि बहुरि रावण अवतारा॥
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई *पुनिशिशुचरितकहेसिमनलाई॥
दोहा–बालचरित कहि विविधविधि, मनमहँ परम उछाह ॥

१ वाहन । २ अधमनर । ३ दुःखितजीवी । ४ अबाध्य । ५ आगमन । ६ आज्ञा । ७ दीनयुक्त । ८आनंद

ऋषि आगमन कहेसि पुनि,श्रीरघुवीर विवाह ॥ ९० ॥
बहुरि राम अभिषेक[1] प्रसंगा * पुनि नृप[2]वचन राजरस भंगा ॥
पुरवासिनकर विरह विषादा * कहेसि राम लक्ष्मण संवादा ॥
विपिन[3] गमन केवट अनुरागा * सुरसरि उतरि निवास प्रयागा
वाल्मीकि प्रभुमिलन बखाना * चित्रकूट जिमि बस भगवाना ॥
सचिवा[4]गमन नगर नृपमरणा * भरतागमन प्रेम अति वरणा ॥
करि नृपक्रिया संग पुरवासी * भरत गये जहँ प्रभु सुखरासी ॥
पुनि रघुपति बहुविधिसमुझाये * लै पादुका[5] अवध फिरि आये ॥
भरतरहनि सुरपतिसुत[6] करणी * प्रभु अरु अत्रिभेट पुनिवरणी ॥
दोहा–कहि विराध वध जाहिविधि, देह तजी शरभंग ॥
वर्णि सुतीक्षण प्रेम पुनि, प्रभु अगस्त्य सतसंग ॥ ९१ ॥
कहि दण्डकवन पावनताई * गृध्र मइत्री पुनि तेइँ गाई ॥
पुनि प्रभु पंचवटी कृतवासा * भंजेउ सकल मुनिनकर त्रासा ॥
पुनि लक्ष्मण उपदेश अनूपा * शूर्पणखा जिमि कीन्ह कुरूपा ॥
खर दूषणवध बहुरि बखाना * जिमि सब मर्म दशानन जाना ॥
दशकन्धर मारीच बतकहीं * जेहि विधि भई सकलतेइँकहीं ॥
पुनि माया सीताकर हरणा * श्रीरघुवीर विरह कछु वरणा ॥
पुनि प्रभु गृध्रक्रियाजिमिकीन्हा * वधिकबंधशबरिहिं गतिदीन्हा ॥
बहुरि विरह वर्णत रघुवीरा * जेहिविधि गयउ सरोवर तीरा ॥
दोहा–प्रभु नारद संवाद कहि, मारुत मिलन प्रसंग ॥
पुनि सुग्रीव मिताई, वालि प्राणकर भंग ॥ ९२ ॥
कपिहिं तिलक करि रामकृत, शैल प्रवर्षण वास ॥
वर्णत वर्षा शरदऋतु, राम रोष कपित्रास ॥ ९३ ॥
जेहि विधि कपिपति कीश[7] पठाये * सीताखोज सकलदिशि धाये
विवर[11] प्रवेश कीन्ह जेहि भाँती * कपिन बहोरि मिला सम्पाती ॥
सुनि सब कथा समीरकुमारा[12] * लाँघत भयउ पयोधि अपारा ॥

१ राज्यतिलककी वार्त्ता २ दशरथ । ३ वन । ४ सुमंत । ५ खड़ाऊं । ६ जयन्त । ७ रावण । ८ हनुमान् । ९ सुग्रीव । १० बंदर । ११ गिरिकंदरा । १२ हनुमान् ।

लंका कपिप्रवेश जिमिकीन्हा * पुनिसीतहि धीरज जिमिदीन्हा॥
वन उजारि रावणहिं प्रबोधी * पुर दहि लाँघेउ बहुरि पयोधी॥
आये कपि सब जहँ रघुराई * वैदेहीकी कुशल सुनाई ॥
सेन समेत यथा रघुबीरा * उतरे जाइ वारिनिधि तीरा ॥
मिला विभीषण जेहिविधि आई * सागर निग्रह कथा सुनाई ॥
दोहा–सेतु बाँधि कपिसेन जिमि, उतरे सागर पार ॥
गयो बसीठी वीर वर, ज्यहि विधि बालिकुमार ॥ ९४ ॥
निशिचर कीश लड़ाई, वर्णिसि विविध प्रकार ॥
कुम्भकर्ण घननादकर, बल पौरुष संहार ॥ ९५ ॥
निशिचरनिकर मरण विधिनाना * रघुपति रावणसमर बखाना ॥
रावण वध मन्दोदरि शोका * राज्य विभीषण देव अशोका ॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी * सुरन कीन्ह स्तुति करजोरी ॥
पुनि पुष्पकचढ़ि सीय समेता * अवध चले प्रभु कृपानिकेता ॥
जेहि विधि राम नगर नियराये * वायस विशद चरित सबगाये ॥
कहेसि बहोरि राम अभिषेका * पुर वर्णन नृपनीति अनेका ॥
कथा समस्त भुशुण्डि बखानी * जो मैं तुमसन कहा भवानी ॥
सुनि सब राम कथा गुणगाहा * कहत वचन मनपरम उछाहा॥
सो०–गयउ मोर सन्देह, सुनेउँ सकल रघुपति चरित ॥
भयउ रामपद नेह, तव प्रसाद वायस तिलक ॥ २ ॥
मोहिं भयउ अति मोह, प्रभु बन्धन रण महँ निरखि ॥
चिदानन्दसन्दोह, राम विकल कारण कवन ॥ ३ ॥
देखि चरित अति नरअनुहारी * भयउ हृदयमम संशय भारी ॥
सो भ्रम अब मैं हितकरि माना * कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥
जो अति आतप व्याकुल होई * तरुछाया सुख जानै सोई ॥
जो नहिं होत मोहअति मोहीं * मिलतेउँ तातकवनविधितोहीं ॥
सुनतेउँकिमि हरिकथा सुहाई * अतिविचित्र सबविधि तुमगाई॥

१ समुद्र । २ दूत । ३ अंगद । ४ घाम । ५ वृक्षकी छाया ।

निगमागम पुराण मत एहा * कहहिं सिद्ध मुनि नहिं सन्देहा ॥
सन्त विशुद्ध[1] मिलहिं पुनि तेही * चितवहिं राम कृपाकरि जेही ॥
रामकृपा तव दर्शन भयऊ * तव प्रसाद मम संशय गयऊ ॥
दोहा-सुनि बिहंगपति वाणी, सहित विनय अनुराग ॥
पुलक गात लोचन सजल, मन हर्षे अति काग ॥ ९६ ॥
श्रोता सुमति सुशील[2] शुचि[3], कथा रसिक[4] हरिदास ॥
पाइ उमा यह गोप्यमत, सज्जन करहिं प्रकाश ॥ ९७ ॥
बोलेउ कागभुशुण्डि बहोरी * नभगनाथ पर प्रीति न थोरी ॥
सब विधि नाथ पूज्य तुम मेरे * कृपापात्र रघुनायक केरे ॥
तुमहिं न संशय मोह न माया * मोपर नाथ कीन्ह तुम दाया ॥
पठै मोहमिसु खगपति तोहीं * रघुपति दीन्ह बडाई मोहीं ॥
तुम निज मोह कहा खगसाईं * सो नहिं कुछ आश्चर्य गुसाईं ॥
नारद शिव विरंचि सनकादी * जे मुनिनायक आतमवादी ॥
मोह न अंध कीन्ह केहि केही * को जग काम नचाव नजेही ॥
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा * केहिके हृदय क्रोध नहिं दाहा ॥
दोहा-ज्ञानी तापस शूर कवि, कोविद गुण आगार ॥
केहिके लोभ विडंबना, कीन्ह न यह संसार ॥ ९८ ॥
श्रीमद[5] वक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता बधिर न काहि ॥
मृगनयनीके नयनशर, को असलागु न जाहि ॥ ९९ ॥
गुणकृत सन्निपात नहिं केही * को न मान मद व्यापेउ जेही ॥
यौवनज्वर केहिनहिं बलकावा * ममता केहिकर यश न नशावा ॥
मत्सर काहि कलंक न लावा * काहि न शोक समीर डोलावा ॥
चिंता साँपिनि काहि न खाया * को जग जाहि न व्यापी माया ॥
कीट मनोरथ दारु शरीरा * जेहि न लागु घुनको अस धीरा ॥
सुत वित लोक ईर्षणातीनी * केहिकी मतिइन्हकृतन मलीनी ॥
यह सब मायाकृत परिवारा * प्रबल अमित को वरणै पारा ॥

१ विशुद्ध कही विशेषशुद्ध योग, ज्ञान, वैराग्य, इत्यादिक, संयुक्त, श्रीरामानन्य । २ सहनशील । ३ पवित्र । ४ श्रीरामचन्द्रके चरित रसका पानकरै अपर साधनके रसते अनइच्छितहोइ । ५ श्रीकहीं लक्ष्मी, धन, जाति, कुल, युवा, विद्या, ज्ञान, ध्यानका मद ।

शिव चतुरानन देखि डराहीं * अपरजीव केहि लेखे माहीं ॥
दोहा–व्यापि रह्यो संसार महँ, माया कटक प्रचण्ड ॥
सेनापति कामादि भट, दम्भ कपट पाखण्ड ॥ १०० ॥
सो दासी रघुवीरकी, समुझै मिथ्या सोपि ॥
छुटै न राम कृपा विनु, नाथ कहौं प्रण रोपि ॥ १०१ ॥
सोमाया सब जगहि नचावा * जासु चरित लखि काहु न पावा॥
सोइ प्रभु भ्रूविलास खगराजा * नाच नटीइव सहि
सोइ सच्चिदानन्द घनश्यामा * अज विज्ञान रूप गुणधामा ॥
व्यापकब्रह्म अखंड अनन्ता *अखिल अमोघ एक भगवन्ता॥
अगुण अदम्भ गिरा गोतीता * समदर्शी अनवद्य अजीता ॥
निर्गुण निराकार निर्मोहा * नित्य निरंजन सुख संदोहा ॥
प्रकृतिपार प्रभु सबउर वासी * ब्रह्म निरीह विरज अविनाशी ॥
इहाँ मोहकर कारण नाहीं* रविसन्मुख तम कबहुँ न जाहीं॥
दोहा–भक्त हेतु भगवान प्रभु, राम धरेउ तनु भूप ॥
किये चरित पावन परम,प्राकृत नर अनुरूप ॥ १०२ ॥
यथा अनेकन वेष धरि, नृत्य करै नट कोइ ॥
जोइ जोइ भाव दिखावै, आपु न होइ न सोइ ॥ १०३ ॥
अस रघुपति लीला उरगारी * दनुज विमोहन जनसुखकारी ॥
जो मतिमलिन विषयवशकामी*प्रभुपर मोहधरहिंइमि स्वामी ॥
नयनदोष जाकहँ जब होई * पीतवर्ण शशि कहँ कह सोई ॥
जब जेहि दिग्भ्रम होइ खगेशा* सो कह पश्चिम उगेउ दिनेशा॥
नौकारूढ चलत जग देखा * अचल मोहवश आपुहि लेखा ॥
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी*कहहिं परस्पर मिथ्यावादी ॥
हरि विषइक अस मोह विहंगा* स्वप्नेहुँ नहिं अज्ञान प्रसंगा ॥
मायावश मतिमंद अभागी * हृदय जमनिका बहु विधि लागी
ते शठ हठवश संशय करहीं * निज अज्ञान राम पर धरहीं ॥

१ सफल । २ मूलप्रकृति, अव्याकृत, अध्यात्मशक्ति, माहामाया । ३ निरिच्छा । ४ मायाके विकारते रहित
५ अन्धकार । ६ सूर्य्य । ७ मोहरूपीकाई ।

दोहा–काम क्रोध मद लोभ रत¹, गृहासक्त दुखरूप ॥
ते किमि जानहिं रघुपतिहि, मूढ़ परे तमकूप ॥१०४॥
निर्गुण रूप सुलभ अति, सगुण न जानैं कोय ॥
सुगम अगम नानाचरित, सुनि मुनिमन भ्रमहोय ॥१०५॥
सुनु खगपति रघुपतिप्रभुताई * कहौं यथामति कथा सुहाई ॥
जेहिविधि मोहभयउप्रभुमोहीं *सो सब चरित सुनावौं तोहीं ॥
रामकृपा भाजन तुम ताता * हरिगुण प्रीति मोहिंसुखदाता॥
तात नहीं कछु तुमहिं दुरावौं * परमरहस्य मनोहर गावौं ॥
सुनहु रामकर सहज स्वभाऊ * जन अभिमान न राखैं काऊ ॥
संसृति मूल शूलप्रद नाना * सकल शोकदायक अभिमाना॥
ताते करहिं कृपानिधि दूरी * सेवक पर ममता अतिभूरी ॥
जिमि शिशुतनुव्रण²होइगुसाईं * मातु चिराव कठिनकी नाईं ॥
दोहा–यदपि प्रथम दुख पावै, रोवै बाल अधीर ॥
व्याधिनाश हित जननी³, गनै न सो शिशुपीर ॥१०६॥
तिमि रघुपति निज दास कर, हरहिं मान हित लागि ॥
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं,कस न भजहु भ्रम त्यागि॥१०७॥
रामकृपा आपनि जडताई * कहौं खगेश सुनहु मनलाई ॥
जब जब राम मनुजतनु धरहीं * भक्तिहेतु लीला बहु करहीं ॥
तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ * शिशुलीला विलोकि हर्षाऊँ ॥
जन्म महोत्सव देखौं जाई * वर्ष पाँच तहँ रहौं लुभाई ॥
इष्टदेव मम बालक रामा * शोभा वपुष⁴ कोटि शतकामा ॥
निज प्रभु वदन निहारि निहारी* लोचन सफल करौं उरगारी ॥
लघुवायस वपु धारि हरि संगा * देखौं बालचरित बहुरंगा ॥
दोहा–लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं, तहँ तहँ संग उड़ाउँ ॥
जूठन परै अजिर⁵ महँ, सो उठाय पुनि खाउँ ॥१०८॥
एक बार अतिशय प्रबल, चरित कीन्ह रघुवीर ॥

१ आसक्त । २ बड़तोर-फोड़ा । ३ माता । ४ देह । ५ आँगन ।

सुमिरत प्रभु लीला सोई, पुलकित भयउ शरीर ॥१०९॥

कहै भुशुण्डि सुनहु खगनायक * रामचरित सेवक सुखदायक ॥
नृपमन्दिर सुन्दर सब भाँती * खचितकनकमणिनानाजाती ॥
वरणि नजाय रुचिर अँगनाई * जहँ खेलहिं नित चारिउभाई ॥
बाल विनोद करत रघुराई * विचरतअजिरजननिसुखदाई ॥
मरकत मृदुल कलेवरशामा * अंग अंग प्रति छविबहुकामा ॥
नवराजीव अरुण मृदुचरणा * पदपंकजनखशशिद्युतिहरणा ॥
ललितअंग कुलिशादिक चारी * नूपुर चारु मधुर रव कारी ॥
चारु पुरट मणि रचित बनाई * कटिकिंकिणिकलमुखरसुहाई ॥

दोहा–रेखा त्रय सुन्दर उदर, नाभि रुचिर गंभीर ॥
उरआयत भ्राजत विविध, बालविभूषण चीर ॥११०॥

अरुणपाणि नखकरंज मनोहर * बाहु विशाल विभूषण सोहर ॥
कन्धबाल केहरि दर[11]ग्रीवा * चारु चिबुकआनन[12]छबिसीवा ॥
कल[13]बल वचन अधर अरुणारे * दुइ दुइ दशन विशद वरवारे ॥
ललित कपोल मनोहर[14] नासा * सकलसुखदशशिकरसमहासा ॥
नीलकंज लोचन भवमोचन * भ्राजत भाल तिलकगोरोचन ॥
विकट[15] भृकुटि[16]सम श्रवण[17]सुहाये * कुंचित[18]कच[19] मेचकछबिछाये ॥
पीत झीन झँगुलि तनु सोही * किलकनिचितवनिभावतमोही ॥
रूपराशि नृप अजिर विहारी * नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी ॥
मोसनकरहिं विविध विधि क्रीडा * वर्णत चरित होत मनव्रीडा ॥
किलकत मोहिं धरन जबधावहिं * चलौंभाजि तब पूपदेखावहिं ॥

दोहा–आवत निकट हँसहिं प्रभु, भाजत रुदन कराहिं ॥
जाउँ समीप गहन पद, फिरि फिरि चितै पराहिं ॥ १११ ॥
प्राकृत शिशु इव लीला, देखि भयउ मोहिं मोह ॥
कवन चरित्र करत प्रभु, चिदानन्द सन्दोह ॥ ११२ ॥

इतना मन आनत खगराया * रघुपति प्रेरित व्यापी माया ॥

१ क्रीडा । २ घरकेआँगन । ३ माताकेसुखदाता । ४ श्यामणि । ५ कोमल । ६ सुन्दर । ७ सुवर्ण । ८ पेट । ९ चाँदी । १० अँगुरियाँ । ११ शंख । १२ मुख । १३ तोतरे । १४ रुचिर । १५ टेढी । १६ भौंहैं । १७ कान । १८ घुघुवारे । १९ बाल ।

सो माया न दुखद मोहिं काहीं * आनजीव इव संसृति नाहीं ॥
नाथ इहाँ कछु कारण आना * सुनहु सो सावधान हरियाना ॥
ज्ञान अखण्ड एक सीतावर * मायावश्य जीव सचराचर ॥
जो सबके रह ज्ञान एक रस * ईश्वर जीवहि भेद कहहु कस ॥
मायावश्य जीव अभिमानी * ईशवश्य माया गुणखानी ॥
परवश जीव स्ववश भगवन्ता * जीव अनेक एक श्रीकन्ता ॥
मृषा भेद यद्यपि कृतमाया * विनु हरि जाइन कोटि उपाया ॥
दोहा–रामचन्द्रके भजन विनु, जो चह पद निर्वाण ॥
ज्ञानवन्त अपि सोपि नर, पशु विनुपूँछ विषाण ॥ ११३ ॥
राकापति षोडश उगहिं, तारागण समुदाय ॥
सकलगिरिन दव लाइये, रविविनु राति नजाय ॥ ११४ ॥
ऐसे विनु हरिभजन खगेशा * मिटै न जीवन केर कलेशा ॥
हरिसेवकहिं न व्याप अविद्या * प्रभु प्रेरित तेहि व्यापै विद्या ॥
ताते नाश न होइ दासकर * भेद भक्ति बाढे विहंगवर ॥
भ्रमते चकित राम मोहिं देखा * बिहँसे सो सुन चरित विशेषा ॥
तेहि कौतुक कर मर्म नकाहू * जाना अनुज न मातु पिताहू ॥
जानु पाणि धाये मोहिं धरणा * श्यामलगात अरुण मृदु चरणा ॥
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी * रामगहन कहँ भुजा पसारी ॥
जिमि जिमि दूरउड़ाउँ अकाशा * तिमितिमिभुजदेखौंनिजपासा ॥
दोहा–ब्रह्मलोक लगि गयउँ मैं, चितवत पाछ उड़ात ॥
युग अंगुल कर बीचरह, राम भुजहि मोहिंतात ॥ ११५ ॥
सप्तावरण भेद करि, जहँ लगि रहि गति मोरि ॥
गयो तहाँ प्रभु भुज निरखि, व्याकुल भयों बहोरि ॥ ११६ ॥
मूँदेउ नयन त्रासित जब भयऊँ * पुनि चितवत कोशलपुरगयऊँ ॥
मोहिं विलोकि राम मुसकाहीं * बिहँसत तुरत गयउँ मुखमाहीं ॥
उदर माँझ सुन अंडजराया * देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया ॥

१ जन्म मरण । २ पूर्णमासीका सोलह कला युक्त चन्द्रमा । ३ सूर्य्य । ४ माया । ५ लाल । ६ कोमल । ७ गरुड ।

अति बिचित्र तहँ लोक अनेका * रचना अमित एकते एका ॥
कोटिन चतुरानन गौरीशा * अगणितउडुगण रविरजनीशा॥
अगणित लोकपाल यमकाला * अगणित भूधर भूमि विशाला॥
सागर सरि सर बिपिन अपारा * नाना भाँति सृष्टि विस्तारा॥
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर * चारि प्रकार जीव सचराचर ॥
दोहा–जो नहिं देखा नहिं सुना, जो मनहूँ न समाय ॥
सब अद्भुत तहँ देखेउँ, वर्णि कवन विधि जाय ॥११७॥
एक एक ब्रह्माण्ड महँ, रहेउँ वर्ष शत एक ॥
यहि विधि मैं देखत फिरेउँ, अण्डकटाह अनेक ॥ ११८ ॥
लोक लोक प्रति भिन्न विधाता * भिन्न विष्णुशिवमनुदिशित्राता॥
नर गन्धर्व भूत वैताला * किन्नर निशिचरपशु खगव्याला
देव दनुज गण नाना जाती * सकल जीव तहँ आनहिंभाँती॥
महि सरि सागर रस गिरि नाना*सब प्रपंच तहँ आनहिं आना ॥
अंडकोश प्रति प्रति निजरूपा * देखेउँ जिनस अनेक अनूपा ॥
अवधपुरी प्रतिभुवन निहारी * सरयू भिन्न भिन्न नर नारी ॥
दशरथ कौशल्यादिक माता * विविध रूप भरतादिक भ्राता॥
प्रतिब्रह्माण्ड राम अवतारा * देखेउँ बालविनोद अपारा ॥
दोहा–भिन्न भिन्न सब देखेउँ, अति विचित्र हरियान ॥
अगणित भुवन फिरेउँ मैं, राम न देखा आन ॥ ११९ ॥
सोइ शिशुपन सोइ शोभा, सोइ कृपालु रघुवीर ॥
भुवन भुवन देखत फिरेउँ, प्रेरित मोह समीर ॥ १२० ॥
भ्रमत मोहिं ब्रह्माण्ड अनेका * बीते मनहुँ कल्पशत एका ॥
फिरतफिरत निजआश्रमआयउँ* तहँपुनिरहिकछुकालगँवायउँ॥
निज प्रभुजन्म अवध सुनि पायउँ* निर्भर प्रेम हर्षि उठि धायउँ ॥
देखेउँ जन्ममहोत्सव जाई * जेहि विधि प्रथमकहा मैंगाई ॥
राम उदर देखेउँ जगनाना * देखत बनै न जात बखाना ॥

१ पर्वत । २ नदी । ३ तालाब । ४ वन । ५ संसारकीबातें–रचना । ६ ब्रह्माण्ड । ७ लडकपन ।

तहँ पुनि देखेउँ रामसुजाना * मायापति कृपालु भगवाना ॥
करौं विचार बहोरि बहोरी * मोहकलिलव्यापितमतिभोरी ॥
उभय घरीमहँ मैं सब देखा * भयउँ भ्रमितमनमोहविशेषा ॥
दोहा-देखि कृपालु विकल मोहिं, विहँसे तब रघुबीर ॥
विहँसतही मुख बाहर, आयउँ सुनु मतिधीर ॥ १२१ ॥
सोइ लरिकाई मोहिंसन, लगे करन पुनि राम ॥
कोटि भाँति समुझावौं, मन न लहै विश्राम ॥ १२२ ॥
देखि चरित यह सो प्रभुताई * समुझत देह दशा बिसराई ॥
धरणिपरेउँ मुख आव न बाता * त्राहि त्राहि आरतजन त्राता ॥
प्रेमाकुल प्रभु मोहिं विलोकी * निज माया प्रभुता तब रोकी ॥
कर सरोज प्रभु मम शिर धरेऊ * दीनदयालु दुसह दुख हरेऊ ॥
कीन्ह राम मोहिं विगत विमोहा * सेवक सुखद कृपा सन्दोहा ॥
प्रभुता प्रथम विचार विचारी * मनमहँ होइ हर्ष अतिभारी ॥
भक्तवच्छलता प्रभुकै देखी * उपजा मम उर हर्ष विशेषी ॥
सजलनयन पुलकित करजोरी * कीन्ही बहुविधि विनय बहोरी ॥
दोहा-सुनि सप्रेम मम वाणी, देखि दीन निजदास ॥
वचनसुखद गम्भीर मृदु, बोले रमानिवास ॥ १२३ ॥
कागभुशुण्डी माँगुवर, अतिप्रसन्न मोहिं जानि ॥
अणिमादिकसिधिअपरानिधि, मोक्षसकलसुखखानि१२४॥
ज्ञान विवेक विरति विज्ञाना * मुनिदुर्लभ गति जो जगजाना ॥
आजु देउँ सब संशय नाहीं * माँगु जो तोहिं भाव मन माहीं॥
सुनि प्रभुवचन बहुत अनुरागेउँ * मन अनुमान करनतबलागेउँ ॥
प्रभुकह देन सकल सुखसही * भक्ति आपनी देन न कही ॥
भक्ति हीन गुण सुख सब ऐसे * लवण विना बहु व्यंजन जैसे ॥
भक्तिहीन सुख कवने काजा * अस विचारि बोलेउँ खगराजा॥
जो प्रभु होइ प्रसन्न वर देहू * मोपर करहु कृपा अरु नेहू ॥

१ मोहसे विरीहुई । २ बावली । ३ दोघडी । ४ घर । ५ अष्टसिद्धिनवनिधि । ६ भोजन ।

मनभावत वर माँगौ स्वामी * तुम उदार उर अन्तर्यामी ॥
दोहा–अविरल भक्ति विशुद्ध तव, श्रुति पुराण जो गाव ॥
जेहि खोजत योगीश मुनि, प्रभु प्रताप कोउ पाव ॥१२५॥
भक्त कल्पतरु प्रणतहित, कृपासिन्धु सुखधाम ॥
सोइ निज भक्ति मोहिं प्रभु, देहु दया करि राम ॥ १२६ ॥
एवमस्तु कहि रघुकुल नायक * बोले वचन परम सुखदायक ॥
सुनु वायस तैं परमसयाना * काहेन माँगसि अस वरदाना ॥
सब सुखखानि भक्ति तैं माँगी * नाहिंजगकोउतोहिंसमबडभागी॥
जो मुनि कोटियतन नहिं लहहीं * के जप योग अनल तनु दहहीं ॥
रीझेउँ तोरि देखि चतुराई * माँगेउ भक्ति मोहिं अतिभाई ॥
सुनु विहंग प्रसाद अब मोरे * सब शुभगुण वसिहें उरतोरे ॥
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा * योगचरित्र रहस्य विभागा ॥
जानब तैं सबहीं कर भेदा * मम प्रसाद नहिं साधन खेदा ॥
दोहा–मायासम्भव सकल भ्रम, अब नहिं व्यापिहितोहिं ॥
जानेसि ब्रह्म अनादि अज, अगुण गुणाकर मोहिं ॥१२७॥
मोहिं भक्ति प्रिय सन्तत, अस विचारिसुनु काग ॥
कायवचन मन मम चरण, करहु अचलअनुराग ॥ १२८ ॥
अब सुन परम विमल ममवानी * सत्यसुगम निगमादिबखानी ॥
निज सिद्धांत सुनावौं तोहीं * सुन मन धरि सब तजि भजु मोहीं
मम माया संभव संसारा * जीव चराचर विविध प्रकारा ॥
सब ममप्रिय सब मम उपजाये * सबते अधिक मनुजमोहिं भाये॥
तिन्हमहँद्विज द्विजमहँ श्रुतिधारी * तिनमहँनिगमधर्म अनुसारी॥
तिन्हमहँ प्रियाविरक्त पुनिज्ञानी * ज्ञानिहुँते अतिप्रिय विज्ञानी ॥
तिनतेपुनिमोहिंप्रिय निजदासा * जेहिगतिमोरिन दूसरि आसा ॥
पुनिपुनिसत्यकहौंतोहिं पाहीं * मोहिं सेवकसमप्रियकोउ नाहीं॥
भक्तिहीनाविरंचि किन होई * सब जीवनमहँ अप्रिय सोई ॥

१ सबकछुदेनेयोग्य । २ अन्तरकेजाननहार । ३ अखंड । ४ वेद । ५ श्रीरामचन्द्र। ६अग्नि । ७ भिन्नभिन्न । ८ दु:ख । ९ उत्पन्न । १० शरीर । ११ अनुभव । १२ ब्राह्मण । १३ वेदके जाननेवाले । १४ वेदके अनुसारचलनेवाले । १५ वैरागी-ब्रह्मज्ञान जाननेवाले ।

भक्तिवन्त अति नीचौ प्राणी * मोहिं परमप्रिय सुनु ममवाणी॥
दोहा–शुचि सुशील सेवकसुमति, कहुप्रिय काहि न लाग ॥
श्रुति पुराण कह नीति अस, सावधान सुनु काग ॥१२९॥
एक पिताके विपुल कुमारा * होइँ पृथककगुण शील अचारा ॥
कोउ पण्डित कोउ तापसज्ञाता * कोउ धनवन्तशूर कोउ दाता ॥
कोउ सर्वज्ञ धर्मरत कोई * सबपरपितहिप्रीतिसमहोई ॥
कोउ पितुभक्त वचनमनकर्म्मा * स्वप्नेहु जान न दूसर धर्म्मा ॥
सो प्रिय सुतपितुप्राणसमाना * यद्यपि सो सब भाँति अजाना॥
इहिविधि जीव चराचर जेते * त्रिजग देव नर असुर समेते ॥
अखिलविश्व यह ममउपजाया * सब पर मोरि बराबरि दाया ॥
तिनमहँ जो परि हरि सब माया * भजहिं मोहिंमनवचअरुकाया॥
दोहा–पुरुष नपुंसक नारि नर, जीव चराचर कोइ ॥
सर्व भाव भजु कपट तजि, मोहिं परमप्रियसोइ ॥१३०॥
सो०–सत्य कहौं खग तोहिं, शुचि सेवक मम प्राणप्रिय ॥
असविचारि भजु मोहिं परिहरि आश भरोस सब ॥४॥
कबहुँ काल नहिं व्यापै तोहीं * सुमिरेहु भजेहु निरंतर मोहीं ॥
प्रभु वचनामृत सुनि न अघाऊँ * तनुपुलकित मन अतिहर्षाऊँ ॥
सो सुखजानै मन अरु काना * नहिं रसना प्रति जाइबखाना ॥
प्रभु शोभासुख जानत नयना * कहिकिमिसकैंतिन्हैंनाहिंवयना॥
बहुविधि राम मोहिं शिख देई * लगे करन शिशु कौतुक तेई ॥
सजलनयनकछुमुखकरिरूखा * चितै मातु तनुलागी भूखा ॥
देखि मातु आतुर उठिधाई * कहि मृदुवचन लिये उरलाई ॥
गोद राखि कराय पय पाना * रघुपतिचरितललितकरिगाना॥
सो०–जेहिसुखलागिपुरारि, अशिवभेष कृत शिवसुखद ॥
अवधपुरी नर नारि, तेहि सुखमहँ संततमगन ॥५॥
सोइ सुख कर लवलेश, जिनबारक स्वप्नेहु लहेउ ॥

१ अनेक। २ अलग। ३ मूर्ख। ४ समस्त। ५ त्याग। ६ सदासर्वदा। ७ जिह्वा। ८ वाणी। ९ बालपन। १० सुंदर। ११ महादेवजी।

ते नहिं गनहिं खगेश, ब्रह्म सुखहिं सज्ञान सुमति ॥६॥
मैं पुनि रह्यों अवध कछुकाला * देख्यों बालविनोद रसाला ॥
रामप्रसाद भक्ति वर पायउँ * प्रभुपद वन्दिनिजाश्रमआयउँ॥
तबते मोहिं न व्यापी माया * जबते रघुनायक अपनाया ॥
यह सब गुप्तचरित मैं गावा * हरिमाया जिमि मोहिंनचावा॥
निज अनुभव अब कहौंखगेशा* विनु हरिभजननजाहिंकलेशा ॥
राम कृपा विनु सुनु खगराई * जानि नजाइ राम प्रभुताई ॥
जाने विनु नहोइ परतीती * विनु परतीति होइ नहिंप्रीती ॥
प्रीति विना नहिं भक्ति दृढाई * जिमिखगेशजलकी चिकनाई॥
सो०-विनुगुरु होइ कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग विनु ॥
गावहिं वेद पुरान, सुख कि लहहिं विनु हरि भगति ॥७॥
कोउ विश्राम कि पाव, तात सहज सन्तोष विनु ॥
चलै कि जल विननाव, कोटि यतन करि पचिमरिय ॥८॥
विनु सन्तोष न कामनशाहीं * काम अछंत सुखस्वप्नेहु नाहीं ॥
रामभजन विनुमिटहि नकामा * थलविहीन तरुकबहुँकिजामा ॥
विना ज्ञानकी समता आवै * कोउअवकाशकिनभविनुपावै॥
श्रद्धा विना धर्म नहिं होई * विनु महि गन्ध कि पावै कोई ॥
विनु तप तेज कि करुविस्तारा * जल विनु रस कि होयसंसारा॥
शीलकि मिलुविनुबुधसेवकाई * जिमि विनुतेज न रूप गुसाँई ॥
निजसुख[११]विनुमनहोइ कि थीरा * परस[१२] कि होइविहीनसमीरा[१३] ॥
कवनेउसिद्धि कि विनुविश्वासा * विनहरिभजननभवभयनाशा ॥
दोहा-विनु विश्वास भक्ति नहिं, तेहि विन द्रवहिं[१४] न राम ॥
रामकृपा विनु स्वप्नेहु, मनकि लहै विश्राम ॥१३१॥
सो०-अस विचारि मतिधीर, तजि कुतर्क संशय सकल ॥
भजहु राम रणधीर, करुणाकर सुन्दर सुखद ॥९॥
निजमति सरिस नाथ मैं गाई * प्रभु प्रताप महिमा खगराई ॥

१ शिशुक्रीडा । २ अपनानिवासस्थान । ३ सिद्धांत । ४ नआयेकोहर्ष नगयेकोशोच । ५ कामना । ६ रहते । ७ वृक्ष ।
८ आकाश । ९ पृथ्वी । १० पंडित । ११ आत्मक । १२ छूना । १३ वायु । १४ कृपा ।

कह्यों न कछु करि युक्ति विशेषी * यह सब मैं निज नयनन देखी॥
महिमा नाम रूप गुणगाथा * सकल अमित अनन्त रघुनाथा॥
निज निज मति मुनि हरि गुण गावहिं * निगम शेष शिव पार न पावहिं॥
तुम्हहिं आदि खगमशक प्रयन्ता * नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अन्ता॥
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा * तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा॥
रामकाम शतकोटि सुभगतन * दुर्गा कोटि अमित अरिमर्दन॥
शक्र कोटिशत सरिस विलासा * नभ शत कोटि अमित अवकाशा॥
दोहा–मरुत कोटिशत विपुल बल, रवि शत कोटि प्रकाश॥
शशि शतकोटि सुशीतल, शमन सकल भवत्रास॥१३२॥
काल कोटि शत सरिस अति, दुस्तर दुर्ग दुरन्त॥
धूमकेतु शत कोटि सम, दुराधर्ष भगवन्त॥१३३॥
प्रभु अगाध शत कोटि पताला * शमन कोटिशत सरिस कराला॥
तीरथ अमित कोटि शत पावन * नाम अखिल अघपुंज नशावन॥
हिमगिरि[11] कोटि अचल रघुवीरा * सिन्धु कोटिशत सरिस गँभीरा॥
कामधेनु शत कोटि समाना * सकल कामदायक भगवाना॥
शारद कोटि अमित चतुराई * विधि शत कोटि अमित निपुणाई॥
विष्णु कोटिशत पालनकर्ता * रुद्र कोटिशत सम संहर्ता॥
धनद[12] कोटिशत सम धनवाना * माया कोटि प्रपंच निधाना॥
धरा[13] धरण शतकोटि अहीशा * निरवधि निरुपम प्रभु जगदीशा॥
छंद–निरवधि निरूपम राम सम नहिं आन निगमागम कहैं॥
जिमि कोटिशत खद्योत[14] रवि कहँ कहत अति लघुता लहैं॥
इहि भाँति निज निज मति विलास मुनीश हरिहि बखानहीं॥
प्रभु भावगाहक अति कृपालु सप्रेम सुनि सुख पावहीं॥२१॥
दोहा–राम अमित गुणसागर, थाह कि पावै कोइ॥
सन्तन सन जस कछु सुनेउँ, तुमहिं सुनायउँ सोइ॥१३४॥
सो०–भाववश्य भगवान, सुखनिधान करुणाभवन॥

१ आँखें। २ अथाह। ३ सुन्दर। ४ शत्रु। ५ इंद्र। ६ विस्तारित। ७ ताकियोग्यनहीं। ८ ज्यहिकर अन्त पावनादूरिहै।
९ अग्नि। १० दूरि है धारणा जिनकी। ११ हिमाचल। १२ कुबेर। १३ पृथ्वी। १४ जुगुनू।

तजि ममता मद मान, भजिय राम सीतारमण ॥ १० ॥
सुनि भुशुंडके वचन सुहाये * हर्षित खगपति पंख फुलाये ॥
नयन नीर मन अतिहर्षाना * श्रीरघुपति प्रताप उर आना ॥
पाछिलमोह समुझि पछिताना * ब्रह्म अनादि मनुजकरि जाना ॥
पुनि पुनि कागचरण शिरनावा * जानि रामसम प्रेम बढावा ॥
गुरु विनु भवनिधि तरै न कोई * जो विरंचि शंकरसम होई ॥
संशयसर्प ग्रसेउ मोहिं ताता * दुख दल हरि कुतर्क बहु व्राता ॥
तव स्वरूप गारुडि रघुनायक * मोहिं जियायहु जनसुखदायक ॥
तव प्रसाद मम मोह नशाना * रामरहस्य अनूपम जाना ॥
दोहा– ताहि प्रशंसेउ विविध विधि, शीश नाइ करजोरि ॥
वचन सप्रेम विनीत मृदु, बोलेउ गरुड बहोरि ॥ १३५ ॥
प्रभु अपने अविवेक ते, पूछौ स्वामी तोहिं ॥
कृपासिन्धु सादर कहहु, जानि दास निज मोहिं ॥ १३६ ॥
तुम सर्वज्ञ तज्ञ तमपारा * सुमति सुशील सरल आचारा ॥
ज्ञान विरति विज्ञाननिवासा * रघुनायकके प्रियतुम दासा ॥
कारण कवन देह यह पाई * तात सकल मोहिं कहहुबुझाई ॥
रामचरित सर सुन्दर स्वामी * पायहु कहाँ कहहु नभगामी ॥
नाथ सुना मैं अस शिव पाहीं * महाप्रलयमहँ क्षय तव नाहीं ॥
मृषा वचन नहिं शंकर कहहीं * सो मेरे मन संशय अहहीं ॥
अग जग जीव नाग नरदेवा * नाथ सकल जग कालकलेवा ॥
अंडकटाह अमित लयकारी * काल महादुरतिक्रम भारी ॥
सो०–तुमहिं न व्यापै काल, अतिकराल कारण कवन ॥
सो मोहिं कहहु कृपाल, ज्ञानप्रभाव कि योग बल ॥ ११ ॥
दोहा–प्रभु तव आश्रम आयउँ, मोर मोह भ्रम भाग ॥
कारण कवन सो नाथ अब, कहहु सहितअनुराग ॥ १३७ ॥
गरुड़ गिरा सुनि हर्षेउ कागा * बोलेउ उमा सहित अनुरागा ॥

१ गरुडमंत्र जिससे साँपका विष उतरिजाय । २ परमतत्त्ववेत्ता । ३ अविद्यातेपरे । ४ अनेकब्रह्मांडविस्तारित । ५ दुस्तर ।

धन्य धन्य तव मतिउरगारी * प्रश्न तुम्हार मोहिं अति प्यारी॥
सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई *बहुत जन्मकी सुधि मोहि आई॥
सब निज कथा कहौं मैं गाई * तात सुनहु सादर मनलाई॥
जप तप मख शम दमव्रत दाना * विरति विवेक योग विज्ञाना॥
सबकर फल रघुपतिपद प्रेमा * तेइ विनु कोइ न पावै क्षेमा॥
इहि तनु राम भक्ति मैं पाई * ताते मोहिं ममता अधिकाई॥
जेहिते कछु निज स्वारथ होई * तेहि पर ममता कर सब कोई॥
सो०—पन्नगारि असि नीति, श्रुति सम्मत सज्जन कहहिं॥
अतिनीचहुसन प्रीति, करिय जानि निज परमहित॥१२॥
पाट कीटते होइ, ताते पाटम्बर रुचिर॥
कृमि पालैं सब कोइ, परम अपावन प्राणसम॥ १३॥
स्वारथ सर्व्व जीव कहँ एहा * मन क्रम वचन राम पद नेहा॥
सोइ पावन सोइ सुभग शरीरा * जोतनु पाइ भजिय रघुवीरा॥
रामविमुख लहि विधिसम देही * कवि कोविद न प्रशंसहिं तेही॥
राम भक्ति यहि तनुमहँ जामी * ताते मोहिं परम प्रियस्वामी॥
तजौं न तनु निजइच्छा मरणा * तनु विनु वेद भजन नहिं वरणा॥
प्रथम मोह मोहिं बहुत विगोवा * राम विमुख सुखकबहुँ नसोवा॥
नाना जन्म कर्म्म पुनि नाना * किये योग जप तप मख दाना॥
कवन योनि जन्मेहुँ जहँ नाहीं * मैं खगेश भ्रमि भ्रमि जगमाहीं॥
देखेहुँ सब करि कर्म्म गुसाई * सुखी न भयउँ अबहिं की नाई॥
सुधि मोहिं नाथ जन्मबहु केरी * शिवप्रसाद मति मोह न घेरी॥
दोहा—प्रथम जन्मके चरित अब, कहौं सुनहु विहँगेश॥
सुनि प्रभु पदरति ऊपजै, जाते मिटैं कलेश॥ १३८॥
पूर्वकल्पमें एकप्रभु, कलियुग मलकर मूल॥
नर अरु नारि अधमरत, सकल निगम प्रतिकूल॥ १३९॥
तेहि कलियुग कोशलपुर जाई * जन्मत भयउँ शूद्र तनु पाई॥

१ कुशल। २ गरुड। ३ कीडा। ४ भरमाया। ५ यज्ञ ६ गरुड। ७ प्रीति। ८ पाप। ९ वेद।

शिव सेवक मन क्रम अरुवानी * आनदेव निन्दक अभिमानी ॥
धन मद मत्त परम वाचाला * उग्रबुद्धि उर दम्भ विशाला ॥
यदपि रहेउँ रघुपति रजधानी * तदपिनहींमहिमाकछु जानी ॥
अब जाना मैं अवध प्रभावा * निगमागम पुराण अस गावा ॥
कवनिहुँ जन्म अवधबस जोई * राम परायण सो परिहोई ॥
अवध प्रभाव जान तब प्राणी * जब उर वसहिं राम धनुपाणी ॥
सो कलिकाल कठिन उरगारी * पाप परायण सब नर नारी ॥
दोहा-कलिमल ग्रसेउ धर्म सब, गुप्त भये सद्ग्रन्थ ॥
दम्भिन निज मति कल्पिकरि प्रगट कीन्ह बहुपन्थ॥१४०
भये लोग सब मोहवश, लोभ ग्रसे शुभ कर्म ॥
सुनु हरियान ज्ञाननिधि, कहौं कछुक कलिधर्म ॥ १४१ ॥
वर्ण धर्म नहिं आश्रम चारी * श्रुति विरोध रत सब नरनारी ॥
द्विजश्रुति वंचक भूपप्रजाशन *कोउनहिंमाननिगमअनुशासन॥
मारग सो जाकहँ जो भावा * पण्डित सोइ जो गाल बजावा ॥
मिथ्यारम्भ दम्भरत जोई * ताकहँ सन्त कहै सब कोई ॥
सोइ सयान जो परधन हारी * जो करु दम्भ सो बड़ आचारी ॥
जो बहुझूंठ मसखरी जाना * कलियुग सोइ गुणवन्त बखाना॥
निराचार जो श्रुतिपथत्यागी * कलियुग सोइ ज्ञानी वैरागी ॥
जाके नख अरु जटा विशाला * सोइ तापसप्रसिद्धकलिकाला॥
दोहा-अशुभ वेष भूषण धरैं, भक्ष्याभक्ष्य जे खाहिं ॥
त्यइ योगी त्यइ सिद्ध नर, पूजित कलियुग माहिं॥१४२॥
सो०-जे अपकारी चार, तिनकर गौरव मान्यता
मन क्रम वचन लबार, ते वक्ता कलिकालमहँ ॥ १४ ॥
नारि विवश नर सकल गुसाईं * नाचहिं नट मर्कटकी नाईं ॥
शूद्र द्विजहिं उपदेशहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ॥
सब नर काम लोभ रत क्रोधी * देव विप्र गुरु सन्त विरोधी ॥

१ वक्ता । २ बडी तीक्ष्ण तामस राजससे मिळितबुद्धि । ३ शास्त्रके पदार्थ सबको देखावत रहौं अरु त्यहिकी कर्त्तव्यते प्रतिकूळ रहौं । ४ लगाइआ । ५ शास्त्रकी रीति । ६ वेदकी निंदाकरनेवाले ।७प्रजाका अन्न खाजानेवाले । ८ आदर । ९ झूठे । १०बंदरकी ।

गुणमन्दिर सुन्दर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी ॥
सौभागिनी विभूषण हीना * विधवनके शृंगार नवीना ॥
गुरु शिष अंध बधिरकर लेखा * एक न सुनै एक नहिं देखा ॥
हरै शिष्यधन शोक न हरई * सोगुरु घोर नरक महँ परई ॥
मात पिता बालकन बुलावहिं * उदर भरै सोइ कर्म शिखावहिं ॥

दोहा-ब्रह्मज्ञान बिन नारि नर, करहिं न दूसरि बात ॥
कौडी कारण मोहवश, करहिं विप्र गुरुघात ॥ १४३ ॥
वाद शूद्र कह द्विजन सन, हम तुमते कछु घाटि ॥
जानै ब्रह्म सो विप्रवर, आँखि दिखावहिं डाटि ॥ १४४ ॥

परतियलम्पट कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने ॥
तेइ अभेदवादी ज्ञानी नर * देखा मैं चारित्र कलियुगकर ॥
आपु गये अरु आनहिं घालहिं * जोकोउ श्रुतिमारगप्रतिपालहिं ॥
कल्प कल्प भरि इक इक नर्का * परहिं जे दूषहिं श्रुतिकर तर्का ॥
जे वर्णाधम तेलि कुम्हारा * श्वपच किरात कोल कलवारा ॥
नारि मुई गृह सम्पति नाशी * मूड़ मुँड़ाइ भये संन्यासी ॥
ते विप्रन सन पाँव पुजावहिं * उभयलोक निजहाथनशावहिं ॥
विप्र निरक्षर लोलुप कामी * निराचार शठ वृषलीस्वामी ॥
शूद्र करहिं जप तप व्रत दाना * बैठि वरासन कहहिं पुराना ॥
सब नर कल्पित करहिंअचारा * जाइ न वर्णि अनीति अपारा ॥

दोहा-भये वर्णसंकर कलिहि, भिन्न सेतु सब लोग ॥
करहिं पाप दुख पावहीं, भय रुज शोक वियोग ॥ १४५ ॥
श्रुतिसम्मत हरिभक्ति पथ, संयुतज्ञान विवेक ॥
ते न चलहिं नर मोहवश, कल्पहिं पंथ अनेक ॥ १४६ ॥

तोटक छंद ।

बहु धाम सँवारहि योगि यती, विषया हरि लीन्ह गई विरती ॥
तपसी धनवन्त दरिद्र गृही, कलि कौतुक तात न जात कही ॥

१ बहिरा । २ आसक्त । ३ चंडाल । ४ भील । ५ लोभी । ६ दासीपति । ७ श्रेष्ठ आसन ऊँचा । ८ रोग । ९ वैराग्य ।

कुलवंति निकारहिं नारि सती, गृहआनहिं चेरिहिं चेरगती ॥
सुत मानहिं मात पिता तबलौं, अबलानन दीखनहीं जबलौं ॥ २२ ॥
ससुरारि पियारि लगी जबते, रिपुरूप कुटुम्ब भये तबते ॥
नृप पापपरायण धर्म नहीं, करि दण्ड विदण्ड प्रजा नितहीं ॥
धनवन्त कुलीन मलीन अपी, द्विजचिह्न जनेउ उघार तपी ॥
नहिं मान पुराणहिं वेदहि जो, हरिसेवकसंत सही कालसो ॥ २३ ॥
कवि वृन्द उदार दुनी न सुनी, गुण दूषित बात न कोपि गुनी ॥
कलि बारहिंबार दुकाल परैं, बिन अन्न दुखी बहुलोग मरैं ॥ २४ ॥

दोहा–सुन खगेश कलि कपट हठ, दम्भ द्वेष पाखण्ड ॥
काम क्रोध लोभादि मद, व्यापि रहेउ ब्रह्मण्ड ॥ १४७ ॥
तामस धर्म करहिं नर, जप तप मख व्रत दान ॥
देव न वर्षं धरणि पर, बये न जामहिं धान ॥ १४८ ॥

तोटक छंद ।

अबला कच[1] भूषण भूरि क्षुधा[2], धनहीन दुखी ममता बहुधा ॥
सुख चाहहिं मूढ न धर्मरता, मतिथोरि कठोरि न कोमलता ॥
नर पीडित रोग न भोगकहीं, अभिमान विरोध अकारणहीं ॥
लघुजीवन संवत पंचदशा, कल्पांत न नाश गुमान अशा ॥ २५ ॥
कलिकालविहालकिये मनुजा, नहिं मानत कोउ अनुजा तनुजा[10] ॥
नहिं तोष विचार न शीतलता, सब जाति कुजाति भयेमँगता ॥
इरषा परुषा[11] छल लोलुपता[12], भरि पूरि रही समता विगता[13] ॥
सब लोग वियोग विशोक हये, वर्णाश्रम धर्म अचारगये ॥ २६ ॥
दम[14] दान दया नहिं जानपनी, जडता परपंचकतात घनी ॥
तनु पोषक नारि नरा सगरे, परनिन्दक जे जगमें बगरे[15] ॥ २७ ॥

दोहा–सुनु व्यालारि[16] कराल कलि, मल अवगुण आगार[17] ॥
गुणहु बहुत कलिकाल कर, बिनु प्रयास निस्तार ॥ १४९ ॥
कृतयुग त्रेता द्वापरहु, पूजा मख अरु योग ॥

१ अपनी स्त्रीनको मुख । २ मार । ३ निश्चय । ४ वैर । ५ बाल । ६ आधिक । ७ भूख । ८ प्यार । ९ छोटीबहिन । १० अपनी कन्या । ११ कठोर । १२ लुब्ध । १३ जातीरही । १४ इन्द्रियनकर जीतव । १५ फैले । १६ गरुड । १७ घर

जो गति होइ सो कलिहि हरि, नाम ते पावहिं लोग॥१५०॥
कृतयुग सब योगी विज्ञानी * करिहरिध्यान तरहिं भव प्रानी॥
त्रेता विविध यज्ञ नर करहीं * प्रभुहिं समर्पि कर्म भव तरहीं॥
द्वापर करि रघुपतिपद पूजा * नर भव तरहिं उपाय न दूजा॥
कलि केवल हरिगुणगण गाहा * गावत नर पावहिं भव थाहा॥
कलियुग योग यज्ञ नहिं ज्ञाना * एक अधार रामगुण गाना॥
सब भरोस तजि जो भजरामहिं * प्रेम समेत गाव गुणग्रामहिं॥
सो भव तर कछु संशय नाहीं * नाम प्रताप प्रगट कलिमाहीं॥
कलिकर एक पुनीत प्रतापा * मानस पुण्य होइ नहिं पापा॥
दोहा—कलियुगसम युग आन नहिं, जो नर कर विश्वास॥
गाइ रामगुणगण विमल, भव तर विनहिं प्रयास॥१५१॥
प्रगट चारि पद धर्मके, कलिमहँ एक प्रधान॥
येन केन विधि दीन्हें, दान करै कल्यान॥ १५२॥
कृतयुग धर्म होहिं सब केरे * हृदय राम मायाके प्रेरे॥
शुद्ध सत्व समता विज्ञाना * कृत प्रभाव प्रसन्न मनजाना॥
सत्व बहुत कछु रजरतिकर्मा * सब विधि शुभ त्रेताकरधर्मा॥
बहु रज सत्व स्वल्प कछुतामस * द्वापर धर्म हर्ष भय मानस॥
तामस बहुत रजोगुण थोरा * कलिप्रभाव विरोध चहुँओरा॥
बुध युग धर्म जानि मनमाहीं * तजि अधर्म रत धर्म कराहीं॥
काल कर्म नहिं व्यापहि ताही * रघुपति चरणप्रीतिअतिजाही॥
नटकृत कपट विकट खगराया * नट सेवकहिं न व्यापै माया॥
दोहा—हरिमाया कृत दोष गुण, बिनु हरिभजन न जाहिं॥
भजियरामसबकामतजि, असविचारिमनमाहिं॥ १५३॥
तेहि कलिकाल वर्ष बहु, बसेउँ अवध विहँगेश॥
परेउ दुकाल विपत्ति वश, तब मैं गयउँ विदेश॥ १५४॥

गयउँ उजैन सुनहु उरगारी * दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥
गये काल कछु सम्पति पाई * तहँ पुनि करौं शम्भु सेवकाई ॥
विप्र एक वैदिक शिवपूजा * करै सदा तेहि काज न दूजा ॥
परमसाधु परमारथ बिन्दक * शंभु उपासक नाहिं हरिनिन्दक ॥
सेवौं मैं तेहि कपट समेता * द्विज दयालु अति नीति निकेता ॥
बाहर नम्र देखि मुहिं साईं * विप्र पढ़ाव पुत्रकी नाईं ॥
शम्भुमंत्र मोहिं द्विजवर दीन्हा * शुभउपदेशविविधविधिकीन्हा ॥
जपौं मंत्र शिवमन्दिर जाई * हृदय दम्भ अहंमिति अधिकाई ॥

दोहा—मैं खल मल संकुल मति, नीच जाति वश मोह ॥
द्विज हरिजन देखत जरौं, करौं विष्णु कर द्रोह ॥ २५५ ॥

सो०—गुरु नित मोहिं प्रबोध, दुखित देखि आचरण मम ॥
मोहिं उपजै अति क्रोध, दम्भिहि नीति कि भावई ॥ १५ ॥

एक बार गुरु लीन्ह बुलाई * मोहिं नीति बहु भाँति शिखाई ॥
शिव सेवा कर फल सुत सोई * अविरल भक्ति रामपद होई ॥
रामहिं भजहिं तात शिव धाता * नर पामर कर कोतिक बाता ॥
जासु चरण शिव अज अनुरागी * तासु द्रोह सुखचहसि अभागी ॥
हरकहँ हरिसेवक गुरु कहेऊ * सुनिखगनाथ हृदयममदहेउ ॥
अधम जाति मैं विद्या पाये * भयउँ यथा अहि दूध पियाये ॥
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती * गुरुसन द्रोह करौं दिनराती ॥
अतिदयालु गुरु स्वल्प नक्रोधा * पुनिपुनि मोहिंशिखावसुबोधा ॥
ज्यहिते नीच बड़ाइ पावा * सो प्रथमहिं हठि ताहिनशावा ॥
धूम अनलसम्भव सुनु भाई * तेहि बुझाव घन पदवी पाई ॥
रज मग परी निराद [illegible] पदप्रहार नितसहई ॥
मरुत उ [illegible] * पुनि [illegible] नयन किरीटन्हपरई ॥
सुनखगपति अससमुझिप्रसं [illegible]
कवि कोविद गावहिं [illegible]

१ वेदवेत्ता। २ परमार्थके जाननेवाले। ३ अहंकार। ४ युक्त। ५ वैष्णव। ६ सर्प। ७ धूरि। ८ चोट। ९ हवा। १

उदासीन वरु रहिय गुसाँई * खल परिहरिय श्वानकी नाई ॥
मैंखल हृदय कपट कुटिलाई * गुरु हित कहैं न मोहिं सुहाई ॥
दोहा–एक बार हर मन्दिर, जपत रहउँ शिव नाम ॥
गुरुआये अभिमान ते, उठि नहिं कीन्ह प्रणाम ॥१५६॥
सो दयालु नहिं कहेउ कछु उर न रोष लवलेश ॥
अति अघ गुरु अपमानता, सहि नहिं सके महेश ॥१५७॥
मन्दिर माँझ भई नभ वानी * रे हतभाग्य अधमअभिमानी ॥
यद्यपि तवगुरु स्वल्प न क्रोधा * अतिकृपालुचितसंम्यक बोधा ॥
तदपि शाप देहौं शठ तोहीं * नीति विरोध सुहात न मोहीं ॥
जो नहिं करौं दण्ड शठ तोरा * भ्रष्ट होइ श्रुति मारग मोरा ॥
जो शठ गुरुसन ईर्षा करहीं * रौरव नरक कल्पशत परहीं ॥
त्रिजगयोनि पुनि धरहिं शरीरा *अयुत जन्मभरि पावहिं पीरा ॥
बैठि रहेसि अजगरइव पापी * होसिसर्प्पखलमलमतिव्यापी ॥
महा विटप कोटरमहँ जाई * रहुरे अधम अधोगति पाई ॥
दोहा–हाहाकार कीन्ह गुरु, सुनि दारुण शिव शाप ॥
कंपित मोहिं विलोकि अति, उर उपजा परिताप ॥ १५८ ॥
करि दण्डवत सप्रेम गुरु, शिव सन्मुख करजोरि ॥
विनय करत गद्गद गिरा, समुझि घोर गति मोरि ॥ १५९॥

छंद भुजंगप्रयात ।

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं, विभुंव्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपं ॥
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं ॥

छन्दार्थ–हे ईशानईश ! मुक्तिरूप आप कैसेहो विभु अर्थात समर्थ और व्यापक ब्रह्म वेदस्वरूप और अपनेसे प्रगट होनेवाले गुणसे रहित निर्विकल्प अर्थात् एकसम रहनेवाले और निरीह चेष्टार-हित और सूक्ष्म और महाकाशमें है वास जिनका वा जिनमें दोनों आकाश वसत हैं उनको मैं भजताहूँ आकारसे रहित और ओंकारका मूल और तुरीय अर्थात् जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिसेपरे वचन ज्ञान इंद्रियोंसे परे ईश कैलासके स्वामी और कराल जो महाकाल है उसकेभी आप महाकाल हैं

१ उत्कृष्ट । २ दशहनार । ३ नीचगाति–शिरनीचे पूंछ ऊपर । ४ कठिन । ५ दुःख ।

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं, गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशं ॥
करालंमहाकालकालं कृपालं, गुणागारसंसारपारं नतोहं॥२८॥
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं, मनोभूतकोटिप्रभासीशरीरं ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा, लसद्भालबालेंदुकंठेभुजंगा ॥
चलत्कुंडलं शुभ्रनेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालुं ॥
मृगाधीशचर्माम्बरंमुण्डमालं, प्रियंशंकरंसर्वनाथंभजामि२९॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रयीशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं, भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
कलातीतकल्याणकल्पांतकारी, सदासज्जनानंददातापुरारी ॥
चिदानंदसंदोहमोहापहारी,प्रसीद प्रसीदप्रभोमन्मथारी ३०॥
नयावत् उमानाथपादारविंदं, भजंतीह लोके परेवानराणाम् ॥
न तावत्सुखं शांतिसंतापनाशं, प्रसीदप्रभो सर्वभूताधिवासं ॥
नजानामि योगं जपं नैवपूजा, नतोहंसदा सर्वदाशम्भु तुभ्यं ॥
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं,प्रभोपाहिआपन्नमामीशशंभो३१

कृपालु गुणोंके आगर ससारसे परे हो मैं आपको नमस्कार करताहूं ॥ २८ ॥ आप हिमाचल पर्वतके समान गौरवर्ण और गम्भीर हैं और करोडों कामके समान शरीरकी शोभा है और मस्तकपर गंगा आनन्दसे शोभित हैं और ललाटमें दूजका चंद्रमा और कंठमें सर्प शोभित हैं जिनके कानोंमें कुंडल हलरहे हैं बड़े विशाल नेत्र हैं जिनका मुख प्रसन्न कंठ नील है और दयाके घरहैं सिंहका चर्म मुंडकी माला जिनको प्रियहैं ऐसे जो सबके नाथ आप शङ्कर अर्थात् यल्याण कारक हो सो तुम्हारे स्वरूपको मैं नमस्कार करताहूं ॥ २९ ॥ प्रचंड अतिउत्तम अति ढीठ बड़े ईश्वर खंडरहित अज कोटिभानुवतप्रकाशित तीनों शूलके नाश करनेवाले त्रिशूल हाथमें लियहुए भावसे प्राप्त होनेयोग्य भवानीपतिको मैं नमस्कार करताहूं, कालसे परे कल्याण और कल्पांतके करनेवाले सदा सज्जनोंके आनंद देनेवाले त्रिपुरासुरके शत्रु चैतन्य आनंदके वासन और मोहके कर्त्ता मन्मथके नाशकर्ता प्रभु मेरे ऊपर कृपा करके रक्षा करो ॥ ३० ॥ हे उमानाथ ! जबतक सब जीवोंसे सेवित भक्तजन आपके चरणारविंदकी नहीं सेवा करते तबतक इसलोक वा परलोकमें उनलोगोंको सुख शान्ति नहीं और संतापका नाश नहीं होता । योग जप पूजाको मैं नहीं जानताहूं और हे शिवजी ! मैं सदा तुमको नमस्कार करताहूं और बुढाई जन्मके दुःखोंके समूह करके जो मैं दुःखी हूं आपकी शरणमें हूं हे प्रभो ! आप रक्षा करो मैं आपको हे ईश ! नमस्कार करताहूं ॥३१॥

श्लोक–"रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये।
ये पठंति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति" ॥ ४ ॥

दोहा–सुनि विनती सर्वज्ञ शिव, देखि विप्रअनुरागु ॥
पुनि मन्दिर वाणी भई, हे द्विजवर वर माँगु ॥ १६० ॥
जो प्रसन्न प्रभु मोहिंपर, नाथ दीनपर नेहु ॥
निजपद भक्ति देहु प्रभु, पुनि दूसर वर देहु ॥ १६१ ॥
तव मायावश जीव जड़, सन्तत फिरै भुलान ॥
तेहिपर क्रोध न करिय प्रभु, कृपासिन्धु भगवान ॥१६२ ॥
शंकर दीनदयालु अब, यहिपर होहु कृपाल ॥
शापानुग्रह होइ ज्यहि, नाथ थोरही काल ॥ १६३ ॥

इहिकर होइ परमकल्याना * सोइ करहु अब कृपानिधाना ॥
विप्रगिरा सुनि परहित सानी * एवमस्तु इति भइ नभवानी ॥
यदपि कीन यह दारुणपापा * मैं पुनि दीन क्रोधकारि शापा ॥
तदपि तुम्हारि साधुता देखी * करिहौं इहिपर कृपा विशेखी ॥
क्षमा शील जे पर उपकारी *ते द्विज प्रिय मोहि यथा खरारी॥
मोर शाप द्विज मृषा न होई * जन्म सहस्त्र पाव यह सोई ॥
[illegible] ल्प न व्यापिहि सोई॥
[illegible]
कानहु जन्म मिटिहि नहिं ज्ञाना* सुनहु शूद्र ममवचन प्रमाना ॥
रघुपति पुरी जन्म तव भयऊ * पुनि तैं मम [illegible] मन दयऊ ॥
पुरी प्रभाव अनुग्रहं मोरे * रामभक्ति उपजहि उरतोरे ॥
सुन ममवचन सत्य अब भाई * हरितोषकव्रत द्विज सेवकाई॥
अब जनि करसि विप्र अपमाना* जानसि ब्रह्म अनन्तसमाना ॥
इन्द्रकुलिश ममशूल विशाला * कालदण्ड हरिचक्र कराला ॥
जो इनकर मारा नहिं मरई * विप्ररोष पावक सो जरई ॥

[श्लो]ोकार्थ–इस रुद्राष्टकको पढकर ब्राह्मणने महादेवजीको प्रसन्न किया जो कोई इसको पढैंगे उनपर शिवजी कृपा करैंगे ॥

१ रामचन्द्र। २ कृपा

अस विवेक राखेहु मनमाहीं * तुम्हकहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
औरौ एक आशिषा मोरी * अप्रतिहत गति होइहि तोरी ॥

दोहा–सुनि शिव वचन सप्रेम गुरु, एवमस्तु इति भाषि ॥
मोहिं प्रबोधि गयउ गृह, शंभुचरण उर राखि ॥ १६४ ॥
प्रेरित काल विंध्यगिरि, जाइ भयउँ मैं व्याल ॥
विनु प्रयास सो तनु तजेउँ, नाथ थोरही काल ॥ १६५ ॥
जो तनु धरौं सो तजौं पुनि, अनायास हरियान ॥
जिमि नूतनपट पहिरिकै, नर परिहरै पुरान ॥ १६६ ॥
शिव राखेउ श्रुति नीति विधि, मैं नहि पावकलेश ॥
इहिविधि धरेउँ विविध तनु, ज्ञान न गयउ खगेश ॥ १६७ ॥

त्रिजग योनि नर जो तनु धरेऊँ * तहँ तहँ रामभक्ति अनुसरेऊँ ॥
एक शूल मोहि बिसरु न काऊ * गुरुको कोमल शील स्वभाऊ ॥
चर्म देह द्विज कर मैं पाई * सुर दुर्लभ पुराण श्रुति गाई ॥
खेलौं तहाँ बालकन मीला * करौंसकल रघुनायक लीला ॥
प्रौढभये मोहिं पिता पढावा * समुझा सुनौं गुणौं नहिं भावा ॥
मनते सकल वासना भागी * केवल रामचरज लय लागी ॥
गेश असकवन अभागी * खरीसेव सुरधेनुहि त्यागी ॥
प्रेम मगन मोहिं कछु न सुहाई * हारेउ पिता पढाय पढाई ॥
भयउ कालवश जब पितु माता * मैं वन गयउँ भजन जनत्राता ॥
जहँ जहँ विपिन मुनीश्वर पावौं * आश्रम जाइ जाइ शिरनावौं ॥
पूँछौं तिनहिं रामगुण गाहा * हौं सुनौं हर्षित खगनाहा ॥
सुनत फिरौं हरिगुण अनुवादा * व्याहतगति शंभुप्रसादा ॥
छूटीं त्रिविध ईषणाँ गाढी * एक लालसा उर अति बाढी ॥
रामचरण पंकज जब देखौं * तब निजजन्मसफलकरि लेखौं ॥
जेहि पूंछौं सो मुनि असकहई * ईश्वर सर्वभूतमय अहई ॥

१ जहाँ जी चाहे तहाँ चलीजावे । २ अन्तर्मे । ३ सयान । ४ गदही । ५ कामधेनु । ६ परमेश्वर
७ सुत वित्त लोकमर्यादापर ममता

निर्गुण मत नाहिं मोहिं सुहाई * सगुण ब्रह्म रति उर अधिकाई॥

दोहा–गुरुके वचन सुरति करि, रामचरण मन लाग ॥
रघुपति यश गावत फिरौं, क्षण क्षण नव अनुराग ॥ १६८ ॥
मेरु शिखर वट छाया, मुनि लोमश आसीन ॥
देखि चरण शिर नायऊँ, वचन कहेउँ अतिदीन ॥ १६९ ॥
सुनि मम वचन विनीत मृदु, मुनिकृपालु खगराज ॥
मोहिं सादर बूझत भयउ, द्विज आयउ केहिकाज ॥ १७० ॥
तब मैं कहेउँ कृपानिधि, तुम सर्वज्ञ सुजान ॥
सगुणब्रह्म अवराधना, मोहिं कहहु भगवान ॥ १७१ ॥

तब मुनीश रघुपति गुणगाथा * कहेउ कछुक सादर खगनाथा॥
ब्रह्मज्ञानरत मुनि विज्ञानी * मोहिं परम अधिकारी जानी ॥
लागे करन ब्रह्म उपदेशा * अज अद्वैत अगुण हृदयेशा ॥
अकल[2] अनीह[3] अनाम[4] अरूपा * अनुभवगम्य[5] अखंड अनूपा ॥
मनगोतीत[6] अमल अविनाशी * निर्विकार[7] निरवधि[8]सुखराशी ॥
सो तैं ताहि तोहिं नहिं भेदा * वारि वीचि इव गावहिं वेदा ॥
विविधभाँतिमोहिंमुनिसमुझावा * निर्गुणमत ममहृदयनआवा ॥
पुनि मैं कहेउँ नाइ पदशीशा * सगुण उपासन कहहु मुनीशा ॥
रामभक्ति जल मम मनमीना * किमि विलगाइ मुनीश प्रवीना॥
सोइ उपदेश कहहु करि दाया * निज नयनन देखौं[9] रघुराया ॥
भरिलोचन विलोकि अवधेशा * तब सुनिहौं निर्गुण उपदेशा[10] ॥
पुनि मुनि कह हरिकथा अनूपा[11] * खंडिसगुणमत अगुणनिरूपा॥
तब मैं निर्गुणमत करि दूरी * सगुण निरूपौं करि हठ भूरी ॥
उत्तर प्रत्युत्तर मैं कीन्हा * मुनि उरभयउ क्रोधकरचीन्हा॥
सुन प्रभु बहुत अवज्ञा[12] किये * उपज क्रोध ज्ञानिहुके हिये ॥
अति संघर्षन[13] करै जो कोई * अनल[14] प्रगट चन्दनते होई ॥

१ परमप्रवीण । २ कलारहित । ३ चेष्टारहित । ४ नामरहित । ५ अनुभवकरके प्राप्तहैं । ६ मनवाणीतेपरे । ७ षट् विकाररहित ८ जिनकी मर्यादाकी थाह नहीं । ९ देखि । १० शिक्षा । ११ जिनकी तुलना नहीं । १२ अनादर । १३ रगड । १४

दोहा-बारहिं बार सकोपि मुनि, करहिं निरूपण ज्ञान ॥
मैं अपने मन बैठि तव, करौं विविध अनुमान ॥ १७२ ॥
क्रोध कि द्वैतक बुद्धि बिनु, द्वैत कि बिनु अज्ञान ॥
मायावश परिछिन्न जड़, जीव कि ईश समान ॥ १७३ ॥

कबहुँक दुख सबकर हितताके * त्यहिकिदरिद्रपरसमणिजाके॥
कामी पुनि कि रहैं निकलंका * परद्रोही कि मे होइ निशंका ॥
वंशकि रह द्विज अनहित कीन्हे *कर्म कि होहिं स्वरूपहिचीन्हें॥
काहुहि सुमति कि खलसँगजामी*शुभगतिपावकिपरतियगामी॥
राज कि रहै नीतिबिनु जाने * अघ कि रहै हरिचरित बखाने॥
भवकि परहिं परमारथ विंदक * सुखी कि होहिं कबहुँ परनिंदक
पावन यश कि पुण्य बिनु होई * बिनु अघ अयश कि पावैकोई॥
लाभ कि कछु हरिभक्तिसमाना* जोहि गावहिं श्रुति संतपुराना ॥
हानि कि जग इहिसम कछुभाई* भजिय न रामहिं नरतनु पाई ॥
अघकि बिना तामस कछुआना* धर्म कि दयासरिस हरियाना॥
इहिविधि अमितयुक्ति मनगुणऊँ* मुनि उपदेश न सादरसुनेऊँ॥
पुनि पुनि सगुण पक्ष मैं रोपा* तब मुनि बोले वचन सकोपा ॥
मूढ परमशिख ऊँ न मानेसि * उत्तर प्रत्युत्त आनेसि ॥
सत्य वचन विश्वास न करही * वायस इव सबहीसन डरही ॥
शठ सपक्ष तव हृदय विशाला * सपदि होहु पक्षी चण्डाला ॥
लीन्ह शाप मैं शीश चढ़ाई * नहिं कछु भय न दीनताआई॥

दोहा-तुरत भयउँ मैं काग तब, पुनि मुनिपद शिरनाइ ॥
सुमिरि राम रघुवंशमणि, हर्षित चलेउँ उड़ाइ ॥ १७४ ॥
उमा जो रामचरणरत, विगत काम मद क्रोध ॥
निज प्रभुमय देखहिं जगत, कासन करहिं विरोध ॥१७५॥

सुनु खगेश नहिंकछु ऋषिदूषण* उर प्रेरक रघुवंशविभूषण ॥
कृपासिन्धु मुनिमति करि भोरी* लीन्हीं प्रेमपरीक्षा मोरी ॥

व्याख्यान । २ यह इतना है ऐसा अजमायाहुआ । ३ उत्तम बुद्धि । ४ दुष्ट । ५ परस्त्री रमनेवाले ।
६ पाप । ७ क्रोध । ८ गरुड़ ।

मन क्रम वचन मोहिं जनजाना * मुनिमति पुनि फेरी भगवाना ॥
ऋषि मम सहज शीलता देखी * रामचरण विश्वास विशेषी ॥
अतिविस्मय पुनि पुनि पछिताई * सादरमुनि मुहिं लीन्ह बुलाई ॥
ममपरितोष विविधविधिकीन्हा * हर्षित राममंत्र मोहिं दीन्हा ॥
बालकरूप रामकर ध्याना * कहेउमोहिं मुनिकृपानिधाना ॥
सुन्दर सुखद मोहिं अति भावा * जो प्रथमहिं मैं तुमहिं सुनावा ॥
मुनि मोहिं कछुककालतहँराखा * रामचरितमानस सब भाखा ॥
सादर मोहिं यह कथा सुनाई * पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ॥
रामचरित सर गुप्त सुहावा * शम्भुप्रसाद तात मैं पावा ॥
तोहिं निजभक्त रामकर जानी * ताते मैं सब कहेउँ बखानी ॥
रामभक्ति जिनके उर नाहीं * कबहुँ न तात कहिय तेहिपाहीं ॥
मुनि मोहिं विविधभाँतिसमुझावा * मैं सप्रेम मुनिपद शिरनावा ॥
निजकरकमलपरशिममशीशा * हर्षित आशिष दीन्ह मुनीशा ॥
रामभक्ति अविरल उर तोरे * बसिहि सदा प्रसाद अब मोरे ॥

दोहा–सदा रामप्रिय होहु तुम, शुभगुण भवन अमान[1] ॥
कामरूप[2] इच्छा मरण, ज्ञान विराग निधान ॥ १७६ ॥
ज्यहि आश्रम तुम बसब पुनि, सुमिरहु श्रीभगवन्त ॥
व्यापिहि तहँ न अविद्या, योजन इक पर्यन्त ॥ १७७ ॥

काल कर्म्म गुणदोषस्वभाऊ * कछु दुखतुमहिंनव्यापिहिकाऊ ॥
राम रहस्य ललित विधि नाना * गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥
बिनु श्रम तुम सब जानब सोऊ * नित नवप्रेम रामपद होऊ ॥
जो इच्छा करिहौ मनमाहीं * हरिप्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥
सुनि मुनि आशिष सुनुमतिधीरा * ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा ॥
एवमस्तु तव वच मुनिज्ञानी * यह मम भक्त कर्म मन वानी ॥
सुनि नभगिरा हर्ष मम भयऊ * प्रेममगन मन संशय गयऊ ॥
करि विनती मुनि आशिष पाई * पदसरोज पुनि पुनि शिरनाई ॥

१ मानरहित । २ कामरूप कही जो इच्छा करहुगे सो रूप प्राप्त होवेगा । ३ स्थान । ४ चरित । ५ ब्रह्माकी वाणी ।

हर्षसहित यहि आश्रम आयउँ * प्रभु प्रसाद दुर्लभ वर पायउँ ॥
इहाँ वसत मोहिं सुन खगईशा * बीते कल्प सात अरु बीसा ॥
करौं सदा रघुपति गुण गाना * सादर सुनहिं विहंग सुजाना ॥
जब जब अवधपुरी रघुवीरा * धरहिं भक्त हित मनुजशरीरा ॥
तब तब जाइ अवधपुर रहऊँ * शिशुलीलाविलोकि सुखलहऊँ ॥
पुनि उर राखि राम शिशुरूपा * इहि आश्रम आवों खगभूपा ॥
कथा सकल मैं तुम्हहिं सुनाई * कागदेह जेहि कारण पाई ॥
कहेउँ तात सब प्रश्न तुम्हारी * रामभक्ति महिमा अतिभारी ॥
दोहा–ताते यह तनु मोहिं प्रिय, भयउ रामपद नेह ॥
निज प्रभु दर्शन पायउँ, गयउ सकल संदेह ॥ १७८ ॥
भक्ति पक्ष हठ करि रहेउँ, दीन्ह महा ऋषि शाप ॥
मुनिदुर्लभ वर पायउँ, देखहु भजन प्रताप ॥ १७९ ॥
जे असि भक्ति जानि परिहरहीं * केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं ॥
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी * खोजत आक फिरहिं पयलागी ॥
सुनु खगेश हरि भक्ति विहाई * जो सुख चाहहिं आन उपाई ॥
ते शठ महासिन्धु विनुतरणी * पैरि पार चाहत जड़करणी ॥
सुनि भुशुण्डिके वचन भवानी * बोलेउ गरुड़ हर्षि मृदुवानी ॥
तवप्रसाद प्रभु मम उर माहीं * संशय शोक मोह भ्रम नाहीं ॥
सुनेउँ पुनीत रामगुण ग्रामा * तुम्हरी कृपा लहेउँ विश्रामा ॥
एक बात प्रभु पूछौं तोहीं * कहहु बुझाइ कृपानिधि मोहीं ॥
कहहिं सन्त मुनि वेद पुराना * नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान समाना ॥
सो मुनि तुमसन कहेउ गुसाईं * नहिं आदरेउ भक्तिकी नाईं ॥
ज्ञानहिं भक्तिहि अन्तर केता * सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता ॥
सुनि उरगारि वचन सुख माना * सादर बोलेउ काग सुजाना ॥
ज्ञानहिं भक्तिहि नहिं कछु भेदा * उभय हरहिं भवसम्भव खेदा ॥
नाथ मुनीश कहहिं कछु अन्तर * सावधान होइ सुन विहंगवर ॥

१ मंदार। २ दूध। ३ त्यागके। ४ नौका। ५ दुष्प्रकृत्य करनेवाले। ६ पार्वती। ७ कृपाके स्थान।

ज्ञान विराग योग विज्ञाना * ये सब पुरुष सुनहु हरियाना ॥
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती * अबलाअबल सहजजड़ जाती॥
दोहा–पुरुष त्यागि सक नारि कहँ, जो विरक्त मतिधीर ॥
नतु कामी विषया विवश, विमुख जु पद रघुवीर ॥१८०॥
सो०–सो मुनि ज्ञाननिधान, मृगनयनी विधुमुख निरखि ॥
विकल होहिं हरियान, नारि विरंचि माया प्रगट ॥१६॥
यहाँ न पक्षपात कछु राखौं * वेद पुराण सन्तमत भाखौं ॥
मोह न नारि नारिके रूपा * पन्नगारि यह नीति अनूपा ॥
माया भक्ति सुनहु प्रभु दोऊ * नारि वर्ग जानैं सब कोऊ ॥
पुनि रघुवीरहिं भक्ति पियारी * माया खल नर्तकी विचारी ॥
भक्तिहि सानुकूल रघुराया * ताते तेहि डरपति अतिमाया ॥
रामभक्ति निरुपम निरुपाधी * बसै जासु उर सदा अबाधी ॥
तेहि विलोकि माया सकुचाई * करि नसकै कछु निजप्रभुताई॥
अस विचारि जो मुनि विज्ञानी* यांचहिंभक्तिसकल गुणखानी॥
दोहा–यह रहस्य रघुनाथ कर, वेगि न जानै कोइ ॥
जानेते रघुपति कृपा, स्वप्नेहुमोह न होइ ॥ १८१॥
अवरौ ज्ञान भक्ति कर, भेद सुनहु परवीण ॥
जो सुनि होइ रामपद, प्रीति सदा अवक्षीण ॥१८२॥
सुनहु तात यह अकथ कहानी* समुझत बनै न जात बखानी ॥
ईश्वर अंश जीव अविनाशी * चेतन अमल सहज सुखराशी॥
सो मायावश भयउ गुसाँई * बँध्यो कीर मर्कटकी नाईं ॥
जड़ चेतनहिं ग्रंथि परिगई * यदपि मृषा छूटत कठिनई ॥
तबते जीव भया संसारी * ग्रान्थि न छूट न होइ सुखारी ॥
श्रुति पुराण बहु कहैं उपाई * छूट न अधिकअधिकअरुझाई॥
जीव हृदय तम मोह विशेषी * ग्रन्थि न छूटै परै न देखी ॥
अस संयोग ईश जब करई * तबहुँ कदाचित सो निरुअरई ॥

१ चन्द्रबदनी । २ चैतन्यरूप । ३ सुवा । ४ माया । ५ जीव । ६ विषयवासना अंधकार ।

सात्विक श्रद्धा[1] धेनु सुहाई * जो हरि कृपा हृदय बस आई ॥
जप[2] तप[3] व्रत[4] यमनियम अपारा * जो श्रुतिकहँसुधर्म्मअचारा ॥
सोइतृण हरित चरै जब गाई * भाव वत्स शिशु पाइ पन्हाई ॥
नोइनि वृत्ति पात्र विश्वासा * निर्मल मन अहीर निज दासा ॥
परम धर्ममय पय दुहि भाई * अवटै अनल अकाम बनाई ॥
तोष मरुत तब क्षमा जुड़ावै * धृतसम जावन देइ जमावै ॥
मुदिता मथै विचारि मथानी * दम अधार रज सत्य सुवानी ॥
तब मथि काढि लेइ नवनीता[5] * विमल विराग सुभग सुपुनीता ॥
दोहा—योग अग्नि कर प्रगट तब, कर्म शुभाशुभ लाइ ॥
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत, ममता मल जरिजाइ ॥१८३॥
तब विज्ञान[6] निरूपिणी, बुद्धि विशद घृतपाइ ॥
चित्त दिया भरि धरै दृढ, समता दिअटि बनाइ ॥१८३॥
तीनि अवस्था तीनि गुण, तेहि कपासते काढि ॥
तूल तुरीय सवाँरि पुनि, बाती करै सुगाढ़ि ॥
सो०—यहिविधि लेसो दीप, तेजराशि विज्ञानमय ॥
जातहि तासु समीप, जरहिं मदादिक शलभ सब ॥१७॥
सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा * दीपशिखा सोइ परम प्रचंडा ॥
आतम अनुभव सुखसुप्रकाशा * तब भव मूल भेद भ्रम नाशा ॥
प्रबल अविद्या कर परिवारा * मोह आदि तम मिटै अपारा ॥
तब सोइ बुद्धि पाय उजियारा * उर गृह बैठि ग्रन्थि निरवारा ॥
छोरत ग्रन्थि पाव जो सोई * तब यह जीव कृतारथ होई ॥
छोरन ग्रन्थि जानि खगराया * विघ्न अनेक करै तब माया ॥
ऋद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई * बुद्धिहि लोभ देखावै जाई ॥
कलबल छलकरि जाइ समीपा * अंचल वात बुझावै दीपा ॥
होइबुद्धि जो परम सयानी * तिन्हतनचितवनअनहितजानी
जो तेहि विघ्न बुद्धि नहिं बाधी * तो बहोरि सुर करहि उपाधी ॥

१ वेदगुरुवाक्यमेंप्रतीति । २ जै अक्षरका मंत्र होइ ते हजार नित जपै भूतशुद्धि प्राणायाम करके । ३ येनकेन इन्द्रियनका दमनकरै । ४ एकादशीचान्द्रायण इत्यादिक । ५ माखन । ६ अपनारवस्वरूप जीवअरूपास्वरूपब्रह्मदोकीएकताको निरूपण ।

इन्द्रिय द्वार झरोखा नाना * तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना ॥
आवत देखहिं विषय बयारी * ते हठि देहिं कपाट उघारी ॥
जब सो प्रभंजन उर गृहजाई * तबहिं दीप विज्ञान बुझाई ॥
ग्रन्थि न छूटि मिटा स्वप्रकाशा * बुद्धि विकलभइ विषयबताशा ॥
इन्द्रिय सुरन्ह न ज्ञान सुहाई * विषय भोग पर प्रीति सदाई ॥
विषय समीर बुद्धि कृत भोरी * तेहि विधि दीपको बारबहोरी ॥
दोहा–तब फिरि जीव विविध विधि, पावैं संसृति क्लेश ॥
हरिमाया अति दुस्तर, तरि न जाइ विहँगेश ॥ १८६ ॥
कहत कठिन समुझत कठिन, साधन कठिन विवेक ॥
होइ घुणाक्षर न्याय जो, पुनि प्रत्यूह अनेक ॥ १८७ ॥
ज्ञान कि पन्थ कृपाणके धारा * परत खगेश न लागै बारा ॥
जो निर्विघ्न पंथ निर्वहई * सो कैवल्य परमपद लहई ॥
अति दुर्लभ कैवल्य परमपद * सन्तपुराण निगम आगमवद ॥
रामभक्ति सो मुक्ति गुसाँई * अनइच्छित आवै बरिआई ॥
जिमिथलविनुजलरहिनसकाई * कोटि भाँति कोउ करै उपाई ॥
तथा मोक्ष सुख सुनु खगराई * रहि न सकै हरि भक्ति विहाई ॥
अस विचारि हरिभक्त सयाने * मुक्ति निरादर भक्ति लुभाने ॥
भक्ति करत विनु यतन प्रयासा * संसृति मूल अविद्यानासा ॥
भोजन करिय तृप्ति हित लागी * जिमिसोअशनपचवैजठरागी ॥
अस हरि भक्ति सुगम सुखदाई * को अस मूढ न जाहि सुहाई ॥
दोहा–सेवक सेव्यभाव विनु, भव न तरिय उरगारि ॥
भजहु रामपद पंकज, अस सिद्धान्त विचारि ॥ १८८ ॥
जो चेतन कहँ जडकरै, जडहि करै चैतन्य ॥
अस समर्थ रघुनाथ कहँ, भजहिं जीव ते धन्य ॥ १८९ ॥
कहेउँ ज्ञान सिद्धात बुझाई * सुनहु भक्ति मणिकी प्रभुताई ॥
रामभक्ति चिंतामणि सुन्दर * बसै गरुड जाके उर अन्तर ॥

१ दरवाजा । २ पवन । ३ जन्ममरणके दुःख । ४ कठिन । ५ विघ्न । ६ तरवारी–दुधारा ।
७ विनाचहै । ८ भाजन । ९ हनुमान्जी । १० श्रीरामचन्द्र ।

परमप्रकाश रूप दिन राती * नहिंकछु चहिय दिया घृतबाती॥
मोह दरिद्र निकट नहिंआवहिं * लोभबात नहिं ताहि बुझावहिं ॥
प्रबल अविद्यातम मिटि जाई * हारत सकल शलभ समुदाई ॥
खलकामादि निकट नहिं जाहीं * बसै भक्ति मणि जेहि उरमाहीं ॥
गरल सुधा सम अरिहित होई * तेहि मणिविन सुख पाव न कोई॥
व्यापहिं मानस रोग न भारी * जेहिके वश सब जीव दुखारी ॥
राम भक्ति मणि उर बसजाके * दुखलवलेश न स्वप्नेहु ताके ॥
चतुर शिरोमणि ते जगमाहीं * जेमणि लागि सुयतन कराहीं ॥
सो मणि यदपि प्रगट जग अहई * रामकृपा विनु कोउ न लहई ॥
सुगम उपाइ पाइबे केरे * नर हतभाग्य देत भटभेरे ॥
पावन पर्वत वेद पुराणा * रामकथा रुचिराकर नाना ॥
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी * ज्ञान विराग नयन उरगारी ॥
भाव सहित जो खोदै प्रानी * पाव भक्तिमणि सब सुखखानी॥
मोरे मन प्रभु अस विश्वासा * रामते अधिक रामकर दासा ॥
रामसिन्धु घन सज्जन धीरा * चन्दन तरु हरिसन्त समीरा ॥
सब कर फल हरि भक्ति सुहाई * सो विनु सन्त न काहू पाई ॥
अस विचारि जो करु सतसंगा * रामभक्ति तेहि सुलभ विहंगा ॥

दोहा–ब्रह्म पयोनिधि मन्दर, ज्ञान सन्त सुर आहि ॥
कथा सुधा मथि काढहीं, भक्ति मधुरता जाहि ॥ १९० ॥
विरति चर्म असि ज्ञान मद, लोभ मोह रिपु मारि ॥
जय पाई सोइ हरि भगति, देख खगेश विचारि ॥ १९१ ॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ * जो कृपालु मोहिं ऊपर भाऊ ॥
नाथ मोहिं निज सेवक जानी * सतप्रश्न मम कहहु बखानी ॥
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा * सबते दुर्लभ कवन शरीरा ॥
बडदुखकवन कवनसुख भारी * सो संक्षेपहि कहहु विचारी ॥
सन्त असन्त मर्म तुम जानहु * तिन्हकरसहजस्वभावबखानहु॥

१ बिष । २ अमृत । ३ वैरी । ४ खानि । ५ जो वेदपुराण रूप पर्वतके अंतर मणिरूप भक्तिको लखैं
६ पवन । ७ वैराग्य । ८ ढाल । ९ तरवारि

कवनपुण्य श्रुतिविदित विशाला * कहहु कवन अघ परमकराला ॥
मानसरोग कहहु सब गाई * तुम सर्वज्ञ कृपा अधिकाई ॥
तात सुनहु सादर अतिप्रीती * मैं संक्षेप कहौं यह नीती ॥
नरसमान नहिं कवनिहु देही * जीव चराचर याचत जेही ॥
नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी * ज्ञान विराग भक्ति सुखदेनी ॥
सो तनुधरि हरिभजहिं न जे नर * होयँ विषयरत मन्दमन्दतर ॥
कंचन काँच बदलि शठ लेहीं * करते डारि परसमणि देहीं ॥
नहिं दरिद्रसम दुख जग माहीं * सन्तमिलनसमसुखकछुनाहीं ॥
परउपकार वचन मन काया * सन्त सहज स्वभाव खगराया ॥
सन्त सहहिं दुख परहित लागी * परदुख हेतु असन्त अभागी ॥
भूरुजंतरुसम सन्त कृपाला * परहितसहानितविपतिविशाला ॥
शणइव खल परबंधन करहीं * खाल कढ़ाइविपतिसहिमरहीं ॥
खल विनुस्वारथ पर अपकारी * अहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥
परसम्पदा विनाशि नशाहीं * जिमिकृषिहतिहिमउपलविलाहीं ॥
दुष्ट हृदय जग आरति हेतू * यथा प्रसिद्ध अधम ग्रहकेतू ॥
सन्त हृदय सन्तत सुखकारी * विश्व सुखद जिमि इंदुतमारी ॥
परमधर्म श्रुति विदित अहिंसा * परनिंदासम अघ न गरिसा ॥
हरि गुरु निन्दक दादुर[11] होई * जन्म सहस्र पाव तनु सोई ॥
द्विजनिंदक बहुनरक भोगकरि * जग जन्मैं वायस[12] शरीरधरि ॥
सुर श्रुतिनिंदक जो अभिमानी * रौरव नरक परहिं ते प्रानी ॥
होहिं उलूक[13] सन्त निन्दारत * मोह निशाप्रिय ज्ञान भानुगत ॥
सबकी निन्दा जे जड़ करहीं * ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥
नहु तात अब मानस रोगा * जेहिते दुखपावहिं सब लोगा ॥
मोह सकल व्याधिनकर मूला * तेहिते पुनि उपजहिं बहुशूला[14] ॥
काम वात कफ लोभ अपारा * क्रोध पित्त नित छाती जारा ॥
करहिं जो तीनों भाई * उपजै सन्निपात दुखदाई ॥

१ भोजपपत्र । २ सर्प । ३ मूसा । ४ खेती । ५ पाला । ६ मन । ७ चंद्र । ८ सूर्य । ९ किसी जीवको दुःख न पहूँचाना । १० घोरपाप । ११ मेढक । १२ कौवा । १३ घूघूपक्षी । १४ दुःख ।

विषय मनोरथ दुर्गम नाना * ते सब शूल नाम को जाना ॥
ममता दद्रु कण्डु इरषाई * हर्ष विषाद गहर बहुताई ॥
परसुख देखि जरइ सो छई * कुष्ठ दुष्टता मन कुटिलई ॥
अहंकार अति दुखद डमरुआ * दम्भ कपट मद माननहरुआ ॥
तृष्णा उदरवृद्धि अति भारी * त्रिविध ईषणा तरुण तिजारी ॥
युग विधिज्वर मत्सर अविवेका * कहँलगि कहौं कुरोग अनेका ॥
दोहा—एक व्याधि ते नर मरहिं, ये असाध्य बहु व्याधि ॥
सन्तत पीडहिं जीव कहँ, सोकिमि लहहिं समाधि ॥१९२॥
नेम धर्म आचार तप, ज्ञान यज्ञ जप दान ॥
भेषज पुनि कोटिन्ह करहिं, रुज न जाहिं हरियान ॥१९३॥
यहिविधि सकलजीव जगरोगी * शोक हर्ष भय प्रीति वियोगी ॥
मानस रोग कछुक मैं गाये * हैं सबके लखि विरलन्हि पाये ॥
जाने ते छीजहिं कछु पापी * नाश न पावहिं जन परितापी ॥
विषय कुपन्थ पाइ अंकुरे * मुनिन्ह हृदय का नर बापुरे ॥
राम कृपा नाशहि सब रोगा * जो इहि भाँति बनै संयोगा ॥
सद्गुरु वैद्य वचन विश्वासा * संयम यह न विषयकी आशा ॥
रघुपति भक्ति सजीवन मूरी * अनूपान श्रद्धा मति रूरी ॥
इहिविधि भले कुरोग नशाहीं * नाहित यतन कोटिनहिं जाहीं ॥
जानिय तब मन बिरुज गोसाँई * जब उर बल विराग अधिकाई ॥
सुमति क्षुधा बाढै नितनई * विषय आश दुर्बलता गई ॥
विमल ज्ञान जल पाइ अन्हाई * तब रहु रामभक्ति उरछाई ॥
शिवअज शुकसनकादिकनारद * जोमुनिब्रह्म विचार विशारद ॥
सबकर मत खगनायक एहा * करिय रामपद पंकज नेहा ॥
श्रुति पुराण सद्ग्रंथ कहाहीं * रघुपति भक्ति बिना सुखनाहीं ॥
कमठपीठ जामहिं बरु बारा * वंध्यासुत बरु काहुहि मारा ॥
फूलहिं नभ बरुबहुविधि फूला * जीव न लह सुखप्रभुप्रतिकूला ॥

१ खाजु । २ जलन्धर-त्रिमदा । ३ द्वन्द्वज्वर । ४ औषधि । ५ रोग । ६ प्राणी । ७ निरोग । ८ प्रवीण । ९ कछुआ ।

तृषा जाइ बरु मृग जल पाना * बरु जामहिं शशशीश विषानां ॥
अन्धकार बरु रविहि नशावै * राम विमुख सुख जीव न पावै ॥
हिमते प्रगट अनल बरु होई * विमुख राम सुख पाव न कोई ॥
दोहा–बारि मथे बरु होइ घृत, सिकताते बरु तेल ॥
बिनु हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धांत अपेल॥१९४॥
मशकहि करहिं विरंचि प्रभु, अजहि मशकते हीन ॥
अस विचारि तजि संशय, रामहिं भजहि प्रवीन ॥ १९५ ॥
श्लोक–"विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ।
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरंति ते" ॥
कहेउँ नाथ हरिचरित अनूपा * व्याससमाँसस्वमति अनुरूपा॥
श्रुति सिद्धांत इहै उरगारी * राम भजिय सब काम बिसारी॥
प्रभु रघुपति तजि सेइय काही * मोसे शठपर ममता जाही ॥
तुम विज्ञान रूप नहिं मोहा * कीन्ह नाथ मोपरअति छोहा ॥
पूँछेउ राम कथा अति पावनि *शुकसनकादिशम्भुमनभावनि॥
सतसंगति दुर्लभ संसारा * निमिष दण्ड भरि एको बारा ॥
देखु गरुड निज हृदय विचारी * मैं रघुबीर चरण अधिकारी ॥
शकुनाधम सबभाँति अपावन *प्रभुमोहिंकीन्हविदितजगपावन॥
दोहा–आजु धन्य मैं धन्य अति, यद्यपि सबविधि हीन ॥
निज जन जानि राम मोहिं, संत समागम दीन ॥ १९६ ॥
नाथ यथामति भाषेउँ, राखेउँ कछु नहिं गोय ॥
चरितसिन्धु रघुनाथ कर, थाह कि पावै कोय ॥ १९७ ॥
सुमिरि रामके गुणगण नाना * पुनिपुनि हर्ष भुशुण्ड सुजाना ॥
महिमा निगम नेति कहि गाई * अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥
शिव अज पूज्य चरण रघुराई * मोपर कृपा परम मृदुलाई ॥
अस स्वभाव कहुँ सुनौ न देखौं * केहि खगेश रघुपति सम लेखौं॥

७

१ सींग । २ पाला । ३ अग्नि । ४ पानी । ५ बालू, ६ विस्तारपूर्वक । ७ थोरेमें । ८ पोंक्षियामें नाचि । ९ जे मुक्तिकी साधना करते हैं मुमुक्षु । १० सम्पूर्णसिद्धि जिनके हस्तामलकहैं । ११ त्रिकालदर्शी ।

योगी[1] शूर सुतापस ज्ञानी * धर्म निरत पण्डित विज्ञानी ॥
तरहिं न विनु सेये मम स्वामी * राम नमामि[2] नमामि नमामी ॥
शरण गये मोसेउ अघराशी * होहिं शुद्ध नमामि अविनाशी ॥
दोहा—जासु नाम भव भेषज[3], हरण घोर त्रयशूल[4] ॥
सो कृपालु मोहिं तोहिं पर, सदा रहहिं अनुकूल[5] ॥ १९८ ॥
सुनि भुशुण्डिके वचनवर, देखि राम पद नेह ॥
बोले गरुड सप्रेम अति, विगत मोह सन्देह ॥ १९९ ॥
मैं कृतकृत्य[6] भयउँ तव बानी * सुनि रघुवीर भक्ति रससानी ॥
रामचरण नूतन[7] रति भई * माया जनित[8] विपति सबगई ॥
मोहजलधि[9] बोहित[10] तुम भयऊ * मोकहँ नाथ विविध सुखदयऊ ॥
मोसन होइ न प्रत्युपकारा * वन्दौं तव पद बारहिं बारा ॥
पूरण काम राम अनुरागी * तुमसम तात नकोउ बड़भागी ॥
संत विटप[11] सरिता[12] गिरि[13] धरणी * परहित हेतु इन्हनकी करणी ॥
सन्तहृदय नवनीत[14] समाना * कहा कविन पै कहै न जाना ॥
निज परिताप द्रवै नवनीता * परदुख द्रवहि सुसन्त पुनीता ॥
जीवनजन्म सफल मम भयऊ * तवप्रसाद सब संशय गयऊ ॥
जानेहु मोहिं सदा निज किंकर[15] * पुनिपुनिउमा कहैं सुविहंगवर ॥
दोहा—तासु चरण शिरनाइ करि, प्रेम सहित मतिधीर ॥
गरुड गयो वैकुण्ठ तब, हृदय राखि रघुवीर ॥ २०० ॥
गिरिजा संत समागम[16], सम न लाभ कछु आन ॥
विनु हरिकृपा होइ नहिं, गावहिं वेद पुरान ॥ २०१ ॥
कहेउँ परम पुनीत इतिहासा * सुनत श्रवण छूटहिं भवपाशा ॥
प्रणत कल्पतरु करुणापुञ्जा * उपजै प्रीति रामपद कञ्जा ॥
मन वच कर्म जनित अघ जाई * सुनै जो कथा श्रवण मनलाई ॥
तीर्थाटन साधन समुदाई * योग विराग ज्ञान निपुणाई ॥
नाना कर्म धर्म व्रत दाना * संयम नियम यज्ञ जप नाना ॥

१ जिनकेअष्टांगयोगासिद्धहैं । २ नमस्कार करताहूँ । ३ औषध । ४ काम, क्रोध, लोभ । ५ प्रसन्न । ६ कृतार्थ । ७ नवीन । ८ उत्पन्न । ९ मोहरूपीसमुद्र । १० जहाज । ११ वृक्ष । १२ नदियाँ । १३ पर्वत । १४ माखन । १५ सेवक । १६ सत्संग ।

भूतदया[1] द्विज गुरु सेवकाई * विद्या विनय[2] विवेक बडाई ॥
जहँ लगि साधन वेद बखानी * सब कर फल हरिभक्तिभवानी॥
सोइ रघुनाथ भक्ति श्रुतिगाई * राम कृपा काहू यक पाई ॥
दोहा-मुनिदुर्लभ हरिभक्ति नर, पावहिं विनहि प्रयास ॥
जे यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि विश्वास ॥ २०२ ॥
सोइ सर्वज्ञ गुणी सब ज्ञाता * सोइ मणिमंडन[3] पण्डित दाता ॥
धर्मपरायण सोइ कुलत्राता[4] * रामचरण जाकर मन राता ॥
नीति निपुण सोइ परमसयाना * श्रुति सिद्धांत नीकतेइँ जाना ॥
सोइ कवि कोविद[5]सोइरणधीरा * जो छल छाँडि भजै रघुवीरा ॥
धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी * धन्य सो देश जहाँ सुरसरी[6] ॥
धन्य सो भूप[7] नीति जो करई * धन्य सो द्विज[8] निजधर्मनटरई ॥
सोधन धन्य प्रथम गति जाकी * धन्य पुण्यरतमति सोइपाकी ॥
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा * धन्य जन्म द्विज भक्तिअभंगा ॥
दोहा-सो कुल धन्य उमा सुन,जगत्पूज्य सुपुनीत ॥
श्रीरघुवीर परायण, जेहि नर उपज विनीत[9] ॥ २०३ ॥
मतिअनुरूप कथा मैं भाषी * यद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी ॥
तव मन प्रीति देखि अधिकाई * तब मैं रघुपति कथा सुनाई ॥
यहनहिंकहियशठहिंहठशीलहि* जो मनलाइनसुनहरिलीलहि ॥
कहियनलोभिहिक्रोधिहिकामिहि*जोनभजैंसचराचरस्वामिहि॥
द्विजद्रोहिहिनसुनाइय कबहूँ * सुरपति[10]सारिस होइ नृप जबहूँ ॥
रामकथा के ते अधिकारी * जिनके सतसंगति अतिप्यारी ॥
गुरुपदप्रीति नीति रत जोई * द्विज सेवक अधिकारी सोई ॥
ताकहँ यह विशेष सुखदाई * जाहि परमप्रिय श्रीरघुराई ॥
दोहा-रामचरणरति[11] जो चहै, अथवा पद निर्वान[12] ॥
भाव सहित सो यह कथा, करै श्रवणपुट पान ॥२०४॥
राम कथा गिरिजा मैं वरणी * कलिमलशमन मनोमलहरणी ॥

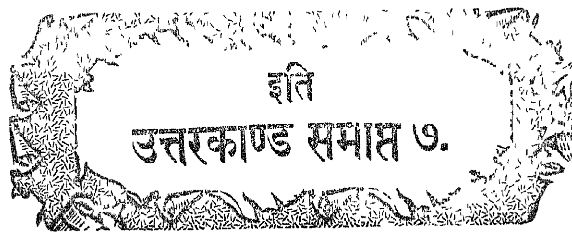
१ चराचरजीवमेंदया । २ नम्रता । ३ पृथ्वीका भूषण । ४ रक्षक । ५ पंडित । ६ श्रीगंगाजी । ७ राजा ८ ब्राह्मण ।
९ नम्रता-सुशिक्षित । १० इंद्र । ११ भक्ति । १२ ज्ञानकरके कैवल्यमुक्ति ।

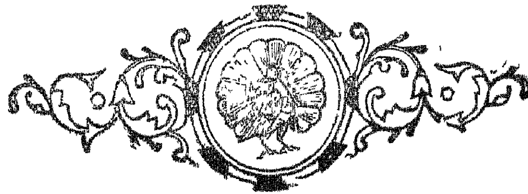
संसृत रोग सजीवन मूरी * राम कथा गावहिं श्रुति भूरी ॥
इहि महँ रुचिर सप्त सोपाना * रघुपति भक्ति केर पथ नाना॥
अति हरिकृपा जाहि पर होई * पाँव देइ यहि मारग सोई ॥
मन कामना सिद्धि नर पावै * जो यह कथा कपट तजि गावै ॥
कहहिंसुनहिं अनुमोदनकरहीं * ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥
सुनि सबकथा हृदय अतिभाई * गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥
नाथ कृपा मम गतसंदेहा * रामचरण उपजा नव नेहा ॥
दोहा—मैं कृतकृत्य भयउँ अब, तव प्रसाद विश्वेश ॥
उपजी रामभक्ति दृढ़, बीते सकल कलेश ॥२०५॥
यह शुभ शंभु उमा सम्वादा * सुखद सदा अरु शमनविषादा॥
भव भंजन गंजन सन्देहा * जनरंजन सज्जन प्रिय येहा ॥
राम उपासक जे जगमाहीं * इहसम प्रियतिनकहँकछुनाहीं॥
रघुपति कृपा यथामति गावा * मैं यह पावन चरित सुहावा ॥
इहिकलिकालन साधन दूजा * योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा ॥
रामहिं सुमिरियगाइय रामहिं * सन्तत सुनियरामगुणग्रामहिं ॥
जासु पतित पावन बडवाना * गावहिं कवि श्रुतिसन्त पुराना ॥
ताहि भजियतजिमनकुटिलाई * राम भजे केहि गति नहिं पाई ॥
छं०—पाई न गति केहिपतितपावन रामभज सुनु शठमना ॥
गणिका अजामिल गृध्र व्याध गजादि खलतारेघना ॥३१॥
आभीरयवन किरातखल श्वपचादिअतिअघरूप जे ॥
कहि नाम बारकतेपि पावन होत राम नमामि ते ॥३२॥
रघुवंश भूषण चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ॥
कलिमलमनोमल धोइ विनुश्रम रामधाम सिधावहीं ॥
शत पंच चौपाई मनोहर जानि जे नर उर धरैं ॥
दारुण अविद्या पंचजनित विकार श्रीरघुपतिहरैं ॥३३॥
सुन्दरसुजानकृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो ॥

१ सप्तकाण्ड सीढ़ी । २ विचारतेहैं । ३ नाश । ४ अहीरव्रजके । ५ तमअविद्या, मोहअविद्या, महामोहअविद्या, , अन्धतामिस्रअविद्या

सो एक राम अकाम हित निर्वाणपद सम आनको ॥
जाकी कृपा लवलेशते मतिमंद तुलसी दासहूँ ॥
पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ॥३४॥
दोहा-मोसम दीन न दीनहित, तुम समान रघुवीर ॥
अस विचारि रघुवंश मणि, हरहु विषम भवपीर ॥२०६॥
कामिहि नारि पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमिदाम ॥
ऐसे होइके लागहू, तुलसीके मन राम ॥२०७॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमलविज्ञानवैराग्य सम्पादनो नाम सप्तमः सोपानःसमाप्तः ॥ ७ ॥





१ निर्गुण कही मोक्ष, सालोक्य सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य सार्ष्टि ।

आरती श्रीरामायणजीकी.

आरति श्रीरामायणजीकी ॥ कीरतिकलितललितसियपीकी ॥ टेक ॥ गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद ॥ वाल्मीकि विज्ञानविशारद॥ शुक सनकादि शेष अरु शारद॥बरणि पवनसुतकीरति नीकी॥१॥ संतत गावत शम्भु भवानी ॥ औ घटसंभव मुनिवर ज्ञानी ॥ व्यास आदि कवि पुङ्गवखानी॥कागभुशुण्डिगरुडके हियकी ॥२॥ चारिउ वेद पुराण अष्ट दश ॥ छहउ शास्त्र सब ग्रन्थनिको रस ॥ तन मन धन संतनको सर्वस ॥ सार अंश सम्मत सबहीकी ॥३॥ कलिमलहरणि विषयरस फीकी ॥ सुभगशृँगार मुक्ति युवतीकी॥ हरणिरोगभवभूरि अमीकी ॥ तात मात सबविधि तुलसीकी॥४॥

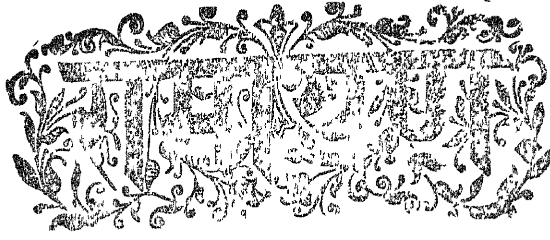
इति आरती ।

श्लोकाः—यत्पूर्वंप्रभुणाकृतंसुकविनाश्रीशम्भुनादुर्गमं ।
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यैतु रामायणम् ॥
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतंस्वान्तस्तमःशांतये
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथामानसम् ॥ १ ॥
पुण्यम्पापहरं सदाशिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् ।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहंतिये
तेसंसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यन्तिनोमानवाः ॥ २ ॥
यःपृथ्वीभरवारणाय दिविजैस्संप्रार्थितश्चिन्मयः
संजातः पृथिवीतले रविकुले मायामनुष्योऽव्ययः ।
निश्चक्रंहतराक्षसः पुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यं स्थिरां
कीर्तिम्पापहरां विधाय जगतां तं जानकीशं भजे ॥ ३ ॥

श्रीमद्वेङ्कटेशो विजयते।

अथ

श्रीयुतगोस्वामितुलसीदासजीकृत-



मध्ये

अष्टम रामाश्वमेध-

लवकुशकाण्डम्।

यह ग्रन्थ

पण्डित-ज्वालाप्रसादजी मिश्रकेद्वारा

शुद्धकराकर

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया।

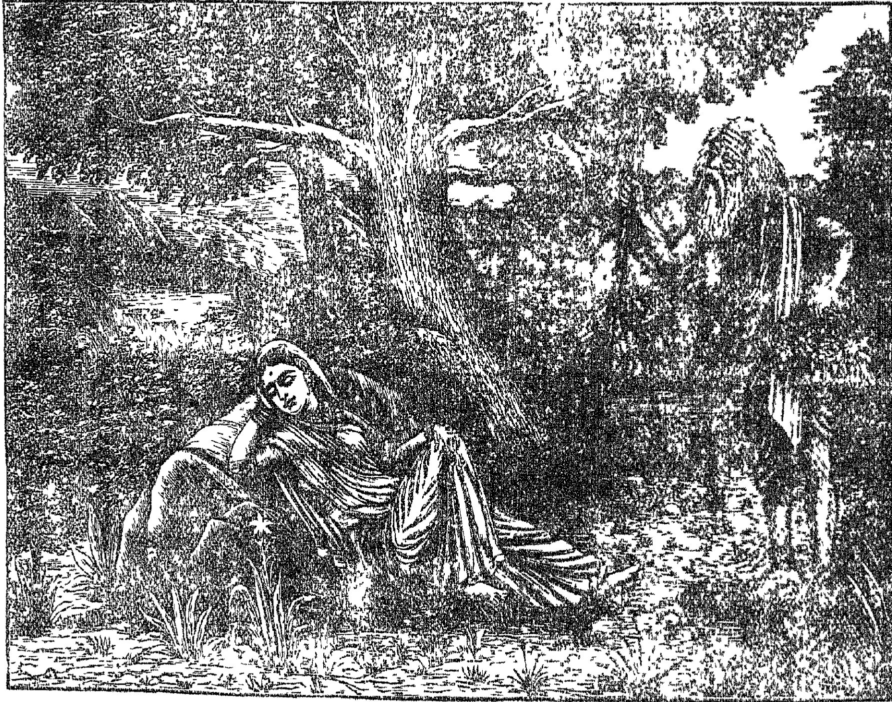
संवत् १९६२, शके १८२७.

रामाश्वमेध-लवकुशकाण्डम् चित्र ८.



दोहा-जो चेतन कहँ जड़ करै, जड़हि करै चैतन्य ॥
असससमर्थ रघुनाथ कहँ, भजहिं जीव ते धन्य ॥

वाल्मीकि ऋष्याश्रममें सीताजीका परित्याग



चौ०-सोइसर्वज्ञ गुणी सबज्ञाता । सोइ महिमण्डन पण्डित दाता ॥
धर्मपरायण सोइ कुलत्राता । रामचरण जाकर मनराता ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम) यन्त्रालय, खेतवाडी-बंबई.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS,
Shri Venkateshwar (Steam) Press, Khetwadi—BOMBAY.

॥ श्रीमद्वेङ्कटेश्वराय नमः ॥

अथ रामाश्वमेध ।

लवकुशकाण्डम् ८.

दोहा ।

सुनि भुशुंडके वचन मृदु, देखि राम पद नेह ॥
बोले प्रेम सहित गिरा, गरुड विगत सन्देह ॥ १ ॥

छं०—नमामीशघनज्ञानरघुवंशदासं, सदानन्ददातासुविद्याप्रकाशं
विशद शैलनीलं कृपालुं निवासं, चरणांबुजंसेवितंपापनाशं ॥
गतंमोहमारादिशूलंविशालं, हरततापसंतापभवशोकशालं ॥
नमोकाकपादंसुबुद्धिंसुशीलं, सदाभक्तवात्सल्यवासाद्रिनीलं॥
प्रसन्नाननंनीलवदनंसुश्यामं, नमोपाहिशरणंसुरामाभिरामं ॥
भाष्योउमानाथयशनाथनामं, देख्योकृपासिन्धुकोरामधामं ॥
इच्छावपुषकाककल्याणकारी, जिन्हेंएकआशाअयोध्याविहारी
भागीसकलवासनात्रासमारं, दयानाथकीन्होंअविद्याप्रहारं ॥
सगुणब्रह्मलीलाधराभारनाशं, सुनोरामअवतारमोहंविनाशं ॥
जान्योदनुजनाशनंविश्ववासं, च्छिदामोहसंदोहभक्तिविलासं ॥
अचलज्ञानगोतीतमंत्रंविशालं, पायोकृपानाथनिजभाग्यमालं
विगतषट्रोगंअयोगंदयालुं, नमोपाहिशरणंनमामीकृपालुं॥१॥

दोहा—सुरसरि सम पावन भयो, नाथ हृदय अब मोर ॥
जन्म जन्म छूटै नहीं, नाथ पदाम्बुज तोर ॥ २ ॥

सुने सकल गुण गण प्रभुकेरे * पूजे नाथ मनोरथ मेरे ॥
तव प्रसाद वायस कुलनाथा * हृदय वसो अब प्रभुगुणगाथा॥
मनसन्तोष न हृदय समाहीं * यथा उदधि सरिता सब जाहीं॥

पशु पक्षी जड़ जंगम जाती * चर अरु अचर वरणिकिहिभाँती॥
सकल अवधवासि प्रभु सुखधामा * लिये संग सादर श्रीरामा ॥
तजि तब अवध गये सहदेहा * यह मोहिं नाथ परम सन्देहा ॥
अब प्रभु मोहिं कहौ समुझाई * जानि पिता मैं कीन्ह ढिठाई ॥
यह इतिहास पुनीत कृपाला * जिमिमखकीन्हराममहिपाला॥
दोहा-असकहि गद्गदवचनमृदु, पुलकावली शरीर ॥
सुनि सप्रेम हर्षे विहँग, वायसमति अतिधीर ॥ ३ ॥
धन्य धन्य तुम धनि खगराया * कीन्हीं अमित मोहिंपर दाया ॥
राम कृपा तुम्हरे मन माहीं * संशय शोक मोह भ्रम नाहीं ॥
अति प्रियवचन रसज्ञ तुम्हारे * लागत नाथ मोहिं अति प्यारे ॥
अब प्रभुकथा विशद विस्तारी * सकल सुनावहु मम हितकारी॥
तव मन प्रीति देखि खगराया * मिटे अमंगल कोटिहु माया ॥
सुनि अब राम रहस्य अनूपा * चरित पुनीत अवधपुर भूपा ॥
अज अद्वैत अमल अविनाशी * सहितसकलकलिमलकीफाँसी॥
नौ सहस्र नौसै कम वासी * कृत चारित्र रह पुर जगदासी ॥
दोहा-विधिवर वचन सँभारि उर, राजत करुणाऐन ॥
युगल जोरि शोभा निरखि, लजित कोटिशतमैन ॥ ४ ॥
अनुजसचिव प्रभु प्रजा बुलाये * गुरु गृह सादर सुनि सब आये॥
मकर मास रवि पर्व सुहावा * विदा माँगि प्रभुपद शिरनावा॥
काशी क्षेत्र धर्म जग जाना * चले सकल साजि वाहन नाना॥
चतुरंगिनी अनी सब साथा * इहि विधि चले राम रघुनाथा॥
बीच वासकर शिव पुर आये * सादर पुरहि शीश सब नाये ॥
आये सुरसरि कीन्ह प्रणामा * अभय अनन्त पाय विश्रामा ॥
महिसुर दण्डि यती संन्यासी * पूजे कृपासिन्धु सुखरासी ॥
दिये दान बहु वरणि न जाई * धनद कुबेर सुरेश लजाई ॥
दोहा-रहेउ प्रभु इमि विपुलादिन, सुखी किये मुनिवृन्द ॥

आये पुनि निजनगरमहँ, रविकुल कैरवचन्द ॥ ५ ॥
प्रतिदिन अवध अनन्त उछाहू * दानदेहिं प्रतिदिन नरनाहू ॥
झूठ प्रपंच न दुखद न काहू * व्याप न कबहुँ सुना खगनाहू ॥
सुनहिं जहाँ तहँ वेद पुराना * दूसर धर्म न काहू जाना ॥
दिन दिन प्रीति देखि भगवाना * अमित अनंत सकलपुरजाना॥
शत संवत परमाण हमारा * रहेउ शोच वश राम उदारा ॥
अश्वमेध मख करौं सुहावा * गाइ तरहिं नर भव दुखदावा॥
पुनि निज धामहिं तुरतसिधावौं * विधिवर वचन विलम्ब नलावौं॥
प्रातजाय गुरुभवन सप्रीती * कहौं करहु सब सुन्दर रीती ॥
दोहा–अस विचारि उररांखिकर, कृपासिंधु मतिधीर ॥
करत चरित नाना अमित, हरण शोक भवभीर ॥ ६ ॥
कहहुँ सुनहु रघुपति प्रभुताई * जो पुराण श्रुति नारदगाई ॥
राम राज महिमा अति भारी * सो वर्णत मन कवि कदरारी ॥
मैं मतिमन्द कहौं किहि भाँती * सोह हंस किमि बगुला पाँती ॥
सुनियनपुहुमि कतहुँअघकाना * पढ़हिं चतुरनर वेद पुराना ॥
गावहिं प्रभुगुण गण भयहारी * निन्दहिं अमरलोक नरनारी ॥
आज्ञा मातु पिता गुरु करहीं * तप मख दानलीन हरि भजहीं॥
प्रजा अनंद राज प्रभुकेरे * मानहु शक्र कुबेर घनेरे ॥
राजत सब रनिवास अनन्दा * सुखीचकोर लखतजिमिचंदा ॥
छंद–जिमि शरद चन्द चकोर देखत मातु प्रभुमुख जोहहीं ॥
तिमि भरत लक्ष्मण शत्रुसूदन भेषलखि मनमोहहीं ॥
नितजात प्रभु चौगान खेलन साथ लै चतुरंगिनी ॥
जबगये भूतल भारटारन संग बहु मर्कट अनी ॥ १ ॥
चढि वाजि गज रथ नगर देखहिं श्रमित पुनि घर आवहीं ॥
सारङ्ग हेम विलोकि विनु पदत्राणहीं प्रभु धावहीं ॥
कुसुमकंटक अंग लागत मोरि मुखमुसकावनी ॥

सोशत्रुसन्मुखसही तीक्षण शक्ति असिरिपुदाहनी ॥
निशि नींद नाशरु भूख सादर वर्ष चौदहसो रहे ॥
निजभक्त हेत समेत लक्ष्मण प्रौढ रिपु मारेसहे ॥ २ ॥

दोहा–रघुवर राजविराजअति, सकल अवनि अघभाग ॥
विचरहिं मुनि कानन विपुल, प्रीति सहित अनुराग ॥ ७ ॥

मही सुहावनि कानन चारू * खग मृग इकसँगकरहिं विहारू ॥
वैर न सुनिय रामके राजा * मिलिविचरहिंवनसकलसमाजा ॥
नाना ग्रन्थ स्मृति समुदाई * गाय न सकहिं राम प्रभुताई ॥
सादर कोटि कोटि अहिईशा * अगणित चतुरानन गौरीशा ॥
जहँलगि जग कोविद कविराई * राम राज गुण सकहिं नगाई ॥
असित आदि कज्जलगिरिभूरी * पात्र पयोनिधिभासि भरिपूरी ॥
करहिं लेखनी सुरतरु डारी * सप्तद्वीप महि पत्र विचारी ॥
वाणी हरिहर विधि अरु शेषा * सहसकल्प शत लिखहिंविशेषा ॥

सो०–तदपि न पावहिं पार, रामराजकौतुक अमित ॥
सुनु अब चरित अपार, जसखगपति आगे भयउ ॥ १ ॥

राजत राम सभासह भ्राता * तहँ आयो इकद्विज बिलखाता ॥
कटुक वचन मुख कहत पुकारा * हंस वंश बूड्यो संसारा ॥
रघु दिलीप अरु सगर नरेशा * अमित प्रभाव भये अवधेशा ॥
इह अयुक्त लखि त्यागेउ प्राना * अन्तर्यामी प्रभु सब जाना ॥
नरलीला कर राम कृपाला * लगे विचारकरण तेहिकाला ॥
कारणकवनमृतक सुतभयऊ * द्विजदुखदेखविकल प्रभुभयऊ ॥
भ्रम चित देख मगन भइ वानी * शूद्रतपो सुनु शारँगपानी ॥
विंध्याचल गँभीर वन जाहाँ * द्विजसुत मरण हेतु नरनाहाँ ॥

छंद–इहिहेतु द्विजसुतमृतकसुनि रथसाजिप्रभुआतुरचले ॥
सोइ परमशैल विलोकिपावन मुदितमन सन्मुखभले ॥
शुचिरुचिर आश्रमवेदिका तहँ देखि मुनिमन भावनी ॥

बहुबाग सुभग तडाग गुंजत मंजुमधुकरसावनी ॥ ३ ॥
पिक हंस मोर चकोर चातक कीर शोभा पावनी ॥
वनविविध कोल किरात सादर खोहकीन्हीं तहँघनी ॥
तबक्रोध संयुत विशिख छाँडेउ माथलै तब शरगयो ॥
वरभक्ति आरतजान तेहि दियो आप तीरथ प्रताकियो ॥ ४ ॥

दोहा—द्विजवर बालक मृतकसो, उठि बैठ्यो हरषाय ॥
आये पुर रघुपतिभगति, भयभंजन सुखदाय ॥ ८ ॥

उठ्यो समय तिहिं श्वानपुकारी * पाहि पाहि प्रणतारतिहारी ॥
विनुअघ नाथ कृपालु खरारी * हत्योमोहिं द्विज अतिबलभारी ॥
सुनिकै श्वान वचन तत्काला * तिहिपर दूत पठेउ भगवाना ॥
आन्यो विप्र बोलि तेहि काला * कहे वचन तब दीनदयाला ॥
हन्यो श्वान सो किहि अपराधा * सुन सर्वज्ञ न कछु कृतबाधा ॥
क्रोधाविवशप्रभु बिन परिचारा * नाथ प्रबल मैं इहिको मारा ॥
कह्यौ दण्ड द्विज सकलसमाजा * विप्र अदण्ड देव रघुराजा ॥
उचित दण्ड तस देहु बताई * कहो श्वान जस तुम्हैं सुहाई ॥

दोहा—कीजिय यह माठापती, ममभावन सुख ऐन ॥
तुरत मँगायो पीतपट, गजकुण्डल प्रभु दैन ॥ ९ ॥

पूजिचरण तब विप्र पठायो * दुन्दुभि बाजत मठ सो आयो ॥
कहैं परस्पर सब नर नारी * देखो श्वान दण्ड अतिभारी ॥
कीन्ह सकल प्रभु सोई दीना * जो कछु श्वान कही सोकीना ॥
तासु अनन्द देख नरनारी * कह्यौ दण्ड फल कवन खरारी ॥
पूँछहु श्वान कही सो बाता * पूरब सब प्रसंग सुखदाता ॥
काशी विप्रवंश मैं भयऊ * शिवसेवा सादर चितदयऊ ॥
हिमऋतु होमहि कीन्ह सप्रीती * घृतनखरह्यो नाथ जिमिभीती ॥

दोहा—तातोदन भोजन करत, खायगयो सो भाग ॥
विविध योनि भ्रमतो फिरचो, मिटचो न सो अनुराग ॥ १० ॥

राजसभाहि शिरनाय बहोरी * चला श्वान मनत्रास नथोरी ॥
उठि मध्याह्न कीन्ह रघुनंदन * पूजि पुरारि भक्त उर चंदन ॥
भोजन शयन जगतपति कीन्ही * पुनिसबही कहँ आयसु दीन्ही ॥
रह्योदिवस जब घटिका चारी * जुरी सभा तब आय खरारी ॥
सुनि पुराण प्रभु अनुज समेता * सन्ध्याभई दान शुभ देता ॥
भवनचले प्रभु आयसु पाई * सबही सन्ध्या कीन सुहाई ॥
दूत अवध निशिवासर धावहिं * सन्ध्या कहँ सबखबरसुनावहिं ॥
पृथक् पृथक् सुनि चरवरवानी * बोल न एक सो सुनहुभवानी ॥
छंद-कछु कह्यो नहिं तेहि पूँछि सादर वचन वेगि न आवही ॥
इक रजक पत्निहिं कहत डाटत व्यंग्य वचन सुनावही ॥
सुनि वचन कृपानिधान चरके [illegible] उर राखतभये ॥
निशि स्वप्न देखत जगतपति उठिजागिदारुणदुखछये ॥ ५ ॥
दोहा-बीती अवधिप्रमाणयुग, कीन्ह विचार कृपाल ॥
इक सहस्रापितु राजशुचि, करहुँ सत्यइहिकाल ॥ ११ ॥
त्यागहुँ जनकसुता वनमाहीं * राखहुँ श्रुति पथ धर्म नजाहीं ॥
दैमन ठीक सीयपहँ आये * सादर बोले वचन सुहाये
निज छाया धरि अत्रविनीता * [illegible]
प्रभुपद वंदि ग[illegible]
तिहिसन प्रभु असकहा बुझाई * मनभावत मांगहु सुखदाई ॥
नाथ साथ मुनिधाम विहाई * आयउँ तुम गृहमन सकुचाई
मुनितियभूषण [illegible]राऊँ प्रभु जो मनभाये ॥
[illegible] कह कृपानिकेत [illegible] * पूजे मन अभिलाष तुम्हारे ॥
[illegible]-होतप्रात जब जगतपति, जागे रमानिवास ॥
याचक जन गावत मुदित, शोभित कंज प्रकाश ॥ १२ ॥
भरत लषण रिपुदमन समेता * आये जहँ प्रभु कृपानिकेता ॥
कीन्ह प्रणाम माथ महिलाई * बोलेनाहिं कछु श्रीरघुराई ॥

वदन विलोकि सशंकित अंगा * श्रीहत देख वपुषकर रंगा ॥
थर थर कंपित तीनों भाई * जानि न जाय चरित रघुराई ॥
ऐंचिश्वासतकि कछुमनजानी * बोले गूढ मनोहर वानी ॥
सुनिलघुभ्रात कहेउ रघुनाथा * ले वन जाहु जानकिहि साथा ॥
सुखिसहमिसुमिवचनकराला * जरेउगात उपजी उरज्वाला ॥
हँसत कि सत्य कहत रघुराई * असमञ्जसमन दुख अधिकाई ॥
दोहा–भरतादिक व्याकुल अनुज, मुख आवत नहिं बैन ॥
जोरि युगलकर शत्रुहन, कहत नीरभरि नैन ॥१३॥
सुनिप्रभुवचनहृदय बिलगाना * जगतजननिसियसबजगजाना॥
जगत पिता प्रभु सब उरवासी* जड चेतन घन आनँदराशी ॥
कारण कवन जानकी त्यागी * मन क्रम वचनचरणअनुरागी ॥
सुनि सर्वज्ञ सगर्व सुज्ञानी * रिस परिहासकिसत्यसुवानी ॥
पङ्कजनैन नीर भरि आये * कहिप्रियवचनअनुजसमुझाये॥
आयसु मोर टरहि जो ताता * रहै न प्राण तात मम गाता ॥
हरिइच्छा भावी बलवाना * तुम कहँ तात सदा कल्याना ॥
यह मम वचनपालु लघुभाई * प्रात जानकिहि जाहुलिवाई ॥
सोरठा–सुनि प्रभुवचन कठोर, भरत कहेउ युग जोरिकर ॥
नाथ हमहिं मतिथोर, सुनु विनती सर्वज्ञ प्रभु ॥ २ ॥
हंस वंश जगमें विख्याता * दशरथ पिता कौशलामाता॥
त्रिभुवनपतिप्रभुसबजगजाना * गावहिं यश चहुँ वेद पुराना ॥
सत्य शक्ति तव प्रगट सुहाई * वरणि न स आहिराई॥
शोभाखानि जगतकी माता रहित अमंगल मंगलदाता ॥
छायाजेहित्रिय पतिव्रतधरहीं *तुमहिं ायक्षणहुँकिमिभरहीं॥
जल विनुमीन कि जियकृपाला कृषी कि ह बिनुवारिदमाला॥
क्षणाजि किसी अतिनिपुणविनीता॥
* कही भरत तुम सुन्दर नीती ॥

दोहा–तदपि नृपहि चाहिये सदा, राजनीति धन धर्म ॥
वसुधापालहि शोचतजि, वचन प्रीति शुचिकर्म ॥१४॥
नूतन कहा सो अपयश केहऊ * कुल कलंक यह दारुण भयऊ॥
तरणि वंश नृप भये अनेका * एक एक अति निपुणविवेका ॥
स्वायंभुवमनु रघु नृप जानो * सगर भगीरथाविरुद बखानो ॥
दशरथ विदित दीख तुम नीके * वचन न टारेउ लालचजीके ॥
तिहि शिर रंचक सुनत कलंकू * रहै जीव तो अधम अशंकू ॥
सुन सर्वज्ञ सकल अघहारी * रहित कलंक विदेहकुमारी ॥
विधि हरि हर दिवि देखि सुहाई* पावक अवटि अनठ सबभाई॥
जो सुर नर मुनि स्वप्नेहुँ माहीं * यह चरित्र जग लखि हर्षाहीं ॥
दोहा–तेहठिरौरिनरकमहँ, कोटिकल्प करिवास ॥
रहहिंकल्पशत रोगवश, भोगहिं विगत विलास ॥१५॥
रिस रुख देखि नयन करि तीछे* आये भरत लषणके पीछे ॥
सुन सोमित्रि छाँडि हठ शोचू * जगभल कहै कहौ किन पोचू ॥
तजि आज्ञा प्रत्युत्तर करिहौ *मोहिंविनशोचजन्मभरिमरिहौ ॥
जनकसुता रथ तुरत चढाई * गंगसमीप फिरहु पहुँचाई ॥
अति गह्वर वन जहाँ न कोई * छाँड़हु तात जतन कर सोई ॥
फेरहु तुम मति वचन उदासा * मरण ठानकर चलेउ निरासा ॥
सुभग विमान सीय बैठारी * पट भूषण बहु धरे सँभारी ॥
सुधा सरस पकवान बनावा * जो कछुवांछितसो फल पावा ॥
अति अनंद मन चलीजानकी *अतिशयप्रियकरुणानिधानकी॥
दोहा–विवरण लषण निहारिकर, शोच विकलभइ बाल ॥
हृदयविचारन कहिसकति, मणि विनुव्याकुलव्याल॥१६॥
उतारि देवसरि यान सुहावा * अति उद्यान देखि भयपावा ॥
कारण अपर जानि भयभीता * बोली वचन मनोहर सीता ॥
दीखत नहीं मुनिनके धामा * जातकहाँप्रियअनुज सकामा ॥

खग मृग केहरि विषधर व्याला * करि केहरि वृक बाघ कराला ॥
कोउमुनि मिलतनआवतजाता * निकसत प्राण तात ममगाता ॥
सीयाविकललखिमनहिंअहीशा * कीन्ह कहा विधि हरिगौरीशा ॥
मूर्च्छित रथसे हो विकराला * भूमिगिरा तब आप सँभाला ॥
सिय विलोकि मनधीरजआना * प्रिया विनाजल निकरत प्राना ॥
दोहा-धरणिसुता व्याकुल अमित, प्राण कंठगत जान ॥
तजाचहत तनु शेष तब, धृकधृक जीवनमान ॥ १७ ॥
प्राण विना लक्ष्मण कहँ देखा * गगन गिरा तब भई विशेखा ॥
सुनुसौमित्रि जाहुसिय त्यागी * जनक पुत्रिका जियहि सुभागी ॥
ब्रह्मगिरा सुनि धीरज कीन्हा * हाथ जोरि परदक्षिण दीन्हा ॥
ले रथ चरणवंदि सिय केरे * चले अवधपुर त्रास घनेरे ॥
जागी सिया सकल दिशि देषा * नहिंरथ अश्व नहीं कहुँ शेषा ॥
रहे प्रथम दुख सहिहैं प्राना * पुनि सोइ चाहत करन पयाना ॥
करुणा करत विपिन अतिभारी * वाल्मीकि आये वनचारी ॥
पुत्री वाल्मीकि कह ज्ञानी * वन आवन निज चरित बखानी ॥
दोहा-मुनि पुत्री मैं जनककी, राम प्रिया जगजान ॥
त्यागन हेतु न जानु कछु, विधिगति अति बलवान ॥१८॥
देवर लषण गये पहुँचाई * तब सब हेतु लख्यो मुनिराई ॥
सुनु सीता मिथिलापति मोरा * परम शिष्य विधिवत पितु तोरा ॥
चिंता अबजनि करसि कुमारी * मिलिहहिंतोहिं शेष हितकारी ॥
सादर पर्णकुटी सिय आनी * पुनिकरिमज्जन सबगति जानी ॥
विविधभाँति मुनिधीरज दीन्हा * सिय तबसुरसरिमज्जनकीन्हा ॥
सुमिरि राम मूरति उरराखी * दीने फल सुन्दर शुभ भाखी ॥
मुनिवर कथा अनेक प्रसंगा * कहैं सुनै सिय संग विहंगा ॥
ज्ञान अनेक प्रकार दृढावा * लक्ष्मण अवध सुनो जबआवा ॥
छंद-आये सुलक्ष्मण त्यागि सीतहि विकलनिज आश्रमगये ।

बहु भाँति रोवत मातु सन सिय त्याग दारुण दुख दये ॥
सुनि सहमि मूर्च्छित मातुवाणी विकलफणिजिमिमणिगये।
इहिभाँति व्याकुल विकलपति कौशलहिं अतिहीदुखभये ॥
रोदति वदति बहु भाँति को कह विपति यह दारुणअये ।
सुनि शोर रावर सहित लक्ष्मण राम निज मंदिर गये ॥
निज ज्ञानदे समझाय तेहि तब खुले पट अंतर नये ।
हमजान तुम सुतमान प्रभु जगमूल भ्रम फन्द भये ॥
अब कृपाकरि जगदीश स्वामी देहु भक्ति सुहावनी ।
जेहि खोज मुनि योगी तपी गति लेहु अविचल पावनी ॥
वरचह्यो सोइ सोइ दियो मातुहि कारुणिक दिनकरतबै ।
मन शोधकर निज योग पावक तजा तनु सादर सबै ॥ ५ ॥

दोहा–योगअग्नितनुभस्मकरि, सकल गईं पति धाम ॥
भरत शत्रुसूदन लषण, शोकभवन श्रीराम ॥ १९ ॥

विधिवतकिये कर्म श्रुति गाये * प्रभुसन गुरु सादर करवाये ॥
दीनदान पुनि कोटि प्रकारा * को अस कवि जग वरणै पारा ॥
धेनु वसन मणि हाटक हीरा * हय गज गो मुक्तावर चीरा ॥
पुनि परलोक हेतु धन धामा * दिये किये परिपूरण कामा ॥
रही न चाह याचकनकेरी * रंक धनद पदवी जनु हेरी ॥
वेदपढहिं द्विज देहिं अशीशा * चिरजीवहु कोशलपुर ईशा ॥
राम दानदे सब विधि तोषे * भये निवर्त काजकरि चोखे ॥
गृहद्विज याचक सकल सिधाये * अमित प्रकार राम सुख पाये ॥
विप्रदंड तापस वध कीन्हा * सुरपुरवास मातु कहँ दीन्हा ॥

दोहा–करहुँ अजयमखयज्ञपुनि, अश्वमेध जगजान ॥
कलुष सकलसंतापहर, अंगदादि हनुमान ॥ २० ॥

एक बार गुरु गृह अवधेशा * गये सँगानुज सचिव खगेशा ॥
कीन्ह दंडवत पद शिरनाई * सादर मिले हरषि मुनि राई ॥
पूँछी कुशल देखि मृदु गाता * कुशल देखि तव पद जलजाता ॥

गुरु पद वंदि द्विजन शिरनाई * बैठे अमित आशिषा पाई ॥
कहत पुराण नवल इतिहासा * सुनत कृपानिधि परमहुलासा॥
भाइनसहितअमितसुख दीन्हा * मुनि तब लखेउप्रेमकरचीन्हा ॥
दोउ करजोरि सच्चिदानंदा * बोले वचन भानुकुल चंदा ॥
नाथ चरण तव सकल प्रसादा * भै जगविदित मोरि मर्यादा ॥
दोहा-समय समुझि करुणायतन, सादरवचनवहोरि ॥
प्रभुअन्तर्यामी करहु, सफल कामना मोरि ॥ २१ ॥
तव प्रसाद जग यज्ञ अनेका * कीने अधिक एक ते एका ॥
नाथ सकल पुरजन मन कहहीं * देखन अश्वमेध अब चहहीं ॥
जस कछु आयसु दीजियनाथा * सो मैं करब नाय पद माथा ॥
तनु पुलके सुनि वचन सप्रीती * कसन कहौ तुम सुंदर नीती ॥
पूजिहि मन अभिलाष तुम्हारा * उठब भरत अब करबविचारा ॥
सुनि मुनिवचन भरत रिपुदमनू * हर्षि सचिव लक्ष्मणगृहगमनू ॥
विविध प्रकार चरण करिसेवा * चले भरत सँग सब महिदेवा ॥
दोहा-सेवक पुरजन सचिव सब, सादर तुरत बुलाय ॥
हाटबाट पुर द्वार गृह, रचहु वितान बनाय ॥ २२ ॥
चले सकल सेवक सुनिवानी * सुनत वचन हरषीं सबरानी ॥
रचे वितान अनेकन भारी * देखिअवध विधि विलपतभारी॥
लगे सँवारन रथ गज वाजी * सुनि सुरमगन दुन्दुभी बाजी ॥
तुरत सचिव चर विपुल बुलाये * कहि जयजीव शीश तिननाये॥
जाहु मुनिन्हके आश्रम देहु
वहाँ राम पूँछेउ गुरुदेवा * आज्ञा देउ करौं
प्रभु मनकी गति मुनिवरजानी * बोले अति सनेह वर वानी ॥
पठवहु दूत जनकपुर वहिं जनक समेत समाजू ॥
दोहा-सुनः रामरघुवंशमा ॥
वरुण कुबेरहि इन्द्र यम, पुनि मुनिवर सबज्ञाति ॥ २३ ॥

गुरु समेत प्रभु अवधहिं आये * देखि बनाव अमित सुखपाये ॥
मिथिलापुर चर तुरत पठाये * देश देशके नृपति बुलाये ॥
जाम्बवन्त सुग्रीव विभीषण * अरुनलनील द्विविदकुलभूषण ॥
आये सब जहँ राम कृपाला * वरुण कुबेर इन्द्र यम काला ॥
चढ़ि विमान सुरनारि सिहाहीं * करहिं गान कलकण्ठ लजाहीं ॥
आये मुनिवर यूथ घनेरे * देहिं कृपानिधि सुंदर डेरे ॥
शशिहरिहररवि विधिसनकादी * आये सुर जे परम अनादी ॥
विश्वामित्र संग मुनि झारी * सहससात ऋषि इच्छाचारी ॥
दोहा-आये ऋषिभृगु अंगिरा, नारद व्यास अगस्त्य ॥
नानायूथप मुनि सकल, देवसमस्त पुलस्त्य ॥ २४ ॥
मख सुस्थल अति देव सुहाये * नाना भाँति देखि सुखपाये ॥
मिथिलापुर जे दूत पठाये * देखि नगरवासिन मन भाये ॥
द्वारपाल तब खबरि जनाई * अवधनगर सन पाती आई ॥
सुनि विदेह सहसा उठि धाये * तनमन पुलकि नयनजलछाये ॥
भयो भूप मन आनँद जेता * कहि न सकैं शारद अहितेता ॥
शिथिल आपु उठि द्वारे आये * देखि दूत अतिशय सुखछाये ॥
कहहु कुशल रघुपति सबभाई * गद्गद कण्ठ न कछु कहिजाई ॥
दोहा-भूपप्रेम तिहि समय जस, तस नकहहिं मतिधीर ॥
तुलसी भयउ उछाहवश, जय जय शब्द गँभीर ॥ २५ ॥
बाँचत प्रीति न हृदय समानी * चरवरबोलि कही हँसि बानी ॥
नगर ग्राम पुर मंगल साजे * अमित प्रकार बाजने बाजे ॥
सचिव बोलि नृपपाती दीन्हीं * उठि करजोरि विनयकरलीन्ही ॥
पढ़ी सचिव अति प्रेमानंदा * सुमिरि रामकोशलपुरचंदा ॥
घर घर खबरि व्यापि क्षणमाहीं * मंगल कलश साजि सबपाहीं ॥
भयो अनंद न जाय बखाना * कीन्हे विविध भाँति नृपदाना ॥
धरितनुदेव अमित नभवासी * आये भूपनगर सुखरासी ॥

कहहिं वचन नृपके हितकारी * चलो अवध सबकाज बिसारी॥
दोहा–कहि कहि सुर सादर चले, वाहन रचे बनाय ॥
जोरि युगलकरमुकुटमणि, अस्तुतिकरहिंसुभाय ॥२६॥
छंद–पदसुमिरिकरुणाकन्दरघुकुलचंद दशरथनायकम् ।
श्रीसहितअनुजसमेतसुस्थिरबसहुममउरलायकम् ॥
अंभोज नयन विशालभाल कृपालुदशरथनंदनम् ।
शतकोटि मार उदारशोभा अतुलबल महिमंडनम् ॥
तृणकटि शुभकर शरासन कपटमृगमद गंजनम् ।
वैदेहि अनुज समेत कृपानिकेत जन मन रंजनम् ॥
ममहृदयबसहुनिवासकारिकरुणायतनकरुणामयम् ।
महिमानकोऊ जान सुन हरियान ज्ञानविशालयम् ॥
सोइहेतु कारि वृषकेतु प्रभु खर दूषणादि निकंदनम् ।
नरअंध पामर कामवश मन भजहि नहिं रघुनंदनम्॥
तवललितलीलाबसहि जेहिउर तासु उर धरणीधरे ।
कहि सक न शारद शेष नारद जानकिमि जनबापुरे ॥
सोइ आनतुलसीदास निजउर शरण अबकाकीगहै ।
सुखपायमन वच काय नहिं गति दूसरि सपनेहुलहै ॥
सबकुशल पूँछि महीपसादर बिहँसि आनँदउरछयो ।
मनभाय पाय बनाय विधिवत दानबहु विप्रनदयो ॥
गज वाजि भूषण भूमि वस्तु अनेक विधि अब को गनै ।
इकवारले नृपद्वारदीन्ही कहहु कवि कैसे भनै ॥ ६ ॥
दोहा–पूजे विविध प्रकारनृप, सादर दूत हँकारि ॥
गुरुगृहगवनेउ मुकुटमणि, पाय पदारथचारि ॥ २७ ॥
सकल कथा महिपाल सुनाई * शतानंद आनंद अघाई ॥
चलहु नृपति मख देखहिंजाई * साजहु जाय सकल कटकाई ॥
कारि विनती नृपमंदिर आई * बाँचि पत्रिका सकल सुनाई ॥

आनँदयुत सब करी बधाई * दिये दान महिदेव बुलाई ॥
याचक सकल अयाचक कीन्हें * सादर बोलि युगल चरलीन्हें॥
बिलग बिलग सब पूँछहिंवामा * सुने रामके पूरणकामा ॥
छंद-सबकामपूरण रामके सुनि विपुल बाजन बाजही ।
पुर द्वार घर रखवार राखे सैन्यभट सब साजही ॥
दशसहस सिंधुर षष्टिशत रथ वाजि वर्णत नहिंबनै ।
जगमगत जीवजडावरविमणिदेखि कवि कैसे भनै ॥
चढिशूर प्रबल प्रवीण जे असिचलतसब सादरभये ।
सुखपाल परमविशालयुगचढि गुरुहिले आदरनये ॥
महिडोल धसकत कमठ अहिदलदेखि अमित विदेहको ।
रथ यूथ पदचर अमित वर्णहि जगत असकवि मूढ़को ॥७॥
दोहा-चलेउरावमुनिगण सहित, विपुल निशान बजाय ॥
प्राततीसरे प्रहर सोइ, अवध नगर नियराय ॥२८॥
पुरबाहर सरयू शुचि तीरा * वासदीन्ह हर्षित रघुवीरा ॥
सौंपि अनुज कह राज समाजू * आये प्रभु जहँ नृपमणि राजू ॥
मिलि पुनि नृपति निकट बैठारे * गद्गद गिरा सुवचन उचारे ॥
वदन मयंक निरखि सबगाता *आनँद मगन न हृदय समाता॥
प्रभु विनीत सबही सेवकाई * सचिव भरत पुनि लिये बुलाई॥
नृप सेवा सब भरत सँभारी *सुन खगपतिजस कीन्हखरारी॥
आय गुरुहिं सादर शिरनाई * मन भावत आशिष तिनपाई ॥
पुनि प्रभु सकल देव गुरु वंदे * अभिमत आशिषपाइ अनंदे ॥
दोहा-दश सहस्र मुनिवर सहित, आये प्रभु मख धाम ॥
बोले वचन विनीत गुरु, मंत्र सुनहु मम राम ॥२९॥
धर्म सकल जेहि वेद बखाने * संत पुराण लोक सब जाने ॥
विनातिय नहिं फलहोय खरारी * अब चाहिये मिथिलेशकुमारी ॥
सुनि मुनिवचन मौनगहि रहेऊ* सत्य असत्य न एकौ कहेऊ ॥

ममप्रण विरद जान मुनिराया * रहै सुकृत जेहि करहु सोदाया॥
द्वै गुरु मिल नारद सनकादी * वचन कहेउ सुन परम अनादी॥
कनक जटित मणि सुंदर बाला * रचि सियरूपसुशील विशाला॥
अंग अंग सब भूषण साजे * तासु रूपलखि रतिपति लाजे॥
सहसालखि न सकहिं नरनारी * सिय देखेउ सब अचरजभारी॥

दोहा–तेहि अवसर शोभा अमित, कोकवि वरणै पार॥
जगदाधार कृपालु प्रभु, कीन्हे चरित अपार॥३०॥

जटित कनक सुंदर मृगछाला * तिहि आसन आसीन कृपाला॥
सियासहितलखि सुर मुसुकाहीं * कीन्ह प्रणाम सबन हरषाहीं॥
भीर अपार देखि गुरुज्ञानी * ऋधिसिधिबोलिसकलसन्मानी॥
उचित जोजों
सुनिरजाय रघुपति रुखपाई * रचे कोट गृह विधिहि सिहाई॥
सुर सुरभी सुरतरु सुखखानी * शारद शेष न सकहिं बखानी॥
पुर गृह बाहर गली अटारी * भारि सुगंध सब रची सँभारी॥
रहे तहाँ दिशिपाल अनेका * जे परमारथ

छंद–जेनिपुण परमविवेक पावन भरतलै राखे तहा।
निजभाग्य प्रबल सराह निदरहिं धनदकी पदवीसही॥
आये त्रिलोकी नाग खग सुर असुर जे विधिने रचे।
सने ।मसनको नहिं बचे॥८॥

दोहा–युगसहस्त्र जे विप्रवर, सुन्दर परम प्रवान॥
जानहिं श्रुतिकर मत सकल, रहि मख संग अधीन॥३१॥

मकर मास ऋतु शिशिर सुहाई * मख मण्डप बैठे रघुराई॥
तब बोले गुरुवचन सुहाये * आनहु वाजि जो वेद बताये॥
लक्ष्मण सुनि गुरुवचन अनन्दे * बार बार पदपङ्कज वन्दे॥
हयशाला सादर आये * विविध विभूषण तेहि पहिराये॥
श्वते वर्ण सुन्दर श्रुतिकारे * रविहय निदरि मनोज सँवारे॥

जीन जराव न जाय बखाना * चढि रविरथ आवत जगजाना॥
माथे मोर पक्ष मणि लागे * सोइ नभ नखत देव अनुरागे ॥
सेवक चारु पाटमय डोरी * दामिनिद्युकिनिपटअतिथोरी॥
दोहा-षटसहस्र दशवीरवर, रामानुज रणधीर ॥
मध्यताहि आनेहु तहाँ, जहाँ राम रघुवीर ॥ ३२ ॥
पूजहु हय प्रभु जय जगहेतू * जस कछु कहा गाधिकुलकेतू ॥
दीन्ह विविध विधि दान अनेका*लिखो पत्र सोइ करि अभिषेका॥
एक वीर कौशलपुर माहीं * अरिदल दलन सुरेश सकाहीं॥
जोहि बलहोइ गह्यो सोइ वाजी * देहु दण्ड वन जाहु कि भाजी ॥
लिखि बाँध्यो हय शीश सँवारी* तहँ सुन वच आये मुनिचारी॥
भार्गव आदि सकल मुनिसंगा * रहे जहँ रघुकुल कमल पतंगा॥
कथा सकल लवणासुर केरी *मुनिन त्रास जोहि दीन्ह घनेरी॥
सुनिऋषि वचन नयनजलछाये*विहँसिराम निज त्रोण मँगाये॥
दोहा-दीन्हों रिपुसूदनहि सो, बाण अमोघ कराल ॥
मंत्र मोर पढि ताहि हति, जीतहु सकल भुआल ॥ ३३ ॥
बहुरि विभीषण राम बुलाये * सादर आय माथ तिननाये ॥
लवणासुरके चरित अपारा * पूछेउ दिनमणि वंश उदारा ॥
करयुग जोरि निशाचर नाहा * सत्य कहों अब सुन अवगाहा॥
भगिनिविमात्र नाथ सोइ मोरी* कुम्भनिशा तेहि नाम बहोरी ॥
मधुदानव कहँ रावण दीनी * बहु विनतीकर विनयवसीनी ॥
तनय तासु लवणासुर भयऊ * शिवसेवा सादर मन दयऊ ॥
अगम तासु तप शङ्कर जाना * दीन्ह त्रिशूल सुकृपानिधाना ॥
जेहिकर रहै अस्त्रयह भारी * चौदह भुवन जीतिसबझारी ॥
दोहा-तेहि बल प्रभु सो नाहिं गनै, अमर दनुज नर नाग ॥
जीति सकल वश कीन्ह सोइ, हठपथ सबके लाग ॥ ३४ ॥
तासु चरित सुनि मन मुसकाने*रिपुहि हतहु बल दे सनमाने ॥

सैन्य संग चतुरंग बनाई * रहे साथ दोउ तनय सुहाई ॥
सुनि प्रभुवचन निसानअपारा * तीन सहस्र हने इकबारा ॥
दलकै वसुधा कुंजर गाजै * दश सहस्र रथ रवि रथ लाजै ॥
पूरोशंख चलो दल साजी * अमित अकाश दुन्दुभी बाजी ॥
पुरबाहर सब कीन्ह सँभारी * तनययुगल लखिपरमसुखारी ॥
द्वादश निशि बीते मगमाहीं * पहुँचे जाय यमुन तट पाहीं ॥
दिन प्रति दान देहिं बहु भाँती * प्रभु पद पूजैं दिन अरु राती ॥

दोहा-रवितनया मज्जन कियो, सादर पूजि पुरारि ॥
चल्यो शत्रुसूदन सुमिरि, स्वामिहि राम खरारि ॥ ३५ ॥

चमू चपल अतिसुभट जुझारा * घेर्यो नगर वीर बरियारा ॥
विपुल निशान हने तिहिंकाला * सुनि निशिचरपतिगर्वविशाला ॥
षट सहस्र दश शूर जुझारा * लवणासुर सँग अनी अपारा ॥
सुभट प्रचारत गज रथ आवा * देख कटकनिज अतिसुखपावा ॥
मारहु खावहु नृप धरि बाँधहु * जेहिजयहोय यतनसोइसाधहु ॥
असकहि सन्मुख सैन्य चलाई * कज्जलगिरि जनु आँधी आई ॥
मारू शब्द सुनत भट गाजहिं * विपुलबाजने दुहुँदिशिबाजहिं ॥
निज प्रभु कहि जय जोरीजानी * हरषि भिरे भट मन हठठानी ॥

छंद-हठठानि प्रबल प्रवीनजे असि भिरे अतिरिपुप्रबलसे ।
इक मल्लयुद्ध सराहि रोकहिं एक एकन कर खसे ॥
शर शक्ति तोमर शूल परशु कृपाण शूर चलावहीं ।
कर चरण शिर हति तीर धारहिं भूमिजान न पावहीं ॥
भटगिरहिंपुनिउठिभिरहिं धरुकैकरहिंमायाअतिघनी ।
प्रभुतनय सुंदरवीर बाँके हनहिं रिपुनिशिचर अनी ॥
देखहिं परस्पर युद्ध कौतुक सुभट एकहि इकहने ।
सजिकोटि रथ सुर आयनभपथ सुमनवरषाकरिभने ॥ १ ॥

दोहा-विचलत अनी विलोकि निज, लवणासुरवरबंड ॥

संग तनय मातंगभट, दूसरकेतु अखण्ड ॥ ३६ ॥
प्रभु सुत ज्येष्ठ सुबाहु विशाला * भिरामतंग हृदय जनुकाला ॥
जूपकेत अरु केतु प्रचारी * लड़हिं सुषेण न मानहिं हारी ॥
लवणासुर रिपु अतिबल भारी * कौतुक करहिं प्रचारि प्रचारी ॥
अनी समूह जानि निज जोरी * अस्त्र शस्त्र गहि भिरे बहोरी ॥
विषम युद्ध लखि देव सकाने * पूँछेउ सुरगुरु कहि मुसकाने ॥
जानि हिय शोच अमरपतिकरहू * राम प्रताप सुमिरि उर धरहू ॥
जूपकेतु कर कोप अपारा * हनरिपुकेतु खण्ड महिडारा ॥
इहाँ सुबाहु मत्त गहि मारा * करपद काटि अवनिपरडारा ॥
छंद–महिडारि कर पद शीश आतुर तूण शर प्रविशत भये ।
रविवंशके अवतंस दूनों समर महि राजतभये ॥
सुनिमरणयुगसुत विकलनिशिचर भूमिपरघूर्मित गिरयो ।
पुनि जागि शूल सँभारि प्रभुके समर सन्मुख सो भिरयो ॥
दोउ प्रबलवीर प्रताप निशिचरसैन्य दुहुँदिशि मुरि चली ।
शिर बाहु चरण उडात नभपथ योगिनी आनँद भली ॥
बहुरुधिर मज्जन करहिं सादर गुहहिं नरशिर मालिका ।
आनन्द ह्वै मन मुदित गावहिं गीत खेचर बालिका ॥
धुनि पढहिं शंख मृदंगकी सुनि शूर हर्ष बढावहीं ।
गतिलेत निर्तत प्रेत त्रिय शिर माल हर्ष चढावहीं ॥
कहुँकरत पान प्रणाम नर कहुँ भरी शोणित शाकिनी ॥
सब मेद माँस अहार कर मन मुदित बोलहिं डाकिनी ॥१०॥
दोहा–मारे रघुवर वीर बहु, गिरे समर रणधीर ॥
क्षणइक निशिचर वध निरखि अन्तर हुइ बलवीर ॥३७॥
कारि छल प्रगट सोविविधवरूथा * अस्त्र शस्त्र लै सब सुरयूथा ॥
धाये अज अरु शिव सनकादी * जे मुनि अपर कहे श्रुतिवादी ॥
शक्ति शूल असि चर्म सुहाई * गदा परशु धनु बाण बनाई ॥

धरु धरु मारु मारु सुर करहीं * लरत न भटविस्मित होरहहीं ॥
निशिचर प्रबल भए रघुनाथा * केतिक धीर मलैं निजहाथा ॥
सैन्य विकल लखिनारद आये * समाचार सब कह समुझाये ॥
रिपुसूदन प्रभु विशिखसँभारी * जोर समर सुमिरे त्रिपुरारी ॥
जिमि तम अचै तरणि गो सोई * समर अमर नहिं दीसै कोई ॥
दोहा—मन्त्र प्रेरि चल कोटि शर, रहे जहँ तहँ नभछाय ॥
हक प्रबल बहु, मारुत देखि विलाय ॥३८॥
सुर समाज किनहूँ नहिं देखा * चलेहु सुबाहुकेतु जनुवेषा ॥
खलसम्हारु गहु शूल विचारी * असकहि गदा कोप उर मारी॥
सहि न सका सोइ तेज अपारा * मूर्च्छित अवनिपरा विकरारा
निजपतिविकलदेखि भटभारी * धाये बहु कर शस्त्र सँभारी
कैटभ नाम वीर बलवाना * मूर्च्छित लवणासुर मनजाना ॥
तीन सहस्त्र लिये रणगाढे * आइ सुबाहु
कटुकवचन कहि छाँडेसिबाना * ताहि काटि प्रभु शीघ्र
तब खिसियान शूल ले धावा * जूपकेतुके सन्मुख आवा ॥
सोरठा—मारेसि हृदय सँभारि, गिरेजपत करुणायतन ॥
मूर्च्छित बेर पुकारि, रामचंद्र दिनमणि तिलक ॥ ३ ॥
मूर्च्छित बंधु सुबाहु विलोकी * भैरिसअमित रहै नहिं रोकी ॥
इकबारा
लदीपा
अवनितलसुधि कछुनाहीं
खैंच शूल तनु बाहर कीन्हा * राम नाम वर औषधि दीन्हा
उठि शुचि अंग अनुजके संगा * लीन्ह बिहँसिधनुबाण
आय समर महि सुभट प्रचारे * बाणते विपुल देव आ
मूच्छांगत कैटभ बलवाना * ताहि चढाय उपाय
दोहा—करउपाय रथराखि तेहि, पठै भवन रणधीर ॥

आय समर गर्जतभयो, संगमहाबलवीर ॥ ३९ ॥
जागा निशिचर देखि लड़ाई * पठयासिकुमक संगनिज भाई ॥
शूरवीर जेहि काल सकाई * हारेउ समर विबुध खगराई ॥
जाना कैटभ जाम्यक आवा * समरधीर नहिं चलहि चलावा ॥
नायउ माथ आनि करजोरी * तात समर रुचि पूजउ मोरी ॥
रावण रिपु लघु भ्राता जानू * तनय तासु बल रूप निधानू ॥
कोटिन शूर समर हम मारे * बालक नृपतिनिरखि हियहारे ॥
रिपुलखि सुनिकरहृदयकलापू * पावहिं मोह जानि जिय आपू ॥
रवितनया महि सैन्यहिडारूं * तनय समेत अनुजरिपु मारूं ॥
लैकर गदा अनी बिचलाई * घेरै रहे निशिचर समुदाई ॥
भागो रथ आनहु बलवाना * ताहिचढाय उपाय विधाना ॥
छंद–रिपु अनुज मारूं सैन यमुनहिडार नृपशिर नायऊ ।
तजशोचसैन सँभारचलभट वेगि जो आरि पायऊ ॥
दोउमत्तगर्व विशाल निशिचर आयरण गर्जत भये ।
इतजूपकेतु सुबाहु शर धनु हाथलै आतुरगये ॥
भटाभिरे निज निजजयतिकह निजजानजोरीसमरकी ।
कटत खडन चरण योगिनि खात बालक बालकी ॥
हठिगीध अति सुखपावहीं ।
बहुदानादिये मनाय मनमहँ बिहँसि मंगल गावहीं ॥ ११
दोहा–भिरेसमर सारोषअति, फिरे आकरे कूर ॥
लागे लोहे रुठरहे, समर धीरवर शूर ॥४०॥
सहाय होंय निज ठाढे * फिरे लजाय क्रोधकर गाढे ॥
प्रचार सुभट समुदाई * भयो युद्ध तहँ वरणि न जाई ॥
र्षहिं समर शूर शर ।विट समय जलद जल जैसे ॥
उठी धूरनभ छाई * भयो प्रदोष सुनहु खगराई ॥
समर देख रिपु प्रबल प्रभाये * प्रभु समीप सादर सुत आये ॥

देख तनय बल विपुल विशाला * रिपुहन हर्ष मनुजसुरव्याला ॥
यातुधान बल बुद्धि गँवाई * निज पुर गये राज यश पाई ॥
निशिनिशिचरसब बातविचारी * होत प्रात पुनि लाग गुहारी ॥
दोहा-साजि बाजि गज वाहनहिं, गहगह हने निशान ॥
आयो समर सकोप अति, लवणासुर बलवान ॥ ४१ ॥
शिवहिं सुमिरि लै शूल विशाला * रिपुदलपरचोमनहु यमकाला ॥
छिनकमाहिं मारे बहु योधा * चला सकोप मनुज करिक्रोधा॥
आवत शूल हन्यो प्रभु छाती * मूर्च्छितागिरचोधरणि परघाती॥
मूर्च्छित देखि खड्गलै धावा * निरखि सुबाहु क्रोध उरछावा ॥
प्रबल गदा रथ सारथि भञ्जा * विहँसिमहाबल रिपुदल गञ्जा ॥
रथ विहीनव्याकुलमन माहीं * मूर्च्छितपरचोअवनिसुधिनाहीं॥
पुनि उठि तर्जि सकोप सुरारी * अस्त्र सँभारि क्रोध करिभारी ॥
उठे शत्रुहन मन अनुमाने * सादर सब हियते सनमाने ॥
विस्मित विकल देख सब जाने * राम बाण अति आदर आने ॥
दोहा-सुमिरि अवधपति चरणयुग, छाँड़े युगनाराच ॥
परचो अवनितनु भिन्नह्वै, व्याकुल विकट पिशाच ॥ ४२ ॥
तासु मरण सुनि सब सुरयूथा * चढ़ि विमान नभ सकलवरूथा॥
बाजहिं दुन्दुभि वर्षहिं फूला * आज नाथ बीते सब शूला ॥
देहिं अशीश देव धुनि करहीं * जयति मन्त्रकहिआशिषबरहीं॥
यातुधानपति हीन विलोकी * कैटभ जाम्ब नहीं रिसरोकी ॥
करि किलकार गर्जि अतिघोरा * शिला एक धारी बहुजोरा ॥
शर शत शैल सुबाहु प्रचारी * काटी दुष्ट भुजा महि डारी ॥
वदन पसारि ताहि तकधावा * देव सुबाहु प्रबलपहँ आवा ॥
खैंचि धनुष तब श्रवण प्रयन्ता * अति करालशर छाँडितुरन्ता ॥
काटि शीश तिहि भूमि गिरावा * सुनासीर आतुर चलिआवा ॥
जोरि युगलकर अति अनुरागे * बोले वचन प्रेमरस पागे ॥
हमहिं सहित सुर कीन्ह सनाथा * अस्तुति योग नाहिं हमताता ॥

सुरपति सुर लखि प्रभु लघुभाई * कीन्ह प्रणाम माथ महिनाई ॥
अस्तुति विनय शक्र तब कीन्ही * बार बार बहु आशिष दीन्ही ॥
दोहा-देवन सहित सुदेवगुरु, आये जहँ मख धाम ॥
समाचार सादर सकल, कहे सबनके नाम ॥ ४३ ॥
तहँ युग नगर रचे अतिरूरे * राखे तनय युगल बलपूरे ॥
मथुरा नाम जगत यश जाना * दुतिय विश्व जो वेद बखाना ॥
योग तनय बल बुद्धि विशाला * नाम सुबाहु विदित महिपाला ॥
राखेउ यमुनातट बल भूरी * विदितनगर पश्चिम दिशिदूरी ॥
जूपकेतु पुनि साथ रखावा * राजनीति दोउ सुत समुझावा ॥
सौंपि नगर बहु आशिष दीनी * नृपमणिगवनविजयकहँकीनी ॥
चिरजीव कारि हन्यो निसाना * दक्षिण अश्व चला जग जाना ॥
सचिव समेत राखि सुत संगा * उतरे सब जल यमुन तरंगा ॥
दोहा-रवितनया पदवन्दिकै, चली अनी हयसंग ॥
हर्षित शूर समूह अति, देखि सैन्य चतुरंग ॥ ४४ ॥
वाल्मीकि थल सैन्य समेता * कानन सघन मुनीश निकेता ॥
सिय सुत युगल वीरवर बंडा * भुजबल अमित दिनेश प्रचंडा ॥
वीर बली हय देखेउ आई * बाँध्यो बाँच सुपत्र बनाई ॥
कटि कसि तूण हाथ धनुतीरा * समर हेतु बैठे बलवीरा ॥
शूर सहस्र साठि हय साथा * आय गये तहँ रघुकुल नाथा ॥
तहँ तरु बाँध्यो अश्व विलोकी * बालक जानि सकलरिसरोकी ॥
देहु तुरँग घर जाहु सुहाये * धन्य मातु पितु जिन तुमजाये ॥
माँगहु भीख समर चढि भाई * क्षत्रिय कुलहि कलङ्क लगाई ॥
छंद-जानिक्षत्रिकुलहि कलङ्कलावहु समर शूर सुहावने ।
बलहीन तुरँग प्रवीण छाँड्यो धरा बिन भट जानने ॥
सुनि वचन कटुक कठोर बालक जानि भट धावतभये ।
शरतानि एकहि बार लव हँसि हने तनु जरजरभये ॥
महिपरे पुनि कछु भिरे योधा जायरिपुहनसों कहा ।

पुनि बालहत संग्राम सैन्यहि वाजिलै रणमहँ रहा ॥
सुनिकोपिकर अति शत्रुहनतबसैन्यलै धावत भयो ।
रणमाहिं गाजत वीरबाँके कोप लखि लज्जित भयो ॥ १२ ॥
सो०-सुन मुनि बाल मराल, देहु अश्व तजि कोप निज ॥
पूज तुमहिं तिहिकाल, करिहहिं जन्म सफल प्रभु ॥ ४ ॥
कौन नाम नृप किहि पुरवासी * फिरहु विपिन सँगसैन्यप्रकासी॥
छाँडेउवाजि हेतु किहि लागी * लिख्यो पत्र बाँध्यो भयत्यागी॥
नहिं तव तनुबल पौरुष भाई * छोरहु पत्र वाजि गृह जाई ॥
सुनि रिपुहन कटु गिरा लजाने * गहहु अस्त्र असकहि मुसुकाने॥
हमहिं प्रचारत नृप बलभारी * डरपहिं सिंह बाजते तारी ॥
असकहि धनुष बाण करलीना * मुनिवर विनयचरण शिरदीना॥
मारेसि रथ सारथी तुरंगा * कोटिन बाण हने सब अंगा ॥
करि मूर्च्छित नृपकटक सँहारा * खाहिंमांस अति गीध करारा ॥
दोहा-एकहि एक प्रचार कर, हने सकल रणशूर ॥
आये तब रघुवीर पहँ, कायर करणी कूर ॥ ४५ ॥
पूँछेहु सकल भानुकुलनाथा * रिपुके सबनकहे गुणगाथा ॥
मुनिबालक दोउ कटकसँहारा * रिपुहन आदि समरमहँ डारा ॥
रिपुबालक सुनि विकलखरारी * विकलहोय पुनि कहेउ करारी ॥
लक्ष्मणसंग जाउ दोउ भाई * मुनि बालक बाँध्यो बरियाई ॥
मारहु पुनि आनहु पुरमाहीं * ऋषिसुतबन्धन उचितनकाहीं ॥
चल्यो शेष सँग सैन्य अपारा * आयउ तुरत समरजेहि मारा॥
लै घर जीव जाहु मुनि बालक * दिनकरवंश देव द्विजपालक ॥
आँखिन ओट होहु अब ताता * लखिअतिकोप चढतममगाता॥
दोहा-सुनि लक्ष्मणके वचन तब, विहँसे बालक वीर ॥
अनुजविलोकहु जायअब, प्रबल महारणधीर ॥ ४६ ॥
अनुजविलोकि वचनसुनिकाना * धनुष चढाय गहे करबाना ॥
भेषविलोकि बाल मुनिजाना * निजकुल समझिकरौंमनकाना॥

निज सहायशठ आन बुलाई * केवल तोहिं हते न भलाई ॥
सुनि कुश कठिन बाणसन्धाने * काँपीपुहुमि शेष अकुलाने ॥
छूटे विशिख रहे नभ छाई * बाणभानु प्रतिबिंब छिपाई ॥
रिपुहि प्रबललखि चलासकोपी * मूरो न मनहिं रहा रथरोपी ॥
काटे विशिख विशिखसन भाई * कौतुक करहिं विविध खगराई ॥
झपटि गदा लक्ष्मण तबझारी * गिर्यो भूमिकुशमूर्च्छितभारी ॥

वाल्मीकाश्रममें लवकुशका घोड़ा पकड़ना और रघुवंशियोंसे कठिन संग्राम करना।



दोहा-मूर्च्छित कुशहि निहारिकै, धाये लव करि शोर ॥
आवतही शरउरहने, गिर्यो न महि बल जोर ॥ ४७ ॥

मल्लयुद्ध दोउ भिरे प्रचारी * लरहिं सुखेन न मानतहारी ॥

भिरहिंउपाय विपुलबलकरहीं * गिरतहिंधरणिबहोरउठिलरहीं ॥
विकल सैन्य सबमानु सँहारी * सुमिरि कौशलाधीश खरारी ॥
मारेउवाण लवहि क्षितिडारा * मूर्च्छित होय गिरयोविकरारा ॥
सुमिरि सीय मुनिचरण सुहाये * तजिमूर्च्छा कुश आतुर आये ॥
विकल विलोकि बंधुलघुजानी * चल्यो वीर मन बहुत गलानी ॥
लक्ष्मण देखि वीर वर धाये * धनुषबाण धरि आगे आये ॥
शक्रजीत अरि जे शर मारेउ * ते सबबालककाटि निवारेउ ॥
दोहा–रामानुज विस्मित विकल, देख सबल आराति ॥
सीयत्याग उरशोचबड, प्राणदेहकिहि भाँति ॥ ४८ ॥
कुशकरिक्रोध विशिख सो लीने * मंत्रप्रेरि मुनिवर जे दीने ॥
नाक रसातल भूतल माहीं * यह शर छुटै बचै कोउ नाहीं ॥
मोहन अस्त्रनाम तेहिजानी * विष्णु महेश ब्रह्म जेहि मानी ॥
मारेसि ताकि शेष उरमाहीं * परेधरणितल सुधि कछु नाहीं ॥
चली सैन्य सब भागि अपारा * कौशलपुरमहँ जाय पुकारा ॥
करणी सकल युद्धकै वरणी * लक्ष्मण वीर परे जिमिधरणी ॥
जेहि विधिकटक सकल संहारा * निजलोचन
दोउ बाल अनूपा * तवप्रतिबिंब मनहु सुरभूपा ॥
काकपक्ष शिर धरे बनाई * बालकवीर वरणि नहिंजाई ॥
दोहा–कहेउ भरत करजोरिकै, वचन अमित बिलखाय ॥
सीयत्याग फल दीन विधि, प्रभुकहि देखहुजाय ॥ ५९ ॥
अनुज समर महँ तुम हिय * साजहु हय गज रथ मतवारे ॥
[illegible] यज्ञ रिपु देखहुँ जाई * बालक रावणके दुखदाई ॥
तीव्रवचन सुनि भरत लजाने * बहुत भाँति रघुपति सनमाने ॥
प्रथम सखा सब लिये बुलाई * हनुमदादि अंगद समुदाई ॥
जाम्बवन्त कपिराज विभीषण * द्विविद मयंद नील नल भूषण ॥
रिपुहि मारिकै समर भगाई * तात अनुज दोउ आनहु जाई ॥
माथनाय सँग कटक विशाला * चलेभरत उर उपजी ज्वाला ॥

शोणित सरिता समर विलोकी * डरपेउ वीर आश रण रोकी ॥
दोहा–समर सीय दोउ वीरवर, आयगये बलवान ॥
देखडरे कपि भालु सब, तब बोलेउ हनुमान ॥ ५० ॥
धन्य मातु पितु जेहि तुम जाये * पुरुष युगल घरजाहुसुहाये ॥
समर विमुख सुन भट विलखाना*कीन्हक्रोध कहँ सुनहनुमाना ॥
नाहिंबल होउ जाहु घरभाई *हतौं न ठौर जान कदराई ॥
भाषे वचन भरत सुनिकाना * लेहु सँभारि बाल धनुबाना ॥
कटकटाय कपि भालु समूहा * लीन्ह उपार प्रबल तरु जूहा ॥
एकहि बार सकल तिनमारा *लवकाटहिं तिल सम करिडारा॥
रिपु शरकाटि निमिष यक माहीं*यथा मनोरथ खल मिटिजाहीं ॥
लव कर क्रोध बाण फटकारे * मारे वीर भूमि गजडारे ॥
छंद०प०गजबाजिघने रण भूमिपरे, तहँ शोणित वीर वरूथभरे ।
लवतानि शरासन बाणभले, रिपुसागरवीरप्रचार दले ॥
लगते शरहै रण घायल ते, धरणी परिजाहिं वियाकुलते ।
कहँ झूमहिं कुंअर पुंज परे, महिलोटहिं शोणित भार भरे ॥
शरलागत घायलवीरगिरे, तहँ हाँक उठे रणधीरधरे ।
रणवीर वरूथनभालुकटै, गिरिसे जनु मेदिनि खंग पटै ॥
तब शोणितकी सरिताउमँगी, अतितीक्षणधार अपार पगी ।
तहँ योगिनिभूत पिशाचघने, भषपालक कंककरालबने॥ १३॥
छन्द–पलभषहिं कंक कराल जहँ तहँ गीधमन प्रमुदित भये ।
तहँ प्रेत सिद्ध समाज सोहत व्याहप्रति मंगलठये ॥
तहँ डाकिनी मनमुदितडोलहिं शाकिनी शोणितभरी ।
दोउकरनखैंचहिं कालिका शिव प्रेत प्रति कीरतिकरी ॥
अंतावरी गहि गर लपेटहिं पिवत शोणित आतुरे ।
गजखाल खैंचहिं भूत शंकर प्रेत संगर चातुरे ॥
वैतालवीर कराल करवर करीकर इककरधरे ।
हैभार रुधिर प्रवाह पूरण पान करत हरे हरे ॥

रघुवंश समर सराहिदुहुँदिशि करहिं निज मन भावने ।
गज वाजि नर कपि भालु जहँ तहँ गिरे महि शुभ पावने ॥
दोउ रामतनय प्रचारि बहुविधि निकट कोउ न आवहीं ।
मे त्रसितव्याकुल त्राहि त्राहि सुवीर निज गृहरावहीं ॥१४॥
दोहा-विषमयुद्ध दोउबंधुकारि, जीति सुभटसंग्राम ॥
आयउ पुनि जहँ नृपभरत, सुमिरि विधाता वाम ॥ ५१ ॥
कपिभालुहिघायलसबआवहिं * बाण त्रास मनअतिदुखपावहिं॥
जाम्बवत कपिराज बुलाये * अंगद हनूमान सुनिआये ॥
सब मिलि सहितनिशाचरराजा* धरिआनहु दोउ बालसमाजा ॥
आय जुटे कपि भालु भवानी * तिनकछुप्रभुमहिमानहिंजानी॥
बोले कुश सुनु वालिकुमारा * तुव बल विदित जान संसारा ॥
पितहि मराय मातु परहेली * सकल लाज आये तुम पेली ॥
सो फल लेहु समर महँ आजू * त्यागहु सकल कलंक समाजू॥
सुनत क्रोध अंगद उर छावा * गहिंगिरि एक ताहि पर धावा॥
दोहा-आवत शैल विशाल लखि, तिलसमशरहति कीन ॥
अंगद गर्व अपार अति, तस प्रभु उत्तर दीन ॥५२॥
तमकि ताहि कुश बाणचलावा * अंगद नील अकाश उड़ावा ॥
आवत जानि पुहुमि कपिभारी * मारा बाण प्रचारि प्रचारी ॥
इतउत जान कतहुँ नहिं पावै * पवन बहै जिमि महिनहिंआवै ॥
छिन अकाश छिन भूतलमाहीं * बोलेउ शरण शरण प्रभु पाहीं ॥
रहेउ गर्व मोहिं कृपानिधाना * अग जगनाथ न मैं पहिचाना ॥
पाँच बाण वेधेउ कपि दोऊ * दीन जानि त्यागेउ हँसि सोऊ॥
परे भरतके सन्मुख जाई * दशादेखि कपि दशा भुलाई ॥
जाम्बवन्त हनुमान कपीशा * धाये तरु गिरिलै बहु कीशा ॥
दोहा-हँसे कुमरकुशदेखिकपि, अनुजहि कहेउबुझाय ॥
आज समर जीतैं भरत, भालुकपिन बिलगाय ॥५३॥
प्रभु सुतसमर कीन्ह जसकरणी* निगम शेष शारद नहिं वरणी ॥

चरित तासु सुनु शैलकुमारी * मारेउ समर शूल कपिभारी ॥
समर धीर दोउ बाल विराजे * निरखिभालुकपिमनअतिलाजे ॥
ऐंचिधनुष गुणछाँडेउ सायक * कपिपतिआदिहनेकपिनायक ॥
मूर्च्छित सेनपरी महि माहीं * बचो न कपि घायलजो नाहीं ॥
देखि भरत सब सैनानिपाती * कोपि बाण मारेउ लव छाती ॥
मूर्च्छितविकलपरेउमहिमाहीं * अतिहिविकलतनुकीसुधिनाहीं ॥
दुखितदेखिकुशअमितरिसाना * चाप चढाय बाण संधाना ॥
श्रवण प्रयंत खैंचि धनुवीरा * भरत हृदय मारेउशत तीरा ॥
भयो युद्ध तहँ विविध प्रकारा * वीर बाँकुरे सुभट अपारा ॥
दोहा-समरभूमि सोये भरत, लवहिं लीन उरलाय ॥
सुमिर मातु गुरुचरणयुग, रहे समर जय पाय ॥५४॥
आये खबरलेन चरचारी * भरतसैन्य तिनसकलनिहारी ॥
शोणित सरिता देखि डराने * हय गय बहे जात रथजाने ॥
देखी सरित भयंकर भारी * कठिन कराल सुनहु उरगारी ॥
बहुतक उछरि बूड़ि पुनि जाई * चर्म मनहु कच्छपकी नाई ॥
ग्राह नक्र झष जंतु घनेरे * देख दूरते तिन मन फेरे ॥
लहर तरंग वीर बहे जाहीं * घायल पैर तीर लपटाहीं ॥
फिरे दूत कौशलपुर आये * समाचार सब राम सुनाये ॥
चरवर वचन सुनत दुखपावा * त्यागेउमखनिजकटकबनावा ॥
चले सकोप कृपालु उदारा * आये जहँ प्रभु कटक सँहारा ॥
मुनिवर बालक देख सुहाये * शिरनवाय प्रभु निकट बुलाये ॥
दोहा-पूछेउ बाल बुलाय दोउ, कहहु मातु पितु नाम ॥
देश ग्राम निजकहहु सब, बड़ जीतेहु संग्राम ॥ ५५ ॥
गहहु अस्त्र निजकहहु कहानी * पूछेहु सुजन लोग अस जानी ॥
समर बात बहु अति कदराई * छाँडि शोच अब करहु लराई ॥
वंश नाम विनु पूछे ताता * हतौं न बाण मनोहर गाता ॥
माता सीय जनककी जाता * वाल्मीकि पाल्यो मुनि ताता ॥

पितावंश नहिं जानहिं आजू * लव कुश नामसुनहु रघुराजू॥
सुनि सब कथा राखि मनमाहीं * बाल विलोकि वधबभलनाहीं॥
आवत सुभट समूह हमारे *लरिहहिं तुमसन समरसुखारे॥
अस कहि अंगद नील उठावा *जाम्बवन्त कपिपतिहिबुलावा॥
छंद–कपिराज अंगद जाम्बवानहिं बोलि निशिचरनायकं।
हनुमान द्विविद मयन्द नीलहि सुभट जे अतिलायकं॥
तव हरण शूलहि पापनाशं कह्यो हँसि रघुनन्दनं।
भरतादि रिपुहन सहित लक्ष्मण परे खल मद गञ्जनं॥
लङ्केश आदिक सुभटमारे वीर जे महिमण्डनं।
ते आज बालक विप्रसों रणपरे रिपुमद गञ्जनं॥
कुलकान अब निजजान सुभट सुशैलतरु बहुलैचले।
देहूह वानरयूह पर्वत डारि पुनि रण मुरिचले॥ १५॥
दोहा–सावधान धनुबाणलै, धायउ लव बलवान॥
सन्मुख आनि विभीषणहिं, बोलेउ बहुरि रिसान॥ ५६॥
सुन शठ बन्धुहि समर जुझाई * शत्रुहि मिलउ निपट कदराई॥
पिता समान बन्धु बड़ तोरा * त्रिया तासु लै घर वर जोरा॥
पापी मातु कही कइबारा * सो पत्नी यह धर्म तुम्हारा॥
बूड मरहु सागर महँ जाई *मर गर काटि अधम अन्यायी॥
समरभूमि मम सन्मुख आवा * लाज होत नहिं गाल बजावा॥
आँखिन आगेते हटि जाई *नहिं तवमृत्यु निकटचलिआई॥
सुनिखिसियान गदा तेहिलीनी * शर हति खण्डखण्ड लवकीनी॥
सात बाण मारेउ करि क्रोधा * डगमगात शर लागत योधा॥
गिरत कोपिकर शूल चलाया * लवतनु तडित समान समाया॥
दोहा–दूरि शूलकरि बन्धु दोउ, लखि मारेउ करिदाप॥
जाम्बवन्त कपिराज नल, अंगद करहिं विलाप॥ ५७॥
जोगिरि तरु कपि डारहिं आई * रज समान तेहि देहिं उड़ाई॥
निजबाणन कपि घायल कीने *जोजेहि उचित सुतसफलदीने॥

रघुकुल तिलक प्रचारत पाछे * वीर धुरीण बने सब आछे ॥
अंगद हनूमान भट भारी * ते धाये तरु शैल उपारी ॥
डारि शैल दोउ भिरे रिसाई * खड्गन हने वीर बरिआई ॥
कपिन कोपकरि उरहततेहीं * जिमि खग मशकच्चाटिगजदेहीं ॥
हति दोनों कपि भूमि गिराये * जाम्बवन्त कपिपतिपहँ आये ॥
इहि तनु कोटिक समर लड़ाई * जीते लडे बहुत हम भाई ॥
दोहा—ये बालक त्रिभुवन बली, जीतसकै नहिं कोय ॥
चलहु प्राण दीजै समर, अजय जगत नहिं होय ॥ ५८ ॥
आवत भालुबली भट नाना * तानि शरासन शर सन्धाना ॥
हृदय तानि लव मारेउ सायक * योजन सात गयो कपिनायक ॥
घायल भालु लपेटे जाई * मल्लयुद्ध कुश कीन्ह बनाई ॥
निजबल ऋच्छहिअवनिपछारा * द्वौकर चरण बाँधि विकरारा ॥
हनुमंतहि बाँध्यो लव धाई * राखेउ निकट अश्वथल आई ॥
रखवारी छाँडेउ लव वीरा * आप गयो रघुनायक तीरा ॥
देखेउ रथपर श्रीपति सोये * फिरेउ वीर निज लाज विगोये ॥
सुभग अस्त्र पट भूषण नाना * लवधरि अश्व ऋक्षहनुमाना ॥
छंद—शुभ अस्त्रपट भूषण सुमर्कट ऋच्छसँग लै घरचले ।
सिय निकट नायो माथ दोउ सुत भेंट भूषण जे भले ॥
पहिचानि कपिदोउ निरखिभूषण सहमिसियधरणीपरी ।
इहिबीच मुनिवरसघन आये सियहिअति विनतीकरी ॥
हनुमान भालुहि छोडि वेगहि त्यागि बहुसमुझायऊ ।
रिपुदमनलक्ष्मण सहित भरतहिं राम समर सुवायऊ ॥
सुत कीन्ह कर्म कलंक कुलमहँ मोहिं विधिविधवाकरी ।
तजि शोच चंदन अगर आनहु जाउँ पियसँग अबजरी ॥
मुनि धीर दीनेउ तनय लीनेउ संगलै सादर चले ।
रण देखि बालक चकित चितवहिं विहँसिमनसंशयभले ॥
रथदेखिकर पहिंचानि प्रभु कहँ जाय मुनि चरणनपडे ।

उठिबैठि कौशलनाथ आतुर तनय तब आगे खड़े ॥ १६ ॥
सो०-सुनि मुनिवर वर बैन, जागे रघुपति भयहरन ॥
बिहँसि उघारेउ नैन, लीन्हें हृदय लगाय मुनि ॥ ५ ॥
प्रभुहिं देखि मुनि अति हर्षाने * बार बार निज भाग्य बखाने ॥
जेहि विधि शेष सीय वन आनी * मुनिसों सबही कह्योवखानी ॥
लवकुश कथा सकल मुनिभाषी * शिवाविरंचि सूरज कर साखी ॥
मिले तनय दोउ हृदय लगाई * सुधावर्ष सुर सैन्य जिवाई ॥
भरत आदि जागे सब भ्राता * लक्ष्मण चले जहाँ सिय माता ॥
बहुरि राम लक्ष्मणहिं बुलाई * सुनहुतात अस वचन सुनाई ॥
ऐसे वचन मानि मम भाई * सिय सन दिव्य लेहु तुम जाई ॥
लक्ष्मण जाय शीश सिय नावा * कुशल कहीबहुविधि समुझावा ॥
हरिइच्छा सिय मनअस आवा * शेष सहस फणिआनि दिखावा ॥
दोहा-जटित मणिन सिंहासनहिं, सादर सीय चढाय ॥
भये अलोप पताल कहँ, महिमा किमि कहिजाय ॥ ५९ ॥
लक्ष्मण चरित देख सब ठाढे * नयन प्रभाव चले अति गाढे ॥
सकलचरित सुनि कृपानिधाना * चलन हमार सीय मन जाना ॥
तनय सहित निजपुर प्रभु आये * दान दीन शुभ यज्ञ कराये ॥
जेहि जेहिविधिसुर आयसु दीने * कोटिकोटि विधिसोइप्रभुकीने ॥
कोटिक धेनु धाम धन धरणी * दीन कृपानिधि कोसक वरणी ॥
भोजन विविध भाँति करवाये * बिदा कीन्ह मुनि वृंद बुलाये ॥
जनकहिं पूजि बिदा प्रभुकीना * दोउ प्रभु पूजि पयोदकलीना ॥
आये जनक गुरुहिं पहुँचाई * बैठे प्रभु महिदेव बुलाई ॥
दोहा-लक्ष लक्ष वर धेनु धन, पूजि पूजि द्विज पाँय ॥
एक एक विप्रन दई, हर्षित कौशलराय ॥ ६० ॥
गे सब मुनि सज्जन निजधामा * पायोअमित अमित सुखरामा ॥
पुरवासी आये सब झारी * सुनहिं पुराण अनन्द सुखारी ॥
जे जड़ चेतन जीव घनेरे * सचराचर कौशलपुर केरे ॥

तिन सुख बढ़त सुनतसुरराया * करहिं विनोद विहाय अमाया ॥
इहिविधिविपुलकालचलिगयऊ * निजपुरगवन सुअवसरभयऊ ॥
बीती अवधि ब्रह्म जब जानी * नारद मुनिसन कहा बखानी ॥
निजपुर आवन चहैं खरारी * धर्मराजको कहहु हँकारी ॥
विनती बहु विरंचि भवभाषी * चला धर्म रघुपति उर राखी ॥
दोहा-आयउ यम रघुवीर पुर, मुनिवर वेष बनाय ॥
तेजपुञ्ज सुन्दर तरुण, कटि मृगत्वचा सुहाय ॥ ६१ ॥
द्वारपाल लक्ष्मण कहँ जानी * बोले तापस अति मृदुवानी ॥
तुरत शेष सब खबर जनाई * सुनत वचन आये रघुराई ॥
मुनिहिनिरखिप्रभुकीन प्रणामा * सादर उचित कहेउ विश्रामा ॥
अर्घ्य दीन्ह आसन बैठारी * मुनिवर सुन्दरि गिराउचारी ॥
सुनि सर्वज्ञ कृपालु दिनेशा * आयउँ मैं तापसके वेषा ॥
मैं तुम रहौं अवर नहिं कोई * तीसर सुनहि नाश तिहिहोई ॥
सुनै वचन तिहि देहुँ शरापू * शिव विधि हरि आवैं जोआपू ॥
सुनहु लषण चलि बैठु दुवारे * नहिं कोउ आवन गिराउचारे ॥
ममकर वध आवै पुनि कोई * मरिहहि सत्य मृषा नहिंहोई ॥
दोहा-बोलेउ तापस वचन मृदु, पाहि पाहि रघुनाथ ॥
कहा सकल इतिहास मुनि, कहिपुनि नायउमाथ ॥ ६२ ॥
प्रभु इच्छा भावी बलवाना * दुर्वासा मुनि आय तुलाना ॥
मुनिहि देखि लक्ष्मण चलआगे * गयउ निकट विनती अनुरागे ॥
पूछेउ मुनि कहँ रघुकुल ईशा * जाउँ वहाँ मैं सुनहु अहीशा ॥
जो प्रति उत्तर करिहौ आजू * भस्म करौं तुव घर पुर राजू ॥
कम्पेउ लषण सुनत मुनि वानी * निजवध समुझिसुचलभवानी ॥
दोउ करजोरि कहेहु प्रभुपहहीं * दुर्वासा मुनि आवन चहहीं ॥
तात कीन्ह अवगुण तुम भारी * काल कर्मगति टरहि न टारी ॥
कीन्ह वचन दिनकर कुलकेतू * सुन खग अपर कथाकर हेतू ॥
दोहा-तुरत कहेउ मुनि आनहु, सादर कृपानिधान ॥

चलहु वेगि मुनि बोलि अब, कहा राम भगवान ॥ ६३ ॥

छंद–अतितेजपुंज विलोकि आवत उचित उठि आसनदियो ।
जल आनि सादर धोय पद प्रभु सुभग पादोदक लियो ॥
जन जानि मुनिवर देहु आयसु वेगि सोइ सादर करौं ।
बहुकाल क्षुधित कृपालु दिन बहुगये विनुभोजन मरौं ॥
मन भाव भोजन दीन्ह रघुपति बहु विधि विनती करी ।
संतोषपाय मुनीश स्तुति विनयकारि आशिष भरी ॥
करि विदा मुनिवर देख लक्ष्मण हृदयदारुण दुख भये ।
भरतादि अनुजसमेत पुरजन ताहि छिन देखन गये ॥
पदवंदिठाढे जोरिकर दोउ वदन लखि अति काँपहीं ।
भरिनैन पंकजनीर आरत भरत सन प्रभु भाषहीं ॥
अब गुरुहि आनहु वेगि सादर दुखित अतिआतुरचले ।
सब कथा गुरुहि सुनाय आरत यान चढि आवत भले ॥
आये वसिष्ठ विलोकि रघुपति विकल उठि चरणनपरे ।
संवाद सुनिमुनि समय जान्यो त्यागिहै अब तनु हरे ॥
सुनि वचन शेष विचारि निजउर राम विनु धृकजीवनो ।
गहिचरण सरयूतीर आये देख जल शुभ पावनो ॥ १७ ॥

दोहा–कटिप्रयंत जल मध्यमहँ, कीन्हेउ ध्यान अखंड ॥
योगयत्न करि राम कहि, फोरो निज ब्रह्मंड ॥ ६४ ॥
राम धाम पहुँचे तुरत, लक्ष्मण चतुरथ भाग ॥
सुनि व्याकुल रघुपति भरत, मिटे सकल अनुराग ॥ ६५॥

मैंनहिं तजेउ तजो मोहिं ताता * कर सोइ यतन जुदेखों भ्राता॥
करहु भरत पुर राज सुखारी *सुनत गिरेउ महिव्याकुलभारी॥
चलन चहत अब प्राण गुसाँई *प्रभु लक्ष्मण विनु रह न सकाई॥
तात चलहु कहि तनय बुलाई *कीन्ह तिलक बहु नीतिशिखाई॥
भरत सुतनय शील वैनामा * दक्षिण नगर दियो तिहिरामा ॥
दसर पुष्कर जेहि जग जाना * पुहकर नगर दीनभगवाना ॥

प्रथम दैत्य हति तहाँ बसाये * दीन कृपानिधि तिन मन भाये ॥
चित्रकेतु अंगद रणधीरा * लक्ष्मण तनय सुभग गंभीरा ॥
दोहा—पश्चिम दिशा पिशाच बहु, जीतहते संग्राम ॥
तहँ राखे सुत सारिसदोउ, बिलग बिलग कहिनाम ॥६६॥
अवध नृपति कुश कीन्ह बहोरी * शिखैनीति पुनि कह्यो बहोरी ॥
भ्रातन पर सुत दया करेहू * राजनीति उर माहिं धरेहू ॥
उत्तर नगरसु उत्तर दूरी * सुखसंपदा जहाँ अति भूरी ॥
लवकहँ दीन कृपानिधि सोई * पटतरि अवध नगर नहिं कोई॥
आठसहसरथ तुरँग पचासा * दशसहस्र गज मत्त विलासा ॥
लजाहिंइन्द्रगज तिनहिंविलोकी * दिगपालन निज प्रभुतारोकी ॥
शक्र कुबेर देखि सकुचाने * तिनकी महिमा कवन बखानै॥
इक इक सुतन दीन रघुराया * वरणिको सकै सुनौ खगराया ॥
धनद कोटि सम भरे भँडारा * यथायोग्य करि भाग उदारा ॥
दोहा—सकल तनय परितोष करि, बिदा कीन्ह रघुवीर ॥
विप्रवृंद याचक सकल, लिये बोलि मतिधीर ॥६७॥
धेनु वसन धरती धन धामा * दिये द्विजन किय पूरण कामा॥
याचक सबै अवधके वासी * बोलेउ प्रभु सुनअजअविनासी॥
हम भरि जन्म चरणअनुरागी * अंतकाल अब होत अभागी ॥
जो जनजान लेहु प्रभु साथा * करहुकृपानिधि सकलसनाथा ॥
सुनि सनेहमय वचन सुहाये * चलहुकहेउप्रभुअति सुखपाये॥
समय जानिकपिपतितहँआवा * अंगद राजदीन सुखपावा ॥
जाम्बवन्त लंकापति वीरा * नल अरु नील द्विविदरणधीरा॥
कोटिनकीश जु सुर अवतारी * आये जहाँ कृपालु खरारी ॥
सो०—कह प्रभु सुन लंकेश, राजकल्पशत करहु तुम ॥
वचन अचल मम शेष, अंत अमरपुर गवन करु ॥ ६ ॥
जाम्बवंतसे कह मृदु बानी * रहु द्वापर भर अस जियजानी॥
कृष्णरूप धरि मिलि हौं तोहीं * समरभूमि तबजानसि मोहीं ॥

सबकहँसबविधि धीरज दीन्हा * आप गवन सरयूतट कीन्हा ॥
दक्षिण भरत वाम रिपुदमनू * पुरवासी सब निज कुलतरनू ॥
अग्नि वेद गायत्री छंदा * धारिनिजरूप चले सुरवृंदा ॥
पीताम्बर पट सुन्दर धारी * जड़चेतन चर अचर सुखारी ॥
प्रथम रूप धारि सुन्दर आई * जसकछुकीन्हसोसुनिखगराई॥
समय जानि तब पवनकुमारा * बोले वचन कृपा आगारा ॥
दोहा–चिरजीव सुत रहहु तुम, जब लगि रवि शशि शेष ॥
तोहिं सेवत मिटिहहिं सकल, दुस्तर कठिन कलेश ॥ ६८ ॥
चतुराननपहँ धर्म सिधाये * सरयूतीर जगतपति आये ॥
चले देव अज भव सनकादी * जो मुनि परम अलौकिअनादी॥
कोटिन रथ वाहन विधि नाना * अरुण अकाश नजाय बखाना॥
नभ पर जयजयजयधुनि होई * पावहिं वर सुर याचहिं जोई ॥
देखि नाक रथ मग परछाँई *जिमि गिरि कृमि नभपंथउड़ाई॥
करि पुर सजग देव तनुधारी * पाइ चतुरभुज रूप सुखारी ॥
चढ़ि विमान प्रभुधाम सिधाये * सकल अमरपति कहँसकुचाये॥
सुमनवृष्टि नभ होत अपारा * होइनाद विधि वेद उचारा ॥
छंद–उच्चारित वेद भे चकृत भरत कृपालुहँसि सादरलयो।
जल परसिकर रिपुदमन सादर पद्मवन राजा भयो ॥
कपि आदि यूथप राखि उर प्रभु सकल निजनिजघरगये।
सुग्रीव प्रभु पद वन्दि बारहिं बार रवि मण्डल छये ॥
सुरसहित दिनकर वंश भूषण आय जल आश्रितरहे।
तेहिसमय बोलि अनादि प्रभु जू वचन पावनमय कहे ॥
इक मास रहु तुम नीर यह ममपुरी जीवजुआवहीं।
तेहि सुभगदेहु विमान पद निर्वाण जो मम पावहीं ॥
अतिप्रीति रुचिर सनेह मज्जहिं मम चरण रतिहै सदा।
तरि जाय सुरपुर सकल सादर सुनहु ममवाणी मुदा ॥

जे जन्म भरि मम संग वासा रहे निशिवासी सदा ।
ते तुरत आना सहित सादर सुनहु मम वाणी मुदा ॥
कहि वचन अंतरध्यान प्रभु जिमि दामिनी घनमें धसैं ।
नभ जयति जयजयकार जय जय जयतिकर लै सुरलसैं ॥
यहि भाँति रघुपति सह चराचर लै गये निज धामको ।
सो कह्यो उमहि कृपायतन उरराखि सादररामको ॥१८॥
दोहा-गिरिजा संत समागमहिं, सम न लाभ कछु आन ॥
विनुहरि कृपा न होय सो, गावहिं वेद पुरान ॥ ६९ ॥
इहि विधि सबसंवाद सुनि, प्रफुलित गरुड शरीर ॥
बारबार तेहि चरण गहि, जानि दास रघुवीर ॥ ७० ॥
मैं कृतकृत्य भयों तुव वानी * सुनि प्रभुकथा भक्ति रससानी॥
रामचरण नूतन रति भयऊ * बहुविधि नाथ मोहिंसुखदयऊ॥
मोपर होय न प्रति उपकारा * वन्दौं तव पद बारहिं बारा ॥
पूरण काम राम अनुरागी * तुम सम तातनकोउ बड़भागी॥
मोहिंजलधि वोहिततुमभयऊ * तव प्रताप संशय सब गयऊ ॥
संत विटप सरिता गिरि धरणी * परहित हेतु सबन की करणी ॥
संत हृदय नवनीत समाना * कहाकविन पर कहै न जाना ॥
निज परिताप द्रवै नवनीता * परदुख द्रवहिं सुसंत पुनीता ॥
जीवनजन्म सफल ममभयऊ * परमपुनीत विबुध सुखदयऊ ॥
जानहु सदा मोहिंनिजकिंकर * पुनि पुनि उमा कहेउविहंकर ॥
दोहा-तासु चरण शिरनायकरि, हृदय राखि रघुवीर ॥
गयउ गरुड वैकुण्ठ तब, प्रेम सहित मतिधीर ॥ ७१ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने अविरलभक्तिकर संपादनं नाम अष्टमं लवकुशकाण्डं समाप्तम् ।

इति रामाश्वमेधे लवकुशकाण्डं सम्पूर्णम् ८.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बंबई.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ बरवारामायणप्रारंभः ।

बरवाछंद ।

केशमुकुत सखि मरकत मणिमय होत ॥ हाथलेत पुनि मुक्ता करत उदोत ॥ १ ॥ सम सुवरण सुखमाकर सुखद न थोर ॥ सीयअंग सखि कोमल कनक कठोर ॥ २ ॥ सियमुख शरदकमल जिमि किमि कहिजाइ ॥ निशि मलीन वह निशिदिन यह विगसाइ ॥ ३ ॥ बडे नयन कटि भ्रुकुटी भाल विशाल ॥ तुलसी मोहत मनहिं मनोहर बाल ॥ ४ ॥ चंपकहरवा अँगमिलि अधिक सोहाइ ॥ जानिपरै सियहियरे जब कुँभिलाइ ॥ ५ ॥ सियतुव अंगरङ्गमिलि अधिक उदोत ॥ हारवेलि हिरावों चंपक होत ॥ ६ ॥ साधु सुशील सुमति शुचि सरलस्वभाव ॥ रामनीतरत काम कहाँ यह [illegible] ॥ काकपक्ष मिलि सखि कस लसत कपोल॥८॥

भालतिलक शर सोहत भौंहकमान ॥ मुख अनुहरिया [illegible] कानि मृदुमुसुकानि ॥ कस प्रभुनयन कमल अस कहौं बखानि ॥ १० ॥ कामरूप सम तुलसी रामस्वरूप ॥ कोकवि समसर करै परै भवकूप ॥ ११ ॥ चढ़त दशा यह उतरतजात निदान ॥ कहउँ न कबहूँ करकश भौंह कमान ॥ १२ ॥ नित्य नेमकृत अरुण उदय जब कीन ॥ निरखि निशाकर नृपमुख भये मलीन ॥ १३ ॥ कमठपीठ धनु सजनी कठिन अँदेश ॥ तमकि ताहि ये तोरिहि कहब महेश ॥ १४ ॥ नृप निराशभे निरखत नगर उदास ॥ धनुषतोरि हरि सबकर हरेउ हरास ॥ १५ ॥ का घूँघट मुख मूँदहु नवला नारि ॥ चाँदस्वर्गपर सोहत यहि अनुहारि ॥ १६ ॥ गर्वकरहु रघुनंदन जनि मनमाहँ ॥ देखहु आपनि मूरति सियकै छाँह ॥ १७ ॥ उठीं सखी हँसि मिसकारि कहि मृदुबैन ॥ सिय रघुवरके भये उनींदे नैन ॥ १८ ॥ सीकधनुष हित शिखन सकुचि प्रभु लीन ॥ मुदित माँगि इक धनुही नृप हँसि दीन ॥ १९ ॥ इति श्रीबरवैरामायणेबालकांड समाप्त ॥ १ ॥ सात दिवस भये साजत सकल बनाउ ॥ कापूँछहु सुठि राउर सरलस्वभाउ ॥ २० ॥ राजभवनसुख विलसत सियसँग राम ॥ विपिन चले तजिराज्य सुविधि बड़वाम ॥२१॥ कोउ कह नरनारायण हरि हर कोउ ॥ कोउकह विहरत वन मधु मनसिज दोउ ॥ २२ ॥ तुलसी भइमति विथकित करि अनुमान ॥ राम लषणके रूप न देखेउ आन ॥२३॥ तुलसी जनि पग धरहु गंग महँ साँच ॥ निगानांग करि नितहिं नचाइहि नाच॥२४॥ सजलकठौता करगहि कहत निषाद॥ चढ़हु नाथ पगधोइ करहु जनि वाद ॥ २५ ॥ कमलकंठकित सजनी कोमल पाइ ॥ निशि मलीन यह प्रफुलित नित दरशाइ ॥२६ ॥ (वाल्मीकि वचन) ॥ द्वैभुजकर हरि रघुवर सुन्दर वेश ॥ एकजीभकर लछिमन दूसरशेश ॥ २७ ॥ इति श्रीबरवैरामायणे अयोध्याकांड समाप्त ॥ २ ॥ वेद नाम कहि अँगुरिन खंडि अकास ॥ पठयो शूर्पणखाहि लषणके पास ॥२८॥ हेमलता सियमूरतिमृदु मुसकाइ ॥ हेमहरिणकहँ दीन्हेउ प्रभुहि देखाइ ॥ २९ ॥ जटामुकुट कर शर धनु संग मरीच ॥ चितवनि बसति कनखियनु अँखियनु बीच ॥ ३० ॥ (रामवाक्य) ॥ कनकसलाक कलाशशिदीप शिखाउ ॥ तारासिय कहँ लछिमन मोहिं बताउ ॥३१॥ सीयवरणसम केतकि अति हिय हारि ॥ किहेसि भँवर कर हरवा हृदय विदारि ॥ ३२ ॥ शीतलता शशिकी रहि सब जग छाइ ॥ अगिनि तापह्वै हमकहँ सँचरत आइ ॥ ३३ ॥ इति श्रीबरवैरामायणे आरण्यकांड समाप्त ॥ ३ ॥

श्यामगौर दोउ मूरति लछिमनराम ॥ इनतेभइ सितकीरति अतिअभिराम ॥ ३४ ॥ कुजनपाल गुण वर्जित अकुलअनाथ ॥ कहहु कृपानिधि राउर कस गुणनाथ ॥ ३५ ॥ इतिश्रीबरवैरामायणे किष्किंधाकांड समाप्त ॥ ४ ॥ विरहआगि उरऊपर जब अधिकाइ ॥ एअँखिया दोउ वैरिनि देहिं बुझाइ ॥ ३६ ॥ डहकुन है उजियरिया निशि नहिं घाम ॥ जगतजरत अस लागु मोहिं विनुराम ॥ ॥ ३७॥ अब जीवनकी है कपि आश न कोइ ॥ कनगुरियाकै मुँदरी कंकन होइ ॥३८॥ रामसुयश कर चहुँयुग होत प्रचार ॥ असुरनकहँ लखि लागत जगअँधियार ॥ ३९ ॥ (कपिवाक्य) ॥ सिय वियोग दुख केहिविधि कहउँ बखानि ॥ फूलबाणते मनसिज वेधत आनि ॥ ४० ॥ शरदचाँदनी सँचरत चहुँदिशि आनि ॥ विधुहि जोरिकर विनवति कुलगुरु जानि ॥४१॥ इतिश्रीबरवैरामायणे सुन्दरकांड समाप्त ॥५॥ विविध वाहनी विलसत सहित अनंत ॥ जलधिसरिस कोकहै रामभगवंत ॥ ॥ ४२ ॥ इतिश्रीबरवैरामायणे लंकाकांड समाप्त ॥ ६ ॥ चित्रकूट पयतीरसो सुरतरुवास ॥ लषण राम सिय सुमिरहु तुलसीदास ॥ ४३ ॥ पय नहाइ फलखाहु परिहरियआस ॥ सीय रामपद सुमिरहु तुलसीदास ॥ ४४ ॥ स्वारथ परमारथ हित एकउपाय ॥ सीयरामपद तुलसीप्रेमबढ़ाय ॥ ॥ ४५ ॥ कालकराल विलोकहु होइ सचेत ॥ राम नाम जपु तुलसी प्रीतिसमेत॥४६॥ संकटशोच विमोचन मंगलगेह ॥ तुलसी रामनामपर करि असनेह ॥ ४७ ॥ कालि नहिं ज्ञान विराग न योग समाधि ॥ रामनाम जपु तुलसी नित निरुपाधि ॥ ४८ ॥ रामनाम दुइआखर हिय हितु जानु ॥ रामलषणसम तुलसी शिखवन आनु ॥४९॥ माय बाप गुरु स्वामि रामकर नाम ॥ तुलसी जेहि न सोहाइ ताहि विधिवाम ॥ ५० ॥ रामनाम जपु तुलसी होइ विशोक ॥ लोक सकल कल्याण नीक परलोक ॥५१॥ तप तीरथ मख दान नेम उपवास ॥ सबते अधिक राम जपु तुलसी दास ॥५२॥ महिमा रामनामकी जान महेश ॥ देत परमपद काशी करि उपदेश ॥ ५३ ॥ जान आदिकवि तुलसी नाम प्रभाव ॥ उलटा जपत कोल ते भये ऋषिराव ॥ ५४ ॥ कलशयोनि जिय जानेउ नाम प्रताप ॥ कौतुकसागर सोखेउ करि जिय चाप ॥ ५५ ॥ तुलसी सुमिरतराम सुलभ फलचारि ॥ वेद पुराण पुकारत कहत पुरारि ॥ ५६ ॥ रामनामपर तुलसी नेह निबाहु ॥ यहिते अधिक न यहिसम जीवन लाहु ॥ ५७ ॥ दोषदुरित दुख दारिद दाहक नाम॥सकलसुमंगलदायक तुलसी राम ॥ ५८ ॥ केहिगिनतीमहँ गनती जस वनघास ॥ राम जपत भये तुलसी तुलसीदास ॥ ॥ ५९ ॥आगम निगम पुराण कहत करिलीक ॥ तुलसी नामराम कर सुमिरण नीक ॥ ६० ॥ सुमिरहु नामरामकर सेवहु साधु ॥ तुलसी उतरिजाहु भव उदधि अगाधु ॥ ६१ ॥ कामधेनु हरि नाम कामतरु राम ॥ तुलसी सुलभ चारि फल सुमिरत नाम ॥ ६२ ॥ तुलसी कहत सुनत सब समुझत कोय ॥ बडभाग्य अनुराग रामसन होय ॥६३॥ एकहि एक शिखावत जपत न आप॥ तुलसी रामप्रेमकर बाधक पाप ॥ ६४ ॥ मरत कहत सब सब कहँ सुमिरहु राम ॥ तुलसी अबनहिं जपत समुझि परिणाम ॥ ६५ ॥ तुलसी रामनाम जपु आलस छाँडु ॥ रामविमुख कलिलालको भयो न भाँडु ॥ ६६ ॥ तुलसी रामनाम सम मित्र न आन ॥ जो पहुँचाव रामपुर तनु अवसान ॥ ॥ ६७ ॥ नामभरोस नामबल नामसनेहु ॥ जनम जनम रघुनंदन तुलसिहि देहु ॥ ६८ ॥ जनम जनम जहँ जहँ तनु तुलसिहि देहु ॥ तहँ तहँ राम निबाहिब नामसनेहु ॥ ६९ ॥

इति श्रीगोसाईं तुलसीदासजी विरचितं बरवैरामायणं उत्तरकांड समाप्तम् ॥

इति श्रीबरवैरामायणं समाप्तम् ।

तुलसीकृत रामायणका गूढार्थ

अवस्था ४–जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय; इनके विभु ये हैं. जाग्रतके विश्व, स्वप्नके तैजस, सुषुप्तिके प्राज्ञ, तुरीयके ब्रह्म ।

अविद्या–जीवोंकी अल्पज्ञता ।

अंग–वेदके छः अंग हैं शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्ति, छंद, ज्योतिष, वेदके पढ़नेकी विधि को शिक्षा कहतेहैं. कल्प उसे कहतेहैं जिसमें सब कर्मोंके करनेकी रीति लिखीहै. व्याकरण उसे कहते हैं जिस्से शब्दोंकी शुद्धताका ज्ञान हो, जिसमें वेदके कठिन शब्दोंका अर्थ लिखाहुआहै,उसे निरुक्ति कहतेहैं, जिस्में अक्षर, मात्रा, वृत्तका ज्ञान हो उसे छंद कहतेहैं ।

आश्रम–चार आश्रमहैं. ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास ।

आकर–चारहैं. पिंडज अर्थात् जो देहके साथ उत्पन्न होतेहैं–जैसे मनुष्य पशु आदि. अंडज जो अंडेसे होतेहैं–जैसे, पक्षी साँप आदि. स्वेदज जो पसीनेसे उत्पन्न होतेहैं–जैसे चीलर, ढील आदि. उद्भिज्ज जो पृथ्वीको फोड़के होतेहैं जैसे वृक्ष आदि ।

आभरण–बारहहैं नूपुर, किंकिणी, हार, चूरी, मुँदरी, कंकण, बाजूबंद, कंठश्री,बेसर, बिरिया, शिरफूल, टीका ।

उपवेद–सामवेदका गन्धर्ववेद अर्थात् संगीतशास्त्र. ऋग्वेदका उपवेद आयुर्वेद अर्थात् वैद्यक. यजुर्वेदका उपवेद धनुर्वेद. अथर्ववेदका उपवेद शिल्पविद्या वा वास्तु ।

ऋतु छः हैं–वसंत-चैत, वैशाख । ग्रीष्म-ज्येष्ठ, आषाढ । पावस-श्रावण, भाद्रपद । शरद-क्वार, कार्तिक । हेमन्त-अगहन, पूष । शिशिर-माघ, फाल्गुन ।

कल्प–चारोंयुगको चौकड़ी कहतेहैं और हजारचौकड़ीका एक कल्प होताहै ।

गुण–तीनहैं–सत, रज, तम, राजाके चार गुण साम, दाम, दण्ड, भेद ।

चतुरंगिनीसेना–जिस सेनाके चार अंगहैं हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल ।

तत्त्व–पाँचहैं–पृथ्वी,जल, अग्नि, वायु, आकाश।

त्रिताप–तीनप्रकारका,दुःख. अध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक ।

त्रिदेव–ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।

त्रिविधकर्म–संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण ।

दिक्पाल–पूर्वदिशाके इंद्र, आग्नेयके अग्नि, दक्षिणके यम, नैर्ऋत्यके नैर्ऋत, पश्चिमके वरुण, वायव्यके वायु, उत्तरके कुबेर, ईशान्यके ईशान ।

पुराण–जिसमें पाँचवस्तुओंका वर्णन हो. सर्ग,प्रतिसर्ग,मन्वन्तर,वंश, वंशानुचरित-अठारहहैं ।

भक्त–चारप्रकारके होतेहैं आर्त्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी, विज्ञाननिवास ।

भक्ति–नवप्रकारकी है श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, चरणसेवा, अर्चन, वंदन, आत्मनिवेदन, दासता, सख्य ।

युग–चारहैं सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग ।

योनि–चौरासीलाख योनिहैं–नवलाख जलचर, सत्ताईसलाख स्थावर, ग्यारहलाख कृमि, दश-

लाख पक्षी, चौपाये तेईसलाख, मनुष्य चारलाख ।

राम-तीनहैं परशुराम, बलराम, श्रीरामचन्द्र ।

विद्या-ईश्वरकी सर्वज्ञताको विद्या कहतेहैं ।

शास्त्र-छः हैं. वेदांत, सांख्य, योग, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक ।

शृंगार-सोलह प्रकारके शृंगारहैं, अंगशुचि मज्जन, अमलवसन पहरना, जावक, केश सँवारना, माँगमे सेंदुर लगाना, भालमें तिलक, चिबुकपर तिल बनाना, मेंहँदी लगाना अरगजा अंगमें लगाना, भूषण सुगंध लगाना, मुखराग, दांत रँगना, अधरराग, काजर लगाना ।

सप्तऋषि-कश्यप, अत्रि, वसिष्ठ, विश्वामित्र, भरद्वाज, जमदग्नि, गौतम ।

समीर-शीतल, मंद, सुगंध ।

सिद्धि-८ हैं अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व ।

अक्षौहिणीकी संख्याप्रमाण वर्णन ।

संज्ञा.	रथ.	हाथी.	अश्व.	पदचर.	जोड़.
पत्ती.	१	१	३	५	१०
सेनामुख.	३	३	९	१५	३०
गुल्म.	९	९	२७	४५	९०
गण.	२७	२७	८१	१३५	२७०
वाहनी.	८१	८१	२४३	४०५	८१०
प्रतिना.	२४३	२४३	७२९	१२१५	२४३०
चमू.	७२९	७२९	२१८७	३६४५	७२९०
अनी.	२१८७	२१८७	६५६१	१०९३५	२१८७०
अक्षौहिणी.	२१८७०	२१८७०	६५६१०	१०९३५०	२१८७००

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम) यन्त्रालयाध्यक्ष-बंबई.

श्रीः।

अथ रामायणकोष।

सज्जनमहाशय! आपकी जो रामायणके कोष छपनेकी बहुत दिनोंसे रुचिथी सो लीजिये यह कोषभी अद्वितीय तैयार होगयाहै इसमें आप रामायणके शब्दोंका अर्थ सोदाहरण पावैंगे अर्थात् कौन शब्द रामायणमें कहांपर आयाहै वह रामायणकी चौपाई लिखकर विवरण करदियागया है और कांडोंकी पहँचानके निमित्त उसका एक एक अक्षर लिखदियागयाहै जैसे बालकाण्डका (बा०) अयोध्याका (अ०) आरण्यका (आ०) किष्किन्धाका (कि०) सुंदरका (सुं०) लंकाका (लं०) उत्तरकाण्डका (उ०) और क्षेपक कथा का (क्षे०) लिखाहै और इस कोषमें यह भी विचार रक्खाहै कि जो औरभी भाषा तथा छोटी २ संस्कृत पुस्तकोंकाभी अर्थ इसमें मिलसक्ताहै यदि इस्से आपका उपकारहुआ तौ फिर एक वृहत् कोष निर्माण कियाजायगा इसमें (ब० व०) यह दो अक्षर भाषामें एकसे होनेके कारण उनका विवरण नहीं कियागयाहै (क्ष) और (छ) के शब्द दोबार आगयेहैं जैसे (क्षोभ) और (छोभ) यह दोनो स्थानोंमें मिलेंगे आपके प्रसन्नहोनेपर परिश्रम सफल होनेकी आशा है.

दोहा–ध्यान रामका कीजिये, जो मंगलदातार ॥
लषणजानकीसहितनित, सुमिरहुपवनकुमार ॥ १ ॥

(अ)

अ–विष्णु.

अकथ–न कहनेके योग्य [अकथ अलौकिक तीरथराऊ बा०]

अकथ्य–जो किसी प्रकार वर्णन न होसकै.

अकथनीय–जो कहनेकी ताकतसे बाहर हो.

अकानि–सुन करके.

अकरण–विनाकारण. [मैं अकरण कोही परशुरामवाक्यम्. बा०]

अकल–हाथ पाँव आदि अगविना. [अकल अनीह अभेद बा०]

अकसर– अकेला, [अकसर आयउ तात लं०]

अकाजेउ–अकाज किया.

अकाम–कामनारहित.

अकाल–वे समय.

अकंटक–कांटेसे रहित. विघ्नरहित [आये करन अकटक राजू अ०]

अकिंचन–धनहीन.

अकुल–जिसके कुल नही.

अकुलाना–व्याकुल होना.

अकुंठ–कड़ा जो टूट न सके.

अकूपार–समुद्र.

अखय–नाश रहित

अक्षय–जोक्षय न हो, नाश न हो

अखण्ड–टूटे नहीं. पूरा. [दिखरावा मातहि निज, अद्भुत रूप अखण्ड बा०]

अखारा–खेलनेकी जगह, या स्थान, नाच, कुश्ती और कशरत करनेकी जगह.

अखिल–सब. [अखिल लोककर राऊ लं०]

अग–जो न चल सके, पर्वत वृक्ष [अग जग जीव नाग नग देवा ल० का०]

अगणित–जिसकी गिनती न हो सके.

अगम–अथाह, जहां जा न सके,

अगर– } एक प्रकारका सुगंधित काष्ठ.
अगरु– }

अग्र–आगे. [चली अग्र करि प्रिय सखि सोई बा०]

अगहुड़–पहिले पहल.

अगाध–जिसकी थाह न हो,

अगुण–गुणहीन.

अगोचर–इन्द्रियां ज्ञानके बाहर या परे, इन्द्रियोकी गतिसे बाहर.

अघ–पाप. [भये सकल अघरूप बा०]

अघटित–जो नही हुवा

अघात–चोट, छेदन. [बुन्द अघात सहैं गिरि कैसे कि०]

अघाती–तृप्त होती.

अचगरी–नटखटी

अचल–पर्वत जो चल न सके.

अचला–पृथ्वी.

अचंचल–शांत.

अछत–होते [आपु अछत युवराज पद,रामहि देहिनरेश अ०.]

अज–जिसका जन्म नही, ब्रह्मा.

अजर–बुढापा रहित.

अजामिल–एक पापी ब्राह्मण.

अजित–जो जीतानही गया.

अजिन–मृगछाल.

अजिर–आंगन.

अजय–न जीतने योग्य.

अज्ञ–मूर्ख.

अज्ञता–मूर्खता.

अटन–फिरना, [चलेरामबन अटन पयादे अ०]

अट्टहास–ठठाके हँसना [अट्टहास शठकीन्हा ल०]

अणु–सूक्ष्म.

अतंक–डर, काल.

अतनु–कामदेव.

अतर्क–जिस्मे तर्क न होसके.

अतिथि–पाहुना.

अतिशय–विशेष, बहुतही.

अतीत–त्यागी.

अतुलित–जिसकी तुलना नहीं, [अतुलित बल अतुलित प्रभुताई]

अत्र–इसमे.

अत्रिप्रिया–अनसूया. अत्रि ऋषिकी पत्नीका नाम.

अथाई–बैठक.

अदभ्र–बहुत

आश्चर्यित–आश्चर्य दिखलाने वाला.

अदिति–दक्षप्रजापतिकी कन्या,

अदेय–न देने योग्य, [तुमको नहिं अदेय कछुमोरे बा०]

अदृश्य–छिपा हुआ.

अद्भुत–विचित्र.

अद्रि–पहाड़.

अद्वैत–जिसके समान दूसरा नहीं.

अध–नीचे.

अधगो–नीचेकी इंद्रिय.

अधर–नीचेका होठ [सुखहिंअधरलागिमुहलाटी अ०]

अधिकारी–मालिक.

अधिप–राजा.

अधिवास–ठहरनेका स्थान.

अधीश–मालिक, स्वामी
अनअधिवास–विधवापन.
अनइस–खराब बुरा [भलाकहत जो अनइसलागा अ०]
अनख–कुढन.
अनघ–पापरहित.
अनट–अनुचित.
अनत–दूसरी जगह
अनपायिनी–नित्य
अनन्य–जो एकके सिवाय दूसरे. का आश्रय न करै.
अनमनी–उदास [कह अनमनि हँसि हँसि कह रानी अ०]
अनल–आग [हुमे अनलमे बार-बहु ल०]
अनवद्य–दोषरहित.
अनायास–विनापरिश्रम.
अनहित–बुरा.
अनाथ–जिसका कोई सुध लेने-वाला नही.
अनादर–निरादर.
अनादि–जिसका आदि नहीं.
अनामय–रोगरहित. [ब्रह्मअना-मय अज भगवता ल०]
अनिन्दित–निंदारहित.
अनिमनी–उदास.
अनिल–पवन.
अनिर्वाच्य–जो कहा न जासकै.
अनी–फौज.
अनीक–सेना [रिपुअनीक नाना-विधि आई ल०]
अनिप–सेनापति.
अनीश–स्वामीरहित.
अनीह–चेष्टारहित [इच्छाहीन]
अनु–ऊपर, पीछा, समान
अनुकथन–बारंबार कहना.
अनुकम्पा–दया, कृपा.
अनुकरण–नकल.
अनुकूल–प्रसन्न, अनुसार [योग लग्न ग्रह वार तिथि, सकलभ-ये अनुकूल बा०]
अनुगामी–आज्ञाकारी.
अनुग–दास.
अनुग्रह–कृपा.
अनुचर–सेवक [अंगद हनुमत अनुचर जाके लं०]
अनुचरी–दासी.
अनुज–छोटाभाई.
अनुजा–छोटीबहिन.
–सवदा.
अनुपम–जिसकी उपमानहीं.
अनुभव–ज्ञान.
अनुमान–अन्दाजन भटकल[कै रौविविध अनुमान उ०]
अनुमानी–अटकलसे
अनुमोदन–आनन्दपूर्वक
अनुराग–स्नेह, प्रेम
अनुरूप–सदृश, अनुसार [बर अनुरूप बरात नभाई बा०]
अनुरोध–उपरोध [रोक]
अनुवाद–उल्था
अनुभाऊ–महिमा
अनुशासन–आज्ञा [तब रघुप-ति अनुशासनपाई ल०]
–ढूंढना
–पीछे पीछे चलनेवाला
अनुहार–साक्षी, अनुसार.
अनृत–झूठ असत्य.
अनेक–बहुत
अनैसे–कुदृष्टिसे, [बचुतवचित-व अनैसे बा०]
अनंग–विनाशरीरका [कामदेव-का नाम]
अन्यथा–दूसरी तरह.
अन्वहं–निरतर
अपकार–निरादर.
अपकीर्ति–अपयश.
अपडर–झूठाडर,
अपत–अप्रतिष्ठा.
अपभय–अपना डर [अपभय-कुटिल महीप उराने बा०]
अपर–दूसरा
अपलोक–अपयश
अपवर्ग–मोक्ष [तातस्वर्ग अपव-र्ग सब सु०]
अपवाद–अयश कलंक,
अपहरना–दूरकरना, हरणक-रना.
अपहारी–चुरानेवाला.
अपान–गुदामें रहनेवाला वायु,
अपि–भी
अपेल–जो हिल न सके [प्रभु-आज्ञा अपेल श्रुति गाई सु०]
अप्रतिहत–अपीडित विनारोक-
अर्प्या–दिया हुवा.
अफल–निष्फल.
अबला–स्त्री
अबाधा–जिस्में किसीप्रकार रो-
अबुध–अज्ञानी निर्बुद्धि
अवध्य–न मारने योग्य,
अभय–भयरहित [अभयभई भ-रोसजियआवा बा०]
अभि–सब ओरसे.
अभिनन्तर–भीतर, अतःकरण.
अभिजित–नक्षत्रविशेष.
अभिनन्दन–सेवा, १ संतोष २ गुणोंकी प्रशसाका अनुमोदन [गुरुकेवचनसचिवअभिनदन अ०]
अभिमत–वांछित.
अभिराम–सुन्दर
अभिषेक–राजसिंहासनका ति-लकस्नान [जेहि देखौ अबन-यनभर, भरतराज्यअभिषेक अ०]
अभीष्ट–अभिलाषित
अभूतरिपु–शत्रुरहित,
अभेद्य–भेदरहित, नछिदे,
अभंगु–जो न टूटे,
अमर–देवता
अमरता–देवत्व न मरनापन [सु-धासराही अमरता बा०]
अमराई–आमकी वारी
अमरावती–इन्द्रपुरी
अमान–प्रमाणसे बाहर, अहकार रहित
अमानुष–जो मनुष्यसे नहोसके, [सकल अमानुष कर्म तुम्हारे बा०]
अमित–बहुत,
अमिय–अमृत.
अमोघ–सफल.
अम्बर–आकाश, वस्त्र,
अम्बा–माता, दुर्गा [जो सिय भवनरहै कह अम्बा अ०]
अमंगल–बुरा
अय–लोहा.
अयन–घर [करुणाअयन बा०]
अय–यह.
अयुत–१०००० दशहजार.
अरगाई–चुपहोकर [कहि अस वंचन रहा अरगाई लं० क्षे०]
अरगानी–चुपहुई
अरध–आधा.
अरधंग–आधा शरीर.
अर्णव–समुद्र, उदधि,
अरनी–अग्निमथनेकी लकडी.
अरि–वैरी, शत्रु [उदासीनअरि-मीतहित बा०]
अरुण–लाल.
अरुणचूड–मुर्गा,
अरुणारे / **अरुनारे**–लाल सुर्ख [अधर अ-रुनारे बा०]
अरुणशिखा–मुर्गा,
अलक–बालोंकी लट जो गालों-पर झूलतीहै.
अलखित–जो लखा न जाय.
अलक्षित–जो न दीखै.
अलच्छि–दरिद्री.
अलान–जंजीर [राजअलान स-मान अ०]
अलि–भौरा १ सखी २
अलिनि–भ्रमरी १, सखियां २, [मिरा अलिनि मुख पकज रोकी बा०]
अलीक–असत्य
अलीहा–झूठा [एक कहहि यह बात अलीहा अ०]
अरुझि–उलझकर.
अलोल–चचलतारहित.
अलौकिक–लोकसे बाहर
अलंकृत–शोभित, भूषित, अल-कारयुक्त [आखर अर्थ अल-कृत नाना बा०]
अवकलित–निश्चय कियाहुवा
अवगति–ज्ञान
अवगाह–अथाह
अवघट–अडबड
अवचट–औचक, अचानक.
अवज्ञा–अपमान
अवडेरि–त्यागकरके [पुनि अव-डेर मराइन ताही बा०]
अवढर–नीचपरभीदयाकरनेवाला
औढर–नीचपर दया करनेवाले
अवतंस–शिरोभूषण, मस्तकका गहना [हरवंशअवतस अ०]
अवध–अयोध्यापुरी, सीमा
अवधि–सीमा.
अवनि–पृथ्वी.
अवनिप–पृथ्वीपति राजा
अवराधक–सेवक [कहहि सत तवपद अवराधक आ०]
अवराधना–सेवा करना.
अवरेव–तिरछा, उलटके पदको जोडना
अरेव–ध्वनियुक्त.
अवलोकय–देख
अवसान–नाश, मरण.
अवसि–निश्चय करके
अवशेषित–बचाहुआ
अवसेरी–विलम्ब. [भये बहुत दिन अति अवसेरी अ०]
अवाधी–बाधाहीन.
अविकारी–विकाररहित जन्म मरणादि विकार शून्य.
अविगत–चराचरमें व्याप्त.
अविचल–स्थिर.
अविछीन–निरंतर जो कभी बी-चमें न टूटे.
अविद्या–मूर्खता अज्ञान [वि-द्या अपर अविद्या दोऊ आ०]
अविद्यामंध–देहमें आत्मबुद्धि.
अविनय–ढिठाई.
अविनाशी–जिसका कभी नाश न हो.

अविरल–निरंतर [अविरल भक्तिर्मांगवर अ०]
अविरोध–विरोधरहित.
अविवेक–विवेकशून्य, अज्ञान.
अव्यक्त–प्रकृति ईश्वर गुप्त.
अव्याहत–न रोकने योग्य. [अव्याहत गति होइहि तोरी उ०]
अष्टादश–१८ अठारह.
अशन–आहार.
अशनि–वज्र,
अशिव–कल्याणरहित, अमंगल.
अशेष–शेषरहित, सम्पूर्ण.
अस–ऐसा.
असमय–कुसमय, अकाल.
असमसर–कामदेव
असमंजस–दुवधा, [असमजस वश भये रघुराई अ०]
असहाई–विना सहायका.
असाधी– } जिसके दूर होनेकी
असाध्य– } आशा नहीं.
[illegible]–तलवार १, है २, ऐसी ३, [शीतल निशि तव असिवर-धारा,]
[illegible]–श्याम.
[illegible]–दैत्य.
असुरसेन–राक्षसोंकी सेना.
अशौच–अशुद्धि.
अस्थिमात्र–केवल हाड, [अस्थिमात्र रह गयउ शरीरा बा०]
असंभावना–अनिश्चय.
असम्मत–प्रतिकूल.
अह–दिन.
अहमिति–अहंकार.
अहह–अत्यन्त खेदमें प्रयोग करनेका शब्द.
अहि–सर्प.
अहिनी–साँपिन.
अहिराज–नागराज.
अहिवात–सौभाग्य, सुहाग.
अहेर–शिकार.
अहेरी–शिकारी.
अहो–यह शब्द आश्चर्य, बडेभाग्य अतिदुःखमें आताहै, [अहो भाग्य मम अमित अति, सु० अहो धन्य लक्ष्मण अ०]
अहं–हम, अहंकार.
अंक–अक्षर, गोदी, चिह्न, [कुअंक भालके, बा०, लगेसुमित्रा अंका उ०]
अंकित–चिह्नित, हस्ताक्षर किया हुवा.
अंग–शरीर.
अंगरी–बख्तर.
अंगवनि–सहना.
अंचल–आंचल, पल्ला.

अम्ब–माता
अम्बक–आंख, नेत्र, माताका.
अम्बर–वस्त्र, आकाश
अम्बरीष–एक राजाका नाम [सुधि कर अबरीष दुर्वासा आ०]
अम्बु–जल.
अंबुधर–जलधर.
अंबुधि–समुद्र.
अंबुपति–वरुण.
अंभोज–कमल.
अंजि–अजन लगाकर.
अंगलि–अंगुरी
अंड–अण्डा, ब्रह्माण्ड.
अंडकटाह–ब्रह्माण्ड.
अंतर–बीच
अंतर्यामी–हृदयका जानने वाला ईश्वर, [तुम अतर्यामी भगवान लं० क्षे०]
अंतर्धान–गुप्त होना.
अंतरहित–गुप्त.
अंतावरि–आंत.
अंबा–अवा [अंबा इव सुलगै छाती अ०]

(आ)

आइ–आयकर.
आकर–खान, जहां धातु वा उपधातु रत्नादि खोदनेसे प्राप्त होते हैं
आकुल–पूर्ण, व्याकुल
आकृति–आकार, सूरत.
आखर–अक्षर [आखर मधुर मनोहर दोऊ बा०]
आगर–पूर्ण, चतुर.
आगरी–चतुरी.
आगार–घर.
आगिल–अगली [आगिल कथा समास समेता ल० क्षे०]
आचरण } करतूति.
आचरणी }
आचरहीं–आचरण करत हैं.
आतप–धूप.
आत्महन–आत्महत्यारा.
आतुर–उतावल.
आदिकवि–वाल्मीकि मुनि(जान आदिकवि नाम प्रतापू बा०)
आदेश–आज्ञा.
आन–शपथ, कसम.
आनन–मुँह [तासु तेज समान प्रभु आनन लं०]
आनवी–लाइयो. .
आपन्न–आपत्तिमें पड़ा हुवा.
आभीर–अहीर, गोप.
आमलक–आंवला.

आयल–बाड़ा.
आयतन–घर.
आयसु–आज्ञा.
आयुध–शस्त्र [आयुध अनेक प्रकार आ०]
आरज } श्रेष्ठ, बड़े लोग.
आर्य्य }
आरजसुत (आर्यपुत्र) पति, [आरजसुत पद कमलविनु अ०]
आरत } अत्यन्त दुःखी.
आर्त्त }
आरति–पीडा, दीनता, अति प्रीति.
आराति–वैरी.
आराधन–सेवा.
आराध्य–जिसकी आराधना की जाय.
आराम–सुख, १ बगीचा २ उपवन, [परमरम्य आराम यह, जो रामहि सुखदेत बा०]
आरूढ–चढा हुआ
आरोप–अन्य, कल्पना.
आरोपण–चढाना
आर्त्त–पीडित, व्याकुल.
आलय–घर [सदा सर्वगत सर्व उरालय आ०]
आलवाल–थांवला.
आव–आता.
आवर्त्त–भवंर.
आवलि–पंक्ति.
आवाहन–बुलावा, मंत्रादिसे देवतोंको बुलाना.
आश्रित–आश्रयलिये हुये, सहारा लिये हुये
आश्रमी–ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यस्त.
आसक्त–मोहित.
आसावसन–दिगम्बर.
आसीन–बैठाहुवा.
आशु–जल्दी.
अञ्जलिगत–अंजलीमें आये वा गये
आंक–अंक, [अक्षर.]
आंकुरे–अखुआ निकले उत्पन्न हुए.

(इ)

इकअङ्ग–एक ओरका शरीर.
इच्छित–वांछित [इच्छित फल बिन शिव अवराधे बा०]
इत–इस.
इतराई–इतरानी.
इम (इमि)–इस तरहसे.
इदमित्थम्–ऐस ही, यह इतना ही, [इदमित्थकहिजातनसोई बा०]

इष्टदेव–उपास्य देवता, जिसके समान दूसरेको न मानता हो
इह–यह निश्चयात्मक शब्द, उगली निर्दिष्ट लक्षकियाहुवा
इन्दिरा–लक्ष्मी [नमामि इन्दिरापतिम् आ०]
इन्दु–चंद्रमा
इन्द्रजाल–बाजीगरी [सोनर इन्द्रजाल नहि भूला उ०]
इन्द्रजीत–रावणका पुत्र.
इति–अतएव, सीमा.

(ई)

ई–लक्ष्मी
ईशान–ईश्वर, शिव, पूर्व.
ईर्षना–लालसा.
ईश–मालिक, ईश्वर [अंबईश आधीन जग अ०]

उ–शिव.
उकाठि–सहारा के बिगडा हुवा काठ

उग्र–तीव्र, भयानक [उग्र विलोकन प्रभहि विलोका लं०]
उघरे–खुले
उच्चाटु–उखडना, चित्त न लगना
उचित–योग्य.
उछंग–गोदी. [सखी उछंग बैठपुनि जाई बा०]
उजागर–विख्यात.
उज्जैनी–उजैन नगर.
उडु–तारा.
उक्ति–वचन
उत्कण्ठा–चित्तकी घबराहट.
उत्कर्ष–बडाई, बडो
उत्पात–उपद्रव [अस उत्पात तातविधि कीन्हा अ०]
उत्सव–उछाह, प्रसन्नता.
उत्तुङ्ग–ऊंचा.
उदक–जल.
उद्घाटी–उघारा, उदयाचल, [तव महिमा उदघाटी बा०]
उदधि–समुद्र, सिंधु, जलनिधि, वारीश.
उद्भव–उत्पत्ति
उदयगिरि–उदयाचल.
उदर–पेट.
उद्वेग–उत्कण्ठा, भय. [मुनिउद्वेग न पावैं कोई]
उदार–दानी. बड़ा, श्रेष्ठ.
उदासा–आशारहित.
उदासी–संसारसे विरक्त.
उदासीन–शत्रुमित्रभावरहित.

-उपाय, पूजा [illegible] सामग्री,

उपधान–तकिया.

उपनिषध–ज्ञानकाण्ड.

उपपातक–छोटा पाप, [जे पातक उपपातक अहहीं अ०]

उपवन–विहार करनेकी वाटिका

उपरागा–यन्त्रणा ग्रहण [भयउ पर्व बिन रवि उपरागा, ल०]

उपल–पत्थर.

उपवरहन–तकिया

उपराजा–उत्पन्न किया.

उपवासा–उपास व्रत करना, भूखे रहना.

उपवीत–जनेऊ

उपहार–सौगात, भेंट.

उपाटी–उखाडके, [लीन्हीं तेहि एक शैल उपाटी ल०]

उपाधि–उपनाम, उपद्रव.

उपारे–उखाडे.

उपाया–उपजाया.

उपासा–उपवास, व्रत.

उपासना–भक्ति.

उबरे–बचगये.

उबारा–बचाय लिया. [यहि अवसरको हमहि उबारा ल०]

उभय–दो, दोनों.

-दो, दोनो.

पार्वती.

उयउ–उदय हुवा.

उर–हृदय.

उरग–सर्प, सांप.

उरगाद–गरुड

उरू–जांघ.

उरविजा–भूमिसुता जो पृथ्वीसे उत्पन्नहुई, जानकीजी,

उलूक–उल्लू.

उहार–उछार.

ऊना–कमती [सुनकपिजियज- निमानसिऊना कि०]

(ऋ)

ऋक्षेश–रीछोंकेराजाजाम्बवन्त [बूढ भयउँ अब कहै ऋक्षेशा कि०]

ऋतुराज–वसन्तऋतु.

ऋषि–सूक्ष्मदर्शीमुनि

ऋषिनायक–ऋषियोंमे श्रेष्ठ बडे.

(ए)

एकाकिन्ह–अकेला.

एकाकी–अकेला, एकही, मात्र [रथकढे तुरत एकाकी लं०]

ए[illegible]–ऐसा

एवमस्तु–ऐसाही हो [एवमस्तु- कहिरमानिवासा आ०]

(ऐ)

ऐ–शिव.

ऐक–अटकल.

ओघ–समूह

ओड़नखांड़े–पटेबाज

ओड़िअहि–आड, रोको

ओदन–भात [दधि ओदन लपटाय बा०]

ओधे–लगे.

ओर–अत, छोर.

ओरे–बनौरियां, ओले.

क–ब्रह्मा, विष्णु, वायु, यम, सूर्य, अग्नि, आत्मा, राजा, जल

कइकइ–राजा दशरथकी रानी

कच–बार, बाल.

कच्छप–कछुआ

कज्जलगिरि–काला पहाड [जनुसपक्षकज्जलगिरिजैसा सु०]

कटक–दल.

कटाह–कडाहा.

कटि–कमर.

कटिसूत्र–करधनी, मेखला.

कटु–कडुआ

कड़िहारू–कर्णधार, मल्लाह, धीवर.

कत–क्यों.

कति–कितना.

कथनीय–कहने लायक.

कदली–केला [काटेपर कदली- फलै सुं०]

कदम्ब–कदमका वृक्ष, समूह

कद्रु–नागोंकी माता, कश्यपमुनिकी स्त्री.

कनककशिपु–हिरण्यकश्यप [कनककशिपु और हाटक- लोचन लं०]

कनकलोचन–हिरण्याक्ष दैत्य.

कनी–कनिका.

कपटभू–मायाभूमि.

कपाट–किंवाड.

कपाल–खोपरी [जरतविलोके- उँ जबहि कपाला ल०]

कपिकुंजर–बदरोंमें बड़ा.

-बदरोंका सरदार अब-

क[illegible]–[illegible], सांख्यदर्शनके कर्ता मुनिका नाम.

–कबूतर

कपोल–गाल

कबारू–हुनर.

कमठ–कच्छप.

कमनीय–सुघर, सुन्दर.

कमला–लक्ष्मी

कर–किरन, १ हाथ, २ सूंड, ३ महसूल, ४ [रविकर निकर निहारि १, दुहुँ कर कमलसुधा- रतधाना २, करि कर सरिस शुभग भुजदण्डा ३, तुमसन कर मांगत दशशीशा ४]

कर[illegible]–दर्द.

करज–अंगुली.

करतरी–हथेली

करतल–हथेलीपर, [करतल गत न परहि पहिचानै बा०]

करतव्य–करने लायक

करतूती–करतव, [जनु रतनी विरचि करतूती बा०]

करन–करना, कारण कान.

करनीय–करने लायक

करबरे–विपदा, [[illegible] अनेक करबरे टारी बा०]

करम–कर्म

करषा–ईर्षा, बैर.

कराधि–[illegible]

कराग–[illegible], मगाल.

कराल–भयकर

करि–हाथी, करके, [प्रभु भुज करि कर सम ल० १, करि न जाय सरमज्जनपाना बा० २]

करिनी–हथिनी

करीला–करीलका वृक्ष, जिसमे पत्ता नही होता

करुई–करूई, दुधीदार लुटिया, [करुइमै माई अ०]

करुन–दया.

करुणा करति–गुण वर्णन कर विलाप करती है.

कर्णधार–पतवारी, मल्लाह.

कल–अव्यक्त, मधुर ध्वनि.

कलकंठ–कोयल, पिक मिठबोली.

कलप–कल्प, ब्रह्माका दिन, रचना [पलक कल्पसम जात लं०]

कल्पतरु–कल्प वृक्ष.

कलपना–तर्क, १ लालसा, २ कष्ट, ३ रचना ४ [तजहु तात अब वृथा कलपना, १ मारे हृदय परम कलपना २ ल०]

कलाि[illegible]–[illegible] टाकर

कल्पित–मिथ्या बनाया हुवा. कल्पना किया हुवा

कलबल–कलकल, तोतले, [कलबल वचन कहत बा०]

कलभ–हाथी या ऊंटका [illegible]

[illegible] [illegible] [[illegible] [illegible] कलमले बा०]

[illegible]

कलहंस–राजहंस

कला–चन्द्रका सोलहवाँ भाग, अंश, अठारह निमिषकी एक काष्ठा, विद्याकी ६४ कला [सकल कला सब विद्याहीना बा०]

कला[illegible]–समूह

कलि–कलियुग

[illegible]–[illegible]कालके [illegible]

कलि[illegible]–[illegible] हुवा, सुन्दर

[illegible]–कर्मनाशा नदी

[illegible]–[illegible] कीचड

कलुष–पाप

कलेवर–शरीर

कलेश–दुःख

कलंक–अपयश

कलोलिनी–तरंगवाली नदी, [कलोलिनी चारु गंगा उ०]

कवल–ग्रास

कवि–कविता करनेवाला, [[illegible] वि न होउ नहि चतुर कहाउ बा०]

कवित्त–छन्द विशेष

कबन्ध–दैत्य विशेषका नाम.

कश्यप–ऋषिका नाम जो सृष्टिके करता हुये है,

कसे–कसकर, १ कसौटीपर रगड़ा, वा कसौटीपर रगडनेसे, २ [कटिपटकसे १ बा० कसे कनकमणिपारसपावे २]

कहानी–कथा.

काऊ–कबहू

काक–कौआ.

काकपक्ष–शिरके पट्टे,

काकु–व्यंग्यवचन.

काखासोती–दोनो कांखसे कुक्षपर्यन्त, [पीतउपरना कांखासोती बा०]

काछे–पहरे.

कानन–वन, १ दोनों कान २ [चौदहभवनाहि जायनृपकानन १ ल० काननकुण्डलसोहत बा०]

कानी–संकोच, लज्जा,

काम–कामना, कामदेव, सुंदर,

कामद–मनोरथका देनेवाला,

कामदुग्धाई–कामधेनु.
कामना–इच्छा.
कामरूप–जैसा चाहै वैसा रूप-धरनेवाला, [कामरूप जानहिं सब माया बा०]
कार्मुक–धनुष.
कारक–करनेवाला,
कारज–(कार्य) काम.
कारण–प्रयोजन.
कारणकरण–कारणके करनेवाले, ईश्वर.
कारी–काली, ठीक ठीक.
काल–समय, मृत्यु.
कालकूट–विष.
कालराति–प्रलयकी रात्रि, [कालराति निश्चरकुल केरी लं०]
कालिका–कालिकादेवी.
काली–श्यामवर्ण. कालिकादेवी
कांजी–राईका खमीर.
कांधी–कंधेपर धारणकिया,
किन–क्योंनहीं.
किन्नर–देवजाति.
किमपि–कुछभी.
किमि–क्योंकर.
किंवा–क्या तो.
किरातिन–बनजाति विशेष भिल्लिन.
किरिच–टुकड़ा.
किरीट–मुकुट.
किलकिला–एकप्रकारका वानरोंका शब्द.
किशलय–कोमलपत्ते फूलकी-पंखडियां, [नूतन किशलय मनहु कृशानू सुं०]
किसु–किसका.
किशोर–सोलहवर्षकी अवस्थावाला.
किंकर–सेवक.
किंकरी–दासी.
किंकिणी– किंकिनी– करधनी, तगडी.
किंशुक–टेसू, [कुसुमितकिंशुक-के तरु जैसे लं०]
कीट–कीडा.
कीती–कीर्ति [जासु सकल मंगलमय कीती]
कीर्ति–यश, नामवरी.
कीर–तोता.
कील–खरका.
कीश–वानर.
कु–निन्दा, पृथ्वी, बुरा.
कुकाठु–बुराकाष्ठ, [जिमिघकठ, कुकाठु अ०]
कुचाह–बुरा समाचार.

कुजोगा–कुचाला, बुरेयोगवाला.
कुयोगी–योगीके प्रतिकूल.
कुटीर–कुटी, [राजत पर्णकुटीर अ०]
कुठारी–कुल्हाडी.
कुठाहर–बुरा स्थान.
कुतर्क–नीच विचार.
कुदृष्टि–पापदृष्टि, खोटी चितवन.
कुधातु–बुरी धातु.
कुपथ–खोटा रस्ता.
कुपथ्य–अयोग्य भोजन,
कुवलय–कमल [कुवलय विपिन कुन्त वन सरिसा सु०]
कुविहंग–बुरा पक्षी.
कुमार–बटुक, कुआरा, अवस्था विशेष.
कुमारी–कन्या, विना व्याही
कुमुद–बबूला कोई, १ वानर विशेषका नाम. २ [कुमुदबन्धु कर निन्दकहासा, बा० १ कुमुद नाम कपि वानर लं०]
कुमुदबन्धु–चंद्रमा.
कुररी–एक चिडिया जलाशय पर रहनेवाली.
कुराई–पांव फंसने योग.
कुरी–सब जाति.
कुरुचि–खोटीवासना.
कुरंग–बुरा रंग १ हरिन २ [जेहि विधि कपट कुरंग संग २ आ०]
कुल–वंश.
कुलह–टोपी, शिरपर धारण करनेका वस्त्र विशेष सिला हुआ [कुमति विहंग कुलह जनु खोली अ०]
कुलि–सब.
कुलिश–वज्र, हीरा.
कुशली–सुखी.
कुशकेतु–राजा जनकके भाईका नाम है.
कुशल–कल्याण.
कुसमउ–आपद कालमेंभी.
कुसुमित–फूला हुवा.
कुम्हड़–कोंढा, सीताफल.
कुंकुम–केशर. [मृगमद सुन्दर कुकुम सीचा बा०]
कुंचित–लिपटे हुए बलखाये हुए.
कुंजर–हाथी.
कुंद–श्वेत पुष्प विशेष फूलका नाम चमेली [कुंद इन्दु सम देह बा०]
कुंभ–हाथीका मस्तक, घड़ा.
कुंभकर्ण–रावणके भाईका नाम, घडे समान कानोंवाला.

कुंभज–जो घडेसे जन्मे, अगस्त्य.
कुंत–बरछी.
कुँवर–राजकुमार, [राजकुँवर-तेहिअवसर आये बा०]
कूजहिं–गुजार करतेहैं
कूट–पहाडकीचोटी, हँसी श्लेष युक्त कविता.
कूटी–व्यङ्गवचन.
कूप–कुआँ.
कूर–मूर्ख, कपटी.
कूल–किनारा, समीप, [सुमसुग्रीव कूलद्रुम दोऊ लं०]
कूंड़ि–लडाईमें पहरनेकी लोहेकी टोपी.
कृत–करतूति, कियाहुवा, उपकार.
कृतकृत्य–पूर्णकाम.
कृतांत–यमराज, [तुम कृतान्त भक्षक सुन भ्राता लं०]
कृतनिन्दक–किये हुएकी निंदा-करनेवाला
कृतज्ञ–उपकारको मानने वा रा-मझनेवाला.
कृपाण–तलवार.
कृमि–कीडा.
कृष–दुबला, दुर्बल.
कृषी–खेती.
केकी–मोर.
केतु–ध्वजा, १ राहुका भ्राता २ [बंदनवारपताकाकेतू १ अधमग्रहकेतु २]
केर–कर, यथा.
केलि–खिरवाड.
केवट–मल्लाह निषाद.
केवल–एकही.
केसरी–हनुमानजीकेपिता, केशरकारंग, सिंहविशेष
केहरी–केसरी, सिंह, [शशिके-हरीगगनवनचारी सु०]
कैकय–कैकयदेश कश्मीर.
कैटभ–दैत्य विशेष, मधुनामदैत्य-का भाई.
कैर–कोई.
कैरव–कुमुद, सफेद कमल, [प्र-तिरविकुलकैरवविपिन अ०]
कैवल्य–मुक्ति.
कोक–चकवा.
कोका–चकई चकवा, [निशिदि-नहिंअवलोकहिकोका बा०]
कोखे–कोख.
कोट–किला, करोड़१०००००००
कोकनद–लाल कमल.
कोकी–चकई.
कोटर–वृक्षका फोंफळा.
कोटि–सौलाख.

कोदण्ड–धनुष,[बिहसि कठिन, कोदंड चढावा आ०]
कोदव–कोदों
कोपर–पात्रविशेष, कोंपल.
कोपी–कोईभी, क्रोधी.
कोविद–पण्डित, विद्वान.
कोये–आंखका सपूर्ण श्वेतढेला. वा आखका कोना.
कोरि–खुरचकर.
कोरी–करोड, १ जाति विशेष,२ [रघुपति विमुख यतनकर कोरी उ०]
कोल–शूकर, सुअर, जाति विशेष.
कोलाहल–गुल गपाडा.
कोष–कमलकामध्य, खजाना, तलवारका म्यान.
कोशल–देशविशेषका नाम अवध.
कोशला–अयोध्यापुरी [एकभूप रघुपतिकोशला उ०]
कोशलपुरी–अयोध्यापुरी.
कोह–क्रोध.
कोहबर–वह स्थान जहां विवाहमें स्त्रियां वरको लेजाकर कौतुक रहस्य करतीहैं और भोजन कराती है.
कोहाव–रूठना [तुमहि कोहाव परमप्रिय अहई अ०]
कोही–क्रोधी, तामसी.
कौ–पृथ्वी.
कौतुक–खिलवाड.
कौतूहल–तमासा.
कौमुदी–चंद्रमाकी उजियाली या चांदनी.
कौर–ग्रास.
कौल–वामाचारी, [कौलकाम-वशकृपणविमूढा लं०]
कौशल–अयोध्यापुरी.
कौशलेश–अयोध्याके राजा दशरथ वा राम
कौशिक–विश्वामित्रमुनि, इन्द्र, घूक–घुही, कौवा.
कंकण–कंगना [नूपुरककण किंकिणिधुनिसुनि बा०]
कंचन–सोना.
कंचुकी–अंगिया, चोली.
कंज–कमल [सरविकसे बहुकंज कि०]
कंटक–कांटा.
कंठ–गला.
कंठाभ–कंठके तुल्य.
कंडु–खुजली.
कंत–पति.
कंद–कन्द मूल, कमल आदिकी जड, मिष्टान्न विशेष.

कंदरा–पहाड़ की गुहा, या गुफा.
कंदुक–गेंद.
कंधरा–गला.
कंध–कन्धा.
कंप–कपकपी.
कंपीत–समुद्र, १ कांपताहै २ [थरथर कपति पुर नर नारी बा०]
कंबल–प्रसिद्ध ऊन वस्त्र.
कंबु–शंख [रेखारुचिर कबु कलग्रीवा बा०]

(ख.)

ख–स्वर्ग.
खग–पक्षी.
खगा–खड्ग.
खगकेतु–गरुड, १ अथवा गरुडध्वज भगवान्, २ [वरणिन जाय समरखगकेतू लं०]
खगहा–गैंडा.
खगेश–गरुड.
खचित–जडाऊ बना हुवा.
खची–जडाऊ बनी हुई
खटाहिं–स्थिर रहतेहैं, [कबहुँ किनारे खटाहिं बा०]
खद्योत–पटबीजना.
खानि–खान.
खप्पर–साधुओंका पात्र विशेष.
खर्पर–पीठ.
खर्व–छोटा, एक संख्या जो शत अरबके तुल्यहै.
खँभारु–क्षोभ.
खर–दूषणका भाई.
खरभर–क्षोभ, उथलपुथल, [खरभरदेखि विकलनरनारी बा०]
खरारि–रामचंद्र, खर राक्षसके शत्रु.
खरी–गदही, चोखी, [तुरतहि खोज खरी ले आई लं० क्षे०] खडियामट्टी.
खरो–तृणभी, चोखा आदि, गधाभी.
खल–कपटी, दुष्ट.
खलु–निश्चय करके.
खस– जाति विशेष, सुगंधिमय तृण विशेष.
खसी–गिरी [खसी माल मूरति मुसकानी, बा०]
खसेऊ–गिरा.
खाँगे–कमती.
खानिक–जो खानसे पैदा हुवा, [गुन प्रगट जहँ जो जेहि खानिक बा०]
खानी–खानि.
खाले–नीचे, गढहेमें.
खिन्न–उदास, दुःखिया.
खीन–दुर्बल.
खीस–घटना.
खुटानी–पूरी होगई, [सो जानै जनु आयु खुटानी बा०]
खेत–समरभूमि, अन्न बोनेका स्थान.
क्षेत्र–योनि. खेत.
खेद–दुःख.
खेरे–पुर, गांव.
खेलवार–खेल, [मुनि आयसु खिलवार अ०]
खोरी–दोष.
खोरे–लगडे.
खोह–गुफा.
खौर–तीन रेखाका तिलक,
खंजन–चिडिया विशेष, खजरीट.
खंड–टुकडा, [मनहुँ अखडन खड लं० क्षे०]

(ग)

ग–स्वर्ग, सुमेरु, गणेश.
गगन–आकाश
गज–हाथी.
गजानन–हाथीका शिर, गणेशजी, [सुमिरि गजाननकीन पयाना बा०]
गजारि–सिंह, हाथीका वैरी.
गत–बीता हुआ.
गति–चाल, १ मुक्ति, २ रस्ता, ३ दशा, ४ उपाय, ५ [कवि गति अलख १ अ० । पाई न गति केहि २ उ० । कछु विन दिये नही गति आली ३ बा०। भइ गति सांप छछूंदर कैसी अ० ४ । हमरे तौ अब ईश गति ५ अ०]
गथ–दाम.
गदगद–आनंद युक्त, पुलकित, [गदगद वचन कहत महतारी अ०]
गन–सेवक, शिवके प्रमथ आदि गण समूह.
गनराऊ–गणेशजी.
गनराज–गणोके राजा, गणेशजी.
गनि–गन करके.
गणक–ज्योतिषी.
गणिका–वेश्या.
गनी–धनी, १ विचारकी, २ [गनी गरीब बा० गनी जनकके गनकन बा०]
गने–गिने हुये.
गणेश–पार्वतीके पुत्र.
गर्वित–अभिमानी, [गर्वित भरत मातुबल पीके अ०]
गभुवारे–गर्भके बाल, घुंघरोदार बाल.
गम–गमन.
गम्य–जाने लायक, समझने योग्य.
गय–हाथी.
गयंद–हाथी, [नव गयंद रघुवंश मणि अ०]
गरल–विष.
गरुता–भारीपन.
गरह–ग्रह, गाठिया.
गरही–गल जाते हैं.
गलित–गला हुवा
गवाहे–गॅवसे, जाते हैं
गवाशा–कसाई, [भरु मालव महिदेव गवासा बा०]
गहगह–नगारेका शब्द.
गहन–विकट, घना
गह्वर–सघन, १ घना वन, २ शोचयुक्त, ३ [गहवरहिय कह कोशला अ०]
गहरू–देरी.
गाइगोठ–गोशाला.
गाजन–नाश करनेवाला, गर्जन
गाड़–गडहा, चुभन.
गाडर–खसका भेद.
गाढ़ा–घना, आपत्ति.
गात–शरीर.
गाथा–कविता, कहानी.
गाथे–गूथे, [मुक्तामणि गाथे बा०]
गादुर–चमगीदड.
गाधि–विश्वामित्रके पिता.
गाधिसुवन–विश्वामित्र, [गाधिसुवन कह हृदय हांसि बा०]
गाना–गीत गाना.
गामी–गमन करनेवाला.
गारुडी–विष हरनेवाला, सपेरा,
गालव–ऋषिका नाम.
गालबजाई–बात बनाकर, [वृथा मरहु कत गाल बजाई, बा०]
गाहा–कथा, १ ग्रहण करनेवाला २ रघुपति गुण गाहा, १ बा०.
गिरा–सरस्वती.
गिरि–पहाड़.
गिरिजा–पार्वतीजी.
गिरिनाथ–महादेवजी.
गिरिराज–सुमेरुपर्वत, हिमालयपर्वत,
गिरीश–महादेवजी, हिमाचलपर्वत.
गिरिन्दा–सुमेरु पर्वत.
गिलई–निगलजावे, [तिमिरतरुणतरणिहिसकगिलई अ०]
गीध–गृध्र
गुंजा–चोंटली.
गुदरत–जानताहै, प्रकाशकरता है.
गुन–सत्व, रज, तम, डोरा.
गुनहु–विचारो, [गुनहुलषणकरहमपररोसू बा०]
गुणज्ञ–गुणका जाननेवाला.
गुणातीत–गुणसे परे.
गुनि–मनमें समझकर.
गुनिय–विचारिये.
गुरु–उपदेश करनेवाला.
गुरुजन–बडे लोग, [गुरु जन लाज समाज बड़ि बा०]
गुसांई–स्वामी.
गुह–निषाद.
गुहा–पहाडकी गुफा.
गुहारी–सहायक, सहायार्थ.
गूढ–छिपाहुवा
गृध्रराज–जटायु.
गृहादि–गृह आदिलेके.
गृही–गृहस्थ [तपसीधनवन्तदरिद्रगृही उ०]
गृहीत–पकड़ा हुवा.
गे–गये.
गेह–घर.
गो–सूर्य, निष, स्वर्ग.
गोई–छिपी हुई.
गोए–छिपे हुये.
गोचर–जो इंद्रियों द्वारा मालूम हो, [गोगोचरजहलगिमनजाई आ०]
गोदावरी–नदीविशेष.
गोपद–चहले में गायका खुर.
गोप्य–छिपानेयोग्य.
गोमायु–गीदड.
गोलक–आंख.
गोविन्द–ईश्वरका नाम.
गोसांई–गुरु, राजा.
गौतम–हनुमानके नाना, [एकऋषिका नाम]
गौतमनारी–अहल्या.
गौन–जाना [सुनतरामवनगौन अ०]
गौर–गोरा.
गौरव–यश बड़ाई.
गौरीश–शिव.
गौरोचन–गोलोचन.
गंजन–नाश करने वाला.
गंजा–नाशकिया, [तोहिसमेतनृपदलमदगंजा आ०]
गंभीर–गहरा, शांत धैर्यमान.
ग्रह–नक्षत्र.
ग्रहदशा–ग्रहोंकी दशा, [जनुग्रहदशादुसहदुखदाई अ०]

ग्रहै-पकड़े.
ग्राम-गांव, समूह
ग्राही-इकट्ठा करनेवाला.
ग्रीवा-कठ [गर्दन]
ग्रीषम-गरमी.
ग्रंथ-पोथी.
ग्रंथि-गांठ, [जड़ चेतनहिं ग्रंथि पड़गई उ०]

(घ)

घ-घंटा.
घट-हृदय, घडा.
घटज-अगस्त्यऋषि.
घटव-बनावेंगे.
घटा-समूह, बदली, अंधेरा.
घटाटोप-अति अधकार, [घटाटोप करि चहु दिशि घेरी लं०]
घटि-कमती बनाकर.
घटिहि-करैगी.
घन-बादल, लोहे का घन.
घमोइ-एक तरहका कटीलापेड़-भड़ भांड बांस घमिरा भृगराज [बिनु बश सुतभयासिघमोई सु०]
घरनी-स्त्री, घरवाली.
घवरि-गुच्छा एकत्र होकर.
घाऊ-घाव. १ चोट, २ [यह सुनि परा निशानन घाऊ बा०]
घात-धोखा.
घातिनि-मारनेवाली
घालक-मारनेवाला.
घाला-नाशकिया [चित्रकेतु कर घर उन घाला, बा०]
घालि-मारके.
घाली-डाली.
घुनाक्षर-लकडी में घुनसे काटीहुई अक्षराकार लकीरें.
घुम्मरहि-नगारे की आवाजकी नकल, घूमकर गिरते है [निदरिघनहिघुम्मरहिं निशाना बा.]
घूमिति-घूम करके.
घृत-घी.
घ्रान-नाक, गन्धि.

(च)

च-पूर्ण चंद्रेश्वर.
चक्कवै-चक्रवर्ती राजा, [सहुरचक्कवै कौशलराऊ अ०]
चकित-आश्चर्यहुआ.
चक्र-पहिया, सुदर्शनचक्र.
चक्रवाक-चकई, चकवा.
चख-आंख.
चतुरंग-चार हिस्सों में बटी हुईसेना, यथा हाथी, घोड़ा, रथ पैदल.
चतुरानन-ब्रह्मा, [चतुरानन पहँ जाहु खगेशा, उ०]
चपरि-शीघ्र, घुसकर
चपल-चचल.
चपेट-तमाचा.
चर-दूत
चरकरहिं-तड़ फड़ाते हैं.
चरणपीठ-खडाऊं [चरण पीठ करुणा निधानके अ०]
चरम-अत.
चराचर-चल अचल चैतन्य. जड आदि.
चरित-व्यवहार.
चरु-यज्ञमे हवन करनेकी वस्तु.

चहुयुग-चारों युग, यथा सतयुग, त्रेता, द्वापर, और कलियुग.
चाव-आनंद.
चाका-पहिया.
चांकी-दबाकर.
चाख-नीलकठपक्षी, चख है [चारा चाख वामदिशि लेई बा०]
चाप-धनुष, दाव
चापन-दबाना
चापी-दवाई, [कुवरी दशनजीभ तब चापी अ०]
चामर-चवँर
चामुंडा-योगिनीका नाम.
चार-दूत, चतुर, [चार चले तिरहूत अ०]
चारिपद-सत्य, दया, दानादि, चारपैरवाला.
चारि अवस्था-जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय.
चारि भांति भोजन-चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेह्य, वा लेह्य, चोष्य भक्ष्य, भोज्य, [चारि भांत भोजन विधि गाई बा०]
चारी-चार, चलनेवाला.
चालति-चलाती, [चालति न भुजवल्ली विलोकति बा०]

चाहि-देखकर, इच्छा.
चाही-देखनेकी इच्छा की.
चिक्करहिं-चिंघार करते हैं.
चित-मन, चित्त.
चितचेता-सावधान हुवा, [पठवन चले भक्त चितचेता, उ०]
चितव-देखता है.
चिन्तक-चिंता करनेवाला.
चित्रकेतु-राजाका नाम.
चितामणि-एक मणि जिसमेंसे प्रतिदिन कुछ सुवर्ण झरता है, वा जो मनमेंइच्छाकरो सो देतीहै [चिन्तामणि पिमि उपल दशानन लं०]
चितेरा-तसबीर खेंचनेवाला
चिदाकाश-चैतन्य आकाश.
चिदानन्द-चैतन्य, आनदरूप.
चिराना-बहुत दिनका.
चिरंजीवी-चिरकाल जीवनेवाला, मार्कण्डेय ऋषि, हनुमान.
चीर-कपड़ा, चीरकर.
चुनौती-धिक्कार, [मनहु चुनौती दीन आ०] चोप
चुम्बत-चूमता है.
चूडाकरन-मुडन.
चूडामणि-शिरका गहना.
चेता-चित्त, सावधान हुवा.
चेरा-चाकर.
चेरी-किंकरी.
चोखा-अच्छा.
चोप-उछाह.
चौगान-खेलनेका स्थान, [गेंद खेलहिं भालु कीश चौगाना लं०]
चौतनी-चौगोशी टोपी.
चौथपन-बुढापा.
चौहट-चौराहा.
चंग-पतग, एक प्रकारका बाजा, हठ.
चंचरीक-भौंरा [चचरीक जिमि चपकबागा अ०]
चंड-तेज, क्रोध.
चंदिनी-चांदनी.
चन्द्रमौलि-शिव
चन्द्रमासुनि-अत्रिके पुत्र:
चंद्रहास-तलवार, [चंद्रहास हरु मम परितापा सु०]
चन्द्रिका-चांदिनी.

(छ)

छ-निर्मल
छई-एक रोग जिससे कलेजेसे मुँह के द्वारा लहू गिरता है. छांही
छत-फोडा [पाके छत जनु लाग अँगारा अ०]
छति (क्षति)-हानि.
छत्र-छपा.
छबि-शोभा, छटा.
छविगन-शोभायमानोंका झुण्ड.
छबीले-सुदर.
छमा (क्षमा)-पृथ्वी, सहन.
छमि-(क्षमि) सहन करके.
छरे-छटे. अलग. [छरे छबीले छैल सब बा०]
छत्रक-कुकुरमुत्ता [तोरौंछत्रकदंड जिमि बा०]
छत्रबन्धु-क्षत्रियजातिमे नीच.
छाके-उनमत छकेहुये.
छाछी-मट्ठा [चहिय अमिय जग जुरै न छाछी बा०]
छाजा-शोभित हुवा.
छारा-राख
छांड़ा-छोडदिया
छिति-(क्षिति)-धरती.
छिद्रे-छेद, दोष
छिप्र-जल्दी, शीघ्र.
छीजहिं-घटतेहै [छीजहि निशिचर दिन अरु राती लं०.]
छीना-दुबला.
छीने-काटे.
छीर-दुग्ध.
छुद्र (क्षुद्र)-छोटा. तुच्छ
छुधित (क्षुधित)-भूखा.
छुभे (क्षुभे)-डरे.
छुहे-चित्रित
छूछ-खाली [ताते परेउ मनोरथछूछे अ०]
छेका-घेरा.
छेमकरी-एकचिडिया [क्षेमकरी कह क्षेम विशेषा बा०]
छेमा- (क्षेमा)-सुख मगल
छेत्र (क्षेत्र)-भूमि खत.
छैल-छैला बांका.
छोनिप-राजा.
छोभा-घबराहट [सहज पुनीतमोरमन छोभा बा०]
छोहा-प्रीति.
छौना-बचा बालक.

(ज)

ज-शिव.
जग-ससार.
जगजोगी-ब्रह्मा संसारको उत्पन्न करनेवाला.
जगत्-ससार.
जगदीश-ईश्वर.
जगदंबा-जगत्का माता.
जटाजूट-जटाका जूड़ा; [जटाजूट बांधीदृढमाथे लं०]
जटिल-जटाधारी, जोसहजही-समझनेमें नआवे, वटवृक्ष,ब्रह्मचारी.
जठर-बूढा.
जठेरी-बूढी.
जड़-मूर्ख.
जड़जन्तु-मूर्खजीव.[जनि जल पसि जड़जन्तुकीप लं०]
जड़ताई-मूर्खता.
जती-(यती) सन्यासी
जन-मनुष्य, दास. जनजान. बा०]

जनक–पिता, सीताजीकेपिता
जनकौरा–जनक संबधी [कौशलपतिगतिमुनजनकौरा अ०]
जनयित्री–माता.
जन्मांतर–दूसरा जन्म.
जनि–नही, मत, उत्पन्न कर
जनित–उत्पन्न हुवा.
जनेत–बरात, [पहुँची आय जनेत, बा०]
जपंति–जपते है, रमरण करते है.
जपामि–मैं जपता हू.
जम–यमराज, अहिंसा आदि.
जमुन–यमुना नदी.
जयति–जयका शब्द, [जयति राम भ्राता सहित जय लक्ष्मण बलवान, लं०]
जयऊ–जीत लिया.
जयंत–इन्द्रके पुत्रका नाम जिसने कौआ बन कर सीताजीके चोच मारी थी.
जर–ज्वर.
जरि–जड, जलकर.
जर्जर–झाझर, निर्बल.
जलअलि–जलभौरा.
जलकुक्कुट–जलमुर्गा.
जलचर–जलमे चलने या रहने वाले मछरी आदि जतु, [जलचर थलचर नभचर नाना, बा०]
जलज–कमल फूल.
जलयान–नाव, जहाज, [सिंधु विना जलयान]
जलद–बादल.
जलधर–मेघ, बादल.
जलधि–समुद्र.
जलमल–जलका मेल.
जलराशि–समुद्र, जलका समूह.
जलरुह–कमल.
जलविहंग–जलपक्षी.
जलाशय–तालाव.
जलधर–दैत्य विशेषका नाम.
जल्पक–बोलनेवाला.
जल्पसि–तू बकता है, [जन जल्पसि देखव मनुसाई लं०]
जल्पहिं–बकवाद करते हैं.
जवनिका–परदा.
जश–(यश) प्रशंसा.
जशोमति–(यशोमति) श्रीकृष्णकी माता.
जहि–जिसे.
जाई–पैदा हुई.
जाग–(याग) यज्ञ, जागी, [लगे करन बड़ याग, बा०]
जागी–जाहिर हुई, नींदसे उठी.
जाचक–(याचक) मांगनेवाला
जाचत–(याचत) मांगता है.
जाचा–(याचा) मांगा
जातकर्म–पुत्रके जन्म समय नान्दीश्राद्ध आदि वैदिक तथा लौकिक रीति, [जातकर्म सब कीन, बा०]
जातना–(यातना) पीड़ा.
जातरूप–सोना
जातुधान–(यातुधान) राक्षस.
जान–ज्ञान.
जानु–घुटना, [जानु टेक कपि भूमि न परेऊ]
जापक–जप करनेवाला.
जाम–(याम) पहर.
जामाता–जमाई
जामिक–(यामिक) पहरुआ.
जामिनी–(यामिनी) रात.
जाय–वृथा, चलाजाय,
जाया–स्त्री.
जारा–जलाया.
जाल–समूह, झरोखा.
जावक (यावक)–महावर [जावकयुत पद कमल गुहाये बा०]
जावाली–एक ऋषि का नाम.
जिनस–जाति.
जिमि–जैसे.
जियाये–पाले, [शुकसारिक जानकी जियाये बा०]
जीव–जीतेरहो.
जीवन–आजीविका, जीना.
जीह–जीभ.
जुग–(युग) दो, जोडा, सत्य युगादि चार युग,
जुगल (युगल)–दोनों.
जुगविधि–(युग) दोनो प्रकार.
जुझारा–लडनेवाला [सब सुभट जुझारा, लं०]
जुटत–मिलतेहे, लडतेहै ।
जुडाने–ठढे भये । [राम वचन सुनि कछुक जुडाने, बा०]
जुवती (युवती)–जवान औरत,
जुवराज–(युव) कुंवर राज्याधिकारी.
जुवा (युवा)–जवान, तरुण,
जुवानू–जवान पुरुष.
जुवारी–जुआ खेलनेवाला
जूझा–लडा, युद्धकिया, [हम हुआजलगकीन न जूझा–लं० क्षे.]
जूथ–(यूथ) समूह.
जूथप–(यूथप) सैनापती.
जून–समय पुराना.
जूरी–इकट्ठा करके, सरदी.
जूहा–(यूहा) यूथ.
जेई–भोजन किया.
जोई–देखी.
जोऊ–देखो
जोग–(योग) अष्टांग, मिलाप.
जोगवत–परिरात, खबरदार करते हुये.
जोजन–(योजन) चार कोस,
जोती–प्रकाश, उजेला, [श्रीगुरु पदनखमणि गण जोती, बा०]
जोनी–(योनि) कारण, जाति.
जोवा–देखा,
जोहारे–प्रणाम किया, [सबहि जुहार जुहार अ०]
जोही–देख करके.
जंगम–चलनेवाला.
जंतु–छोटे जीव.
जंत्रित–(यंत्रि) ताला दिये हुये बधे हुये
जंत्री–(यंत्री) वशकिया, तार खेंचनेका यत्र, [भरत भक्ति सबकी मति जंत्री, अ०]
जंबु–जामुन
जंबुक–गीदड.
ज्याये–पाले.

(झ)

झ–बृहस्पति.
झगुलिया–बालकोंका कुरता
झटिति–जलदी.
झषकेतु–कामदेव, मीनकेतु.
झारी–समूह, झाडी, लोटा, [गनाहिं न मृत्यु विवस शठझारी, आ०]
झाषा–झखना.
झोटिंग–केशपकडकरलटकाना.
झई–आंखके आगे अंधेरा.
झंपेउ–छिपगया, [झपेउभानुकहहि कुनिचारी बा०]
झोटी–चोटी.

(ट)

ट–शब्द.
टकोर–टकार. [लक्ष्मणचापटकोरसुनि. लं०]
टिट्टिभ–टिटिहरी.
टेई–टेवके.
टेक–हठ, प्रतिज्ञा.
टेकी–हठकरके, निश्चयकरके.
टेव–स्वभाव बान,
टेर–पुकार.

(ठ)

ठ–महादेव.
ठक्कुर–ठाकुर.
ठट्ठा–समूह [देखनजायकपिनके ठट्ठा लं०]
ठठुकि–अटककर.
ठयउ–ठाना.
ठवनि–चाल, उठनेकी रीति [सिंहठवनिदृतउतचितै लं०]
ठाट–रचना.
ठाना–किया, हट विचारकिया
ठाहरु–स्थान
ठीका–निश्चय, उचित [असविचारमनहीन्हेंउठीका अ०]
ठाऊं–जगह, घर.

(ड)

ड–महादेव.
डगे–हिले.
डमरुआ–घुटनेकी गांठमेंका रोग.
डसि–डसके, काटके.
डहकि–ठगके [डहकि २ परके सब काहू बा०]
डाढे–जले.
डाबर–गडहा.
डासन–बिछौना.
डासी–बिछाकरके.
डिंडिमी–एक प्रकारका बाजा.
डीठा–देखा. [पितुवैभवविलासमैडीठा अ०]
डीठी–दृष्टि, नजर.
डोल–डोलना, कुवेमें पानीभरनेका पात्र.
डोली–गई, चलायमानहुई,

(ढ)

ढ–ध्वनि.
ढरी–खोजीगई
ढनमनी–ढुलकीलुडकगई [धरणीढनमनी लं०]
ढाबर–मैला. [भूमिपरतभाढाबरपानी कि०]
ढिग–समीप.
ढेंक–सारसपक्षी.
ढोटा–बेटा.
ढोर–ढोलक.

(त)

त–रत्न.
तकि–जानके, तानके.
तज–छोडके, औषधिविशेष.
तर्जनी–अंगुठेके पासकी अंगुली. पहिली अगुली.
तज्ञ–ईश्वरको जाननेवाला.
तट–किनारा.
तड़ाग–तलाव.
तड़ित–बिजुली. [तड़ित विनिंदक पीतपट बा०]

तत्पर-सुचेत
तत्त्व-सारवस्तु.
तथा-तैसे.
तथापि-तौभी.
तदपि-तबभी.
तन-ओर.
तनकाऊ-थोड़भी.
तनय-बेटा.
तनु-शरीर.
तनुजा-बेटी [नहि मानत कोउ अनुजा तनुजा उ०]
तनोतु-विस्तार करे.
तनोरुह-शरीरका रोम या रोंवा.
तप-पूजा.
तपोधन-तपस्वी, जिसका तपस्याही धन हो.
तम-अंधेरा, अत्यत.
तमकि-तमकके, त्यूरी बदलके. [तमकि ताक तकि शिवधनु धरहीं बा०]
तमारी-सूर्य.
तमाल-वृक्षविशेष, जिसकी आडूकीसी पत्ती, और लसौढेकेसा फल होता है.
तमी-रात.
तमीचर-राक्षस, अंधेरेमे घूमनेवाले.
तर-तरे.
तरक-विचरा.
तरकेउ-कूदा, तडका. [तरकेउ पवनतनय बलभारी सु०]
तरजत-तडपता है.
तरज-तडप.
तरजन-झिझकारना.
तरनतारन-जो आप तरे और दूसरेको तारै.
तरनी-नौका १ सूर्य. २ [तरनी मुनिघरनी हुइजाई अ० भयउ प्रकाश तरनि सम ल०]
तरपहिं-तड़पते हैं.
तरपन-तृप्त करना, मन्त्रद्वारा पितरोंको जल देना.
तरल-पतला, चचल.
तरु-वृक्ष.
तरुण-जवान, नवीन.
तरुणी-जवान औरत.
तरुणाई-जवानी.
तरेरे-घुरके बड़ी बडी आँखें निकाल घूरे, नेत्रसे डांटा. [नयन तरेरे राम बा०]
तरंग-लहर.
तरंगी-मौजी.
तरंगिणी-नदी.
तल्प-शय्या, बिछौना.
ताकि-देखके.
ताग-डोरा.
ताजी-अश्वविशेष.
ताटंक-तरकी, करनफूल. [मंदोदरी श्रवणताटंका ल०]
ताड़त-पीटता है
तात-पुत्र, पिता, भाई, सखा, प्यारा, गरम.
तापस-तपस्वी
ताये-तपे.
तामरस-कमल [श्याम तामरस दाम शरीरं आ०]
तामस-क्रोध, तमोगुणी
तारक-मंत्र, राम नाम, दैत्य विशेष, तारकासुर
तारा-वालिकी स्त्रीका नाम, तार दिया.
ताल-ताडका पेड.
तालू-तालवृक्ष, मुखके भीतर जिह्वाके ऊपरका भाग.
तिमिर-अंधकार.
तिमुहानी-जहां तीन नदी या रस्ता मिलाहो, [त्रिविध ताप त्रासक तिमुहानी बा०]
तिय-स्त्री
तिरहुति-मिथला देश.
तिलक-टीका.
तिष्ठे-रहे.
तिहुँलोक-तीनोलोक.
तीछे-तीक्ष्ण.
तीनकाल-भूत, भविष्य, वर्तमान. होगया, होगा, है [त्रिभुवन तीन काल जगमाहीं उ०]
तीरथपति-प्रयाग
तीरथराज-प्रयाग.
तीव्र-तीक्ष्ण.
तुभ्यं-तुम्हारे लिये.
तुरंग-घोडा. [तुरग उठायकोपि रघुनायक लं०]
तुराई-तोसक, जलदीसे तुडाइकर. [प्रियसेज तुराई अ०]
तुला-तराजू.
तुसार-पाला बरफ.
तुहिन-पाला, बरफ.
तूनीर-तरकश, जिसमें तीर रहताहै.
तूरी-समान.
तूल-रुई. [कहो तूल केहि लेखे माहीं बा०]
तुंबरी-तुमडी, सर्पवालोंका बाजा
तृजग-तिर्यंच चींटी आदि जीव.
तृण-तिनका.
तृषित-प्यासा.
तै-तेरा.
तेज-प्रताप.
तेति-वे, बहुत
तोप्यौ-तोपा [वरषि शस्त्र रघुपति रथ तोपा ल०]
तोमर-शस्त्रविशेष.
तोयनिधि-समुद्र, जलका बडा खजाना.
तोरण-वन्दनवार.
तोयावति-वेगवाली [तुरावति धारा अ०]
तोष-सतोष.
तोषये-प्रसन्नताकेलिये.
त्वचा-छिलका
त्वदंघ्रि-तुम्हारा चरण [त्वदंघ्रि मूलये नरा]
त्वदीय-तुम्हारा.
त्रयरेखा-तीनलकीर. [उदर त्रय रेखा बा.]
त्रसित-डरेहुए.
त्राता-रक्षक रक्षाकरनेवाला.
त्रातु-रक्षाकरो. [त्रातु सदानो भवखग बाज आ०]
त्रास-डर.
त्रासक-भयकर जिसे देखडरलगे. [त्रिविधताप त्रासक त्रिमुहानी बा.]
त्राहि-रक्षाकरो [त्राहि २ रघुवीरगुसाई ल०]
त्रिकाल-भूत, भविष्य, वर्तमान तीनोकाल.
त्रिधा-तीनप्रकारसे.
त्रिपुर-त्रिपुरासुर.
त्रिपुण्ड-तीनरेखाका तिलक. [भाल विशाल त्रिपुण्ड विराजा बा०]
त्रिविक्रम-विराटरूप जो पृथ्वी नापनेके समय धारण किया बावन
त्रिविध-मन, क्रम, वचन यथा-रके सगमें शीतल मद सुगध.
त्रिय-स्त्री
त्रोण-तरकश.

(थ)

थ-पर्वत.
थकित-थकाहुवा.
थल-स्थल.
थलचर-थलचारी पृथ्वीपर घूमनेवाले.
थामा-स्थान, ठिकाना.
थिति-ठहराव.
थोरा-अचल, तनक.

(द)

द-दाता.
दक्ष-प्रजापति, चतुर [दक्ष सकल निज सुता बुलाईं]
दक्षसुत-दक्ष प्रजापतिके पुत्र
दक्षसुता-सती, महादेवकी स्त्री.
दत्त-दियागया.
दधि-दही.
दधीचि-एक ऋषि का नाम जिनकी हड्डीसे इन्द्रका वज्र बना
दनुज-दैत्य, दानव
दम-इंद्रियोका विषयसे रोकना
दमक-चमक
दमनीय-दमनके योग्य, तोडनेवाला
दमन-नाश करनेवाला
दम्पति-स्त्री पुरुष [वरविलोकि दम्पतिअनुरागे बा०]
दर-शख, भय, छेद.
दरबार-सभा [गयोसभादरबाररिपु, सुमरिरामपदकज ल०]
दरश-रूप, दर्शन,
दरशी-देखनेवाला,
दर्प-अभिमान
दर्भ-कुशा, [बैठेकपिसबदर्भडसाई कि०]
दल-नाशकर, पत्ता, सैना
दलकि-दहलकर [दलकिउठी सुनिवचनकठोरा अ०]
दलमले-पीसडाले
दलन-नाशकरनेवाला [अरिदलदलनचलेरघुनाथा ल०]
दलित-टूटा हुआ,
दव-वनकी आग.
दवारि-दावानल
दशन-दांत [दुदुंदशन अधर अरुणारे बा०]
दहन-आग
दा-देनेवाला.
दाडिम-अनार.
दातार-देनेवाला. [राजनरा-उरनामयशसबअभिमतदातार बा०]
दादुर-मेंढक.
दाप-गर्भ.
दाम-रस्सी, रुपया. [व्यालसमदाम. बा० लहैनकौडीदाम]
दामिनी-बिजली.
दायक-देनेवाला.
दारन-फाडना.
दारय-नाशकरो.
दारा-स्त्री.
दारिद-दरिद्रता, दारिद्र.
दारिका-लकडी, कन्या.
दारु-हलदी लकडी [उमादारु योषितकीनाईं कि०]
दारुण-घोर.
दारुनारी-कठपुतली शारददारुनारिसमस्वामी बा०

दावन-भस्मकरनेवाला.
दाह-जलन.
दियासे-दीपकके समान.
दिगंबर-वस्त्रहीन, नगा.
दितिसुत-हिरण्याक्ष हिरण्यकश्यपादि दैत्यमात्र.
दिनकर-सूर्य
दिनदानी-अतिउदार, और दिनदिन देनेवाला [प्रणऊंदीनबंधु दिनदानी बा०]
दिनमानी-सूर्य.
दिनेश-सूर्य
दिक्षिप-इन्द्र, कुबेर, आदिक दिगपाळ, दिशाओंके अधिपति.
दिवस-दिन.
दिव्यतन-दिव्यदेह, जरा मरणरहित शरीर.
दिव्यदृष्टि-अलौकिकज्ञान. हृदयकी आंख.
दिशि-दिशा.
दिश-दिशा.
दिशिराज-इन्द्र.
दीक्षा-मंत्रोपदेश.
दीनता-गरीबी.
दीप्त-प्रकाश.
दीखा-देखा [पितुवैभवविलास मैं दीखा अ०]
दुकूल-रेशमीकपड़ा. दुपट्टा.
दुर्ग-गढ.
दुर्गम-अजय.
दुर्घट-जानेयोग्यनहीं.
दुनी-दुनिया [कविकुलउदार दुनी न सुनी उ०]
दुर्वचन-दुष्टवचन, गाली, खोटी बोली
दुर्वाद-बुरीबोली.
दुर्वासा- } दुर्वासस- } एकऋषिका नाम.
दुरंत-अत्यन्त कष्टदायक
दुरतिक्रम-दुस्तर, कठिनतासे पार होनेयोग्य
दुराधर्ष-जो शत्रुसे नहीं दबता.
दुराराध्य-दुःखसे सेवनेके योग्य. [दुराराध्यपैअहहि महेसू बा०]
दुराव-छिपना.
दुरावा-छिपाव.
दुरित-पाप.
दुसह- } दुस्सह- } जो सहनेयोग्यनहीं.
दुष्टजंतु-सर्प.
दुहाई-सौगंध.
दुहि-कामना, साररहण करके.
दुंदुभि-नगारा, एकदैत्यका नाम.
दूधमुख-बालक, दूधके दांतवाला [शुद्धदूधमुखकाहियनकाहू बा०]
दूषण-दोष.
दृग-आंख.
दृगअंचल-पलक [भगुतजैउदृगचल बा०]
देव-देवो, देवता,
देवक-देवताका.
देवतरु-कल्पवृक्ष
देवध्वनि-गंगा, आकाशवाणी.
देवऋषि-नारदादि
देवसर-मानससरोवरादि.
देहिं-देतेहैं.
द्वैत-भेद बुद्धि [क्रोधकिद्वैतकबुद्धिबिनु उ०]
दोष-काम, क्रोधादि, दूषण.
दण्ड-लकडी, राजदंड, छडी.
दण्डक-राजा, छंदविशेष, दंडकारण्य.
दंभ-पाखंड, झूठा, व्यवहार.
द्रुम-वनमाली.
द्रवी-पिघलाहुवा.
द्रुम-पेड.
द्रव्य-वस्तु.
द्वंद्व-सुख दुःख, भला बुरा, राग, द्वेष.
द्वादश-बारह [द्वादशअक्षरमंत्रवर बा०]
द्विजराज-[illegible]

(ध)

ध-धनी.
धन-द्रव्य.
धनद-कुबेर धनकादेनेवाला.
धनिक-धनी.
धनी-स्वामी, धनवान.
धनु-धनुष.
धनेशा- } धनेश- } कुबेर.
धन्या-नदीविशेष, भाग्यवान स्त्री [गोदावरि धन्या. अ०]
धन्वी-धनुषधारी, छोटा धनुष.
धर्मध्वज-पाषंडी जिसके धर्मकी ध्वजा फहराती हो.
धर-शरीर, पकड़.
धरणी-पृथ्वी.
धराषि-दबाकर.
धरा-भूमि.
धरासुर-ब्राह्मण, द्विज.
धवल-सफेद. [धवळ धाम मणिजटित बा०]
धाता-ब्रह्मा.
धाम-घर, वैकुंठादि.
धारि-सैना. [जमकर धारि]
धारी-धारनेवाला
धावन-दूत. [धावन पहुंचे आय बा०]
धिग-धिक्कार.
धुआं-धूर्दा, मरण अग्नि.
धुनि (ध्वनि)-शब्द.
धुर-बोझा, सीमा
धुरीन-बोझा धरनेवाळा.
धूर्ति-ठग करके.
धूमकेतु- } धूम्रकेतु- } अग्नि, केतुग्रह.
धृति-धीरता.
धेनु-गाय.
धेनुमति-गोमती नदी [पहुंचे जाय धेनुमति तीरा बा०]
धोरी-मुख्य, १ बैल, २ कपिला गौ, ३ सफेद ४ धुरांका उठानेवाला ५
ध्वजक-ध्वजा [विधु धर्मध्वज ध्वजकधारी बा०]
धौं-कि, यातो, क्या जाने [किधौ बरिआता बा०]
ध्रुव-राजा उत्तानपादके पुत्र १, अचल २.

(न)

न-नहीं.
नई-नदी, नवीन.
नए-झुके
नकुल-न्योला, राजा युधिष्ठिरके छोटे भाईका नाम.
नक्र-नाका.
नटत-नाचता है.
नतरु-नहीं तो.
नति-प्रणाम, नम्रता.
नफीरी-सहनाई.
नभग-पक्षी [नभगनाथपर प्रीति न थोरी उ०]
नभगेश-गरुड.
नभचर-पक्षी आदि.
नमत-नमस्कार करता है.
नमामहे-हम लोग प्रणाम करते हैं. [सयुक्त शक्ति नमामहे उ०]
नमामि-मैं प्रणाम करता हूं.
नमित-नवाया हुआ.
नम्र-झुका.
नय-नीति.
नयन-आंख.
नयन पट-पलक.
नरहरि- नरसिंहजी. [नरहरि किये प्रगट प्रह्लादा बा०]
नर्तक-नट.
नर्तकी-नाचनेवाली.
नलिन-कमल.
नलिन[illegible]-सुख देनेवाला.
नलिनी-कमलिनी.
नव-नया. नौ ९.
नवजल-वर्षाका पानी.
नवधा-नव
नवनीता-मक्खन. [काढिलेइ नवनीता उ०]
नवभक्ति-नव प्रकारकी भक्तिहै अर्थात् श्रवण, कीर्तन, स्मरण, चरणसेवा, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदन.
नवरस-शृंगार, वीर, करुणा, अद्भुत, हास्य, भयानक, बीभत्स, रौद्र, शांति, किसी मतमें वात्सल्य.
नवल-नया
नवसप्त-नव और सात अर्थात् सोलह १६ जावक, केश सुधारना, मांगमेंसेंदुर, भाल, अंगमें अरगजा. [आदि सोलह शृंगारकी वस्तुभी हैं]
नस-नाडी.
नसाय-नाशहो
नसाइया-नाशकिया.
नश्वर-नाश होनेवाला.
नखत-तारे.
नहरुआ-एक प्रकारकी बीमारी.
नाहरू-चामका टुकडा ब्याघ्र [नहारू लागी अ०]
नाई-नमा करके.
नाई-समान.
नाऊं-नाम, झुकताहूं.
नाक-स्वर्ग, नासिका.
नाकनटी-अप्सरा [नाकनटी नाचहिं करगाना बा०]
नाग-हाथी, १ सांप, २ [सुमन माल जिमि कठते गिरत न जानैं नाग कि० १ जनु छूटहि नागा लं० २]
नागर-चतुर.
नागरिपु-सिंह.
नाठी-नष्टहुई.
नाद-शब्द.
नाना-बहुत.
नानाकार-अनेक आकार.
नामी-नामवाला.
नामनि-नामका समूह.
नायक-स्वामी.
नायो-झुका. [कहि शिव नाय उ माथ बा०]
नारकी-पापी, नरककाअधिकारी.
नाराच-तीर.
नाल-डंडी. [जिमि गज पंकज नाल बा०]